मूल्य : 2.00 रुपया

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

मार्च-2015

बढ़ते कदम से जुड़ने के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :
बढ़ते-कदम
31, बेसमेंट, गौतम नगर
नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644470

बालकनामा

अंक-50 सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार

बजट में 'चिल्ड्रन इन इंडिया' पर क्यों नहीं आगे बढ़ी सरकार : जानें बच्चों के विचार

प्रधानमंत्री जी जिस प्रकार से मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया की बात करते हैं तो वे अपने बजट में चिल्ड्रन इन इंडिया पर बात क्यों नहीं करते नजर आए। वैसे तो सरकार द्वारा बच्चों के लिए बहुत सारी योजनाएं व नीतियां बनाई गई हैं, लेकिन उन योजनाओं व नीतियों को सुचारू रूप से लागू करने के लिए सरकार अपने बजट का मात्र 4.52 प्रतिशत भाग ही बच्चों के ऊपर खर्च कर रही है। इन बच्चों के लिए यह बहुत दुख की बात है कि सरकार के इस यूनियन बजट की राजनीति, पैसा और प्राथमिकताओं में ये बच्चे कहीं भी फिट होते नजर नहीं आ रहे हैं। सरकार ने अपने इस पूरे बजट का मात्र 5 प्रतिशत भाग ही देश की पूरी आबादी में 40 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाले बच्चों के लिए ही दिया है।

पिछले साल की तुलना में सरकार ने महिला एवं बाल विकास विभाग को दिए जाने वाले अपने पूरे बजट में भी 55 प्रतिशत की कटौती की है और इंटीग्रेटेड चाइल्ड प्रोटेक्शन स्कीम, जिसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय का फ्लैगशिप भी कहा जाता है। इस योजना के तहत बच्चों को भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराई जाती हैं तो सरकार द्वारा इस महत्वपूर्ण योजना के आवंटन में भी 54.19 प्रतिशत कमी की गई है।



इस पूरे मुद्दे पर जब बालकनामा की सलाहकार शन्नो ने बाल साथियों के साथ बातचीत की तो उन्होंने इस पर अपने विचार व्यक्त किए। बढ़ते संगठन की राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने कहा कि ये तो बहुत ही दुख की बात है कि हमारे देश के प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री जी हम बच्चों के लिए बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करते हैं, लेकिन जब पैसा खर्च करने की बात आती है तो उनके बजट के पिटारे से इतना पैसा भी नहीं निकलता कि हम बच्चों की योजनाओं को पूर्ण रूप से लागू भी किया जा सके।

बढ़ते कदम के जिला सचिव सौरव ने बताया कि जब मैंने नोएडा के एक सरकारी स्कूल का दौरा किया तो मैंने वहां देखा कि स्कूल की हालत बहुत खराब है। वहां पर बच्चों के लिए किसी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। उनको पढ़ाने के लिए टीचर भी वहां नहीं आते हैं। सरकार को अपने बजट में शिक्षा के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए था। उसे सरकारी स्कूलों के लिए पर्याप्त पैसा देना चाहिए था, जिससे बच्चों के लिए उच्च शिक्षण प्रणाली की व्यवस्था की जा सकती।

बढ़ते कदम के लीडर चंदन ने बताया कि बच्चों को सरकारी केंद्रों पर पर्याप्त दवाईयां भी नहीं मिलती और अधिकतर हमें दवाईयां बाहर के किसी मेडिकल स्टोर से ही खरीदनी पड़ती हैं। सरकार को कम से कम हम बच्चों की स्वास्थ्य सुविधाओं का तो ध्यान रखना चाहिए था। हमारे देश में कितने ही ऐसे बच्चे हैं, जो पर्याप्त चिकित्सीय सुविधाओं के अभाव में अपना इलाज नहीं करवा पाते।

बढ़ते कदम संगठन की सदस्य शब्बो ने बताया कि स्कूलों में जो बच्चों को मिड डे मील दिया जाता है। वो बहुत ही खराब होता है और बच्चों को वो भोजन भी पेट भर नहीं दिया जाता है। कभी कभी तो हम बच्चों को ये खाना खाने का मन भी नहीं करता, लेकिन मजबूरी व भूख के कारण हमें यह भोजन करना पड़ता है। सरकार को कम से कम इस मिड डे मील की ओर तो अपने बजट में ध्यान देना चाहिए था, जिससे मिड डे मील में दिए जाने वाले खाने की गुणवत्ता अच्छी हो सकती और बच्चों को पौष्टिक आहार मिल सकता।

इस प्रकार चर्चा के दौरान यह बात स्पष्ट हो गई कि बच्चे पूरी तरह से इस बजट से नाखुश हैं और उन्हें इस नई सरकार से बहुत सारी उम्मीदें थी। लेकिन सरकार ने जिस प्रकार का बजट बच्चों के लिए बनाया उसे देखकर ये सभी बच्चे बहुत हताश व निराश हैं।

-शन्नो

संपादकीय

संपादकीय
प्यारे साथियों,

हम एक बार फिर से सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार ''बालकनामा'' लेकर आप सभी के बीच उपस्थित हो रहे हैं। साथियों, इस बार बढ़ते कदम संगठन के सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने सरकार द्वारा बच्चों के लिए जो बजट पेश किया गया है, उस पर अपने विचार रखे हैं। इस के साथ ही बच्चों ने अपने अखबार के माध्यम से सड़क व कामकाजी बच्चों साथ घट रही घटनाओं, उनकी समस्याओं को आप तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

इस अखबार के माध्यम से हम चाहते हैं कि आप सभी भी सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं को गंभीरता से लें और उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करें। जब तक हम सभी मिलकर बाल श्रम, बाल शोषण, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा इत्यादि के खिलाफ आवाज नहीं उठाएंगे, तब तक हम बच्चों को लिए एक सुरक्षित समाज का निर्माण नहीं कर पाएंगे।

आइए आप भी हमारे संगठन के साथ मिलकर बच्चों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करने में सहयोग करें।

-संपादकीय टीम

बजट में बच्चों की उपेक्षा से नाराज हैं बच्चे



बहुत दिनों से खबरों के माहिर खबरची तोता और मैना एक खबर तलाशने में जुटे हुए थे। तभी मैना उड़ते-उड़ते पेड़ की डाली पर बैठ जाती है....

तोता- अरे मैना लगता है, तुम्हे कोई खबर हाथ लग गई है। बताओ क्या खबर है? बहुत दिनों से कोई खास खबर नहीं सुनी है।

मैना- तुम्हें पता है तोता, इस बार मेरे हाथ बहुत बड़ी खबर लगी है...

तोता- हां मैना! मैं तुम्हें देखकर समझ गया था, लेकिन तुम देर मत करो, जल्दी बताओ खबर क्या है?मैं कब से सुनने को बेचैन हो रहा हूं, जल्दी सुनाओ--

मैना- तुम्हें पता है तोता, सरकार ने इस बार जो बच्चों का बजट पेश किया है, उससे बच्चे बहुत नाराज हैं...।

तोता - क्यों मैना...?ऐसा क्यों... ?क्या सरकार ने बच्चों की योजनाओं के लिए पर्याप्त पैसा नहीं दिया है...।

मैना - नहीं तोता...यही तो दुख की बात है कि सरकार ने बच्चों की योजनाओं पर ज्यादा ध्यान न देते हुए इंफ्रास्ट्रक्चर, एग्रीकल्चर और डिफेंस पर अधिक ध्यान दिया है...।

तोता - तो चलो...चलो मैना...इस पर हम अपने बाल साथियों से बात करते हैं और उनके विचार जानने का प्रयास करते हैं...।

मैना - हां हां तोता...चलो...

तोता (उड़ते उड़ते करोल बाग के बच्चों के पास जाता है)- बच्चों ने बताया कि यदि सरकार हमारी ओर इतना ध्यान देते हुए अच्छा बजट बनाती तो हम बच्चों के लिए अच्छी सुविधाएं मुहैया करा पाती तो हम बच्चे भी अच्छी शिक्षा और अच्छे अध्यापकों का लाभ उठा पाते।

मैना- हां तोता...मैंने जब सड़क पर रहने व झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों से बात की तो उन बच्चों ने बताया कि सरकार ने हमारे लिए कोई नई योजना लाना तो दूर की बात है, उसने तो हमारे बारे में सोचा तक नहीं है। हम कैसे यहां गुजर बसर कर रहे हैं, ये हम ही जानते हैं...। हमें लगा कि सरकार हमारे पुर्नवास के लिए कुछ न कुछ जरूर करेगी, लेकिन उसने तो हमारे बजट में ही कटौती कर हमें निराश कर दिया।

तोता- हां मैना, जब हमने बढ़ते कदम संगठन की बाल किशोरियों से बात की तो उन्होंने बताया कि सरकार ने लड़कियों की सुरक्षा की ओर अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं निभाई है और न ही कोई ऐसी योजना जान पड़ती है, जिससे हमें इस बात का एहसास हो कि हम समाज में सुरक्षित रह सकें।

मैना - हां तोता, यह वास्तव में बहुत दुख की बात है कि हमारे देश में बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या है और उसके हिसाब से बजट की संख्या बहुत कम है...।

ये कहकर खबरची तोता-मैना दूसरी खबर की तलाश में उड़ पड़ते हैं।



यह साल रेलवे प्लेटफॉर्म के बच्चों के नाम

20 रेलवे स्टेशनों के प्लेटफॉर्मों पर रहने वाले बच्चों को सुरक्षा देने हेतु भारतीय रेलवे बोर्ड ने लिया फैसला

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने अपना आठवां स्थापना दिवस समारोह रेलवे के सम्पर्क में आने वाले असुरक्षित बच्चों के अधिकारों को संरक्षित करने हेतु पूरा साल समर्पित किया है। इस उपलक्ष्य में एनसीपीसीआर ने दिनांक पांच मार्च को विज्ञान भवन में प्रोग्राम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथिगण श्रीमती मेनका गांधी (महिला एवं बाल विकास मंत्री, भारत सरकार), असीम श्रीवास्तव (सचिव, एनसीपीसीआर), श्री प्रदीप कुमार (सदस्य, रेलवे बोर्ड), श्री पी.एस. रावल (डायरेक्टर, जनरल रेलवे फोर्स) इत्यादि सदस्य उपस्थित थे। इसके साथ ही अलग अलग संस्थाओं व संगठनों के बच्चों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरूआत बाल साथियों ने स्वागत गीत गाकर अतिथिगणों का स्वागत करते हुए की। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने बताया कि यह पूरा वर्ष उन्होंने रेलवे के सम्पर्क में आने वाले बच्चों के नाम किया है। उन्होंने बताया कि जो बच्चे असुरक्षित हैं और अपने अधिकारों से वंचित हैं वह उनके और उनकी शिक्षा के लिए व उनके पुर्नउत्थान के लिए कार्य करेंगे। जिसमें उन्होंने कुछ

शेष पृष्ठ 5 पर

दमदमा में आयोजित की गई 52वीं क्षमतावर्द्धन कार्यशाला

खेलों के माध्यम से सीखे लीडर के गुण और जाने अपने अधिकार

सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी बहुत से सपने देखते हैं और उनको हकीकत में बदलना चाहते हैं। लेकिन उन्हें अपने इन सपनों को पूरा करने के लिए बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे पुलिस समाज, गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, पिछड़ापन इत्यादि। ऐसी परिस्थिति में वह बच्चे कैसे अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं और इन समस्याओं के क्या समाधान हो सकते हैं, इस पर चर्चा करने के लिये बढ़ते कदम संगठन द्वारा सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए क्षमतावर्द्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह चार दिवसीय क्षमतावर्द्धन कार्यशाला दमदमा के इंदिरा गांधी हॉलीडे होम फॉर चिल्ड्रन में दिनांक 20 से 24 मार्च को आयोजित की गई। इस कार्यशाला में सड़क व कामकाजी बच्चों की वर्तमान स्थिति, उनके सपनें व इन सपनों में रूकावट पैदा करने वाले तत्वों के ऊपर चर्चा की गई। इस चर्चा में अलग...अलग स्थानों (दिल्ली आगरा, मथुरा, झांसी और ग्वालियर के 35 सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया। जिन्होंने कार्यशाला के दौरान उपरोक्त सभी मुद्दों पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए।



प्रतिभागियों द्वारा सड़क व कामकाजी बच्चों की वर्तमान स्थिति पर चर्चा के बाद निम्न मुख्य बातें उभर कर सामने आई अधिकांशत: ये बच्चे सड़क व रेलवे स्टेशनों पर कूड़ा कबाड़ा बीनने, बस स्टैंड, मंदिर, दरगाह, रेलवे स्टेशन, फुटपाथ आदि पर भीख मांगने का काम करते हैं। जिसके कारण वह शिक्षा से वंचित रहते हैं और विद्यालय पढ़ने नहीं जा पाते हैं। आज भी ये बच्चे बाल मजदूरी का शिकार हो रहें हैं, जिसके चलते अभी भी ढाबों, कारखानों, चाय की दुकानों, घरों इत्यादि जगहों पर काम करते हुए पाए जाते हैं। ये बच्चे न चाहते हुए भी काम करने को मजबूर हैं।

ये बच्चे अपने अधिकारों से परिचित नहीं हैं। जिसके कारण इन्हें काम के बदले पैसा नहीं मिल पाता है। क्योंकि दुकानदार इनसे काम तो करवा लेते हैं, लेकिन इनकी मजदूरी देने के समय इनको बच्चा समझकर इन्हें ठग लेते हैं। इन बच्चों के लिए खाने पीने व रहने की सुविधाओं का अभाव है। इसी कारण ये नशे, चोरी, बुरी आदतों में लिप्त होते हैं। परिवारिक आर्थिक तंगी के कारण इनके माता पिता इनको शिक्षित करने से ज़्यादा काम पर लगाना उचित समझते हैं। अभी भी इन बच्चों के अभिभावक लड़का व लड़की में भेदभाव करते हैं।

बाल व्यापार के कारण अभी भी ये बच्चे बेचे जा रहे हैं, जिसके कारण ये शोषण का शिकार हो रहे हैं। बाल विवाह पूरी तरह से रोका नहीं जा सका है, जिसके चलते इन लड़कियों की शादी बचपन में ही अपने से बड़े उम्र के लड़कों के साथ की जा रही हैं। फुटपाथ, रेलवे स्टेशनों व झुग्गियों में रहने के कारण ये प्राकृतिक आपदाओं के भी शिकार होते हैं। बाल प्रतिभागियों द्वारा बताई सभी उपरोक्त समस्याओं को सुनने के बाद बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने कहा कि जब तक हम बच्चे स्वयं अपने अधिकारों के बारे में पूरी तरह से जागरूक नहीं होंगे, तब तक हम ना तो अपनी मदद कर पाएंगे और न ही दूसरे की। इसलिये सबसे पहले हमें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होना पड़ेगा और संगठन में मजबूत लीडर होंगे, जो हमारी समस्याओं को भली भांति समझेंगे और उनको सुलझाने का प्रयास करेंगे तो निश्चित ही हमारी दशा सुधरेगी। इसके अलावा प्रशिक्षकों ने उन्हें अच्छे लीडरों के गुणों के बारे में भी बताया। कार्यशाला के दौरान बाल प्रतिभागियों के अंदर प्रतिभा को निखारने और ज्ञानवर्द्धन करने के लिये प्रतियोगिताओं, नाटकों व मनोरंजक कार्यक्रमों इत्यादि का आयोजन भी किया गया। सभी प्रतिभागियों ने कोलाज...चरित्र...चित्रण इत्यादि के माध्यम से अपने मनोभावों को प्रस्तुत किया। प्रशिक्षकों द्वारा बाल प्रतिभागियों का क्षमतावर्द्धन करने हेतु खेलकूद व रंगारंग कार्यक्रम भी आयेजित किए गए। सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने कहा कि उन्हें इस कार्यशाला के दौरान बहुत कुछ अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिली, जिन्हें वह हमेशा ध्यान रखेंगे और अपने रोजमर्रा के जीवन में अमल मे लाएंगे।

-आजाद अली

बाल भागीदारी भी है ज़रूरी

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि बच्चों की सूझ...बूझ सबसे अलग होती है। बच्चों के लिए क्या होना चाहिए और किस प्रकार होना चाहिए यह बात उन बच्चों से बेहतर और कोई नहीं बता सकता, क्योंकि बच्चों की जो समझ होती है वह उनके हिसाब से एकदम सही होती है। वह अपने जीवन को एक अच्छा मोड़ देने में कामयाब हो सकते हैं। अगर सरकार इन बच्चों के हिसाब से उनकी बाल भागीदारी उनके मामलों को चर्चा करते हुए सुनिश्चत करे।

हमारे देश में सड़क और कामकाजी बच्चों की जो संख्या बढ़ती जा रही है और हमारी सरकार को भी पता है कि यह संख्या क्यों बढ़ रही है। गरीबी और तंगहाली के कारण ये बच्चे सड़कों पर रहने को मजबूर हैं। हमारी सरकार हमेशा कहती रहती है कि हम बच्चों के हित के लिए बहुत सारे कार्य कर रहें हैं और उनके लिए बहुत सारे कानून बना रहे है। लेकिन ये सब कागजी दस्तावेजों तक ही सीमित हैं और लाखों करोड़ों बच्चे इसके लाभ से वचिंत हैं। क्योंकि उनकी बाल भागीदारी को ठीक ढंग से सुनिश्चित ही नहीं किया गया है।

बच्चों के लिए अगर वास्तव में सरकार कार्य चला रही है तो क्यों बच्चे सड़कों पर रह रहें हैं और काम कर रहें है?क्यों शिक्षा से वचिंत हैं?क्यों घरों से बेघर हैं?क्यों दिन पर दिन गरीबी बढ़ रही है?अगर हम बात करें तो इसका कारण क्या है ?बच्चों को जानकारी ही नहीं है कि बाल भागीदारी क्या होती है। उन्हें किसी भी मीटिंग या कार्यक्रम में अपनी बातों को रखने का मौका बहुत कम मिलता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कुछ बच्चों ने सोचा कि वह एक ग्रुप बनाएंगे और उन बच्चों के ग्रुप में उनके मुद्दों को लेकर उनकी राय जानी जाएगी तथा उनकी बाल भगीदारी को सुनिश्चत किया जाएगा?

इस ग्रुप की खासियत यह है कि इस ग्रुप से कोई भी बच्चा जुड़ सकता है। वो बच्चा सड़क पर रहने वाला भी हो सकता है और अच्छे घर में रहने वाला भी हो सकता है। और साथ में यह ग्रुप दूसरे बच्चों को भी जागरूक करने के लिए अलग अलग माध्यम से जानकारी दे रहा है, जैसे कि नाटक करके व रैली निकालकर अथवा रेडियो प्रोग्राम के माध्यम से वे अपनी बातों को देश के सभी बच्चों तक पहुंचाकर अन्य बच्चों को भी जागरूक कर रहें हैं। दोस्तों इस ग्रुप का नाम है चिल्ड्रन एडवाइज़री बोर्ड इस ग्रुप की शुरूआत पहले सिर्फ 19 बच्चों के साथ हुई थी, जिसमें बढ़ते कदम के दो बाल साथी सदस्य चांदनी और दीपक भी जुड़े हुए हैं। ये बाल साथी पश्चिमी दिल्ली में रहते हैं। ये बाल साथी भी अपने संगठन के बच्चों की समस्या को सरकार व अन्य बड़े अधिकारियों तक पहुंचा सकें, जिससे हम बच्चों की स्थिति में सुधार हो सकें और सड़कों पर रहने वाले बच्चों की संख्या कम हो व उन्हें भी आगे बढ़ने का अवसर मिल सके। इस ग्रुप में और भी बाल साथी जुड़ गए हैं। अब खुशी की बात है कि चिल्ड्रन एडवाइज़री बोर्ड का एपिसोड रेडियो 102.एफ.एम पर आता है और बढ़ते कदम संगठन की सदस्य चांदनी इस रेडियो कार्यक्रम की एंकर है। इस कार्यक्रम में सभी बच्चों की बातों को ज़रूर सुनें और अपनी राय भी दें।



-चांदनी

सड़क व कामकाजी बच्चों ने दिल्ली के मुख्यमंत्री को पहला संदेश पत्र भेजकर मांगा मिलने का समय



सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी को अपना पहला पत्र भेजा गया। सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने 12 बजे श्री अरविंद केजरीवाल जी को राजधानी दिल्ली के मुख्यमंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनाएं दी। इसके पश्चात बच्चों ने अपनी समस्याओं पर एक पत्र लिखा और 12.20 पर फैक्स द्वारा मुख्यमंत्री के कार्यालय में फैक्स के माध्यम से यह पत्र भेजा। उन्होंने इस पत्र द्वारा मुख्यमंत्री को यह संदेश भेजा कि वे अपने एजेंडे में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं को भी शामिल करें।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के एकमात्र संगठन बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने कहा कि इससे पहले भी हमने 28 दिसंबर, 2013 को श्री केजरीवाल जी को शपथ लेने के बाद पत्र के माध्यम से उन्हें सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं से अवगत कराया था। लेकिन बहुत ही कम दिनों तक मुख्यमंत्री का पद संभालने के कारण वे हमारी समस्याओं का सामाधान नहीं कर सके। परंतु इस बार हम सभी बच्चों को उनसे बहुत उम्मीदें हैं और हम सभी बच्चे यह आशा करते हैं कि वे सफलतापूर्वक अपने मुख्यमंत्री के कार्यभार को संभालें और हम बच्चों की समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करें।

बढ़ते कदम संगठन की दिल्ली की जिला अध्यक्ष 14 साल की ज्योति ने बताया कि इस पत्र के द्वारा हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अपनी पांच मांगों को दिल्ली की नई सरकार के सम्मुख रखा है। हमारी पांच मांगें इस प्रकार हैं:-

* आप सड़क एवं कामकाजी बच्चों की उपस्थिति एवं पहचान को कानूनन मान्यता दिलाएंगे।
* बेघर एवं कामकाजी बच्चों के पुर्नउत्थान के लिए बनाई गई योजनाओं/नीतियों को उन तक पहुंचाएंगे।
* बच्चों से संबंधित सरकारी मीटिंगों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित कराएंगे।
* पांच वर्षों में कम से कम 10 बार सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ बैठक में भाग लेंगे और उनकी समस्याओं का समाधान करेंगे।
* बाल मजदूर रखने वालों के खिलाफ तुरंत कार्यवाही कराना सुनिश्चित करेंगे।

संगठन के दिल्ली के जिला सचिव 15 वर्षीय विकास ने कहा कि चूंकि श्री अरविंद केजरीवाल जी ने देश की राजनीति में एक अलग पहचान बनाई है और एक आम आदमी के रूप में दिल्ली की जनता के लिए काम करने आएं हैं तो हम सभी बच्चे भी दिल्ली के इस मुख्यमंत्री से मिलना चाहते हैं और मिलकर अपनी समस्याएं उनको बताना चाहते हैं। इसलिए इस पत्र के माध्यम से हमने उनसे मिलने का समय मांगा है और हमें आशा है कि वे हम बच्चों को मिलने का समय अवश्य देंगे।

चेतना संस्था के निदेशक और बढ़ते कदम संगठन के प्रतिपालक श्री संजय गुप्ता ने बताया कि, ''सड़क एवं कामकाजी बच्चों को नई सरकार से बहुत उम्मीदें हैं और मैं आशा करता हूं कि यह सरकार भी बच्चों के मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर देखेगी और उनके लिए उचित कदम उठाएगी।''

-विकास

सड़क व कामकाजी बच्चों ने लाजपत नगर पुलिस के साथ बिताया अपना दिन

दिल्ली पुलिस सप्ताह के चलते लाजपत नगर मार्केट में काम करने वाले 40 सड़क व कामकाजी बच्चों ने अपना पूरा दिन लाजपत नगर पुलिस स्टेशन के पुलिसकर्मियों के साथ व्यतीत किया। इस दिन सभी बच्चों ने लाजपत नगर पुलिस स्टेशन के पुलिस अधिकारियों से मुलाकात की, डांस किया, गाना गाया, नाटक प्रस्तुत किया और पेंटिंग के माध्यम से बताया कि, किस तरह की पुलिस की कल्पना वे करते हैं। ये सभी बच्चे लाजपत नगर मार्केट एसोसिएशन व दिल्ली पुलिस के सहयोग से लाजपत नगर मार्केट में चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे सपनों की दुनिया केंद्र से जुड़े हुए हैं। लाजपत नगर मार्केट में भीख मांगने वाली और डमरू बेचने वाली 12 साल की मेहरूनी (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि सड़क व कामकाजी बच्चों ने डांस के माध्यम से खुद को प्रदर्शित किया और मैं बहुत खुश हूं कि मैंने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।'' लाजपत नगर मार्केट में जूते के फीते बेचने वाले 15 साल के लल्लन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''मैंने अपनी पेंटिंग में एक ऐसे पुलिसवाले का चित्र बनाया और उसे एक सड़क पर रहने वाले बच्चे की देखभाल करते हुए दिखाया है, जिसे पुलिसकर्मी झील के निकट नहीं जाने देता है, क्योंकि वह झील में गिर सकता है। मैंने पुलिसकर्मियों द्वारा ऐसे प्यार व देखभाव को अनुभव भी किया है, जब हम अपने केंद्र द्वारा संचालित गतिविधियों के तहत पुलिस थाने की विजिट पर जाते थे।''

लाजपत नगर मार्केट में चाय की दुकान पर काम करने वाले 15 साल के सौगत (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''मैं भी इस कार्यक्रम का हिस्सा बना और सभी ने तहे दिल से हम सभी बच्चों का स्वागत किया, इसके लिए मैं बहुत खुश हूं। मैंने आज पूरे दिन खूब आनंद उठाया।''



दिल्ली पुलिस के लाजपत नगर के एस.एच.ओ. श्री रमेश कुमार जी ने कहा कि, ''हमारी दिल्ली पुलिस सड़क व कामकाजी बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के आयोजन के पीछे हमारा मकसद पुलिस कार्यक्रमों के बारे में इनका मूल्यांकन करना, सड़क व कामकाजी बच्चों को उनके खुद के बाल अधिकारों का एहसास कराना और उनके व पुलिस विभाग के बीच सामंजस्य लाना था।'' चेतना संस्था के निदेशक श्री संजय गुप्ता ने कहा कि, ''दिल्ली पुलिस ने सड़क व कामकाजी बच्चों के मुद्दों को संबोधित करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं का अविष्कार किया है। इसके लिए हमें और अधिक कार्यक्रमों व अवसरों की आवश्यकता है।''

-आकाश

नशे और अपराध के दलदल में फंसता बचपन



जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हमारे आस पास के अलग अलग स्थानों पर नशीले पदार्थ बहुत आसानी से मिल जाते हैं। इन जगहों पर दुकानदार बिना डरे ऐसे नशीले पदार्थों को बेचते हैं, जो बड़ी आसानी से बेचे जा सकते हैं और उनके खरीददार भी उन्हें आसानी से मिल जाते हैं। ऐसे नशीले पदार्थों का सेवन करके व्यक्ति अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं तथा इस नशे में लिप्त व्यक्ति अपने घरों के बच्चों को मारते पीटते हैं। यही नहीं ये लोग नशे में धुत होकर छेड़छाड़ और अभद्र व्यवहार भी करते हैं।

इस विषय पर जब हमने 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) श्याम, जो बढ़ते कदम का लीडर है। वह बदपुर में रहता है। उसने बताया कि जब बड़े व्यक्ति शराब का नशा कर लेते हैं तो वह बच्चों के साथ बहुत बुरी तरह से पेश आते हैं। चाहे वह उनके अपने बच्चे हों या दूसरे बच्चे। वह पहले उन बच्चों को नशा करना सिखाते हैं, फिर उन बच्चों से गैरकानूनी काम करवाते हैं, जैसे शराब बिकवाना तथा चोरी करवाना।

उसने बताया कि बदरपुर में लगभग 20 बच्चे ऐसे हैं, जो शराब पीते हैं और शराब बेचते भी हैं और दूसरे बच्चों को परेशान करते हैं। वे बच्चों के साथ उल्टी सीधी हरकतें करते हैं। वे बच्चों को ब्लेड मारने की धमकी देते हैं। इन बच्चों के माता पिता भी उन्हें कुछ नहीं कहते। ये छोटे छोटे बच्चे बड़े लड़कों के साथ बदमासी करते हैं और गालियां देते हैं।

वह सब बच्चे बड़े लड़कों के साथ मिलकर बसों में चोरी करने जाते हैं। हम बच्चे जब उनको समझाते हैं तो वो हमें भी मारते हैं। इसलिए अब हम उन बच्चों से कुछ नहीं बोलते और अब वह बच्चे धीरे धीरे अलग अलग अपराधों में लिप्त होते जा रहे हैं।

बड़े लोग बच्चों को चोरी करना सिखाते हैं और उन बच्चों को अपनी ढाल बनाकर उन्हें कुछ पैसों व नशे का लालच देकर उनसे शराब बिकवाते हैं। अगर कोई भी बच्चा या बड़ा चोरी करते समय पकड़े जाते हैं तो वह उनके ब्लेड मारकर भाग जाते हैं और वहां की पुलिस भी कुछ नहीं करती है। पुलिस वाले तो खुद वहीं शराब लेने के लिए आते हैं। इस जगह की स्थिति बहुत दयनीय है। यहां बच्चे बहुत अधिक संख्या में बाल मजदूरी व अपराध कर रहें हैं। छोटी छोटी उम्र में बच्चे रिक्शा चलाने का भी काम कर रहे हैं।

हम बच्चे चाहते हैं कि ऐसे लोगों को सजा मिले और हर एक समुदाय में पुलिस अच्छी तरह बच्चों की देखरेख करें तथा जो भी लोग इन मामलों में बच्चों को फंसा रहे हैं और शराब बिकावा रहे हैं, उनको पकड़ा जाए। अगर दिल्ली पुलिस व सरकार द्वारा हमारी सुरक्षा नहीं की गई तो हर एक बच्चे का कदम बुराई में फंसता चला जाएगा और बच्चे उस दलदल से निकल नहीं पाएंगे। जो बच्चे अपराध करते हैं उनके लिए अधिक कार्य किया जाए और बच्चों की स्थिति में सुधार लाया जाए, ताकि अपराधों की ओर बढ़ते कदमों को रोका जा सके।

-गगन

बाल मजदूरी छोड़ बढ़ाए कदम शिक्षा की ओर

13 वर्षीय चन्दू जो तुगलकाबाद में अपने माता-पिता के साथ रहता है और वह कबाड़ा बीनने का काम करता है। वह बढ़ते कदम से जुड़ने के बाद कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट का लीडर बना और लीडर बनने के बाद उसे बढ़ते कदम की चार दिवसीय कार्यशाला में जाने का मौका मिला। जब वह हॉलीडे होम फॉर चिल्ड्रन के कैंप में पहुंचा तो उसे बहुत अच्छा लगा। वहां जाकर उसने दूसरे बच्चों के साथ दोस्ती की। उसे वहां जाकर कुछ नए खेल खेलने का अवसर भी मिला, जिसे खेलकर वह बहुत खुश हुआ। अगले दिन चन्दू ने पहले दिन की कार्यशाला में भाग लिया और बच्चों की बातों और उनकी समस्याओं को उजागर किया। उसने बताया कि जो बच्चे कबाड़ा बीनते हैं उन्हें कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि अधिकतर जो बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं, उन्हें बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है और बहुत कुछ उन्हें त्यागना भी पड़ता है। क्योंकि बच्चे तन पर गंदे कपड़े पहने हुए और हाथों में कबाड़ का थैला लिए पूरे दिन अपने काम में ही व्यस्त रहते हैं।

इनके गन्दे कपड़ों को देख कर उनसे लोग घृणा करते हैं। उन्हें धुतकारते हैं, जिससे इन बच्चों को कहीं भी जाने आने या घूमने फिरने का मौका नहीं मिलता और बच्चों का मनोबल गिर जाता है। उन्हें लगता है कि वह अब आगे नहीं बढ़ पाएंगे। इसलिए ज्यादातर बच्चे इस रोजमर्रा की जिन्दगी से निकलना ही नहीं चाहते। चन्दू ने इन सब समस्याओं पर कार्यशाला के दौरान प्रकाश डाला और इस पर चर्चा की। इस कार्यशाला में चन्दू को बच्चों से संबंधित बहुत सी जानकारियां प्राप्त हुई और उसने बच्चों के चार अधिकारों के बारे में भी जाना। जब वह अपने घर वापस गया तो वह उनकी समस्याओं को उजागर कर मीटिंग में रखने लगा, ताकि दूसरे बच्चों की समस्याओं को कम किया जा सके और उनकी समस्या दूर हो सके।

चन्दू ने अन्य बच्चों के माता पिता को भी बच्चों से संबंधित समस्याओं से परिचित कराया तथा बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया और इस तरह चन्दू ने धीरे धीरे कबाड़ा बीनना छोड़ दिया। उसके साथ साथ चन्दू के पिता जी ने भी कबाड़ा बीनना छोड़ दिया। अब चन्दू के पिता जी गार्ड की नौकरी करते हैं और चन्दू ने अपनी पढ़ाई पूरी करने की ठानी है।

-चंदू

और वो बच निकले अपराध के शिकंजे से

12 वर्षीय सागर (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ दिल्ली में पिछले तीन वर्ष से रह रहा है। जब वह दिल्ली आया था तो उसे पढ़ने का बहुत शौक था। लेकिन जिस जगह में वह रहता था वहां के बच्चे काम करते थे और चोरी करते थे। इसी तरह सागर उन बच्चों को देख देख कर उन बच्चों के पास जाने लगा और फिर उन बच्चों से सागर की दोस्ती हो गई और इस तरह वह चोरी करने वाले बच्चों की गैंग में शामिल हो गया ।

सागर ने बताया कि वह उनके साथ चोरी करने जाता था। धीरे धीरे वह उन बच्चों के साथ रहकर नशा करना भी सीख गया। उसने बताया कि हमारे यहां कुछ बड़े लोगों का समूह बना हुआ है, जो बहुत शराब पीते हैं और इस कारण हमारे माता पिता भी शराब पीकर घर में आते हैं और अपने बच्चों से चोरी चकारी करवाते हैं। ताकि वह बच्चे अपने घर का खुद से खर्चा चला सकें। इस तरह यहां बच्चों ने अपने माता पिता की वजह से पैसे कमाने के चक्कर में अपना एक समूह बना लिया है, जिसमें वह बच्चे चोरी करने की प्लानिंग करते हैं। इस समूह में लगभग 14 से 16 साल की उम्र के बच्चे प्लानिंग करते हैं और फिर अपने इस समूह में छोटे छोटे बच्चों को लाते हैं और उन बच्चों को अपने साथ ले जाकर उन्हें चोरी करना सिखाते हैं।

उसके बाद जब वह बच्चे चोरी करना सीख जाते हैं तो फिर वह बच्चे चोरी करके लाते हैं। जिसमें आधे पैसे वह अपने गैंग में चोरी सिखाने वाले बच्चों को दे देते हैं। इस तरह इन बच्चों को चोरी करने के लिए पूरा तैयार किया जाता है। जो छोटे बच्चे इस गैंग में शमिल होते हैं। उन बच्चों की उम्र ज्यादातर 12 से 14 साल के बीच की होती है, इस तरह यहां बच्चों की चोरी करने की क्षमता बढ़ती ही जा रही है।

उसके बाद फिर अमन ने बताया कि मैं भी पहले गैंग में शामिल था और इसी तरह मैंने भी चोरी करना सीखा था पर मैं जब से बढ़ते कदम से जुड़ा और उसका लीडर बना तो मैंने जाना कि चोरी करना कितना बड़ा अपराध है और मैं एक ऐसे दलदल में फंसता जा रहा था, जहां से निकलना बहुत मुश्किल था। लेकिन मुझे बढ़ते कदम से पुलिस और कानून के बारे में जब जानकारी हुई तो मैंने फैसला किया कि अब मैं चोरी चकारी करना छोड़ दूंगा और मैं सिर्फ पढ़ाई करूंगा, जिससे मेरा भविष्य उज्जवल हो सके और मैं आगे बढ़कर एक अच्छा नागरिक बन सकूं।

-ज्योति

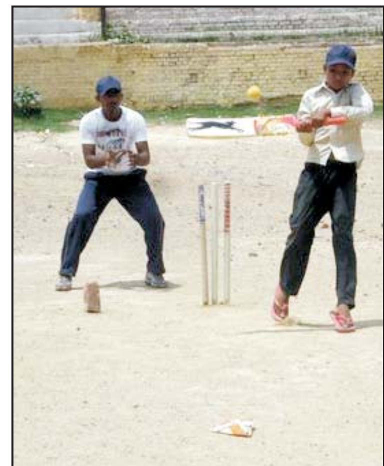
दो नन्हें हाथ

ज्ञान नहीं , संस्कार नहीं, पैसे की भीख मांगते,
गणित के सवालों को हल करने की जगह पैसे गिनते,
अग्रेंजी किताब पढ़ने की जगह उस पर चने बेचते,
अ से अनार, बड़े आ से आम की जगह अपने सामान को बेचने के लिए आवाज लगाते,
किताबों की जगह हाथ में कटोरा,
स्कूल बैग की जगह पीठ पर कूड़े का थैला,
कलम की जगह झाडू थामे वो दो नन्हे हाथ जगह-जगह करतब दिखाते,
किसी दुकान या होटल पर काम करते नजर आते हैं
तो हमारे भारत का भविष्य खतरे में नजलर आता है
सड़कों पर, मेट्रो स्टेशन के बाहर न जाने कितने ही छोटे-छोटे बच्चे किताबों में रंग भरने की जगह अपने पेट को भरने के लिए पैसे मांगते नजर आते हैं
छोटे बच्चों को पैसे कमाने का जरिया बनाया जाता हैं
अफसोस की बात यह है कि आज भी समाज में ऐसे लोग हैं जो ऐसे बच्चों की मदद के लिए आगे नहीं आते
हजारों रूपये पार्टी, क्लबों, बार में उड़ाना उचित और इन बच्चों को देना फिजूल समझते हैं
भारत में आज भी बाल मजदूरी बड़े पैमाने पर हो रही है एक आम आदमी जब किसी बालक को मजदूरी करते देखता है तो भारत के खिलाफ दो शब्द ही तो बोल देता है,
लेकिन कभी अपने-आप से नहीं पूछता कि क्या उसने कभी किसी बच्चे का हाथ थाम कर उसे समाज में खड़े होने का सहारा दिया है
शायद जिस दिन यह सवाल उठे उस दिन से बाल मजदूरी थम जाए
'दो हाथ एक जिन्दागी बना सकते है, हाथ बढ़ाओ जिन्दगी बचाओ '

-प्रीति

नोएडा के बाल साथियों ने मनाया खेल दिवस

आप सभी जानते हैं कि हमारे जीवन में जो खेल की भूमिका होती है, वह बड़ी ही रोमांचक होती है। क्योंकि खेल एक ऐसा माध्यम है, जो अपनी परेशानियों को भूलने के लिए और अपने दिमाग से परेशानियों को दूर करने के लिए यह सबसे आसान तरीका होता है। जब कोई भी व्यक्ति खेल खेलने में मशरूफ हो जाता है, तो वह अपनी सभी परेशानियों को भूल जाता है और खुश रहता है। इसलिए जो बढ़ते कदम के सड़क एवं कामकाजी बच्चो का संगठन है, यह संगठन बच्चों को खेल खेलने के अनेक मौके प्रदान करता है।



क्योंकि जो बच्चे काम करते हैं, सड़कों पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं और बहुत से बच्चे जो नशे की लत में बुरी तरह जकड़े होते हैं, जिन्हें नशे से बाहर निकालना बहुत ही मुश्किल है। इन बच्चों के अन्दर परिवर्तन लाने के लिए यह कार्य कर रहा है। संगठन द्वारा ऐसे ही कुछ बाल साथियों को खेल दिवस मनाने का अवसर मिला। बढ़ते कदम द्वारा इस बाल दिवस के अवसर पर लड़के व लड़कियों को बराबर से मौका प्रदान किया गया। इस प्रतियोगिता में नोएडा के सेक्टर 73 और सेक्टर 52 के लगभग 50 बच्चों ने भाग लिया।

सबसे पहले बच्चों की दो अलग-अलग टीमें बनाई गई। इसके बाद बच्चों ने क्रिकेट मैच खेलने के लिए अपनी अपनी टीम के लिए सदस्यों का चुनाव किया। इस प्रकार बच्चों ने ए और बी नाम की दो टीमें बनाई। यह मैच केवल 7 ओवर का रखा गया और बैटिंग करते हुए सबसे पहले बी टीम की ओर से अपनी पारी खेलते हुए मैदान में उतरे 14 वर्षीय शरीफुल ने एक ओवर में तीन रन बनाते हुए पहले ओवर का समापन किया। उसके दूसरे ही क्षण में पहला ओवर खत्म करने के बाद 13 वर्षीय गोलू ने दूसरी बॉल को तेज़ी से उड़ा डाला।

इस प्रकार बी टीम ने खेल को रोमांचक बनाते हुए 7 ओवर में 19 रनों को स्कोर किया। उसके बाद ए टीम अपनी बल्लेबाजी करते हुए मैदान में उतरी और ए टीम ने भी काफी अच्छा प्रदर्शन किया और 7 ओवर में बड़ी ही मेहनत के बाद जीत हासिल की और दूसरी टीम को हरा दिया। इस खेल के दौरान बच्चों के अन्दर बड़ी ऊर्जा का संचार हुआ। साथ ही साथ बच्चों को भरपूर खेलने का मौका भी मिला, जिसे पाकर वह बहुत खुश हुए।

-सौरव



नन्हें बाल साथी के जज़्बे को सलाम

12 वर्षीय विशाल जो अपने माता पिता के साथ सलारपुर में रहता था और वह पहले प्राईवेट स्कूल में कक्षा दो में पढ़ने जाता था। लेकिन उसने अपना स्कूल छोड़ दिया, क्योंकि विशाल के पिता जी शराब पीते थे और शराब पीकर विशाल को बहुत मारते थे। इसलिये विशाल अपने घर सलारपुर से भागकर सेक्टर 82 में आकर रहने लगा और वहां आकर उसकी दोस्ती 12 वर्षीय विक्रम से हुई।

विक्रम नोएडा सेक्टर 82 में अपने माता पिता के साथ रहता है और वह बढ़ते कदम का होनहार लीडर भी है। विक्रम रोज़ पढ़ने जाता है और पढ़ने के साथ साथ वह अपने पिता जी के साथ सब्जी मंडी में सब्जी बेचने का काम भी करता है। विक्रम ने अपने दोस्त के बारे में पता लगाया और उसे समझाया। उसके बाद विक्रम अपने दोस्त विशाल को अपने साथ पढ़ने के लिये कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट पर लाने लगा। कुछ समय तक विक्रम ने अपने दोस्त को अपने घर में ही रखा और कुछ दिन बाद उसके दोस्त के पिता विशाल को ढूंढते हुए विक्रम के घर पहुंचे। उन्होंने अपने बच्चे के बारे में बताते हुए कहा कि वह अपने बच्चे को वापस घर ले जाने आए हैं।

यह सुनने के बाद विक्रम ने कहा कि आप अपने बेटे को क्यों मारते हैं और शराब क्यों पीते हैं। विक्रम ने उन्हें अच्छी तरह से समझाया तथा उनके बेटे को बुलाकर उसके पिता से मिलवाया। विशाल के पिता जी को विक्रम की बातें सुनकर और इतनी कम उम्र में इतनी समझदारी की बातें करते हुए देखकर उन्हें खुद पर बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। उसके बाद उन्होंने कहा कि वह अब अपने बच्चे को कभी नहीं मारेंगे और अपने बच्चे का पूरा ख्याल रखेंगे। साथ ही वह उसे उसके स्कूल पढ़ने के लिये भी भेजेंगे।

इस प्रकार विक्रम ने अपने दोस्त को उसके घर वापस भेजकर बहुत अच्छा काम किया तथा उसकी शिक्षा से उसे जोड़ा और साथ ही साथ अपने दोस्त को मज़दूर बनने से बचा लिया। विशाल की मदद कर बढ़ते कदम के होनहार लीडर ने दूसरे लोगों व माता पिता को बहुत बड़ा संदेश भी दिया कि वह अपने बच्चों के प्रति संवेदनशील बनें और उनसे प्यार से बात करें तथा कोई भी ऐसा कार्य ना करें जिस वजह से माता पिता को अपने बच्चों से दूर होना पड़े।

-विक्रम

नोएडा सेक्टर 73 पर शॉर्ट सर्किट से लगी आग : 100 झुग्गियों के बच्चे हुए बेघर

अचानक आपदा आने के कारण से लोगों और बच्चों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इस वजह से कई घर बरबाद होते नज़र आते हैं। कभी भूकम्प के कारण तो कभी बाढ़ की वजह से तो कभी घरों की दीवारें अचानक गिरने पर इस तरह आपदा के शिकार होते हैं। माता पिता के साथ साथ बच्चों को भी बहुत से परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

कुछ दिन पहले इसी तरह की एक आपदा का सामना नोएडा सेक्टर 73 में बसी 100 झुग्गियों के लोगों को करना पड़ा। यहां पर एक शॉर्ट सर्किट में अचानक आग लग गई, जिससे माता पिता और बच्चों को बेघर होना पड़ा। आग इतनी भयंकर थी कि उनका सारा सामान जलकर राख हो गया। उनके पास खाने पीने का कुछ भी सामान नहीं बचा और ना तन पर पहनने को एक कपड़ा। इतनी बुरी हालत थी कि उनके रहने के लिए कोई बिस्तर तक नहीं बचा और ना ही रहने का कोई ठिकाना। यह आपदा झेल रहे बड़े बूढ़े और बच्चे बुरी तरह से रो रोकर अपनी परेशानियां बता रहे थे तथा अपना सारा सामान आग में झुलसता देख उनकी हालत बहुत खराब थी। बच्चे व माता पिता की आंखों को सिर्फ काली राख ही हाथ लगी। सब सामान जलकर कोयला बन गया।

जब बढ़ते कदम संगठन के जिला सचिव और लीडर को यह बात पता चली तो वह बच्चों के पास गए और उनसे बात की। बच्चों से मिलने के बाद पता चला कि वह भूखे हैं और उनका खाना व सभी सामान आग में जल गया है। यह जानने के बाद बढ़ते कदम के सदस्यों ने उन बच्चों के लिये खाने की व्यवस्था की और बच्चों को कुछ बिस्कुट के पैकेट भी दिये। सभी बच्चे बहुत उदास थे। उन्होंने कहा कि हम सब बच्चों के घर जल कर राख हो गये। अब हम कहां रहेंगे और क्या करेंगे। बच्चों को समझाते हुए सौरव ने उनसे कहा कि आप सभी बच्चों को परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। हम आपके साथ हैं। नोएडा के जिला सचिव सौरव ने बढ़ते कदम व चेतना संस्था द्वारा बच्चों को ओढ़ने के लिये कंबल भी दिया, जिसे बच्चे अपने ओढ़ने व बिछाने के काम में ला सकें। साथ ही बच्चों को पहनने के लिये जूते, चप्पल तथा टोपी भी बांटी। संगठन द्वारा उनके लिये चटाई और तिरपाल भी मंगवाकर दिए गए, जिससे वह अपनी गुजर बसर कर सकें। उसके बाद पास में बसे सरफाबाद में रहने वाले लोगों ने भी उनके रहने की व्यवस्था की। उन्होंने सभी लोगों के रहने के लिये एक टेन्ट लगवाया। ताकि टेन्ट में वे सुरक्षित रह सकें। इस दुर्घटना के चलते जिन बच्चों व लोगों के घर जलकर राख हो गये थे, उन्हें सरकार ने सिर्फ पांच हज़ार रूपए का चेक दिया है।

-सौरव

काम के साथ साथ शिक्षा भी है ज़रूरी

हमारे समुदाय में जो लोग रहते हैं, वह अलग अलग संस्कृति और प्रथाओं से जुड़े होते हैं। कुछ लोग को बच्चों के प्रति बहुत संवेदनशीलत होते हैं। वह उनसे बहुत प्यार से बात करते हैं। पर कुछ लोग जैसे बच्चों की समस्यायों और परेशानी को नज़रअंदाज करते हैं, उन्हें धुतकारते हैं। अन्यथा बच्चों से कम पैसे देकर अपने घरों का काम करवाते हैं। उन्हें अच्छी तरह अवगत होता है कि बच्चों से कार्य करवाना एक कानूनी अपराध है। लेकिन इसके बावजूद लोग बच्चों से कार्य करवाते हैं। इस बात को जानते हुए भी कि वह एक बच्चा है और बच्चों से ज़्यादा काम करवाना ठीक नहीं है।

13 वर्षीय रीना (परिवर्तित नाम), जो सेक्टर 24 में अपने माता पिता के साथ रहती है। उसकी माता कोठी में काम करने जाती है। रीना के घर की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण रीना की माता ने उसे भी दूसरी कोठी में काम पर लगा दिया है। रीना सुबह 6 बजे से कोठी में काम करने जाती है। वहां जाकर रीना झाड़ू पोंछा करती है। बर्तन धोती है। पूरे दिन काम करके वह शाम को 5 बजे वापस अपने घर जाती है। इसके बावजूद उसे पूरे एक महीने के सिर्फ 1500 रुपए मिलते हैं। कुछ समय पहले रीना अपने काम पर गई तो उसकी कोठी वाली मालकिन ने रीना से कहा कि उसके बच्चे का खिलौना कोई चुरा करके ले गया है और उस खिलौने का चोरी करने का इल्ज़ाम उसकी कोठी की मालकिन ने रीना पर लगा दिया। उससे कहा कि वह उसके बच्चे का खिलौना चुरा कर अपने घर ले गई है। पर रीना ने कहा कि उसके बच्चे का खिलौना उसने नहीं चुराया है। पर उसकी मालकिन नहीं मानी और उसने रीना के घर जाकर उसके घर की पूरी तालाशी ली। लेकिन उसको रीना के घर में कोई खिलौना नहीं मिला। रीना यह सब देखकर बहुत रोने लगी पर उसकी मालकिन को फिर भी यकीन नहीं आया और वह रीना को धमकी देने लगी कि अगर उसने उसके बच्चे का खिलौना वापस नहीं किया तो वह उसका नाम पुलिस में दे देगी। उसके बाद रीना ने डर की वजह से अपना काम छोड़ दिया। उसने अपनी मालकिन से कुछ नहीं कहा क्योंकि उसे डर था कि अगर वह कुछ बोलती तो उसकी माता और उसे कहीं काम करने को नहीं मिलता। जिससे उनके घर का खर्चा चलता है। इस डर की वजह से रीना ने अपने लिये कोई कदम नहीं उठाया। लेकिन अब वह बढ़ते कदम संगठन की सदस्य है और अपनी आवाज़ को उठा सकती है। अब वह अपनी हक की लड़ाई खुद से लड़ सकती है। क्योंकि वह अब बढ़ते कदम से जुड़ने के बाद पढ़ने लगी है और पढ़ाई में तो बहुत ताकत होती है। क्योंकि शिक्षा बच्चों और बड़ो के लिये जानकारियों का खजाना है। इसलिये रीना का कहना है कि हर एक बच्चे को अपनी शिक्षा को ज़रूर प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि हम सब बच्चे किसी ना किसी समस्या से जूझ रहे होते हैं, पर हमारे पास कोई मदद करने वाला नहीं होता। अगर हम पढ़ेंगे लिखेंगे तो अपनी स्वयं मदद कर सकते हैं। इसलिये सभी बच्चे पढ़े और पढ़ लिखकर आगे बढ़कर अपनी ज़िन्दगी को संवारें।

-सौरव

नेशनल गर्ल चाइल्ड डे पर बढ़ते कदम के सदस्यों ने निकाली रैली



हमारे देश में आज भी बेटियों को बोझ समझा जाता है और बेटों व बेटियों में भेदभाव किया जाता है। ये बहुत ही चिंता का विषय है कि देश में आज उसी बेटी का अस्तित्व खतरे में आ गया है, जो बेटों को जन्म देती है। आज दुनिया कहां से कहां पहुंच गई है और बेटियों के प्रति लोगों की मानसिकता नहीं बदली है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी दिनांक 22 जनवरी को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के इस अभियान की शुरूआत की थी और लोगों से अपील की है कि वे बेटियों को पढ़ने दें, उन्हें आगे बढ़ने दें क्योंकि ये बेटियां हमारे राष्ट्र का गौरव हैं।

वास्तव में देश में बेटों की अपेक्षा बेटियों का घटता हुआ यह प्रतिशत हम सभी के लिए एक चिंता का विषय है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए नेशनल गर्ल चाइल्ड डे पर बढ़ते कदम संगठन के सड़क व कामकाजी बच्चों ने मथुरा में एक रैली का आयोजन किया। जिला परिवीक्षा अधिकारी श्री ओम प्रकाश यादव जी ने इस रैली को हरी झंडी दिखाकर सभी बच्चों का हौसला बढ़ाया। इन सभी बच्चों ने डी.पी.ओ. कार्यालय, कलेक्ट्रेट चौराहे से लेकर सी.एम.ओ. कार्यालय तक अपने हाथों में बेटी है देश की आन-बान-शान, कन्या भ्रूण हत्या बंद करो, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ इत्यादि के स्लोगनों से सजी तख्तियों व नारों के साथ रैली निकाली। इस रैली में संगठन के लगभग 150 बच्चों ने भाग लिया। डिप्टी सी.एम.ओ. डॉ. देवेंद्र ने इस प्रयास के लिए बढ़ते कदम के सभी सदस्यों की सराहना की।

बेटी बचाओ के नारे को बुलंद करती हुई बढ़ते कदम संगठन की जिला अध्यक्ष 15 साल की तुलसी ने लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि लड़कियां देश का भविष्य हैं, अगर लड़की पढ़ी लिखी हों, तो वह देश के निर्माण में निर्णायक की भूमिका निभाती है। लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश के भविष्य को गर्भ में ही मार दिया जाता है।

रैली के दौरान संगठन की जिला सचिव 14 साल की पूजा ने कहा कि आज के समय में लड़कियां पढ़ लिखकर कितना आगे बढ़ रही हैं। हमारे देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने भी देश का गौरव बढ़ाया था। अब तो लड़कियां चांद तक पहुंच गई हैं। मैं चाहती हूं कि सभी लड़कियों को पढ़ने का और आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।

कन्या भ्रूण हत्या को एक जघन्य अपराध मानते हुए 13 साल की लाडो ने कहा कि हम लड़कियों को भी तो जीने का अधिकार है, तो फिर हमें गर्भ में क्यों मार दिया जाता है। लाडो ने कहा कि हमारे लिए यह गर्व की बात है कि हमारे संगठन का नेतृत्व भी एक लड़की कर रही है।



इस अवसर पर बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव 16 साल की चांदनी ने कहा कि हम सभी को लड़की होने पर गर्व होना चाहिए, क्योंकि हम ही एक मां की, एक बेटी की, एक बहन की और एक पत्नी की भूमिका निभाते हैं। हम लड़कियों को भी लड़कों के समान अधिकार मिलने चाहिए और हमारे साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए। इसलिए हम सभी को अपनी बेटियों का सम्मान करना चाहिए और उन्हें आगे बढ़ने का, पढ़ने का और उनके सपने साकार करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

-पूजा

दमदमा कार्यशाला ने बदली बच्चों की जिन्दगी

झांसी, आगरा, मथुरा के सेंटर में आने वाले बच्चों को दमदमा कार्यशाला में जाने का अवसर मिला। इस कार्यशाला से वापस आने के बाद बढ़ते कदम के जिला सचिव व अध्यक्ष जब सेंटर में बच्चों से मिलने गए तो उन्हें सभी बच्चों से मिलकर बहुत अच्छा लगा।

कार्यशाला से वापस आने के बाद इन बच्चों के व्यवहार व बातचीत में बहुत बदलाव नज़र आया। सभी बच्चे बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूजा को देखकर बहुत खुश हुए। पूजा ने बताया कि बच्चों से बातचीत करने के लिए मैंने उन्हें एक गोले में बैठाया और उनसे पूछा कि उन्हें किसी प्रकार की कोई समस्या तो नहीं है।

सभी बच्चों ने कहा कि वे एकदम अच्छे हैं। बच्चों ने मुझसे कहा कि जब से वे दमदमा कार्यशाला से वापस आए हैं, तब से उन्हें कोई परेशानी ही नहीं हैं। अब तो वे रोज़ समय से सेंटर आते हैं। मैंने पूछा कि आप सब सेंटर आकर क्या करते हो। तो बच्चों ने बताया कि सेंटर आकर सबसे पहले वो अपना नशा जमा करते हैं अपने हाथ और मुंह की सफाई करते हैं प्रार्थना करते हैं और उसके बाद पढ़ाई करते हैं।

इसके बाद अरशद ने कहा कि मुझे सेंटर आकर डांस करना बहुत अच्छा लगता है। अरशद ने मुझे डांस करके भी दिखाया मैंने बच्चों से पूछा कि उन्होंने दमदमा कार्यशाला में क्या किया, तो एक बाल साथी ने कहा कि हमें नशा नहीं करना चाहिए। कार्यशाला में हमने नशे से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में जाना। हमने जाना कि नशे के कारण हम बच्चे आगे नहीं बढ़ पाते हैं।

नशा ना करने के लिए हमें अपने अंदर दृढ़ इच्छाशक्ति को बढ़ाना होगा। हमें दूसरे बच्चों को नशा करने से रोकना होगा। हमें स्टेशन की जिन्दगी छोड़कर एक अच्छी जिन्दगी की ओर बढ़ना होगा।



इस प्रकार इन बच्चों ने कार्यशाला में जाकर बहुत सारी बातों के बारे में जाना और समझा। यही कारण है कि आज वे इस दुनिया से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं और एक अच्छा इंसान बनना चाहते हैं।

-पूजा

पृष्ठ 1 का शेष

यह साल रेलवे प्लेटफॉर्म के बच्चों के नाम....



लगभग 20 मेजर रेलवे स्टेशनों को अपनी लिस्ट व कार्य प्रणाली में शामिल किया है। जिसमें उन्होंने नई दिल्ली में निज़ामुद्दीन, आंनद विहार टर्मिनल, मुम्बई सेन्ट्रल, सी.एस.टी मुम्बई , हावड़ा, सैलाधा, नई जलपाइगुड़ी, रांची, चेन्नई सेन्ट्रल, चेन्नई अगमौर, लखनऊ एन.आर, लखनऊ एन.ई.आर, गुवाहाटी, बैंगलौर सिटी, पटना, वाराणसी कैन्ट, सिकन्दराबाद, नागपुर रेलवे स्टेशनों पर कार्य करेंगे, ताकि वह उन स्टेशनों पर आने वाले बच्चों के हित के लिए कुछ अच्छे काम कर सके और उन बच्चों को रेलवे के सम्पर्क में आने से रोका जा सकें व उनको सुरक्षित किया जा सके।

रेलवे बोर्ड के सदस्यों, मेनका गांधी जी, पी.एस.रावल जी और प्रदीप कुमार जी ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के साथ मिलकर यह फैसला लिया कि इस काम को करने के लिए उन्हें कुछ संस्थाओं के साथ मिलकर यह कार्य करना होगा तभी वे इस उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम हो पाएंगे। उन्होंने बताया कि जो संस्थाएं रेलवे के सम्पर्क में आने वाले बच्चों के साथ काम कर रही हैं, वह उनके साथ मिलकर यह काम करेंगे। जिसके लिए इन्होंने कुछ संस्थाओं को भी अपनी कार्य प्रणाली में शामिल किया है, जिनकी मदद लेकर वह रेलवे के सम्पर्क में आने वाले बच्चों तक अपनी पहुंच बना सकेंगे और उन बच्चों की सुरक्षा कर सकेंगे। रेलवे के सम्पर्क में आने वाले बच्चों के लिए चेतना संस्था ने भी अपनी रूचि दिखाई और राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने चेतना संस्था को दो मेजर स्टेशन आनंद विहार और निज़ामुद्दीन स्टेशन पर काम करने के लिए चुना है।

इस कार्यक्रम में शामिल कुछ स्टेशनों पर रहने व काम करने वाले बच्चों से जब बालकनामा के रिपोर्टरों ने बात की और उनसे पूछा कि उन्हें यह जानकर कैसा लग रहा है कि यह पूरा साल राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने रेलवे के सम्पर्क में आने वाले बच्चों के नाम किया है तो निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर काम करने वाले 14 वर्षीय बाल साथी ने बताया कि मुझे बहुत खुशी हो रही है कि अब बच्चों के हित के लिए और उन्हें सुरक्षा देने के लिए जो भी सरकार द्वारा कदम उठाए गए हैं, उससे बच्चों को रेलवे के सम्पर्क में आने से रोकने में कामयाबी मिलेगी। साथ ही उन बच्चों को पूरी सुरक्षा अब प्रदान की जाएगी, जिससे बच्चों की कुछ समस्याएं कम की जा सकती हैं और काफी बच्चों को नशे की लत से बचाया जा सकेगा। यह पूरा वर्ष हम बच्चों के नाम करके बहुत से बच्चों की जिन्दगी बदल सकेगी। अगर बच्चों के लिए वास्तव में काम किया जाएगा तो बच्चे अपनी बेहतर स्थिति बनाने में कामयाबी हासिल कर सकेंगे।

-चंदन

स्टेशन पर काम करने वाले बच्चे को मिली उसकी अपनी पहचान

बालिका मोनू स्टेशन पर रहती है और भीख मांगने का काम करती है। इसकी माता का नाम ऊषा है। मां मजदूरी का काम करती है। इसके दो भाई हैं। एक भाई शादी पार्टी का काम करता है, जिसकी उम्र 16 वर्ष है। मोनू की तीन बहनें हैं और वो भी स्टेशन पर भीख मांगने का काम करती हैं। इससे जो भी पैसा वो कमाती हैं, वो अपने घर में अपनी मम्मी को लाकर देती हैं, जिससे उनके घर का खर्चा चलता है।

क्योंकि इसके दोनों भाई अलग रहते हैं, जो कि घर में बिल्कुल खर्चे के लिए पैसे नहीं देते हैं। स्टेशन पर भीख मांगने के कारण मां का सहारा केवल उसकी बेटियां है। स्टेशन में भीख मांगने के दौरान मोनू की मुलाकात बढ़ते कदम के अध्यक्ष से हुई और उन्होंने मुझसे बात की। उन्होंने मुझे सेंटर के बारे में पूरी जानकारी दी, कि स्टेशन पर रहने वाले व काम करने वाले बच्चों के लिए यह सेंटर चलाया जा रहा है। इस सेंटर में इन बच्चों को शिक्षा के साथ साथ और भी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से सिखाया व पढ़ाया जाता है।

इस सेंटर के बारे में जानने के बाद मोनू सेंटर जाने लगी और वहां की गतिविधियों में भाग लेने लगी। सेंटर से जुड़ने के बाद मोनू में इतना बदलाव आया कि उसने भीख मांगना छोड़ दिया और वह सुबह 10 बजे ही सेंटर चली जाती तथा शाम को 6 बजे तक सेंटर में ही रहती है। वहां वह पढ़ाई करती है, आर्ट एंड क्राफ्ट से सामान बनाना सीखती है।



चेतना संस्था के प्रयास से अब मोनू का आधार कार्ड भी बनवा दिया गया है, जिससे मोनू को अपनी एक खुद की पहचान मिल गई है और इस पहचान को पाकर वह बहुत खुश है। साथ ही इस पहचान की वजह से आज मोनू का बैंक में खाता भी खुल गया है।

अभी भी मोनू सेंटर की सभी गतिविधियों में भाग लेती है। मोनू सेंटर से जाने के बाद जो भी काम करती है और उससे जो पैसे उसे मिलते हैं, वो अपने खाते में जमा करती है। इस तरह बैंक में पैसे जमा करने से उसे भविष्य में मदद मिल सकेगी और खुशी की बात यह है कि मोनू के खाते में अब तक एक हज़ार रूपए जमा भी हो गए हैं। इस बात से वह बहुत खुश है। अब मोनू को ज़रूरत पड़ने पर किसी से भी भीख नहीं मांगनी पड़ेगी। वह अब खुद के ही पैसों से अपने और अपने परिवार की ज़रूरतों को पूरा कर सकेगी

-पूजा

छोटे छोटे कंधों पर कैसे आ जाता है परिवार का बोझ

12 वर्षीय रूबी जो आगरा शहर की बसी राजनगर बस्ती में रहती है। वह चार भाई बहन हैं। वह अपनी माता के साथ रहती है। उसके पिता की मृत्यु होने के बाद वह अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिये अपनी माता के साथ कतरन बिनने का काम करने लगी। लेकिन जब बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूनम ने उसके घर में जाकर उसकी माता से बातचीत की और कहा कि वह अपनी लड़की का दाखिला स्कूल में ज़रूर करवाएं ताकि वह अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके और आगे बढ़ सके। पूनम ने शिक्षा से होने वाले फायदों के बारे में भी उसकी माता को अवगत कराया। उसने उसकी माता को जानकारी दी और रूबी को स्कूल में पढ़ाने के लिए प्रेरित किया। जिससे कि वह रूबी का दाखिला स्कूल में कराने के लिए तैयार हो जाएं।

रूबी की माता ने शिक्षा के बारे में जानने के बाद अपनी बेटी का दाखिला सरकारी स्कूल में करवा दिया। स्कूल जाने के बाद से ही रूबी ने अपना कतरन बीनने का काम छोड़ दिया और वह रोज स्कूल जाने लगी। पर अचानक कुछ दिन के बाद बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूनम को पता चला कि रूबी ने अपना स्कूल छोड़ दिया है तो वह रूबी से मिलने के लिये उसके घर राजनगर गई। वहां जाकर रूबी से बात की और पूछा कि वह स्कूल क्यों नहीं जा रही है। किस कारण से उसे अपना स्कूल छोड़ना पड़ा तो रूबी ने बताया कि जब से मेरी मम्मी की तबियत खराब हुई है, तब से मेरी मम्मी काम पर नहीं जा पा रही है और ना ही अपने बच्चों के लिये खाना बना पा रही है और ना देखभाल कर पा रही है। इस लापरवाही की वजह से भूख के कारण मेरे एक भाई की मौत भी हो गई।

इसलिये मुझे फिर से कतरन बीनने का काम करना पड़ा जिससे मेरे घर का खर्चा चलता है। काम करने के बाद वह अपने घर में रहकर अपने भाई बहन के लिये खाना बनाती है उसके बाद जो बाकी समय मिलता है तो वह घर में रहकर अपने भाई बहन की देखरेख करती है। फिर कतरन बीनने चली जाती है। उसके घर में काम करने वाला कोई नहीं हैं और उसके भाई बहन की देखरेख करने वाला भी कोई नहीं है, जो उसके भाई बहन को खाना पीना बना कर दें सकें। रूबी को इसी वजह से अपना स्कूल छोड़ना पड़ा। रूबी ने कहा कि मैं अगर काम नहीं करूंगी तो मेरे भाई बहन जिन्हें एक वक्त का खाना मिल रहा है वह भी बन्द हो जाएगा और मैं स्कूल चली गई तो मेरे भाई बहन भूखे रह जाएंगे।

-पूनम



छोटे प्रयास से बड़ी सफलता

आगरा रेलवे स्टेशन व उसके आस पास रहने वाले व काम करने वाले बच्चों को नशे से बाहर निकालने के लिये आगरा में एक हार्म रिडक्शन सेंटर चलाया जा रहा है। इस सेंटर में स्टेशन पर रहने वाले व काम करने वाले लगभग 50 बच्चे आते हैं और सेंटर में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों में भाग लेते हैं। सेंटर में बच्चों को नशे से बाहर निकालने के लिये उन्हें पढ़ाई के साथ साथ अन्य मनोरंजक गतिविधियों में भी व्यस्त रखा जाता है, जिससे इन बच्चों का मन कम से कम नशे की ओर जा सके। ये बच्चे जितनी देर सेंटर में रहते हैं, उतनी देर नशे से दूर रहते हैं और इनका मन नशे की ओर नहीं भागता। पर जब यह बच्चे सेंटर बन्द होने के बाद वापस स्टेशन पर पहुंच जाते हैं तो फिर से वह नशा करने लगते हैं। ये सब बच्चे इस अंधेरी दुनियां से बाहर निकलना तो चाहते हैं, लेकिन पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में ये नशे की इस लत से दूर नहीं जा पा रहें हैं। इन बच्चों को नशे से बाहर निकालने के लिये और कड़ी मेहनत करने की ज़रूरत है।

बढ़ते कदम के सदस्य 14 वर्षीय आलम ने बताया कि वह आगरा कैन्ट रेलवे स्टेशन पर रहता है और मछली मार्केट में काम करता है। आलम ने बताया कि जहां वह काम करता है वहां उसके जैसे और ना जाने कितने ही बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और उनमें से बहुत से बच्चे ऐसे हैं, जो वहीं पर काम करने के बाद सो जाते हैं और फिर इसी कारण से बच्चे नशे की लत में फंस जाते हैं। जो बच्चे नशे की लत में फंसे हुए हैं मैं ऐसे बच्चों को समझाता हूं और उनके साथ बातचीत करता रहता हूं। मैं रेलवे स्टेशन पर रहने वाले सभी बच्चों के साथ दोस्ती करके उन्हें रोज़ सेंटर लाकर उनसे बातचीत करता हूं तथा उन्हें नशा छोड़ने के लिये प्रेरित करता हूं और उनके साथ हर एक गतिविधि में भाग लेता हूं। ताकि वह अपने प्रति बच्चों के मन में सच्ची दोस्ती का विश्वास पैदा कर सकें, क्योंकि आलम का मानना है कि हम बच्चे सिर्फ प्यार के भूखे होते हैं और अगर हम जैसे बच्चों से प्रतिदिन प्यार से पेश आएं और हमारे साथ मन से काम किया जाए तो हम बच्चे नशा छोड़ सकते हैं।

हर एक स्टेशन पर रहने वाले साथी को बदला जा सकता है। बस हर दिन ऐसे बच्चों के साथ जुड़े रहने से ही उनके अन्दर बदलाव नज़र आता है और किसी भी काम को करने के लिये लगाव होना बहुत ज़रूरी है और मैं जब से बढ़ते कदम का सदस्य बना हूं तब से मैं यह प्रयास कर रहा हूं कि जो मेरे साथ सेंटर में आते हैं मैं उनका नशा छुड़वाने में सफल हो जाऊं और मेरे इस प्रयास करने से कुछ बाल साथी राजा, कादर, आकाश ने अपना नशा छोड़ दिया है और कुछ सेंटर में आने वाले साथी भी नशा कम करने लगे हैं। यह बात जानने के बाद मुझे बहुत खुशी हुई कि मैंने जिन बच्चों से दोस्ती की थी, आज उन्होंने अपना नशा छोड़ दिया है और वह रोज़ सेंटर में पढ़ने के लिये आते हैं तथा दूसरे बच्चों को भी अपने साथ लेकर आते हैं। इस प्रयास से मुझे अत्यन्त बहुत खुशी मिली है और मैं अब आगे भी नशा करने वाले बच्चों के साथ ऐसे ही प्रयास करता रहूंगा।

-आलम

खोए हुए बच्चे को पहुंचाया उसके घर

मेरा नाम नितिन है मेरी उम्र 13 वर्ष है और मैं आगरा स्टेशन पर रहता हूं। मैं रेल गाड़ी में झाड़ू लगाने का काम काम करता हूं। पर मुझे काम करना अच्छा नहीं लगता। लेकिन मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। जब मैं बढ़ते कदम संगठन का सदस्य बना तो मुझे पता चला कि मैं काम के साथ साथ अपनी पढ़ाई भी कर सकता हूं। यह जानने के बाद मैं समय निकालकर चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे हार्म रिडक्शन सेंटर पर पढ़ने जाने लगा। मेरे लिए सबसे खुशी की बात यह है कि अब गतिविधियों में अन्य बच्चों के साथ मैं भी भाग लेता हूं। अब मैं काम के साथ साथ पढ़ने के लिए जाने लगा हूं। इसके साथ ही मैं दूसरे बच्चों को भी पढ़ने के लिये समझाता हूं। मैं बच्चों की समस्याओं को भी मीटिंग में सबके सामने रखता हूं। मीटिंग के दौरान मैं बच्चों की हेल्पलाइन के बारे में सभी को जानकारी देता हूं।

एक दिन मैं सभी बच्चों के साथ खेल रहा था और उस समय मैं खेलने के बाद जब स्टेशन पर बाकी बच्चों से मिलने के लिये पहुंचा तो मैंने देखा कि एक लड़का आगरा छावनी के रेलवे स्टेशन पर घूमता हुआ मुझे मिला जो बहुत रो रहा था। उसकी उम्र लगभग 11 वर्ष की रही होगी। जब मैंने उसे देखा तो उसके पास गया और उससे पूछा कि उसका नाम क्या है उस बच्चे ने अपना नाम बताते हुए कहा कि उसका नाम राकेश है उसने बताया कि वह अपने गांव से वापस लौटकर अपने घर को जा रहे थे और रेलवे स्टेशन पर ही ना जाने कैसे मैं अपने माता पिता से अलग हो गया। मैंने अपने घरवालों को बहुत ढूंढा पर वह कहीं नज़र नहीं आए और मैं घबराकर रोने लगा और बहुत देर से मैं स्टेशन पर ही घूम घूम कर अपने घरवालों को तलाश रहा था। फिर नितिन उस बच्चे से उसके घर का पता पूछा तो उसने नितिन को अपने घर का पता बताया कि उसका घर आगरा के रामबाग में बसी बस्ती की तरफ है। वह कहने लगा कि मैं अपने घरवालों से बिछड़ गया हूं। उस बच्चे का मनोबल बढ़ाते हुए नितिन ने कहा कि तुम घबराओ नहीं हम तुम्हारे घर को तलाश करेंगे। जब तुम्हारा घर मिल जाएगा तो तुम्हें घर छोड़ देंगे। उसके बाद नितिन राकेश को साथ लेकर उसके घर ढूंढने के लिये चला गया। नितिन रामबाग पहुंचकर उसके माता पिता से मिला और राकेश को उसके माता पिता के पास छोड़ दिया। राकेश के माता पिता ने मुझसे बहुत आदर से बात की और आंटीजी ने मुझे पीने के लिये पानी दिया। फिर अंकल ने मेरा शुक्रिया अदा किया और मुझे शाबासी दी।

-नितिन

नए साल की खुशी में रंगारंग कार्यक्रम के द्वारा बच्चों ने लिया प्रण

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथियों ने 40 बच्चों के साथ मिलकर नया साल मनाया। इस नए साल के अवसर पर एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सभी बच्चों ने अपनी अलग अलग प्रस्तुति दी कुछ बच्चों ने बड़ा ही रोमांचक डांस प्रस्तुत कर यह साबित कर दिखाया कि वह सब आने वाले नए वर्ष के लिये बहुत खुश हैं और कुछ बच्चों ने शायरी और गानों को गाकर धमाल मचा दिया। बच्चों ने नए वर्ष में प्रवेश करने के लिये खूब खुशियां मनाई और अपने पुराने वर्ष को अलविदा कहा।इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों तथा लोगों के बीच समन्वय स्थापित करना और बच्चों के मन में शिक्षा व उनके सुधार के प्रति विश्वास पैदा करना था, ताकि बच्चे बिना किसी समस्या के अपनी बुरी आदतें छोड़ कर अच्छाई का रास्ता अपनाएं। और अपने अन्दर नई ऊर्जा ला सकें ताकि उनके अन्दर बदलाव हों। इस कार्यक्रम के तहत सभी बच्चों को आगरा की जिला अध्यक्ष पूनम जो बढ़ते कदम की ओर से इस कार्यक्रम में मिलने पहुंची। उन्होंने बच्चों को नशा छोड़ने की जानकारी दी और उससे होने वाले नुकसानों से बच्चों को अवगत कराया।

इस कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने पूनम से बातचीत करते हुए कहा कि वह सब लीडर के साथ मिलकर कुछ नया करना चाहते हैं, जिससे दूसरे बच्चों का फायदा हो सकें और कहा कि अब हम सभी लीडर बच्चों से संबंधित अलग अलग मुद्दों पर कार्य करेंगे और उनकी समस्याओं को उजागर करेंगे और इस तरह सभी लीडरों ने दूसरे बच्चों को जानकारी देने का फैसला किया। साथ ही बढ़ते कदम के लीडरों ने नए वर्ष में प्रवेश करने के लिये कुछ वादे भी लिये कि बच्चा अगर किसी समस्या से परेशान होगा तो उसे मिलकर सुलझाया जाएगा।

अन्य बाल साथी जो नशा करते थे उन्होंने आश्वासन दिया कि वह आने वाले वर्ष में प्रवेश करने की खुशी के साथ अपना नशा कम करने की कोशिश करेंगे तथा दूसरे बच्चों को भी नशा करने से रोकेंगे और उन्हें नशे से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में अवगत कराएंगे। यदि कोई भी बच्चा अपने माता पिता व आस पास के लोगों की वजह से परेशान होकर अपराध करना सीख जाता है, तो उन सभी बच्चों की मदद हम बढ़ते कदम के लीडरों द्वारा ज़रूर की जाएगी।

उसके बाद सभी बाल साथियों ने आगरा शहर की जनता से अपील की, कि अगर कोई भी बच्चा मुसीबत में हो तो आप उसकी सूचना चाइल्डलाइन के टोल फ्री नंबर 1098 पर जरूर दें और उस बाल साथी की मदद करें, ताकि वह बच्चा जिस भी कठिन समस्या में फंसा हुआ है, वह उस समस्या से बाहर आ सके। बढ़ते कदम की लीडर 14 वर्षीय प्रियंका ने कहा कि मैं एक लीडर होने के नाते उन लड़कियों के लिये लोगों को जागरूक करूंगी जो लोग अपनी बेटियों को घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं।

15 वर्षीय कन्हैया ने कहा कि मैं इस वर्ष में अच्छे से मन लगाकर पढाई करूंगा और पढ़ाई के साथ साथ वह इस पूरे वर्ष के दौरान सभी सड़क पर रहने वाले बच्चों के साथ अलग अलग गतिविधियों का आयोजन करके उनको जागरूक करूंगा, जिससे बच्चों का मनोबल बढ़ेगा।

15 वर्षीय गौरव ने कहा कि वह इस साल सभी बच्चों की मदद करेगा। चाइल्डहेल्प लाइन नंबर के द्वारा और चाइल्डहेल्प लाइन नंबर के बारे में अपने आस पास के सभी समुदायों में जानकारी फैलाएगा।

13 वर्षीय राजा ने कहा कि वह हार्म रिडक्शन सेंटर में आता है और वह इस नए वर्ष में बच्चों का नशा बन्द करने के लिये बच्चों को समझाएगा। इसी के साथ इस प्रोग्राम का समापन किया गया।

-पूनम

स्टेशनों पर रहने वाले बच्चों ने बताई अपनी आपबीती

बच्चों के साथ हो रहा है दुर्व्यवहार और उनसे कराया जाता है काम



रेलवे स्टेशनों पर रहने वाले बच्चे, जो अपने घर, परिवार को छोड़कर किसी ना किसी कारण भाग कर आ जाते हैं। ऐसे बच्चों को रेलवे स्टेशनों पर अपने रहने का ठिकाना भी मिल जाता है। क्योंकि रेलवे स्टेशन एक ऐसी जगह है, जहां बच्चों को अपने रहने का साधन असानी से मिल जाता है। यहां बच्चों से न कोई कुछ पूछने वाला होता है और न ही कोई सवाल जवाब करने वाला। यहां वो रहते हैं और जो कुछ भी खाने को मिलता है, उसे खाकर वह अपना पेट भर लेते हैं।

ऐसे बच्चे अपने जीवन को जीने के लिए रेलवे स्टेशनों पर ही रहकर कुछ ना कुछ काम करते हैं, जैसे कबाड़ा बीनना, गुटखा बेचना, पानी की बोतलें बेचना या चना मसाला बेचकर यह बच्चे कुछ पैसे कमा लेते हैं। इन बच्चो की ज़्यादातर उम्र 12 से 16 साल तक की होती है और इतनी उम्र में ही ऐसे बच्चो का गिरोह बन जाता है। इस तरह से स्टेशनों पर बच्चों की संख्या बढ़ जाती है और फिर उन बच्चों से ज़बरदस्ती से भी कार्य करवाया जाता है। इसी बात को जानने के लिये बढ़ते कदम के जिला सचिव ने रेलवे स्टेशनों पर मीटिंग की, जिसमें बहुत से बच्चों ने भाग लिया और अपनी परेशानी के बारे में बताया। चर्चा के दौरान 10 वर्षीय (परिवर्तित) नाम जाकिर ने बताया कि वह रेलवे स्टेशन पर रहता है और वहां काम करता है। उसके पिता बेलदारी का काम करते हैं। उसके तीन भाई व दो बहनें हैं। जाकिर ने बताया कि वह जब दो साल पहले अपने घर से भागकर स्टेशन पर आया था। यहां आने के बाद जाकिर के कुछ नए दोस्त बन गए थे, जो पहले से ही स्टेशन पर रहते थे। उन्हीं दोस्तों से वह नशा करना सीख गया और नशे के साथ साथ चोरी भी करना सीख गया। उसने बताया कि दोस्तों के साथ ही मैं रेल मे कबाड़ा चुनने का काम करने लगा। जिस रेलगाड़ी में कबाड़ा बीनता था। उस रेल का जो ड्राईवर था वह मेरे पास आया। क्योंकि मैं उसकी रेलगाड़ी का कबाड़ा चुनकर बेचता था। उस ड्राईवर ने मुझसे कहा कि मैं रेलगाड़ी में झाड़ू लगाऊंगा तो वह मुझे 100 रूपए रोज़ देगा। उस दिन से मैं रेलगाड़ी में झाड़ू लगाने लगा।

उसके बाद 13 वर्षीय (परिवर्तित) नाम राजू ने बताया कि हमारे यहां स्टेशन पर बहुत सारे बच्चे कबाड़ा बीनने जाते है। लेकिन उनमें से कुछ ही बच्चे ऐसे हैं, जो सच बोलते हैं। राजू ने कहा कि भईया मैं आज आपको स्टेशन की कुछ सच्चाई से रूबरू कराना चाहता हूं। भईया मैं दो, तीन साल से स्टेशन पर कूड़ा बीनने का काम कर रहा हूं। मैंने देखा है कि हम जैसे कुछ बच्चों के साथ दुर्यव्यवहार किया जाता है। यहां कूड़ा बीन रहे बच्चों को पुलिस वाले परेशान करते हैं। वो उन बच्चों को अपने घर ले जाकर के काम करवाते हैं। उनसे अपने घर का शौचालय भी साफ करवाते हैं।

अगर बच्चे इस बात का विरोध करते हैं तो पुलिस वाले उन्हें मारते हैं और मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। जब मैं कूड़ा बीन रहा था, तब एक पुलिस वाला मुझे जबरदस्ती अपने घर ले गया और वहां ले जाकर मुझसे अपने घर का काम करवाया। इसलिये हम सभी बच्चों को स्टेशन पर कूड़ा बीनते हुए डर लगता है। उसके बाद बढ़ते कदम के जिला सचिव ने स्टेशनों पर रह रहे सभी बच्चो से कहा कि जो राजू ने हम सब को जानकारी दी है क्या यह बात सच है, तो सभी बच्चों ने कहा कि यह बात सच है। क्योंकि हमारे साथ भी ऐसा ही होता है। वहां मौजूद पुलिस वाले हम बच्चों से शौचालय साफ करवाते हैं जिसके डर से हम स्टेशन छुपकर जाते हैं। क्योंकि हमारा काम ही कूड़ा बीनने का है। हम सभी बच्चे चाहते हैं कि पुलिस वाले अंकल या भईया हमारे साथ इस तरह का दुर्व्यवहार ना करें और हम बच्चों से अपने घरों का काम ना कराएं और ना ही हम से अपने घर का शौचालय साफ करवाएं।

-महेन्द्र

बच्चों के खेलने के लिये नहीं है मैदान



झांसी के 14 वर्षीय बाल रिपोर्टर जसवंत और 16 वर्षीय महेंद्र ने गढ़मऊ में बसी एक बस्ती में जाकर बच्चों को एकत्रित करके सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया। जिसमें 30 बच्चों ने भाग लिया और अपनी अपनी समस्याओं को उजागर किया। फिर एक दूसरे के परेशानियों पर चर्चा की गई।

बातचीत के दौरान गढ़मऊ कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट के बढ़ते कदम के लीडर 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सोनू ने कहा कि हमारे यहां खेलने के लिये कोई जगह या मैदान नहीं है, जहां हम खेल सकें। जिस मैदान में हम पहले खेला करते थे उस मैदान में लोग जुआं खेलते हैं और उस मैदान में कच्ची शराब भी मिलती है।

जिस कारण हमारे माता पिता हमें वहां खेलने के लिये नहीं जाने देते। वहां जाने को मना करते हैं और अगर हम बच्चे किसी पास के खेत के खाली मैदान में खेलने जाते हैं तो वहां के खेत के मालिक भी हमें मारकर भगा देते हैं।

बढ़ते कदम के लीडर 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया यहां पर खेलने के लिये कोई जगह नहीं है जिस कारण हम सभी बच्चे बैट बॉल नहीं खेल पाते। उसके बाद 12 वर्षीय राजू ने बताया कि हमारे यहां एक तालाब है उस तालाब के पास कोई भी बड़ा या बच्चा वहां जाता है तो वहां भी हमें मारकर भगा दिया जाता है।

और वहां के जो लोग हैं वह उस तालाब के पास जाने पर हमको उठाकर भी ले जाते हैं। हमें अपने घर ले जाकर काम करवाते हैं तथा हमारे घरवालों को फिर बाद में खबर भिजवाते हैं और दो या उससे ज्यादा दिन बाद हम बच्चों को छोड़ते हैं और कहते हैं कि अगर कोई भी बच्चा या बड़ा उस तालाब के आसपास जाएगा तो वह इसी तरह हमें पकड़कर अपने घर ले जाएंगे।

हमारे यहां के बच्चों को कई बार रात में भी उठा कर ले जाते हैं। हम बच्चों को ले जाकर हमारे साथ मारपीट करते हैं। इसी कारण हमारे माता पिता और हम बच्चों को बहुत ज्यादा डर लगता है। जसवंत और महेंद्र ने बच्चों को समझाते हुए कहा कि आपको डरने की ज़रूरत नहीं है। अगर आप सभी बच्चों के साथ इस तरह की कोई हरकत करे तो आपको डरना नहीं है।

जसवंत ने जानकारी देते हुए बताया कि आप बिना झिझक 100 नम्बर को फोन करके अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं तथा पुलिस को जानकारी दें सकते हैं। अगर आप अपनी परेशानी पुलिस को बता देंगे तो वह आपकी ज़रूर मदद करेगी। अन्यथा आप अपने माता पिता से यह बातें ज़रूर बताएं और अपनी सुरक्षा के लिये सावधानी बरतें। सभी बच्चों को यह सब बात बताने के बाद मन का थोड़ा सा भय निकला और उन्हें इस बात की जानकारी प्राप्त हुई। जिससे दूसरे को सतर्क कर सकें और स्वयं अपनी मदद कर सकें।

-जसवंत

बढ़ते कदम के सदस्यों ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी से की मुलाकात



सड़क व कामकाजी बच्चे जिन परिस्थितियों में अपना जीवन जी रहे हैं, उससे हमारे समाज के लोग दूर भागते हैं और उनसे बात नहीं करते। जिस कारण इन बच्चों का मनोबल कम हो जाता है। कोई भी व्यक्ति सड़क और कामकाजी बच्चों से प्यार से बात नहीं करता है।

जब भी यह बच्चे किसी भी बड़े अधिकारी को देखते हैं तो इन्हें बहुत अच्छा लगता है। पर इन बच्चों को उन अधिकारियों से मिलने का मौका नहीं मिल पाता और बच्चों के मन की उमंग मन में ही रह जाती है। कभी भी यह बच्चे बड़े अधिकारियों से मुलाकात भी नहीं कर पाते और ना उनके पास जाकर अपनी समस्याएं उन्हें बता पाते हैं। लेकिन इन बच्चों को ये मौका मिला। संगठन द्वारा बच्चों का हेल्थ चेकअप करवाया गया। हेल्थ चेकअप के दौरान सभी बच्चों ने अपने स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके साथ ही साथ इन बच्चों की मुलाकात **सी.एम.ओ. डॉ. विनोद यादव** जी से कराई गई। **सी.एम.ओ. जी** ने सभी बच्चों को बहुत ही प्रेम पूर्वक मिलने के लिए बुलाया। सभी बच्चों ने भी सी.एम.ओ. सर को नमस्ते किया और अपने बारे में बताया। **डॉ. विनोद यादव** जी ने बच्चों से पूछा कि वह बढ़ते कदम संगठन के सदस्य क्यों बनें?

तो 14 वर्षीय फरीन ने बताया कि यह हमारा खुद का संगठन है, जिसमें हम अपनी बातों को खुलकर कह सकते हैं। क्योंकि यहां हमें कोई रोकता टोकता नहीं है। हम बच्चों की जो भी समस्या होती है तो हम सब मिलकर उस समस्या का समाधान निकाल लेते हैं और हम दूसरे बाल साथियों की मदद भी करते हैं। यह बात सुनने के बाद **डॉ. विनोद यादव** जी बहुत खुश हुए और फरीन को शाबासी दी। उसके बाद आदिल ने बताया कि हम बच्चों का एक अखबार भी निकलता है, जो सिर्फ सड़क व कामकाजी बच्चों का है। इस अखबार की खास बात यह है कि इस अखबार को बच्चे ही लिखते हैं। इस अखबार का नाम **बालकनामा** है। उसके बाद **सी.एम.ओ.** ने पूछा कि तुम सभी को क्या क्या परेशानी होती है?तो 12 वर्षीय समीर ने बताया कि सर हमें अस्पताल में घंटों लाईन में लगे रहना पड़ता है फिर भी हमें दवाई नहीं मिल पाती। जवाब देते हुए **डॉ. विनोद यादव** जी ने कहा कि आप बच्चों को कोई भी दवाई लेना हो या चेकअप कराना हो तो आप हमसे सीधा संपर्क कर सकते हैं। आप सभी बच्चों को अब से कोई परेशानी नहीं होगी। उसके बाद **डॉ. विनोद यादव** जी ने सभी बच्चों को नाश्ता करवाया और उन्हें ढेर सारी शुभकानाएं दी।

-जसवंत

रेलवे स्टेशनों पर रहने वाले बच्चों ने गणतंत्र दिवस पर दिखाई अपनी प्रतिभा



हमारे आस पास ऐसे बहुत से लोग और बच्चे होते हैं, जो अलग अलग प्रकार का नशा करते हैं जैसे-व्हाइटनर एट्यूब, चरस, गांजा, स्मैक, एसिगरेट, शराब इत्यादि। यह नशा इन बच्चों को कहीं पर भी आसानी से मिल जाता है। इस नशे का सेवन करके हमेशा बच्चे नशे में धुत रहते हैं। उन्हें दीन दुनिया की कुछ भी खबर नहीं होती कि वह इस तरह अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। उन्हें समझाने वाला और उनकी प्रतिभाओं को निखारने वाला कोई नहीं होता। क्योंकि इन बच्चों को कहीं मौका ही नहीं मिलता और इस कारण से यह बच्चे अपने अंदर के प्रदर्शन से छिपी कलाओं वंचित होते हैं। लेकिन ऐसे ही कुछ 20 से 30 नशा करने वाले बाल साथियों को बढ़ते कदम संगठन से जुड़कर अपनी प्रतिभा को दिखाने का मौका मिला।

यह बच्चे पिछले एक साल से सेंटर आ रहे हैं। जब यह बच्चे सेन्टर से जुड़े थे, तब यह बहुत नशा करते थे। लेकिन धीरे-धीरे इनका नशा कम हो गया है और नशा कम करने के बाद ही इन बच्चों ने अपने अंदर छिपी कलाओं को पहचाना है। इन बच्चों ने सेन्टर आने के बाद डांस सीखा और अपनी जी तोड़ मेहनत के बाद इन बच्चों को अपना हुनर दिखाने का मौका मिला। क्योंकि इन सभी बाल साथियों को डी.आर.एम. साहब और आर.पी.एफ कमांडर जी ने गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर अपनी प्रतिभा को सबको दिखाने के लिये आमंत्रित किया। इस शुभ अवसर को प्राप्त कर बाल साथी बहुत खुश हुए। सभी बच्चे गणतंत्र दिवस के अवसर पर इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जाकर बच्चों ने अपना धमाकेदार डांस दिखाकर लोगों का दिल जीत लिया। बच्चों की इतनी धमाकेदार प्रस्तुति को देखकर डी.आर.एम. साहब और आर.पी.एफ कमांडर व अन्य अधिकारीगण दंग रह गये। और कहने लगे कि जो बच्चे नशा करते हैं, यहां वहां घूमते रहते हैं, वे बच्चे इतने प्रतिभाशाली भी हैं। उन्होंने सभी बाल साथियों को शाबासी देते हुए कहा कि इसी तरह अपने आपको बदल कर आप सभी एक दिन समाज के अच्छे नागरिक बन सकते हैं। आप एक दिन अपना नाम रोशन करेंगे। यह सब बातें सुनकर बच्चे बहुत खुश हुए। क्योंकि जो अधिकारी इन्हें भला बुरा कहते थे, आज वही अधिकारी उनकी प्रतिभा का गुणगान कर रहे थे। बच्चों ने कहा कि यह बात हमारे लिये सबसे बड़ा उपहार है, जो हमें आगे बढ़ने के लिये हमेशा प्रेरित करती रहेगी।

-महेन्द्र

लड़की हूं तो क्या हुआ पर हिम्मत तो है

खुद की आत्मरक्षा के लिये उठाया कदम

हमारे समाज में आज भी लड़कियों को ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाता। उनके साथ आज भी बदसलूकी की जा रही है। आज भी उन्हें अपने घरो से बाहर नहीं निकलने दिया जाता है। वह अपने घर से बाहर जाती हैं तो उनके माता पिता उन्हें बहुत मारते पीटते हैं और उनसे गाली गलौच करते हैं। हमारे समाज में लड़कों को जितना सम्मान दिया जाता है, उतना सम्मान लड़कियों को नहीं दिया जाता।

घर की बेटियों को हर काम करने लिये रोका जाता है। पर घर के जो बेटे होते हैं, उन्हें कभी रोका नहीं जाता। ऐसी दुर्दशा लड़कियों की हो रही है। ग्वालियर जैसे शहरों में आज भी लड़कियों पर अत्याचार किया जाता है। उनको मारा पीटा जाता है और छोटी छोटी गलतियों पर माता पिता उन पर ज़ुल्म करते हैं। कुछ दिन पहले की ही बात है एक दिन बढ़ते कदम के जिला सचिव ताहिर अपने कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट पर बच्चों से बात कर रहे थे तो देखा कि एक 14 वर्षीय लड़की गन्दे और फटे कपड़ो में परेशान बैठी थी। यह देख ताहिर ने उस लड़की से बात की और उससे पूछा कि वह क्यों इस तरह बैठी है।

तो उसने बताया कि उसके माता पिता उसे रोज़ मारते हैं। ऐसा एक भी दिन नहीं जाता कि उसकी पिटाई ना लगती हो। वह अपने घर में बहुत परेशान रहती है इसलिये वह अपने घर से बाहर बैठी थी। ताहिर ने उसकी सभी बातों को सुनकर सबसे पहले उसे समझाया और उसे बताया कि हम बच्चों का एक हेल्पलाइन नम्बर है, जिससे कोई भी बच्चा अपनी किसी भी समस्या या परेशानी में अपने लिये मदद ले सकता है। यह सेवा 24 घंटे बच्चों के लिये कार्य करती है और साथ ही इस नम्बर पर फोन करने से पैसे भी नहीं लगते क्योंकि यह नम्बर निशुल्क है। यह सब बातें सुनने के बाद वह लड़की शांत हो गई और ताहिर की सभी बातों को ध्यान से सुनने लगी। वह लड़की वापस अपने घर चली गई।

जब उसके माता पिता ने फिर उसे किसी बात को लेकर मारा तो वह रोने लगी और रोते रोते उसे अचानक चाइल्ड हेल्प लाइन नम्बर याद आ गया और उसने अपने बचाव के लिये चाइल्डलाइन को फोन करके अपनी समस्या के बारे में बताया। उसने कहा कि उसे इस नम्बर की जानकारी बढ़ते कदम के जिला सचिव से मिली है।



उसके बाद चाइल्डलाइन के दो सदस्य उसके घर पहुंचे और उसके माता पिता को अपने साथ समझाने के लिए ले गये, ताकि वह अपनी बच्ची पर अत्याचार ना करें और किसी भी बच्चे को मारें पीटें ना क्योंकि बच्चों को मारना-पीटना कानूनी अपराध है। -ताहिर

बच्चों ने स्वाइन फ्लू के खिलाफ निकाली रैली



जैसा कि आप जानते हैं कि स्वाइन फ्लू एक बहुत बड़ी बीमारी है और इस बीमारी को फैलने में ज्यादा समय नहीं लगता। क्योंकि यह बीमारी ऐसी है जो हवा से फैलती है। यह छुआछूत की बीमारी है। इसके लक्षण बुखार, खांसी, खराब गला, बहती या बंद नांक, थकान, अतिसार, उल्टी, बलगम में खून आना। यह सभी लक्षण स्वाइन फ्लू के हैं। इस बीमारी से बहुत से बच्चों को नुकसान पहुंचा है तथा इस बीमारी की चपेट में आकर बहुत से बच्चे बीमार हुए हैं। स्वाइन फ्लू की चपेट में आकर बढ़ते कदम के सदस्य राजू की मृत्यु हो गई, जो ग्वालियर के सिंधिया नगर में रहता था। जब यह बात बढ़ते कदम के जिला सचिव ताहिर को पता चली तो उन्होंने अपने साथ बच्चों का एक ग्रुप बनाया और स्वाइन फ्लू के खिलाफ एक जागरूकता रैली निकालने की योजना बनाई।

इन बच्चों ने बैठक के दौरान चर्चा की, कि हम सभी बच्चे ग्वालियर में सभी जगह जाकर स्वाइन फ्लू के बारे में जानकारी देंगे। और लोगों को इस बीमारी के बारे में सावधान करेंगे, ताकि लोग और बच्चे इस बीमारी से बच सकें। इन सभी बच्चों व बढ़ते कदम के लीडरों ने हर जगह जाकर एक समूह बनाया और समूह बनाने के बाद सबसे पहले उन्हें इस बीमारी के लक्षणों के बारे में जानकारी दी। उसके बाद जिन बच्चों के साथ बढ़मे कदम के लीडरों ने बैठक की उन बच्चों का सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र में चेकअप भी करवाया। ताकि उन्हें इस बीमारी से दूर रखा जा सके। साथ ही इस बीमारी से बचने के लिए उन्हें कुछ सावधानियां भी बरतने को कहा गया।

स्वाइन फ्लू से बचने के लिए क्या न करें ?

1 हाथ ना मिलाएं, गले ना लगें।

2 दैहिक संपर्क में आने वाले अन्य अभियान न करें।

3 चिकित्सक के परामर्श के बिना दवाई न लें।

स्वाइन फ्लू से दूर रहने के लिए निम्न उपाय अपनाएं

1 छींकते और खांसते समय अपने मुंह और नाक को रूमाल या कपड़े से अवश्य ढकें।

2 प्रायः अपने हाथ साबुन या पानी से धोएं।

3 नाक आंख को ना छुएं।

4 भीड़भाड़ वाली जगह से बचें, फ्लू से संक्रमित लोगों से एक हाथ से अधिक की दूरी पर रहें।

5 बुखार, खांसी और गले खराश हो तो सार्वजनिक जगहों से दूर रहें।

6 खूब पानी पिएं और पौष्टिक आहार लें।

7 पूरी नींद लें।

इस तरह से बढ़ते कदम के सदस्यों ने मिलकर बच्चों का हेल्थ चेकअप करवाया और इसके साथ-साथ समाज व समुदायों को भी इस बीमारी के प्रति जागरूक किया।

-ताहिर

बढ़ते कदम के बाल सदस्यों ने खेली गली क्रिकेट





वर्ल्ड कप का बुखार हर किसी के सिर चढ़कर बोल रहा है और इससे सड़क व कामकाजी बच्चे भी अछूते नहीं हैं। जब भारतीय टीम का मैच दूसरे देशों की क्रिकेट टीमों के साथ होता है, तो स्टेडियम में तिरंगें के तीन रंगों में रंगे हुए चेहरे, भारतीय क्रिकेटरों के समान नीली जर्सी पहने हुए लोगों और छक्कों तथा चौकों के नारे लगाते हुए देश प्रेम की भावना से भरी भीड़ का नजारा देखते ही बनता है। क्योंकि क्रिकेट सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला और दुनिया भर में लोकप्रिय खेल है। हर व्यक्ति इन मैचों को देखना पसंद करता है। यदि देखा जाए तो क्रिकेट एक ऐसा खेल है, जिसकी शुरूआत ही गली-मोहल्लों से होती है। हर महान खिलाड़ी इन जगहों से ही इस खेल की शुरूआत करता है और आगे चलकर बड़ी-बड़ी पारियां खेलता है। महान क्रिकेटर **सचिन तेंदुलकर** भी ये कहते हैं कि, "उन्होंने इस खेल की शुरूआत गलियों से ही की थी।"

इस खेल का खुमार न जाने कितने लोगों के सिर चढ़कर बोलता है। इनकी इस फेहरिस्त में सड़क व कामकाजी बच्चों की भी एक अच्छी खासी संख्या है, जो क्रिकेट के अत्यधिक प्रेमी हैं। इन बच्चों की इस बात को ध्यान में रखते हुए सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम के संयुक्त तत्वाधान में विश्व कप के दौरान ग्वालियर में "गली क्रिकेट" नाम के अनोखे क्रिकेट का आरंभ किया गया। यह क्रिकेट ग्वालियर के बढ़ते कदम के सड़क व कामकाजी बच्चों व 6 सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के बच्चों के बीच खेला गया।

यह गली क्रिकेट सिरौल में आयोजित किया गया। यह मैच बढ़ते कदम के सदस्यों व डोंगरपुर सरकारी स्कूल के बच्चों के बीच खेला गया। इस मैच में दोनों ही टीम के 11-11 खिलाड़ियों ने भाग लिया और 10 ओवर के इस मैच में बढ़ते कदम की टीम ने धुआंधार बल्लेबाजी करते हुए 35 रन बनाएं और डोंगरपुर सरकारी स्कूल की टीम 18 रनों पर ही सिमट कर रह गई।

डोंगरपुर स्कूल के प्रिसिंपल श्री नारायण जी ने विजेता बनी बढ़ते कदम की टीम के कप्तान प्रशांत को ट्रॉफी दी। श्री नारायण जी ने कप्तान प्रशांत को जीत की बधाई देते हुए कहा कि चेतना संस्था ने इस गली क्रिकेट का आयोजन करके बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। इस प्रकार के खेलों के आयोजनों से बच्चों के बीच एक उत्साह का संचार होता है और उनके अंदर खेल की भावना को बल मिलता है।

विजेता टीम के कप्तान प्रशांत ने कहा कि यह जीत हमारे लिए उतनी मायने नहीं रखती, जितनी कि टीम इंडिया का वर्ल्ड कप जीतना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। हम भारतीय टीम को विश्व की सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट टीम मानते हैं।

इस क्रिकेट के आयोजन में चेतना संस्था के सदस्यों व डोंगरपुर स्कूल के प्रिसिंपल व अध्यापकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

-प्रियंका

आइए जानते हैं चाइल्ड हेल्पलाइन नंबरों के बारे में

चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 : चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर पर फोन करके आप किसी भी समय मुसीबत में फंसे बच्चे की मदद कर सकते हैं। यह सेवा 24 घंटे उपलब्ध है और यह निःशुल्क सेवा है।

पुलिस हेल्पलाइन नंबर 100 : पुलिस हेल्पलाइन नंबर एक निःशुल्क सेवा है। जिस पर आप किसी भी समय फोन करके मदद ले सकते हैं।

मूल्य : 2.00 रुपया

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

जून-जुलाई-2015

बालकनामा

अंक-51 सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार

बढ़ते कदम से जुड़ने के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :
बढ़ते-कदम
31, बेसमेंट, गौतम नगर
नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644470

बढ़ते कदम संगठन के सड़क व कामकाजी बच्चों ने कानूनी नीतियों व योजनाओं के लिए दिए सुझाव

वैसे तो सरकार द्वारा हर साल बच्चों के लिए बहुत सारी कानूनी नीतियां और योजनाएं बनाई जाती हैं, लेकिन ये सब जमीनी हकीकत से परे कागजों तक ही सिमट कर रह जाती हैं। इसका कारण यह है कि ये नीतियां और कार्यक्रम उन बच्चों तक पहुंच ही नहीं पाते, जिन्हें इनकी आवश्यकता होती है। और हमारे नीति निर्माता इनको बनाने के बाद खुद को बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त कर लेते हैं। लेकिन हम सभी के लिए यह बहुत ही चिंता का विषय है कि जो बच्चे सड़कों व फुटपाथों पर अकेले रहकर जीवन यापन कर रहे हैं, उनके पास न तो कोई कानूनी सुविधाएं हैं और न ही उनके लिए इस प्रकार की कोई नीतियां बनाई गई हैं।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए बढ़ते-कदम संगठन द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में कानूनी नीतियों व जरूरतों के बारे में अपनी बात रखते हुए 15 वर्षीय चंदन ने कहा कि बहुत से बच्चों को अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए काम करना पड़ता है क्योंकि उनके माता पिता या तो वृद्ध हैं या शारीरिक रूप से विकलांग हैं। इस कारण बच्चों को काम के साथ अपने माता पिता का ख्याल भी रखना पड़ता है। इसलिए मैं चाहता हूं कि ऐसे बच्चों के लिए सरकार कोई ऐसा कानून या प्रावधान बनाए, जिससे उन बच्चों के परिवार को आर्थिक सहयोग पहुंचाया जा सके। इन बच्चों का सही विकास हो और इनके उज्ज्वल भविष्य की जिम्मेदारी ली जाए।

15 वर्षीय शंभू का मानना है कि हमें सड़क व कामकाजी बच्चों की कुशलता को बढ़ाना चाहिए। वैसे तो सरकार द्वारा बच्चों के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग की सुविधाएं प्रदान की गई हैं पर उन वोकेशनल ट्रेनिंग में उन बच्चों को ही मौका मिल पाता है जो 10वीं या 12वीं पास होते हैं। इस कारण बहुत से बच्चे जो सड़कों पर रहकर अपनी गुजर बसर कर रहे हैं वो पीछे रह जाते हैं। हम सभी के लिए यह बड़े ही दुख की बात है कि शिक्षा के अभाव के कारण हम बच्चों को यह मौका नहीं मिल पाता। मैं चाहता हूं कि सरकार ऐसे बच्चों के लिए भी वोकेशनल ट्रेनिंग की सुविधाएं प्रदान करें जो दसवीं पास तो नहीं हैं लेकिन कुछ सीखना चाहते हैं।

15 वर्षीय धीरज ने कहा कि जो बच्चे नशा करते हैं उन बच्चों के लिए सरकार द्वारा अब तक कोई स्पेशल नाइट सेंटर नहीं बनवाएं गए हैं, जहां उन बच्चों को सभी सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। मैं चाहता हूं कि ऐसे बच्चों लिए स्पेशल नाइट सेंटरों का निर्माण किया जाए, जिसमें उन बच्चों की सुरक्षा व सुधार के लिए अलग अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।

15 वर्षीय चांदनी ने कहा कि क्या हमारी सरकार ने कभी यह सोचा है कि बच्चे सड़कों पर कैसे और क्यों आ जाते हैं। क्योंकि इनमें से अधिकतर बच्चों के माता पिता के पास घर नहीं है, उनके के पास रोजगार नहीं है। वह अपने बच्चों का पेट भरने के लिए इधर उधर काम करते हैं और रैन बसेरों व फुटपाथ पर आकर रहने लग जाते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि



इस समस्या से बच्चों को दूर रखने के लिए सरकार को चाहिए कि बच्चों के विकास के लिए और उनके जीवन को सुधारने के लिए उनके माता पिता को रोजगार दिया जाए, जिससे वह अपने बच्चों से काम ना करवाएं।

13 वर्षीय अभिषेक ने कहा कि जो बच्चे अनाथ हैं और वह अपने किसी रिश्तेदार के साथ रहते हैं। ऐसे में बच्चे उन्हें छोड़कर सेंटर होम नहीं जाना चाहते तो सरकार को चाहिए कि कोई ऐसा कानून या प्रावधान हो जिससे बच्चों को वहीं पर रहकर आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाए, और उनकी शिक्षा हेतु पूरी जिम्मेदारी ली जाए। ताकि बच्चे को अपना जीवन जीने के लिए काम ना करना पड़े।

16 वर्षीय पूनम ने कहा कि सन् 2015 में जो हमारी सरकार ने एक नया कानून बनाया है कि 14 साल का बच्चा अब काम कर सकता है बशर्ते उसे आधे दिन पढ़ाई करनी है। लेकिन अगर किसी बच्चे के माता पिता अपने बच्चे को पढ़ने नहीं देना चाहते हैं और इस कानून का फायदा उठाकर उससे काम करवा रहे हैं, तो ऐसे बच्चे का तो पूरी तरह से शोषण किया जाएगा। ऐसी परिस्थिति में उस बच्चे की जिम्मेदारी कौन लेगा। मैं चाहती हूं कि हम बच्चों की सुरक्षा हेतु सरकार द्वारा कोई ऐसा कानून बनाया जाए, जिसमें बच्चे की सही परवरिश व शिक्षा की पूरी जिम्मेदारी ली जाए और उस कानून का कोई गलत फायदा ना उठा सके।

16 वर्षीय आकाश ने कहा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बारे में अब तक किसी को नहीं पता कि हमारे समाज में उनकी कितनी संख्या है मैं तो सरकार से यह अपील करना चाहता हूं कि हमारी सरकार द्वारा यह कार्य प्रणाली में लाया जाए कि हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए एक अलग से टीम बनाई जाए। जिसमें हम बच्चों का सर्वे किया जाए तथा हम बच्चों को भी गिनती में लाया जाए। ताकि सरकार सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए उनके हिसाब से योजना या कानून बना सके और उसे लागू कर सके।

-शन्नो (19 वर्ष)

संपादकीय

संपादकीय
प्यारे साथियों,
एक बार हम फिर से आपके बीच अपना अखबार लेकर उपस्थित हुए हैं। साथियों, जैसा कि आप जानते हैं कि हम हर बार सड़क व कामकाजी बच्चों से जुड़े कुछ अहम मुद्दों व जानकारियों को आप तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं। इस बार भी हमने सड़क व कामकाजी बच्चों से कानूनी नीतियों व योजनाओं जैसे- किशोर न्याय अधिनियम, बाल विवाह व बाल श्रम निषेध कानून, राइट टू एजुकेशन, पॉक्सो इत्यादि के बारे में बात की। उनके विचार जानें और यह जानने का प्रयास किया कि आखिर क्या कारण है कि बच्चों तक ये कानूनी नीतियां और सुविधाएं नहीं पहुंच पा रही है।

इसके साथ ही आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि बढ़ते कदम संगठन के सदस्य समुदायों, झुग्गी झोपड़ियों, स्टेशनों व फुटपाथों पर रहने व काम करने वाले बच्चों को स्कूल जाने के लिए जागरूक कर रहे हैं। ये सभी बाल साथी बच्चों के साथ साथ उनके माता पिता को भी इन बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बाल साथियों के इस प्रयास से बहुत से बच्चों का स्कूल में दाखिला भी हो गया है।

इस प्रकार सड़क व कामकाजी बच्चों से जुड़ी बहुत सारी समस्याओं व जानकारियों के साथ हमारा यह अखबार बालकनामा प्रकाशित हुआ है। हमें आशा है कि हमेशा की तरह इस बार भी आपको यह अंक अवश्य पसंद आएगा।

पिछले छह महीने से हम यह अखबार विभिन्न दूतावासों (एम्बेसी) में भेज रहे हैं।

यदि इस अखबार से जुड़ा कोई अनुभव या सुझाव आप हमारे साथ बांटना चाहते हों तो ऊपर दिए गए पते पर संपर्क करें। -संपादकीय टीम

बालश्रम की यह कैसी परिभाषा?



तोता : उड़ते-उड़ते एक पेड़ की डाली पर बैठ जाता है और मैना से कहता है कि और सुनाओ मैना क्या खबर है...?

मैना : खबर क्या सुनाऊं तोता... कुछ समझ में ही नहीं आ रहा...?

तोता : क्यों...क्या हुआ मैना...? तुम बहुत उदास लग रही हो...

मैना : हां तोता...बात ही कुछ ऐसी है कि मैं बहुत परेशान हूं...

तोता : बताओ तो सही कि आखिर बात क्या है..?

मैना : तुम्हें पता है तोता... सरकार ने यह अनुमति दे दी है कि 14 साल की उम्र का कोई भी बच्चा किसी भी प्रकार का काम कर सकता है और कानून के तहत यदि कोई भी बच्चा, जो बाल श्रम कर रहा है या उससे बाल श्रम करवाया जा रहा है, उस पर कोई कानूनी प्रक्रिया नहीं की जा सकती....यानि कि अब कोई भी बच्चा जो 14 साल का है, उससे बिना किसी भय के जबरन काम करवाया जा सकता है...

तोता : पर मैना...सरकार ऐसा कैसे कर सकती है.... भारत सरकार ने तो स्वयं भी 1989 में यूनाईटेड नेशन कन्वेंशन ऑफ चाइल्ड राइट्स (यूएनसीआरसी) को माना है, जिसके तहत बाल हित सर्वोपरी माना गया है। और यदि कोई 14 साल का बच्चा काम करता है तो यह उसके लिए उचित नहीं होगा...

मैना : हां तोता... सोचने वाली बात है कि जब सख्त कानून के चलते इन बच्चों से इतना काम करवाया जा रहा है, जिसके कारण देश में बाल श्रमिकों की संख्या बढ़ती जा रही है तो बिना कानूनी हस्तक्षेप के कितने बच्चों को बाल मजदूरी व बंधुआ मजदूरी का शिकार होना पड़ेगा।

तोता : हां मैना...लेकिन क्या तुमने इस विषय पर बढ़ते कदम के बाल साथियों से बात की... उनकी इस विषय पर क्या राय है...?

मैना : नहीं तोता... पर चलो हम उनसे चलकर मिलते हैं और उनके विचार जानते हैं...

(तोता मैना उड़कर बढ़ते कदम

शेष पृष्ठ 2 पर

बढ़ते कदम संगठन के सलाहकार को लंदन से मिला बुलावा

अंतर्राष्ट्रीय मीटिंग में रखेंगे बच्चों की राय



साथियों, बढ़ते कदम संगठन के सभी सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए यह बहुत ही खुशी की बात है कि संगठन के सलाहकार विजय कुमार को लंदन से सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए आयोजित मीटिंग में भाग लेने का आमंत्रण आया है। ज्ञातव्य हो कि यह बैठक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए क्या कानूनी नीतियां व योजनाएं होनी चाहिए, इस पर आयोजित की जा रही है। इस बैठक में बढ़ते कदम संगठन की ओर से सलाहकार विजय कुमार कानूनी नीतियों व कार्यक्रमों पर सदस्यों द्वारा दिए गए इन सुझावों व विचारों को रखेंगे।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने दिल्ली सरकार से मांगें 45 करोड़ रुपए

तव्य हो कि दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली वासियों से बजट बनाने में मदद हेतु सुझाव मांगे थे। जिसके चलते ''बढ़ते कदम'' सड़क व कामकाजी बच्चों का एक संगठन है, जो सामाजिक संस्था चेतना द्वारा पोषित है। इस संगठन द्वारा सड़क व कामकाजी बच्चों के बजट पर चर्चा करने हेतु संगठन के सदस्यों की एक बैठक बुलाई गई। इस बैठक में संगठन के सभी सदस्यों ने चर्चा करके दिल्ली सरकार को सुझाव देने हेतु 45 करोड़ रुपए एक बजट बनाया और मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल

शेष पृष्ठ 2 पर

सड़क व कामकाजी बच्चों ने नेपाल पीड़ितों के लिए इकट्ठा किए आठ हजार रूपए



दिल्ली में कार्यरत बढ़ते कदम (सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन) के बच्चों ने एक बार फिर से संगठित होकर नेपाल भूकंप पीड़ितों के लिए पैसा इकट्ठा किया। संगठन के सदस्य लाजपत नगर और सरोजनी नगर मार्केट में घूमें और बच्चों व राहगीरों से पैसा इकट्ठा किया। बाल साथियों ने आठ हजार रूपए इकट्ठा किए और नेपाल भूपंक पीड़ित बच्चों की मदद के लिए उसे प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा करवाया। लोग उनके साहस को देखकर आश्चर्यचकित थे और उनका हौसला बढ़ाने के लिए आगे भी आए।

14 वर्ष की कबाड़ा बीनने वाली शमा (परिवर्तित नाम) ने अपनी रोज की कमाई से दस रूपए दान किए। उसने कहा कि मुझे पता है जब भूपंक आया था।

संगठन की राष्ट्रीय सचिव 17 साल की चांदनी ने कहा कि आश्चर्य की बात तो यह है कि हाई प्रोफाइल लोगों से अधिक तो सड़क पर रहने वाले लोग सहयोग कर रहे थे, क्योंकि दुकानदारों से अधिक तो सड़क पर रहने वाले बच्चे इस स्थिति से जुड़े नजर आए।

चाय बेचने वाली 10 वर्ष की उस्माना (परिवर्तित नाम) पांच रूपए देते हुए कहा कि नेपाल के मेरे बहुत से साथी हैं। वे सुबह कार साफ करने के लिए आते हैं। उसने बताया कि मैंने उनसे नेपाल के बारे में सुना था।

बालनामा के रिपोर्टर 16 वर्ष के शंभू ने कहा कि हम अभी और पैसा इकट्ठा करेंगे और 10,000 तक की धनराशि प्राधनमंत्री राहत कोष में जमा करेंगे।

चांदनी ने कहा कि इससे पहले भी हम ऐसा कर चुके हैं। हमने जम्मू कश्मीर बाढ़ पीड़ितों के लिए अपनी पेंटिंग बेचकर 50,000 रूपए और उत्तराखंड बाढ़ पीड़ितों के लिए 20,000 रूपए इकट्ठा कर प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा किए थे।

चेतना के निदेशक श्री संजय गुप्ता ने कहा कि बच्चों का यह प्रयास बहुत ही प्रेरणादायक है। हम नेपाल से विशेष तौर से जुड़े हुए हैं और बहुत से बच्चे ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के चलते तस्करी का शिकार होकर यहां आ जाते हैं। हम दिल्लीवासियों को इन बच्चों से प्रेरणा लेनी चाहिए और खुले दिल से इसमें उनका योगदान करना चाहिए। -शंभू (16 वर्ष)

समस्याओं का सामना और सुरक्षा का अभाव

पश्चिमी दिल्ली जिले में ऐसे कई कस्बें और बस्तियां हैं, जहां लोग छोटी छोटी झुग्गी झोपड़ी डालकर रहते हैं और ऐसी बहुत सी जगह हैं जहां रेल की पटरियों का निकास हो रहा है। इन जगहों में रहने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। रेल की पटरी के किनारे लोगों के घर बने हुए हैं और वे पूरे परिवार के साथ वहां रहते हैं और आस पास की जगहों पर काम करने जाते हैं।

इन लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। इसलिए इनके घरों में बड़ों के साथ साथ छोटे बच्चे भी काम करने के लिए जाते हैं। ये बच्चे खासकर लड़कियां जिन स्थानों पर काम करने जाती हैं वहां का माहौल उनकी सुरक्षा की दृष्टि से बहुत खराब है।

ये लड़कियां जब अपने घरों से निकलती हैं तो उन्हें हमेशा इस बात का डर लगा रहता है कि कहीं कोई उनके साथ गलत हरकत ना कर बैठे। यही नहीं आए दिन यह बात सुनने में भी आती है कि इस लड़की को आज कोई उठाकर ले गया या उसे अपनी हवस का शिकार बनाकर छोड़कर भाग गया।

इस बारे में जब बढ़ते कदम के सदस्य ने वहां पर रहने वाली लड़कियों से बात की, कि वह स्कूल पढ़ने क्यों नहीं जाती या दाखिला लेकर क्यों नहीं पढ़ाई करती तो वह कहती हैं कि हमारे माता पिता हमें पढ़ने को मना करते हैं क्योंकि जब हम काम करने के लिए जाते हैं तो हमारे आस पास समाज में रहने वाले लड़के ही हमसे छेड़छाड़ करते हैं और हमें देखकर गंदी गंदी बातें करते हैं। इसलिए हमारे माता पिता कहते हैं कि हम उनके साथ ही काम पर जाएं और काम करें, जिससे घर में दो पैसे आएं।

जब बढ़ते कदम के सदस्यों ने इस बारे में वहां के रहने वाले लोगों से बात की तो उन्होंने इस विषय में बात करने से मना कर दिया और कहा कि लड़कियों के साथ हो रहे ऐसे गंदे और घिनौने अपराध करने वालों की ओर कोई भी सख्त कार्यवाही नहीं की जाती, जिससे यह लोग समाज में इस तरह की हरकत न करें।

वहां रहने वाली लड़कियों ने कहा कि अगर इसी तरह से हम सभी इस मुद्दे को अनदेखा करते रहे तो लोग इस तरह के अपराध करते रहेंगे। हम चाहते हैं कि हमारी सुरक्षा हो ताकि हम अपने समाज में सिर उठाकर चल सकें और खुलकर रह सकें।

हम चाहते हैं कि हमारे लिए हर कॉलोनियों, बस्तियों में पुलिस अधिकारियों को रखा जाए, जिससे हम लड़कियों की सुरक्षा हो सके। हमें कहीं भी आने जाने में दिक्कत ना हो। हम लड़कियां आज इस डर की वजह से ही स्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाती। जब तक हम कक्षा पांच और सात में पढ़ते हैं तब तक तो हमारे माता पिता हमें पढ़ाते हैं, लेकिन जैसे ही हम चौदह, पन्द्रह साल में प्रवेश करते हैं वैसे ही हमारी पढ़ाई रूकवा दी जाती है।

इस तरह हम पढ़ नहीं पाते। हमारे माता पिता हमें काम करने के लिए कहते हैं या फिर हमारी शादी करवा देते हैं। ऐसी कितनी ही लड़कियां हैं जो इस सुरक्षा के अभाव के कारण ही अपनी शिक्षा से दूर हो जाती हैं और काम करने लगती हैं।

-चांदनी (15 वर्ष)

घरों में धड़ल्ले से किया जा रहा है नशीले पदार्थों का व्यापार

आप सभी जानते हैं कि व्हाइटनर का उपयोग लिखने के बाद कुछ गलती हो जाने पर उसे मिटाने में किया जाता है। लेकिन इसका सबसे ज़्यादा उपयोग बच्चे नशे के रूप में करते हैं। यह पदार्थ नशे के रूप में बच्चों को अपनी चपेट में ले रहा है।

बच्चे धीरे धीरे इस व्हाइटनर के शिकार होते जा रहे हैं। यदि आप सड़क व स्टेशन पर रहने वाले बच्चों से पूछो तो वे कहते हैं कि इसके बिना वो जी नहीं सकते क्योंकि ये बच्चे इस नशे का उपयोग अपनी भूख मारने के लिए करते हैं।

कोई उन्हें यह नशा छोड़ने के लिए चाहे कितना ही डांटे या मारे लेकिन वे इसे नहीं छोड़ सकते। यदि वह इसे छोड़ना भी चाहें तो उनका शरीर उनका साथ नहीं देता और उनके शरीर में टूटन होने लगती है। उन्हें दर्द होता है, काम में मन नहीं लगता और यह बच्चे इसको सूंघने के लिए विचलित हो उठते हैं।

दिल्ली जैसे शहर में बहुत संख्या में बच्चे शराब और गांजे का भी सेवन कर रहे हैं जो इन्हें बड़ी ही आसानी से किसी भी दुकान पर मिल जाता है। ऐसे लोग नशा को बेचने के साथ साथ बच्चों को अपने घरों में बैठाकर नशीले पदार्थों का सेवन भी करवाते हैं।

अब तक तो यह नशीले पदार्थ दुकानों पर ही मिला करते थे, लेकिन अब इन नशीले पदार्थों का व्यापार घरों में भी किया जा रहा है। जहां रोज़ 300 से भी अधिक बच्चे नशीले पदार्थ लेने जाते हैं और जो लोग इसका व्यापार कर रहे हैं वह इन बच्चों को अपने घरों में बैठाकर उन्हें नशीले पदार्थों का सेवन करवाते हैं।



बढ़ते कदम के सदस्यों ने जब इस बात का पता लगाने के लिए दिल्ली के बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि ऐसी बहुत सी जगह हैं जहां घरों में बच्चों को बैठाकर नशा करवाया जाता है और उनको यह पदार्थ बेचा जाता है।

बच्चों ने हमें बताया कि उन्हें गांजे की एक पुड़िया 20 रूपये में मिलती है और शराब की थैली भी 20 रूपये में मिल जाती है। इस तरह बच्चों को घरों से नशा सस्ते दामों पर और आसानी से उपलब्ध हो जाता है। यह जानने के बाद बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने बच्चों से कहा कि वह उस जगह जाकर देखना चाहते हैं जहां बच्चों को नशा बेचा और करवाया जा रहा है। तो बच्चों ने कहा कि वह जगह खतरे से खाली नहीं है। वहां दिन दहाड़े भी व्यक्ति को मार पीट के फेंक दिया जाता है और ऐसे केस तो वहां आए दिन होते रहते हैं और कहा कि वह इलाका लड़कियों के लिए और भी खतरनाक है। उस जगह से लड़की का सुरक्षित निकलना बिल्कुल भी संभव नहीं है। वह एकदम सूनसान जगह है। जहां कोई नहीं जाता। वहां पर सिर्फ वही लोग व बच्चे जाते हैं जो नशीले पदार्थों को खरीदते हैं और उनके घर जाकर नशा करते हैं।

दिल्ली जैसे शहर में इस प्रकार बेधड़क होकर नशे का व्यापार करने वाले लोगों के लिए हम बढ़ते कदम के सदस्य भारत सरकार से यह अपील करना चाहते हैं कि इन नशीले पदार्थों का व्यापार घरों में करने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए और उन्हें यह चेतावनी दी जाए कि वह इस तरह का कार्य ना करें, जिससे छोटे छोटे बच्चों की जिंदगी बर्बाद हो जाए और नशा करने वाले बच्चों की संख्या बढ़ती जाए।

अगर हमारी सरकार इसी तरह चुप रही और इन बच्चों के लिए कुछ नहीं किया तो हमारे देश में अपराधों की संख्या बढ़ती ही जाएगी और भारी संख्या में बच्चे इस दलदल में फंसते ही चले जाएंगे। इससे बच्चों का भविष्य नष्ट हो जाएगा। हमें अपनी भारत सरकार से पूरी आशा है कि वह हमारी बातों को गंभीरता से लेगी और हम बच्चों की भलाई के लिए कुछ कदम अवश्य उठाएगी।

-चांदनी (15 वर्ष)

पृष्ठ 1 का शेष

तोता मैना....

के बाल साथियों से मिलते हैं और उनसे बातचीत करते हैं)

तोता : चांदनी दीदी क्या आपको पता है कि सरकार ने 14 साल के बच्चों से काम करवाने को सही ठहराया है और कहा है कि 14 साल की उम्र का कोई भी बच्चा काम कर सकता है...?

चांदनी : हां तोता...यह जो कुछ भी हम बच्चों के लिए किया जा रहा है, वह बिलकुल भी सही नहीं है। इससे जो माता पिता, व्यापारी और दुकानदार बच्चों से जबरन काम करवाते थे, उन्हें और बल मिलेगा और अब तो वे बिना किसी भय के इन बच्चों से कम पैसों में बड़ी आसानी से अपना काम करवा लेंगे।

मैना : हां तोता... चांदनी दीदी ने एकदम सही कहा... इससे सड़क व कामकाजी बच्चों को बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा... चलो इस बारे में विकास भैया का क्या कहना है उनसे भी जान लेते हैं...

विकास : मैना ये तो हम बच्चों के साथ बहुत ही गलत हो रहा है... एक तो वैसे भी सरकार हम बच्चों के लिए कुछ अच्छा नहीं करती और जो कुछ हमारे हित में है उसे भी हमसे छीनना चाह रही है... यदि बाल श्रमिकों की उम्र 14 साल कर दी गई तो हम बच्चे क्या करेंगे...

तोता : ज्योति दीदी ने भी इस विषय पर हमें बताया कि बाल श्रम की उम्र 16 से 18 साल ही होनी चाहिए क्योंकि 18 साल के बाद ही हम बच्चों को सही गलत की परख होती है... लेकिन यदि उम्र घटाकर 14 साल कर दी जाएगी तो हम बच्चों का जीवन काम के बोझ के तले दब जाएगा और इससे केवल हमारा ही नुकसान होगा, सरकार का नहीं...

मैना : ज्योति दीदी ने जो बात कही वो बिल्कुल सही कही कि बाल श्रम की उम्र घटाने से बच्चों का भविष्य खतरे में चला जाएगा...

मैना : हां तोता... प्रस्तावित अधिनियम में बच्चे की उम्र घटाकर 14 साल मान लेना न्याय संगत नहीं होगा, क्योंकि इससे देश में बाल श्रमिकों की संख्या बढ़ेगी। ऐसे में बच्चों को स्कूल भेजने की बजाए, उन्हें काम पर भेजा जाएगा और उनके हाथों में पेन की जगह फावड़ा होगा। सरकार इन बच्चों के साथ जो भी कर रही है, वह उचित नहीं है और इससे देश का भविष्य खतरे में पड़ सकता है।

इतना कहकर खबरों के माहिर खबरची तोता-मैना दूसरी खबर की तलाश में उड़ पड़ते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

सड़क व कामकाजी बच्चों ने दिल्ली सरकार से मांगें 45 करोड़ रुपए

जी को फैक्स के माध्यम से एक पत्र लिखकर भेजा।

इस पत्र के माध्यम से संगठन के सदस्यों ने सड़क व कामकाजी बच्चों के बजट में निम्न मुद्दों व सुझावों को शामिल किया है :-

* सड़क व कामकजी बच्चों की दिल्ली के ग्यारह जिलों में जनसंख्या एवं स्थिति सर्वे करने हेतु एक टीम बनाई जाए। ताकि टीम द्वारा स्थिति का जायजा लेने के बाद बेहतर भविष्यगत योजनाएं बनाई जा सकें। जिसका खर्च लगभग एक करोड़ रूपए होगा।

* दिल्ली में सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए लगभग 100 शेल्टर होम की व्यवस्था हो। जिसमें एक शेल्टर होम में लगभग 50 से 100 बच्चे रह सकें। जिसमें एक बच्चे का मासिक खर्च लगभग तीन हजार रूपए होगा। इस प्रकार शेल्टर होम का खर्च 36 करोड़ रूपए होगा।

* सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए लगभग चार वोकेशनल इंस्टीट्यूट हों, जिसमें प्रत्येक में 100 बच्चों की रूचि के अनुसार उन्हें ट्रेनिंग दी जाए। जिसका प्रति बच्चा (17 साल से अधिक) मासिक खर्च 3000 रूपए होगा। इस प्रकार चार वोकेशनल इंस्टीट्यूट का खर्च 4 करोड़ 44 लाख रूपए होगा।

* सड़क पर रहने वाली लड़कियों की सुरक्षा के लिए दिल्ली के लगभग 20 थाना क्षेत्रों में दो दो महिला पुलिसकर्मी या काउंसलर की एक टीम नियुक्त की जाए। जिसका बजट लगभग एक करोड़ रूपए होगा।

* सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए दिल्ली के लगभग दस अस्पतालों में दो डॉक्टर और चार बेड सुनिश्चित किए जाएं, जिसका अनुमानतः बजट चार करोड़ रूपए होगा।

* बेघर बच्चों को पढ़ाने हेतु दस चल विद्यालयों की शुरूआत की जाए। जिसका संचालन स्वयं सेवी संस्था के कार्यकर्ता व शिक्षा विभाग मिलकर करें और इसमें डीटीसी की बस भी शामिल की जाएं। प्रत्येक चल विद्यालय का मासिक खर्च एक लाख रूपए होगा और कुल बजट 1 करोड़ 20 लाख रूपए होगा।

बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने कहा कि हम सभी सदस्यों ने गहन चर्चा के बाद यह बजट बनाया है और हमें उम्मीद है कि मुख्यमंत्री जी इस बजट को गंभीरता से लेंगे और इस पर जल्द कोई कार्यवाही करेंगे।

चेतना संस्था के निदेशक व बढ़ते कदम संगठन के पोषक श्री संजय गुप्ता जी ने बताया कि यह बाल साथियों द्वारा किया गया बहुत ही अच्छा प्रयास है। मेरे विचार से इन बाल सदस्यों ने जिन मुद्दों व सुझावों को अपने बजट में शामिल किया है, सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए इनको अपने बजट में शामिल करना बहुत ही आवश्यक है और दिल्ली के मुख्यमंत्री जी को इसे बजट में अवश्य शामिल करना चाहिए।

-शन्नो (19 वर्षों)

साथ छूटा लेकिन हिम्मत की डोर नहीं



15 वर्षीय कुमकुम अपने परिवार के साथ गांव में रहती थी। कुमकुम की तीन बहनें है। इसके पिता चिनाई का काम करते थे और वह गांव में बहुत खुश थे। लेकिन कुछ साल पहले कुमकुम की माता उनको छोड़कर चली गई। तब से गांव में रहने वाले लोग उन्हें ताना देते कि उनकी मां उन्हें छोड़कर इसलिए भाग गई क्योंकि वह हिन्दू थी और पिता मुसलमान। इस वजह से उन्हें लोग गलत निगाहों से देखते और भला बुरा कहते थे। कुमकुम की माता के जाने के बाद उसके पिता ने अपना काम धंधा छोड़ दिया और वह शराब पीने लगे। फिर कुछ दिनों के बाद ही वह गांव से दिल्ली में निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर आ गए और वहां आकर रहने लगे।

यहां आने के बाद कुमकुम कबाड़ा बीनने का काम करने लगी, ताकि वह अपनी तीन बहनों का पालन पोषण कर सकें। क्योंकि उसके पिता इधर उधर शराब पीते रहते थे और कुछ काम भी नहीं करते थे, जिससे वह अपने बच्चों का पेट भर सकें। इस परेशानी की वजह से वह कालका जी मंदिर में रहने लगी। जब से कुमकुम की माता उसे छोड़ कर गई हैं, तब से उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। क्योंकि वह अकेले ही अपनी तीनों बहनों का पालन पोषण करती है और उनका खर्चा उठाती है। इतनी समस्याओं से गुजरने के बाद भी कुमकुम ने ऐसे बहुत से बहादुरी के कारनामे किए हैं कि उसकी जितनी भी तारीफ की जाए वो कम है।

कुमकुम अपने ही नहीं, बल्कि दूसरे बच्चों से भी बहुत प्यार करती है तथा उनकी मदद भी करती है। बढ़ते कदम की बाल रिपोर्टर 15 वर्षीय ज्योति जब कुमकुम से मिली और उसके बारे में जाना तो कुमकुम ने बताया कि वह कालका जी मंदिर के पीछे रहती है। जहां एक बहुत गहरा पानी का गड्ढा है और उस गड्ढे की वजह से वहां गहरा दलदल जैसा हो गया है। उसने बताया कि मैंने उस गड्ढे में डूब रहे अब तक दो बच्चों की जानें बचाई हैं। कुमकुम ने 12 वर्षीय प्रियंका की जान बचाई और जब कुमकुम ने उससे पूछा कि वह कैसे गिर गई थी तो पूछने पर उसने बताया कि वह कुछ बच्चों के साथ वहां खेलने आई थी इस तरह वह सभी के साथ खेलते ही खेलते अचानक पैर फिसलने के कारण उस पानी के गढ्ढे में गिर पड़ी। जैसे ही वह उस पानी में गिरी तो उसके चिल्लाने की आवाज़ सुनकर कुमकुम वहां पहुंची और उसे उस गड्ढे से बाहर निकाला। इस तरह प्रियंका की जान बच गई।

उसके कुछ ही महीनों बाद 10 वर्षीय अर्जुन भी उस पानी में गिर गया और उसकी जान भी कुमकुम ने बचाई। कुमकुम बच्चों से बहुत प्यार करती है और वह बच्चों को कभी भी किसी मुसीबत में नहीं देख सकती क्योंकि उसने बचपन से ही दुख सहा है। इसलिए कुमकुम चाहती है कि दूसरे बच्चों को कभी भी कोई तकलीफ ना हो तथा वह हमेशा सभी बच्चों को खुश देखना चाहती है।

-ज्योति (15 वर्ष)

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथी की मदद से बच्चों को मिला आश्रय



14 वर्षीय रूस्तम बढ़ते कदम का सदस्य है। वह रैन बसेरे में रहता है और रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने का काम करता है। एक दिन रूस्तम कबाड़ा बीनने का काम करने के बाद खाना खाने के लिए जा रहा था। जाते समय रूस्तम को रेलवे स्टेशन पर तीन छोटे छोटे बच्चे दिखाई पड़े तो वह उन बच्चों के पास गया और उनसे पूछा कि वह रेलवे स्टेशन पर कैसे और कहां से आए हैं तो उन बाल साथियों ने बताया कि वह बिहार से आए हैं।

यह जानने के बाद रूस्तम ने उनसे कहा कि वह स्टेशन पर क्या कर रहें है?तो उन बच्चों ने कहा कि हम कहां जाएं कहां रहें, इसलिए स्टेशन पर आ गए। उसके बाद रूस्तम उन्हें अपने साथ रैन बसेरे में ले गया और बालकनामा की रिपोर्टर 15 वर्षीय ज्योति से मिलवाया। फिर ज्योति ने उन तीनों बच्चों से बात की और उनसे पूछा कि वह अपने घर से दिल्ली क्यों आएं हैं।

बच्चों ने बताया कि वह बिहार से आए हैं और वह अपने घर बिहार नहीं जाना चाहते। यह सुनते ही ज्योति ने कहा कि तुम अपना घर छोड़कर क्यों आए हो। घर छोड़ने का क्या कारण है?तो बच्चों ने कहा कि घर में हमारे माता पिता बहुत मारते पीटते हैं। इस वजह से हम अपने घर से भाग कर दिल्ली आ गए हैं ताकि हम अपने घर वापस ना जा सकें।

यह सब सुनने के बाद ज्योति उन्हें चेतना संस्था द्वारा निजामुद्दीन में संचालित हार्म रिडक्शन सेंटर लेकर गई और चेतना संस्था के कार्यकर्ता से मिलवाया। फिर उन्होंने उन बच्चों से बात की। उनसे पूछा कि वह अपने घर जाना चाहते हैं या होम जाना चाहते हैं। तो बच्चों ने अपने घर जाने से मना किर दिया और कहा कि वह होम में ही जाना चाहते हैं। जहां उन्हें कोई भी मारे पीटे ना तथा उनसे प्यार से बात करें और उन्हें समझे, उनका ख्याल रखे।

कार्यकर्ता ने उन बच्चों से कहा कि आप अगर होम में जाना चाहते हो तो आपको होम में भेज दिया जाएगा। जहां आप अच्छे से रह सकोगे, अच्छे से पढ़ाई लिखाई करोगे और अच्छी आदतें सीखोगे। बच्चों को होम के बारे में जानकारी देने के बाद उन बच्चों को होम भेज दिया गया।

कार्यकर्ता ने बढ़ते कदम के सदस्य रूस्तम और ज्योति का धन्यवाद दिया, क्योंकि इन दोनों ने तीन बच्चों को स्टेशन की ज़िन्दगी जीने से बचा लिया और होम में भेजकर एक अच्छा काम किया, जहां उनकी अच्छे से देखरेख की जाएगी और उन्हें शिक्षा भी प्रदान की जाएगी।

-ज्योति (15 वर्ष)

बाल विवाह के खिलाफ यूथ की आवाज़ में बच्चे हुए शामिल



दिल्ली की हॉट डांस फॉर लाइफ संस्था द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का विषय ''नॉट सो यंग'' था। यह कार्यक्रम बाल विवाह पर आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में अलग अलग संस्थाओं और संगठनों से आए बच्चों व बढ़ते कदम के बाल सदस्यों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मशहूर कोरियोग्राफर श्री टेरेंस लेविस थे। इन्होंने बच्चों के कार्यक्रम में आकर उनका उत्साह बढ़ाया और उनके बीच शामिल होकर इस कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। इस अवसर पर आए हुए सभी बाल साथियों ने बाल विवाह पर नुक्कड़ नाटक और डांस के माध्यम से समाज में रह रहीं लड़कियों की सुरक्षा और समस्याओं के प्रति आए हुए अतिथिगणों को परिचित कराया। बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों को देखकर श्री टेरेंस लेविस बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि इतने छोटे बच्चे कितनी हिम्मत के साथ अपनी बातों व समस्याओं को अलग अलग माध्यमों से हमारे सामने रख रहे हैं और हमें जानकारी दे रहे हैं।

श्री टेरेंस लेविस को इन बाल साथियों की पेशकस देखकर अपना बचपन याद आ गया। उन्होंने बताया कि जब वह छोटे थे तो इसी तरह डांस किया करते थे और कहा कि आज इन बच्चों के अन्दर इतना उत्साह देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। जो भी संस्थाएं इन बच्चों के लिए कार्य कर रही हैं वो बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं। इस प्रकार इन बच्चों को आगे आने का मौका मिल रहा है।

शहरों और गांवों में बच्चों पर शोषण व अत्याचार के मुद्दे पर भी श्री टेरेंस लेविस ने बच्चों के साथ बातचीत की और बहुत से अहम पहलुओं के बारे उन्हें जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ज़्यादातर गांवों में बाल विवाह हो रहे हैं, जिसमें 18 साल से कम उम्र के लड़के व लड़कियों का विवाह करा दिया जाता है। जब कि विवाह करने की लड़के की सही उम्र 21 साल है और लड़की की 18 साल।

लेकिन अभी भी हमारे समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपनी पुरानी प्रथाओं से जुड़े हुए हैं और अपने बच्चों का विवाह कम उम्र में ही करवा देते हैं। लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि ऐसे विवाह करने के बाद उनके बच्चों को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इस बाल विवाह को समाज में होने से रोकने के लिए श्री टेरेंस लेविस ने सभी बच्चों और बड़ों से कहा कि आजकल सभी का अकाउन्ट फेस बुक पर होता है। जिन लोगों का अकाउन्ट फेस बुक पर है वह हमारे साथ जुड़ें और बाल विवाह को खत्म करने की सोच लोगों में पैदा करें। जिससे समाज में रहने वाले ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे सुरक्षित हो सकें। इसके साथ ही उन्होंने एच.आई.वी जैसे अन्य रोगों के बारे में जानकारी दी और कहा कि इस समस्या से निपटने के लिए हमारी इस नई शुरूआत में आप हमारा साथ दीजिए और फेसबुक पर मेल कीजिए तभी हमारा भारत स्वस्थ भारत बनेगा।

उसके बाद बढ़ते कदम के सभी सदस्यों ने श्री टेरेंस लेविस के साथ फोटो खिचवाई और उन्हें अपने हाथों से बनी पेंटिंग भेंट की। सभी बाल साथी उनसे मिलकर बहुत खुश हुए।

-ज्योति (15 वर्ष)

बच्चों को फुटपाथ पर ही देखना चाहती है सरकार, तभी तो करती है रैन बसेरों का निर्माण



आप सभी जानते हैं कि इस बार दिल्ली की गर्मी ने लोगों का अपने घरों से बाहर निकलना दूभर कर दिया है। ऐसे में अगर घरों की बिजली चली जाए तो राहत मिलना और भी मुश्किल हो जाता है। लोग इस भयंकर गर्मी से बचने के लिए एसी, कूलर इत्यादि का इंतजाम करते हैं, ताकि इस गर्मी से उन्हें राहत मिल जाए। जब इस भरी गर्मी ने लोगों का घरों से बाहर निकलना दूभर कर रखा है तो यह सोचने वाली बात है कि जो बच्चे अपना जीवन रैन बसेरों और सड़कों पर रह कर गुजार रहे हैं, उनका क्या हाल हो रहा होगा और वह कैसे इन स्थानों पर रहते होंगे।

इस विषय पर बात करने के लिए जब बालकनामा के पत्रकार 16 वर्षीय सौरव रैन बसेरों में रहने वाले बच्चों से मिलने गए तो देखा कि रैन बसेरों के बाहर ही बच्चे रह रहे हैं। जब सौरव ने उनसे पूछा कि वह रैन बसेरों के बाहर क्यों है तो उन्होंने कहा कि रैन बसेरों में दोपहर का सूरज जब पड़ता है तो बहुत गर्मी हो जाती है। उन्होंने बताया कि जो रैन बसेरे हैं वह टीन की चादर से बने हैं और तेज धूप होने के कारण उसकी टीन की चादर इतनी तप जाती है कि रैन बसेरे के अंदर फूट फूट कर गर्मी बरसती है। ऐसे में बच्चे तो बच्चे उनके माता पिता भी रैन बसेरों के बाहर ही रहते हैं। सभी बच्चों का इस गर्मी में बुरा हाल हो रह रहा है। बच्चों ने कहा कि जब से दिल्ली में आप की सरकार बनी है उन्होंने हम बच्चों के रहने के लिए अभी तक कोई व्यवस्था नहीं की है, क्या हम बच्चे आम आदमी की लिस्ट में शामिल नहीं हैं।

बच्चों का कहना है कि हमारी सरकार ने रैन बसेरों का निर्माण शायद इसीलिए किया है, जिससे बाहर रहने वाले लोग और बच्चों को रहने का ठिकाना मिले और वह सड़कों से दूर हो जाएं। वह किसी भी पुल के नीचे या रेलवे स्टेशनों के आस पास ना रहें और उन सभी को वह इस ज़िन्दगी से दूर रख सकें। इसलिए सरकार ने हर एक जगह पर रैन बसेरों की सुविधाएं प्रदान की हैं।

लेकिन हम बच्चों का यह मानना है कि अगर सरकार ने हम बच्चों को सड़कों और फुटपाथों से हटाने के लिए यह सब किया होता तो वह हमें फुटापाथों व सड़कों के किनारे रैन बसेरे बनाकर न देती, बल्कि आम लोगों की तरह घरों की व्यवस्था करती। लेकिन ऐसा नहीं है सरकार तो चाहती ही नहीं कि हम बच्चे फुटपाथों से हटकर एक अच्छी ज़िंदगी जिएं जैसे आम लोग जीते हैं। कभी सराकर ने यह सोचा है कि लड़कियों को रैन बसेरे में क्या क्या परेशानी झेलनी पड़ती है।

यह रैन बसेरे ज़्यादतर फुटपाथ और सड़कों के किनारे पर बने होते हैं और इस वजह से हम बच्चों के साथ कई अलग अलग तरह की घटनाएं होती रहती हैं। कभी वह जगह हमारे लिए दुर्घटना स्थल बन जाती है तो कभी उस जगह पर लड़कियों लिए सुरक्षा का अभाव नज़र आता है। बच्चों का कहना है कि रैन बसेरों में सुविधाएं तो हैं नहीं, यदि होती तो लड़कियों के लिए कोई सुरक्षा का इंतजाम होता, जो उन्हें वहां सुरक्षित रख सकता।

यह सब देखकर और बच्चों की बातें सुनकर पत्रकार सौरव ने कहा कि अगर हमारी सरकार सचमुच हम बच्चों के लिए कुछ करना चाहती है तो हम बच्चों को रैन बसेरों की सुविधा नहीं, बल्कि आम लोगों की तरह घर वाली जिंदगी दे और हमें घर जैसी सभी सुविधाएं उपलब्ध कराए। तभी हम सभी बच्चे अपने माता पिता के साथ खुश और सुरक्षित रह सकेंगे।

-सौरव (16 वर्ष)

बढ़ते कदम के सदस्यों ने जुए के खिलाफ शुरू किया एक अभियान

नोएडा सेक्टर 66 कॉन्टेक्ट प्वांइट के आस पास बहुत से बच्चे ऐसे हैं, जो नशा करते हैं और जुआं भी खेलते हैं। इस वजह से वह बच्चे पढ़ने भी नहीं जाते, क्योंकि उन बच्चों को जुएं की लत लग चुकी है। यह बच्चे दिनभर बैठकर जुआं खेलते रहते हैं।

यहां के रहने वाले लोग तो जुआ खेलते ही हैं और इनके साथ बच्चे भी जुआं खेलते हैं। जुआं खेलने के कारण दूसरे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यहां पर धड़ल्ले से चल रहे इस जुएं पर प्रतिबंध लगाने वाला भी कोई नहीं है।



कोई भी माता पिता अपने बच्चों को इस खेल से दूर रखने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। लेकिन बढ़ते कदम संगठन के बाल सदस्यों ने इस समस्या पर मिलकर एक मीटिंग का आयोजन किया, जिसमें उन बच्चों ने भाग लिया जो बच्चे नशा करते हैं और जुआं खेलते हैं।

इस मीटिंग में शामिल जिला सचिव सौरव ने भी भाग लिया और बच्चों से कहा कि आप सभी बाल साथी इस मीटिंग में किस मुद्दे पर चर्चा करने वाले हैं। 10 वर्षीय लोकेश ने कहा कि हम नशा और जुएं के मुद्दे पर अपनी बैठक कर रहे हैं, जिससे बच्चे इस चुंगल से आज़ाद हो सकें।

12 वर्षीय रोहन ने कहा कि हम बच्चे जुआं छोड़ना चाहते हैं। इसलिए हमने सोचा है कि जो बच्चे अपना जुआं छोड़ना चाहते हैं वो एक चेन बनाएंगे और उस चेन से वो बाल साथी जुड़ते रहेंगे जो अपना नशा और जुआं छोड़ देंगे।

इस तरह हम दूसरे बच्चों को भी अपनी इस चेन में शामिल कर सकेंगे। इस चेन की शुरूआत सबसे पहले 6 बच्चों द्वारा की गई, जो नशा करते थे और जिनके नाम हैं 10 वर्षीय लोकेश, 13 वर्षीय विकास, 12 वर्षीय रोहन, 12 वर्षीय करन, 13 वर्षीय आकाश, 12 वर्षीय अर्जुन। यह बाल साथी पहले जुआं खेलते थे पर अब इन बाल साथियों ने इस चेन की शुरूआत करते हुए यह आदत छोड़ दी है और अपने कदम बुराई की ओर बढ़ने से रोक लिए हैं।

अब यह सब बाल साथी दूसरे बच्चों को भी इस बारे में हिदायत दे रहे हैं, ताकि वह भी इनकी तरह सुधर जाएं और इस चेन से जुड़कर अच्छाई की ओर कदम बढ़ाएं। इस तरह चेन बनाने के बाद कुछ बच्चों ने बड़े लोगों को भी समझाया है कि वह बच्चों के साथ जुआं ना खेलें, बल्कि उन्हें जुआं खेलने से मना करें और वह खुद भी इस खेल को छोड़ दें।

इस दौरान बहुत से सदस्यों ने अपने पिता और भाईयों को जुआं खेलने से रोका है और इस प्रयास को करने के लिए बहुत से बाल साथी इस चेन से जुड़ने के लिए आगे आएं हैं।

-सौरव (16 वर्ष)

छात्राओं के विरोध ने अध्यापिका को कराया उसकी गलती का एहसास

15 वर्षीय नीखत जो पहले एक सरकारी स्कूल में पढ़ाई करती थी। नीखत का स्कूल उसके घर से बहुत दूर था। इसके बवजूद वह रोज़ स्कूल पढ़ने जाती थी। लेकिन नीखत दोपहर का खाना खाने के लिए अपने घर वापस जाती थी और खाना खाकर आती थी। वह रोज़ ऐसा करती थी।

एक दिन नीखत की अध्यापिका ने उसे घर जाते हुए पकड़ लिया और कहने लगी कि तुम दोपहर में लंच के समय रोज़ रोज़ कहां जाती हो तो नीखत ने पूछने पर बताया कि मैं अपने घर खाना खाने के लिए चली जाती हूं। इतना सुनते ही उसकी अध्यापिका उस पर बरस पड़ी और कहने लगी कि तुम्हें यहां स्कूल में खाना नहीं मिलता, जो तुम स्कूल छोड़कर अपने घर जाकर खाना खाने जाती हो।

अपनी अध्यापिका से नीखत ने कहा कि मैम हमें यहां खाना तो मिलता है पर ऐसे खाने को कौन खाएगा जिस खाने में आए दिन कीड़े-मकोड़े निकलते हैं और इसी वजह से बच्चे यह खाना खाकर बीमार पड़ रहे हैं। जब नीखत ने अपनी अध्यापिका से यह कहा कि मैम आप तो यह सब बात पहले से ही जानते हो कि हम बच्चों के लिए जो खाना आता है उसमें आए दिन कीड़े मकोड़े निकलते रहते हैं तो इतना सुनते ही नीखत की अध्यापिका उस पर हावी हो गई और सभी बच्चों के सामने उसे डांटने और मारने लगी।

यह देखकर कक्षा के सभी बच्चे आ गए और नीखत के साथ हो गए। बच्चों ने कहा कि नीखत जो बोल रही है वो एकदम सही है। आज के बाद हम भी यह खाना नहीं खाएंगे। यह देखकर कक्षा की अध्यापिका भयभीत हो गई। फिर जाकर अध्यापिका ने नीखत को पीटना बंद किया और कहने लगी कि अब क्या किया जाए, आप सभी को दोपहर का लंच तो खाना ही पड़ेगा।

नीखत ने जवाब दिया कि अगर खाना हमारे स्कूल में ही बनेगा तो ही हम सब बच्चे खाना खाएंगे। स्कूल की अध्यापिका ने नीखत से कहा कि तुम बहुत बोल रही हो। यहां खाना बनाने के लिए कोई नहीं आएगा तो क्या तुम सारे बच्चों का खाना पकाओगी। नीखत ने कहा कि हम खुद खाना पकाने वाले को लेकर आएंगे। हम बच्चे उन्हें खुद समझा देंगे और उनकी मदद भी कर देंगे।

उसके बाद अध्यापिका ने कहा कि मुझे कल तक खाना पकाने वाला चाहिए, जो बच्चों के लिए स्कूल में खाना पकाकर दे। उस दिन ही नीखत ने सर्वे कर दो महिलाओं को खोज लिया, जो स्कूल में ही खाना पकाकर बच्चों को देती। यह देखकर सभी बच्चे बहुत खुश हुए अब उन्हें अच्छा, साफ सुथरा और बहुत स्वादिष्ट खाना खाने को मिल रहा है। अब कोई भी अपने स्कूल से वापस अपने घर खाना खाने के लिए नहीं जाता और सभी बच्चे पेट भर खाना खाते हैं।

चांदनी (17 वर्ष)

22 सड़क व कामकाजी बच्चे पहुंचे सरकारी स्कूल

नोएडा के सेक्टर 50 और सेक्टर 66 में रहने वाले सड़क व कामाकजी बच्चे कबाड़ा बीनते हैं और मेहनत करके अपना गुजारा करते हैं। यहां रहने वाले किसी भी बच्चे ने ना तो स्कूल में कदम रखा था और न ही कभी कोई उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करता था। चेतना संस्था के कार्यकर्ता और बढ़ते कदम संगठन को जब इस बात का पता चला तो वह इस जगह गए और वहां के रहने वाले निवासियों से बात की। इसके बाद उन सभी की आपसी सहमति से संस्था द्वारा सेक्टर 50 और सेक्टर 66 में कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट चलाया जाने लगा।

संगठन वहां रहने वाले बाल साथियों को कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट पर पढ़ने के लिए प्रेरित करने लगा। संगठन के सदस्यों ने बाल साथियों और वहां के निवासियों को बढ़ते कदम संगठन और उसके कार्यो के बारे में जानकारी दी। उन्होंने लोगों को बताया कि सरकार ने हम बच्चों को भी चार अधिकार दिए हैं, जिनमें से एक अधिकार हमें शिक्षा पाने का भी है। उनकी बातों से प्रभावित होकर बाल साथी कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट पर पढ़ने के लिए आने लगे।

चेतना संस्था के कार्यकर्ता भी वहां के निवासियों को अभिभावक मीटिंग और स्टेकहोल्डर मीटिंग के माध्यम से शिक्षा के महत्व के बारे में जानकारी देते और उन्हें जागरूक करते। इसी का परिणाम है कि आज सेक्टर 50 और सेक्टर 66 के बाल साथियों का स्कूल में दाखिला भी हो गया है और वह बच्चे रोज़ स्कूल जाने लगे हैं।

इस कार्य को देखकर वहां के निवासियों ने कार्यकर्ता से अनुरोध किया कि वे उनके बच्चों का भी दाखिला स्कूलों में करवा दें। इसके बाद कार्यकर्ताओं ने उनके बच्चों का दाखिला वहां के स्थानीय स्कूल में करवा दिया। इस तरह अब तक चेतना संस्था व बढ़ते कदम संगठन के प्रयास से 22 सड़क और कामकाजी बच्चों को स्कूल में अपनी शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला, जो बाल साथी कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट पर पढ़ने आते थे वह अब स्कूल जाते हैं।



वह संगठन द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। अब बच्चे अपने अभिभावकों के अंदर आए इस बदलाव को देखकर बहुत खुश हैं। श्री राम जी कहते हैं कि जब मेरा बेटा स्कूल की ड्रेस पहनेगा तो मुझे बहुत खुशी महसूस होगी। मैं चाहता हूं कि वह खूब पढ़े और पढ़ लिखकर एक अच्छा इंसान बनें।

दुलारी कहती है कि मेरी मां मेरे स्कूल जाने से बहुत खुश है। वह कहती है कि मेरी तरह अब मेरे बच्चे तो अनपढ़ नहीं कहलाएंगे।

-सौरव (16 वर्ष)

बाल मजदूरी से मुक्त बच्चा पहुंचा अपने घर

17 वर्षीय बबलू बिहार का रहने वाला है। वह दिल्ली आया और वहां एक ठेकेदार ने उसे अपने पास काम पर रख लिया। बबलू अपने ठेकेदार के पास जमीन के अंदर गड्ढे खोद कर बिजली के केबल डालने का काम करने लगा। इस काम को करने लिए उसके ठेकेदार ने उसे 350 रूपये दिहाड़ी पर रखा था और यह काम करते करते उसे पूरे तीन महीने हो गए थे। लेकिन उसके ठेकेदार ने उसे पिछले तीन महीनों के पूरे पैसे नहीं दिए थे, क्योंकि उसका ठेकेदार उसे अपने पास रखता था।

एक दिन बबलू के माता पिता का अचानक फोन आया और उसके माता पिता ने बताया कि बिहार में तेज़ भूकंप आने के कारण हमारा घर गिर गया है और इस आपदा के चलते उसकी माता की तबियत बहुत खराब हो गई है इसलिए पैसों की बहुत ज़रूरत है। यह सुनने के बाद बबलू एकदम टूट गया और अपने ठेकेदार के पास जाकर बोला कि उसे पैसों की सख्त ज़रूरत है, क्योंकि उसका घर भूकंप आने से गिर गया है और उसकी माता भी बहुत बीमार है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप मेरे तीन महीने के पैसे दे दें, जिससे मैं अपने घरवालों की सहायता कर सकूं।

लेकिन उसके ठेकेदार ने साफ मना कर दिया और बोला की मैं रूपये नहीं दूंगा। यह सुनने के बाद बबलू ने कहा कि वह रूपये क्यों नहीं देंगे?तो उसके ठेकेदार ने कहा कि जिसने तुम्हें काम पर लगवाया था मैं उसको पैसे दूंगा। फिर बबलू ने बताया कि वह तो यहां नहीं बिहार में हैं। फिर भी उसके ठेकेदार ने उसे पैसे देने से एकदम मना कर दिया। बबलू ने उसे अपनी परेशानी भी बताई। उसके बाद भी उसके ठेकेदार ने उसे वहां से भगा दिया और उसे पैसे नहीं दिए।

बबलू के पास इतने भी पैसे नहीं थे, जिससे वह अपना पेट भर सकें और कहीं जाकर रह सकें। क्योंकि दिल्ली में उसका कोई नहीं था। वह एकदम अकेला हो गया। फिर बबलू की मुलाकात बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव 16 वर्षीय चांदनी से हुई। बबलू ने चांदनी को अपने बारे में बताया और अपने ठेकेदार के बारे में भी बताया और कहा कि वह अपने घर बिहार जाना चाहता है। लेकिन मेरा ठेकेदार मेरे काम के पैसे नहीं दे रहा है तो चांदनी बबलू के साथ उसके ठेकेदार के घर गई। लेकिन उसका ठेकेदार घर पर नहीं मिला।

चांदनी ने उसके बेटे से बात की। उनसे कहा कि वह बबलू के पैसे दे दें। ठेकेदार के बेटे ने भी पैसे देने से मना कर दिया और बबलू को ज़ोर से डांटने लगा। उसके बाद चांदनी बबलू को पुलिस थाने लेकर गई और वहां जाकर पुलिस को जानकारी दी, तो उन्होंने कहा कि जब ठेकेदार आएगा तब आप हमें बुला लेना। फिर बबलू ने अपने ठेकेदार को फोन किया तो उसने फोन पर भी बबलू को पैसे देने से मना कर दिया और कहा कि जिसे बुलाना है बुला ले।

थोड़ी देर बाद ठेकेदार का फोन आया। वह बबलू से बोला मेरे पास आ जाओ मैं तुम्हें पैसे दूंगा लेकिन तुम अकेले आना। उसके बाद जिस जगह बबलू को उसके ठेकेदार ने बुलाया था, वह वहां पुलिस को अपने साथ लेकर गया। फिर पुलिस उसे गिरफ्तार कर थाने ले गई। वहां जाकर पुलिस से उसने ना जाने क्या बात की और उन्होंने उस केस को रफा दफा कर उसे छोड़ दिया।

पुलिस ने हम से कहा कि हम ऐसे केस नहीं देखते हैं आप कहीं और जाओ। फिर हमने चाइल्ड लाइन को फोन करके बुला लिया और चाइल्ड लाइन वाले बबलू को आकर अपने साथ ले गए, क्योंकि रात काफी हो चुकी थी। फिर अगली सुबई चाइल्ड लाइन वाले बबलू को थाने लेकर गए। वहां एफ. आई.आर. दर्ज करवाई और ठेकेदार को बुलवाया गया। बबलू को उसके काम के पैसे दिलवाने के लिए बोला तो उसके ठेकेदार ने उसे चौदाह हज़ार रूपये दिए। ठेकेदार को चाइल्ड लाइन के सदस्यों ने समझाया कि वह इस तरह से किसी भी बच्चे को काम पर ना रखे और उसे परेशान ना करें। इस तरह बबलू को उसके पैसे मिल गए और वह अपनी मेहनत के पैसे लेकर बहुत खुश हुआ। फिर उसे चाइल्ड लाइन ने उसके घर बिहार छुड़वा दिया।

-चांदनी (17 वर्ष)

एस.एच.ओ. से मिलकर खुश हुए बच्चे



मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन के एस.एच.ओ. श्री पंकज लवानिया जब हार्म रिडक्शन सेंटर के बच्चों से मिलने पहुंचे तो सभी बच्चे उनसे मिलकर बहुत खुश हुए। एस. एच.ओ. श्री पंकज जी के साथ जीआरपी के अन्य कर्मचारी तथा प्रेस रिपोर्टर भी सेंटर आए हुए थे। अपनी विजिट के दौरान एस.एच.ओ. जी ने सभी बच्चों से बात की और उनकी समस्याओं के बारे में पूछा। बातचीत के दौरान उन्होंने बच्चों से पूछा कि तुम लोगा कहां के रहने वाले हो और ऐसा क्या कारण था, जिसकी वजह से तुम्हें अपना घर छोड़कर स्टेशन पर रहना पड़ रहा है और यहां पर रहकर तुम लोग क्या काम करते हो?

बच्चों ने बताया कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण और माता पिता से सहयोग न मिल पाने के कारण उन्हें स्टेशन पर आकर रहना पड़ा। यहां रहकर वह पानी की बोतले बेचनें, गुटखा, सिगरेट, पान मसाला बेचने, कबाड़ा बीनने, ट्रेनों में झाड़ू लगाने, भीख मांगने इत्यादि काम करते हैं। बच्चों की बात सुनकर एस.एच.ओ. श्री पंकज जी ने उनसे कहा कि यह सब अपराध है, इसलिए तुम लोग यह काम करना बंद कर दो। उन्होंने कहा कि जो बच्चे घर जाना चाहते हैं उनको घर भेजा जाएगा और इस काम में हम उनकी पूरी मदद करेंगे। जो बच्चे घर नहीं जाना चाहते उनको होम में रखा जाएगा या उनके लिए शेल्टर होम खोला जाएगा, जहां बच्चे रात को रह सकें और स्टेशन की जिंदगी से दूर हो सकें।

इसके बाद उन्होंने बच्चों से पूछा कि आप सभी इस सेंटर में आकर क्या करते हो। बच्चों ने बताया कि वो सुबह सेंटर आकर हाथ पैर धोते हैं और प्रार्थना व योगा करते हैं। इसके बाद पढ़ाई करते हैं, आर्ट एंड क्राफ्ट की वस्तुएं बनाते हैं। इसके बाद हमें यहां पर भोजन दिया जाता है। हम यहां पर गेम खेलते हैं। हम डांस करते हैं और अलग अलग गतिविधियों में भाग लेते हैं। इस सेंटर में हम बच्चों की काउंसलिंग भी की जाती है। शाम को हम बच्चे यहां से चले जाते हैं।



बच्चों के बारे में और उनसे मिलकर एस.एच.ओ. श्री पंकज जी बहुत खुश हुए और कहा कि मैं अपने स्तर से बच्चों के लिए हरसंभव मदद करूंगा और बच्चों को भी इस काम में हमारी मदद करनी होगी।

बच्चों ने बताया कि उन्हें भी एस.एच.ओ. जी से मिलकर और बात करके बहुत अच्छा लगा। गोलू ने बताया कि उनके साथ जो मीडिया के भैया आए थे, हमें उनसे बात करके और उनको अपनी समस्याओं के बारे में बताकर बहुत अच्छा लगा।

-पूजा (16 वर्ष)

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने खुलवाया बैंक में खाता

भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही जन धन योजना के तहत मथुरा स्टेशन पर रहने वाले चार बच्चों का भारतीय स्टेट बैंक, मथुरा में जीरो बैलेंस पर खाता खुल गया। ये बच्चे बहुत दिनों से बैंक में अपना खाता खुलवाना चाहते थे, लेकिन बच्चों के पास कोई पहचान पत्र न होने के कारण ये अपना खाता नहीं खुलवा पा रहे थे। ये बहुत बार बैंकों के चक्कर लगा चुके थे और वहां के मैनेजर से बात कर चुके थे कि हमारा भी खाता अपनी बैंक में खोल दीजिए, लेकिन हर बार उन्हें निराश होकर लौटना पड़ रहा था।

परंतु भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना के तहत लगाए गए आधार कार्ड के कैंपों के तहत चेतना संस्था की मदद से इन बच्चों ने पहले अपना आधार कार्ड बनवाया। इस प्रकार इन बच्चों को उनकी पहचान का अधिकार मिला और साथ में उनका बैंक में खाता भी खुल गया। जिन बच्चों का बैंक में खाता खुला है उनका कहना है कि वे रोज 200 से 300 रूपए कमा लेते हैं। लेकिन पैसा रखने की कोई जगह न होने के कारण अपने पैसों को खर्च कर देते थे या फिर उनके पैसे चोरी हो जाते थे।

बच्चे बैंक में अपना खाता खुलवाकर बहुत खुश हैं और कहते हैं कि अब हम अपने पैसों की बचत करेंगे और अपने खाते में ये पैसे जमा करेंगे। मुकेश और गोपाल का कहना है कि यदि हमारा खाता और पहले खुल जाता तो हम अब तक बहुत पैसे इकट्ठा कर लेते। क्योंकि अब हमने नशा करना छोड़ दिया है और अब हम पैसे भी अनावश्यक कम खर्च करते हैं।



जब मुकेश, गोपाल, रिंकू और वकील के बारे में बच्चों ने सुना कि इनका बैंक में खाता खुल गया है तो सभी बच्चे अपना खाता बैंक में खुलवाने की मांग करने लगे। तब चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने बैंक प्रबंधक से बात की तो उन्होंने कहा कि हम आपके सेंटर में कैंप लगवा देंगे और आप अपने सभी बच्चों का खाता खुलवा देना।

-पूजा (16 वर्ष)

दीपक की जिंदगी को मिला सहारा

आप सभी जानते हैं कि रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। बच्चे स्टेशनों को जैसे अपना घर समझने लगे हैं। इन बच्चों को रेलवे स्टेशन की ज़िन्दगी इतनी अच्छी लगने लगी है कि वे यहां से जाना ही नहीं चाहते। यह सभी बच्चे यहीं पर रह कर काम करने लग जाते हैं।

आश्चर्य की बात यह है कि यह सभी बच्चे किसी ना किसी कारण यहां आकर रहते हैं, काम करते हैं या तो उन्हें उनकी मजबूरी स्टेशन तक खींच लाती है या फिर बहुत से बच्चे ऐसे हैं जो अपने माता पिता की लापरवाही की वजह से रेलवे स्टेशनों पर आ जाते हैं। ज़्यादातर बच्चे स्टेशनों पर इसलिए आते हैं क्योंकि वहां आसानी से रहने का ठिकाना मिल जाता है और खाने को कुछ भोजन भी मिल जाता है। इस तरह वह अपनी ज़िन्दगी रेलवे स्टेशनों पर ही बसर करते हैं।

इसी तरह की समस्या से परेशान होकर 15 वर्षीय दीपक भी मथुरा स्टेशन पर आ गया और काम करने लगा। वहां आकर दीपक नशा भी करने लगा। जब बढ़ते कदम के सदस्य 14 वर्षीय शबाना और 15 वर्षीय रज़िया दीपक से मिलीं तो उसके बारे में जाना और पूछा कि वह स्टेशन पर कैसे आया। तो दीपक ने बताया कि उसकी माता का नाम शांति है और उसके पिता का नाम भवानी है। वह झांसी के रहने वाले हैं और दीपक पहले अपने माता पिता के साथ झांसी में ही रहता था। लेकिन कुछ समय पहले दीपक के पिता जी उसकी माता को छोड़कर चले गए। फिर दीपक अपनी माता को लेकर मथुरा स्टेशन आ गया। वहां आकर उसकी माता की तबियत खराब हो गई तो उसने अपनी माता की दवा दारू के लिए स्टेशन पर काम करना शुरू कर दिया। लेकिन बड़ी दुख की बात है कि उसकी माता की ज़्यादा तबियत खराब होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह दीपक अकेला हो गया वह स्टेशन पर रहकर कबाड़ा बीनने का काम करने लगा, जिससे वह अपनी गुजर बसर करता है। यह सब जानने के बाद शबाना और रज़िया दीपक को चेतना द्वारा चलाए जा रहे हार्म रिडक्शन सेन्टर लेकर गई और वहां पर पढ़ने वाले सभी बच्चों से उसकी मुलाकात करवाई, जिससे वह अपने आप को अकेला ना समझे व बच्चों के साथ घुल मिल जाए और पढ़ाई करने लगे।

दीपक का कहना है कि वह पहले नशा करता था तथा अपने आप को बहुत अकेला समझता था। लेकिन जब से वह बढ़ते कदम से जुड़ा है उसने नशा करना कम कर दिया है। अब वह सेन्टर में रोज़ पढ़ने जाता है और साथ ही उसका आधार कार्ड भी बन गया, जिससे उसने अपना बैंक में खाता भी खुलवा लिया है। अब दीपक के बहुत से दोस्त भी बन गए हैं, जिनके साथ वह उठता बैठता है और अपने दोस्तों के साथ समय बिताता है। अब दीपक अपने आप को अकेला नहीं समझता और दीपक पहले से बहुत खुश हैं।

-पूजा (16 वर्ष)

जिला अध्यक्ष ने बाल साथियों को दी महत्वपूर्ण जानकारियां



बढ़ते कदम के मथुरा स्टेशन के हार्म रिडक्शन सेंटर में आयोजित कोर कमेटी मीटिंग में बच्चों की समस्याओं पर चर्चा की गई। मीटिंग का संचालन बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूजा द्वारा किया गया। इस मीटिंग में सभी बाल साथियों ने भाग लिया, जिसमें लड़के और लड़कियां दोनों शमिल हुए। यह बच्चे मथुरा रेलवे स्टेशनों पर अलग अलग प्रकार का नशा करते हैं और काम भी करते हैं।

पूजा ने सभी बाल साथियों का स्वागत किया और उपस्थित सभी बाल साथियों को बताया कि हम इस मीटिंग का आयोजन इसलिए करते हैं ताकि हमें आप लोगों की परेशानियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके और हम जल्द से जल्द उसे दूर कर सकें।

पूजा ने बच्चों से कहा कि यदि आपको अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर खेलने का सामान नहीं है, फर्स्ट एड बॉक्स की सुविधा नहीं है, आप लोग आपस में झगड़ा करते हैं और अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट के भैया दीदी की बात नहीं मानते हैं तो आप अपनी इन बातों को इस मीटिंग में रख सकते हैं।

मीटिंग के दौरान पूजा ने बाल साथियों को बढ़ते कदम के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमारा संगठन सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए काम कर रहा है और वह सड़क व कामकाजी बच्चों की उनकी पहचान दिलाने, उन्हें इज्जतदार जिन्दगी दिलाने और गैर सरकारी सभाओं में सीधी भागीदारी के उद्दे यों को आगे बढ़ा रहा है। उसने कहा कि हर बच्चे को जब भी समय मिले अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर रोज़ आना चाहिए और आकर पढ़ाई करनी चाहिए।

सभी बाल सदस्यों को हार्म रिडक्शन सेंटर में आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लेना चाहिए, जिससे पढ़ाई के साथ साथ उन्हें और भी जानकारियां प्राप्त हो सकें।

इस मीटिंग के दौरान किशन ने कहा कि जो लोग बच्चों से भीख मंगवाते हैं, वह उन बच्चों को बुरी तरह से मारते पीटते हैं और उनके पैसे भी छीन लेते हैं। एक बाल साथी ने कहा कि बहुत बार जब मैं भी कबाड़ा बीनकर वापस आ रही होती हूं तो कुछ बड़े लड़के बेवजह मुझे परेशान करते हैं और मेरा सामान छीन लेते हैं। सभी बातों को सुनने के बाद पूजा ने कहा कि यदि कोई आपके साथ जबरदस्ती करे तो आप अपने संगठन के लीडर या भैया दीदी को बताएं। इसकी जानकारी दें वो आपकी मदद जरूर करेंगे या फिर 1098 चाइल्ड हेल्प लाइन को फोन करके उनकी मदद लें, जो सिर्फ बच्चों के लिए ही कार्य करती है वह बच्चों के लिए 24 घंटे कार्य करती है चाहे दिन हो या रात किसी भी समय सूचना मिलने पर वह बच्चों के पास पहुंच कर उनकी मदद करती है।

-पूजा (16 वर्ष)

सरकारी स्कूलों में 219 बच्चों का हुआ दाखिला

बढ़ते कदम जो कि सड़क व कामकाजी बच्चों का संगठन है। यह संगठन विगत कई वर्षो से चेतना संस्था के सहयोग से अलग अलग स्थानों पर सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए कार्य कर रहा है और इस संगठन द्वारा बहुत से बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इस प्रयास के चलते संगठन से जुड़े बहुत से सदस्य अपने अपने क्षेत्रों के बच्चों व उनके परिजनों को शिक्षा की महत्ता के बारे में जानकारी दे रहे हैं और उन्हें स्कूल जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

संगठन की इस पहल से बहुत से बच्चों ने शिक्षा के प्रति अपना मन भी बनाया है। इन बच्चों ने पढ़ाई लिखाई के महत्व के बारे में जागरूक होकर अपने माता पिता को भी समझाया है कि वह अपने बच्चों को स्कूल भेजें और उन्हें शिक्षित करें।

आगरा शहर की कई मलिन बस्तियों में रहने वाले सड़क व कामकाजी बच्चे जो अलग अलग प्रकार का जैसे जूते बनाना, ब्रश बनाना, झाडू बनाना व कतरन छांटना इत्यादि कार्य कर रहे हैं। इस काम में लड़के व लडकियों की बराबर की भागीदारी है।

ये बच्चे अपनी शिक्षा से परे हटकर पूरे दिन काम करते हैं और अपने घरों का खर्च चलाते हैं। इस रोजमर्रा की जिन्दगी में इन बच्चों के माता पिता इनसे बात नहीं करते कि ये बच्चे इस जिन्दगी को छोड़कर कैसे आगे बढ़ें



और कैसे ये शिक्षा से जुड़ सकें।

शिक्षा के प्रति इस उदासीनता को देखते हुए बढ़ते कदम संगठन द्वारा बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के संबंध में कई प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, जिससे काम कर रहे बच्चों को शिक्षा के महत्व के बारे में पता चले। इस प्रकार जो बच्चे कभी स्कूल में प्रवेश नहीं लेना चाहते थे, उन बच्चों ने आज अपनी शिक्षा के प्रति उत्सुकता दिखाई है और वह बच्चे स्कूल में दाखिला लेने के लिए राजी हुए हैं।

इस प्रकार बढ़ते कदम और चेतना संस्था के सहयोग से आगरा की लगभग बारह बस्तियों जिसमें राजनगर, जगदीश पुरा, पृथ्वी नाथ, आजम पाड़ा, लाल डिग्गी, गौतम नगर, मारवाड़ी, इन्द्रा नगर, अब्बास नगर, झाडू वाली बस्ती, नया घेर, छिद्दा नगला, आदि मलिन बस्तियों से तीन सौ सड़क एवं कामाकजी बच्चों का सरकारी स्कूलों में दाखिला करवाया गया है।

विद्यालयों में प्रवेश पाकर बच्चे बहुत खुश हैं। जगदीश पुरा में रहने वाले बाल साथी दिनेश ने बताया कि मैंने पहले कभी अन्दर से विद्यालय नहीं देखा था, मगर बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूनम दीदी ने और चेतना के भैया दीदी ने हमारे माता पिता को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया। आज उनके प्रयासों द्वारा ही हमें विद्यालय में प्रवेश मिला है। अब मैं प्रतिदिन विद्यालय जाता हूं। अब मैं विद्यालय में प्रवेश पाकर बहुत खुश हूं।

नया घेर से गुड़िया नामक बालिका ने बताया कि वह पहले इधर उधर घूमकर अपना समय नष्ट किया करती थी। मगर एक दिन मेरे पास पूनम दीदी आई और उहोंने मुझे बढ़ते कदम के बारे में बताया उसके बाद मैं इस संगठन की सदस्य बन गई। फिर मुझे व मेरे माता पिता को धीरे धीरे शिक्षा के बारे में पता चला, तब जाकर मेरे माता पिता को शिक्षा का महत्व समझ आया और पूनम दीदी के काफी प्रयास करने के बाद मैंने अपने अधिकारों के बारे में जाना और अपना दाखिला स्कूल में करवाया। अब मैं बहुत खुश हूं।

–पूनम (16 वर्ष)

अध्यापिका के अत्याचारों का शिकार होते बच्चे

मेरा नाम विमल (परिवर्तित नाम) है। मेरी उम्र 14 वर्ष है। मैं अगरा में अपने माता पिता के साथ रहता हूं। मैं कक्षा आठ में पढ़ता हूं। मेरे स्कूल का नाम प्राथमिक कन्या विद्यालय है। इस स्कूल में हम बच्चों को ठीक से पढ़ाया नहीं जाता है और जो सरकार की तरफ से हम बच्चों को मिड डे मील मिलता है वो भी समय से नहीं बन पाता है।

इस स्कूल के जो अध्यापक हैं वह हम बच्चों को गन्दी गन्दी गालियां देते हैं। साथ में हमारे माता पिता से भी र्दुव्यवहार करते हैं और जब हम अपनी किताब अध्यापिका के पास लेकर जाते हैं तो वह कुछ गलती हो जाने पर हमारी किताब गुस्से से फेंक देती हैं।

एक दिन हम बच्चे बी.एस.ए. ऑफिस में अध्यापिका श्रीमती मुन्नी देवी की शिकायत करने गए तो मैडम ने हमें बी.एस.ए. सर से बात नहीं करने दी और हम बच्चों के पीछे मारने के लिए एक आदमी को भेजा। हम बच्चे डर के मारे वापस अपने स्कूल में चले गए।

उसके बाद अध्यापिका को पता चल गया कि हम उनकी शिकायत बी.एस.ए. ऑफिस में करने जाने की कोशिश कर रहे हैं तो उन्होंने हम बच्चों की बहुत पिटाई लगाई, लेकिन हम बच्चे फिर दूसरे दिन बी.एस.ए. ऑफिस गए जहां जाकर हमने अपने स्कूल की समस्या के बारे में बताया।

बी.एस.ए. सर ने कहा कि हम 2 बजे तक किसी को भेज देंगे, जो आप सभी बच्चों की समस्या को देखेगा और उसका हल निकालेगा तथा उस समस्या पर बातचीत करेगा। उस दिन हम बच्चों ने 2 बजे तक उनका इंतजार किया, लेकिन बी.एस.ए. ऑफिस से कोई भी नहीं आया जो हम बच्चों की परेशानी को हल कर सके। इस तरह राह देखते देखते पूरा एक सप्ताह गुजर गया।

एक सप्ताह बाद हम बच्चे अपने स्कूल में पहुंचे तो हमने अध्यापिका से पूछा कि आज खाने में क्या पकाया है तो मैम ने हमें गाली देकर कहा कि आप सभी बच्चे तो हराम का खाना खाते हो। उस अध्यापिका का व्यवहार बच्चों के प्रति बिल्कुल भी ठीक नहीं है।

वह आए दिन हम बच्चों को किसी ना किसी बहाने से मारती रहती है और गाली देती रहती है। कई बार तो हम बच्चों पर चोरी का इल्जाम भी लगाया है। एक दिन हम बच्चे दोपहर का खाना खाकर खेल रहे थे तो राहुल (परिवर्तित नाम) को अध्यापिका ने अन्दर बुलाया और बिना किसी बात पर उन्होंने राहुल की पिटाई लगाई।

राहुल का एक पैर खराब है लेकिन उस अध्यापिका ने बिल्कुल भी राहुल पर तरस नहीं खाया और उसी पैर में राहुल के जोर से डंडा मार दिया जैसे ही राहुल खुद को बचाने के लिए पीछे हटा तो उसके सिर में बहुत तेज अलमारी लग गई, लेकिन फिर भी राहुल ने अपनी अध्यापिका से कुछ नहीं कहा।

राहुल ने बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूनम को फोन कर दिया और स्कूल की इस पूरी समस्या के बारे में बताया। पूनम के साथ मिलकर हमने चाइल्ड लाइन को फोन किया और उन्हें स्कूल की समस्या बताई। समस्या को सुनने के बाद चाइल्ड लाइन की सदस्य रीतू दीदी हमारे स्कूल में आई। हम बच्चों ने अपनी बातों को उनसे बताते हुए कहा कि हमें जूनियर कक्षा में दो साल हो गए हैं और दो सालों से ही हम इस अध्यापिका को झेल रहे हैं पर अब नहीं झेल सकते क्योंकि इनका अत्याचार बढ़ता ही जा रहा है। वह हर रोज हम बच्चों को मारती है।

कुछ बच्चे इस जूनियर कक्षा में नए आए हैं और यह सब हम बच्चों के साथ अब र्दुव्यवहार नहीं होने देंगे। यह अध्यापिका गन्दे शब्दों से बच्चों को डांटती है। हम यह नहीं सुन सकते। बच्चों ने कहा कि हम बच्चे इतनी दूर दूर से पढ़ने के लिए आते हैं, अगर हमें कुछ हो गया तो इसका जिम्मेदार कौन होगा। यह सब सुनने के बाद चाइल्ड लाइन की रीतू जी ने बी.एस.ए. सर के पास लेटर भेजा कि वह इस समस्या का कोई जल्दी समाधान निकालें तथा इस समस्या को हल करें। लेकिन अब तक इस मामले में किसी भी तरह से कोई भी सुनवाई नहीं की गई है।

–पूनम (16 वर्ष)

कैसे कराऊं इलाज अपनी बढ़ती बीमारी का?



मेरा नाम भावना है। मेरी उम्र 15 साल है। मैं जगदीश पुरा में रहती हूं। मैं जूते में चेन लगाने का काम करती हूं। मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। इसी कारण मैं स्कूल ना जा सकी। मेरे घर में 5 भाई बहन हैं और मेरे पिता जी की मृत्यु हो चुकी है।

मैं बढ़ते कदम संगठन की सदस्य भी हूं और चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट पर पढ़ने जाती हूं। साथ ही मैं बढ़ते कदम द्वारा आयोजित सभी गतिविधियों में भाग लेती हूं और तीन बार मैं कोर कमेटी मीटिंग में भाग ले चुकी हूं।

मैं अपने भाई बहनों के लिए बहुत मेहनत करती हूं। मेरे घर की हालत इतनी खराब है कि मेरे साथ साथ मेरी माता भी काम करती है। एक दिन मैं अपने कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट पर पढ़ने के लिए गई और अचानक मेरे पेट में दर्द हुआ तो मुझे बढ़ते कदम की दीदी ने दो रूपये की एक गोली लाकर दी और उस गोली को खाकर मुझे थोड़ी देर बाद पेट दर्द में आराम मिल गया।

इसी बीच हम जूतों में चेन लगाने का जो काम किया करते थे, वह भी दो तीन महीनों से बंद हो गया है। हमारा जूते का काम भी नहीं चल रहा है। इस वजह से हमने दूसरा काम ढूंढना शुरू किया। लेकिन हमें कोई भी काम करने के लिए नहीं मिला।

मैं इसी सोच फिकर में रहती कि अगर हमें इस तरह कहीं काम करने के लिए नहीं मिला तो हम काम नहीं कर पाएंगे और पैसे नहीं कमा पाएंगे तो खाएंगे क्या?हमारे घर की स्थिति इतनी खराब होती जा रही थी कि शायद काम ना मिलता तो ना जाने क्या होता?यह हालत देखकर एक आंटी जी ने हमें चूरन की पुड़िया बनाने का काम दिया, जिसमें हमें 5 किलो चूरन की पुड़िया बनाने पर 50 रूपये मिलते हैं। फिर उसी पैसों से हम अपने घर की गुजर बसर करते हैं और अपना खर्चा चलाते हैं।

लेकिन एक दिन जब मैं अपनी माता के साथ काम कर रही थी तो मेरे पेट में फिर वही दर्द बहुत जोर से हुआ तो मेरी माता घबरा गई और तुरंत उन्होंने पड़ोसियों से कुछ पैसे उधार लिए और मुझे डॉक्टर के पास लेकर गई तो डॉक्टर साहब ने बताया कि मेरे कमर की साइड पर गांठ है। डॉक्टर साहब ने मुझे कुछ इंजेक्शन लगाएं और कुछ दवाईयां दी।

जब से मुझे यह बीमारी हुई है मेरी कमर में हमेशा दर्द रहता है। जिससे मुझे बहुत तकलीफ होती है। अब तो मैं बस यही सोचती रहती हूं कि 50 रूपये से घर का खर्चा चलाएंगे या फिर अपनी दवा दारू कराएंगे। अब तो हमें कोई उधार भी नहीं देगा और अगर चूरन के पैसों से मेरी दवा दारू करेंगे तो मेरे भाई बहन को खाना भी नहीं मिलेगा। मेरी माता कैसे इतने कम पैसों में मेरा इलाज करा सकेगी और घर का खर्चा चला सकेगी।

–पूनम (16 वर्ष)

बढ़ते कदम की सदस्य ने कराया स्कूल में दूसरे बाल साथियों का दाखिला

13 वर्षीय गुड्डी, जो आगरा में बसी मारवाड़ी बस्ती में रहती है और वह हंटर का काम करती है। उसके घर की स्थिति ठीक ना होने के कारण वह स्कूल ना जा सकी। लेकिन एक दिन उसकी बढ़ते कदम की सदस्य से मुलाकात हुई। बढ़ते कदम की सदस्य पूनम ने उसे बताया कि वह चेतना संस्था द्वारा चालाए जा रहे कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने के लिए जा सकती है। जहां सड़क एवं कामकाजी बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है और उन्हें आगे बढ़ने का मौका दिया जाता है। साथ ही उन सभी बच्चों की मदद भी की जाती है और उन्हें अपनी समस्याओं को रखने का अवसर भी मिलता है, जिससे बच्चे को किसी भी तरह की समस्या होने पर उनकी मदद की जा सके।

यह सुनने के बाद गुड्डी रोज़ अपने हंटर का काम करने के बाद कॉन्टेक्ट प्वाइंट पढ़ने के लिए जाने लगी और वह उस कॉन्टेक्ट प्वाइंट की लीडर बन गई और हर एक मीटिंग में भाग लेने लगी व बच्चों की समस्याओं को हल करने लगी। एक साल बाद गुड्डी का दाखिला सरकारी स्कूल में करवा दिया गया।

वह रोज स्कूल जाने लगी। गुड्डी को स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है और वह चाहती है कि उसकी बस्ती के सभी बच्चे अपना दाखिला स्कूल में करवाकर स्कूल जाएं। इसलिए वह सभी बच्चों को पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करती है और उनके माता पिता को समझाती है, जिससे वह अपने बच्चों का दाखिला स्कूल में करवा दें।

जो माता पिता अपने बच्चों को स्कूल जाने से रोकते हैं और कहते हैं कि उनके बच्चे स्कूल जाकर क्या करेंगे। गुड्डी उनके माता पिता के पास जाकर उन्हें समझाती है कि स्कूल में आपके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलेगी, वह पढ़ लिखकर आगे बढ़ेंगे।

स्कूल जाने से बहुत फायदा पहुंचता है। पहनने के लिए ड्रेस मिलती है और एक वक्त का खाना भी मिलता है। साथ ही आपके बच्चों को ढेर सारा ज्ञान मिलेगा। इस तरह से गुड्डी ने उनके माता पिता को समझाया, जो अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे। गुड्डी की मेहनत रंग लाई और अब वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए तैयार हो गए हैं।

गुड्डी के इस प्रयास से उसने अब तक पांच बच्चों के माता पिता को समझाकर उनके बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार भी कर लिया है और उन पांचों बच्चों का प्राथमिक विद्यालय, महल यमुना पार स्कूल में दाखिला भी करवा दिया गया है।

गुड्डी कहती है कि मैंने जिन पांच बच्चों दीपाली, लकी, सुमन, डोली, रेखा का स्कूल में दाखिला करवाया है, ये बच्चे रोज समय से स्कूल जाते हैं। मैं उन बच्चों को स्कूल जाते देखती हूं तो मुझे बड़ी खुशी महसूस होती है। अब हम सब बच्चे साथ मिलकर स्कूल जाते हैं। दीपाली का कहना है कि वह स्कूल में प्रवेश लेकर बहुत खुश है और उसने कहा कि हमारे माता पिता पहले हमें बिल्कुल भी स्कूल जाने के लिए नहीं कहते थे, लेकिन बढ़ते कदम की लीडर गुड्डी ने हमारे माता पिता को समझाया और उन्हें अपने प्राथमिक विद्यालय, महल यमुना पार स्कूल लेकर गई और हमारा उसी स्कूल में दाखिला करवा दिया।

–पूनम (16 वर्ष)

नगर निगम से कोई सहायता न मिलने पर बाल साथियों ने स्वयं उठाई साफ सफाई की जिम्मेदारी



झांसी के गोविन्द चौराहे की जिस बस्ती में चेतना संस्था कॉन्टेक्ट प्वाइंट चलाती है, उसके आस पास बहुत गंदगी है। इस स्थान पर इतनी सड़न और बदबू भरी रहती है कि बाल साथियों का वहां पर बैठकर पढ़ना मुश्किल होता है। दिन रात मक्खी और मच्छरों ने यहां के लोगों का जीना दूभर कर रखा है।

इस स्थान पर इतनी गंदगी होने के बाद भी वहां के रहने वाले लोग इधर उधर कूड़ा कचरा फेंकते रहते हैं। जब बच्चों की पढ़ाई करने का समय होता है तो पहले वे वहां की साफ सफाई करते हैं, तब पढ़ने बैठते हैं। रोज की इस दिनचर्या से परेशान होकर बाल साथियों ने आस पास के लोगों से अपील भी की, कि वे इस स्थान पर कूड़ा ना डालें बल्कि यहां की साफ सफाई के बारे में कुछ करने की सोचें। वे लोग इस स्थान को साफ रखें, जिससे बाल साथियों की पढ़ाई में किसी भी तरह की रूकावट पैदा ना हो। बाल साथियों ने वहां के लोगों से अपील की, कि वे सब लोग मिलकर इस गंदगी को वहां के एम.सी.डी. द्वारा साफ करवाएं।

जब हमारे बालकनामा के रिपोर्टर ने इस विषय पर 14 वर्षीय दिनेश से बात की तो उसने बताया कि हम बच्चों को इस कचरे के ढेर से बहुत परेशानी होती है और इस परेशानी की वजह से हम बच्चे यहां खेल भी नहीं पाते और जब तेज़ हवा चलती है तो यहां पर पड़ी कचरे की बदबूदार थैलियां हमारे घरों के अंदर उड़कर चली जाती हैं, जिससे हमें खाना खाने में भी परेशानी होती है और घरों की सफाई गंदगी में बदल जाती है। उसके बाद 12 वर्षीय निशा ने कहा कि हम चाहते हैं कि यहां की गंदगी को साफ करवाया जाए और इस परेशानी को जल्द से जल्द दूर किया जाए। 13 वर्षीय रोहित ने बताया कि हम सभी बाल साथियों ने सफाई कर्मचारी से बहुत बार शिकायत भी की है और उन्हें बताया है कि हमारे यहां बहुत गंदगी और कूड़ा कचरा है तो उन्होंने भी हमारी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वहां की गंदगी को साफ नहीं करवाया।

रोहित ने बताया कि गोविंद चौराहा में नगर निगम कार्यालय से कोई भी सुविधा प्राप्त नहीं होती है। क्योंकि हम बच्चों के साथ साथ यहां रहने वाले लोगों ने भी इस बारे में अधिकारियों से भी बात की थी पर इसके बाद भी कोई सुनवाई नहीं की गई। जिससे बच्चे परेशान हो रहें है और इस गंदगी को बर्दास्त कर रहे हैं। तब हम सभी बाल साथियों ने थक हार कर यह निर्णय लिया है कि अब हम स्वयं ही इस स्थान की सफाई करेंगे। इन सभी बाल साथियों ने इस स्थान की साफ सफाई करने का बीड़ा उठा लिया है।

इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने आस पास के सभी बाल साथियों के साथ मिलकर एक बैठक का आयोजन किया और इस बैठक में इस विषय पर विचार विमर्श किया। इसके बाद उन सभी बाल साथियों ने अपने हाथों से उस स्थान की रोज़ सफाई करना शुरू कर दी। वह सभी बच्चे इतनी मेहनत के साथ अपने हाथों से वहां फैली गंदगी को साफ करते हैं और कूड़ा कचरा उठाकर अपने सिर पर रखकर फेंकने जाते हैं। इस प्रकार बच्चों का यही प्रयास है कि वे वहां की गंदगी को किसी तरह कम कर सकें ताकि वे स्वच्छता से रह सकें, वहां खेल कूद सकें तथा पढ़ाई लिखाई कर सकें।

जशवंत (15 वर्ष)



स्कूल में प्रवेश पाकर खुश हुआ दिनेश

13 वर्षीय दिनेश झांसी के कॉन्टेक्ट प्वाइंट गोविंद चौराहा में अपने माता पिता के साथ रहता है। वह अपने पिता के साथ कबाड़ा बीनने का काम भी करने जाता है। वह दो ही भाई बहन हैं, जो अपने माता पिता के साथ पिछले कई वर्षों से झांसी में रह रहे हैं। दिनेश के घर की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण वह पढ़ लिख नहीं पाया। लेकिन दिनेश को शुरू से ही पढ़ने का बहुत शौक था। जब वह दूसरे बच्चों को स्कूल जाते देखता था तो उसका मन भी करता था कि वह इनकी तरह स्कूल जा पाता। लेकिन उसे पता था कि उसके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है कि वह अपना काम छोड़कर स्कूल पढ़ने जा सके। दिनेश यह भी सोचता था कि क्या वह ऐसा कर सकता है कि काम भी करे और अपनी पढ़ाई भी करे।

जब बढ़ते कदम के जिला सचिव 15 वर्षीय जशवंत ने दिनेश के माता पिता को यह जानकारी दी कि इस समय सभी स्कूलों में बच्चों के दाखिले हो रहे हैं और कोई भी अपने बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूलों में करवा सकता है। साथ ही उन्हें यह भी बताया कि उनका बेटा पढ़ने में अच्छा है। वह स्कूल में पढ़ना चाहता है तो उसके माता पिता ने कहा कि हम दिनेश को स्कूल भेजने के लिए तैयार हैं पर हमारे बेटे का दाखिला कौन करवाएगा तो जशवंत ने बताया कि दिनेश का दाखिला अविनाश भैया करवा देंगे जो चेतना संस्था के कार्यकर्ता हैं। उसके बाद दिनेश के माता पिता से अविनाश भैया ने बात की और उन्हें दिनेश का दाखिला करवाने के लिए पूरी तरह तैयार किया। ताकि वह अपने बेटे का स्कूल में दाखिला होने के बाद रोज़ उसे स्कूल भेजें और उसकी पढ़ाई लिखाई में किसी भी तरह की बाधा ना डालें, जिससे वह स्कूल न जा पाए और उनसे कहा कि वह अपने बेटे को पढ़ने का समय भी दें।

उसके बाद दिनेश के माता पिता ने कहा की वह अपने बेटे को रोज़ स्कूल भेजेंगे। दिनेश का दाखिला सरकारी स्कूल के कक्षा एक में करवा दिया गया। अब दिनेश स्कूल जाने लगा है। उसका कहना है कि उसे स्कूल जाकर बहुत खुशी हो रही है। वह रोज़ सुबह उठकर पहले स्कूल जाता है और उसके बाद दोपहर में वह कबाड़ा बीनने का काम करता है, जिससे वह अपने घर की आर्थिक रूप से मदद पहुंचाने में अपने माता पिता की सहायता कर सके।

-जशवंत (15 वर्ष)

बच्चों की बैठक में बड़ी सीख



जब बढ़ते कदम संगठन के जिला सचिव 15 वर्षीय जशवंत झांसी के गढ़मऊ कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पहुंचे तो वहां पर जाकर सभी बच्चों को इकट्ठा किया और सभी बच्चों के साथ एक बैठक की। बैठक के दौरान 12 वर्षीय सोनू, जो अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट का लीडर है उसने सभी बच्चों का स्वागत किया और कहा कि आज हम सब बच्चे इस बैठक में अपनी समस्याओं पर चर्चा करेंगे और चर्चा के बाद अपनी समस्याओं को कैसे हल कर सकते हैं उसका समाधान निकालेंगे। उसके बाद सभी बच्चों ने अपनी समस्याओं को सभी के सामने रखा और उन पर बात की।

बातचीत के दौरान 12 वर्षीय सोनू ने बताया कि मैं अपने पिता के साथ काम करने जाता हूं। हमारे यहां गढ़मऊ के मोहल्ले में पहाड़ी इलाका है। इसकी वजह से हमारे यहां के नल में पानी नहीं आता। नल सूख जाते हैं। इस भरी धूप और गर्मी के चलते यहां बुरा हाल है। इस परेशानी की वजह से हम बच्चे गर्मी से परेशान होकर पास के एक तालाब में नहाने जाते हैं क्योंकि हमारे यहां पानी की समस्या बहुत ज़्यादा है। इसलिए सभी बच्चे उस तालाब में ही अपना नहाना धोना करते हैं। कुछ समय पहले की बात है कि 12 वर्षीय राधेश्याम, मिथुन और सोहना यह तीनों बाल साथी पानी ना होने के कारण तालाब में नहाने गए थे और मैं भी उनके साथ गया था। राधेश्याम जैसे ही उस तालाब के अन्दर नहाने के लिए गया तो वह नहाते नहाते गहराई की ओर बढ़ता गया। सभी बाल साथी नहाने के बाद कपड़े पहन कर अपने अपने घर जाने लगे। लेकिन राधेश्याम की तरफ जब हमने ध्यान दिया तो वह नहा रहा था उसे नहीं पता था कि वह पानी की गहराई में समाता जा रहा है। जब उसने पानी में अपने आप को बहता हुआ देखा तो उसने चिल्लाना शुरू कर दिया और वह मदद मांगने लगा। जब हम सभी को राधेश्याम के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई पड़ी तो पूरे मोहल्ले में शोर मच गया कि राधेश्याम पानी में डूब गया। यह सुनकर हमने तालाब के नज़दीक जाकर देखा तो वह सचमुच में डूब रहा था। सभी लोग वहां खड़े उसे डूबता देख रहे थे। लेकिन उसे निकालने के बारे में कोई कुछ नहीं कर रहा था। मैं यह सब देखकर उस पानी में कूद पड़ा और राधेश्याम को तालाब से बाहर निकालने का प्रयास करने लगा। बहुत परिश्रम करने के बाद मैंने राधेश्याम को तालाब से बाहर निकाल लिया और उसे बचा लिया। लेकिन यह तो हमारे यहां की रोज की समस्या है। उस दिन मैं राधेश्याम के साथ था तो मैंने उसे बचा लिया, लेकिन यदि कोई वहां न हो तो बच्चा जो वहां नहाने गया है वह तो डूब ही जाएगा।

सोनू की इस समस्या के बारे में जानने के बाद सभी बच्चों ने कहा कि तो फिर इस खतरे से निकलने के लिए क्या किया जाना चाहिए, जिससे हम बच्चे उस पानी की तरफ ना जाए। 12 वर्षीय हरशू ने कहा कि अगर हम सब बाल साथी वहां नहाने ना जाएं और अपने घर पर ही पानी भर कर नहाएं तो हमें देखकर बाकी के बाल साथी भी उस तालाब की ओर नहाने नहीं जाएंगे। इस प्रकार हम दूसरे बच्चों को उस तालाब में नहाने से रोक सकेंगे। सबसे पहले हमें खुद को ही सावधानी बरतनी होगी, उसके बाद हम इस समस्या से बच सकेंगे।

-जशवंत (15 वर्ष)

बेबसी के आंचल में पलता बचपन

14 वर्षीय सुमित झांसी में बसी एक बस्ती सखीपुरा का रहने वाला है। वह अपने माता पिता के साथ रहता है। सुमित की माता दिमागी तौर से पागल हैं और उसके पिता जी बहुत शराब पीते हैं। वह पिछले दो साल से बढ़ते कदम से जुड़ा हुआ है और संगठन का पुराना सदस्य है। सुमित को पढ़ने का बहुत शौक है। इसलिए वह पहले सखीपुरा के कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने के लिए आता था। लेकिन उसके पिता जी उसे पढ़ने को मना करते थे। जब भी वह पढ़ने के लिए कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर बैठता था तो उसके पिता जी उसे वहां से उठाकर ले जाते थे और काम पर भेज देते थे। सुमित ने धीरे धीरे कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर आना कम कर दिया है। अब वह काम करने लगा है और काम करके वह अपना घर का खर्च खुद से चलाता है। लेकिन सुमित के पिता को शराब पीने की बुरी लत है और वह सुमित के कमाए हुए पैसों से ही शराब पीते हैं। जो कुछ सुमित कमाता है उसके पिताजी उससे ले लेते हैं और उन पैसों से शराब पीकर आ जाते हैं। सुमित को रोज़ काम पर जाना पड़ता है, क्योंकि वह अकेला ही अपने घर का खर्चा पानी चला रहा है और उसके पिता जी कुछ काम नहीं करते, सिर्फ अपने बेटे के पैसों से शराब का सेवन करते हैं।

सुमित की माता की दिमागी हालत ठीक न होने के कारण वह अपनी माता का ख्याल भी रखता है और काम करने भी जाता है। जब सुमित के पिता जी शराब पीकर घर पर जाते हैं तो घर में हंगामा कर देते हैं और लड़ाई झगड़ा करते हैं तथा सुमित को मारते पीटते हैं। उसके साथ साथ वह उसकी माता को भी मारते हैं। यह सब देखकर सुमित को बहुत दुख होता है। सुमित जहां काम करता है उसके पिता जी उसके मालिक के घर जाकर सुमित के नाम से पैसे उधार ले आते हैं और सब पैसों की शराब पी लेते हैं। इस कारण सुमित के ऊपर बहुत कर्जा होता जा रहा है। सुमित सोच रहा है कि वह और ज़्यादा काम करे, जिससे उसके ऊपर जो कर्जा है वो खत्म हो जाए।

इतनी कम उम्र में सुमित अपने घर को संभाले हुए है। वह दिन भर तो काम करता है और शाम होने पर घर वापस आकर अपनी माता का ख्याल रखता है। यह सब देखकर बढ़ते कदम के रिपोर्टर 15 वर्षीय जशवंत ने जब सुमित से मुलाकात की तो सुमित ने अपने बारे में बताया और कहा कि मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। मैं पढ़ना तो चाहता हूं पर क्या करूं मैं चाहकर भी नहीं पढ़ सकता। क्योंकि अगर मैं पढ़ने गया तो मेरी माता का ख्याल कौन रखेगा और काम करने कौन जाएगा, जिससे मेरे घर का खर्चा चल सके। मैं इसी वजह से पढ़ने नहीं जा पा रहा हूं क्योंकि मैं बेबस हूं।

-जशवंत (15 वर्ष)

लापता बच्चों को ढूंढेगा 'खोया पाया' वेब पोर्टल



आपको जानकर हैरानी होगी कि पुलिस थानों में एक वर्ष में तकरीबन 70,000 गुमशुदा बच्चों की रिपोर्ट दर्ज की जाती हैं और उन्हें ढूंढा जाता है। गुमशुदा बच्चों के साल दर साल बढ़ते हुए ये आंकड़े सरकार के लिए बहुत चिंता का विषय है। इन सभी परिस्थितियों को देखते हुए और खोए या पाए गए बच्चों को तत्काल संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से महिल एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा केंद्रीय सूचना केंद्र (एनआईसी) के सहयोग से एक वेब पोर्टल ''खोया पाया'' बनाया गया है।

दिनांक 3 जून को महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गांधी जी और केंद्रीय दूर संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी द्वारा इस वेब पोर्टल की शुरूआत की गई। इस वेब पोर्टल में गुमशुदा बच्चों और ऐसे गुमशुदा बच्चे जो कहीं देखे या पाए गए हैं, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण वेब कास्टिंग के जरिए किया जाएगा। यह प्रसारण केंद्र सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की वेबसाइट www.wcd.nic.in पर खोया पाया कैप्शन के साथ व्हाट्स न्यूज के अंतर्गत देखा जा सकेगा। इसके अलावा यह प्रसारण इस विभाग के फेसबुक और ट्वीटर एकाउंट पर भी देखा जा सकेगा।

खोया पाया वेब पोर्टल के तहत

* गुमशुदा और पाए गए बालकों की तुरंत रिपोर्टिंग का प्रावधान है।

* साइट आधारित जानकारियों के माध्यम से गुमशुदा बालकों का पता लगाना आसान है।

* यह नागरिकों के साथ जुड़े हुए बालकों के बारे में जानकारी प्रदान करने को प्रोत्साहित करता है।

* नागरिक पाए गए बालकों के बारे में जानकारी अपलोड कर सकते हैं।

* पाए गए बालकों के साथ गुमशुदा बालकों के शारीरिक लक्षणों का मिलान कर सकते हैं।

* खोए हुए या कहीं देखे गए बालकों की सूचना khoyapaya.gov.in पर अपलोड की जा सकती है।

खोया पाया वेब पोर्टल एक सशक्त मंच है, जहां नागरिक गुमशुदा बालकों तथा उनके पता के ठिकानों के बारे में रिपोर्ट दे सकते हैं। पाए गए बालकों के बारे में भी रिपोर्ट दी जा सकती है। ये रिपोर्ट फोटोग्राफ, वीडियो तथा संचारण के अन्य साधनों और खोया पाया साइट पर जानकारी अपलोड करने के माध्यम से दी जा सकती है।

-शन्नो (19 वर्ष)

शराबी माता पिता पढ़ने नहीं देते अपने बच्चों को

14 वर्षीय आकाश पश्चिमी दिल्ली के वाल्मीकि कैम्प में अपने माता पिता के साथ रहता है। वह दो भाई बहन हैं। वह कबाड़ा बीनने का काम करता है, जिससे वह अपने घर का खर्च चलाता है। लेकिन उसके माता पिता कुछ काम नहीं करते, बल्कि दोनों मिलकर शराब पीते हैं और वह कबाड़ा बीनकर जो पैसा कमाता है वह पैसे उसके माता पिता उससे छीन लेते हैं और उसकी शराब पी लेते हैं। आकाश अपने माता पिता के इन कारनामों से बहुत दुखी होता है।

वह गर्मी हो या सर्दी दिन भर इधर उधर घूम घूम कर कबाड़ा बीनकर मेहनत से ये पैसे कमाता है और उसके माता पिता एक झटके में उसकी मेहनत की कमाई को शराब में उड़ा देते हैं। अब वह इन सब से बहुत परेशान हो चुका है क्योंकि अगर वह अपने पिता को पैसे नहीं देता है तो उसके पिता उससे झगड़ा करते हैं और उससे गाली गलौच करते हैं।

उसके माता पिता के इस रवैये से वहां रहने वाले लोग भी उन्हें भला बुरा कहते हैं। उसकी बहन जो 16 वर्ष की है, वह भी कोठी में काम करने जाती है ताकि वह दोनों मिलकर अपनी गुजर बसर कर सकें। लेकिन आकाश को कबाड़ा बीनना अच्छा नहीं लगता। वह पढ़ना चाहता है और आगे बढ़ना चाहता है। पर उसे न तो कोई सुविधा प्राप्त हो पा रही है और न ही कोई उसकी मदद करने वाला है।

वह चाहता है कि वह शेल्टर होम जाकर अपनी पढ़ाई करे, लेकिन उसके पिता उसे पढ़ने के लिए नहीं भेजते हैं। इसी बीच बढ़ते कदम के राज्य सचिव विकास और जिला अध्यक्ष चांदनी ने उससे मुलाकात की। वे दोनों उसके माता पिता से मिले और आकाश की पढ़ाई के बारे में बात की। लेकिन उसके पिता जी ने एकदम मना कर दिया और कहा कि हम अपने बच्चे को पढ़ने के लिए नहीं भेजेंगे। आकाश हमारे साथ रहकर काम करेगा। वह कहीं नहीं जाएगा पढ़ने लिखने के लिए तो बिल्कुल भी नहीं।

यह सुनकर आकाश बहुत परेशान हो गया और अपने काम पर चला गया। आकाश चाहता है कि वह एक अच्छे सेन्टर में अपनी पढ़ाई लिखाई करे और आगे बढ़े। लेकिन यह मौका शायद उसे नहीं मिल पाएगा क्योंकि उसके माता पिता तो शराब का सेवन करते हैं और उसकी बहन भी काम करती है। इसकी वजह से वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाएगा। उसके मन में एक आस है कि वह एक दिन ज़रूर पढ़ लिख कर आगे बढ़ेगा।

-चांदनी (15 वर्ष)

किशोरों की उम्र घटाने के पक्ष में नहीं सामाजिक संस्थाएं

किशोर न्याय बिल को लेकर मंथन जारी

किशोर न्याय बिल में किशोरों की उम्र कम करने को लेकर सामाजिक संस्थाओं ने गहरी चिंता जताई है। सामाजिक कार्यकर्ताओं का मानना है कि सरकार द्वारा इस बिल को पास करने में बहुत जल्दी दिखाई गई है और इस पर पूर्ण रूप से विचार विमर्श किए बिना ही किशोर न्याय बिल 2014 को सदन में पास कर दिया गया है। इस नए बिल में...

1. समानता के अधिकार का उल्लंघन : 16 से 18 वर्ष के बच्चों की न्यूरोबायलॉजिकल संरचना एवं प्रक्रिया वयस्कों के समान नहीं होती, इसलिए उन्हें वयस्कों की तरह ही समझना संविधान की धारा 14 एवं 15 (3) के तहत उल्लंघन करना होगा।

2. नए प्रावधानों के अनुसार किशोर न्याय बोर्ड को किशोरों या वयस्कों की मानसिक अवस्था के अनुसार फैसला लेना संभव नहीं है, क्योंकि ऐसा कर पाना विज्ञान की सीमा से परे है।

3. सरकार को चाहिए कि वो अपराध में लिप्त किशोरों के पुर्नवास के तरीकों और उनकी खामियों पर ज्यादा जोर दें, जिसकी अनुपस्थिति में किशोर मुख्यधारा में नहीं आ पाते।

किशोर न्याय बिल पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किशोर न्याय बोर्ड (जेजेबी) के वकील श्री अनंत अस्थाना जी ने सवाल उठाया कि, ''आखिर इस कानून में बसी मानवीय विचारधारा को क्यों बदला जा रहा है। इस कानून का पूरा आधार सुधारात्मक था, न कि दंडात्मक।''

बालकनामा अखबार की सलाहकार शन्नो कहती हैं कि, ''इस देश में ऐसे लाखों गरीब बच्चे हैं जो स्कूल से बाहर हैं और सड़कों पर जीवनयापन करके विषम परिस्थितियों में रहने को मजबूर हैं। ऐसे बच्चे लचर कानून व्यवस्था तंत्र के शिकार हो सकते हैं।''

श्री संजय गुप्ता ने बताया कि, ''प्रो चाइल्ड इस हेतु देश व्यापी अभियान चलाएगा और सरकार से लगातार निवेदन करेगा कि वे किशोरों के प्रति देश हित में सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाएं।''

-शन्नो (19 वर्ष)

सरकार का नया कानून और बच्चों की राय

बढ़ते कदम के सदस्यों को जब यह पता चला कि सरकार ने 14 साल के बच्चों को काम करने की अनुमति दे दी है तो इस मुद्दे पर बाल सदस्यों की एक बैठक बुलाई गई और इस कानून के बारे में चर्चा की गई। बैठक में बाल साथियों से पूछा गया कि वह इस कानून से सहमत हैं या नहीं।

15 वर्षीय आकाश मार्केट में नाड़े बेचने काम करता है। बैठक के दौरान आकाश ने कहा कि मैं इस कानून से सहमत नहीं हूं, क्योंकि हमारी सरकार ने इससे पहले कहा था कि कोई भी 14 साल के बच्चे से अगर किसी भी तरह का काम करवाता है तो वह कानूनन अपराध होगा तथा उसे सजा हो सकती है। इतने सख्त कानून के बाद भी बच्चों से भरपूर काम करवाया जा रहा था। और अब तो हमारी सरकार ने 14 साल के बच्चों को काम करने की अनुमति दे दी है, तो ऐसे में बच्चों से और भी ज़्यादा काम करवाया जा सकता है, जिससें बच्चे और भी ज़्यादा संख्या में शोषित हो सकते हैं। सरकार के इस नए कानून से गांव में रहने वाले बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

14 वर्षीय नूराबीन ने कहा की बच्चों से तो अभी भी काम करवाया जा रहा है और अब इस नए कानून के आ जाने से बच्चे ज़्यादा संख्या में काम करने लगेंगे क्योंकि माता पिता को अपने बच्चों से काम करवाने का एक बहाना मिल गया कि जो बच्चा स्कूल जाएगा वह काम कर सकता है। तो अब सभी माता पिता अपने बच्चो का स्कूल में दाखिला तो करवा देंगे लेकिन पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि अपने बच्चों से काम करवाने के लिए, ताकि उन्हें काम पर रखकर पैसा कमा सकें।

16 वर्षीय मोन्टी ने कहा कि अगर बच्चा आधे दिन स्कूल जाएगा और आधे दिन काम करेगा तो वह अपने स्कूल का होम वर्क कैसे कर सकेगा। उसका ध्यान काम की ओर ज़्यादा रहेगा, क्योंकि बच्चे को पैसा कमाने का लालच बढ़ जाएगा और फिर वह स्कूल नहीं जाएगा। उसने कहा कि मैं पहले स्कूल जाता था, लेकिन वहां ठीक से पढ़ाई नहीं होती थी, तो मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया और काम करने लगा उसका कहना है कि मैं पढ़ने के लिए तैयार हूं अगर मुझे अच्छा स्कूल मिले।

15 वर्षीय ज्योति ने कहा कि वह सरकार के इस नए कानून से सहमत नहीं है, क्योंकि इस कानून द्वारा लोगों को बच्चों से काम करवाने की पूरी पूरी छूट मिल जाएगी। जो माता पिता अपने बच्चों से भीख मंगवाते हैं, बच्चों के कमाए हुए पैसों से शराब पीते हैं। उनको एक तरह की शक्ती मिल जाएगी बच्चों से काम करवाने की। मैं चाहती हूं कि ऐसा ना हो और जो माता पिता अपने बच्चों से काम करवाते हैं उन्हें सुधारा जाए तथा जिन माता पिता के पास कुछ काम नहीं हैं उन्हें सरकार द्वारा कोई काम दिया जाए, जिससे बच्चों को काम नहीं करना पड़ेगा, साथ ही बच्चे स्कूल भी जा सकेंगे।

17 वर्षीय चांदनी ने बताया कि नोएडा में अब किसी भी दुकान, ढाबे, शोरूम या अन्य किसी भी तरह के काम पर बच्चों को नहीं रखते थे, क्योंकि उन्हें पता था कि 14 साल के बच्चे को काम पर रखना कानूनी अपराध है। लेकिन अब इस नए कानून के बारे में जानने के बाद उन्हें 14 साल के बच्चों को काम पर रखने की पूरी छूट मिल जाएगी। क्योंकि उन्हें पता हो जाएगा कि अब बच्चों को काम पर रखने से उन्हें कानून भी नहीं रोकेगा और वह इस कानून का ज़्यादा फायदा उठा सकेंगे। क्योंकि वह बच्चों से ज़्यादा पैसे कमाने में सक्षम हों सकेंगे इस तरह से तो उन्हें पूरी खुली छूट मिल जाएगी, इसलिए मैं इस नए कानून से सहमत नहीं हूं। 16 वर्षीय सौरव ने कहा कि हमारे देश में ऐसे दो करोड़ से भी ज़्यादा बच्चे हैं, जो स्कूल नहीं जाते हम चाहते हैं कि पहले इन सभी बच्चों को स्कूल भेजा जाए और जो बच्चे काम कर रहें हैं, उन्हें काम करने से रोका जाए ना कि उन्हें काम करने को कहा जाए। क्योंकि 14 साल के बच्चे को पढ़ाई करनी चाहिए। हमारी सरकार को ऐसी योजना बनानी चाहिए, जिसमें बच्चों के घरों की स्थिति सुधारने के लिए उनके माता पिता को काम दिलाया जाए और उस काम के इतने पैसे दिए जाएं, जिससे कि उनके घरों का खर्च अच्छी तरह से चल सकें। साथ में बच्चों की शिक्षा का भी पूरा पूरा ध्यान रखा जाए और उन्हें रोका जाए जो कि बच्चों से काम करवाते हैं और उनसे भीख मंगवातें हैं। इस तरह हम बच्चों को काम भी नहीं करना पड़ेगा और उनका शिक्षा से जुड़ाव बना रहेगा।

-मोंटी (16 वर्ष)

आइए जानते हैं चाइल्ड हेल्पलाइन नंबरों के बारे में

चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 : चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर पर फोन करके आप किसी भी समय मुसीबत में फंसे बच्चे की मदद कर सकते हैं। यह सेवा 24 घंटे उपलब्ध है और यह नि:शुल्क सेवा है।

पुलिस हेल्पलाइन नंबर 100 : पुलिस हेल्पलाइन नंबर एक नि:शुल्क सेवा है। जिस पर आप किसी भी समय फोन करके मदद ले सकते हैं।

संपादक-मंडल : शन्नो, चांदनी, ज्योति, पूनम, जशवंत, पूजा, मोंटी और सौरव

Issue – 52

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

August-September, 2015

BALAKNAMA

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

Want to support Balaknama?

Give news lead,
Send in your contributions,
Encourage reporters
Write to:
balaknamaeditor@gmail.com

Balaknama is outcome of neglect and injustice to street and working children across the world. When children did not find space among adults, they decided to pen down their issues and glories, an attempt to change people's perception and ensuring identity, dignity, and participation of street children.



POLICE BEATS AND ABUSES US: STORIES OF HORROR

Balaknama Bureau

When Balaknama reporters went to know about the well being of children living and working on railway stations, they were shocked to know about the real face of police.

Children reported that Police has been torturing them very much from last few months. They beat them badly and force them to work at railway stations.

14 years old Rashid (name changed) said, "I have never seen such a bad behavior of police in last 8 years. We are grafted in false theft cases". Not just this, they even coerce children to carry the dead bodies at railway station. . Children are forced to pick garbage and clean the premises of police station. "We are paying a price to live at railway stations in the most brutal manner" said Rashid with a helpless face.

15 years old Banti (name changed) reported, "We do not have any security at railway stations. Police is misusing its power to torture us every day. We are very scared of police now. Those who should provide us a secured life are the only ones snatching our right to live."

EDITORIAL

Dear Friends,

very warm greetings from Editorial Team.

Balaknama has become strong voice of street children with your support. In this edition we bring to your attention violation of human rights of street children like Street Children continue to be abused openly by the Police; are forced to drink Contaminated Milk by a Headmistress; not welcomed at schools; still lacking attention in budget and polices; and inspiring stories of good work done them. Those who get moved by reading and wish to support (small or big, money or kind, skill or contact) or give feedback may write to balaknamaeditor@gmail.com

-Editorial Team

FROM DUST TO GLORY



Journey of National Secretary Jyoti

Balaknama Bureau

15 years old Jyoti stays in a night shelter with her family at Sarai Kale Khan once a beggar and a rag picker is now a confident and fearless leader of Badhte Kadam- a federation of 12000 street and working children.

This dream has not been fulfilled in just one day but by many days of hard work and by her long

continued on pg. 2

CHILDREN FORCED TO CONSUME CONTAMINATED MILK

Balaknama Bureau



Where the aim of midday meal planning should be to provide nutritious diet to children and improve their health, we came across a different scenario and saw the real face of mid day meal planning. This incident came to light at junior high school of Ashok Nagar located near BSA office of Agra where children were forced to drink the spoiled milk by their own school principal compromising on their health.

More shocking thing was when children refused to drink that milk they were abused and treated very badly by the principal. Coincidently, Badhte Kadam's District Secretary Poonam who studies in the same school witnessed all this happening and called childline number 1098 immediately and informed them about it. Timely response from Childline workers saved the children from consuming the spoiled milk and after taking cognizance of the whole situation they informed BSA office also. BSA officers have assured principal's suspension on the whole issue.



PRAYING FOR INDEPENDENCE, HE SOLD NATIONAL FLAGS

Balaknama Bureau

Inspite of celebrating Independence Day at school with his school friends, 12 years old Sunil is seen selling flags at different traffic signals. Three years ago, 12 years old Sunil was taken to Delhi by his contractor by assuring his parents to give him job and will also let him study along with work. But it never happened. Sunil said, "I have been selling books under Defence Colony and Moolchand's flyover of South Delhi since last 3years".

He added with a sad face, "My contractor broke all the promises he made to my parents of letting me study along with work. He makes me work from morning till 11'o clock in night. During this I am abused, thrashed by many people and when I complain about it to my contractor, he scolds me more and tells me to go and work".

Sunil told that he stays with his 12 friends who work along with him at different traffic signals. He says, "Most of the time I sell books at traffic signals but when 26th January or 15th August approaches I celebrate these festivals by selling flags at signals as I cannot go to school and celebrate there like other children".

From dust to glory

continued from pg. 1

lasting fight for the rights of street and working children from the time she became the leader of Badhte Kadam. She has been putting forward the issues and problems of street and working children very boldly in front of Government and Non-governmental organizations.

Due to all her qualities, she has carried on her journey from being a core committee member, to District Secretary and then finally to National Secretary of the federation.

"I am glad that members of Badhte Kadam considered me as a deserving candidate for the post of National Secretary" said Jyoti. The election was held between two candidates- Chandni (15years), District Secretary of West Delhi and Jyoti.

Both the leaders gave an inspiring speech before casting their votes. Jyoti won the election with 17 votes over Chandni. "I was initially disheartened that I did not win the election but now I am happy that most deserving candidate and my close friend Jyoti has won this election, said Chandni. "I suddenly feel responsible of being National Secretary of the federation now, said Jyoti". I thank all those members who voted for me and made this dream possible. I assure all, that I will maintain the dignity of this post and will work for the organization and its members with my full commitment - added Jyoti".

STREET GIRLS NEED SHELTER

Chandni (18 years old)

This is a sad story of three girls- 12 years old Kumkum, 11 years old Kiran and 9 years old Komal who were abandoned by their mother in childhood only and father is a drunker. Till now they were being taken care of by a family who themselves have no fixed place to live. This family along with these three girls was somehow managing in the temporary shelter constructed outside Temple in Delhi but now they have to leave this place.

Girls with disheartened faces said, "We are thankful to this big hearted family who provided us the shelter and took care of all of us during our difficult times. We understand their problems also but we are afraid where we will go if this family also leaves us".

"We too are very helpless as we also live along the roadside. We are now not capable of taking care of these girls anymore. We are not able to take care of our own children, how we will look after them" – said Family. They added, "We have no support from anywhere. Being girls I am more worried about their safety. If something goes wrong who will see to it. We cannot keep them with us now."



Girls are just praying day and night and wishing to see a miracle that they get a shelter soon to live a secured life so that they can also have a brighter future. 'There are many children especially girls who find support from peer families but the moment they grow up, the families drop their support in absence of security." Said Jyoti (16 years), National Secretary of Badhte Kadam.

OUR SCHOOL NOT SAFE-URGE STREET CHILDREN TURNED STUDENTS

Balaknama Bureau

Balaknama reporters got to hear shocking tales regarding the safety of students studying in government schools of Badarpur Area. This is the area where children do not wish to go to schools because they feel they are not safe in going to schools. When asked by our Balaknama reporters, Children answered, "There is no safety of children here in government schools. There is no one to look after who visit our schools. Every day we get to hear horror stories of boys and girls who get attacked on their way to school".

Children added, "Some thieves entered our schools premises



and created chaos there. Then recently a child was kidnapped while going to school. We were very scared now and thus stopped going school so that we are safe back at our homes".

When Balaknama reporters further enquired about the kid who was kidnapped, they got to know a very horrendous story about the child. Police found out the kidnapped child after few days but he was in a very bad condition. He was brutally thrashed and assaulted by the goons and most probably he was being taken in a gunny bag due to which his face had many marks. His leg was also cut by the kidnappers.

This case has left scar on children's mind and they are very scared in going to the school. Parents also fear in sending their children to schools. "Please save us from these kinds of incidents and assure us a better future by providing us safety in our schools", Children appealed to the Government.

WHEN WILL WE GET FREEDOM FROM CHILD LABOR?

QUESTION RAISED BY BADHTE KADAM ON OCCASION OF INDEPENDENCE DAY

Balaknama Bureau

On 15th August, when rest of India was celebrating India's Independence Day, members of Badhte Kadam, too, got an opportunity to hoist Indian Flag, courtesy Punjab National Bank. Around 30 members from parts of Delhi gathered in the morning with Tri Color in their hands and hopes in eyes.

69 years have passed since our independence but 40 million children are still not independent in its true sense. Childhood of our nation is still thriving on roads. Children are deprived of their rights. When they should be studying in School, they are being forced to work. They are not even sent to the school to study. The children showcased dance on some patriotic songs and later shared their views.



"When children will get their rights and dues? When we will consider ourselves free from child labor? Asks Jyoti (16 years), National Secretary of the Federation.

"We will achieve our Independence on the day when our rights will not be exploited anymore and our participation will be ensured in development of the nation considering us also a part of it". Said 12 years old, Rahul.

"I am really happy to see such brilliant children. Their visit has changed our perception about street children. We will definitely help them achieving their vision". Said official from Punjab National Bank.

STREET CHILDREN WILL MISS THEIR "ROLE MODEL"

Balaknama Bureau

Former Indian President Dr. A.P.J. Abdul Kalam, known as the father of the country's military missile program died of a sudden heart attack while delivering a lecture in Shillong. As soon as this news spread, whole nation came under a state of grief. Not even elders, members of Badhte Kadam were also upset on hearing about his sudden demise.



"Either we knew Chacha Nehru or Kalam Uncle", said 14years old Mala, Badhte Kadam's member who sell garlands at traffic signal. She added, "Who will now show us the right direction?"

"I heard that Kalam Uncle used to work in childhood for his family's survival. When he can become President of India then why can't we? He was our role model." Said 14 years old Rahul, a rag picker.

Dr. Abdul Kalam was not only an inspiration to all generation but even to street children and children living on railway stations. They were his big time fans. It was amazing to know that Dr. Abdul Kalam had such a great aura that even children living on streets knew about him and how he reached this long way..? Children were so impressed by him that his achievements and struggles were talked about by these children in all meetings of the federation.

A condolence meeting was organized by the members of Badhte Kadam to bid him last farewell and to pay their tribute to great scientist of the nation and adorable of all children "Dr. Kalam" by observing silence for five minutes.

STREET CHILDREN'S GOLDEN FUTURE SOUGHT IN RAMDAN PRAYERS

Balaknama Bureau

Iftar party was organized by Badhte Kadam – A federation of street and working children on last Friday of Ramdan. "Party was organized to bid farewell to the month of Ramdan and to celebrate Eid on Saturday"- said Shanno, advisor of the federation in a festive mood. She proudly added- "The aim of this party was to pray for the well being and bright future of street and working children and to spread the message of unity."

All children enjoyed the party very much but they also taught us (Balaknama reporters) some of the great lessons to learn from them. 13 years old Moin said, "We are very happy that federation organized this party for us. We want that all people of our country should also live in unity and celebrate every festival in the same way like we did with great happiness".

15 years old Aftab proudly said, "This is the specialty of our federation Badhte Kadam that we celebrate every festival with great enthusiasm, either Diwali or Eid".



POONAM- THE SAVIOR

Poonam (15 years old)

Poonam, District Secretary of Badhte Kadam federation came as a messiah in lives of four children- 14 years old Sonu, 12 years old Kali, 10 years old Ruby and 8 years old Tulsi when they were going through their difficult times in their family living in a colony in Agra.

Children told, "Our mother used to take care of us by working in people's homes after our father died but she suffered from T.B due to which she had to be admitted in S.N Medical College. After few months, our brother also got affected by T.B. and we dint had money for our mother's treatment, how we will manage his treatment along with taking care of ourselves also".

Poonam called up Child line number 1098 to help this needy family. Child line team came to meet the children and helped in providing every kind of support to them. Child line wrote a written letter to District magistrate seeking help from him who in turn assured that these children will be their responsibility now.

Meanwhile, some neighborhood also came forward by Poonam's efforts and helped in providing food materials for children. Due to federation efforts this case reached in media by which a anonymous person came forward to help this whole family and sent full month ration for them and a social activist named Sh. Naresh Paras is taking care of their mother's treatment.

Not only this, all three children got admission in Primary Girls School by Poonam's timely efforts. Federation salutes Poonam for her great efforts.





REHABILITATION OF DESTITUTE CHILDREN- A MATTER OF CONCERN FOR THE COMMITTEE.

Balaknama Bureau

Orphans and destitute children surviving on streets have no place to live in Agra- our Taj city. 15 years old Poonam, District Secretary of the federation spoke to Smt. Kamlesh Kumari, Chairman of Bal Kalyan Samiti of Agra on the issue of rehabilitation of destitute children.

On which Kamlesh Kumari, Chairman of Bal Kalyan Samiti replied"Rehabilitaton of destitute children has always been our matter of concern. We try and strive that no child remains on streets". Knowing about the problems of destitute children Smt. Kamlesh Kumari added, "Children staying in slums can anytime come to us and share their problems with us. We will try to solve them after listening to them. We have been working on the issue of their rehabilitation".

Kamlesh Kumari, Chairman of Bal Kalyan Samiti told Poonam that they have availability of child care homes in the city where children from age group 0 to 10 years can be taken care of. Any child of this age group can be brought to the child care homes with the help of Committee.

PARROT AND MYNAH-CHIT CHAT

SOCIAL AUDIT COMMITTEE-A NEW HOPE FOR CHILDREN HOMES

Parrot and Mynah were sitting on a branch of tree; suddenly Mynah started flying towards somewhere.

Parrot: Hey Mynah, Where are you going so early morning?

Mynah: Parrot, I am going in a very important meeting today.

Parrot: Really, Can I also come along with you? Let me also see in which meeting are you going?

(Both flew and reached social audit committee's meeting)

Mynah: You know what Parrot, we are in the meeting of social audit committee which is formed by Ministry of Women and Child Development for children homes.

Parrot: Hey Mynah, which committees is this and when was this formed?

Mynah: This Social Audit Committee was formed by women and child department on 17th April, 2015 at central level according to Juvenile Justice Act after Supreme Court orders. Social Audit Committee is based on 2000 provisions of Juvenile Justice Act.

Parrot: Oh wow Mynah, that is very good but tell me what work will this committee do?

Mynah: This committee will have seven members who will review and evaluate the work and features of children homes made for children every year.

Parrot: But Mynah, How will the committee do such hard work..?

Mynah: Oh Parrot..

Committee will work in two ways.

Its first work would be to review and evaluate the implementation of Juvenile Justice Act according to which-

• Reviewing of Juvenile Justice Board, Bal Kalyan Samiti and Special Juvenile Police Units,
• Investigating the pending cases of Juvenile Justice Board and Bal Kalyan Samiti.
• Reviewing the working of Special Juvenile Police Units,
• Reviewing those who violate laws and those who care for children in need of protection in relation to the use of child friendly resources.
• Reviewing the other pending cases effecting the implementation of Juvenile Justice Act.

Parrot: And the other one is..?

Mynah: Second is, reviewing its own work like-

• Reviewing Child Protection homes like- Child Observation Homes, Special Homes, Protection homes, Children Homes and Shelter Homes.
• Reviewing Special child adopting agencies.
• Reviewing the work of District Social Audit Committee.
• Checking the reports submitted by District Social Audit Committee and providing suggestions to improve their work.
• Sending yearly reports to the Ministry.

Parrot: Wow Mynah, This is really very good, it will help the needy children.

Mynah: Yes Parrot..

Saying this they flew away for their next news.

STREET CHILDREN VOWS CONSORNS THROUGH RADIO

Pooja (15years old)

Radio has started gaining importance in life of common man after the famous radio program "Mann ki Baat" (inner voice) hosted by our honorable Indian Prime Minister Mr. Narendra Modi to create connect with common man directly. Street and working children also look forward to radio as a better communication medium to convey their problems to people. Recently, Radio mantra 91.9 F.M. organized a program for children living and working on railway stations through which children shared their problems with common people.





Bobby and Nisha, Members of Badhte Kadam, living at railway stations shared some horrific stories. They said, "We are treated very badly at stations. People cast bad eyes on us and abuse us. We are not at all safe at railway stations".

"Not only Police, passengers visiting railway stations also consider us as criminals. We are the first ones to be seen as suspects whenever something bad happens with anybody at station. We feel very bad about it", says Gopal, one of our federation's member.

"There is nobody to support us. Badhte Kadam is the only federation which talks about street and working children's identity and fight for their rights", says Pooja, District Secretary of the federation. She added, "This federation was made out of children's efforts only and we are running it very proudly on our own".

Badhte Kadam were able to put forward their problems and issues to general masses. They demand security for them at railways stations and expect love and care from society and system.

Balaknama Bureau

ART BECOMES MEDIUM OF EXPRESSION

"STOP CHILD LABOR"

Street and working children shared their perception and thoughts on how to "Stop Child Labor" by making some unprecedented paintings which were portrayed in art exhibition organized at Arpana Art Gallery in Delhi. Around 81 paintings were exhibited in the art gallery. This art exhibition came at the right time to show the disapproval and unhappiness of children against a law revision where the Government is allowing a 14 year child to work along with going to school. This art exhibition was inaugurated by Mr. Aseem Srivastava, Member Secretary of National Commission for Protection of Child Rights (NCPCR).





13 year old Suman showed the reality of Child Labor by drawing a picture of a child being burdened by the work. Along with it she asked some eye opening questions. She asked, "Why a child has to work? Why there is no one to take care of us? I am shocked by government's view saying that a child can work after coming from school. What kind of schooling that would be?"

Mr. Aseem Srivastava was highly touched and amazed by the way children have expressed their views against child labor through their paintings. He said, "These paintings have made me realize that Child Labor is a very serious topic to be taken care of. I agree with children's suggestions and will make sure that NCPCR also consider their suggestions seriously and should definitely do something about it".

Balaknama Bureau

GOVERNMENT INCREASED BUDGET BUT NOTHING COMES IN FAVOR OF STREET CHILDREN

Balaknama reporters got to know that though there has been an increase in the budget for health and education this time by Delhi's Government. But nothing came in favor of street children. There is no improvement seen in the conditions of government schools and government hospitals. Street Children still remain out of the reach of these services.

This real scenario was revealed by those 18 students who got admission in government schools. Children shared their sad experiences with Balaknama reporters. They said, "We were treated very badly by the school teachers on the day of admission. Nobody spoke to us properly". 14 years old Rahul added, "I lost my confidence and my keenness to study when teachers present there humiliated us saying that we will have a bad effect on other students as we live on roads and are beggars. Does that mean we do not have right to study?"



When reporters met the vice principal of that school they got to know that most of the time teachers are not available in government schools to teach. Vice Principal reported, "Children are not taken care of well because the number of teachers teaching in our school is very less and I have been complaining about this via email to the education department but there is no response from their side".

Children feel that merely by increasing the budget will not help until and unless there is proper implementation of policies in the education department and teachers should be held responsible for neglecting their duties.

JOURNEY FROM DARKNESS TO ENLIGHTENING WORLD OF KNOWLEDGE

Balaknama Bureau

It is very difficult for a person to come out from the clutches of drug addiction but a person's will power and the confidence of changing oneself can do miracles and one such miracle which we saw around us was that of Mukesh.

Mukesh (16 years old) was just 11 years old when for the first time he came to railway station. He has been selling betel leaves since last 5 years. Slowly and gradually, he started doing bad things like pick pocketing, got addicted to drugs in his friends' company. His life started becoming hell engulfing him in the darkness but his will power over powered him and took him out of this.

Badhte Kadam came as a ray of light in his life. He got associated with CHETNA and started coming to harm reduction centre but his addiction o dugs started pulling him back to the same life. He stopped going to te reduction centre after few days.



Members of Badhte Kadam acted as avery crucial part in his life. They did not leave him alone and counselled him to come back to the centre. He started coming again to the centre and started taking interest in studying. He could study Hindi well, started having good knowledge of English and Maths also.

Mukesh's life took a turn from here towards a better future. He became an honest leader of the federation now and started helping other children who are involved in bad activities and consume drugs. He counsel those children and make them get involved in various activities so that they remain away from drugs. He encourages them to study at centre and is all the time engrossed in helping those children.

Mukesh has become a responsible citizen with the help of Badhte Kadam. He is working very hard towards achieving his dream of becoming teacher and encourages other children to lead a better life.



WHERE ARE OUR GOOD DAYS??

Balaknama Bureau

When on one side our honorable Prime Minister promises of a prosperous future by coining the term "Ache Din" (Good Days) for people of India and onte very other side our street and working children asks, "When will our good days come?" This same question was asked by 35 leaders of Badhte Kadam representing different districts in national meeting organized by Badhte Kadam on 7th August, 2015. Serious topics like education, child trafficking, child labor and problems of children living on streets were discussed.

Jyoti, National Secretary of federation said, "Does our Prime Minister know that around 11 million children are still compelled to live on streets.? Children are deprived of their basic rights due to which they remain deprived of basic education and health facilities in today's scenario when we are talking about good days for everyone".

Our former National Secretary Chandni present in the meeting also said, "During my tenure of two years we met around 20 Government, Non-governmental organizations and various government officers and spoke about the issues of children but no strong step has been taken till now for children".

"We have this Balaknama newspaper as our only medium to communicate the problems of street and working children to our Prime Minister. I request him to look into our problems and bring good days for us also", added Jyoti.

STREET CHILDREN SOUGHT PROTECTION FROM MARK HENRY



Balaknama Bureau

20 members of Badhte Kadam had a gala time when they met world well known wrestler "Mark Henry" on the occasion of Raksha Bandhan.

Girls tied rakhi on his wrist and took a promise to fight for the protection of children living on streets and footpaths, deprived of security. Mark Henry was very happy to know about Balaknama newspaper. He said, "I appreciate the thoughts and efforts of street and working children and I appeal to all people to read this newspaper".

CHILD PROTECTION FOREMOST, SAYS ASSISTANT COMMANDENT R.P. TOMAR

Balaknama Bureau



Street and working children participated in the "Safety Week" organized by RPF Police station at Agra. Theme of this campaign was "Child protection". Children met Mr. R. P. Tomar, Assitant Commandment of RPF and got to know more about the week. This meeting proved to be a successful platform for interaction between children and Police to get to know about each other. Children said, "Police asked us about the problems which we face at Agra Cantt Railway station. They assured us that they are always ready to help us whenever something wrong happens at railway station".

STREET CHILDREN SHARED PM'S CALL ON CLEANLINESS

Balaknama Bureau

Members of Badhte Kadam organized a 'Swachchta Abhiyan Rally' to appeal to people to keep trains and railways stations clean. Around 150 street and working children participated in this rally.

Children had impactful messages to be shared with general masses. 14 years old Golu said, "When our Prime Minister can pick up broom and clean then why cant we? We should be responsible enough to keep our surroundings clean".



"Railway stations represent our country's image. People from all over the world arrive here so first and foremost we should keep our railways stations clean.", said Hema (15 years old)

13 years old Harsh appealed to all the passengers arriving at railways stations and also the people who work there not to litter at railway stations and help us in keeping it clean.

RPF and GRP staff of Mathura appreciated the efforts of children. They said, "It is not an individual effort to clean our surroundings, we all have to come together to keep our trains and railway stations clean. We appeal to all along with these children to keep areas neat and clean".

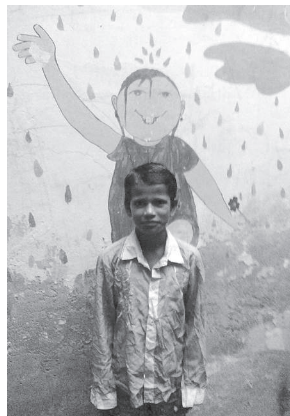
SHAPING THE DREAMS

Balaknama Bureau

Street children do have their dreams and they have all the rights to fulfill them but unfortunately many children are not lucky enough to fulfill them. Such a story was of Shabana (9 years old) before coming in contact with Badhte Kadam.

Shabana belongs to a very weak section of the society. She lives at Mathura station with her sister and two brothers. Their mother left them and father is a drunkard. Shabana has to work very hard to take care of her siblings. She wants to study but she has to work and her drunkard father is so merciless that whatever she earns, he snatches that even from her and spend it on his drinks.

One of the CHETNA's member got her enrolled in their centre seeing her interest in studies but her father did not let her study and started taking



her along with him for rag picking from Mathura to Faridabad.

When Pooja, one of the member of federation went to enquire about her. She was very sad to know Shabana's story. Shabana with tears in her eyes said, "My father does not let me study and if I persist on going he beats me up. He forcefully takes me with him to do rag picking".

Pooja consoled shabana and explained her that studying is also important along with working. Similarly, Pooja tried to explain her father also. She said, "Shabana wants to become a good teacher so please let her study. Please do not misbehave with her and if you will continue with this we will report o the police against you."

Since then Shabana has been living a better life and she goes to school also with the help of Badhte Kadam.

BANKS MAY HELP STREET CHILDREN-A RAY OF HOPE!!

Banks will now spend some percentage of their yearly profit for the development of needy children

Balaknama Bureau

There came a ray of light amongst dark clouds when the news broke out that now Government has asked all the banks to spend some percentage of their yearly profit on children who are below poverty line. This information was shared by Punjab & National Bank's manager Mr. Vijay Kumar Sharma with the members of Badhte Kadam. He said, "We open bank accounts and help people to save their money. The amount which we used to earn from opening accounts was earlier given to Government but now it will be spend for under-privileged children".

ATTENTION ALL BADHTE KADAM MEMBERS!!

Dear members, many thanks for making Badhte Kadam a unique federation. You all are important to us. But to be a strong and informed member, you need to promise us following:

- Study well in schools
- Never get into substance or drugs
- Raise voice against discrimination. You can call

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

Child line Number	Police Helpline Number
1098	100

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

BALAKNAMA APPEAL SCHOOLS TO BE CHILD FRIENDLY

Chandni (14 years)

Balaknama's reporter Chandni met Smt Manju Khatri, Joint Director of education department of Municipal Corporations of Delhi and got to know about the working of goverment schools. She has been associated with education department from last 15 years.

Chandni asked her,"Why child labor is still prevalent in our country? Why children like to work rather than to go to school and study?" Joint Director answered her question very calmly and said, "Children are very naive and innocent, whatever they are taught they learn that. We should encourage children to study and should always show them right direction".

Chandni asked her, "Why children does not like to study in Government Schools? Giving her reply on this Smt. Manju Khatri smilingly said, " Its not that children are not taught well in government schools. The problem is teacher cannot look after every child in the school. They cannot help every child in doing their homework. Thats why children stop coming to school. I think parents should also take care about their studies."



Chandni asked, "Are there any kind of programs being run by education department for dropouts?" She replied, "Yes we are working on this issue and we have come up with many such programs which can help create children's interest in studies. We have employed specific counsellors for helping children so that more and more children remain associated with education."

TODAY'S YOUTH, TOMORROW'S ENTREPRENEUR

Balaknama Bureau

Street and working children living at Nizamuddin railway station were very happy when they got an opportunity to participate in one day workshop organized by NSIC at their technical centre. The theme of this training was "Today's Youth Tomorrow's Entrepreneur". It was a great opportunity for children to learn various technicalities needed in starting a new venture. Children learnt the production of things like bread, soap, socks, washing powder, jute, use & throw plate, glass, etc. and the machines used in making them



Children said, "We never knew earlier that we can also start our business with less investment by making a small group of us. We learnt about the prices of the machines and various tactics used to market the products". They added, "We are grateful to NSIC who helped in increasing our information by conducting this knowledgeable workshop and helping us in attaining confidence to start our own venture someday".

STREET CHILDREN GOT 'BIRTHDAY' AS GIFT

Balaknama Bureau

Suraj, Khushi and Sangeeta- members of Badhte Kadam were very delighted when they got an opportunity to celebrate their birthday which was very unusual for them as their birthday was never celebrated before. This was made possible by Mr. Nikhil Khurana who came there to celebrate his daughter Smriti's birthday with 65 members of Badhte Kadam. When he got to know that these three members also share the



birthday on the same day then he said, "I am very happy to know this. Now we will celebrate their birthday together with our daughter".

He ordered cake for them and got burger, frooti, etc distributed among all children.

Smriti's Mother said, "I am so happy that I celebrated my daughter's birthday with Badhte Kadam members. I feel proud that we celebrated four birthdays together and could bring smile to their faces".

"I wish these children could also celebrate their birthdays like all other children. I felt very happy coming here and I appreciate the efforts of Badhte Kadam who is doing such nice work for these children", said Mr. Nikhil Khurana.

STREET CHILDREN INVITED AS "SPECIAL GUESTS"

Balaknama Bureau

One more day of happiness added into the life of members of Badhte Kadam federation when they got an invitation as "Special Guests" from TV channel Home Shoppe 18 on occasion of Independence Day. Children got an opportunity to meet the artists of advertisement world of Home Shoppe 18.

Varun Dhwan, Anchor of Home Shoppe 18 explained children about the working of their channel. He explained the process of making the advertisements of different products and how they are communicated to the outside world through the medium of artists.



"How can we get an opportunity to work with your channel?" asked, Sulekha, member of Badhte Kadam. Replying to his question, Varun said, "Any talented child who has completed class XIIth can join our channel". 12 years Rustam mesmerized the artists by his dance performance in the end.



HARD WORK PAID OFF!!

Balaknama Bureau

Happiness of children associated with Badhte Kadam knew no limits when they received their job offer letters. Children of age group of 18 years or above associated with Badhte Kadam are sent to various training centres to help them get skilled. Similarly, 5 children of Nizamuddin railway station along with 4 children of Mathura Station participated in the business training provided by the G.M.R training centre. Children got certificates on successful completion of 45 days of their training.

Children received training on the following topics- Basic Computer (3 months duration), Basic Electrical and House Wiring (3 months duration), Fridge and Air Condition Repair (4.6 Months duration) and Basic Cargo Management (3 months duration). They were also groomed on English and Personality Development skills.

"I am grateful to Badhte Kadam who gave me the opportunity to get trained on skills which helped me in getting a good job. My life has got a better direction now", said 16 years old Vikas. Children said, "We feel more confident now after attending the training. This training has helped us in getting jobs in malls, guest houses etc".

AN EXCURSION TRIP TO 'WATER PARK'

Balaknama Bureau

Wish of visiting Water Park came true on 6th July, 2015 when members of Badhte Kadam were taken to Water Park for picnic which is one of their favorite places. Children were extremely happy and had great fun at Water Park.They shared their fun filled moments with Balaknama reporters. "We took many rides. We did rain dance. We all enjoyed a lot", said Vishal. Komal said sharing her haunted experience, "It was very thrilling experience to visit haunted house. It was very dark there and it had a room full of mirrors. We could hear the scary voices inside the room. We had to find out the right exit door after entering the haunted house and we did that."

"I was amazed to see this world in real. We have always seen such places in movies and serials. It was a different place altogether. I thank Badhte Kadam who gave us this wonderful day to enjoy".

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 Newspaper for Private circulation only. Photos of children are published by their consent. Balaknama acknowledges support of www.ersf.org.uk. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 ख़बरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 9971426362
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-52 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त-सितंबर, 2015

आज के समय सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार बालकनामा लिखकर प्रकाशित करने लगे।

सड़क से संगठन तक

राष्ट्रीय सचिव ज्योति का सफर

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय ज्योति अपने पूरे परिवार के साथ सराय काले खां में रहती है। बढ़ते कदम संगठन से जुड़ने से पहले वह कबाड़ा बीनने व भीख मांगने का काम करती थी। लेकिन जब बढ़ते कदम संगठन से जुड़ी तो उसकी एक निडर सदस्य बनी। संगठन से जुड़ने के बाद उसके अंदर बहुत बदलाव आए।

बेहद संघर्षो भरे जीवन का सामना कर रही ज्योति को यह बहुत अच्छी तरह पता था कि एक लड़की के रूप में सड़क पर रहकर जीवन गुजारना कितना कठिन है। फिर क्या था संगठन की लीडर बनने के बाद उसने यह ठान लिया कि उसे अब सड़कों पर जिंदगी गुजार रहे बच्चों के हक के लिए लड़ना है। तब से वह बहुत ही समझदारी और निडरता के साथ सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए काम करने लगी और उनकी समस्याओं व परेशानियों को सरकारी व गैर सरकारी सभाओं में रखने लगी।

उसके इन गुणों को देखते हुए उसे पहले लीडर, फिर जिला सचिव और अब 7 अगस्त, 2015 को संगठन का राष्ट्रीय सचिव बना दिया गया है।





ज्योति ने कहा कि मुझे इस बात की बेहद खुशी हुई कि संगठन के सदस्यों द्वारा मुझे संगठन के राष्ट्रीय सचिव के एक उम्मीदवार के रूप में मेरे नाम की घोषणा की गई। इस चुनाव में दो उम्मीदवार थे एक मैं और दूसरी चांदनी, जो वेस्ट दिल्ली की जिला सचिव है। इसके बाद हम दोनों के बीच यह चुनाव लड़ा गया। चुनाव से पहले दोनों उम्मीदवारों ने अपना अपना भाषण दिया।

भाषण के बाद लीडरों ने वोट डाला। वोटिंग के बाद वोटों की गणना की गई। वोटों की गणना के बाद पता चला कि 13 वोट चांदनी को और 17 वोट मुझे मिले हैं। इन 17 वोटों के आधार पर मुझे राष्ट्रीय सचिव घोषित कर दिया गया। राष्ट्रीय सचिव बनने के बाद मैं उन सभी लीडरों को धन्यवाद देती हूं और उनको यह विश्वास दिलाती हूं कि मैं तन मन धन से अपने संगठन व उसके सदस्यों के लिए कार्य करूंगी और मैं यह प्रयास करूंगी कि मैं संगठन से जुड़े 12 हजार बच्चों की मदद कर सकूं।

डंडे के बल पर पुलिस करा रही बच्चों से काम



साभार : डीएनए

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकार ने रेलवे स्टेशनों पर रहने व काम करने वाले बच्चों से बात की, तो बच्चों ने बताया कि पुलिस डंडे के बल पर हम बच्चों से काम करवा रही है।

पिछले कुछ दिनों से पुलिस हम पर कुछ ज्यादा ही अत्याचार कर रही है। वह हम बच्चों को डंडों से मारती है। जब हम रेलवे स्टेशन पर काम करते हैं तो पुलिस वाले हम बच्चों से अपनी मर्जी से काम करवाते हैं।

14 वर्षीय राशिद (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह पिछले आठ वर्षों से रेलवे स्टेशन पर रह रहा है। मगर पुलिसवाले पहले कभी हमारे साथ इतनी बदसलूकी नहीं करते थे, जितनी आजकल कर रहे हैं। हम बच्चों पर

शेष पृष्ठ 3 पर

मैडम फटा दूध नहीं पिएंगे

फटा दूध पीने में कंपकपाए हाथ



बालकनामा ब्यूरो

यह घटना आगरा के बीएसए ऑफिस के निकट अशोक नगर स्थित जूनियर हाईस्कूल की है। जहां मिड डे मील की प्लानिंग की उस समय धज्जियां उड़ गईं, जब बच्चों को फटा दूध पीने के लिए मजबूर किया गया। हद तो तब हो गई जब मिड डे मील के तहत छात्र-छात्राओं की सेहत बनाने की बजाए, उसके साथ खिलवाड़ किया गया। इस जूनियर हाईस्कूल में बच्चों की स्पेशल डाइट के तहत उन्हें दूध बांटा गया। लेकिन चौंकाने वाली बात यह थी कि यह दूध फटा हुआ था। लिहाजा छात्र-छात्राओं ने इसे पीने से मना कर दिया, फिर भी प्रिंसिपल ने बच्चों पर यह फटा दूध पीने का दबाव डाला।

छात्र-छात्राओं के मना करने पर प्रिंसिपल ने उनके साथ गाली गलौच की और बहुत ही बर्बरताभरा बर्ताव किया। इसी स्कूल में बढ़ते कदम संगठन की जिला अध्यक्ष पूनम भी पढ़ती है। जब प्रिंसिपल ने बच्चों पर दबाव डालना शुरू किया तो पूनम ने चाइल्डलाइन 1098 को फोन करके इसकी सूचना दी। खबर मिलते ही चाइल्डलाइन कार्यकर्ता तुरंत स्कूल पहुंचे और मामले को संज्ञान में लेते हुए इसकी सूचना बीएसए ऑफिस को दी। बीएसए अधिकारी ने तुरंत कार्यवाही करते हुए प्रिंसिपल की बर्खास्तगी का आश्वासन दिया।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

हम आपके सामने बालकनामा के इस नए अंक के साथ उपस्थित हुए हैं। साथियों आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि हमारे संगठन बढ़ते कदम ने अपनी राष्ट्रीय सचिव का चयन कर लिया है और ज्योति ने हमारे संगठन की नई राष्ट्रीय सचिव के रूप में अपना पदभार संभाल लिया है।

हम अपने इस अखबार के माध्यम से सड़क व कामकाजी बच्चों की दिल को छू लेने वाली सत्य घटनाओं पर आधारित रिपोर्ट आप तक पहुंचा रहे हैं, जिससे समाज व प्रशासन का ध्यान इनकी ओर आकर्षित किया जा सके। अपने इस अखबार में प्रकाशित हुई खबरों के द्वारा हम चाहते हैं कि आप भी सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं को समझें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें। हम चाहते हैं कि आप भी हमारे इस अखबार का हिस्सा बनें।

यदि आपको हमारा यह अंक पसंद आया हो या बच्चों से संबंधित कुछ विषयों के साथ आप हमसे जुड़ना चाहते हैं तो आप इस अखबार में दिए गए पते पर हमसे संपर्क करें।

संपादकीय मंडल

ये आसरा भी छूटा तो कहां जाएंगे हम

चांदनी (18 वर्ष)

कालका जी मंदिर के बाहर की जिस जगह पर लोग पंडाल डालकर रह रहे थे, वह जगह खाली करके जा रहे थे। ऐसे ही एक परिवार के पास तीन बच्चियां रहती थी, जिनके खाने पीने व देखभाल का जिम्मा उस परिवार पर था। ये तीनों बच्चियां 12 साल की कुमकुम, 9 साल की कोमल और 11 साल की किरन बहुत परेशान हैं। इन लड़कियों की मम्मी बचपन में छोड़कर चली गई थी और पापा दारू पीते हैं। इन लड़कियों के ऊपर तो मानों मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। इनका कहना है कि यदि इस परिवार ने भी हमें सहारा नहीं दिया तो हम कहां जाएंगे।

यह तीनों बच्चियां किसी और के घर में काम करती हैं और कालका जी मंदिर में एक परिवार के साथ रहती हैं। जिस परिवार में यह बच्चे रहते हैं उनका कहना है कि वह अब और ज्यादा दिन इन बच्चियों को अपने पास नहीं रखना चाहते। वह कहते हैं कि इन बच्चियों को हम कहां रखें, क्योंकि वह खुद भी कालका जी मंदिर के पास रहते हैं और वह अब इस अवस्था में नहीं हैं कि उनका भरण पोषण कर सकें। उनके खाने के लिए खाना दाना वह कहां से लाएंगे और वह अपने बच्चों की देखभाल करें या इन तीनों बच्चियों की।



उस परिवार के लोगों ने कहा है कि उनसे अपने बच्चे ही नहीं संभाले जा रहे हैं। हम इन दूसरे बच्चों को कैसे संभाले और कैसे इन बच्चों की जिम्मेदारी अपने सर पर लें, हम खुद भी तो रोड के किनारे ही रहते हैं। हम इन लड़कियों को कहां लेकर जाएंगे और अगर किन्हीं के साथ कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे। इसलिए वह अब उन तीनों बच्चियों को नहीं रखना चाहते। यह बच्चियां चाहती हैं कि उन्हें किसी तरह रहने का ठिकाना मिल जाए और उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाए, जिससे उनका भविष्य उज्जवल हो सके।

झंडे बेचकर मना लेता हूं आजादी का जश्न

बालकनामा ब्यूरो

12 वर्षीय सुनील जो पिछले तीन सालों से दक्षिणी दिल्ली की डिफेंस कॉलोनी और मूल चंद फ्लाई ओवर के नीचे किताबें बेचता है। तीन साल पहले उसका ठेकेदार उसके घरवालों से झूठ बोलकर उसे दिल्ली लेकर आया था कि वह उसे काम के साथ साथ पढ़ाएगा भी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सुनील ने बताया कि मैं सुबह से लेकर रात को 11 बजे तक काम करता हूं। इस काम के दौरान बहुत सारे लोग मुझसे गालियों व अभद्र भाषा के साथ बात करते हैं। जब मैं अपनी शिकायत लेकर अपने ठेकेदार के पास जाता हूं तो वह मुझे उल्टा ही डांट कर भगा देता है और काम करने के लिए कहता है।

सुनील ने बताया कि वह अपने 12 दोस्तों के साथ रहता है। हम एक साथ सोते हैं और एक साथ अलग अलग ट्रैफिक सिग्नल पर काम करते हैं। हम एक ही जिले से हैं। वैसे तो मैं ट्रैफिक सिग्नल पर किताबें बेचता हूं, लेकिन जब 26 जनवरी या 15 अगस्त जैसे त्योहार आते हैं तो मैं झंडा भी बेचता हूं। दूसरे बच्चों की तरह मैं स्कूल जाकर तो ये त्योहार नहीं मना सकता, लेकिन झंडे बेचकर ही मैं अपने देश की आजादी का यह त्योहार मना लेता हूं।



स्कूलों के आस पास मंडराता भय का साया

बालकनामा ब्यूरो

बदरपुर बॉर्डर कितना भीड़ भाड़ वाला इलाका है, लेकिन फिर भी यहां के स्कूलों में बच्चे जाने को राजी नहीं हैं। क्योंकि यहां के स्कूलों में बच्चों के लिए कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। यहां के सरकारी स्कूलों में कोई भी आ जा सकता है। यहां आए दिन स्कूलों में कुछ न कुछ घटित होता रहता है। बदरपुर बॉर्डर के बच्चों ने बताया कि यहां के स्कूल में लड़कियों और लड़कों के साथ कई बार खतरनाक केस हो चुके हैं।

इस बारे में जब बालकनामा की पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि अभी कुछ दिन पहले स्कूल में चोर घुस आए थे और बहुत हंगामा हुआ था। यहां का एक बच्चा स्कूल जा रहा था और वह रास्ते से ही गायब हो गया। उस बच्चे के माता पिता बहुत परेशान



थे। उस घटना के बाद बाकी बच्चे भी अपने स्कूल नहीं जा पा रहे थे। क्योंकि हम बच्चों के मन में यह डर बैठ गया था कि कहीं हम भी इस घटना का शिकार ना हो जाएं।

जो बच्चा लापता हो गया था, उसकी खोज करने पर अब उनका बच्चा चार पांच दिनों के बाद मिला है। पर उस बच्चे की हालत ठीक नहीं है और उस बच्चे के पूरे चेहरे पर दाने हैं तथा उस बच्चे के बारे में सुनने में आया है कि उसे बोरी में बांधकर ले जाया जा रहा था। परंतु ट्रेन में वह बच्चा पुलिस के हाथ लग गया था। उस बच्चे का पैर भी कटा हुआ था। नजदीक से देखने पर मालूम हो रहा था कि उस बच्चे के साथ जबरदस्ती की गई है।

इस घटना ने बच्चों पर बहुत गलत प्रभाव डाला है। इस कारण अधिकतर बच्चे स्कूलों में पढ़ने नहीं जा पा रहे हैं। बच्चों का कहना है कि अगर स्कूल की हालत ठीक नहीं हुई तो वह दिन दूर नहीं कि उन स्कूलों में कोई भी बच्चा पढ़ने नहीं जाएगा।

और हम सरकार से चाहते हैं कि ऐसा ना हो तथा सभी स्कूलों की देखरेख व बच्चों को पूरी सुरक्षा प्रदान की जाए। तभी बच्चे इस तरह के खतरनाक हमलों से बच सकेंगे।

हम कब होंगे आजाद?

स्वतंत्रता दिवस पर बढ़ते कदम ने उठाया सवाल

बालकनामा ब्यूरो

पंजाब नेशनल बैंक द्वारा 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित किए गए इस कार्यक्रम में बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में सभी बच्चों ने राष्ट्रीय गान गाकर देश के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया।

कार्यक्रम के दौरान जब बच्चों से पूछा गया कि आजादी का मतलब क्या है तो बच्चों ने बताया हमारे लिए तो स्वतंत्रता दिवस का मतलब छुट्टी का दिन होता है। क्योंकि हमें तो आजादी



का मतलब समझ ही नहीं आता।

संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने कहा कि जिस दिन भारत मे बच्चों को पूर्ण रूप से उनके अधिकार मिलना शुरू हो जाएंगे, तब सही मायने में देश आजाद होगा। क्योंकि आज भी लोग कन्याओं की हत्या गर्भ में ही करा देते हैं। लड़कियों को स्कूल पढ़ने नहीं भेजते। हमें तो आजादी का मतलब तक नहीं पता।

भले ही देश को आजाद हुए 69 साल हो गए हों, लेकिन सड़कों पर पलने वाला बचपन आज भी आजाद नहीं हुआ है। हम सभी बच्चे तो तभी खुद को आजाद समझेंगे, जब हमें भी हमारे अधिकार मिलेंगे और देश की उन्नति के साथ साथ हम बच्चों की स्थिति में भी सुधार आएगा।

डंडे के बल पर पुलिस करा रही बच्चों से काम

पृष्ठ 1 का शेष

झूठा चोरी का इल्जाम भी लगाया जाता है। राशिद ने बताया कि यदि रेलवे स्टेशन पर किसी की मृत्यु हो जाती है तो पुलिस हमसे डेड बॉडी उठवाती है। इतना ही नहीं वह थानों में हमसे कूड़ा करकट उठवाती है और साफ सफाई करवाती है। मना करने पर वह हमें थाने ले जाकर डंडों से मारती है। इस वजह से आए दिन हमें पुलिस के डंडे खाने पड़ते हैं। आजकल हम बच्चों को रेलवे स्टेशन पर रहने की कीमत कुछ इस तरह चुकानी पड़ रही है। रेलवे स्टेशन पर हमसे झाड़ू लगवाई जा रही है।

15 वर्षीय बन्टी (परिवर्तित नाम) ने कहा कि हम बच्चों के लिए रेलवे स्टेशनों पर कोई सुरक्षा नहीं है। हमें जब देखो तब प्रताड़ित किया जा रहा है। हमें पुलिस के डंडों से बहुत डर लगता है। वह अपने डंडे की ताकत दिखाकर हम बच्चों से अपनी मनमर्जी से जो चाहे वो काम करवा रही है।

कलाम के जाने से शोक में डूबे बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का अचानक दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। इस खबर से पूरा देश शोक में डूब गया। एकाएक जब यह खबर सभी को पता चली तो सभी के चेहरों पर उदासी छा गई। बड़े ही नहीं बच्चों के चेहरे भी उतर गए।

14 वर्षीय माला बेचने वाली बढ़ते कदम की सदस्य रोशनी को जब यह पता चला तो एकाएक उसके मुंह से निकल पड़ा कि या तो हम चाचा नेहरू को जानते थे या कलाम अंकल को। अब उनके चले जाने के बाद हम बच्चों को रास्ता कौन दिखाएगा?



डॉ. अब्दुल कलाम सभी की जिंदगी के प्रेरणास्रोत थे, लेकिन सड़कों, फुटपाथों व स्टेशनों पर रह रहे ये बच्चे भी इनके मुरीद थे। ये बच्चे भले सड़कों पर रहते थे, लेकिन इनको पता था कि श्री अब्दुल कलाम कौन हैं और कैसे इस मुकाम तक पहुंचे..? ये सभी बच्चे हमेशा संगठन की मीटिंगों में डॉ. कलाम की उपलब्धियों व संघर्ष पर बात करते थे। उनकी अंतिम विदाई के दिन भी संगठन के सभी सदस्यों ने एक शोक सभा का आयोजन किया और देश के महान वैज्ञानिक और बच्चों के प्रिय श्री कलाम की तस्वीर पर माला व फूल अर्पित किए और पांच मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

रोजा इफ्तार के आयोजन में मांगी बच्चों के सुनहरे भविष्य की दुआ

बालकनामा ब्यूरो

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अपने संगठन बढ़ते कदम द्वारा रामजान के आखिरी शुक्रवार को इफ्तार पार्टी का आयोजन किया गया। बढ़ते कदम संगठन की सलाहकार शन्नो ने बताया कि रमजान के इस पाक महीने के आखिरी शुक्रवार को जिस दिन रमजान विदा हो रहे हैं और शनिवार को होने वाली ईद की खुशी में यह पार्टी आयोजित की गई थी। इस पार्टी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सभी सड़क व कामकाजी बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य व उज्जवल भविष्य की कामना करना और एकता का संदेश देना है।

सभी बच्चों ने इस इफ्तार पार्टी का खूब आनंद उठाया। 13 वर्षीय मोइन ने कहा कि हमें बहुत अच्छा लगा कि संगठन ने हम सभी बच्चों के लिए ये पार्टी आयोजित की। हम चाहते हैं कि हम बच्चों की तरह हमारे देश के सभी लोग मिलजुलकर भाईचारे से रहें और सारे त्योहार मिलकर खुशियों के साथ मनाएं।

15 वर्षीय आफताब ने कहा कि हमारे संगठन बढ़ते कदम की यही विशेषता है कि हमारे यहां सारे त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं फिर चाहे वो दिवाली हो या ईद।



पूनम ने दिलाया तीन बच्चों को सहारा

पूनम (15 वर्ष)

आगरा के बस्ती मोहल्ले में रहने वाले इस परिवार के बच्चे बहुत ही मुश्किल घड़ी से गुजर रहे थे। तभी बढ़ते कदम की जिला सचिव पूनम उनके लिए एक मसीहा बनकर आईं। पूनम ने इस परिवार में रहने वाले बच्चों से 10 वर्षीय रूबी, 12 वर्षीय काली, 8 वर्षीय तुलसी और 14 वर्षीय सोनू से बात की।

बच्चों ने बताया कि कई वर्ष पहले हमारे पिता गुजर गए थे। उनके जाने के बाद हमारी माता कोठियों में झाड़ू पोछा लगाकर हमारा पालन पोषण करने लगी। लेकिन मेरी माता को टीबी हो जाने के कारण हमें उन्हें एस.एन. मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाना पड़ा। हमारे पास उनके ही इलाज के पैसे नहीं थे कि हमारा भाई सोनू भी इसकी चपेट में आ गया। अब हम ऐसी परिस्थिति से गुजर रहे हैं कि न तो खुद और न उनकी देखभाल कर सकते हैं।

पूनम ने तुरंत 1098 चाइल्डलाइन को फोन किया और उनसे मदद की गुहार लगाई। चाइल्डलाइन टीम बच्चों से जाकर मिली और बीमार सोनू का चेकअप कराया। उन्होंने पत्र द्वारा इसकी सूचना जिलाधिकारी आगरा को दी। जिलाधिकारी ने इन बच्चों की मदद का आश्वासन दिया। चाइल्डलाइन ने बच्चों से होम जाने की बात की, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। अब चाइल्डलाइन द्वारा वहां पर रहकर उनकी मदद की जा रही है।

बच्चों को खाने पीने की सामान हेतु पूनम ने आसपास के लोगों से बात की तो कुछ लोगों ने आगे आकर उनकी मदद की। संगठन के प्रयास से यह सारा मामला मीडिया की सुर्खियों में आया तो एक गुमनाम व्यक्ति ने उनके परिवार के लिए पूरे एक महीने का राशन भरवाया और एक सामाजिक कार्यकर्ता श्री नरेश पारस जी उनकी माता का इलाज करवा रहे हैं।

यही नहीं पूनम के प्रयास से तीनों बच्चों का दाखिला प्राइमरी कन्या पाठशाला में हो गया।





समिति के लिए चिंता का विषय बना बेसहारा बच्चों का पुर्नवास

बालकनामा ब्यूरो

ताज नगरी आगरा की सड़कों पर जीवन गुजार रहे अनाथ व बेसहारा बच्चों के रहने का कोई ठिकाना नहीं है। इस समस्या को लेकर संगठन की जिला अध्यक्ष 15 वर्षीय पूनम ने आगरा की बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष श्रीमती कमलेश कुमारी जी से मिली और उनको इन समस्याओं से अवगत कराया।

आगरा के बस्ती मोहल्ले में रहने वाले बच्चों की समस्याओं के संबंध में जानकर श्रीमती कमलेश कुमारी जी ने कहा कि बस्ती में रहने वाले सभी बच्चों को यदि किसी भी तरह की समस्या या परेशानी हो तो वो सभी समिति के साथ बैठक कर सकते हैं। हम उनकी समस्याओं को सुनने के बाद उनको हल करने का पूरा प्रयास करेंगे।

जब पूनम ने अध्यक्ष से पूछा कि बेसहारा बच्चों के पुर्नवास पर बाल कल्याण समिति क्या कार्य कर रही है तो अध्यक्षा ने कहा कि हम बेसहारा बच्चों के पुर्नवास हेतु पूरी कोशिश कर रहे हैं। क्योंकि समिति का यही प्रयास है कि कोई बच्चा सड़क पर न रहे। हमारे लिए भी बच्चों का पुर्नवास एक चिंता का विषय बना हुआ है। हम जल्द ही इसका कोई न कोई उपाय अवश्य ढूंढ निकालेंगे।

अंत में पूनम ने उनसे पूछा कि आगरा में जिन बच्चों के लिए शिशु होम बने हुए हैं, उसमें कितने वर्ष के बच्चों को लेने व रखने की सुविधाएं उपलब्ध हैं? तो अध्यक्ष श्रीमती कमलेश कुमारी जी ने बताया कि शिशु होम में 0 से 10 वर्ष तक के शिशु को रखने और देखभाल करने की सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इतनी आयु वर्ष का यदि कोई भी बच्चा हो तो समिति के सहयोग से उसे शिशु होम भेजा जा सकता है।

तोता-मैना संवाद

सोशल ऑडिट कमेटी की भूमिका

तोता मैना एक पेड़ की डाली पर बैठे होते हैं, तभी मैना उड़कर कहीं जा रही होती है।

तोताः अरे मैना, इतनी सुबह सुबह तुम कहां जा रही हो...??

मैनाः अरे तोता आज मैं एक बहुत जरूरी मीटिंग में जा रही हूं...

तोताः अच्छा, तो क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूं...जरा मैं भी तो देखूं कि आखिर तुम कौन सी मीटिंग में जा रही हो..?

(दोनों उड़कर सोशल ऑडिट कमेटी की मीटिंग में जा पहुंचे)

मैनाः पता है तोता, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बच्चों के होम के लिए एक सोशल ऑडिट कमेटी का गठन किया है और आज यहां उसी की मीटिंग चल रही है।

तोताः अरे मैना, ये कौन सी कमेटी है और इस कमेटी का गठन कब किया गया?

मैनाः तोता, 17 अप्रैल, 2015 को सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार किशोर न्याय अधिनियम के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग ने केंद्रीय स्तर पर सोशल ऑडिट कमेटी का गठन किया है। सोशल ऑडिट कमेटी किशोर न्याय अधिनियम, 2000 के प्रावधानों पर आधारित है।

तोताः अरे वाह मैना, यह तो बहुत अच्छी बात है....लेकिन यह बताओ कि इस कमेटी के क्या कार्य होंगे..?

मैनाः तोता इस कमेटी में सात सदस्य होंगे, जो वर्ष में एक बार बच्चों के लिए बनाए गए बाल गृहों के कार्यों और सुविधाओं की समीक्षा व मूल्यांकन करेंगे।

तोताः लेकिन मैना, इतना कठिन कार्य कमेटी कैसे करेगी..?

1. मैनाः अरे बुद्धू तोता.... कमेटी दो तरह से कार्य करेगी.... इसका पहला कार्य प्रतिवर्ष किशोर न्याय अधिनियम के कार्यान्वयन की समीक्षा व मूल्यांकन करना, जिसके तहत........

- किशोर न्याय बोर्ड, बाल कल्याण समिति व विशेष किशोर पुलिस इकाई की स्थापना के कार्यों की समीक्षा करना,
- किशोर न्याय बोर्ड व बाल कल्याण समिति के लंबित मामलों की जांच करना,
- विशेष किशोर पुलिस इकाई के कार्यों की समीक्षा करना,
- कानून का उल्लंघन करने वाले और देखभाल व संरक्षण के जरूरतमंद बच्चों के संबंध में उपयोग में लाने वाले बाल मित्र साधनों की समीक्षा करना,
- किशोर न्याय अधिनियम के कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाले दूसरे अन्य विचाराधीन मामलों की समीक्षा करना

तोताः और दूसरा...?

मैनाः दूसरा... इसके कामकाज की समीक्षा करना, जैसे......

- बाल संरक्षण संस्थान जैसे- संप्रेषण गृह, विशेष गृह, संरक्षित स्थान, बाल गृह और शेल्टर होम की समीक्षा करना,
- विशेष गोद लेने वाली एजेंसियों की समीक्षा करना,
- राज्य सोशल ऑडिट कमेटी के कार्यों की समीक्षा करना,
- राज्य स्तर की सोशल ऑडिट कमेटी की रिपोर्ट का परीक्षण करना और कमेटी के कार्यों को बेहतर बनाने के लिए सुझाव देना,
- मंत्रालय को वार्षिक सोशल ऑडिट रिपोर्ट भेजना

तोताः अरे वाह मैना, यह तो वाकई में बहुत अच्छा हुआ...इससे जरूरतमंद बच्चों को फायदा होगा...

मैनाः हां तोता.........

इतना कहकर दोनों दूसरी खबर की तलाश में उड़ पड़ते हैं....

रेडियो पर बच्चों ने रखी अपने मन की बात

पूजा (15 वर्ष)

रेडियो मंत्रा 91.9 एफ.एम ने स्टेशन पर रहने व काम करने वाले बच्चों के साथ एक कार्यक्रम किया। इस कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्टेशन पर रहने वाले बच्चों की जिंदगी के बारे में बात की। स्टेशन पर जिंदगी गुजार रही बढ़ते कदम संगठन की सदस्य बॉबी व निशा ने रेडियो मंत्रा के माध्यम से बताया कि स्टेशन पर अकसर हम लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। यहां आने जाने वाला हर व्यक्ति हमें गलत और गंदी नजरों से देखते हैं और गलत शब्द बोलते हैं।

बढ़ते कदम के सदस्य गोपाल ने रेडियो मंत्रा को बताया कि हम बच्चों को पुलिस ही नहीं, राह चलते यात्री भी शक की नजरों से देखते हैं। ऐसा लगता है मानो हम बच्चे बहुत बड़े अपराधी हों। स्टेशन पर कहीं भी कुछ गलत होता है तो सब हमको ही शक की नजरों से देखते है। हमारा सपोर्ट करने वाला कोई नहीं हैं। इस रेडियो चैनल के माध्यम से स्टेशन पर रहने वाले हम सभी बच्चे अपनी सुरक्षा की मांग करते हैं।





बढ़ते कदम की जिला सचिव पूजा ने बताया कि एक हमारा संगठन बढ़ते कदम ही है जो सड़क व कामकाजी बच्चों की पहचान की बात करता है, उनकी पहचान दिलाने हेतु उन्हें जानकारी देता है और उनके अधिकारों के लिए लड़ रहा है। यह संगठन हम बच्चों का ही बनाया हुआ है और हम ही इसे चला रहे हैं।

इस तरह बढ़ते कदम के सभी सदस्यों ने रेडियो मंत्रा 91.9 एफ. एम. के कार्यक्रम में अपनी समस्या व बातों को रखा, जिससे लोगों को बच्चों की समस्याओं का एहसास हो सके।

कला के माध्यम से बच्चों ने कहा –

'स्टॉप चाइल्ड लेबर'

बालकनामा ब्यूरो

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सरकार एक ऐसा संशोधन लाने पर विचार कर रही है, जिसमें 14 साल की उम्र का बच्चा, जो स्कूल जाता है वह काम कर सकता है। सरकार के इस संशोधन से न तो बच्चे खुश हैं और न ही सहमत।

ज्ञातव्य हो कि बच्चों ने बाल श्रम पर अभूतपूर्व पेंटिंग बनाई और अर्पना आर्ट गैलरी में इन पेंटिंगों की एक कला प्रदर्शनी आयोजित की। इस कला प्रदर्शनी में बढ़ते कदम के सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ दिल्ली के विभिन्न इलाकों में रहने वाले 8 से 16 साल की उम्र के बच्चों द्वारा बनाई गई 81 पेंटिंगों को शामिल किया गया। इस कला प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य श्री असीम श्रीवास्तव जी ने किया।

13 साल की सुमन ने अपनी पेंटिंग में काम के बोझ के तले दबे बच्चे के चित्र के माध्यम से बाल श्रम की वास्तविकता दर्शायी है और बच्चों ने जिस ढंग से इसे अपने चित्रों में कैद किया है, वह वास्तव में बहुत मार्मिक है और हमारे सामने एक प्रश्न खड़ा करती थी। उसने कहा कि, बच्चों को काम क्यों करना चाहिए? उनकी देखभाल करने वाला कोई क्यों नहीं होता? मैं हैरान हूं कि सरकार ये कैसे कह सकती है कि बच्चा स्कूल से आने के बाद काम कर सकता है? ये स्कूल कहां हैं? मैं आशा करती हूं कि एनसीपीसीआर के सदस्य इस प्रदर्शनी को देखकर कोई नोट लें और इसके खिलाफ कोई ठोस कदम उठाएं।





श्री असीम श्रीवास्तव जी बच्चों की पेंटिंग देखकर बहुत आश्चर्यचकित थे। उन्होंने कहा कि बाल श्रम बहुत ही गंभीर विषय है कि स्टॉप चाइल्ड लेबर?

उन्होंने कहा कि, मैं बच्चों के सुझावों से सहमत हूं और उनके इन सुझावों से मैं विभाग को अवगत कराऊंगा।

क्या सिर्फ बजट बढ़ाने से

बदल जाएगा इतिहास?

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने अपने बजट में शिक्षा व स्वास्थ्य विभागों की स्थिति सुधारने के लिए इसका बजट दोगुना बढ़ाकर देश का इतिहास बदलने की बात की है लेकिन सरकारी स्कूलों व सरकारी अस्पतालों की स्थिति तो जस की तस बनी हुई है।

इस वास्तविकता की जांच पड़ताल कर रहे बालकनामा के रिपोर्टर उन 18 बच्चों से मिले, जिन्होंने सरकारी स्कूलों में दाखिला लिया है। ये 18 बच्चे रैन बसेरा व पुल के नीचे रहते हैं। इन बच्चों ने बताया कि जब उनका दाखिला स्कूल में कराया जा रहा था तो उन्हें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्कूल में उन बच्चों से ठीक से बात तक नहीं की गई। 14 वर्षीय राहुल ने बताया कि स्कूल के अध्यापक हम बच्चों का दाखिला लेने से मना कर रहे थे, क्योंकि यदि सड़क पर रहने व भीख मांगने वाले बच्चे उनके स्कूल में पढ़ेंगे तो इससे दूसरे बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। इसलिए वह हमें दाखिला नहीं देना चाहते थे। यह सुनकर मेरा आत्मविश्वास खो गया था और पढ़ने की लालसा खत्म होती गई थी।

बच्चों ने बताया कि स्कूलों में अध्यापक ठीक से पढ़ाते नहीं है और कुछ स्कूलों में तो अध्यापक बहुत कम संख्या में हैं। इस बात का पता लगाने के लिए बालकनामा के रिपोर्टर उस स्कूल में गए। वहां जाकर वाइस प्रिंसिपल से मुलाकात की तो उनका कहना था कि उनके स्कूल में अध्यापक की संख्या बहुत कम है और इस वजह से वह बच्चों पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते। उन्होंने बताया कि वह पिछले कुछ महीनों से ई मेल के द्वारा शिक्षा विभाग को लगातार इसकी सूचना दे रही हैं, पर कोई जवाब नहीं आ रहा है।



बच्चों ने बताया कि वहां वाइस प्रिंसिपल ही दाखिला करती हैं और बच्चों की पढ़ाई का ध्यान भी रखती हैं। इस स्कूल में बहुत कम अध्यापक हैं और बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा है। इन सरकारी स्कूलों के अध्यापक बच्चों की पढ़ाई पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। बच्चों का कहना है कि दिल्ली सरकार केवल बजट बढ़ाने से इतिहास नहीं बदल पाएगी, जब तक शिक्षा व शिक्षकों की दशा व दिशा में बदलाव नहीं आएगा।

मुकेश : नशे के अंधकार से ज्ञान के उजाले की तरफ

बालकनामा ब्यूरो

16 वर्षीय मुकेश महज 11 वर्ष की उम्र में घर से स्टेशन आ गया था। वह करीब 5 सालों से स्टेशन पर रह रहा है। जब वह स्टेशन आया तो गुटखे बेचने का काम करने लगा। जब स्टेशन पर रहने वाले बच्चे उसके दोस्त बनें तो उनके साथ रहकर वह भी बीड़ी सिगरेट पीने लगा। सभी दोस्तों के साथ मिलकर राह चलते लोगों की जेब तक काटने लगा। वह बुरी तरह नशे का आदी हो गया था।

मुकेश आगे तो बढ़ना चाहता था, लेकिन एक बार नशे के दलदल में जो फंस गया, वह आसानी से उससे बाहर नहीं आ सकता। पर मुकेश के अंदर स्वयं को बदलने और इस दलदल से बाहर निकलने का हौसला था।

इसी हौसले के बल पर मुकेश बढ़ते कदम संगठन से जुड़ा और चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे हार्म रिडक्शन सेंटर जाने लगा। मुकेश कुछ दिनों तक उस सेंटर में पढ़ने गया, लेकिन उसने अपने कदम पीछे खींच लिए। पर बढ़ते कदम संगठन के लीडरों ने हार नहीं मानी।

संगठन की टीम के सदस्य फिर उससे मिलने स्टेशन पहुंचे और उसे समझाया। फिर वह उसे सेंटर ले गई और उसने फिर से



धीरे धीरे सेंटर आना शुरू कर दिया।

अब मुकेश रोज आने लगा। वह पढ़ाई में भी रूचि लेने लगा। अब वह हिन्दी पढ़ लेता है, गणित और अंग्रेजी का ज्ञान भी उसे हो गया है। आजकल वह बढ़ते कदम का एक होनहार लीडर बन गया है। वह रोज सुबह जल्दी पढ़ने के लिए आता है और दूसरे बच्चों को नशा करने से रोकता है। वह सेंटर में आने से पहले बच्चों का नशा करने वाले सभी पदार्थ उनसे लेकर जमा कर लेता है, उसके बाद ही उन बच्चों को पढ़ने के लिए आने देता है। इसके साथ वह उन सभी बच्चों को अलग अलग कार्यक्रमों में व्यस्त रखने की भी कोशिश करता रहता है, ताकि यह बच्चे ज्यादा समय तक अपने नशे से दूर रह सकें। मुकेश पूरे दिन बच्चों की मदद करने में ही लगा रहता है। वह अपना काम बहुत अच्छे से और समझदारी के साथ करता है। उसने बड़े होने के बाद अपना सपना साकार करने की ज्योति जलाई है। उसने कहा है कि वह पढ़ लिखकर एक अच्छा अध्यापक बनना चाहता है और वह इस सपने को सच करने के लिए मेहनत कर रहा है। वह बाकी बच्चों की जिन्दगी को प्रभावित कर सके, यही उसके जीवन का उद्देश्य है।



हमारे अच्छे दिन कब आएंगे

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन द्वारा 7 अगस्त, 2015 को आयोजित की गई राष्ट्रीय मीटिंग में अगल अलग जिलों से संगठन का प्रतिनिधित्व कर रहे 35 लीडरों ने शिक्षा, बाल व्यापार, बाल मजदूरी, सड़क पर रहने वाले बच्चों की पहचान इत्यादि मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। लीडरों ने कहा कि पिछले दो सालों से यही सुनते आ रहे हैं कि अच्छे दिन आएंगे, लेकिन हम सड़कों पर रहने वाले बच्चों के अच्छे दिन कब आएंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी अच्छे दिनों की बात करते हैं, लेकिन क्या वो जानते हैं कि देश में 11 मिलियन बच्चे सड़कों पर अपना जीवनयापन करने को मजबूर हैं और अपने पहचान के अधिकार से वंचित हैं। पहचान का अधिकार न होने के कारण ये 11 मिलियन बच्चे शिक्षा व सरकारी सुविधाओं से वंचित हैं। ज्योति ने कहा कि मैं प्रधानमंत्री जी से आग्रह करती हूं कि आप इस विषय पर जल्द से जल्द कोई कदम उठाएं और हम बच्चों के लिए भी अच्छे दिन लाने का प्रयास करें।

बैठक में उपस्थित संगठन की पूर्व राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने बताया कि अपने दो साल के कार्यकाल के दौरान उन्होंने लगभग 20 सरकारी व गैर सरकारी अलग अलग संस्थाओं व बच्चों से संबंधित सरकारी विभागों के अधिकारियों से बच्चों के मुद्दों पर बात की। लेकिन किसी ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया।

हमारे पास हमारा यह अखबार बालकनामा ही एक माध्यम है जिसके द्वारा हम उन तमाम बच्चों की समस्याएं प्रधानमंत्री मोदी तक पहुंचा रहे हैं।

सुरक्षा विहीन बच्चों ने मार्क हेनरी से लिया सुरक्षा का वादा



बालकनामा ब्यूरो

रक्षाबंधन के अवसर पर जब दुनिया के जाने माने रेसलर मार्क हेनरी बढ़ते कदम संगठन के 20 सदस्यों से मिले तो सभी बच्चे मार्क हेनरी से मिलकर और उनसे बात करके बहुत खुश हुए। लड़कियों ने मार्क हेनरी को राखी बांधी और उनसे सड़कों, फुटपाथों पर जिंदगी गुजार रहे सुरक्षा विहीन बच्चों के लिए एक फाइट लड़ने का वादा लिया। सभी बच्चों ने मार्क हेनरी को अपना विश्व का पहला सड़क व कामकाजी बच्चों का अखबार बालकनामा दिखाया। मार्क हेनरी बालकनामा पढ़कर बहुत खुश हुए। उन्होंने सड़क व कामकाजी बच्चों की इस सोच की सराहना की और लोगों से अपील की कि वो इस अखबार को जरूर पढ़ें।

असिस्टेंट कमांडेंट आर.पी. तोमर: बाल सुरक्षा सर्वोपरी है

बालकनामा ब्यूरो

आगरा के आरपीएफ पुलिस थाने में आयोजित 'सुरक्षा सप्ताह' कार्यक्रम में सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया। इन सभी बच्चों ने आरपीएफ के असिस्टेंट कमांडेंट श्री आर.पी. तोमर जी से मुलाकात की।

पहले तो श्री आर.पी. तोमर जी ने बच्चों से स्टेशन पर क्या अच्छा लगता है और क्या बुरा ये पूछा फिर उन्हें इस बात की जानकारी दी कि, आरपीएफ द्वारा आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर 'सुरक्षा सप्ताह' कार्यक्रम



मनाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य बाल सुरक्षा सर्वोपरी है।

यदि आप को कभी भी आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर कुछ भी गलत होता नजर आए तो आप तुरंत हमें जानकारी दें। हम हमेशा आपकी मदद करने के लिए तैयार हैं।



प्रधानमंत्री जी झाड़ू उठा सकते हैं तो आप क्यों नहीं

बच्चों ने स्वच्छता अभियान रैली के माध्यम से किया जागरूक

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने स्वच्छता अभियान रैली निकालकर लोगों से रेल व रेलवे स्टेशन को स्वच्छ रखने की अपील की। इस रैली में कम से कम 150 सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया।

स्टेशन पर रहने वाले सभी बच्चों ने रेलवे स्टेशन को साफ सुथरा बनाने व वहां पर आने जाने वाले यात्रियों को स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से यह रैली निकाली।

रैली में कदम से कदम मिलाकर चलने वाले 14 साल के गोलू ने कहा कि जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी स्वयं झाड़ू लेकर गंदगी को साफ कर रहे हैं तो फिर हम देश के बच्चों व नागरिकों को भी अपने आस पास की साफ सफाई का ध्यान रखना चाहिए। और फिर रेलवे स्टेशन तो हमारे देश का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए हमें रेलवे की साफ सफाई पर बहुत ध्यान देना होगा।

15 वर्षीय हेमा ने कहा कि रेलवे स्टेशन तो हर देश की पहचान होता है, क्योंकि यहां पर देश विदेश के लोग आते हैं। यदि हमारा रेलवे स्टेशन इतना गंदा रहेगा तो हमारे देश की छवि पूरे विश्व के सामने खराब होगी।

13 साल के हर्ष ने रैली के दौरान रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाले सभी यात्रियों व स्टेशन पर सामान बेचने वाले लोगों से अपील की कि वे रेलवे स्टेशन पर गंदगी न फैलाएं और इसे साफ सुथरा रखने का प्रयास करें।

मथुरा के आरपीएफ व जीआरपी स्टाफ ने बच्चों के इस प्रयास की सराहना की। उन्होंने कहा कि अब तो भारत सरकार भी देश को स्वच्छ बनाने को लेकर बहुत सजग हो गई है। रेलवे विभाग का भी यही प्रयास है कि वे रेलवे स्टेशनों व ट्रेनों को साफ सुथरा रखें। लेकिन यह प्रयास आप सभी के सहयोग के बिना असंभव है। बच्चों के साथ साथ पूरा रेलवे विभाग भी चाहता है कि रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाला हर व्यक्ति यहां की स्वच्छता का ध्यान रखे और गंदगी न फैलाएं।

पिता ने शबाना के पैरों में डाल रखी हैं बेड़ियां

बालकनामा ब्यूरो

9वर्षीय शबाना मथुरा स्टेशन पर रहती है। यह एक बहन और दो छोटे भाई हैं। शबाना की माता अपने बच्चों को छोड़कर चली गई हैं। इसके पिता जी बहुत शराब पीते हैं। शबाना कबाड़ा बीनने का काम करती है। इससे पूरे दिन वह जो भी पैसे कमाती है, उसके पिता उससे वो सारे पैसे छीन लेते हैं और उन पैसों से शराब पी जाते हैं।

शबाना पढ़ना चाहती है, लेकिन अपने भाई बहनों के पालन पोषण के खातिर उसे जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। शबाना की पढ़ाई के प्रति लगन देखकर चेतना कार्यकर्ता ने उसे सेंटर आकर पढ़ने के लिए बोला और वह सेंटर आई भी। लेकिन उसके पिता ने उसके सेंटर जाने पर पाबंदी लगा दी। वह शबाना को अपने साथ रोज कबाड़ा बीनने के लिए मथुरा से फरीदाबाद ले जाने लगा।



जब बढ़ते कदम की पदाधिकारी पूजा को इस बात का पता चला तो वह शबाना से मिली। शबाना ने बताया कि उसके पिता ही उसे पढ़ने नहीं जाने देते और यदि मैं जाती हूं तो मारपीट करते हैं। इसलिए मैं अब उनके साथ कबाड़ा बीनने चली जाती हूं। पूजा ने शबाना को समझाया कि काम के साथ पढ़ाई भी करना जरूरी है। पूजा ने शबाना के पिता को समझाया कि वह अपने बच्चों के साथ दुर्व्यवहार व मारपीट ना करें। यदि वे ऐसा करेंगे तो संगठन इसकी शिकायत पुलिस से करेगा। उस दिन से शबाना के पिता ने उसे मारना पीटना छोड़ दिया। शबाना पढ़ लिखकर एक अच्छी अध्यापिका बनना चाहती है।

सरकार ने दी हरी झंडी

अपनी सालाना कमाई का बैंक कुछ प्रतिशत जरूरमंद बच्चों पर करेगा खर्च

बालकनामा ब्यूरो

पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर श्री विजय कुमार शर्मा बढ़ते कदम के सदस्यों से मिले और उनसे बातचीत की। उन्होंने सदस्यों को अपने बारे में बताया तथा बच्चों ने भी उनके बारे में जाना। श्री विजय कुमार शर्मा जी ने सदस्यों को बताया कि वह बैंक में खाता खोलते हैं और उन्हें पैसों की बचत के बारे में बताते हैं। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि बैंको को एक साल में लोगों का खाता खोलने से जो भी कमाई होती है, वह रकम सरकार को दे दी जाती हैं। लेकिन हम सभी के लिए यह खुशी की बात है कि इस बार हमारी सरकार ने कहा है कि अब हम इस कमाई का कुछ प्रतिशत रूपया उन बच्चों पर खर्च करेंगे, जो बच्चे गरीबी के दलदल में फंसे हुए हैं।

जरा ध्यान दें

सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए हमारे संगठन बढ़ते कदम की ओर से एक छोटा सा संदेश है कि अगर बच्चे कबाड़ा बीनते हैं, काम करते हैं और उनके माता पिता उन्हें पढ़ने नहीं देते। इन सब समस्याओं के चलते भी बच्चों को अपनी पढ़ाई नहीं छोड़नी है और आगे बढ़ना है। जिस तरह बढ़ते कदम संगठन से जुड़े रेलवे स्टेशनों के कुछ बाल साथी काम के साथ पढ़ाई कर रहे हैं, उसी तरह हर बच्चों को पढ़ाई करनी है। यदि आपको किसी भी प्रकार की मदद की आवश्यकता है तो आप हमारे अखबार में दिए गए पते पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

बच्चों के हेल्पलाइन नंबर

चाइल्ड लाइन नंबर **1098**

पुलिस हेल्पलाइन नंबर **100**

ये दोनों ही नंबर टोल फ्री नंबर हैं। यदि आप किसी मुसीबत में हों तो दोनों ही नंबरों पर 24 घंटे में कभी भी फोन करके मदद ले सकते हैं

दिल्ली के एमसीडी स्कूलों की ज्वाइंट डायरेक्टर से सीधी बात

चांदनी (14 वर्ष)

बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने दिल्ली के स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था पर दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग की ज्वाइंट डायरेक्टर श्रीमती मंजू खत्री जी से बात की। शिक्षा विभाग की ज्वाइंट डायरेक्टर श्रीमती मंजू खत्री जी सन् 1990 से दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग में काम कर रही हैं।

चांदनी ने उनसे सड़क व कामकाजी बच्चों के स्कूल जाने की बजाए, बाल मजदूरी पर जाने का कारण पूछा? तो उन्होंने बताया कि बच्चे एक कच्चे मिट्टी के घड़े के समान होते हैं। उसे जिस आकार में हम ढालेंगे वह उस रूप में ढल जाते हैं। इसलिए हमें बच्चों को काम पर जाने की बजाए, स्कूल जाने के लिए प्रेरित करना होगा। हमें हमेशा यह बात ध्यान में रखनी चाहिए, जब तक हम बच्चों को सही दिशा नहीं दिखाएंगे, तब तक सही रास्ते पर नहीं चल पाएंगे।

चांदनी ने उनसे पूछा कि बच्चे सरकारी स्कूल में जाना क्यों नहीं पसंद करते? श्रीमती मंजू खत्री जी ने कहा कि इसमें स्कूल या अध्यापक कुछ नहीं कर सकते और न ही इसके लिए स्कूल जिम्मेदार हैं। ऐसा नहीं है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नहीं होती। जब तक बच्चे के माता पिता अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देंगे, तब तक बच्चा नहीं पढ़ सकता। हमारे अध्यापक इतना समय बच्चों को नहीं दे पाते हैं और ना ही होमवर्क में उनकी मदद करते हैं। इसलिए ज्यादातर बच्चे स्कूल छोड़ घर बैठ जाते हैं।



चांदनी ने उनसे पूछा कि क्या शिक्षा विभाग द्वारा ड्रॉपआउट बच्चों के लिए अलग से कोई कार्यक्रम चलाया जा रहा है? उन्होंने बताया कि हम इस समस्या को दूर करने के लिए ऐसे बहुत से कार्यक्रम स्कूलों में चला रहें हैं, जिससे बच्चे की शिक्षा में रूचि हो और वह रोज स्कूल पढ़ने आए। इसलिए अलग से कार्यकर्ता बच्चों को इकट्ठा कर, उनकी काउंसलिंग करते हैं। यह कार्यक्रम हमारे सदस्यों द्वारा किया जा रहा है। हम पूरा प्रयास कर रहे हैं कि ज्यादा से ज्यादा बच्चों को स्कूल से जोड़ें और उन्हें शिक्षित करें।

आज के युवा कैसे बन सकते हैं कल के उद्यमी

बालकनामा ब्यूरो

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रहने वाले सड़क व कामकाजी बच्चों को एनएसआईसी के टेकनिकल सर्विस सेंटर में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने का अवसर मिला। एनएसआईसी द्वारा आयोजित यह प्रशिक्षण कार्यशाला 'आज के युवा कल के उद्यमी' पर आयोजित की गई थी। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में बच्चों को ब्रेड, साबुन, मोजे, वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट बार, जूट, टिशु पेपर, यूज एंड थ्रो प्लेट, गिलास इत्यादि वस्तुएं कैसे बनाई जा सकती हैं और इन वस्तुओं को बनाने के लिए किन किन मशीनों का प्रयोग किया जाता है, इन सब बातों



की जानकारी दी गई।

सभी बच्चों को यह भी बताया गया कि कैसे आप कम पैसों या कम लागत में एक समूह बनाकर अपना खुद का उद्योग प्रारंभ कर सकते हैं। आप कैसे और कहां से इन मशीनों को खरीद सकते हैं। कम जगह में कैसे इन मशीनों को लगाकर अपना उद्योग प्रारंभ कर सकते हैं। इन मशीनों की कीमत क्या है और कैसे इन मशीनों को चलाया जाता है। इसके साथ ही इन सभी बच्चों को मार्केटिंग कैसे की जाती है, इसकी जानकारी दी गई।

सभी बच्चों को यह कार्यशाला बहुत अच्छी लगी। उन्होंने कहा कि हमें तो पता ही नहीं था कि हम कम निवेश में भी अपना उद्योग शुरू कर सकते हैं। यदि हमें कभी भविष्य में अवसर प्राप्त हुआ तो हम जरूर अपना एक समूह बनाकर इस प्रकार का एक उद्योग प्रारंभ कर सकेंगे।



नौकरी पाकर न रहा इनके खुशी का ठिकाना

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन से जुड़े 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने हेतु उन्हें जी.एम.आर. ट्रेनिंग सेंटर भेजा गया था। इस व्यावसायिक प्रशिक्षण में निजामुद्दीन स्टेशन के पांच बच्चों के साथ मथुरा स्टेशन के भी चार बच्चों ने भाग लिया था। इन बच्चों ने अपना 45 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। यह प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन बच्चों को प्रमाण पत्र दिया गया। इसके बाद इन बच्चों की मॉल, गेस्ट हाउस में नौकरी भी लग गई है।

ज्ञातव्य हो कि जी.एम.आर. व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र में इन बच्चों को बेसिक कंम्प्यूटर की तीन महीने की, बेसिक इलेक्ट्रिकल और हाउस वायरिंग की तीन महीने, फ्रिज व एयरकंडीशन ठीक करने की साढ़े चार महीने और बेसिक कारगो मैनेजमेंट की तीन महीने की ट्रेनिंग दी गई है। जिसके तहत इन बच्चों को अंग्रेजी और पर्सनाल्टी डेवलेपमेंट का प्रशिक्षण भी दिया गया। यह प्रशिक्षण प्राप्त करके इन बच्चों को बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला, जिसका फायदा उन्हें आने वाले समय में जरूर मिलेगा।

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रहने वाले 16 वर्षीय विकास ने कहा कि मैंने इस प्रशिक्षण केंद्र में बहुत कुछ सीखा और मुझे इस बात की खुशी है कि प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मुझे अच्छी जगह नौकरी भी मिल गई है। अब मैं स्टेशन की जिंदगी छोड़कर अच्छी जगह नौकरी कर रहा हूं और अपने जीवन को एक नई दिशा की ओर ले जा रहा हूं।

काश ! हर बच्चा मना सकता अपना जन्मदिन

बालकनामा ब्यूरो

श्री निखिल खुराना जी ने बढ़ते कदम के 65 सदस्यों के साथ अपनी बेटी स्मृति खुराना का जन्मदिन मनाया। उन्होंने सभी सदस्यों को बताया कि वह परपट नगर से अपनी बेटी स्मृति खुराना का जन्मदिन मनाने आए हैं। जब उन्होंने बाल सदस्यों से बात की तो उन्हें पता चला कि आज संगठन के सदस्य सूरज, खुशी और संगीता का भी जन्मदिन है। उन्होंने कहा कि यह तो एकदम सोने पर सुहागा हो गया। उन्होंने इन तीनों सदस्यों के लिए भी केक मंगवाया और इनका जन्मदिन भी बड़ी धूमधाम से मनाया। तीनों बाल साथियों ने स्मृति के जन्मदिन का केक एक साथ मिलकर काटा। सभी बच्चों ने इन लोगों को जन्मदिन की बधाई



दी और केक खिलाया। श्री निखिल खुराना जी ने सभी बच्चों के लिए बर्गर, समोसा, फ्रूटी इत्यादि खाने पीने का सामान मंगाया।

स्मृति की मां ने कहा कि मैं आज बहुत खुश हूं कि बेटी का जन्मदिन बढ़ते कदम के सदस्यों के साथ मनाया है। मेरे लिए यह और खास था क्योंकि मैंने एक नहीं, बल्कि चार चार जन्मदिन मनाया। हमारे लिए यह दिन बहुत यादगार रहेगा।

श्री निखिल खुराना ने कहा कि मुझे बहुत अच्छा लगा। काश, हम लोगों के बच्चों की तरह ये बच्चे भी अपना जन्मदिन बहुत धूमधाम से मना पाते। लेकिन मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि अपका संगठन ऐसे बच्चों के लिए बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है।



मानों एक अलग ही दुनिया में आ गए हों

बालकनामा ब्यूरो

6 जुलाई, 2015 को बढ़ते कदम के सदस्यों को वाटरपार्क की पिकनिक पर ले जाया गया। इस पिकनिक में निजामुद्दीन और लाजपत नगर के 26 बच्चों ने भाग लिया। 15 वर्षीय ललित ने बताया कि आज जब बढ़ते कदम के सभी सदस्य अपनी सबसे पसंदीदा जगह वाटरपार्क पहुंचे तो उन्हें लगा कि जैसे वह एक अलग ही दुनिया में आ गए हों, जहां ढेर सारा फन और मस्ती थी।

विशाल ने बताया कि वाटरपार्क पहुंचकर हमने झूले झूले और रेन डांस किया। रेन डांस के बाद सभी बच्चे वाटर राइड्स पर गए। जहां सभी ने खूब मस्ती की। कोमल ने बताया मुझे तो हॉन्टेड हाउस बहुत डरावना लगा। इसके अन्दर बिल्कुल अन्धेरा था और तेजी से हंसने की आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

इसके अन्दर एक आइने का कमरा था, जहां चारों ओर आइने ही आइने लगे थे। इसमें हमें बाहर निकलने के लिए सही दरवाजे को खोजना था। हम इसके अंदर गए और सही दरवाजे को खोजकर बाहर भी आ गए।

कुमुद ने कहा कि हमने ऐसी जगह तो सिर्फ फिल्मों और नाटकों में ही देखी थी, लेकिन आज पहली बार हकीकत में देखने का मौका मिला।

हमें भी तो बताइए कैसे करते हैं टीवी चैनलों पर विज्ञापन

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथियों को होम शॉप 18 टीवी चैनल का विज्ञापन करने वाले कलाकारों से मिलने का मौका मिला। 15 अगस्त के अवसर पर होम शॉप 18 ने इन बाल सदस्यों को आमंत्रित किया था। बाल साथियों के लिए यह बहुत ही खुशी का मौका था, क्योंकि इस दिन उन्होंने इस टीवी चैनल के लिए विज्ञापन करने वाले अभिनेता व अभिनेत्रियों से मुलाकात की।

होम शॉप 18 के एंकर वरूण धवन ने सभी सदस्यों को बताया गया कि होम शॉप 18 एक टीवी चैनल है, जिसमें विभिन्न प्रकार के सामानों को एक विज्ञापन के माध्यम से टेलीविजन पर दिखाया जाता है। इसके लिए टीवी कलाकारों के माध्यम से सामानों का विज्ञापन किया जाता है। संगठन की सदस्य सुलेखा ने



वरूण धवन से पूछा कि क्या उन्हें भी यहां कार्य करने का मौका मिल सकता है, तो उन्होंने कहा कि यहां पर 12वीं पास कोई भी बच्चा जो टैलेंटेड हो, होम शॉप 18 से जुड़ सकता है।

सिद्धार्थ ने सभी बच्चों को होम शॉप 18 में होने वाले कार्यों के बारे में बताया तथा सभी को होम शॉप 18 की विजिट कराई। अंत में 12 वर्षीय रूस्तम ने सभी कलाकारों को अपना डांस दिखाया।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बालकनामा अखबार को आवश्यकता है आपके सहयोग की। आप इस प्रकार से अनुदान देकर हमारे दानदाता बन सकते हैं :-

5000 रूपए (डायमंड)

2000 रूपए (गोल्डेन)

500 रूपए (सिल्वर)

हम आपका नाम व राशि अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-53 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | नवंबर-दिसंबर, 2015

आज के समय सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार बालकनामा लिखकर प्रकाशित करने लगे।

विश्व में पहली बार स्ट्रीट चिल्ड्रन ने खुद कर दिखाई अपनी गणना

छोटी उम्र में दिया बड़ा संदेश

बालकनामा ब्यूरो

अकसर सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अनदेखा और अनसुना किया जाता है। इनकी संख्या का पता न होने के कारण सरकार द्वारा जो भी योजनाएं बनाई जाती हैं, वो इन बच्चों तक नहीं पहुंच पाती हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए बढ़ते कदम - सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन के सदस्यों ने एक कदम स्वयं बढ़ाते हुए अपनी गणना खुद कर दिखाई और सरकार व देश के सामने असंभव होने वाले कार्य को भी संभव कर दिखाया।

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने 4 नवंबर, 2015 से सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना का कार्य दिल्ली के सराय काले खां में किया और 20 नवंबर, 2015 तक यह गणना कर दिखाई । गणना को सुचारू रूप से करने के लिए उन्होंने इस क्षेत्र को पांच भागों में बांटा और इसका एक सामाजिक नक्शा बनाया। यह गणना 14 से 18 साल के बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों द्वारा किया गया। यह गणना इन सदस्यों ने मात्र 13 दिनों पूरी कर ली।

इस गणना के मुख्य उद्देश्य सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना की जरूरत पर सरकार का ध्यान आकर्षित करना और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने हेतु नए नए सुझावों और तरीकों को बताना था।

शेष पृष्ठ 2 पर





संपादकीय

प्रिय साथियों,

आप सभी को मेरा नमस्कार!

बालकनामा अखबार को इतना प्यार और सराहना देने के लिए हम सभी मीडिया और पाठकों का धन्यवाद करते हैं। आप के इसी प्रोत्साहन और सहयोग का परिणाम है कि हमारे अखबार की प्रसिद्धि दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। इसी का परिणाम है कि हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे कुछ अलग और ऐसी वास्तविक खबरें लेकर आते हैं, जिनकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता है।

इस अंक में भी हम अपने पाठकों के लिए कुछ ऐसी ही खबरें लेकर आएं हैं। इस बार बालकनामा टीम व सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करके, उसकी रिपोर्ट राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग के समक्ष सौंपी और उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करना संभव है। इसके साथ ही हमने बच्चों पर बढ़ते बाल श्रम की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत की है।

हम चाहते हैं कि आप बालकनामा अखबार को हर तरह का अपना सहयोग (छोटा या बड़ा, पैसे या किसी और प्रकार से) जारी रखें। यदि आप हमें सहयोग करना चाहते हैं तो ऊपर दिए गए पते पर हमसे संपर्क करें और अपने सुझाव हमें balaknamaeditor@gmail.com लिखकर भेजें।

संपादकीय मंडल

रोजी रोटी के दबाव में बच्चे अपना रहे हैं बाल मजदूरी के नए नए तरीके

क्या कानून में है इसका हल?

- ✷ नाबालिग लड़कियां बेच रही हैं कच्ची शराब के पाउच
- ✷ बाल विवाह की शिकार लड़कियां लगा रही हैं मेंहदी और बेच रही हैं गहने
- ✷ रिक्शे को धक्का लगाकर चलाते हैं अपनी रोजी रोटी
- ✷ शादी पार्टियों में काम करके कर रहे हैं जीवनयापन
- ✷ बच्चों से साफ कराया जाता है ट्रकों का मलबा

बालकनामा ब्यूरो

नाबालिग लड़कियां बेच रही हैं कच्ची शराब के पाउच

देश में कच्ची शराब का अवैध करोबार बहुत तेजी से गति पकड़ रहा है और झांसी शहर भी अब इससे अछूता नहीं है। यहां पर बड़ी संख्या में कच्ची शराब का अवैध कारोबार चल रहा है। अनुसूचित जनजाति के कबूतरा प्रजाति के लोग इस कारोबार में भारी संख्या में संलिप्त हैं। कबूतरा प्रजाति के लोग पूरे परिवार के साथ धडल्ले से इस कारोबार को चला रहे हैं।

इन परिवारों के पुरूष सदस्य कच्ची अवैध शराब बनाने का काम दिन रात करते हैं और इनके परिवार की महिलाएं और लड़कियां बनी हुई कच्ची शराब को झांसी शहर के कोने कोने में बेचने का काम करती हैं। जांच पड़ताल के दौरान पता चला कि इस प्रजाति की महिलाएं धड़ल्ले से खुले मैदान में बैठकर अपनी नाबालिग लड़कियों के साथ कच्ची शराब बेचती हैं और पुलिस प्रशासन को इस बात की भनक भी नहीं लगने देती। बालकनामा के बातूनी पत्रकार जब बस स्टैंड के सखी मंडी वाले मैदान में शराब बेचती एक महिला के पास गए और इनसे पूछा तो इन्होंने बताया कि 250मिली. के पाउच की कीमत 20 रू, अद्धा 500

शेष पृष्ठ 6 पर

बच्चों ने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष को सौंपी गणना की रिपोर्ट

चांदनी, रिपोर्टर शहीद कैम्प

सड़क एवं कामकाजी बच्चे राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के कार्यालय जाकर वहां राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती स्तुति कक्कड़ से मुलाकात की और उन्हें अपनी गणना की रिपोर्ट सौंपी और उन्हें जानकारी दी कि किस प्रकार बच्चों ने यह गणना की। इसके साथ ही उन्होंने गणना से जुड़े अपने अनुभवों को भी उनके साथ बांटा। सड़क व कामकाजी बच्चों द्वारा उठाए गए इस अनूठे कदम के बारे में जानकर श्रीमती स्तुति कक्कड़ जी बहुत खुश हुई। उन्होंने बच्चों द्वारा उठाए गए इस कदम की सरहाना की और बच्चों की



गणना की रिपोर्ट भी देखी तथा 618 बच्चों का डाटा भी मांगा। श्रीमती स्तुति कक्कड़ जी ने कहा कि जो काम इतने सालों में नहीं किया गया, वो इन बच्चों ने कर दिखाया।

विश्व में पहली बार स्ट्रीट चिल्ड्रन ने खुद कर दिखाई अपनी गणना

गणना का क्षेत्र

काले खां फ्लाई ओवर के नीचे से निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन प्लेटफॉर्म नंबर 1 तक।
निजामुद्दीन नगली राजापुर से बारापुला फ्लाई ओवर के नीचे खाला का गोदाम तक।

गणना की पद्धति

बच्चों से मिलना
बात करना
पर्ची काटना
विषम समय प्रातः व रात्रि में विजिट करना
बच्चों की पुनरावृत्ति को रोकने हेतु दरगाह का धागा बांधना और उसे न खोलने की अपील करना
1098 चाइल्ड लाइन नंबर के बारे में जानकारी देना

गणना की खास बातें

यह गणना सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा उनके लिए की गई।
इस गणना के द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने यह संदेश दिया कि यह संभव है।
इस गणना में बच्चों ने उन समस्याओं के हल निकालें, जिनका सर्वे करने के लिए बड़े लोग घबराते हैं।

भविष्य में की जाने वाली गणना के संबंध में सुझाव

समय व विधि में लचीलापन रखें
बच्चों से मित्रतापूर्ण ढंग से बात करें
बच्चे की स्थिति को समझते हुए बात करें
काम के प्रति ईमानदारी बरतें
बच्चों को गणना के उद्देश्य जरूर समझाएं

गणना के परिणाम

लगभग 1320 बच्चे गिनती में आए, जिनमें से 618 बच्चों से व्यक्तिगत रूप से मिले, और 483 बच्चों ने बात करने से मना कर दिया। 219 बच्चे ऑब्जरवेशन विजिट के दौरान पाए गए, जिनके चेहरे रोज बदलते रहे और वो एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम करने जाने वाले बच्चे थे।
कुल 618 बच्चे, जिनमें 220 लड़कियां और 398 लड़के सड़कों पर रह रहे हैं। इनमें 0 से 5 वर्ष के 99 बच्चे, 5 से 10 वर्ष के 241 बच्चे, 10 से 15 वर्ष 203 बच्चे और 15 से 18 वर्ष के 73 बच्चे शामिल हैं। ज्यादातर बच्चे 6 से 15 वर्ष की आयु सीमा के बीच के हैं।
बाल मजदूरी के शिकार 155 बच्चे कबाड़ा बीनने वाले, 64 बच्चे भीख मांगने वाले, 64 बच्चे घुमंतू, 52 बच्चे रेस्टोरेंट व ढाबे में काम करने वाले हैं। इसके अलावा 35 बच्चे कोठियों में काम करने वाले, 15 बच्चे फूल, 13 बच्चे गुब्बारे, 7 बच्चे मूंगफली, 3 बच्चे कपड़े इत्यादि बेचने वाले हैं।
ये बच्चे कितने घंटे काम करते हैं। 342 बच्चों ने अपने काम करने के समय के बारे में जवाब दिया। जिसमें 50 प्रतिशत बच्चे 5 से 9 घंटे, 23 प्रतिशत 9 से 15 घंटे काम करते हैं।
सबसे अधिक काम करने वाले 306 बच्चे बिहार और 176 बच्चे उत्तर प्रदेश के हैं। शेष बच्चे बच्चे अलग अलग राज्यों मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, असम, दिल्ली, राजस्थान, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मणिपुर, नेपाल से आकर यहां पर रह रहे हैं और काम कर रहे हैं।

गणना के कुछ रोचक संस्मरण



17 वर्षीय शंभू गणना टीम का सदस्य
मुझे सबसे अधिक परेशानी उन बच्चों की गणना करने में आई जो बच्चे होटलों और ढाबों में काम कर रहे थे ऐसी ही एक घटना के बारे में सोचकर मैं सिहर जाता हूं। गणना के दौरान जब मैं एक ढाबे में काम करने वाले बच्चे से बात कर रहा था तो उस दौरान उसका मालिक मेरे पास आया और मुझे डांटकर पूंछा ये क्या कर रहे हो और उसने मेरे सर्वे का कागज भी फाड़कर फेंक दिया। तब बिना घबराए मैंने उसे बताया कि मैं इस बच्चे को केवल चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर के बारे में बता रहा था।



15 वर्षीय ज्योति गणना टीम की सदस्य
मुझे उस वक्त बहुत दुख हुआ जब मैंने छोटे छोटे बच्चों को 5-10 रूपए के लिए रिक्शे को धक्का लगाते देखा।



19 वर्षीय शन्नो गणना टीम की सदस्य
गणना के दौरान मैं यह देखकर हैरान हो गई कि काले खां पुल के नीचे बड़े पैमाने पर 30 से 40 नए बच्चों के चेहरे रोज बदलते रहते हैं। संभवतः इन बच्चों को काम कराने के लिए लाया जा रहा है।

चुनौती

कैसे पहचानें कि सड़क व कामकाजी बच्चे कहां हैं?

बड़े क्षेत्र की एक साथ गणना कैसे करें?

गणना के क्षेत्र की सीमा कैसे तय करें?

बच्चों की गणना की पुनरावृत्ति से कैसे बचें?
बाल श्रमिकों के मालिकों द्वारा बच्चों से बात करने से मना करने पर क्या करें ?

बच्चों की वास्तविक अथवा बदलती स्थिति का पता कैसे लगाएं?

हल

इसके लिए सड़क व कामकाजी बच्चों से एक सामाजिक नक्शा बनवाएं और उनकी राय लें।
गणना के लिए उस क्षेत्र को छोटे-छोटे भागों में बांटा जाए।
चूंकि ये बच्चे पटरियों, रोड, फुटपाथ, नाले इत्यादि स्थानों के आस-पास रहते हैं इसलिए इन स्थानों से ही इनकी सीमा को चिन्हित किया जाए।
बच्चों के हाथ में फ्रेंडशिप धागा या धर्मिक धागा बांधे।
मालिकों को समझाएं कि हम बच्चों को 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर की जानकारी दे रहे हैं।
विभिन्न समयों पर प्रातः, मध्याह्न व रात्रि में ऑब्जरवेशन विजिट करें।

गणना के दौरान उभर कर आए नए पहलू

पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष बाल मजदूरों की संख्या बढ़ी है। इस वर्ष 258 नए बच्चे बाल मजदूरी से जुड़े हैं।
सबसे ज्यादा बाल मजदूर बिहार (306 बच्चे) और उत्तर प्रदेश (176 बच्चे) के हैं।
स्वच्छता अभियान के चलते भी कबाड़ा बीनने वाले बच्चों की संख्या बढ़ रही है।
सराय काले खां बाल तस्करी का एक केंद्र हो सकता है।
बच्चों को नशे में धड़ल्ले से झोंका जा रहा है।



16 वर्षीय चंदन गणना टीम का सदस्य
मुझे उस शाम परिवारवालों ने घेर लिया जो फ्लाईओवर के नीचे रहते हैं। जब मैंने उन बच्चों से बात की तो वे पूछने लगे कि यहां क्यों आए हो? मैंने उन्हें बताया कि मैं इन बच्चों की गणना करने आया हूं। इतना सुनते ही वो बोल पड़े कि तुम लोग सरकार की ओर से पैसा कमा रहे हो, हम तो सड़क पर ही पड़े रहेंगे तो फिर हमारी गणना करके क्या करोगे। यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ।



18 वर्षीय चांदनी गणना टीम की सदस्य
मैं यह देखकर दंग रह गई जब एक बच्चे से नाम पूछने पर वह बच्चा एकदम शांत हो गया। फिर वह अपने मालिक की ओर देखकर बोला कि मेरा नाम मेरे मालिक से पूंछो। बच्चा उस वक्त तो शांत रहा, लेकिन अपने मालिक के जाने के बाद उसने अपने बारे में सब कुछ बता दिया।

बाल विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार ने बढ़ते कदम के सदस्यों को दिया 2000 रूपए का पुरस्कार



चांदनी

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथियों को 14 नवंबर को लखनऊमें बाल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। यह कार्यक्रम महिला एवं बाल विकास द्वारा लखनऊके इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान सेंटर में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में 30 जिलों के 600 बच्चों ने भाग लिया था। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा सभी बच्चों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, गेम्स, पेंटिंग, सिंगिंग इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।

इस कार्यक्रम में बढ़ते कदम संगठन के मथुरा के 6 बाल साथियों ने डांस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान जब गोपाल, नवी, पूजा, मुकेश, मोनू, दीपक ने 'कहते हैं हमको प्यार से इंडिया वाले' गाने पर डांस किया तो सारा स्टेडियम तालियों और सीटियों की गूंज से भर गया। बच्चों के साथ साथ बड़े भी अपनी जगह पर झूमने को मजबूर हो गए। इन सभी बाल साथियों को भी बहुत खुशी हुई कि उन्हें इतने बड़े मंच पर और इतने लोगों के बीच अपना डांस दिखाने का मौका मिला। इन्होंने कहा कि हमें अवसर मिले तो हम भी बहुत आगे तक जा सकते हैं। कार्यक्रम के अंत में हमारे बाल साथियों ने मुख्य अतिथि महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती सैयदा शादाब फातिमा, प्रिंसिपल सेक्रेटरी श्रीमती रेनुका कुमार, श्रीमती नाहिद लारी खान से मुलाकात कर डोरी से बने गिफ्ट भेंट किए। श्रीमती सैयदा शादाब सभी बच्चों से मिलकर बहुत खुश हुई और उन्होंने उनके डांस को सराहा। इसके साथ ही उन्होंने बढ़ते कदम के इन सदस्यों को 2000 रूपए पुरस्कार स्वरूप दिए।

मजीद ने बचाई ट्रेन से कटते हुए एक युवक की जान

मजीद

झांसी रेलवे स्टेशन पर रहने वाला एक 20 वर्षीय युवक मनमोहन गाड़ियों में पानी की बोतलें बेचता था। जुएं और सट्टे की बुरी लत के कारण इस पर बहुत कर्जा हो गया था। जिसके कारण मनमोहन ने आत्महत्या करने की सोची। एक दिन वह बहुत शराब पीकर ट्रेन से कटकर अपनी जान देने जा रहा था। शराब में धुत मनमोहन गाली गलौच करता हुआ अपनी जान देने की घोषणा करता हुआ रात को तकरीबन साढ़े आठ बजे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो पर नई दिल्ली-जबलपुर श्रीधाम एक्सप्रेस के नीचे जाकर पटरी पर लेट गया। उस वक्त स्टेशन पर बहुत सारे लोग मौजूद थे, लेकिन किसी ने भी मनमोहन को बचाने की नहीं सोची।

उसी समय मजीद स्टेशन पर खाली बोतलें बीनने का काम कर रहा था। उसने जब पटरी पर एक आदमी को लेटा हुआ और सामने से श्रीधाम एक्सप्रेस को आता हुआ देखा तो बिना किसी की



मदद के अपनी बोतलों की बोरी छोड़कर मनमोहन को पटरी से खींच लिया। मजीद ने जैसे ही मनमोहन को खींचा तो उसका पैर पटरी में फंस गया और तब तक ट्रेन आ गई और मनमोहन का पैर ट्रेन के पहिए के नीचे आकर कट गया। यह देख मजीद घबराया नहीं, बल्कि वह तुरंत जीआरपी थाने गया और वहां से एमर्जेंसी वालों को बुलाकर लाया। मनमोहन का इलाज कराने के लिए उसने स्टेशन से पैसे इकट्ठा किए और उसे मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया।

मजीद पिछले छह वर्षों से झांसी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा व पानी की बोतलें बीनकर अपना जीवनयापन कर रहा है। मजीद ग्वालियर का रहने वाला है। गंभीर बीमारी के चलते इसके माता पिता का देहांत हो गया था, जिसके कारण मजीद सड़कों पर रहने के लिए मजबूर हो गया। मजीद ने कक्षा छह तक पढ़ाई भी की है और थोड़ी थोड़ी अंग्रेजी भी पढ़ लेता है। मजीद बढ़ते कदम संगठन का जिला सचिव भी है। यह एक होनहार बालक है।

जुए के दलदल में फंसता बचपन



बालकनामा ब्यूरो

झांसी शहर के डडियापुर इलाके की आदिवासी बस्ती में जुए का मकड़जाल इस कदर फैलता जा रहा है कि छोटे छोटे बच्चे इसमें फंसते चले जा रहे हैं। इस बस्ती की जिस गली में देखो उसी में जुएं के फड़ ऐसे लगे होते हैं, जैसे बाजार में सब्जी आदि की दुकानें सजी होती हैं। वहां के बूढ़े, बड़ों के अलावा अब बच्चे भी अपने बड़ों को पीटे छोड़ते हुए फिल्मी सितारों की फोटो खरीदकर पैसे दांव पर लगाते हैं। पहले तो फोटो से जुआं खेलना सीखते हैं और धीरे धीरे ताश की गड्डी से जुआं खेलना सीख जाते हैं। इस बस्ती में सुबह से लेकर रात तक बच्चे, बूढ़े सब जुआं खेलते नजर आते हैं। अंधेरा होने पर मोमबत्ती की रोशनी में ये नौनिहाल जुआं खेलने के साथ साथ अपने भविष्य को भी दांव पर लगा रहे हैं।

बस्ती में बढ़ रही इस समस्या को दूर करने के लिए जब वहां के स्थानीय लोगों से बात की गई तो एक 50 वर्ष की बुजुर्ग महिला ने बताया कि इस जुएं के कारण हमारी बस्ती का माहौल अत्यंत बिगड़ता चला जा रहा है। रात दिन जुएं के फड़ चलने के कारण जो बच्चे पढ़ने वाले हैं, उनका मन भी पढ़ाई में नहीं लग पाता। उन्होंने बताया कि इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए कई बार हमने पुलिस थाने जाकर शिकायत भी की और पुलिस भी आई, लेकिन जुआरियों से पैसे लेकर उन्हें छोड़ देती है और हालात जस के तस हो जाते हैं। यही नहीं जो लोग इन जुआरियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराकर आते हैं, पुलिस के जाने के बाद ये जुआरी शराब पीकर उनके साथ लड़ाई झगड़ा भी करते हैं। पुलिस तो इन जुआरियों को उन लोगों का नाम तक बता देती है, जो रिपोर्ट दर्ज कराने जाते हैं। इसी कारण अब कोई शरीफ व्यक्ति पुलिस से शिकायत करने भी नहीं जाता है।

बच्चे करेंगे कैलाश सत्यार्थी जी के साथ चाय पर चर्चा

चांदनी

बालकनामा अखबार की पत्रकार चांदनी, शंभू और सलाहकार शन्नो ने नोबल पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी जी से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान चांदनी ने श्री कैलाश सत्यार्थी जी से कहा कि सर हम आपसे मिलने के लिए बहुत दिनों से प्रयास कर रहे थे और आज हम सब बहुत खुश हैं कि हमे आपसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। चांदनी ने उन्हें बताया कि वे बढ़ते कदम (सड़क व कामकाजी बच्चों का संगठन) से जुड़ी हैं और संगठन के बच्चे मिलकर सड़क व कामकाजी बच्चों का अपना अखबार 'बालकनामा' निकालते हैं। श्री कैलाश सत्यार्थी जी सड़क व कामकाजी बच्चों के अखबार बालकनामा के बारे में जानकर बहुत खुश हुए और कहा कि हमें तो पता ही नहीं था कि आप सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपना अखबार भी निकालते हैं।



उन्होंने कहा कि मैं इस अखबार के सभी पत्रकारों से मिलना चाहूंगा और समय निकालकर किसी दिन आप पत्रकारों के साथ बैठकर चाय भी पिएंगे और आप सब से बातचीत भी करेंगे, कि कैसे इस अखबार के माध्यम से आप बच्चों की मदद करते हैं और कैसे लोग इस अखबार से जुड़ते हैं।

नवीन जिंदल ने सराहा बालकनामा अखबार को

बालकनामा ब्यूरो

श्री नवीन जिंदल, अध्यक्ष जिंदल स्टील एंड पावर और पोलो खिलाड़ी बालकनामा अखबार से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने बालकनामा अखबार की टीम और चेतना संस्था के निदेशक को मिलने को बुलाया। उन्होंने बालकनामा अखबार की टीम को यह आश्वासन दिया है कि वो सड़क व कामकाजी बच्चों के जीवन में सुधार लाने व उन्हें आगे बढ़ने में पूरा सहयोग करेंगे।



क्या किशोरों की उम्र घटाने से कम हो जाएंगे अपराध?

शन्नो ने किशोरों की उम्र घटाने पर दिल्ली सरकार के समक्ष रखी बच्चों की राय

चांदनी

जहां एक ओर दिल्ली जैसे शहर में बच्चे बड़ी संख्या में अपराधों की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सरकार किशोरों की उम्र कम करने की वकालत में लगी है। जिसको लेकर सड़क व कामकाजी बच्चों के अलग अलग दृष्टिकोण हैं और सरकार के इस गैर विचाराधीन प्रस्ताव को लेकर सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम के सदस्य भी परेशान हैं।

ज्ञातव्य हो कि दिल्ली सरकार द्वारा किशोरों की उम्र कम करने को लेकर वयस्कों की जो बैठक बुलाई गई उसमें बढ़ते कदम संगठन की सलाहकार और बालकनामा अखबार की पत्रकार 21 वर्षीय शन्नो ने भी भाग लिया। शन्नो ने बताया कि दिल्ली सरकार की इस बैठक में सम्मिलित होने से पूर्व हमने 40 से अधिक बच्चों व युवाओं का इंटरव्यू किया और बच्चों के साथ सामूहिक बैठक कर किशोरों की उम्र कम करने के संभावित तरीकों और विचारों पर चर्चा की।

हमने बच्चों द्वारा दिए गए सुझावों को सरकार के सम्मुख रखा।

स्टेशन पर कबाड़ा बीनने वाले 14 वर्षीय अफसर (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''क्या उम्र कम करने से सारी समस्याएं हल हो सकती हैं? क्या सरकार इस बात की गारंटी ले सकती है कि किशोरों की उम्र कम करने से अपराध नहीं होंगे?''

शादी पार्टियों में काम करने वाले 16 वर्षीय गोवर्धन (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''हां हमें पता है कि बच्चे अपराध करते हैं, लेकिन क्या सरकार द्वारा इसके कारणों का पता करने का पर्याप्त प्रयास किया गया। इसलिए पहले तो सरकार उन कारणों को बताए और फिर उम्र घटाने की बात करे।''

बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव 16 वर्षीय ज्योति ने कहा कि, ''यह एक सामाजिक समस्या है और इसका समाधान भी सामाजिक तरीके से करने की आवश्यकता है। उम्र घटाना इसका समाधान नहीं हो सकता, जबकि बच्चों को अपराधों में ढकेलने के पीटे बड़ों का ही हाथ होता है।''



सड़क व कामकाजी बच्चे के अखबार बालकनामा की पत्रकार 18 वर्ष की चांदनी ने कहा कि, ''ऐसे किसी भी बच्चे का मामला, जो अपराध में लिप्त है, उसकी विशेष रूप से जांच की जरूरत है, क्योंकि उसके कारण भिन्न हो सकते हैं। आंख बंदकर निर्णय लेना अच्छा विचार नहीं होगा।''

लाजपत नगर मार्केट में खिलौने बेचने वाली 16 वर्ष की अफसाना (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''बच्चों को अपराध से दूर रखने में पुलिस महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके लिए उन्हें बच्चों के साथ जल्दी जल्दी बैठक करनी होगी।''

दिल्ली के उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी ने यह आश्वासन दिया कि दिल्ली सरकार सड़क व कामकाजी बच्चों द्वारा दिए गए सुझावों पर भी विचार करेगी।

बहु प्रतिष्ठित TEDX एवं जोश टॉक ने बुलाया बालकनामा के सदस्यों को

ज्योति ने रखी प्रधानमंत्री से मिलने की चाहत

चांदनी / ज्योति





जैसा कि आप सभी जानते हैं कि TEDX एवं जोश टॉक बहुप्रतिष्ठित कार्यक्रम हैं और इन कार्यक्रमों में जानी मानी हस्तियां भाग लेने आती हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा लोगों को अपने और अपने टैलेंट के बारे में इतने बड़े मंच पर बोलने का अवसर मिलता है। इन लोगों की तरह बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति और बालकनामा अखबार की पत्रकार चांदनी को भी अपनी बात रखने का मौका मिला।

ज्योति को एयर फोर्स के पास ऑडिटोरियम में आयोजित जोश टॉक के कार्यक्रम भाग लेने का मौका मिला। ज्योति ने बताया कि यह बहुत बड़ा कार्यक्रम था। दूर दूर से लोग इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आए थे। इस कार्यक्रम में मैंने लोगों को बताया कि मैं सराय काले खां में अपने परिवार के साथ रैन बसेरे में रहती हूं। पहले मैं कबाड़ा बीनने व भीख मांगने का काम करती थी। सड़क पर रहते हुए मैंने नशा करना भी सीख लिया था। इसके बाद मेरा संपर्क बढ़ते कदम संगठन से हुआ और मैं संगठन से जुड़ी। इससे जुड़ने के बाद मुझे आगे बढ़ने की एक उम्मीद नजर आने लगी। धीरे धीरे मैं अपने जैसे दूसरे बच्चों की मदद करने लगी।

इसी निष्ठा और आगे बढ़ने की चाह ने मुझे पहले लीडर, फिर जिला अध्यक्ष और अब राष्ट्रीय सचिव के पद पर पहुंचा दिया। अब मैं संगठन से जुड़े 10000 बच्चों का नेतृत्व कर रही हूं। मैं चाहती हूं कि जो बच्चे सड़कों पर रहकर अपना जीवनयापन कर रहे हैं, मैं उनकी बात सरकार और समाज तक पहुंचा सकें। इसलिए मैं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से मिलकर बात करना चाहती हूं। मैं उन्हें बताना चाहती हूं कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को किन किन परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार चांदनी ने बैंगलोर में आयोजित TEDX कार्यक्रम में अपनी बात रखी, जहां फैशन डिजाइनर, फिल्म जगत इत्यादि से संबंधित 13 सदस्यों को चुना गया था कि वे अपनी जिंदगी से जुड़े अनुभव सब के साथ बांटें। चांदनी ने बताया कि मेरे लिए खुशी की बात तो यह थी कि इतने बड़े मंच पर और इतने बड़े और अनुभवी लोगों के साथ मुझे भी अपनी बात कहने का अवसर मिला। मैंने अपनी जिंदगी और अपने अखबार बालकनामा के बारे में सबको बताया कि यह सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा लिखा व प्रकाशित किया जाने वाला विश्व का पहला अखबार है। मैं इस अखबार की पत्रकार हूं। मैंने अपनी जिंदगी से जुड़े कुछ पहलुओं के बारे में सभी को बताया।

इस प्रकार न सिर्फ मुझे, बल्कि बालकनामा अखबार को बैंगलोर में एक नई पहचान मिली और साथ ही TEDX की तरफ से बालकनामा को सहयोग करने का ऐलान भी किया गया। मैं उस समय हैरान हो गई जब बैंगलोर की मीडिया ने मेरा इंटरव्यू और लोगों ने मेरा ऑटोग्राफ लिया तथा मेरे साथ सेल्फी भी खिंचवाई।

प्रयास से मिली सफलता

पांच बच्चे पहुंचे स्कूल



शम्भू

यह कहानी रंजीत, तुफैक, समीर, अरबाज और सुहैल इन पांच बच्चों की है। यह बच्चे बढ़ते कदम संगठन के सदस्य हैं। पहले यह गांव में पढ़ाई करते थे। इन बच्चों के घर की स्थिति ठीक न होने के कारण यह अपनी पढ़ाई छोड़कर दिल्ली आ गए। 13 वर्षीय रंजीत इसके पापा मोची का काम करते हैं, 14 वर्षीय तुफैक के पापा कपड़ों का काम करते हैं, 13 वर्षीय अरबाज के पापा स्टेशन पर रेड़ी लगाते है, 12 वर्षीय समीर के पापा होटल में काम करते हैं। इन पांचो के माता पिता अलग अलग तरीके का काम करते हैं। इनके साथ साथ ये बच्चे भी काम करते है। यह बच्चे पढ़ना चाहते थे, लेकिन पढ़ नहीं पा रहे थे।

जब ये बढ़ते कदम संगठन से जुड़े तो जीआरपी थाने में पढ़ने आने लगे। ये पढ़ने में बहुत तेज हैं। जब हम सरकारी स्कूल में इन पांचों बच्चों का दाखिला कराने के लिए वहां की उप प्रधानाध्यापिका जी से मिले और उनसे बातचीत की तो उन्होंने बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र मांगा। हमने उनसे कहा कि हमारे पास इन बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र नहीं है। यह बच्चे गांव में पढ़ते थे, घर की समस्या के कारण यह दिल्ली आ गए। यह बच्चे पढ़ना चाहते हैं, लेकिन प्रिंसिपल ने कहा कि अगर आप इनकी जन्म पत्री नहीं देंगे तो इन बच्चों का दाखिला नहीं होगा। क्योंकि आप इन बच्चों की जितनी उम्र बता रहे हैं, देखने में इनकी उतनी उम्र नहीं लग रही है। इन बच्चों की उम्र बहुत ज्यादा लग रही है। इसलिए इन बच्चों के जन्म का कोई सबूत लाना होगा तभी हम दाखिला करेंगे।

यह स्थिति देखकर बच्चों को बहुत दुख हुआ कि मेरा दाखिला अब स्कूल में नहीं होगा और रंजीत रोने लगा। शम्भू ने बच्चों को आश्वासन दिया कि हम तुम्हारा स्कूल में दाखिला किसी भी हाल में करवा कर रहेंगे आप चिंता मत करो। फिर शम्भू ने चेतना संस्था के कार्यकर्ता ममता दीदी से बात कि और उन्हें बताया कि यह बच्चे पढ़ने के लिए बहुत उत्सुक हैं, लेकिन इन बच्चों का दाखिला नहीं हो पा रहा है। क्योंकि इनके पास किसी भी तरह का कोई दस्तावेज नहीं है और मैं चाहता हूं कि इन पांचो बच्चों का दाखिला दिलाने में आप हमारी मदद करें, तो ममता दीदी ने इन पांचों की केस स्टडी बनाई, जिसमें सभी जरूरी जानकारी मौजूद थी। उसके बाद यह स्कूल में जमा करने के बाद इन बच्चों का दाखिला हो गया। अब यह बच्चे बहुत खुश हैं और रोज स्कूल जाते है। शम्भू के एक छोटे से प्रयास से यह पांचो बच्चे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

क्या इमलाक कभी जा पाएगा स्कूल?

शम्भू



11 वर्षीय इमलाक बढ़ते कदम का सदस्य है। इमलाक को कम सुनाई देता है और उसे बोलने में भी थोड़ी परेशानी होती है। इमलाक को चीजें थोड़ा देर में समझ आती हैं, लेकिन बुद्धि का वह बहुत तेज है। इमलाक पहले तो कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर जाकर पढ़ाई करता था, लेकिन बाद में उसकी पढ़ाई छूट गई। इमलाक की पढ़ाई बीच में टूटने के कारण उसके माता-पिता परेशान हो गए।

जब उसके माता-पिता को इमलाक की पढ़ाई जारी रखने का कोई और रास्ता नजर नहीं आया तो उन्होंने सोचा कि इमलाक का दाखिला सरकारी स्कूल में करा देते हैं। वह अपने बेटे को लेकर स्कूल गए और प्रधानाचार्या को सारी बातें बताई तो उन्होंने कहा कि हम आपके बेटे का दाखिला नहीं ले सकते, क्योंकि इमलाक ना तो सही से बोल पाता है और न ही सुन पाता है।

प्रधानाचार्या की ये बातें सुन इमलाक की मम्मी को बहुत दुख हुआ। उन्होंने प्रधानाचार्या से कहा कि मेरा बेटा दूसरे बच्चों से थोड़ा अलग है, उसे बोलने व सुनने में थोड़ी परेशानी होती है, लेकिन वह पढ़ाई में तेज़ है।

उन्होंने यह भी कहा कि मैडम अगर आप मेरे बेटे से प्यार और आराम से बोलेंगी तो यह समझकर लिख व पढ़ सकता है। लेकिन अध्यापक ने इमलाक की मम्मी की एक भी बात नहीं सुनी और कहा कि अगर हम एक बच्चे के लिए इतना समय लगाएंगे, तो हम दूसरे बच्चों को कैसे पढ़ा पाएंगे। इमलाक को जब इस बात का पता चला तो वह बहुत उदास हो गया।

इमलाक का दाखिला स्कूल में नहीं हो पाया और इस तरह वह अपनी पढ़ाई से दूर हो गया। इमलाक जैसे न जाने कितने बच्चे हैं, जो विकलांगता का शिकार होने के कारण समाज द्वारा उपेक्षित किए जाते हैं। हम चाहते हैं कि आप लोग ऐसे हजारों इमलाक जैसे बच्चों की मदद करने के लिए आगे आएं और उनका हौसला बढ़ाएं।

बालकनामा के बातूनी पत्रकारों ने किया दौरा: दिल्ली में कितना सफल हुआ स्वच्छ भारत अभियान

बालकनामा ब्यूरो



खुले में शौच को मजबूर हैं सड़क की बेटियां

दिल्ली में यह स्वच्छ भारत अभियान कितना सफल हुआ और किस किस को शौचालयों की सुविधा मुहैया कराई गई इस हकीकत का मुआयना किया बालकनामा के पत्रकार ने। पत्रकार ने शौचालयों की सुविधा पर जब दिल्ली में झुग्गी झोपड़ियों, सड़क, फुटपाथ, फ्लाई ओवर और रेलवे स्टेशनों के आस पास रहने वाले बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि हम बच्चे ऐसे स्थानों पर रहते हैं, जहां पर दूर दूर तक शौचालय का नामों निशान तक नहीं है। और अगर गलती से आपको यह कहीं दिख भी गया तो वह इतने गंदे हैं कि वहां पर जाना नामुमकिन हैं। इस कारण हम बच्चे शौच के लिए बाहर जाने को मजबूर हैं।

आपको जानकर हैरानी होगी कि भारत में 640 मिलियन लोग खुले में शौच करने को मजबूर हैं। जिसके कारण प्रति वर्ष 7,00,000 बच्चे डायरिया जैसे गंभीर रोगों का शिकार होकर मौत के मुंह में जा रहे हैं। सर्वे के मुताबिक भारत में 100 मिलियन शौचालय बनाने की आवश्यकता है।

पत्रकार ने झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाली लड़कियों से बात की तो उन्होंने बताया कि उनके यहां शौचालय न होने के कारण उन्हें बाहर जाने में बहुत डर लगता है। पूजा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब सुबह लड़कियां एवं लडके शौच फ्लाई ओवर के नीचे या दूर कहीं स्थानों पर जाते हैं तो कुछ लोग मोबाईल से उनका वीडियो भी बना लेते हैं। उन्होंने बताया कि यह कोई कहानी नहीं है, हकीकत है। पूजा ने बताया कि एक दिन मैं और मेरी मम्मी शौच कर रही थी, तब एक लड़का वहां पर मोबाईल लेकर खड़ा था। जब मैंने मम्मी को बोला तो मम्मी ने कहा कि पत्थर उठाकर फेंक दें को जिससे वह भाग जाए। हम सभी लड़कियां बहुत डर डरकर बाहर शौच के लिए जाते हैं।

लड़कियों ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान के चलते हम सब सड़क व कामकाजी बच्चों को भी शौचालयों की सुविधा प्रदान की जाए, जिससे हम महफूज रह सकें और हमारा कोई भी किसी तरह से शोषण न कर सके। ये सारे बच्चे चाहते है कि जिस तरह सरकार ने रैन बसेरे में बाथरूम दिया है उसी तरह हमारे यहां भी बाथरूम की व्यवस्था करे। तभी इस समस्या का हल हो सकेगा अगर सरकार ने हम बच्चों के लिए कुछ नहीं किया तो इसका हम बच्चों के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

बढ़ते कदम बना 'इबने बतूता पहन के जूता' मुहिम का एंबेसडर

बालकनामा ब्यूरो

एक्शन एड और सामाजिक संस्था चेतना द्वारा 'इबने बतूता पहन के जूता' अभियान की शुरूआत की गई है। इस अभियान के तहत आम आदमियों को सड़क व कामकाजी बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाया जा रहा है। बढ़ते कदम संगठन इस अभियान का एंबेसडर है। संगठन के सदस्य सड़क पर रहने वाले बच्चों की आवाज जन जन तक पहुंचाने के लिए लाजपत नगर मार्केट और आईआईटी दिल्ली जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं और 'इबने बतूता पहन के जूता निकल पड़ा तूफान में, थोड़ी हवा नाक में घुस गई थोड़ी घुस गई कान में' गाने पर डांस करके लोगों को बच्चों के मुद्दों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। 14 वर्षीय दीपक ने बताया कि मुझे बहुत खुशी हुई कि हमें दिल्ली के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में अपनी कला का जौहर दिखाने का मौका मिला। इसके साथ ही हमने लोगों के सामने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं जैसे ये बच्चे कैसे अपना जीवनयापन करते हैं, इसके बारे में बताया। उन्हें बताया कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों जीवन से जुड़े इन अनछुए पहलुओं पर ही यह डॉक्यूमेंट्री फिल्म बन रही है। 15 वर्षीय सुलताना ने इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म से जुड़े अपने अनुभव बांटते हुए कहा मुझे बहुत खुशी है कि हम जैसे बच्चों को भी फिल्म में आने का मौका मिला और अब हमारे बारे में पूरी दुनिया के लोग जानेंगे। इसलिए हम बच्चे बहुत खुश हैं। उसके बाद 16 वर्षीय अफजल ने बताया कि आज डांस करने में मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने पहली बार सभी बच्चों के साथ लाजपत नगर मार्केट में डांस किया और हमारे डांस की शूटिंग भी की गई। मेरे लिए यह बहुत खुशी की बात है कि हम सब की यह फिल्म लोग इंटरनेट व टी.वी. पर देख सकेंगे।



ज्योति के प्रयास से पूरम पहुंचा अपने घर

शम्भू

बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति की मुलाकात काले खां के बैहलोर पुर में ढाबे पर काम करने वाले एक बाल साथी से हुई। ज्योति ने उससे बात करने की कोशिश की तो पता चला कि वह बच्चा अपनी मर्जी से ढाबे में काम नहीं कर रहा है। वह ये काम करने के लिए मजबूर है। ज्योति के बहुत पूछने पर उसने डरते डरते बताया कि वह बिहार का रहने वाला है। उसका नाम पूरम गिरी है और वह 16 साल का है। उसके पिता का नाम मनोज गिरी व माता का नाम गायत्री देवी है।

पूरम ने बताया कि उसके यहां आने का कारण उसकी गरीबी थी। वह अपने गांव में पढ़ाई करता था, पर उसकी बहन की शादी होने के बाद वह अपने गांव वालों के साथ दिल्ली आ गया। पूरम जिन लोगों के साथ दिल्ली आया था, वह उसे आनंद विहार रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म न. 2 पर ही छोड़ कर चले गए। पूरम रेलवे स्टेशन पर अपने आप को अकेला देख रो रहा था। तब एक व्यक्ति जो टायर खरीदार था, वहां आया और पूरम से मिला और उसे काले खां बैहलोरपुर में ले जाकर एक ढाबे में काम पर लगा दिया।

पूरम ने बताया कि ढाबे वाला उसको बहुत मारता है और उस पर अत्याचार करता है। पूरम के साथ हो रहे इस तरह के शोषण को जानने के बाद ज्योति ने कार्यकर्ता सुरेंदर जी को फोन किया और इस बारे में जानकारी दी। इसके बाद संस्था के कार्यकर्ता मिनहाज, ज्योति और बालकनामा का रिपोर्टर शम्भू पूरम के मालिक से मिले और उन्हें बताया कि 18 साल से कम उम्र के बच्चों से काम करवाना कानूनी अपराध है। यह जानने के बाद उसके मालिक ने पूरम से माफी मांगी और कहा कि मैं पूरम के जितने पैसे हैं वह भी उसे देने के लिए तैयार हूं। आप मुझे माफ कर दीजिए। मैं आगे से ऐसा नहीं करूंगा।

बढ़ते कदम की इस पहल से पूरम को उसके पैसे मिल गए। फिर सभी ने उसे घर वापस जाने के लिए कहा तो वह तैयार हो गया।

इस तरह पूरम को काले खां से आंनद विहार रेलवे स्टेशन छोड़ने गए। वह बिहार जाने वाली ट्रेन में बैठकर अपने घर वापस चला गया। उसने हमें फोन करके बताया कि वह सकुशल अपने घर पहुंच गया है और उसने धन्यवाद देते हुए यह भी कहा कि वह अपने घर पहुंकर बहुत खुश है।

'क्योंकि मैं एक लड़की हूं' अभियान ने दी एक दिशा

ज्योति

20 अक्टूबर को इंडिया हैबिटेट सेंटर में एक मीटिंग का आयोजन किया गया। यह मीटिंग प्लान इंडिया द्वारा सन् 2009 में चलाए गए 'क्योंकि मैं एक लड़की हूं' अभियान पर आधारित थी। इस कार्यक्रम में अलग अलग संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और अधिकारियों ने भाग लिया। बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने भी सड़क पर रहने वाली लड़कियों की समस्याओं को इस मीटिंग में रखने के लिए उपस्थित थी। 'क्योंकि मैं एक लड़की हूं' एक बहुत ही अनूठा अभियान है। इस अभियान ने सड़कों पर रहने वाली लड़कियों को एक नई दिशा दे रहा है। ज्योति ने बताया कि मैं भी सड़क पर रहने वाली एक लड़की हूं और मुझे भी बहुत सारी मानसिक परेशानियों से गुजरना पड़ता है। लड़कियों को इन परेशानियों से निकालने के लिए हमें उनके साथ बात करनी चाहिए और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि इस अभियान के तहत स्कूलों व बस्तियों में जा जाकर लड़कियों के साथ बातचीत की जाती है। और यह जानने का प्रयास किया जाता है कि वे किसी भी समस्या का तो शिकार नहीं या किसी नाकारात्मक सोच की वजह से वह अपना जीवन बर्बाद तो नहीं कर रही। इस तरह हमें पता चलेगा कि लड़कियों को किन किन मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा उन पर किस तरह के जुल्म और अत्याचार किए जाते हैं। ज्योति ने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत जो लड़कियां अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पा रही हैं, उन्हें पढ़ने का अवसर दिया जाएगा और कम से कम उन्हें 12वीं कक्षा तक पढ़ाया जाएगा और इसके साथ ही उन्हें प्री व्यवसायों की शिक्षा दी जाएगी। ज्योति ने कहा कि हम बच्चों को यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि हम बच्चों का अच्छा जीवन बानाने के लिए कुछ कदम उठाए जा रहें हैं। हम आशा करते हैं कि क्योंकि मैं एक लड़की हूं अभियान के द्वारा हम पर होने वाले अत्याचार कम हो सकें और हम लड़कियों को समाज में सम्मान मिले तथा हम आगे पढ़ पाएं और बाल विवाह जैसी घटनाएं न घटित हों।



बालकनामा अखबार ने बदली पांच बच्चों की जिंदगी

बालकनामा ब्यूरो

आगरा के गरीब नगर में पांच भाई बहन रहते हैं। लगभग डेढ़ साल पहले इनके पिताजी का स्वर्गवास हो चुका था। ये बच्चे अपनी मां के साथ नानी के घर पर आ गए। इनके नानाजी कपड़े बेचने का काम करते थे, पर उनकी भी तबियत खराब हो गई और इस तरह इनके घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती चली गई। इस बीच इनकी मां का भी स्वर्गवास हो चुका था।

ये बच्चे अनाथ हो गए इनके बूढ़े नाना नानी के सिवा इनका कोई नहीं रहा रहा जो इनकी देखभाल कर सकता। ये सब बच्चे स्कूल जाने के बजाय काम करने लगे इनके घर की हालत ऐसी हो गई थी कि खाने के लिए भोजन भी नहीं मिल पाता था।

इस वजह से छोटी छोटी बच्चियों ने गैस के पाइप की पैकिंग का काम करना शुरू कर दिया। इन भाई बहनों की इस तरह जिंदगी कैसी कटेगी, इनकी देखभाल कौन करेगा। इन मासूम बच्चों के सिर से माता पिता का साया उठ चुका था।

इनकी ये पूरी कहानी बढ़ते कदम संगठन बालकनामा अखबार में प्रकाशित हुई थी। अखबार के माध्यम से लोगों से ये अपील की गई थी कि वे आगे आएं और इनकी मदद करें। लंबे समय के संघर्ष के बाद बढ़ते कदम संगठन के प्रयास से इन बच्चों की आर्थिक मदद करने के लिए कुछ लोग आगे आए, जिनके सहयोग से इन बच्चों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इस सहायता को बच्चों तक पहुंचाने के लिए बढ़ते कदम संगठन की तरफ से इनका भारतीय स्टेट बैंक में खाता खुलवाया गया।

इन बच्चों की कोई दस्तावेज ना होने के कारण खाता खोलने में बहुत परेशानी भी हुई, लेकिन संगठन के अथक प्रयास से इनका खाता खुल गया।



इनमें से ही एक बच्ची संजना ने बताया कि मैं सोचती थी कि हम बेसहारा बच्चों की जिंदगी कैसे कटेगी हमारी देखभाल कौन करेगा। ये सोच सोचकर डर लगता था कि हमारी परवरिश की जिम्मेदारी कौन उठाएगा।

पर अब हम सब बहुत खुश हैं कि बढ़ते कदम के सहयोग से हमें आर्थिक सहयोग दिया जा रहा है। भारतीय स्टेट बैंक के खाते में हर महीने पैसे आ जाते है। मैं अपने बैंक में खुद जाकर पर्ची भरकर पैसे निकालकर लाती हूं, जिससे हम भाई बहनों का पूरे महीने का राशन आता है। मेरे भाई बहन रोज स्कूल पढ़ने जाते हैं। हम सभी भाई बहन बढ़ते कदम संगठन और बालकनामा अखबार के बहुत आभारी हैं, जिनके कारण हमारी जिंदगी को जीने का एक आसरा मिला।

रोजी रोटी के दबाव में बच्चे अपना रहे हैं बाल मजदूरी के नए नए तरीके



पृष्ठ 1 का शेष

मिली.का पाउच 30 रू.तथा बोतल 1000 मिली.के पाउच की कीमत 50 रू.है। उस महिला के साथ एक 13 साल की नाबालिग लड़की भी थी, जो बोरी से पाउच निकाल निकाल कर ग्राहकों को दे रही थी। हमने जब उस लड़की से स्कूल जाने के बारे में पूछा तो उसकी मां बोली कि इसके पास पढ़ने का समय नहीं है। उन्होंने बताया कि यह हमारा खानदानी काम है और हम इसे नहीं बंद कर सकते। सरकार पहले अंग्रेजी और देशी शराब बंद करे फिर हम लोगों को सरकारी नौकरियां और घर दे, तभी हम कच्ची शराब का कारोबार बंद करेंगे।

इस एक्सक्लूसिव बातचीत के दौरान उसने हमें यह भी बताया कि जिस जगह पर बैठकर मैं यह कच्ची शराब बेच रही हूं, उस क्षेत्र के पुलिस कांस्टेबल से लेकर थाना प्रभारी तक को हम लोग हर हफ्ते हजारों रूपए देते हैं। तभी तो यह धंधा यहां पर बैठकर कर पाते हैं। इस तरह झांसी शहर में अपने माता पिता के साथ नाबालिग लड़कियां भी कच्ची शराब बेच रही हैं और सरकार व प्रशासन चैन की नींद सो रहे हैं।

बाल विवाह की शिकार लड़कियां लगा रही हैं मेंहदी और बेच रही हैं गहने

चांदनी

हम सभी जब दिल्ली की प्रसिद्ध मार्केट जैसे सरोजनी नगर, लाजपत नगर, सीपी इत्यादि स्थानों पर शॉपिंग करने जाते हैं तो वहां पर बहुत सारी छोटी छोटी लड़कियां मेंहदी लगाते और आर्टिफिशियल गहने बेचती नजर आती हैं। ये छोटी छोटी बच्चियां किस तरह अपने सिर पर चुन्नी डाले सामान बेचती हैं और एक पल के लिए भी अपने सिर से चुन्नी नहीं उतरने देती। इसके पीछे बहुत बड़ा कारण है।

ये बच्चियां एक ऐसा जीवन जीने पर मजबूर हैं, जहां इनका बचपन इनसे छीन लिया गया है। इतनी कम उम्र में ही इनके नाजुक हाथों में ऐसी डोर पकड़ाई गई है, जिस कारण वह अपना बचपन एक बचपन की तरह नहीं जी सकती। जब बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने इन बच्चियों से इस बारे में पूछा और यह जानने की कोशिश की कि ये बच्चियां अपने सिर से चुन्नी क्यों नहीं उतारती हैं, तो इन बच्चियों ने कुछ कुछ बातों का खुलासा करते हुए बताया कि इनके माता पिता ने इनका विवाह बचपन में ही करवा दिया है। जब चांदनी ने उनसे पूछा कि उनकी शादी किसके साथ करवाई



गई है तो उन्होंने बताया कि जिनके साथ उनकी शादी हुई है वो भी उनकी तरह एक बच्चा है।

उन्होंने यह भी बताया कि हमारे घरवाले हमें यह भी सिखाते है कि हमें अपने सिर से चुन्नी नहीं उतारनी है और न ही किसी लड़के के साथ दोस्ती करनी है। चुपचाप अपना काम करना है और लड़कों के साथ उठना, बैठना व खेलना कूदना नहीं है। इन बच्चियों को उनके घरवाले यह भी धमकी देते हैं कि यदि वे किसी छोटे लड़के के साथ खेलती हुई दिखाई दीं तो उनके ससुराल वाले उन्हें अपने घर में नहीं रखेंगे। इसलिए हम बच्चियां किसी के साथ नहीं खेलते है और न ही किसी बाहरी से दोस्ती करते हैं। बस हम उसे ही अपना जीवन साथी समझते हैं, जिसके साथ हमारे परिवारवालों ने हमारा विवाह किया है।

दुर्भाग्यवश ये बच्चियां बचपन में ही औरतों की तरह जीवन बिताने को मजबूर हैं। आज के इस आधुनिक दौर में इतनी कम उम्र में ही बाल विवाह इन बच्चों के जीवन के लिए एक अभिशाप की तरह है, जो इनसे इनका सब कुछ छीन रहा है। यदि समय रहते बाल विवाह ना रोका गया तो ऐसे न जाने कितने बच्चों का जीवन बर्बाद हो जाएगा और जब वही बच्चे एक दिन माता पिता बनेंगे तो फिर से वही कहानी दोहराई जाएगी। वह भी अपने बच्चों का बाल विवाह इस दबाव में करेंगे कि उनका विवाह भी तो इतनी कम उम्र में किया गया था तो हम भी अपने बच्चों का विवाह इसी उम्र में करेंगे। इस तरह की सोच हम तभी खत्म कर पाएंगे जब बाल विवाह पर रोक लगा पाएंगे। हमारी सरकार को इस बात पर गंभीरता से कार्य करना होगा। अगर सरकार बाल विवाह की इस बढ़ती हुई संख्या पर रोक नहीं लगा पाई तो बच्चों का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।





शादी पार्टियों में काम करके कर रहे हैं जीवनयापन

बालकनामा ब्यूरो

अकसर शादी पार्टियों में हमने और आप सब ने बच्चों को काम करते हुए देखा होगा। यह बहुत आम बात है कि शादी पार्टियों में बच्चे आपको बर्तन धोते, सजावट करते, फूल माला टांगते, कैटरिंग से लेकर वेटरिंग तक के सारे काम करते हुए नजर आ जाएंगे। इनके बिना तो मानो शार्दी पार्टियों की रौनक ही अधूरी जान पड़ती है, लेकिन ये बच्चे ये काम क्यों करते हैं, क्या इस ओर आपका ध्यान कभी गया है। इस बात को जानने के लिए जब बालकनामा अखबार के पत्रकारों ने दिल्ली से लेकर झांसी में होने वाली 20 से 30 छोट बड़े मैरिज गार्डेन, विवाह घर, होटलों इत्यादि का दौरा किया तो पाया कि ये छोटे छोटे 15 से 20 घंटे लगातार काम करते हैं। क्योंकि जिस दिन की पार्टी होती है, बच्चे उस दिन सुबह से लेकर दूसरे दिन सुबह तक बहुत काम करते हैं, ऐसा लगता है मानो इनके लिए अग्नि परीक्षा की घड़ी हो।

इस बारे में जब हमने सूजल (परिवर्तित नाम) से पूछा कि तुम इतना कठिन काम क्यों करते हो, तो उसने बताया कि हम लोग बहुत गरीब हैं। पिताजी शराब पीते हैं और माता बीमार रहती है। हम पांच भाई बहन हैं। हमारे घर का गुजारा बड़ी मुश्किल से होता है। हमारे साथ काम करने वाले सारे बच्चे बहुत गरीब परिवार से हैं। ये काम करने से एक तो हमें बचा हुआ खाना मिल जाता है और दूसरे चार पैसे भी कमा लेते हैं, जिससे घर का खर्च निकल आता है।

रिक्शे को धक्का लगाकर चलाते हैं अपनी रोजी रोटी

चांदनी

हमारे समाज में छोटे छोटे बच्चे ऐसे कितने ही कार्य करते हैं, जो इनके लिए बहुत खतरनांक साबित हो सकते हैं। यह बच्चे सिर्फ पैसा कमाने के चक्कर में ही काम नहीं करते, बल्कि यह बच्चे इसलिए भी काम कर रहे हैं क्योंकि इनके बारे में, इनके भविष्य के बारे में हमारी सरकार कुछ नहीं कर रही है, ताकि इन बच्चों को बाल मजदूरी के शिकंजे से आजाद किया जा सके। सरकार द्वारा इन बच्चों की जरूरतों पर ध्याान नहीं दिया जा रहा है और शायद यही वजह है कि यह बच्चे ऐसे कामों में लिप्त होते जा रहे हैं, जो किसी को नजर में नहीं आ रहे हैं।

हम आपको बाल मजदूरी की ऐसी सच्ची घटनाओं से रूबरू करा रहे हैं, जिसके बारे में शायद आपने भी कभी नहीं सोचा होगा। दक्षिणी दिल्ली की मायापुरी चौक पर पुल के ऊपर रिक्शे को धक्का लगाने का काम करते हैं। जब पत्रकार चांदनी ने इन बच्चों को इस तरह काम करते हुए देखा तो उन्होंने उनसे जाकर बातचीत की और यह पता लगाने की कोशिश की कि यह बच्चे पुल के ऊपर रिक्शे को धक्का लगाने का काम क्यों करते है? तो उन बच्चों ने बताया कि वह पैसे कमाने के लिए रिक्शे को धक्का लगाते हैं और रिक्शे पर लदे सामान को इस पार से उस पार और उस पार से इस पार लेकर आते हैं।

इन रिक्शों में भारी सामान होता है, जिसके कारण यह आसानी से पुल के ऊपर नहीं चढ़ पाता है। जब चांदनी ने पूछा कि उस रिक्शे में क्या सामान होता है तो बच्चों ने बताया कि जो लोग लकड़ी का काम करते हैं तो वह लकड़ी भरकर लेकर जाते हैं और जिनका कारखानों में लोहे के पुर्जे या और फैक्ट्रियों का सामान





होता है। जब यह सामान रिक्शे पर लादकर ले जाया जाता है तो हम बच्चे उसे धक्का लगाकर पुल के ऊपर चढ़ाते हैं। बच्चों ने बताया कि हम सुबह शाम पुल पर इसी तरह रिक्शे को धक्का लगाने का काम करते हैं और इस तरह कुछ पैसे कमा लेते हैं। बच्चों ने बताया कि पहले उन्हें धक्का लगाने के 5 रू मिलते थे पर अब उन्हें 10 रू मिलते हैं।

इन बच्चों को बाल मजदूरी के चंगुल से बचाने के लिए सरकार को बच्चों के लिए पुनर्वास से लेकर उनके रहने व खाने पीने की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे इन बच्चों को ऐसे खतरनाक काम न करने पड़ें। अगर आप हमारी इस बात से सहमत हैं तो अपने विचार हमें जरूर बताएं और बाल श्रम मुक्त समाज के निर्माण में हमारा सहयोग करें।

बच्चों से साफ कराया जाता है ट्रकों का मलबा



चांदनी

दिल्ली की कबाड़ी बस्ती में एक बहुत बड़ा खत्ता है। यहां पूरी दिल्ली का कूड़ा कचरा ट्रकों से लाकर डाला जाता है और इन ट्रकों में जो काम करने वाले वर्कर होते हैं वे छोटे बच्चे होते हैं। इनकी उम्र 8 से 15 साल के बीच की होती है। ये छोटे छोटे बच्चे 24 घंटे ट्रकों के साथ चलते हैं। ये ट्रक से वह कूड़ा कचरा उतारने का काम करते हैं। जब ट्रक का सारा कूड़ा नीचे डाल देते हैं, उसके बाद ट्रक कसे पूरी तरह से साफ करते हैं।

नाम न छापने की शर्त पर एक बच्चे ने अपने कार्य के बारे में बताते हुए कहा कि वह बहुत दिन से ये काम कर रहा है। सबसे पहले तो वह कूड़े से भरे ट्रक को खोलता व बंद करता है। ट्रक का सारा कूड़ा कचरा उतारने के बाद वह उसकी सफाई व धुलाई करता है। उसने बताया कि ट्रक के मालिक इस काम के लिए बड़े व्यक्ति को नहीं रखते हैं। क्योंकि वह जानते है कि अगर इस काम के लिए बड़े व्यक्ति को रखा तो वह ज्यादा पैसे लेकर काम करेगा और ज्यादा समय तक काम नहीं करेगा। जितने समय तक कि एक दिहाड़ी होती वह उसी समय तक काम करेगा। इससे ट्रक मालिक को बहुत नुकसान होगा।

इस तरह जितने पैसे वह बच्चों को काम पर रखकर कामाता है, उतने पैसे वह बड़े व्यक्ति से नहीं कमा पाएगा। इसके अलावा बच्चों को काम पर रखने का सबसे बड़ा जो फायदा होता है वो यह है कि उन्हें कुछ भी काम करने के जितने भी पैसे मिलते हैं वो उसी में ही खुश हो जाते हैं। दिल्ली में इस तरह का काम करने वाले अधिकतर बच्चे बंगाल से हैं और कुछ ऐसे बच्चे भी हैं, जिन्हें गांवो और कस्बों से काम करने के लिए लाया जाता है। काम करते समय इन बच्चों को बहुत सी समस्याओं से जूझना पड़ता है, जैसे कि यह सही से सो नहीं पाते, अपना पूरा समय ट्रक में ही बिताते हैं और अगर समय मिलता है तो वह उस ट्रक में ही सो जाते है।

देश में बाल मजदूरी बहुत ही भयावाह रूप लेती जा रही है और इसके लिए बनाए गए कानून भी बेअसर होते जा रहे हैं। बाल मजदूरी को रोकने के लिए हम सभी को आगे आना होगा। हमारे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि आप इन बच्चों के भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं? यदि आपके पास कोई सुझाव है बाल श्रम को समाज से उखाड़ दें कने के लिए या कोई ऐसी कहानी है, जिसे समाज के सामने लाना चाहते हैं तो अखबार में दी गई ईमेल आई डी पर हमें लिखकर जरूर भेजें।





सड़क एवं कामकाजी बच्चों से प्रियन कनुगो ने किया मिलने का वादा

चांदनी, रिपोर्टर शहीद कैंप

बढ़ते कदम के सदस्यों ने राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग के सदस्य श्री प्रियन कनुगो जी से मुलाकात कर उन्हें बताया कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को सबसे अधिक समस्या उन्हें शिक्षा प्राप्त करने में आ रही है। बच्चों की यह परेशानी सुनकर श्री प्रियन कनुगो जी ने कहा कि अगर आपको शिक्षा से संबंधित किसी तरह की परेशानी आती है तो आप शिक्षा आयोग में अपनी शिकायत दर्ज करें। फिर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के द्वारा उस पर तुरंत कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि बच्चों को स्कूलों में जो भी समस्या होती है उसके बारे में भी आप हमें बता सकते हैं, ताकि हम उन बच्चों की मदद कर सकें। जब बालकनामा के पत्रकार शम्भू ने श्री प्रियन कनुगो जी से कहा कि सर हम आपके बारे में अखबार द्वारा बच्चों को बताना चाहते है तो उन्होंने कहा कि हम एक दिन बढ़ते कदम के हेड ऑफिस आकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात करेंगे और उनके बारे में जानेंगे और उनसे मिलकर बात करेंगे, ताकि बच्चे अपनी समस्या के बारे खुद बता सकें।

यूनाईटेड नेशन में भी उठेगा सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना का मुद्दा

चांदनी

कंसोर्टियम ऑफ स्ट्रीट चिल्ड्रन संगठन की सीईओ सारा थॉमस बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों से मिली और उनसे बात की। बातचीत के दौरान संगठन की सदस्य चांदनी ने उन्हें बताया कि बढ़ते कदम संगठन का लक्ष्य है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को एक प्लेटफॉर्म मिले और वे अपनी आवाज को लोगों तक पंहुचा सकें। अपने इस लक्ष्य को पूरा करने की ओर संगठन अपने कदम बढ़ा चुका है।

इसके लिए संगठन के सदस्यों द्वारा यह निर्णय लिया गया कि यदि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उसके अधिकार दिलाना है तो उसके लिए उसकी गणना होनी बहुत जरूरी है। चांदनी ने उन्हें यह भी बताया कि हम सब सदस्यों द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने के कार्य का शुभारंभ भी हो गया है। इसके बाद संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति सारा थॉमस को गणना की सारी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी कि बच्चों द्वारा किस प्रकार यह गणना की जा रही है।

यह सुनकर और गणना के बारे में जानकर सारा थॉमस बहुत खुश हुई और कहा कि मैं संगठन के सदस्यों की इस बात से सहमत हूं। उन्होंने कहा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना जरूर होनी चाहिए और मैं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस मुद्दे को जरूर रखूंगी। मैं यूनाईटेड नेशन के सम्मुख भी आप सभी बच्चों की बात को रखूंगी और उन्हें इस बात की जानकारी दूंगी कि बढ़ते कदम - सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन किस प्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने का कार्य कर रहा है।



तोता-मैना संवाद

तोता - उड़ते उड़ते एक डाली पर बैठ जाता है और कहता है अरे मैना कहो कैसी हो?

मैना - हां तोता मैं तो ठीक हूं, तुम बताओ कैसे हो ?

तोता - मैना मैं भी ठीक हूं। तुम्हें पता है तोता मैं सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ एक बड़ी मीटिंग में गई थी।

तोता - वाह मैना यह तो बहुत अच्छी बात है। कौन-कौन था इस मीटिंग में और किस विषय पर थी यह मीटिंग?

मैना - तोता बहुत बड़े बड़े लोग थे, इस मीटिंग में और यह मीटिंग बाल श्रम पर की गई थी।

तोता - बाल श्रम पर भी ऐसा क्या खास था, जो मीटिंग बुलानी पड़ी, सब तो ठीक चल रहा है।

मैना - तोता ऐसा कैसे कह सकते हो, कि सब ठीक चल रहा है। तुम्हें पता है कि अभी हाल ही में बढ़ते कदम के सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना की है और गणना के दौरान उन्हें यह पता चला कि बहुत सारे बच्चे बाल श्रमिक हैं।

तोता - मैना यह तो बहुत ही दुख की बात है। और क्या हुआ इस मीटिंग में?

मैना - इस मीटिंग में उन बच्चों के बारे चर्चा की गई, जिन्हें बाल श्रम से रेसक्यू करके लाया जाता है।

तोता - तो क्या हुआ मैना। यह तो अच्छी बात है कि बच्चों को बाल श्रम से रेसक्यू किया जाता है। लेकिन इस पर भला क्या चर्चा करना?

मैना - क्यों तोता यह तो बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है कि जिन बच्चों को रेसक्यू किया जाता है, वह बच्चे कैसे बाल मजदूरी में आ जाते हैं और उस बच्चे का मालिक उसे जो हरजाना देता है वह बच्चे तक पहुंचा है या नहीं, इसका कोई रिकार्ड किसी के पास नहीं होता। तो बताओ फिर यह कैसे पता चलेगा कि वह पैसा बच्चों तक पहुंचा है या नहीं?

तोता - हां मैना, यह तो मैंने सोचा ही नहीं।

मैना - तभी तो इस मीटिंग में चांदनी दीदी ने सभी सदस्यों को बताया कि हमें इस बात के कारण का पता लगाना चाहिए कि बच्चे क्यों बाल मजदूर बन जाते हैं।

तोता - हां मैना, चांदनी दीदी ने बिल्कुल सही कहा। मैंने भी बहुत से बच्चों को काम करते हुए देखा है।

मैना - तुम्हें पता है तोता, इस मीटिंग में एक सदस्य ने कहा कि जो बच्चे बाल मजदूर करते है, उन बच्चों के माता पिता उन्हें काम पर लगवाते है और कुछ के मालिक खुद ही जबरदस्ती उन्हें काम पर रख लेते हैं। ऐसे में हमें कैसे पता लगेगा बच्चे बाल मजदूर के चंगुल में कैसे आ जाते है।

तोता - इस पर क्या जवाब दिया हमारी चांदनी दीदी ने?

मैना - यह सुनते ही चांदनी दीदी ने कहा कि जो बच्चा सिग्नल पर भीख मांगता है, कबाड़ा बीनता है, सड़क पर रहता है और ढाबे में काम करता है। उस बच्चे के बारे में सारी जानकारी पुलिस के पास होती है। तो पुलिस का यह कर्तव्य है कि उस बच्चे की मदद करे, न कि उसे बाल मजदूरी करने के लिए छोड़ दे। उन्हें उसे समझाना चाहिए और एक चाइल्ड फ्रेंडली बनकर उसे गलत संगति में पड़ने से बचाना चाहिए। अगर ऐसा किया जाए तो ज्यादा से ज्यादा बच्चों को बाल मजदूरी में फंसने से रोका जा सकता है।

तोता - हां मैना चांदनी दीदी ने एकदम सही बात कही है और क्या क्या बताया हमारी चांदनी दीदी ने?

मैना - इस मीटिंग के दौरान चांदनी दीदी ने सभी सदस्यों को बताया कि दक्षिणी दिल्ली में 13 या 14 साल के बच्चे पुल के ऊपर रिक्शे को इस पार से उस पार और उस पार से इस पार लाने का काम करते हैं। यह बच्चे रोज सुबह शाम भारी सामान से लदे रिक्शे को धक्का लगा कर पुल के ऊपर चढ़वाते हैं, जिसके लिए इन बच्चों 5 से 10 रू तक मिलते हैं।

तोता - मैना यह तो कुछ भी नहीं अब जो खबर मैं बताने जा रही हूं, उसे सुनकर तो तुम्हारे होश ही उड़ जाएंगे।

मैना - तो फिर जल्दी बताओ तोता।

तोता - झांसी में 14 से 15 साल की लड़कियां कच्ची शराब बेचने व बनाने का काम करती हैं और यह काम बहुत समय से चल रहा है। दक्षिणी दिल्ली में 10 से लेकर 18 साल के बच्चे मलबे को ट्रक से उतारने का काम करते है तथा उस ट्रक की पूरी सफाई करते है और उसी ट्रक में सो जाते हैं। यह बच्चे पूरे पूरे दिन काम करते हैं और शादी पार्टियों में बच्चे काम करते हैं, जिसमें बच्चे बहुत से खतरनांक काम कर रहे हैं।

मैना - तोता यह तो बड़ी ही दुख की बात है यह सुनकर तो मेरी आंखे नम हो गई।

मैना - हां तोता तुम सही कह रहो। बच्चे बड़ी ही संख्या में बाल श्रम में आ रहे है। यदि जल्द ही इनके लिए सरकार द्वारा कुछ ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो यह बहुत ही भयावह रूप ले लेगा। हम सभी को इसके लिए कुछ न कुछ करना होगा।

इतना कहकर तोता मैना उड़ पड़े।

बच्चों ने सीखे अच्छी पत्रकारिता के गुण

बालकनामा ब्यूरो

विश्व प्रसिद्ध सड़क व कामकाजी बच्चों के अपने अखबार 'बालकनामा' के बारे में तो हम सब जानते हैं। चूंकि यह अखबार सड़क व कामकाजी बच्चों का अखबार है और बच्चे खुद ही खबरें तलाशतें है और खुद लिखते हैं। इस अखबार के पत्रकारों ने कहीं से पत्रकारिता की कोई डिग्री नहीं ली है और न ही इनको इसकी कोई ट्रेनिंग दी गई है। बिना किसी प्रशिक्षण के ये पत्रकार बहुत ही सटीक ढंग से अपनी खबरों को लिखते हैं और लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

बालकनामा अखबार के इन पत्रकारों की इस सराहनीय कार्य को और निखारने पहुंची लंदन से टॉय बॉक्स से आई रिपोर्टरों की एक टीम। लंदन से आई फियोना और नूमी ने जब अखबार के पत्रकारों से बात की तो उन्होंने बताया कि हम चाहते हैं कि हम और कैसे अच्छे ढंग से अपनी खबरों को लिखें, ताकि पाठकों का ध्यान बच्चों की खबरों की और आकर्षित कर सकें।

नूमी और फियोना ने अखबार को



और बेहतर करने के लिए पत्रकारों को टिप्स दिए। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि वे कहानी को कैसे, किस तरह और किस ढंग से अच्छे तरीके से लिख सकते हैं। टिप्स देते हुए उन्होंने कहा कि कहानी में सबसे पहले जरूरी शब्दों का होना बहुत आवश्यक है, जैसे कि बच्चे का नाम, उम्र, कहां रहता है, क्या करता है और उसकी क्या समस्या है। वह सड़क पर क्यों रहता है और काम क्यों करता है। इसके बाद खबर लिखते समय बच्चे की भावनाओं का होना बहुत जरूरी है और बच्चे की उन भावनाओं को अपनी किताब में लिख लेना चाहिए। इसके बाद यदि इन सभी सवालों के जवाब हमारे पास आ चुके है तो हम उस खबर को अच्छी तरह तैयार कर सकते हैं।

कहानी के अंत में कुछ ऐसा लिखें कि लोग उसे जानने और मानने पर मजबूर हो जाएं। इससे लोग बच्चों की मदद भी कर सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात आपकी खबर की हेड लाइन छोटी और कैची होनी चाहिए। ताकि लोग हेडलाइन पढ़कर हर पूरी कहानी पढ़ने के लिए उत्साहित हो जाएं।

बच्चों के हेल्पलाइन नंबर	चाइल्ड लाइन नंबर 1098	पुलिस हेल्पलाइन नंबर 100	ये दोनों ही नंबर टोल फ्री नंबर हैं। यदि आप किसी मुसीबत में हों तो दोनों ही नंबरों पर 24 घंटे में कभी भी फोन करके मदद ले सकते हैं

ईंट भट्टों पर जलता और पत्थरों में पिसता बचपन

बालकनामा ब्यूरो

झांसी का बुंदेलखंड अति महत्वपूर्ण शहर है। यह शहर बहुत तेजी से विकास की ओर गति पकड़ रहा है। इस शहर की सीमा से सटे मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ के छोटे बड़े गांवों से लगभग सैकड़ों लोग बाजार से रोजमर्रा की खाने पीने की सामग्री से लेकर भवन निर्माण जैसे सीमेंट, सरिया, बालू, ईंटे तक खरीदने यहां आते हैं। क्योंकि इस शहर की सीमा के चारों ओर ईंट, भट्टे, सीमेंट, सरिया, बालू, मिट्टी और कैसरों की भरमार है। इनईंट, भट्टों, मौरंगों की खनन में काम करने के लिए बड़ी संख्या में बाल मजदूर आते हैं, जो अपने परिवार का भरण पोषण करने के लिए काम करने को मजबूर हैं। क्योंकि यह क्षेत्र सूखे के कारण अति पिछड़ेपन का शिकार है, जिसके कारण यहां बेरोजगारी अपने पैर पसारे बैठी है।

बालकनामा के पत्रकारों ने जब इन क्षेत्रों का दौरा किया तो पाया कि लगभग 12 से 16 वर्ष तक के नाबालिग बाल मजदूर बड़ी संख्या में यहां काम कर रहे हैं। जब पत्रकार ने अपनी



पहचान छिपाकर एक खरीददार के रूप में पहुंचे तो उन्होंने यहां पर कार्य करते हुए बाल मजदूरों को देखा। वहां पहुंचकर उन्हें ज्ञात हुआ कि इन स्थानों पर बाल मजदूर ही नहीं, बंधुआ मजदूर भी कार्य करते हैं। सरकार द्वारा झांसी व बुंदेलखंड के आस पास के क्षेत्रों में काम करने वाले बाल मजदूरों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

शंभू ने स्वास्थ्य से जुड़े अहम मुद्दों पर डॉ बंसल से की चर्चा

शंभू

निजामुद्दीन में एक हेल्थ कैंप लगाया गया। जहां आईएसआई सरकारी अस्पताल के डॉक्टर श्री राकेश बंसल जी ने नशा करने वाले बच्चों का हेल्थ चेकअप किया। इस हेल्थ कैंप के बारे में जब बालकनामा के पत्रकार शंभू को पता चला तो वह भी डॉक्टर से मिलने पहुंचे। शंभू ने डॉक्टर बंसल को अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं बालकनामा का पत्रकार हूं और मैं सड़क व कामकाजी बच्चों व उनके स्वास्थ्य से जुड़े कुछ अहम मुद्दों पर आपसे बात करना चाहता हूं।

शंभू ने डॉक्टर से पूछा कि सड़क व कामकाजी बच्चों को वे किस नजरिए से देखते हैं? डॉक्टर ने कहा कि मैं हमेशा इन बच्चों के चेहरे पर मुस्कान देखना चाहता हूं। चूंकि मैं एक डॉक्टर हूं, इसलिए मैं चाहता हूं कि ये बच्चे कभी किसी दुर्घटना का शिकार न होने पाएं और हर बीमारी से बचें। क्योंकि ये बच्चे जिन स्थानों पर रहते हैं वहां पर बहुत आसानी से बीमारियों का आदान प्रदान हो जाता है। इसलिए ये बच्चे हमेशा किसी न किसी बीमारी का शिकार हो जाते हैं। इन बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए इन्हें नशीलों पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए।

शंभू ने डॉक्टर से पूछा कि आपको सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ समय बिताकर और उनका हेल्थ चेकअप करके कैसे लगा? डॉक्टर बंसल ने कहा कि मेरे पास आई.एस.आई सरकारी अस्पताल में तरह तरह के लोग आते हैं और मुझे उन सबको देखना पड़ता है। मैं कहना चाहूंगा कि डॉक्टर को किसी भी मरीज को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। मुझे सड़क व कामकाजी बच्चों की चिकित्सा करने से बहुत खुशी मिलती है। मैं हमेशा यह चाहता हूं कि ये बच्चे भी आगे बढ़े और बुरी आदतों से दूर रहें।

अंत में शम्भू ने डॉक्टर साहब को बढ़ते कदम संगठन के बारे में बताया कि संगठन पिछले 13 वर्षों से बच्चों के कार्य कर रहा है। उनके अधिकारों को लेकर उनकी आवाज सरकार तक पहुंचाने के लिए वह अलग अलग कार्यक्रमों का भी आयोजन करता है, जिसमें बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। डॉक्टर साहब ने कहा कि वास्तव में आप इन बच्चों के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। आप से मेरा यही निवेदन है कि ऐसे ही इन बच्चों की मदद करते रहें। इसके साथ ही उन्होंने संगठन को बहुत सारी शुभकामनाएं भी दी।

संपादक सहयोगी
चांदनी, ज्योति, शंभू और मजीद

बालकनामा टाइम्स ऑफ इंडिया में


TIMES CITY | CHILDREN'S DAY

Street kids strive for their own space

Carry Out A Survey To Map Life Of Children On Roads In Sarai Kale Khan-Nizamuddin Area

बालकनामा फ्रेंच मीडिया में


Un journal pour exister

À Delhi, en Inde, des enfants des rues écrivent et distribuent leur propre journal depuis plus 10 ans !

बालकनामा हिंदुस्तान टाइम्स में


metro

Street performer to editor, 18-year-old makes news

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-54 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मार्च , 2016

लखनऊ में बढ़ रही है सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या

रिपोर्टर - विजय/शन्नो

बढ़ते कदम के सदस्यों ने नवंबर में सराय काले खां में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना की और बच्चों की गिनती कर डाली। इस सर्वे से संगठन ने समाज और सरकार को यह बताने की कोशिश की, कि यह काम संभव है जो कि आसानी से किया जा सकता है। इसी प्रकार संगठन के सदस्यों ने कुछ ऐसा ही सर्वे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ की 15 बस्तियों में किया। सर्वे के दौरान संगठन के सदस्य विजय कुमार को बाल मजदूरी के और भी गंभीर पहलूओं के बारे में पता चला। इस सर्वे से इस बात का पता लगा कि कितनी अधिक संख्या में बच्चे बाल मजदूरी की चंगुल में फंसते जा रहे हैं, ज्यादातर बच्चे क्या काम कर रहे हैं और भारी संख्या में यू.पी. की राजधानी लखनऊ बाल मजदूरी का एक बहुत बड़ा जाल बनता नजर आ रहा है। अगर इस विषय पर गंभीरता से नहीं सोचा गया तो शायद एक दिन ऐसा



आएगा कि पूरे देश के बच्चे बाल मजूदरी कर रहे होंगे और बच्चे शिक्षा से दूर होते चले जाएंगे। हमारे समाज में बहुत सी एजेंसिया काम कर रही हैं, लेकिन फिर भी इन बच्चों की संख्या शिक्षा की ओर बढ़ने के बजाए घटती ही जा रही है और इस बारे में किसी को भी भनक तक नहीं है कि इतने बड़े पैमाने पर बच्चे बाल मजदूरी में फंसते जा रहे हैं। जिस तरह से बच्चे भारी संख्या में कबाड़ बीनते नजर आ रहे हैं। इससे साबित है कि जो भी लोग बच्चों से काम करवा रहे हैं वह बहुत हद तक बच्चों से अच्छे पैसे कमा रहे हैं, जिससे उन्हें लाखों का फायदा भी हो रहा है। जो बच्चे घरों में काम करने जाते हैं, मार्किटों में मछली बेचने का काम कर रहे हैं, उन बच्चों पर भी गौर देने की जरूरत आ गई है। साथ ही जो बच्चे रिक्शा चलाने का काम करते हैं, वह कैसे अपना जीवन गुजार रहे हैं। आखिर कैसे बच्चों को बचाया जा सकता है, जबकि बच्चे शिक्षा से दूर होते

शेष पृष्ठ 6 पर



लखनऊ में बाल मजदूरी की बदरंग तस्वीर

रिपोर्टर - विजय/शन्नो

यू.पी.की राजधानी लखनऊ में बाल मजदूरी की बढ़ती संख्या को रोकने के लिए अधिकारी बहुत सक्रियता से कार्य कर रहे हैं, लेकिन फिर भी इस समस्या का समाधान करने में सफलता नहीं मिल पा रही है। क्योंकि बाल मजदूरी की संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है। बालकनामा अखबार की सलाहकार शन्नो ने बच्चों के बारे में जानने हेतु रेलवे क्रासिंग का दौरा किया तो देखा कि छोटी लड़कियां मछली मार्किट में काम कर रही हैं, जिनकी उम्र 11 साल से लेकर 17 साल तक है। यह बच्चियां सुबह सुबह मार्किट में मछली बेचने का काम करती हैं। बालकनामा की सलाहकार इन बच्चों के पास पहुंची तो देखा कि सच में इन बच्चों ने मार्किट में अपनी दुकान लगाई हुई है, जहां बहुत से लोग भीड़ लगाकर खड़े हुए.हैं और मछली खरीद रहे हैं। छोटी लडकियां अपने नन्हें

शेष पृष्ठ 4 पर

रैन बसेरों में आश्रय के लिए बेघर बच्चे बना रहे हैं झूठे परिवार

बातूनी रिपोर्टर रुस्तम, रिपोर्टर ज्योति

सराय काले खां में जो रैन बसेरे बने हुए हैं वह सिर्फ परिवार वालों के लिए हैं। इन रैन बसेरों में बिना परिवार का कोई भी सदस्य नहीं रह सकता चाहे वह अकेला एक बच्चा ही क्यों न हो। जो बच्चा अपने परिवार वालों से अलग और अकेले हैं वह जब रैन बसेरे में सोने के लिए अंदर जाते हैं तो रैन बसेरे का जो गार्ड है वह उन बच्चों को अंदर नहीं जाने देता और उन्हें रैन बसेरे में रहने के लिए मना करते हैं। कहते है कि इस रैन बसेरे में सिर्फ वह बच्चे रह सकता है जो अपने परिवार के साथ है। इसलिए जो बच्चे सराय काले खां में अकेले रह रहे हैं, वह बच्चे रैन बसेरों में रहने के लिए दूसरे परिवार वालों के साथ झूठा रिश्ता बनाकर रैन बसेरे में रह रहे हैं। वह बच्चे दूसरे परिवार को अपना चाचा, चाची या मामा, मामी बना रहे हैं। यह परिवार वाले जो बच्चों के साथ इस तरह झूठा रिश्ता बना रहे हैं, वह इन बच्चों से



इसकी कीमत भी ले रहे हैं।

वह बच्चों को अपने साथ परिवार में शामिल करके उनसे खर्चा पानी ले रहे हैं और बच्चे रैन बसेरे में रहने के लालच में उन्हें पैसे भी दे रहे हैं। रैन बसेरे में रह रहे परिवार वाले ऐसे अकेले बच्चों से पैसे ऐंठ रहे हैं और बदले में उन बच्चों को वह अपने परिवार में शामिल कर रहे हैं। पत्रकारों ने इस बात पर जाकर छानबीन की तो 13 वर्षीय संजय (परिवर्तित नाम) ने बताया कि बच्चे कबाड़ा चुनते है भीख मांगते हैं। पर जब हम रात को सोने के लिए रैन बसेरे में जाते हैं तो गार्ड मना कर देता हैं। हमें नहीं जाने देता। वह कहते हैं कि रैन बसेरा परिवार वालों का है, इसलिए जब तुम अपने परिवार के साथ आओगे तभी तुम्हें रैन बसेरे में रह सकते हो। इसके लिए फिर हम बच्चों ने अपने आस पास रहने वाले लोगों को अपना परिवार बनाया और रैन बसेरे में रहने लगे। पर वही हमसे खर्चा पानी भी मांगते हैं।

13 वर्षीय पवन (परिवर्तित नाम) ने कहा कि हमारे लिए स्पेशल होम और सेंटर होता तो हमें यह सब दुख और परेशानी नहीं झेलनी पड़ती। हम बच्चों के लिए सेंटर बनवाए जाएं और रैन बसेरों के इंतजामात भी किए जाएं, जिसमें हम बच्चे आसानी से रह से सकें।

कौन समझेगा ललिता का दर्द

बातूनी रिपोर्टर शिवा, रिपोर्टर शन्नो

बालकनामा अखबार की सलाहकार शन्नो ने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बसी बस्तियों में दौरा किया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्याओं व स्थिति के बारे में जानने की कोशिश की। शन्नो जब रेलवे क्रॉसिंग पहुंची तो देखा कि एक 15 वर्ष की सहमी सी बच्ची अपने घर के बाहर गली में बैठी है। उस बच्ची से बात करने के लिए सलाहकार उसके नजदीक गई तो पता चला कि उसका नाम ललिता है और वह दोनों पैरों से विकलांग है। वह इसी तरह अपने घर के बाहर बैठी रहती है और भीख मांगती है। यह जानने के बाद सलाहकार ने वहां आसपास के लोगों से पूछा कि ललिता के माता पिता कहां हैं तो उन्होंने बताया कि ललिता के माता पिता का देहांत हो चुका है। ललिता अपनी बहन के पास रहती है। उसके बाद सलाहकार ने उसकी बहन से बात की और पूछा कि वह ललिता को स्कूल क्यों नहीं भेजती हैं तो उन्होंने बताया कि ललिता को किसी भी स्कूल में दाखिला नहीं मिलता है, क्योंकि ललिता को शौचालय ले जाने के लिए एक व्यक्ति का होना जरूरी है। वह खुद से तो शौचालय जा नहीं सकती तो फिर रोज स्कूल कैसे जाएगी। जब वह चल फिर नहीं सकती और इस समस्या के चलते कौन उसे रोज छोड़ने जाएगा।

वैसे भी ललिता को कई बार स्कूल के अधिकारियों ने वापस ले जाने को कहा कि इसे अपने घर पर ही रखो, हम इसकी देखभाल करेंगे कि बच्चों को पढ़ाएंगे। इसलिए हम ललिता को स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजते हैं। क्योंकि ललिता कभी कभी अपने कपड़ों में ही मलमूत्र कर देती है, वह खुद से शौचालय तक नहीं जा पाती है। उसे शौचालय में ले जाने के लिए एक व्यक्ति का होना आवश्यक है और ऐसे में उसकी देखरेख स्कूल में कौन करेगा। इस कारण से हम ललिता को स्कूल नहीं भेजते हैं।



उसके बाद वहां के आसपास के लोगों ने कहा कि ललिता पूरे दिन एक स्पंज की गद्दी पर बैठी रहती है। यह बात सुनते ही बालकनामा की सलाहकार ने उस गद्दी को गौर से देखा तो देखने से पता चला कि ललिता को उस स्पंज की गद्दी पर इसलिए बैठाया जा रहा था, ताकि अगर ललिता कपड़ों में मलमूत्र कर भी लें तो आसानी से सूख जाए। यह जानकर सलाहकार ने बहुत ही विनम्रता के साथ ललिता से कहा कि तुम स्कूल जाना चाहती हो तो उसने एकदम मना कर दिया और इतना कहकर वह थोड़ी देर तक शांत हो गई और उसकी आंखे नम हो गई।

ललिता की यह दशा देखकर लगा कि वह अब किसी से कुछ नहीं कहना चाहती। लग रहा था जैसे वह खुद से मायूस है। इस बारे में जब सलाहकार ने पूछा तो पड़ोसियों ने बताया कि ललिता किसी से कुछ नहीं बताती है कि उसे क्या चाहिए क्योंकि उसकी मदद अभी तक किसी ने नहीं की है। कोई भी उसके बारे में बात नहीं करता और न ही उसके भविष्य के बारे में कोई बात करता है। इस वजह से ललिता किसी से कुछ भी नहीं कहती है और इसी तरह रोने लगती है। अगर ललिता को एक व्हील चेयर की सुविधा मिल जाए तो वह कम से कम खुद से शौचालय जा सकती है उसे किसी की मदद नहीं लेनी पड़ेगी। वह जब चाहे कहीं भी इधर उधर घूम फिर सकती है और स्कूल में जाकर अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकती है।

जगह के अभाव में पटरियों पर खेलने को मजबूर स्ट्रीट चिल्ड्रन

बातूनी रिपोर्टर पूनम, रिपोर्टर चांदनी

सांसी कैंप में कम से कम 1000-1500 की संख्या में झुग्गी झोपड़ियां बनी हैं, जिस जगह में यह झुग्गियां बनी हैं, वहां धूप नहीं आती है। इसलिए यहां के तमाम बच्चे धूप लेने ट्रेन की पटरियों पर जाते हैं। जब तक सुपरफास्ट ट्रेन नहीं आती है, तब तक बच्चे वहां धूप में खेलते रहते हैं। पर जैसे ही सुपरफास्ट ट्रेन आती है तो यह बच्चे गहराई में बने नीचे घरो की ओर भागने लगते हैं। जब बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने इस प्रकार बच्चों को भागते देखा तो बच्चों से पूछा कि कहां जा रहे हो, उन्होंने कहा कि दीदी आप भी हमारे साथ नीचे चलो, क्योंकि जो ट्रेन आ रही है वह बहुत तेजी से आती है और उसकी हवा से ट्रेन के नीचे आने का डर रहता है। जब पत्रकार ने ट्रेन को आते देखा तो सच में ट्रेन बहुत तेजी से आ रही थी और वहीं ट्रेन की पटरियों के किनारे ही झुग्गियां भी बनी हुई थी।

कुछ समय बाद जब ट्रेन चली गई तो चांदनी ने बच्चों से पूछा कि आप सभी को इतनी तेजी से आती ट्रेन को देखकर डर नहीं लगता और ऐसे में ट्रेन के साथ भागने से आपकी जान भी जा सकती है तो 14 वर्षीय प्रीती (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मेरी एक छोटी बहन ऐसे ही ट्रेन के नीचे आ गई थी, जिसका देहांत हो गया था। इसलिए हम सभी बच्चे ट्रेन के आने से पहले ही यहां से भाग जाते हैं और थोड़ी देर बाद फिर से आ जाते हैं।





यह सुनकर चांदनी ने बच्चें को समझाया और कहा कि तुम यहां क्यों आते हो, तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए। तो प्रीती ने कहा कि क्या करें दीदी आना पड़ता है। हमारे घरों में धूप नहीं पहुंचती क्योंकि हमारे घर गड्ढे जैसी जगह में बने हैं बिल्कुल नीचे की ओर। अब तो ठंड इतनी पड़ रही है कि मजबूरन हम बच्चे ठंड से बचने के लिए धूप सेंकने ट्रेन की पटरियों पर आते हैं। हमें डर तो लगता है पर क्या करें ठंड ही इतनी पड़ रही है और यहां कोई ऐसा पार्क तो है नहीं, जहां हम बच्चे बिना किसी भय के खेल कूद सकें।

बच्चों ने कहा: मां बाप ही सिखाते हैं भीख मांगना

चांदनी और शम्भू

राजस्थान से आए बंजारा समूह के बीच बालकनामा के पत्रकारों ने दौरा किया और वहां पर रहने वाली छोटी छोटी लड़कियों से मिलकर उनसे बात की। पत्रकारों ने उन्हें एक खेल भी खिलाया। खेल खिलाने के बाद चांदनी ने उनसे पूछा कि तुम सभी लड़कियां क्या करती हो तो उन्होंने बताया कि हम अभी घर में ही रहती हैं। पत्रकार ने कहा कि तुम स्कूल जाते हो तो लड़कियों ने कहा कि हम कभी कभी स्कूल जाते हैं, रोज स्कूल नहीं जाते। तब पत्रकार ने पूछा कि स्कूल क्यों नहीं जाते तो बच्चों ने कहा कि हम पढ लिखकर



क्या करेंगे। हमें बड़े होकर भीख ही मांगना पड़ेगा। क्योंकि हम बच्चे जब तक छोटे हैं हमारे माता पिता हमें घर पर ही रखते हैं पर जैसे ही हम 15 या 16 साल के हो जाते हैं तो हमें भीख मांगने को कहा जाता है और हम बच्चे बड़े होकर भीख मांगने का काम करते हैं।

फिर जब तक हम जीते हैं भीख ही मांगते हैं। हमारी शादी होती है तो फिर वही भीख मांगने का काम हम अपने बच्चों को भी सिखाते हैं। यह हमारा खनदानी पेशा है। हमारा बचपन घर में बीतता है। जवानी भीख मांगने में निकल जाती है। हमें हमारे माता पिता ही शुरू से भीख मांगना सिखाते हैं। फिर हमें भीख मांगने के लिए भेजा जाता है। क्योंकि हमारी शादी भी तभी होती है, जब हम भीख मांगने का काम करते हैं। अगर हम भीख नहीं मांगेंगे तो हमसे कोई शादी भी नहीं करेगा। इसलिए हम बच्चों को हमारे माता पिता बचपन में भीख मांगने नहीं भेजते पर जैसे ही बड़े होते हैं, हमें भीख मांगने के लिए जाना पड़ता है और फिर हमारी शादी होती है। कुछ लड़कियों की शादी 10 -12 साल की उम्र में हो चुकी है। चांदनी ने उनसे कहा कि अगर आप सभी को कोई काम दिया जाए तो आप वो काम करोगे तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया और कहा कि बिल्कुल नहीं करेंगे क्योंकि भीख मांगना हमारी पंरपरा भी है और खनदानी पेशा भी है।

प्रदूषण के शिकार बन रहे स्ट्रीट चिल्ड्रन

बातूनी रिपोर्टर शिवम, रिपोर्टर शम्भू

राजधानी दिल्ली में बढ़ रहे प्रदूषण के कारण यहां की हवा में सांस लेना दूभर हो रहा है। जरा सोचिए जो लोग अपने घरों में रहते हैं और जिनका आना जाना बंद गाड़ियों में होता है, उन्हें सांस लेने में इतनी दिक्कतें हो रही हैं तो जो छोटे छोटे बच्चे, जिनके घर नहीं हैं वो फ्लाईओवर के नीचे, फुटपाथ पर, स्टेशनों पर जिंदगी गुजार रहे हैं, उनका क्या हाल हो रहा होगा।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए बढ़ते कदम - सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन के सदस्यों ने सराय काले खां फ्लाईओवर के नीचे गुजर बसर करने वाले बच्चों के साथ मिलकर रैली निकाली। रैली के दौरान बच्चों ने सरकार से गुहार लगाई कि हम बच्चों को भी इस प्रदूषण से बचाओ। बच्चों ने बताया कि वे दिन रात बसों, कारों,



बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने रैली निकालकर लगाई गुहार

ट्रकों, मोटरसाइकिलों इत्यादि से निकलने वाली भयंकर आवाजों और धुएं की मार झेल रहे हैं। 13 साल की शबाना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''ट्रैफिक के एकदम नजदीक रहने के कारण रात दिन गाड़ियों का धुआं व आवाजें सीधा हमारे फेफड़ों में जाता है। जिसके कारण कभी कभी अचानक कानों में बहुत दर्द होता और सांस लेने में दिक्कत होती है।'' 10 वर्षीय करन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''यदि हम बीमार हो जाते हैं तो सड़क पर रहने के कारण हमारी बीमारी और बढ़ जाती है।'' 12 वर्षीय अजय (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, ''हमें बहुत डर लगता है कि कहीं हम भयानक बीमारी के शिकार न हो जाएं।'' 9 वर्षीय देवेंद्र (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''हम तो कभी भी स्वच्छ हवा में सांस नहीं ले पाते। हमें इतनी प्रदूषित धुएं वाली हवा में ही सांस लेना पड़ता है, जिसके कारण हमें सांस लेने में बहुत दिक्कत होती है।'' 17 वर्षीय बालकनामा अखबार के संवाददाता शंभू ने जानकारी देते हुए कहा कि बच्चों के साथ साथ उनके माता पिता ने भी बताया कि सरकार हमारे लिए कुछ भी नहीं कर रही। हम सड़कों पर रहते हैं और यहीं बनाते खाते हैं, जिससे गाड़ियों की धूल, धुआं इत्यादि उड़ उड़कर हमारे भोजन में जाकर गिरता है, इससे हमें बहुत दिक्कत होती है। हम सभी चाहते हैं कि सरकार हमारे लिए किसी अच्छी जगह रहने की व्यवस्था करे।



14 वर्षीय प्रियंका ने कहा कि, '' अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री जी को खांसी आती है और सांस लेने में दिक्कत होती है तो वे तो बैंगलोर जाकर अपना इलाज करा लेते हैं, लेकिन सड़कों पर जिंदगी गुजार रहे हम बच्चों को तो सरकारी अस्पताल वाले भी देखते ही भगा देते हैं।''

बालकनामा अखबार की सलाहकार 21 वर्षीय शन्नो ने कहा कि दिल्ली में वास्तव में दिन पर दिन प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे सबसे अधिक परेशानियों का सामना सड़कों, फुटपाथों और फ्लाईओवर के नीचे रहने वाले बच्चों को करना पड़ रहा है। सरकार को चाहिए कि इन बच्चों को जल्द से जल्द इससे बचाए, नहीं तो ये गंभीर बीमारी के शिकार हो सकते हैं।

चाइल्ड लाइन 1098 की दी जानकारी

बातूनी रिपोर्टर किशन, रिपोर्टर शम्भू

बढ़ते कदम के सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना करने के दौरान दस हजार तीन सौ बीस बच्चों से सीधा सम्पर्क किया और इन बच्चों की स्थिति व समस्याओं के बारे में जाना और इन बच्चों को चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर के बारे में जानकारी दी और उन्हें जागरूक किया। इस दौरान सबसे चौंकाने वाली बात यह पता चली कि दस हजार तीन सौ बीस सड़क एवं कामकाजी बच्चों में से सिर्फ उन्हीं बच्चों को 1098 हेल्प लाइन नंबर के बारे में पता था जो कहीं न कहीं किसी संस्था या संगठन के सम्पर्क में थे और इसमें अश्चर्य करने वाली बात यह है कि उन बच्चों को कुछ भी नहीं पता था, जो किसी के भी सम्पर्क में नहीं है। वह चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर के बारे में नहीं जानते हैं। किसी भी बच्चे को इस हेल्प लाइन के बारे में नहीं पता था।

बढ़ते कदम के सदस्यों ने जब सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ गणना करने के दौरान यह सभी समस्याएं अनुभव की तो इन्होंने गणना करने के दौरान इस बात पर जोर दिया और गंभीरता के साथ इस नम्बर के बारे जानकारी भी दी तथा दस हजार तीन सौ बीस बच्चों को हेल्पलाइन नंबर के बारे में जानकारी दी। उन्हें 1098 नम्बर भी एक रसीद में लिखकर दिया, जिससे वह बच्चे इस नम्बर को आसानी से याद रखें और जरूरत पड़ने पर आसानी से इस्तेमाल कर सकें। गणना करने के बाद बढ़ते कदम के सदस्यों ने इनके साथ बैठक का आयोजन भी किया और चाइल्ड हेल्पलाइन के बारे में कार्यशाला करके बच्चों की राय ली तथा बच्चों के साथ हो रही समस्याओं के बारे में बात की। चर्चा के दौरान 15 वर्षीय किशन ने कहा कि हम बच्चे अलग अलग जगह कई प्रकार का काम करते हैं और इस दौरान बहुत से लोग हम से ठीक से व्यवहार नहीं करते। हमसे झगड़ा भी करते हैं और मारपीट करते हैं। ऐसे में अगर हमें पहले से पता हो कि बच्चों की हेल्प लाइन होती है, जिससे हम बच्चे अपनी मदद ले



सकते हैं तो इस तरह की समस्या हमारे साथ कम होने लग जाएंगी। कोई भी हमारे साथ दुर्व्यवहार करने से पहले ही सतर्क रहेगा। बच्चों ने यह भी कहा कि जैसे बड़ी बड़ी कंपनियां अपना प्रचार कर रही हैं, हर जगह अपने नाम के पोस्टर लगवाकर। ऐसी ही हम बच्चों की हेल्प लाइन का भी पोस्टर हर जगह होना चाहिए, जिससे बच्चे अपनी हेल्पलाइन के बारे में जान सकें। सरकार को इस नम्बर की जानकारी हर बस अड्डे और बस स्टैन्ड पर देना चाहिए। इसके साथ साथ जैसे डी.टी.सी बसों में सभी हेल्प लाइन के बारे में बताया जाता है, लेकिन बच्चों की हेल्प लाइन के बारे में नहीं बताया जाता। हम बच्चे चाहते हैं कि 1098 चाइल्ड हेल्प लाइन के बारे में भी बसों में बताया जाए, जिससे ज्यादा से ज्यादा बच्चों को और लोगों को जागरूक किया जा सके।

संपादकीय

प्रिय साथियों,
आप सभी को मेरा नमस्कार!

बालकनामा अखबार को इतना प्यार और सरहाना देने के लिए हम सभी मीडिया और पाठकों का धन्यवाद करते हैं। आपके इसी प्रोत्साहन और सहयोग का परिणाम है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अखबार की प्रसिद्धि दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। इस बार हम आपको बताने जा रहे है कि बालकनामा अख़बार ने लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करा लिया है जिससे इसने अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रसिद्धि हासिल कर ली है। हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे यह जानकर बहुत ख़ुश हैं कि बच्चे पूरी मेहनत और लगन के साथ बच्चों की आवाज लोगों तक पहुंचाने में कामयाब हो रहे हैं। हम बच्चे आप सभी को हर बार की तरह इस बार भी पक्की और सच्ची खबरों से रुबरू कराएंगे।

हम चाहते हैं कि आप बालकनामा अखबार को हर तरह का अपना सहयोग (छोटा या बड़ा, पैसे या किसी और प्रकार से) जारी रखें। यदि आप हमें सहयोग करना चाहते हैं तो ऊपर दिए गए पते पर हमसे संपर्क करें और अपने सुझाव हमें balaknamaeditor@gmail.com लिखकर भेजें।

संपादकीय मंडल

बच्चों से करा रहे नशीले पदार्थो का व्यापार

बातूनी रिपोर्टर धीरज, रिपोर्टर शम्भू

पुलिस वालों की नांक के नीचे छोटे छोटे बच्चे नशीले पदार्थ बेच रहे हैं। यह वास्तविक घटना कहीं और की नहीं, बल्कि हजरत निजामुद्दीन दरगाह के आसपास की है, जहां बच्चे चरस, गांजा आदि नशीले पदार्थ बेच रहे हैं। यह बच्चे जिस जगह पर नशीले पदार्थ बेचते हैं, उसके ठीक सामने पुलिस स्टेशन भी है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि पुलिस वालों को इस घटना की भनक तक नहीं है। जब बालकनामा के पत्रकार को इस बात का पता चला तो उन्होंने इस मुद्दे पर जाकर छानबीन की और बच्चों से बात की तो बाल साथियों ने बताया कि यहां पर 24 घंटे नशीले पदार्थ मिलते हैं। अगर उनके पास पैसे लेकर जाओगे तो वह बच्चा खुद नशीले पदार्थ दे देगा। इस नशीले पदार्थ



को खरीदने के लिए 200 से 300 रुपए देने पड़ते हैं। ज्यादातर यह नशीले पदार्थ बेचने का काम बच्चे करते हैं, जिनकी उम्र 15 साल से लेकर 18 साल तक है। इस वजह से ज्यादातर बच्चे ही नशे की चपेट में आ रहे हैं और गलत संगत में पड़ रहे है। इसके बाद भी पुलिस वाले नशीले पदार्थों की बिक्री बंद करने के लिए कोई कदम नहीं कर रहे हैं जिससे उन बच्चों को इस काम को करने से रोका जा सके और उनको नशे की चपेट में आने से बचाया जा सके।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों से जबरन काम करा रहे हैं पुलिस कर्मी

बातूनी रिपोर्टर संदीप, रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशनों पर काम करने वाले बच्चों के साथ पुलिस अधिकारियों का रवैया और बुरा बर्ताव दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। रेलवे स्टेशनों पर पुलिस वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जबरन काम करवाते हैं। जो बच्चे किसी ना किसी कारण से अपने घरों से भाग कर आते हैं, वह रेलवे स्टेशनों पर रहने आ जाते हैं। और वह स्टेशन को ही अपना घर मानने लगते हैं तथा उसी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनते हैं और अलग अलग तरह के काम करने लग जाते हैं। यह बच्चे अपने घर से रेलवे स्टेशनों पर अपना जीवन गुजारते हैं, जिसकी वजह से इनके कपड़ों से लेकर इनके शरीर तक साफ सुथरे नहीं रह पाते।

अधिकतर इन बच्चों के हाथ पांव गन्दे होते हैं और उन्हें इस तरह गन्दी स्थिती में देखकर पुलिस वाले इन बच्चों का फायदा उठाते हैं और उनसे काम करवाते हैं। बालकनामा रिपोर्टर से रेलवे स्टेशन पर काम करने वाले 16 वर्षीय संदीप (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भईया जब हम रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने का काम या अन्य काम करते हैं तो पुलिस वाले भईया हमें काम करने के लिए बुलाते हैं। जब रिपोर्टर ने पूछा कि किस तरह का काम तो संदीप ने बताया कि वह हमसे झाड़ू लगवाते हैं और समय पड़ने पर अलग अलग प्रकार का काम करवाते हैं। अगर हम बच्चे काम करने के लिए मना करते हैं तो हमारे साथ गाली गलौज करते हैं। हमें बुरी तरह मारते हैं और यह जो पुलिस वाले होते हैं वह कांस्टेबल ही होते हैं। बालकनामा के रिपोर्टर ने इस बात को और अच्छे से और सच्चाई की तह तक जानने के लिए बच्चों के साथ गए तो पता चला कि सच में बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार हर एक रेलवे स्टेशन पर हो रहा है।



बच्चों ने इस अखबार के माध्यम से अपील की हैं कि पुलिसवाले रेलवे स्टेशनों पर काम कर रहे बच्चों के साथ जबरदस्ती करके उनसे अपना काम ना करवाएं और उनके साथ मारपीट न करें। क्योंकि बच्चों को मारना कानूनन अपराध है। हम बच्चे तो अनजान हैं। हमें प्यार से समझाकर सही दिशा दिखाएं, न कि हमारे साथ कठोरता से पेश आएं।

ठण्ड से बचने के लिए कुत्तों के पास लेटकर रात गुजारने को मजबूर बेघर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर फैजान, रिपोर्टर शम्भू

ठंड में सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसे जीते हैं और कैसे अपनी रात गुजारते हैं, इसके बारे में बालकनामा पत्रकार शम्भू ने जब खुले आसमान में पुल के नीचे और सड़कों के किनारे रहने वाले बच्चों से मिलने के लिए रात में दौरा किया तो देखा कि बच्चे ठंड में पुल के नीचे अपनी रात गुजार रहे हैं। एक ही कंबल में 4 से 5 बच्चे सो रहे हैं ताकि उन्हें ठंड न लगे ठंड से बच सकें। कुछ ऐसे बच्चे थे जो ठंड से बचने के लिए कुत्तों के साथ भी सोते हुए नजर आए।

जब शंभू ने बच्चों से बात की तो उन्होंने बताया कि जिस दिन उन्हें ज्यादा ठंड लगती है, उस दिन वे अपने कपड़े जला कर आग का प्रबंध करते हैं। उस आग के आस पास ही अपने सोने का इंतजाम करते हैं। ऐसा करने से उन्हें कम ठंड लगती है। वह इसी प्रकार अपनी पूरी रात गुजारते हैं। इसके साथ







ही पत्रकार ने कुछ बच्चों के माता पिता से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि यहां पर रैन बसेरे बने हुए हैं, लेकिन हमें उसमें रहना अच्छा नहीं लगता क्योंकि वहां पर कोई भी व्यक्ति किसी के पास भी शराब पीकर बगल में आकर सो जाता है। इस कारण हमें डर रहता है। हमें अपने बच्चों की चिंता रहती है। इसलिए हम रैन बसेरे में नहीं रहते हैं।

15 वर्षीय इस्लाम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब हम इस तरह खुले आसमान में सोते हैं तो हमें बहुत परेशानी होती है। क्योंकि जब आधी रात को जोरो की ठंड पड़ती है और उसके साथ ठंडी ठंडी ओस भी गिरती है। उस वक्त हमें बहुत ठंड लगती है और हमारी ठंड कंबल भी नहीं रोक पाता, क्योंकि ओस गिरने के कारण हमारा पूरा कंबल गीला हो जाता है। ऐसा महसूस होता है जैसे मानो कंबल को किसी ने पानी से भिगो दिया हो। गीले कंबल में और ओस पड़ती हुई कड़ाके की ठंड में पूरी रात हमारी दांतो की घिग्घी बंधी होती है। जब हमसे ठंड बर्दाश्त नहीं होती तो हम नशे का इस्तेमाल करते हैं। क्योंकि हमें नशे में ठंड महसूस नहीं होती। धीरे धीरे बच्चे नशा करने लग जाते हैं। यह एक बहुत बड़ा कारण है, जिसमें नए नए बच्चे नशे में लिप्त होने लगते हैं। इसी वजह से अधिकतर बच्चे ठंड में ही नशे की चपेट में आ जाते हैं।

13 वर्षीय जमशेद (परिवर्तित नाम) ने कहा कि हम सरकार से चाहते हैं कि वह हम बच्चों के लिए कोई महफूज जगह पर घरों की सुविधा दे, ताकि हम बच्चे इन कठिनाइयों से बच सके।

डंडे के बल पर घर भेजने का किया बंदोबस्त

बातूनी रिपोर्टर अमन, सोनू, रिपोर्टर शम्भू

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बालकनामा के पत्रकार ने रेलवे स्टेशन पर काम करने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। उस मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपने बारे में बताया कि कैसे बच्चे पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अलग अलग प्रकार का काम कर रहे हैं। इसके साथ बच्चों को हो रही समस्याओं के बारे में भी बात की, कि कैसे बच्चे स्टेशन पर कबाड़ा और बोतल बीनने का काम करते हैं, जिससे वे दो पैसे कमा कर अपना पेट भरते हैं। लेकिन आजकल उत्तर प्रदेश पुलिस बच्चों के साथ बहुत सख्ती कर रही है और बच्चों को जबरन रेलवे स्टेशन से मार मार के घर भेज रही है।

इस बारे में और जानकारी लेने के लिए बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव ने 16 वर्षीय तारिख (परिवर्तित नाम) से बात की तो तारिख ने बताया कि यह पुलिस वाले यू.पी. से रोज सुबह 10 बजे से 12 बजे के समय में पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आते हैं। यह पुलिस वाले ही बच्चों को जबरदस्ती पकड़कर उनके घर भेज रहे हैं। यह बात सुनने के बाद पत्रकार ने बच्चों से कहा कि



यह तो अच्छी बात है कि वह आपको अपके घर भेज रहे है। आपको इससे क्या परेशानी है तो तारिख ने बताया कि हमें इससे बहुत परेशानी हो रही है, क्योंकि पुलिस हमारे साथ जबरदस्ती करके जबरन हमें घर भेज रही है। अगर बच्चे घर जाने के लिए मना

अब तक 40 बच्चों को पहुंचाया घर

करते हैं तो वह बच्चों को बुरी तरह डंडे से मारते हैं।

इतनी सर्दी में डंडे की मार बच्चों से सही नहीं जा रही है। बच्चों को बहुत पीड़ा होती है और बताया कि दिनांक 17.1.16 की रात को पुलिस वाले कम से कम 40 बच्चों को पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से हटा चुके हैं। उसके बाद पत्रकार पेटी मार्किट में गए। वहां जाकर दूसरे बच्चों से भी इस मुद्दे पर बातचीत की 17 वर्षीय संतोष (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यू.पी.पुलिस बच्चों को घर भेज रही है। वह बच्चों के लिए सही कार्य कर रही है पर उनका बच्चों को घर भेजने का तरीका गलत है, क्योंकि पुलिस वाले रात को 10 बजे से 12 बजे के समय में बच्चों पकड़ कर ले जाते हैं, जब वह गहरी नींद में सो रहे होते हैं। ऐसे में बच्चों की नींद भी हराम हो जाती है, इस वजह से बच्चे डरके मारे सो भी नहीं पा रहे हैं।

मजदूरी करना बच्चों की मजबूरी ही नहीं, जरुरत भी है

बातूनी रिपोर्टर सुमित, रिपोर्टर पूनम

10 वर्षीय सुमित जो आगरा शहर की राजनगर बस्ती में रहता है। सुमित ने बताया कि मैं एक मोटर साईकिल रिपेयरिंग की दुकान में काम करता हूं। यहां मुझे बहुत परेशानी होती है क्योंकि कुछ लोग हमारे काम का फायदा उठाते हैं। अगर मेरा दुकानदार कहीं चला जाता है तो लोग मुझसे अलग अलग प्रकार का काम करवाते हैं जैसे गुटखा, सिगरेट, चाय इत्यादि मंगवाते हैं। अगर मैं उन्हें यह सब सामान लाकर भी दे देता तो वह मुझे जबरदस्ती गुटखा खाने को कहते



और मैं गुटखा खाने को मना करता हूं तो वह मेरे साथ जबरदस्ती करते। इस तरह मैं गुटखा भी खाना सीख गया जैसे मुझे गुटखा खाने की लत लग गई हो।

सुमित ने बताया कि मेरे पिता कुछ कामकाज नहीं करते और शराब पीते हैं। मेरी माता अकसर बीमार रहती हैं। हम तीन भाई बहन हैं और जिस घर में कोई कमाने वाला ही न हो तो उसका घर का खर्चा भला कैसे चलेगा। इस स्थिति में बच्चा या तो कोई कामकाज करता है या भीख मांगता या कबाड़ा बीनता है। ऐसे बच्चों के पास कोई अपनी खुद की पसंद नापसंद नहीं होती। इस तरह से बच्चों को मजबूरन काम करना पड़ता है। ऐसे में बच्चा स्कूल जाए या अपने पेट भरने के लिए कामकाज करे।

9 वर्षीय हेमन्त ने बताया कि मैं भी राजनगर बस्ती में रहता हूं। मेरे पिता जी का एक्सीडेंट हो गया था और इस हादसे में मेरे पिता जी उस लायक नहीं रहे कि कामकाज करके घर का खर्चा चला सके। मेरी एक छोटी दुकान है और मैं मोटर रिपेयरिंग की दुकान में भी काम करता हूं। जहां से मुझे रोज 25 रुपए मिलते हैं। मैं यह 25 रुपए अपनी माता को दे देता हूं। वह उन पैसों को घर के खर्चे में ले लेती है। हम बच्चे काम नहीं करना चाहते, लेकिन काम नहीं करेंगे तो खाएंगे क्या? हम बच्चों के भी कुछ सपने होते हैं, पर काम करना हमारी मजबूरी ही नहीं बल्कि जरूरत भी है।

एनसीपीसीआर के परामर्शक सुनील कुमार ने कहा बच्चों को सही दिशा दिखाने हेतु उठाये जायेंगे कदम

बातूनी रिपोर्टर तंजीम, रिपोर्टर शम्भू

निजामुद्दीन में चल रहे हार्म रिडक्शन सेंटर में नशा करने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उनका नशा छुड़ाने के लिए उन्हें अलग अलग कार्यक्रमों में व्यस्त रखा जाता है, जिससे उन बच्चों को कुछ समय के लिए नशे से दूर रखा जा सके और इस तरह उन्हें धीरे धीरे नशे से पूरी तरह आजाद किया जा सके। इन बच्चों की समस्याओं पर बातचीत करने तथा इनकी समस्या जानने हेत राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग से श्री सुनील कुमार जी आए। बढ़ते कदम के सदस्यों ने सुनील जी का स्वागत किया। उसके बाद सुनील जी ने बच्चों से बात की कि ज्यादातर बच्चे रेलवे स्टेशन पर ही क्यों आते हैं तो बच्चों ने बताया कि घर में हमारे माता पिता हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, इसी कारण से हम घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं, क्योंकि हम जब अपने घर से भाग कर आते हैं तो हमारे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं होता है। हमारे पास पेट भरने के लिए पैसे भी नहीं होते, जिससे हम अपना पेट भर सकें।

इसलिए हम रेलवे स्टेशनों पर आ जाते हैं, क्योंकि स्टेशन एक ऐसी जगह होती है जहां हमें खाने के लिए खाना आसानी से मिल जाता है तथा यहां पर हम कोई न कोई काम करके पैसे भी कमा लेते हैं। रेलवे स्टेशन पर हम बच्चों को बहुत समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। लोग हमें धुतकारते हैं, घृणा की नजरों से देखते हैं, कोई भी हम बच्चों से इज्जत से बात नहीं करता और बच्चों को पुलिस वालों के भी डंडे खाने पड़ते हैं। यह सब पीड़ा सहकर हम अपना जीवन व्यतीत करते है। स्टेशनों पर हम जो स्थिति देखते हैं, हम भी उसका शिकार हो जाते हैं। इस दौरान हम बच्चे नशे की चपेट में भी आ जाते हैं, क्योंकि रेलवे स्टेशनों के आसपास बच्चों को नशीले पदार्थ आसानी से मिल जाते हैं।

उसके बाद सुनील जी ने बच्चों की सभी बातों पर गौर करते हुए अपने बारे में बताया कि मैं रेलवे स्टेशन का सलाहकार बना था। सलाहकर बनकर मैंने बहुत काम किया, जैसे जो लोग इंटरनेट से ऑनलाइन टिकट बुकिंग करते थे, उस टिकट को मैं ही फाइनल करता था। रेलवे की ऑनलाइन टिकट बुकिंग सुविधा की शुरुआत मैंने ही की थी। इस सुविधा के चलते देशभर के लोग आज ऑनलाइन टिकट बुकिंग करते हैं। इस तरह मैंने बहुत कुछ किया है। अब मैं रिटायर हो चुका हूं पर मुझे बच्चों से बहुत स्नेह है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग से मुझे जुड़े केवल 15 दिन हुए हैं। मुझे इसलिए यह मौका मिला क्योंकि मैंने पहले रेलवे में बहुत काम किया है और इस वजह से ज्यादातर लोग मुझे जानते होंगे। इसलिए मुझे यहां आकर यह कार्य दिया गया है कि जिस जगह ज्यादातर बच्चे नशा करते हैं या अपने घरों से भागकर आ जाते हैं, उस जगह का मुझे स्केच बनाना है, जहां ज्यादा बच्चे पाए जाएंगे, वहां हर एक जगह पर एक एक कार्यकर्ता होगा। जो यह ध्यान रखेगा कि बच्चे अगर अपने घर से भागकर आ रहे हैं तो उन्हें उस जगह से हटाकर किसी दूसरी जगह रखा जाएगा, जहां वह बच्चे किसी भी गलत संगत में न फंसे। यह जानकारी प्राप्त करके बढ़ते कदम के सदस्य बहुत खुश हुए और कहा कि सर अगर ऐसा हो गया तो हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों की स्थिति में कुछ सुधार लाया जा सकेगा।

पानी भरने के दबाव में बच्चे हो रहे शिक्षा से दूर

बातूनी रिपोर्टर कुंदन, रिपोर्टर चांदनी

जवाहर कैंप कीर्ती नगर की झुग्गी झोपड़ियों में रह रहे कम से कम 100 बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं। क्योंकि उन्हें पानी भरना पड़ता है। इन बच्चों का पूरा समय पानी भरने में निकल जाता है और वह स्कूल नहीं जा पाते। बालकनामा की पत्रकार चांदनी ने कीर्ती नगर जवाहर कैंप में जाकर खुद इस समस्या के बारे में जाना। बच्चों से मिलकर बातचीत की और पूछा कि आप स्कूल क्यों नहीं जा रहे हो तो बच्चों ने बताया कि वह पानी की वजह से स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। क्योंकि हमें रोज जवाहर कैंप से कीर्ती नगर जाना पड़ता है पानी भरने के लिए। चांदनी ने पूछा कि जवाहर कैंप में ऐसे कितने बच्चे होंगे जो सिर्फ पानी की वजह से स्कूल नहीं जा रहे हैं। बच्चों ने बताया कि ऐसे यहां बहुत बच्चे हैं जो स्कूल नहीं जा रहे हैं। हमारे यहां बच्चों का स्कूल में दाखिला तो हो गया है पर वह स्कूल नहीं जा पाते हैं क्योंकि यहां पानी की बहुत जरूरत है। अगर हमने पानी नहीं भरा तो हमें पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा और हम पानी के बिना खाना कैसे बनाएंगे। फिर चांदनी ने पूछा कि आप क्या चाहते हो जिससे आप अपने स्कूल जा सको तो 13 वर्षीय अंकुर ने कहा कि जैसे सरकार ने हर घर में मीटर लगवाएं हैं वैसे ही वह पानी



के नल या पानी की टंकी घरों में लगवा दे, तो हम बच्चों के लिए बहुत अच्छा होगा। क्योंकि हमारे यहां पानी की बहुत परेशानी होती है और इस परेशानी की वजह से न तो हम अपने कपड़े धो पाते हैं और न ही नहा। हम बच्चे करें तो क्या करें। चांदनी ने कहा कि आपके यहां जब पानी की इतनी परेशानी है तो आपके यहां पानी का टैंकर तो आता होगा। तो अंकुर ने बताया कि पानी का टैंकर आता तो है पर वह टैंकर कीर्ती नगर में ही आता है और वह भी हमारे लिए बहुत दूर पड़ता है। अगर हम वहां पानी भरने के लिए चले भी जाते हैं तो हमें पानी नहीं मिलेगा, क्योंकि वहीं के लोग ही बहुत हैं पानी भरने वाले इसलिए हमें पानी नहीं मिलता अगर हम बच्चों के लिए सरकार कुछ करना चाहती है तो वह हमारे यहां पानी के नल या टंकी लगवा दें। हमे पानी की बहुत जरूरत है। हमें फिर इस तरह से पानी भरने के लिए रोज रोज इतनी दूर नहीं जाना पड़ेगा।

लखनऊ में बाल मजदूरी की बदरंग तस्वीर

पृष्ठ 1 का शेष

हाथों से बड़ी बड़ी मछलियां काटकर बेच रही हैं और उन्हें जरा भी भय नहीं लग रहा था। इनके आगे एक लोहे से बना तेज धार का बड़ा सा चाकू भी रखा हुआ था, जिससे यह लड़कियां मछली को काटकर बेच रही थी।

जिस उम्र में इन लड़कियों के हाथों में कॉपी, किताब और कलम होनी चाहिए, उस उम्र में इनके हाथों में बड़े बड़े चाकू हैं। जिससे यह बच्चियां मछलियां काटती हैं और बेचती हैं। इतनी कम उम्र में यह लड़कियां इतना खतनांक काम कर रही हैं। जब सलाहकार ने बच्चों से पूछा कि वह दिनभर क्या करते हैं तो उन्होंने बताया कि हम अपने माता पिता के साथ यह काम करते हैं, उसके बाद हम अपने घर का काम करते हैं। इस बात पर सलाहकार ने कहा कि आप स्कूल में पढ़ने क्यों नहीं जाते तो बच्चों ने कहा कि कोई हमें ठीक से नहीं पढ़ाता और न ही हमसे ठीक से बात करता है। हमारी कालोनियों में बहुत से लोग हमसे मिलने आते हैं और यह कहकर वापस चले जाते हैं कि हम आपको



पढ़ाने के लिए आएंगे, लेकिन अगले दिन कोई भी नहीं आता। कोई कोई अगर हमें पढ़ाने आते भी हैं तो वह ज्यादा दिन टिक नहीं पाते, क्योंकि वह हमसे घृणा करते हैं। इसलिए हमसे घुलमिल नहीं पाते।

वह कहते है कि हमारे अंदर मछली



की बदबू आती है, इसलिए कुछ बच्चे इस वजह से स्कूल भी नहीं जाते और वैसे भी अगर हम काम नहीं करेंगे तो खाएंगे क्या? बच्चों ने कहा कि अगर कोई हमें पढ़ाने आए तो हम जरूर पढ़ेंगे। यह जानकर सलाहकार को बहुत दुख हुआ कि अभी भी बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। जब उत्तर प्रदेश की राजधानी में ही बाल मजदूरी की ऐसी तस्वीरें देखी जा रही हैं, तो जरा सोचिए कि आसपास के जिलों में क्या हाल हो सकता है। कहते हैं कि अगर सच्चाई को परखा जाए तो हमें बच्चों के नजदीक जाकर उनके बारे में गहराई से पता लगाने से ही समस्या हल निकाला जा सकता है और अगर हम सबने एकसाथ मिलकर जमीनी स्तर पर काम किया तो इस बाल मजदूरी के मुद्दे को रोका जा सकता है। इसके साथ साथ बच्चों की जरूरत पर ध्यान देना होगा, जिससे उन्हें बाल मजदूरी से बचाया जा सकता है।

हर साल ठण्ड से बचने के लिए मुंबई की ओर बच्चे करते हैं पलायन

बातूनी रिपोर्टर रुस्तम, रिपोर्टर ज्योति

दिल्ली शहर में रह रहे पुल के नीचे बच्चे अखिर क्यों दिल्ली छोड़कर दूसरे शहरों में जा रहे है। इस बात पर छानबीन करने हेतु जानकारी के लिए बढ़ते कदम के सदस्यों ने अपनी विजिट के दौरान पता लगाया कि पुल के नीचे रहने वाले बच्चों की संख्या कम हो गई है। वह बच्चे दूसरे शहर में क्यों चले गए और कहां गए है। इस बारे में पता करने के लिए सदस्यों ने फिर से एक विजिट का दौरा किया और रह रहे बच्चों से मुलाकात की और उनसे पूछा कि बाकी बच्चे कहां गए हैं जो पुल के नीचे तुम्हारे साथ रह रहे थे तो बच्चों ने बताया कि हमारे साथ जो बच्चे रह रहे थे वह ठंड से बचने के लिए दूसरे शहर मुम्बई चले गए हैं और हम भी मुम्बई जा रहे हैं। पत्रकार से 16 वर्षीय अरसद ने बताया कि भईया बच्चों के लिए रात को रहने के लिए दिल्ली में कोई व्यवस्था नहीं है इसलिए बहुत सारे बच्चे दूसरे शहर मुम्बई और हरिद्वार तथा फरीदाबाद चले गए, क्योंकि दिल्ली में ठंड बहुत हो रही है। सुबह में जो कोहरा गिरता है तो बहुत तेज ठंड लगती है और ठंड से बचने के लिए हमारे पास कोई सुविधा नहीं है। इसलिए जहां पर ठंड कम होती है वहीं पर बच्चे जा रहे हैं और मुम्बई में इस वक्त ज्यादा ठंड नहीं है इसलिए बच्चे मुम्बई चले गए।



पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि तुम्हें कैसे पता है कि दूसरे शहर में ठंड कम होती है तो 13 वर्षीय राहुल ने बताया कि मुम्बई से कल एक व्यक्ति आया है, जिसने हमें बताया कि मुम्बई में ठंड बहुत कम है इसलिए हम बच्चे मुम्बई जा रहे हैं और वैसे भी जब दिल्ली में ज्यादा ठंड पड़ती है तो हम बच्चे हर साल ऐसे ही अपने आप को ठंड से बचाते हैं। दूसरे शहरों में जाकर कुछ दिनों के लिए बस जाते हैं जैसे ही दिल्ली में ठंड कम होने लगती है वैसे ही हम दिल्ली में अपनी अपनी जगहों पर वापस आकर रहने लगते हैं। उसके बाद 14 वर्षीय जावेद ने कहा कि देश तो 66वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है, मगर हम बच्चों के लिए अभी भी आजादी नहीं है। सरकार हमारी मदद नहीं करती है। हम बच्चे यही चाहते हैं कि सरकार हम बच्चों की मदद करे। हमारे लिए सुविधा प्रदान करें। ताकि हम अपने शहर को छोडकर दूसरे शहरों में ना जाएं। जरा सोचो जब बच्चे अकेले मुम्बई शहर में जा रहे हैं तो उनके साथ क्या क्या घटना होने की आशंका हो सकती है। कितने ऐसे बच्चे होंगे जो इस तरह सफर में शोषण का शिकार होते होंगे। इस बात पर अगर गौर किया जाए तो बहुत गंभीर मुद्दे हमारे सामने आएंगे और इस वजह से बहुत संख्या में पीड़ित भी होते हैं। इन मुद्दों पर हमारी सरकार गंभीरता से विचार करे और ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक सुविधाएं पहुचाएं।

नूरनबी की हिम्मत को सलाम

रिपोर्टर ज्योति



13 वर्षीय नूरनबी अपने माता पिता के साथ खादर में रहता है। उसके पापा का नाम जहरूल इस्लाम है और उसकी माता का नाम नूर खातून है। उसके पिता जी कोठी में काम करने जाते हैं और उसकी माता जी घरों में काम करने जाती है। नूरनबी खादर से लाजपत नगर मार्किट में कबाड़ा बीनने के लिए आता है। उसके बाद वह चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने भी जाता है। इसके साथ साथ वह बढ़ते कदम का होनहार सदस्य भी है एक दिन की बात है नूरनबी कबाड़ा बीनने के लिए लाजपत नगर मार्किट गया। लाजपत नगर की मार्किट में नूरनबी रोज देखता था कि एक 16 वर्षीय लड़की के साथ दो लड़के झेड़झाड़ करते थे, क्योंकि वह वहीं कबाड़ा चुनने के लिए आती थी और इस बात का वह दोनों लड़के फायदा उठाते थे। लेकिन जब उन लड़कों की हरकत हद से ज्यादा बढ़ने लगी तो नूरनबी के अंदर आत्मविश्वास जागा और दौड़ कर उन दोनों लड़को के पास गया और बोला कि तुम लोग इस लड़की को क्यों तंग करते हो तो उन्होंने मुझे एक छोटा नादान बच्चा समझते हुए कहा कि तुम यहां से भाग जाओ नहीं हम तुम्हें मारेंगे।

उसके बाद भी नूरनबी उनसे डरा नहीं बल्कि उनसे कहा कि मैं बढ़ते कदम का सदस्य हूं, अगर तुम उस लड़की को परेशान करना बंद नहीं करोगे तो मैं पुलिस को बुलाउंगा। लेकिन उन दोनों लड़को ने नूरनबी की बात नहीं मानी और उसे वह दोनों डराने धमकाने लगे। नूरनबी हार मान कर पुलिस को बुलाने ही जा रहा था और वह लाजपत नगर मार्किट के पुलिस स्टेशन से जैसे ही पुलिस स्टेशन की ओर बढ़ा वह दोनों लड़के पुलिस के डर से वहां से भाग गए। फिर उस लड़की ने नूरनबी का धन्यवाद कहा। क्योंकि वह दोनों लड़के उसे रोज मार्किट में आकर झेड़ते थे और अश्लील निगाहों से देखते थे। नूरनबी की हिम्मत और बहादुरी की वजह उस दिन के बाद से ही उन दोनों लड़कों ने लाजपत नगर मार्किट में आना बंद कर दिया अब वह लड़की बहुत खुश है।

कामकाजी बच्चों से ठेकेदार को हो रहा है मुनाफा

बातूनी रिपोर्टर दीपक, सोनू, रिपोर्टर ज्योति

सरोजनी नगर मार्किट में छोटे छोटे बच्चे पापड़ बेचने का काम रहे हैं। इन बच्चों से जब बालकनामा के रिपोर्टर मिले तो इन बच्चों में से एक बहुत पुराना बाल साथी आया, जो बालकनामा के रिपोर्टर के बारे में अच्छे से जानता था। उसने रिपोर्टर को सभी बच्चों का नाम परिचय करवाया। नाम परिचय करवाने के बाद उसने रिपोर्टर को बताया कि हम कम से कम 15 बच्चे ऐसे हैं, जिनकी उम्र लगभग 12 से 13 वर्ष तक की है। यह सभी बच्चे सरोजनी नगर मार्किट में पापड़ बेचने के लिए रोज आते हैं। हम बच्चों का एक ठेकेदार है जो बिहार से आया हुए है। वह हमसे पापड़ बेचने का काम करवाता है। वह हमें इस काम के प्रतिमाह दो हजार रुपए देता है इसलिए हम बच्चों को कैसे भी करके प्रतिदिन में सौ से दो सौ रुपए तक का पापड़ बेचना पड़ता है।



अगर हम बच्चे प्रतिदिन दो सौ रुपए का पापड़ नहीं बेच पाते हैं तो हमारा ठेकेदार हमारे प्रतिमाह की तनख्वाह कम कर देता है, जिससे हमारा बहुत नुकसान होता है। हम अपने ठेकेदार से पापड़ बेचने के लिए मादीपुर से लाते हैं। पत्रकार ने पूछा कि वह बच्चों से ही काम क्यों करवाता है तो बच्चों ने बताया कि वह बच्चों को ही पापड़ बेचने के लिए रखता है क्योंकि अगर वह बड़े व्यक्ति को पापड़ बेचने के लिए पगार पर रखेगा तो वह अपनी पगार के उससे ठेकेदार से ज्यादा पैसे लेगा। इसलिए वह बड़े व्यक्तियों को काम पर नहीं रखता । छोटे छोटे बच्चों से वह कम पैसो में ही काम करवा लेता है। जिससे ठेकेदार को बहुत मुनाफा होता है।

बच्चों ने जाना शिक्षा का महत्व



शम्भू

निजामुद्दीन सेंटर में रेलवे स्टेशन पर काम कर रहे 20 बच्चों ने ग्रुप सेशन मीटिंग करके महत्वपूर्ण निर्णय लिए कि सभी बच्चे नशे की लत को छोड़कर पढ़ाई करेंगे। इस मीटिंग में चेतना संस्था की कार्यकर्ता श्रीमती मंजुला जी ने सभी बच्चों को समझाया कि पढ़ाई करना क्यों जरूरी है। उसके बाद बच्चों ने खुद से ही सुझाव दिया कि हम जब पढ़ाई करेंगे तो हमें आगे आने वाले समय में एक अच्छी नौकरी मिलेगी, जिससे हम बच्चे अच्छे पैसे कमा सकेंगे। इन पैसों से हम अपना जीवन अच्छी तरह गुजार सकते हैं। हम बच्चों को कबाड़ा बीनना नहीं पड़ेगा, न ही हमें भीख मांगनी पड़ेगी और कोई भी व्यक्ति हमारे साथ दुर्व्यवहार नहीं करेगा। हमें सम्मान मिलेगा। उसके बाद बच्चों ने दो ग्रुप बना, पहले ग्रुप को कहा गया कि उन्हें ग्रुप में रहकर शिक्षा प्राप्त करने के बाद कैसा जीवन होता है उसके बारे में बताएंगे और दूसरा जो बच्चे पढ़ाई नहीं करते उनका जीवन कैसा होता है उसके बारे में बताएंगे। सभी बच्चों ने अपने ग्रुप में बैठकर इस बारे में चर्चा की। उसके बाद एक एक करके सभी ने अपनी अपनी बातें रखी कि पढ़ाई करने से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि हम बनी योजनाओं का फायदा ले सकते हैं, हमें सम्मान मिलेगा और कोई हमारा इस्तेमाल नहीं कर सकेगा। फिर दूसरे ग्रुप ने बताया कि जो बच्चे पढ़ाई नहीं करते उनका भविष्य बड़े होने तक एक जैसा ही रहता है वह जो काम करते हैं, बस उसी काम तक सीमित रह जाते हैं और दूसरे से मदद लेते हैं। वह ऐसा जीवन गुजारते हैं, जिसमे हर दिन रोजमर्रा से काटना पड़ता है। ऐसे में वह किसी भी योजना का फायदा भी नहीं ले पाते क्योंकि उनके पास जानकारी नहीं होती और इस कारण वह हर दिन किसी न किसी समस्या का शिकार होते रहते हैं।

लेकिन जब हम पढ़ाई लिखाई करते हैं, तब हम इन सभी परेशानियों से धीरे धीरे मुक्त होते जाते हैं। इसलिए हम सभी बच्चों को नशे की लत छोड़कर शिक्षा प्राप्त करना है और अपना जीवन उज्जवल बनाना है। फिर सभी बच्चों ने चर्चा करने के बाद निर्णय लिया कि वह धीरे धीरे अपना नशा छोड़ने की कोशिश करेंगे और मन लगाकर पढ़ाई करेंगे जितने भी बच्चे ओपन जगहों में रहते हैं, उन्हें भी शिक्षा के लिए जागरूक करेंगे और जो बच्चे नशा करते हैं, उन्हें भी नशा छोड़ने के लिए सीख देंगे। बच्चों ने यह निर्णय लेकर मीटिंग का समापन किया।

दिल्ली में राजस्थान का नजारा, पानी भरने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर संतोष, रिपोर्टर चांदनी

बालकनामा के पत्रकार चांदनी और शम्भू ने अपनी विजिट के दौरान देखा कि बदरपुर बॉर्डर में बसी एक बस्ती सांसी कैंप में रह रहे बच्चे पानी भरने के लिए बदरपुर बॉर्डर के इस पार से उस पार जा रहे थे, जहां कि सड़कों पर ट्रैफिक भी बहुत तेजी से चलता है। इसके बाद भी इन बच्चों के सर पर 15 से 20 लीटर पानी का भरा डिब्बा लदा रहता है जिसे यह बच्चे बदरपुर बॉर्डर से सांसी कैंप बस्ती तक पैदल लेकर आते हैं। यह देख पत्रकार चांदनी ने इन बच्चों से बातचीत की, कि तुम रोज इतनी दूर से पानी भरने क्यों आते हो, तो बच्चों ने अपनी परेशानी के बारे में बताया कि हमें सांसी कैंप में पानी नहीं मिलता क्योंकि यहां पानी की सुविधा नहीं है।

इसलिए हम सभी बच्चे पानी के लिए इधर उधर भटकते रहते हैं। 15 वर्षीय बबीता ने कहा कि सरकार को जब हमारी जरूरत पड़ती है तो वह हमारे पास वोट मांगने आ जाती है और वोट ले लेती है, लेकिन हमें क्या परेशानी आ रही है यह जानने की कोशिश नहीं करती। यहां के 10 साल की उम्र से लेकर 16 साल तक की उम्र के बच्चे सांसी कैंप से बदरपुर बॉर्डर पर पानी भरने को जाते हैं। हम बच्चों को कम से कम तीन रोड पार करने होते हैं और हर एक बच्चे के पास 20 लीटर के पानी के डिब्बे का भार उठाना पड़ता है। सभी आने जाने वाले लोग हमें देखते हैं। लेकिन कोई भी यह जानने की कोशिश तक नहीं करता कि कितनी मेहनत के बाद हम बच्चों को पानी मिलता है।

हमारे यहां पीने का पानी नहीं आता है और इसलिए हमें यहां पानी भरने आना पड़ता है। फिर भी हमें यहां आकर कभी कभी पानी भी नसीब नहीं होता है, जिस दिन हमें पानी नहीं मिलता उस दिन हम प्यासे रह जाते हैं या फिर गंदा पानी पीना पड़ता है। जिसकी वजह से हम बीमार पड़ जाते हैं। फिर पत्रकार ने कहा कि क्या यहां पानी का टैंक नहीं आता है तो बच्चों ने बताया कि टैंक नहीं आता हमने बहुत कोशिश की है इसके लिए पर कोई फायदा नहीं हुआ। अगर कभी कभी टैंक आता भी है तो महीने में एक बार आता है, लेकिन हम बच्चे बदरपुर बॉर्डर से ही पानी भरने के लिए जाते हैं। अगर हमारे यहां पर रोज पानी का टैंक आए तो हम बच्चों को इतनी दूर पानी भरने नहीं जाना पड़ेगा।

शैक्षणिक प्रमाण पत्र पाकर खुश हुए सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर तंजीम, राजा, रिपोर्टर शम्भू

आज निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के जीआरपी थाने में दिल्ली पुलिस, जीआरपी हजरत निजामुद्दीन के सहयोग से 'शैक्षिक प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम' आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीसीपी, रेलवे मेट्रो श्री मिलिंद दुबेरे, विशेष किशोर पुलिस इकाई की ऑफिसर सरिता जी, सीनियर स्टेशन मैनेजर श्री आनंद प्रकाश, कालका जी बाल कल्याण समिति के सदस्य थे। इस कार्यक्रम में निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर रहने व काम करने वाले लगभग 45 सड़क व कामकाजी बच्चों ने भाग लिया।

दिल्ली पुलिस व संस्था के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को आगे बढ़कर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करना था। ज्ञातव्य हो कि दिल्ली पुलिस के खोज कार्यक्रम के तहत 14 नवंबर, 2014 को बाल दिवस के अवसर पर इस केंद्र की शुरूआत की गई थी। इस अनूठे कार्यक्रम के तहत स्टेशन पर गुजर बसर करने वाले 20 से 25 बच्चे रोज जीआरपी पुलिस स्टेशन पर चेतना संस्था के ओपन बेसिक एजुकेशन के तहत पढ़ने के लिए जाते हैं और जीआरपी पुलिस इन बच्चों के लिए पढ़ाई हेतु उचित सुविधाएं मुहैया कराने में मदद कर रही है। इस कार्यक्रम के तहत बच्चों द्वारा डांस, गाना, नाटक व विभिन्न प्रकार के रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम के संचालन में एस.एच.ओ. श्री सुनील जी ने विशेष योगदान दिया। इन





कार्यक्रमों के द्वारा न सिर्फ बच्चों ने अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया, बल्कि सभा में बैठे सभी दर्शकगणों को अपने दांतों तले उंगलियां दबाने पर मजबूर कर दिया। 15 वर्षीय खुशी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मैं प्रमाण पत्र पाकर बहुत खुश हूं। अब मैं और पढ़ना चाहती हूं और आगे बढ़ना चाहती हूं। डीसीपी, रेलवे मेट्रो श्री मिलिंद दुबेरे ने कहा कि, "दिल्ली पुलिस पूर्ण रूप से बच्चों की सुरक्षा के लिए संवेदनशील है और दिल्ली पुलिस द्वारा इन बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। इस प्रकार के प्रयासों से हम इन बच्चों को अपराध की दुनिया से बाहर निकालकर देश का एक अच्छा नागरिक बनाना चाहते हैं। 16 साल का राजा (परिवर्तित नाम) जीआरपी थाने में चलाई जा रही एजुकेशन क्लासेस में पढ़ने जाता है। राजा ने बताया कि पहले मुझे पढ़ना भी अच्छा नहीं लगता था और पुलिस से भी बहुत डर लगता था। लेकिन अब मैं बहुत खुश हूं कि आज मुझे पुलिस के इतने बड़े ऑफिसर के हाथों से यह प्रमाण पत्र मिला है। अब तो मैं खूब मन लगाकर पढ़ाई करूंगा। बढ़ते कदम के पोषक श्री संजय गुप्ता ने बताया कि पुलिस व बच्चों के बीच का संबंध बहुत ही मैत्रीपूर्ण है। श्री संजय गुप्ता ने कहा कि यह अपने आपमें एक अनूठा मॉडल है और यदि यह प्रयास सफल रहा तो इस मॉडल को आसानी से दिल्ली के सभी पुलिस स्टेशनों में संचालित किया जा सकता है। विशेष किशोर पुलिस इकाई की ऑफिसर सरिता जी ने कहा कि मुझे बहुत खुशी है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे काम के साथ साथ पढ़ाई कर रहे हैं। हमें इन बच्चों का हौसला बढ़ाना चाहिए, ताकि वे यहां से निकलकर एक नए मुकाम तक पहुंच सकें।

मकान मालकिन के दुर्व्यवहार से बचाया यासमीन को

बातूनी रिपोर्टर यासमीन, रिपोर्टर चांदनी

15 वर्षीय यासमीन नोएडा सेक्टर 27 में अपनी माता के साथ किराए के मकान में रहती है। यासमीन के घर की स्थिति ठीक न होने के कारण वह अपनी माता के साथ कोठी में काम करने जाती है। जिससे वह अपने घर का किराया और खाना खर्चा करती हैं। चांदनी अपनी विजिट के दौरान यासमीन से मिली। यासमीन ने चांदनी से अपनी समस्या के बारे में बताया कि वह कुछ दिनों से बीमार है और वह जिस कॉलोनी में किराए के मकान में रहती है, उसका मकान मालिक का व्यवहार यासमीन के प्रति ठीक नहीं है, क्योंकि उसका मकान मालिक दारू पीकर यासमीन को गालियां देता है उसके



साथ बदसलूकी करता है, उसे धमकाता है और उसकी मकान मालकिन भी उसे बुरा भला कहती है। एक दिन तो उसने यासमीन को थप्पड़ भी मारा कहा कि अभी मकान खाली करो दो।

यह सुनकर यासमीन घबरा गई और कहने लगी, अगर मकान खाली कर दिया तो हम कहां जाएंगे। उसके बाद भी मकान मालकिन यासमीन पर गुस्सा होती रही। यासमीन ने यह सभी बाते चांदनी से बताई और कहा कि मैं क्या करूं। तो चांदनी ने यासमीन से कहा कि घबराने की कोई बात नहीं है, तुम डरो मत।

उसके बाद चांदनी ने 100 नम्बर पर फोन किया। पुलिस को बताया कि मैं सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संगठन से चांदनी बोल रही हूं। उसके बाद यासमीन की समस्या के बारे में बताया और मकान मालिक की शिकायत कर सभी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस आई और मकान मालिक को डांटा और कहा कि अगर आगे से ऐसा हुआ तो हम तुम्हें जेल ले जाएंगे। मकान मालिक के पापा ने यासमीन से माफी मांगी और कहा कि हमें माफ कर दो आज के बाद हम तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे। अब यासमीन को कोई परेशान नहीं करता। यासमीन ने बढ़ते कदम संगठन का धन्यवाद किया।

चांदनी ने वहां रह रहे सभी बच्चों को समझाया कि अगर आपको कोई भी व्यक्ति परेशान करे तो आप इसी तरह खुद से ही पुलिस को फोन करके सही जानकारी देकर अपनी मदद कर सकते हो। लेकिन याद रहे कोई भी आगे से आपको किसी भी तरह परेशान करे तो आप पुलिस 100 नम्बर या 1098 जो सिर्फ बच्चों के लिए है, यह दोनों नम्बर निःशुल्क हैं। यह जानकारी पाकर बच्चे बहुत खुश हो गए और कहने लगे कि आगे से हम बच्चे यह बात याद रखेंगे।

स्ट्रीट चिल्ड्रन के लिए पुलिस बनी सेंटा क्लॉज

बच्चों को घुमाया ताजमहल और बांटें गरम कपड़े

बातूनी रिपोर्टर रुबीना, सोनू, रिपोर्टर शम्भू

क्रिसमस की पूर्व संध्या पर आज पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर जीआरपी, दिल्ली पुलिस, पीपा वेव और चेतना संस्था के सहयोग से रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 40 बच्चों ने भाग लेकर और गरम कपड़े पाकर बहुत खुश हुए। इस अवसर पर इन बच्चों को डांस करने, गाना गाने, बातें करने और क्रिसमस की खुशियां मनाने का मौका मिला। सभी बच्चे यह अवसर पाकर बहुत खुश हुए।

ज्ञातव्य हो कि निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के 30 बच्चों, जिन्होंने ओपन बेसिक एजुकेशन की परीक्षा प्राप्त की थी, उन्हें निजामुद्दीन की जीआरपी पुलिस द्वारा चेतना संस्था के



सहयोग से आगरा का ताजमहल घुमाने ले जाया गया।

13 वर्षीय रूबीना (परिवर्तित नाम) ने कहा कि, "मैं भी आगरा का ताजमहल घूमने



गई और मुझे वहां जाकर बहुत अच्छा लगा। मेरा सपना था कि मैं भी कभी ताजमहल देखूं और मेरे इस सपने को जीआपी पुलिस ने साकार कर दिया।"

वहीं दूसरी ओर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आयोजित किए गए इस रंगारंग कार्यक्रम में पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने वाले 12 वर्षीय रूस्तम ने लोरी गाकर अपनी मां के प्रति अपना प्यार जाहिर किया तो उसे सुनकर इंस्पेक्टर सुजाता की आंखें नम हो गई।

इस कार्यक्रम में जीआरपी, दिल्ली पुलिस की इंस्पेक्टर सुजाता और ज्यूवनाइल वेलफेयर ऑफिसर श्री राजेंद्र कुमार जी ने सेंटा क्लॉज की भूमिका निभाते हुए 40 बच्चों को गरम कपड़े इनर, जैकेट, मोजे, टोपी इत्यादि गिफ्ट के रूप में दिए।

लखनऊ में बढ़ रही है सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या

पृष्ठ 1 का शेष

जा रहे हैं, क्यों सरकार आज भी नकामयाब है, जो बच्चों को बाल मजदूरी के चंगुल से आजाद नहीं करवा पा रही है।

सर्वे के दौरान निकल कर आए आंकड़े इस प्रकार हैं:-

(1) अकबर नगर कुकरेल में केवल 2500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 1000 बच्चे हैं और इन में से मात्र 10% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं, रिक्शा चलाते हैं, कारपेंट्री का काम करते हैं और कुछ बच्चे घरों में काम करते हैं और भीख मांगने जाते हैं।

(2) संजय गांधी पुरम में 500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 250 बच्चे हैं। इनमे से केवल 5% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं, घरों में काम और भीख मांगने जाते हैं।

(3) सईद नगर पुराना किला सदर फ्लाई ओवर के नीचे 200 लोगों की जनसंख्या है, इनमें से मात्र 14% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का, मजदूरी तथा घरों में काम करते हैं और भीख मांगने जाते हैं।

(4) चौक फूल मंडी बड़ा इमाम बाड़ा में 5000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 3500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 7% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का काम, मजदूरी, घरों में काम, भीख मांगने, शादी पार्टी का काम काम करते हैं।

(5) मूंगफली मंडी में 2500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 1500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 7.5% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मूंगफली बेचने का काम करते हैं।

(6) बालू अड्डा गोमती नगर में 3500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 2500 बच्चे है और इनमें से मात्र 8.3% बच्चे स्कूल जा रहे हैं बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम, मजदूरी और रिक्शा चलाने का काम करते हैं।

(7) के.के.सी.महावीर पुरी में 2500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 1500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 5% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का काम, मजदूरी, घरों में कामए शादी पार्टियों में काम करते हैं।

(8) रामपुर मोहल्ला नेहर किनारा में 1000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 700 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 14% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा का काम, मजदूरी, घरों में काम, भीख मांगना, शादी पार्टियों में काम करते हैं।

(9) चितवापुर खाटकियाना में 1500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 800 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 5.33% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मजदूरी और घरों में काम करने जाते हैं।

(10) चितवापुर पेजवा नेहर किनारा में 1500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 800 बच्चे हैं और इन में से मात्र 5.33% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मजदूरी और घरों में काम करने जाते हैं।

(11) हबीब नगर मोती झील में 5000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 3500 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 11.33% बच्चे स्कूल जा रहे हैं बाकी बच्चे कबाड़ा बीनने का काम करते हैं।

(12) पराग डेरी ट्रांसपोर्ट नगर में



1200 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 700 बच्चे हैं और इनमें से मात्र 4.66% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी उपले बनाने और जानवरों की देखभाल का काम करते हैं।

(13) बंसल बाग बंगला बाजार में 600 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 400 बच्चे हैं और इनमें से कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता।

(14) बंसल बाग बंगला बाजार सरम विहार नगर नंबर 1 में 500 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 3500 बच्चे हैं और इनमें से 7% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे मछली बेचने का काम करते हैं, कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और रिक्शा चलाते हैं।

(15) सरम विहार नगर नम्बर 2 में 8000 लोगों की जनसंख्या है, जिसमें 5000 बच्चे हैं और इनमें से 10% बच्चे स्कूल जा रहे हैं, बाकी बच्चे कबाड़ा बीनना, मजदूरी करना, भीख मांगना, रिक्शा चलाना और मार्किटों में मछली बेचने का काम करते हैं।

यह आंकड़े तो सिर्फ 15 बस्तियों के हैं, लेकिन शायद हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि हमारे पूरे देश में बच्चे कितनी संख्या में काम कर रहे होंगे। इन आंकड़ों से पता चलता है कि ज्यादातर बच्चे ही काम कर रहे हैं और उन बच्चों से काम करवाया जा रहा है।

बच्चों के हेल्पलाइन नंबर	चाइल्ड लाइन नंबर	पुलिस हेल्पलाइन नंबर	
	1098	**100**	ये दोनों ही नंबर टोल फ्री नंबर हैं। यदि आप किसी मुसीबत में हों तो दोनों ही नंबरों पर 24 घंटे में कभी भी फोन करके मदद ले सकते हैं

बेघर बच्चों को ठण्ड से बचाने के लिए गरम कपड़े बांटे

बातूनी रिपोर्टर संतोष, रिपोर्टर शम्भू







राजधानी दिल्ली में पड़ रही कड़ाके की ठंड से सड़कों, फुटपाथों, स्टेशनों व झुग्गी-झोपड़ियों में रह रहे बच्चों को बचाने के लिए दिल्ली के निजामुद्दीन, सराय काले खां और लाजपत नगर के सड़क एवं कामकाजी बच्चों को गरम कपड़े बांटे गए।

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के जीआरपी थाने के एस.एच.ओ. श्री सुनील कुमार ने स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को गरम कपड़े बांटे और कहा कि, ''संस्था द्वारा इन बच्चों के लिए किया जा रहा यह बहुत ही अच्छा प्रयास है। इससे न सिर्फ इन बच्चों को ठंड से राहत मिलेगी, बल्कि इन्हें बीमारियों से भी बचाया जा सकेगा।''

संस्था द्वारा 165 सड़क एवं कामकाजी बच्चों को गरम कपड़े इनर, टोपी, मोजे, जूते और जैकेट बांटे गए। गरम कपड़े पाकर 12 वर्षीय सीमा (परिवर्तित नाम) बहुत खुश हुई और कहा कि, ''मैं फ्लाईओवर के नीचे रहती हूं। हमारे पास गरम कपड़े नहीं थे, केवल एक पुराना कंबल है, जिससे हम अपना काम चला रहे हैं। लेकिन आज संस्था ने हम बच्चों को इतने सारे गरम कपड़े और जूते देकर हमें इस ठिठुरन से बचाने का बहुत ही अच्छा काम किया है।''

14 वर्षीय निजाम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि, ''वह इतनी ठंड में केवल एक पैंट व टीशर्ट में स्टेशन पर अपनी रात गुजार रहा था। वह यह कपड़े पाकर बहुत खुश है और कहता है कि अब मुझे इस कंपकपाहट से छुटकारा मिल जाएगा और ठंड से निजात मिल जाएगी।''

बढ़ते कदम के पोषक श्री संजय गुप्ता ने बताया कि, ''ठंड से बचना हर नागरिक का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन सड़कों, फुटपाथों व स्टेशनों पर रह रहे इन मासूमों की दास्तां तो यही बयान कर रही है कि किस कदर इस अधिकार की अवहेलना की जा रही है। संस्था द्वारा ठंड से बच्चों को बचाने के लिए यह एक छोटी सी शुरूआत है। हमें उम्मीद है कि अधिक से अधिक सड़क एवं कामकाजी बच्चों को इसका लाभ मिलेगा।''

तोता-मैना संवाद

मानव तस्करी व बंधुआ मजदूरी के मुददे पर उत्तर प्रदेश में हुई चर्चा

तोता : उड़ते उड़ते एक पेड़ की डाल पर बैठ जाता है और मैना से कहता है कि और सुनाओ मैना क्या खबर है... ?

मैं तो अपनी खबर तुम्हें बाद में सुनाऊंगी पहले तुम बताओ

तोता : अरे मैना खबरे तो बहुत धमाकेदार है इस बार ..... ?

मैंना : ऐसी कौन सी खबरे हाथ लगी है जो तुम इतना खुश हो रहे हो

तोता : खुश क्यों न हूं खबर ही इतनी अच्छी है। तुम्हें पता है मैं इस बार खबर लेने कहां गया था... ?

मैंना : मुझे नहीं पता तोता तुम्हीं बताओ कहां गए थे.. ?

तोता : इस बार मैं खबर लेने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में गया था। वहां पर मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी पर बहुत बड़ी मीटिंग आयोजित कि गई। इस मीटिंग में उत्तर प्रदेश के गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि और सरकारी विभागो के अधिकारी भी शामिल हुए।

मैंना : वाह तोता बहुत खूब जरा यह तो बताओ कि इस मीटिंग का मुख्य उद्देश्य क्या था.. ?

तोता : इस मीटिंग का मुख्य उद्देश्य था कि उत्तर प्रदेश को कैसे मानव तस्करी और बंधुआ मजदूर से मुक्त कराया जाए।

मैंना : तोता यह तो बड़ी ही अच्छी बात है क्योंकि इस मानव तस्करी में बच्चे और बड़े दोनों ही बड़ी संख्या में शमिल हो रहे हैं और शायद इस वजह से दिन पर दिन बाल मजदूरी की संख्या में भी बढ़ोतरी होती जा रही है।

तोता : यह तो बात एकदम सच है मैंना कि संख्या बढ़ती जा रही है मीटिंग में भी इस मुद्दे पर बहुत गंभीरता से चर्चा कि गई ?

मैंना : यह तो बडी दुख की बात है लेकिन तोता यह आंकड़े तो सिर्फ बिहार और उत्तर प्रदेश के हैं लेकिन जरा सोंचो हमारे पूरे देश में ऐसे कितने ही आंकड़े हैं जो हमारी सरकार के सामने नहीं आए है ?

तोता : हां मैना इसलिए तो यह मीटिंग कि गई है ताकि इस समस्या का समाधान किया जा सके ।श्रीमती नाहिद लारी खान (स्टेट कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स की सदस्य) उन्होंने कहा कि मॉडर्न स्लेवरी को तब तक जड़ से नहीं मिटाया जा सकता, जब तक हम सही दिशा में काम न करें। जब तक हम लोगों को इस बात की जानकारी नहीं देंगे कि यदि किसी बच्चे को किडनैप किया जाता है तो वो कैसे इसकी रिपोर्ट दर्ज कराएं और किस हेल्पलाइन नंबर पर फोन करके जानकारी दें। इसके लिए हमें अलग अलग प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम चलाने होंगे। उन्होंने कहा कि मैं आप सभी को आश्वासन देती हूं कि स्टेट कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स इसकार्य में पूरा सहयोग करेगा।

मैंना : अरे तोता छोड़ो भी यह तो सब कहने की बाते है लेकिन हकीकत में तो कुछ और ही होता है

तोता : मैंना तुम ऐसे कैसे कह सकती हो भला... ? तुम्हें पता भी है यह कार्य करने के लिए बहुत ही गंभीरता से चर्चा हो रही है क्योंकि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य श्रीमती रूपा कपूर जी ने कहा कि मॉडर्न स्लेवरी और बंधुआ मजदूरी पर रोकथाम करने के लिए हमें मानव तस्करी करने वाले लोगों को पहचानना जरूरी है क्योंकि तस्करी के शिकार लोगों के 46 प्रतिशत लोग उनकी ही जान पहचान के होते हैं। इसलिए हमें इसकी तह तक जाना चाहिए और पुलिस, कमीशन, गैर सरकारी संगठन, श्रम विभाग, एंटी ह्यूमन ट्रैफिंकिंग इत्यादि के साथ मिलकर काम करना होगा। उन्होंने बताया कि हमारे पास बच्चों को पुर्नवासित करने के लिए शेल्टर होम की कमी है और ऐसे बच्चों का पर्याप्त डाटा भी उपलब्ध नहीं है। इसलिए यदि उत्तर प्रदेश को तस्करी से मुक्त कराना है तो सबसे पहले इससे संबंधित नीतियों व कानूनों को जानना बहुत जरूरी है और "स्टॉप मॉडर्न स्लेवरी" की तर्ज पर एक सेंटर व हेल्पलाइन नंबर बनाया जाए, जिससे किसी भी समय मदद ली जा सके।

मैंना : हां तोता यह तो सच है कि इस मामले में ज्यादातर अपने ही जान पहचान व आसपास के लोग शामिल होते हैं जो इस कार्य को अंजाम देते हैं तथा बच्चों को भी बहला फुसलाकर गांवो और कस्बो से काम करने के लिए भेजते है और उन मासूम बच्चों को पता ही नहीं होता कि उनका किस प्रकार इस्तेमाल किया जाता है उन बच्चों से बेहिसाब काम कराया जाता है .. ?

तोता : हां मैंना तभी तो बच्चों का पता नहीं चल पा रहा है कि वह बाल मजदूरी कर रहे है या बंधुआ मजदूरी क्योंकि मानव तस्करी के साथ साथ बच्चे भी लाए जाते हैं जिनका पता नहीं चलता और वह इस तस्करी के चुंगल में आकर अलग अलग जगहों में काम करते नजर आते हैं।

मैंना : चाइल्डलाइन इंडिया फाउंडेशन के श्री अभिषेक पाठक जी ने बताया कि चाइल्डलाइन उत्तर प्रदेश के 32 जिलों में 24 घंटे काम कर रही है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ समय से जिस प्रकार से कानून व प्रशासन तस्करी को लेकर प्रोएक्टिव हुआ है, उसी प्रकार तस्करी करने वाले लोग भी बहुत प्रोएक्टिव हो गए हैं। धीरे धीरे वो तस्करी करने का तरीका बदल रहे हैं। उत्तर प्रदेश में तस्करी करने के लिए राजस्थान से लोग उस समय आ रहे हैं, जब खेतों में जुताई का काम चलता है। ऐसी ही एक घटना का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि अभी हाल ही में एक मामला ऐसा आया, जिसमें राजस्थान से लोग अपना ट्रैक्टर लेकर खेतों की जुताई करने आए और जब वो यहां से गए तो उस गांव की सात-आठ लड़कियां गायब हो गई। यह पहली बार नहीं हुआ था, इससे पहले भी ऐसी घटनाएं घटित हो चुकी थी। इस मामले ने तब तूल पकड़ा जब वहां से एक लड़की भागने में कामयाब हो गई और उसने जानकारी देते हुए बताया कि वो लोग उन लड़कियों को काम के बहाने से ले गए थे और वहां ले जाकर उन्हें जबरन शादी के लिए बेचने वाले थे। इसी प्रकार यदि क्रॉस बार्डर ट्रैफिकिंग की बात करें तो उसका नेचर भी बदल गया है। जो लोग बॉर्डर से बच्चे लेकर आते हैं, उनके इलाके बंटे होते हैं। ये लोग छोटे-छोटे समूहों में बंटकर समुदायों के बीच में रिश्तेदार बनकर रहते हैं और बच्चों को काम के बहाने से अपने साथ लेकर चले जाते हैं। यह सब कुछ पहले से ही प्लान होता है। इसलिए एक साथ उनको ट्रैक कर पाना मुश्किल होता है।

तोता : मैंना यह तो बहुत दुख की बात है ऐसे तो कई मुद्दे बढ़ते कदम के सदस्यों के सामने भी आए है पता है जब वह सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना कर रहे थे उस दौरान सदस्यों को पता चला कि सराय काले खां फ्लाई ओवर के नीचे 20-25 नए बच्चों को मजदूरी के लिए लाया जाता है और जो परिवार पुल के नीचे रहते है वहां से बच्चों के गायब होने की खबर भी आए दिन मिलती रहती है और यह बच्चें ज्यादातर उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगााल, आसाम से लाए जाते है जो अपने परिवारों के साथ में भी है और अकेले भी है। सलाहकार श्री विजय कुमार जी ने बताया कि हमारा संगठन सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए काम कर रहा है। हम राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की परेशानियों को रखते हैं। हाल ही में मैं जब अमेरिकन बार एसोसिएशन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की गई मीटिंग में भाग लेने लंदन गया तो मैंने देखा कि यह केवल हमारे देश की ही समस्या नहीं है, बल्कि पूरे विश्व की समस्या है। मैंने देखा कि वहां पर भी 14 से 16 वर्ष के बच्चों का ऐसा समूह है जो बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी के शिकार हैं। हम कितने सालों से बाल श्रम, बंधुआ मजदूरी, बाल विवाह, तस्करी जैसे मुद्दों पर काम कर रहे हैं, लेकिन अभी तक हम इसको जड़ से खतम नहीं कर पाए हैं। क्योंकि हमारे पास क्लीयर विजन नहीं है। इसके लिए हमें प्रशासन के साथ साथ समुदायों, व लोगों के बीच जाकर मीटिंग करनी चाहिए। बच्चों को इससे बाहर निकालने के लिए उनका सशक्तिकरण करना जरूरी है और इसके लिए हमारे संगठन के पास 9 सालों का तजुर्बा है और इससे कैसे निपटा जाए, इसके लिए योजना भी हैं।

मैंना : सलाहकार शन्नौ ने उदाहरण देते हुए कहा कि एक ही सिक्के के दो पहलू होते पहला वो जो बच्चा जरूरतमंद है और दूसरा वो बच्चा जो बंधुआ मजदूरी में फंसता जा रहा है तो हमे जरूरत है उस बच्चे के साथ काम करने को जरूरतमंद है क्योंकि पहला बच्चा वो ही होता है जो मजदूरी के चंगुल में बंध जाता है अगर इन बच्चों के लिए सरकार पूर्ण रूप से इनके अधिकारों को लेकर काम करे तो बच्चों को बचाया जा सकता है।

तोता : अरे मैंना सही में हमारे अधिकरियों को पहले उन बच्चों के लिए कार्य करना चाहिए जो जरूरतमंद है उनके बारे में जमीनी स्तर से काम करना होगा बच्चे क्या सोचते है उनकी क्या क्या जरूरते है इनके बारे में जानना होगा। और फिर कोई रणनीति बनानी होगी।

मैंना : हां तोता तभी तो श्री उपाध्याय जी ने कहा कि मीडिया को भी इस कार्य के लिए शामिल करने की जरूरत है। श्रीमती सेबा हुसैन जी ने कहा कि तस्करी केवल रेलवे स्टेशन तक ही सीमित नहीं है, बस स्टैंड भी इसके लिए उपयोग में लाए जाते हैं।

चाइल्डलाइन के श्री नाहिद जी ने कहा कि समय समय पर पुलिस, श्रम विभाग, चाइल्डलाइन, विशेष किशोर पुलिस इकाई और बाल कल्याण समितियों के साथ मीटिंगों और कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।

श्री सलीम जी ने कहा कि सबसे अधिक गरीब परिवार और अनाथ बच्चे ही तस्करी के शिकार हो रहे हैं। इसके लिए हमें राष्ट्रीय पारिवारिक योजना बनानी चाहिए।

श्री जितेंद्र यादव जी ने कहा कि सभी हेल्पलाइन नंबर जैसे 1098 इत्यादि को रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड, चौराहों इत्यादि पर डिस्प्ले करना चाहिए, जिससे जरूरत पड़ने पर लोग मदद ले सकें। जिले स्तर पर स्वास्थ्य और शिक्षा की योजनाओं से लोगों को जोड़ना चाहिए।

तोता : इस मीटिंग में बहुत से मुद्दो पर चर्चा की गई है अगर मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी के लिए सबने एक साथ मिलकर कार्य किया तो इस मुद्दे को सुलझाया जा सकता है इतना कहकर तोता और मैंना उड़ चले।

सभी पुलिस कर्मियों के लिए मिसाल बने श्री धर्मवीर

बातूनी रिपोर्टर विपिन, रिपोर्टर शम्भू

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के कांस्टेबल श्री धर्मवीर जी अन्य पुलिस अधिकरियों के लिए एक मिसाल बन गए हैं। वह सड़क एवं कामकाजी बच्चों के प्रति संवेदनशील हैं और बच्चों की मदद करने हेतु हमेशा तत्पर रहते हैं। श्री धर्मवीर जी बच्चों से बहुत स्नेह करते हैं, उनकी मदद करते हैं और उन बच्चों को स्टेशन पर काम करते हुए उन्हें शिक्षा से जोड़ने में बढ़ते कदम संगठन की मदद कर रहे हैं। बच्चे जब सुबह सुबह निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर अपना काम करने के लिए आते हैं तो उस वक्त श्री धर्मवीर जी बच्चों को नसीहत देते हैं कि वह पहले जी.आर.पी. थाने में चलाए जा रहे ओपन बेसिक ऐजूकेशन सेंटर में पढ़ने जाएं, उसके बाद अपना काम करें। वह समय समय पर बच्चों की मदद भी करते हैं। यह नसीहत देने की वजह से वर्तमान में बच्चे पहले सेंटर में पढ़ने जाते हैं, उसके बाद वह अपना काम करते हैं। इसके साथ साथ 10 से अधिक बच्चों को श्री धर्मवीर जी स्वयं पढ़ाते हैं।





उनका कहना है मुझे इस तरह बच्चों की मदद करना बहुत अच्छा लगता है। बच्चे तो ईश्वर का रूप होते हैं। मैं तो इन बच्चों को इसलिए पढ़ाता हूं क्योंकि मेरे जैसे कई ऑफिसर हैं जो बच्चों के साथ शोषण करते हैं, मगर मैं इन बच्चों को पढ़ाता हूं ताकि उनके दिल में भी बच्चों के लिए इसी तरह स्नेह हो। बढ़ते कदम के रिपोर्टर शम्भू ने इस बारे में बच्चों से पूछा तो बच्चों ने बताया की श्री धर्मवीर सर जी हमसे बहुत प्यार करते हैं। उनका कहना है कि वह दूसरे पुलिस अंकल की तरह बच्चों से घृणा नहीं करते। वरना ज्यादातर पुलिस अंकल हम बच्चों से पहले मारपीट या गाली गलौज से ही बात करते हैं। बिना वजह हमें डांटते हैं। श्री धर्मवीर सर जी का व्यवहार बच्चों प्रति बहुत अच्छा है। वह बच्चों से बहुत स्नेह के साथ बातचीत करते हैं और कभी कभी तो सर जी हमारे साथ खाना भी खाते हैं। अगर सभी पुलिस अंकल का व्यवहार बच्चों के प्रति संवेदनशील हो जाए तो हम पुलिस अंकल से बिना झिझके अपनी समस्याओं को बता सकते हैं। अपनी मदद ले सकते हैं।

श्री धर्मवीर जी ने कहा कि इस अखबार के माध्यम से मैं अपने प्यारे पाठकों से कहना चाहूंगा कि हमें बच्चों की इसी तरह मदद करने के लिए तत्पर रहना चाहिए और शिक्षा से जोड़ने के लिए उन्हें प्रेरित करना चाहिए।

बच्चों ने देखा साइंस म्यूजियम













बातूनी रिपोर्टर संदीप, रिपोर्टर शम्भू

डाइटल कंपनी बहुत बड़ी कंपनी है, जो गुड़गांव में है। इस कंपनी में काम करने वाले कुछ अधिकारी सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिलने आए। इस कंपनी के द्वारा लोगों को सलाह दी जाती है कि वह अपने बिजनेस को कैसे आगे बढ़ाएं और नए बिजनेस की किस तरह शुरूआत करें, कैसे बिजनेस के लिए काम करना है, जिससे बिजनेस में मुनाफा हो सके। अकसर जो लोग ऐसी बड़ी बड़ी कंपनियों में काम करते हैं उन्हें पता ही नहीं होता कि हमारे समाज में क्या हो रहा है, कितने ही लोगों को हर रोज भूखे पेट सोना पड़ता और न जाने ऐसे में सड़क एवं कमाकाजी बच्चों की क्या स्थिति है वह अपना जीवन कैसे जीते हैं। इसलिए डाइटल कंपनी के कार्यकताओं ने ठाना है कि वह एक साल में कम कम से एक दिन किसी एन. जी.ओ. होम या बच्चों के साथ अपना वक्त बिताएंगे।

इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु डाइटल कंपनी के 14 कार्यकताओं की तरफ से बढ़ते कदम के 30 सदस्यों को दिनांक 21.11.15 को साइंस म्यूजियम घुमाने के लिए ले जाया गया। इन 14 कार्यकताओं में से कुछ इंजीनियर थे और कुछ आकाउंटेंट थे। सभी बच्चे साइंस म्यूजियम में घूमने गए। वहां अलग अलग प्रकार का साइंस देखा, जिसे देखकर बच्चों को बहुत खुशी हुई तथा उन्हें बहुत तरह की जानकारी मिली। इस जानकारी को पाकर उनके अंदर पढ़ाई करने का जज्बा जागा। उन बच्चों ने डाइटल कंपनी के कार्यकताओं से कहा कि हम भी आपकी तरह पढ़ाई लिखाई करके आगे बढ़ना चाहते हैं तो श्री जतिन जी जो डाइटल कंपनी में इंजीनियर हैं उन्होंने बच्चों को सलाह दी कि आप सब अच्छी तरह अगर मन लगाकर पढ़ाई करोगे तो जरूर आगे बढ़ोगे और एक दिन बिजनेस मैन बनोगे।

बालकनामा सुर्खियों में





MESSAGE

08th December, 2015

The August - September, 2015 issue of Balaknama is very good. I am impressed with the coverage of diverse issues concerning street children. It is most heartening to note that the reportage is being done by the children themselves.

Being head of National Commission for Protection of Child Rights, mandated to protect the Rights of Children, I appreciate you for this endeavour and hope this will help in highlighting and resolving the problems faced by street children. On behalf of NCPCR, for the invaluable contribution you have made for our children I assure you of all possible help in the future.

Stuti Kacker



Limca Book of Records

National Record

Balaknama, an eight-page quarterly is the first Hindi newspaper brought out by street children covering issues concerning street children in north India since September 2003. Since October 2014, it is available in English also. The children are taught by the charity organisation **Childhood Enhancement through Training and Action (CHETNA)** based in Delhi.





front line magezine link . http:www.frontline.in/the-nation/notes-from-the-street/article8123570.ece?homepage=true

DNA news clipping https://youtu.be/7IKLL8kEwfQ

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है   इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

Issue – 55 April, 2016

बढ़ते कदम

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Price 2 rupees

BALAKNAMA

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to the given address – 31 Basement, Gautam Nagar, New Delhi – 110049
Ph. No. 011- 41644471
balaknamaeditor@gmail.com

Special issue on the occasion of 12th April, International Street Children Day

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

CAN YOU COMPENSATE FOR WHAT WE HAVE LOST?

STREET CHILDREN UNITED TO FEED TO UN GENERAL COMMENT



Reporter Chandni/Shanno

38 former or present street and working children (21 Male: 17 Female) from 8 different states of India and Nepal got united in Delhi to share their thoughts and perception to be feed into UN General Comment. This was a historic moment for any street child of the world.

Team Balaknama got especial invitation (all other media was restricted) to cover this even live. The consultation was organized by Consortium for Street Children and Plan India with technical support from NGOs Childhood Enhancement through Training and Action (CHETNA) and Concern for Working Children. We are presenting what has happened and has been said by children without chaining their words. We appeal all policy makers to take note of these important observations by children.



It's your world, not ours

City yours, footpath ours
Languages yours, curses ours
Price yours, work ours
Earning yours, labour ours
Medicines yours, illness ours
Play yours, spectacle ours
Government yours, thrashings ours
Life yours, death ours
Victory yours, lose ours

Poem written by Street Children from 'Ghar ho to Aisa' Yuva Mumbai

ISSUES RAISED ON THE PROTECTION BY THE STREET AND WORKING CHILDREN

Street and working children are the most vulnerable section of the world, they are facing a lot of threats in day to day life, in the fast life of the cities they are struggling to get two square meal, nobody is paying attention on them. They are being exploited from residing place to working place. For their survival these children pay high cost.

In these consultation participants children raise the following issues regarding the protection.

We are abandoned beaten by the other's and forced to do work, facing sexual exploitation, During the holidays rich children goes for trip and we goes to do work to support our families.We are the victims of the drug /substance abuse, peer violence also there. Due to the ignorance by the society we became the addict of drugs.

We are victims of the police violence, we are beaten frequently by the police, and police didn't listen to us. This attitude of the police makes us arrogant and pushes us into crime.



We are facing gender based violence and injustice, child marriage is common among the street and working children. Due to the ignorance and exploitation we children some time have suicidal thoughts or tendency, absence of NGOs, disability and citizenship or identity crisis also facing by us.

We are dropped out from the school due to the corporal punishment, and lack of community solidarity pushing us into the crime.

We work because we don't have opportunity to play, failure of agriculture, migration, hospitals deny helping to us for treatment.

continued on pg. 2

Photo courtesy- Plan India Communications

CAN YOU COMPENSATE FOR WHAT WE HAVE LOST?

BADHTE KADAM SHOWED GROUND REALITY TO UNCRC MEMBER

Talking Reporter Tanzeem
Writing Reporter Shambhu

Ms Yasmeen, member of U.N.C.R.C visited Sarai Kale Khan and Nizamuddin station in Delhi on invitation of Badhte Kadam-Federation of Street and Working children. Ms Jyoti, National Secretary Badhtce Kadam and member Tanzeem took her to night shelters, under flyover and railway station to give her idea of their conditions in which they live. Jyoti apprised her - "Children who have families live in night shelter but children who do not have their family are not allowed to live in night shelter so majority of the children stay under the flyover". After this Tanzeem called Payal a former rag picker and now a student of formal school to meet the member. 13 year old Payal shared- "I used to pick rag earlier but now I go to school every day from the time I got admission in a school with help of CHETNA NGO. This time I have stood second in my class". Jyoti then showed the status of children working at different places like restaurants, etc. After this U.N.C.R.C.'s member met Constable Dharamvir who teaches children at railway station, and then she was taken to open basic education centre being run jointly by G.R.P Police Station and CHETNA. The children who work on station and surrounding come there to study. Then member met with the GRP SHO to take his opinion. At last member were taken to peer to peer substance harm reduction center run by CHETNA and ipartner india. After the visit Ms Yasmeen Said:- "It is hard to note the conditions of street children, their situation and very tough life that these children are going through but it is over whelming to note that children are united to get their rights. I am happy to see how police is helping children, and children been sent to schools by NGO. Lots need to be done and this visit has given me lots of insights".



STREET CHILDREN CHEERS TEAM INDIA

Reporter Shambhu with lead reporter Tanzeem

Indian fans got crazy after seeing the wonderful inning played by Virat Kohli and M S Dhoni. Street Children are not different from this fans club. Badthe Kadam- A federation of street and working children also played cricket for solidarity and to cheer team India.

The event called 'Sadak Ki Googly' is a unique cricket tournament organized parallel to world cup since 2004 shared Jyoti- National Secretary Badthe Kadam.



40 street children surviving and leading difficult life at Railways stations lived moment like India Team for few hours. 10-10 over match was full of thrill and excitement. All of them have just one pray. Let India win the world cup 2016.

14 years old Rohit, a rag picker said " I am great fan of Virat Kohli, even many of his follow his hair style, his zeal inspires us to have patience even in odd conditions. We live without resources but still feels happy. I wish to meet Kohli one day. Rohit took 3 wickets in 3 over and gave 10 runs.

15 years old Ankit, a bottle picker said- Dhoni is my hero, till he is on crease no one can beat India. I have prayed, If India win, I will sacrifice my hair. I wish to play for team India one day. He made 34 runs in 10 runs

16 years old Raju, a vendor said " we are talented, but nobody invest on us, nobody knows you may get one Virat among us?"

16 years old Jyoti- The secretary of Badthe Kadam Said-" Street Children are great fan of team India. These children play very good cricket. We wanted to spread a message that Street Children are also Indian Citizen, and love its country. One day will come when they will get their due.

Children got trophy and had group pictures. "Street children are unpredictable and like a 'googly', if you give them right opportunity, the will take right turn in life or gets out of situation" - Said Chandni.

The winning team made 71 run in 10 over. Ankit received the man of the match.



Street Children united to feed to UN General Comment

CAN YOU COMPENSATE FOR WHAT WE HAVE LOST?

WE THE STREET AND WORKING CHILDREN'S DEMANDS FROM REST OF THE WORLD

Balaknama Reporter

You see us through the glass windows of your cars? Try to talk to us, atlest this much you can do

'World does not respond to us'. Why the rest of the word not listening to us? They should listen to us.

Count us and provide identity

We demand safe shelter, food and water

Police should be sensitized so that street children could live a fearless life, we should be provided a protective life to the children from the police beat and harassment.

There should be separate





and fast justice system for the children, help to children to live 'JEENE DO' (Let us live).

Birth registration should be provide to each street child, 100% enrollment of the street children in school should be ensure,

Child marriage should be stop, and law related to child marriage exercise properly, there should be special facilities and laws for disabled street children.

Please help us to find out the Parents of some of Street children,

Can we have shelter for children surviving near railway stations?

Street girls need more safety

Heath facilities should be provided to the street and working children.

Street children also have the right to play so government should provide such environment where they can play.

Child care center should be open for those children who are begging nearby the station. We want freedom from mosquitoes, spray should be there where children residing.

Allow us to use free access to public toilet facilities, as it eats lots of our money.

Rehabilitation center should be the substance abusive children and alcoholic parents.

Let the dependency of these children on NGOs reduced.

Parent of street children should get chance for study so that they value education

You always say, go to school and you will have good food? But food quality is not good.

BALAKNAMA SPEAKS TO UNCRC MEMBER

Reporter Chandni/Shanno

Balaknama speaks to member of UNCRC who attended this consultation. Balaknama Editor Chandni took interview of Smt. Yasmeen, member of U.N.C.R.C

Chandni asked her, "How do you work for children in U.N.C.R.C.?" She replied, "I have been working with children since very long and I realized that these children really require our help. We should really work hard for their rights as children are very important for us. I think that this is our responsibility to help these children for whatever they ask and share with us. We have been kept for taking care of their rights so we ensure that children do not get harmed by anything and we should work for them with full dedication."

"38 children participated in International meeting and spoke about their problems in front of you so what steps would you take for them after going from here?"



asked Chandni.

Smt. Yasmeen said, "We will have a meeting with 18 members of U.N.C.R.C. after returning from here where I will put forward all the problems of children in front of them. Then they will keep these problems in front of U.N.C.R.C. who will take cognition of children's problems. U.N.C.R.C. works for the rights of children and always takes good steps to help them so they will surely put efforts to remove children's problems discussed. Children can directly also write a letter to U.N.C.R.C. if they face any problem."



WHY THIS CONSULTATION?

Balaknama Reporter

There is no 'street children' like word in the UN international documents related to the children's rights, due to this street children are not getting specific attention by the authorities. So this consultation was organized by Consortium for Street Children and Plan India, with technical inputs from NGOs CHETNA and CWC for the members of UNCRC about the situation and issues of the street and working children. There were the following themes on which UN committee members considered.

- Right to association of the children : Article 15
- Right to special care and protection: with special focus on children without family support.
- Right to provisions including food, clothing, a safe place to live and to have you and your communities'
- What plans governments should make to make sure street children's rights are respected and to stop children having to live, work or spend lots of time on the streets: Including what you think you and the committee should tell governments to do make sure street children's rights are respected?

THE PROCESS-

Duration of the consultation was three days; it was organized in a systematic way and followed this process.

Child centered – the whole consultation focused the children with themes related to their rights and issues. Children were free to put their views



on the issue related to their life. Inclusive and Gender balanced- In this consultation total 38 (21 M: 17F) present or former street and working children participated, from eight different state to put their views. This was an inclusive and gender balance consultation in which both gender participated and discussed the street and working children issues.

Participatory with least adult endorsement- Children participated with their full potential in the consultation, and there was least endorsement by the adult people in the activities. Children put their view creatively in front of the members through role plays, balloon exercise, gallery walk, pictures, puppets etc. There were 8 simultaneous translations in local language.

FALSE ALLEGATIONS

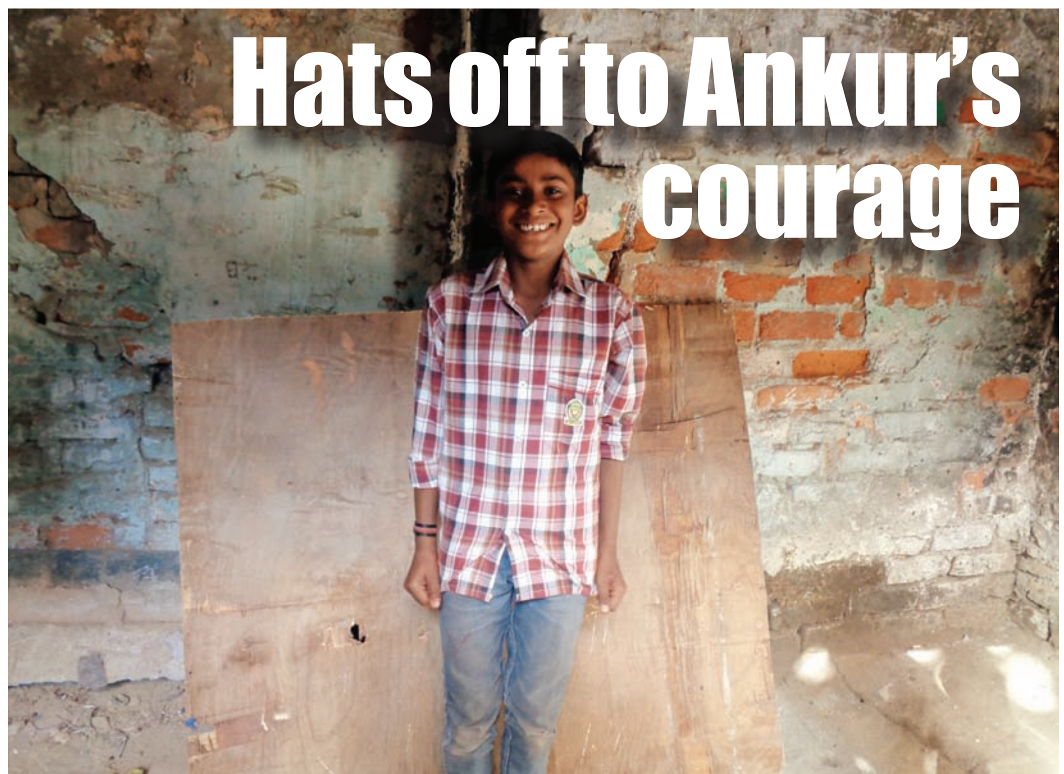
Children taking their lives



Talking Reporter Kanhaiya Reporter Jyoti

Small children are getting homeless due to false allegations of thefts put by their parents only on themselves. They are taking extreme steps of ending their lives due to these allegations. One such story is of 14 years old who was blamed of stealing gold from a house by his parents. He was badly beaten for this. This incident kept on haunting him the whole night and next day in anger he lied down on railway tracks to take away his life. His hands and legs were cut by a fast running train. He was immediately to taken to a Government hospital but he succumbed to his injuries in three days.
Children told Balaknama reporter, "Many children have to pay for their lives like this without their fault. We feel very bad when our own parents blame us for something we have not done." Balaknama reporter got to hear different types of such stories from many children. Other children added, "Our parents need to understand that we cannot commit these offences. They need to find out a solution for this so that we do not suffer for something which we have not done."

Hats off to Ankur's courage



Talking Reporter Ankur Reporter Jyoti

Slums of Jawahar Camp are near railway tracks. Children of the camp mosty play near those railways tracks. Once a 4 years old child came near the tracks while playing and 15 years old Ankur saw that a fast train was approaching on the same track. Without wasting a moment ankur ran towards the child and saved him. Child's mother thanked ankur for saving his child's life and said, "If you would not have been there today what would have happened to my child. You did not even think about your life. I am very grateful to you". Other people of slums hugged and thanked ankur and made him hero for that day. Ankur is also a Badhte Kadam member and is very good in studies.
Reporter Jyoti asked, "Ankur, How did you feel after saving that child?" Ankur said, "I love helping children and on growing up also I would like to help children in any way I can. My dream is to open a school for them".

DEVOID OF MOTHER'S LAP AND FATHER'S SUPPORT CHILDREN FACING HARDSHIPS

Reporter Chandni

15 years old Abhishek stays with his 10 years old sister and 8 years old brother in a dispensary. They do not have their mother and their father also does not stay with them. His father drinks a lot and does not even take care of their children. Abhishek's sister does not keep well. She is suffering from two three diseases. They are now even thrown out of the dispensary where they used to stay as it is being newly constructed. Abhishek needed money for the treatment of his sister so he joined somewhere to work but he was picked up by the police from there because of his low age and sent him in a home and was locked there. After few days some people got him free and brought him back to his place. Abhishek told Balaknama reporter, "I am too worried about my sister and there is no support from my father also." Reporter Chandni said, "Why don't you send your siblings to home?" On this Abhishek said, "No didi, I can never send them to a home. Once I was taken to a home by Police and that place was horrible. Homes are not good for children, my siblings cannot stay there." But after Chandni's explanation that all homes are not same, Abhishek decided to send his siblings to a home. Nearby people informed, "These children roam here and there whole day. They do not have anything to eat. Nobody helps them and we are also helpless as we do not have enough food to feed our children then what we can give them".



STRAY DOG, MY BEST FRIEND

Unique bonding between Street Boy and Street Dog

Reporter Shambhu

14 years old Faizan ran away from his home and came to Delhi because of being tortured by his parents. He started picking up rags on railway stations. One day when he was picking bottle at railway station he saw a small pup playing on the railway track on which a train was approaching. He quickly went down and saved his life. From then onwards the pup became his family. He started calling him Moti. Faizan eat, play and live with his dog like a family. They started understanding each other and cared for each other very much. Their bond became so strong that Moti the dog will take care of his rag collected by Faizan if he goes for some work. Moti would go everywhere with Faizan. Whatever Faizan would eat, he would give to moti also and they always eat together. Moti has also grown up with Faizan. They always remain together. Their bond of friendship has set an example and proved that voiceless also understands the language of love.



WHERE IS ROSHNI?

Honor fights over daughter's life

Reporter Chandni

This news is of around one and a half year back when 15 years old Roshni was taken away by a Bengali woman from her home in Noida sector 104 on pretext of getting her work as domestic help. Since then Roshni has never returned back to her home. Her parents have no information about where she is, what she is doing, how she is and still they are not even bothered. Our talkative reporter found out the reason behind roshni's parents carelessness about her and how could they sent her daughter with a stranger to work in others' homes for some small amount of money. Roshni's parents said, "A bengali woman lured us to allow our daughter to work with her in others' homes and made us believe that she would take care of our daughter like her own daughter. She also assured she will bring our daughter here weekly to meet us but this never happened since she has gone.

Reporter got to know that they never registered an FIR for their missing daughter because of a superstition prevailing in their area. A girl who is considered 'spiritual god' in their area informed them, that their daughter probably will be working in a house and she probably has been married. Roshni's parents considered this as a truth and broke all relations with her after knowing about her marriage so that they do not loose their honor in the community so never bothered to find her.





THEY ASK US SEXUAL FAVOR TO EMPLOYEE US AS 'DOMESTIC HELP'

Balaknama Bureau

Street children are compelled to sell bottles, pick rags and work as 'domestic help' but girls of Bhaat camp told the reality behind their decision of not working as 'domestic help'. Balaknama reporter Shambhu asked these girls, "Why do you pick up rags?" Girls said, "Picking rags is a compulsion for us because people who take us away with promises of giving us work in other houses asks us for other favors in return." 15 years old Sakko (name changed) said, "We may not get even Rs.2 by picking these rags but we will not do any other work as we do not feel safe there.

Sakko said, "Few days back a boy employed two three girls in a house but they had to pay a large amount for this work. The girls were sexually exploited by the boy. From then we are very scared and our parents also do not send us to other houses to work."

CHILD MARRIAGE VICTIMS, VICTIMIZED FURTHER

Girls getting married twice

Reporter Chandni

Street children as young as 5-6 year's of age getting married and is happening in Delhi. Parents are destroying these children's lives due to old rituals and traditions. Recently a family staying in a night shelter decided to marry off their young girl with a child of same age group. Parents do not even realize in their celebrations that how they are destroying their children's lives because of these old customs. These children are bearing the consequences of these customs when they grow up. Balaknama reporter Jyoti met 5 girls working in central market who have done second marriage according to their own wish now. Jyoti asked, "Why have you all got married again now?" Girls replied, "Our parents married us in our childhood, but we did not liked our grooms as they take drugs and abuse us badly. We do not want to stay with them so we have married other person now of our choice." Balaknama's talking reporter found out that the girls are not even happy in their second marriage too. They are still being abused the same way. Their families have broken off their relations with them because of their second



marriage and so now most of the girls have to stay alone after two failed marriages.

STREET CHILD SAVED MISSING CHILD

Talking Reporter Arshad and Reporter Jyoti

13 years old Arshad being Balaknama's talkative reporter helps other children also along with his own work. Recently only he helped a 14 years old missing child named Kishan found alone in Lajpat Nagar market and sent him to a shelter home with the help of an institution. Arshad found this child crying in the lajpat nagar market and asked him, "What happened? Why are you crying?" Kishan replied, "My parents beat me very much so I ran away from my home and reached here. I do not know anybody here." After listening to his problem Arshad took him to a nearby centre with the help of an institution. Centre's employees took him to take a centre home where he is studying well now. Kishan thanked Arshad for his great help because of which he is able to study now.



FRIENDSHIP ON STREETS

Story of two boys, helping each other

Reporter Jyoti

This is story of a strong friendship between 15 years Sandeep and 13 years Arshad. They both stay in Gadhi village and do work of picking up rags in Lajpat Nagar market.

Rag pickers due to their dirty clothing's and outer appearance get victimized by dogs in their way many a times. Same thing happened with these two friends once when they went to pick rags.

A dog started barking on both of them. Both got scared and started running away. Sandeep could run away but dog got hold of Arshad and bit him on his leg very badly. Though scared, Sandeep ran towards Arshad to save him and immediately rushed him to Safdarjung hospital in a rickshaw seeing him so badly bitten by dog. Arshad explained whole situation to the doctor. After listening to Arshad, doctor gave anti rabies injection to him. Sandeep saved Arshad and he is good now.



BADHTE KADAM – FEDERATION OF STREET AND WORKING CHILDREN

Reporter Vijay Kumar

We are glad to tell you that 12th April, 2016 is celebrated as street and working children day in whole world at a grand level. This is a day to be celebrated with all street and working children as on this day they get an opportunity to express themselves through various ways. Many people are working towards the betterment of street and working children at world level that is why we get to know about their conditions and how they are living their lives but we all have to come forward to work more and more for children rights and to make their future bright. On one hand when so many people are sympathetic towards street and working children and are doing great work for them but there are still many people who hate them, differentiate among them and even abuse them. Badhte Kadam was one of the campaigns started for street and working children by 35 street and working children on 9th July, 2002 for the rights of street and working children. They decided that they will make the world a better place to live for them, empower children to gain their own rights and make their voice reach to the whole world through Badhte Kadam. These children just never looked back and went on moving ahead by getting them registered in Limca world book of records. They showed the world that everything is possible by having the will power to do it. These children have shown their way working from streets but if we also change ourselves and show this street and working children the right direction then that day is not far when they would achieve their rights.

HORROR STORY OF DOORSTEP GARBAGE COLLECTION

Reporter Shambhu

Children of small age groups of 13 years do work of picking garbage from big flats. They climb upto 4th, 5th floor to get the big garbage's bag and carry them on their back to the lowest level. Balaknama reporter went to talk to such children. They said, "We collect garbage from 20 houses from 6am till 10am. We have to climb up the stairs and then carry down the bag full of garbage. We have to clean the stairs also if in case the garbage gets spilled by us on the stairs. The stinking smell of the garbage makes it difficult for us to breathe." They added, "We work in team of 4 children and we are allotted a specific area for collection of the garbage. Most of the children here belong to Bengal as their families are involved in cleaning work."

Balaknama reporter found out that around 15-20 children are doing this work in various groups. Reporter asked them, "Why do you all do this work when you have to face so many difficulties in it?" Children replied, "We are very poor. If we won't do this we would not have anything to eat." Reporter further inquired about the collected garbage, "What do you do with the collected garbage? Where do you take it?"

On this children said, "We collect the garbage from homes put it in a truck and deposit it near M.C.D garbage trucks. Our parents then differentiate the garbage into different parts to sell it at scrap shops. We get only a meager amount every month for collecting garbage from homes like Rs. 100/- from ground floor, Rs.150/- from second floor and Rs. 200/- to Rs.250/- for fourth and fifth floor and you know what if we ever take an off, people abuse us the next day and we have to pick double quantity of garbage so it's better for us to not take an off. Selling the garbage to scrap dealer help us earn a little bit more apart from picking garbage and help us to live well so we continue doing this work."



I WANT TO LIVE

Help save me my life

Reporter Chandni

I am 15 years old Asha (name changed). My home is near Old Delhi railway station. One of my family members got me into the habit of consuming drugs when I was just 9 years old. I was badly beaten up when my father got to know about my habit. He never allowed me to take drugs so I ran away from home and came to live at railway station. Now I have full freedom to consume drugs. My life has fully got into drug abuse; I cannot imagine my life without drugs. My parents have also lost all hopes of me returning back to them as when I do not get drugs to consume at home my behaviour becomes abnormal. I abuse my parents and fight with them for drugs. Station life is my life now surrounded



by drugs. We are two girls staying amongst 100 people and 20 children here at railway station. We have been sexually exploited many a times because of bad habit of consumption of drugs. I have married a guy also here who saves me from other nasty boys. I have fallen very sick due to consumption of whitener. There is all the time a dirty discharge from my private parts and I do not like to eat anything, I only consume drugs. I want to leave this habit but I have no one to help me, my parents will also not take me. I want to go to a home where I can leave this bad habit and my health also gets improved. I also want to live good life.

EDITORIAL

Dear Readers,

Greetings to Everyone!!

We thank our readers to give so much of love and affection to Balaknama newspaper because of which we are gaining popularity day by day. We feel very proud in bringing this month's special edition of Balaknama as we celebrate International Day for Street Children on 12th of April. Balaknama team got an invitation to participate in the consultation organized by Consortium for Street Children and Plan India, with technical inputs from NGO CHETNA and CWC. We bring real stories from lives of street children and will keep on doing it with your motivation. We would be glad if you will support our Balaknama in any way (small or big or financially), you can support us on the above given address and mail us at balaknamaeditor@gmail.com

The Editorial Board



CAME FROM BIHAR TO DELHI

Put into child labor on promise of education

Reporter Chandni

I am 15 years old Asha (name changed). My home is near Old Delhi railway station. One of my family members got me into the habit of consuming drugs when I was just 9 years old. I was badly beaten up when my father got to know about my habit. He never allowed me to take drugs so I ran away from home and came to live at railway station. Now I have full freedom to consume drugs. My life has fully got into drug abuse; I cannot imagine my life without drugs. My parents have also lost all hopes of me returning back to them as when I do not get drugs to consume at home my behaviour becomes abnormal. I abuse my parents and fight with them for drugs. Station life is my life now surrounded

CHILDREN DEVOID OF EDUCATION

Reporter Chandni

Around 25 children do not want to study in Government schools so Balaknama reporter Chandni went to inquire about the reasons behind this. Ankit and his elder sister rinki used to study in Government school. They were so fond of studying and it was shocking that they do not want to study in Government school anymore. Reporter Chandni asked many children about this. One of the children, Manisha said, "There is no proper education given in Government schools so we do not feel like studying." Other children added, "People at Government schools behave very badly with us. Teachers make us clean their tea utensils so we have stopped going to school". Chandni got to know various such incidents from different children. She asked them, "Why did you not compain about it to anybody?" Children replied, "Who should us complaint when our teachers themselves only beat



us? We were so scared that we left the school." Chandni asked, "Do you want to get admission in private schools then?" On this Ankit replied, "My parents got me and my sister Rinki admitted in a private school. We started going there also but after few months we had to leave that school also because of an incident. Once my teacher's mobile went missing. I was blamed for this theft by one of my classmate as he used to dislike me and coincidentally I was absent the next day so the suspicion fell on me. When I returned school the third day I was scolded badly by my teacher and she threatened me to get me arrested by the police. I cried and tried explaining her that I have not taken her phone but she did not listen and on being tortured everyday for the same thing, I and my sister left the school. Due to these reasons we are not going to any school. Other children are also scared because of these incidences and have lost all hopes of going to school. 20-25 students are not going to school because of the practiced ill behaviour in government schools."

Voice of the needy

Reporter Shambhu

11 years old, Shiva a visually impaired child stays with her mother, a brother and a sister. His father died two years ago because of which their financial situation deteriorated. His mother only earns Rs. 1500/- per month by working in other homes. His brother and sister goes to Government school and studies in class 3rd and class 4th respectively. His mother's income is not sufficient for their family so Shiva goes to sell pens in buses at Badarpur. Shiva also wants to study like his brother and sister but he is unable to do as his family is facing financial crunch and his mother's salary is not enough to take care of everyone in the family. Shiva says, "There are many children like me who have to work to help their families. I want Government to help such children so that they can also study. Please do help on this children's day."

Balaknama and Badhte Kadam getting limelight and attention

In last few months the team Badhte Kadam and Balaknama has gots lots of media attention and thanks to various supporters, now people are calling them at various occasions. We strongly believe that socialization gives new confidence to street and working children. Please keep supporting us. Following are few pictures and events.





250 members of Badhte Kadam has got admission in Government schools last year and doing well. Now they are becoming ambassador to share importance of saving.



Members of Badhte Kadam played holi with SHO GRP at Nizamudin



30 members of Badthe Kadam visited Jaipur and got a warmed welcome



Balaknama team was called to innugurate exhibition of paintings made by Mr Sanjiv Shaswati



Editorial meeting in progress, young Batuni reporter sharing a news



Balaknama getting popular among those who matters



Balaknama was invited to FM 92.7 in Big heros

PROUD MOMENT BALAKNAMA IN NEWS

Balaknama reported in Voice of America Link - www.facebook.com/voiceofamerica/videos/10153633579013074/?fref=nf



Balaknama team was invited at 92.7 Big FM. The famous RJ Richa Anirudh will do live show in program 'BigHeroes'



http://www.hindustantimes.com/videos/delhi/balaknama-delhi-s-street-children-inspire-change-with-newspaper/video-N8j0j7sNuAZ1TeZs3VxmvN.html



Street children are the unlikely team of heroes behind the world's most unique newspaper Balaknama http://social.yourstory.com/2016/04/balaknama/



Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact Translated by Richa Somvanshi.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. Balaknama acknowledges support of CHETNA NGO. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के ख़िलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 ख़बरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-55 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अप्रैल, 2016 | मूल्य - 2 रूपए

12 अप्रैल, इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे पर विशेष अंक

हमने जो खोया है, क्या लौटा पाएंगे आप ?

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने संगठित होकर यू. एन. सी. आर. सी. के सदस्यों के सामने रखी अपनी बात



बालकनामा रिपोर्टर

भारत के 8 विभिन्न राज्यों और नेपाल के 38 पूर्व एवं वर्तमान सड़क एवं कामकाजी बच्चों (21 लड़के और 17 लड़कियां) ने दिल्ली में संगठित होकर यू. एन. जनरल के सामने अपने विचार रखें। यह विश्व के किसी भी सड़क व कामकाजी बच्चे के लिए ऐतिहासिक क्षण था। इस कार्यशाला को लाइव कवर करने के लिए टीम बालकनामा को विशेष आमंत्रण मिला था, जबकि दूसरे मीडियाकर्मियों को इस कार्यक्रम में आना मना था। यह कार्यक्रम कंसोर्टियम फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित किया गया था और चाइल्डहुड एन्हांसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन (चेतना) ने सड़क व कामकाजी बच्चों के संबंध में तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

हम आपको बताएंगे कि इस कार्यक्रम में क्या हुआ और बच्चों द्वारा कहे गए वास्तविक कथन क्या थे..। हम सभी नीति निमार्ताओं से यह अपील करेंगे कि बच्चों द्वारा की गई इन महत्वपूर्ण टिप्पणियों पर ध्यान दें।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने सुरक्षा का मुद्दा उठाया

बालकनामा रिपोर्टर

सड़क व कामकाजी बच्चे विश्व के सबसे कमजोर वर्ग में गिने जाते हैं, उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत सारे खतरों का सामना करना पड़ता है। शहरों की भागमभाग भरे जीवन में उन्हें दो वक्त की रोटी के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है और कोई भी उनकी ओर देखने वाला भी नहीं होता है। रहने से लेकर काम करने वाली जगह तक उनका शोषण होता है। अपने अस्तित्व के लिए इन बच्चों को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

इस कार्यशाला में बच्चों ने अपनी सुरक्षा से संबंधित निम्नलिखित मुद्दे उठाए:-

हमें दूसरों के द्वारा पीटने के लिए छोड़ दिया जाता है, काम करने के लिए मजबूर किया जाता है और यौन शोषण का सामना करना पड़ता है।

छुट्टियों के दौरान बड़े घरों के बच्चे घूमने-फिरने जाते हैं और हम अपने परिवार का सहयोग करने के लिए काम पर जाते हैं।



हम नशीले पदार्थों और समूहों की हिंसा के शिकार हो जाते हैं। समाज द्वारा हमें अनदेखा किया जाने के कारण हम नशीले पदार्थों के आदी हो जाते हैं।

हम पुलिस की हिंसा के शिकार होते हैं, पुलिस हमें डंडों से पीटती है और हमारी बात नहीं सुनती है। पुलिस का यह व्यवहार हमें हठी बना देता है और हमें अपराधों की दुनिया में धकेलता है।

हमें लैंगिक हिंसा और अन्याय का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए आम बात है। हमें अनदेखा किए जाने और हमारा शोषण होने के कारण कभी कभी हमारे मन में आत्महत्या करने के विचार भी आते हैं। गैर सरकारी संगठनों की अनुपस्थिति में हमें विकलांगता, नागरिकता और पहचान को लेकर भी बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

शारीरिक दंड के चलते हम स्कूल छोड़ देते हैं और समुदाय की एकजुटता के अभाव में हमें अपराध की दुनिया में धकेल दिया जाता है।

हमें काम करना पड़ता है, क्योंकि हमें खेलने का अवसर नहीं दिया जाता है। फसल खराब होने, स्थानांतरण होने और डॉक्टरों द्वारा हमारी कोई सहायता न करना ये सब हमें समाज से अलग बनाते हैं।

Photo courtesy- Plan India Communications

जो हमने खोया है, क्या आप उसका खामियाजा भर सकते हैं ?

बढ़ते कदम ने यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों को जमीनी स्तर से कराया अवगत

बातूनी रिपोर्टर तंजीम, लेखक रिपोर्टर शम्भू

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के पास झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों सेयू.एन.सी.आर.सी के सदस्य श्रीमती यासमीन जी और श्रीमती ऐलीनार जी मिलने आए। सबसे पहले यह काले खां रैन बसेरे में सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिलने पहुंचे और यह जाना कि बच्चे किस स्थिति में रह रहे हैं, वह कैसे रहते हैं? रैन बसेरों में वह कैसे अपना जीवन बिता रहे हैं? बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति जो कि खुद रैन बसेरे में रहती है उसने यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों को बताया कि रैन बसेरे में कुछ फैमिली वाले बच्चे रहते हैं और कुछ बच्चे यहां ऐसे हैं जिनके साथ उनका परिवार ही नहीं है। इसलिए ज्यादातर बच्चे पुल के नीचे रहते हैं, पुल के नीचे सोते हैं क्योंकि बिना परिवार वाले बच्चे रैन बसेरे में नहीं रहने देते हैं। रैन बसेरे में सिर्फ वह बच्चे रह सकते हैं जिन बच्चों के परिवार हैं। फिर ज्योति ने उन बच्चों से यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों से मिलवाया जिन बच्चों का चेतना संस्था द्वारा स्कूल में दाखिला हुआ है। जब यू.एन.सी.आर.सी के सदस्य पायल से मिले तो 13 वर्षीय पायल ने बताया कि मैं पहले कबाड़ा बीनने का काम करती थी, लेकिन जब से मेरा स्कूल में दाखिला हुआ है तब से मैं रोज स्कूल पढ़ने जाती हूं और इस बार मैं अपनी कक्षा में सेकेंड आई हूं। यह जानकर श्रीमती यासमीन जी और श्रीमती ऐलीनार जी बहुत खुश हुई।



ज्योति ने बताया कि यहां सभी बच्चे बाल मजदूरी करते हैं और ढाबों व अन्य जगह काम करते हैं। उसके बाद उनकी मुलाकात श्री धर्मवीर जी से हुई। बच्चों यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों को जी.आर.पी थाने ले गए, जहां चेतना संस्था द्वारा ओपन बेसिक एजूकेशन सेंटर चलाया जा रहा है। यहां वह सभी बच्चे पढ़ने जाते हैं जो रेलवे स्टेशन पर काम करते हुए भी अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। बच्चों से मिलकर वह बहुत खुश हुए। उनका हौसला बढ़ाया और कहा कि इसी तरह आप पढ़ाई करते रहो। श्रीमती यासमीन जी ने जी.आर.पी. थाने के एस.एच.ओ श्री सुनील जी से बात की और पूछा कि आपको इन बच्चों के साथ काम करके कैसा लगता है, तो उन्होंने बताया कि मुझे बहुत अच्छा लगता है इन बच्चों के साथ काम करके। हमारा यही उद्देश्य रहता है कि जो बच्चे स्टेशन पर इधर उधर घूमते रहते हैं, वह शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए इन बच्चों को यह मौका दिया गया है कि जी.आर.पी. थाने में बच्चों के लिए जो सेंटर चलाया जा रहा है, वहां आकर पढ़ाई करें। इस सेंटर की शुरूआत 14 नवम्बर को की गई थी। पहले बच्चे पुलिस से डरते थे, लकिन जब से वह यहां आकर पढ़ाई करने लगे इनको कोई परेशानी नहीं होती है। हम से यह खुलकर बातचीत करते हैं। इससे बेहद खुशी की बात हमारे लिए और क्या हो सकती है। इस कार्यक्रम को और अच्छा बनाया जाए, यह हमारी शुभकामनाएं हैं।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने टीम इंडिया का बढ़ाया हौसला

लीड रिपोर्टर तंजिम, रिपोर्टर शंभू

टी-20 वर्ल्ड कप में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली द्वारा खेले गए शानदार मैच का खुमार लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। इनकी इस फेहरिस्त में सड़क व कामकाजी बच्चों की भी एक अच्छी खासी संख्या है, जो क्रिकेट के अत्यधिक प्रेमी हैं। इन बच्चों की इस बात को ध्यान में रखते हुए सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम के द्वारा टीम इंडिया का हौसला बढ़ाने के लिए ''सड़क की गुगली'' नाम से एक टूनार्मेंट मैच आयोजित किया गया।

संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने बताया कि सड़क की गुगली टूनार्मेंट की शुरूआत 2004 में विश्व कप के समकक्ष की गई थी।

यह टूनार्मेंट 40 सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ खेला गया, जो रेलवे स्टेशन पर विषम परिस्थितियों में रहकर अपना जीवनयापन कर रहे हैं। इस टूनार्मेंट को खेलकर उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उन्होंने जीवन के कुछ क्षण टीम इंडिया के लिए जिए हों। यह मैच 10-10 ओवर का खेला गया, जो बेहद रोमांच व उत्साह से भरा मैच था। मैच खेलते समय सभी खिलाड़ियों की बस यही प्रार्थना थी कि टीम इंडिया टी-20 वर्ल्ड कप जीत जाए।



10 वर्षीय कबाड़ा बीनने वाले रोहित ने कहा कि मैं विराट कोहली का बहुत बड़ा फैन हूं। रोहित ने बताया कि हम विराट कोहली की हेयर स्टाइल की नकल करते हैं, उनका उत्साह और आत्मविश्वास हमें बुरी परिस्थितियों में संयम रखने के लिए बहुत प्रेरित करता है। हम बिना किसी संसाधन के रहते हैं और फिर भी खुश रहते हैं। मैं चाहता हूं कि एक दिन मैं विराट कोहली से मिलूं। रोहित ने 3 ओवर में 10 रन देकर 3 विकेट लिए।

15 वर्षीय बोतल चुनने वाले अंकित ने कहा कि महेंद्र सिंह धोनी मेरे हीरो हैं। उसने कहा कि जब धोनी क्रीज पर होते हैं तो कोई भी भारत को हरा नहीं सकता। मैं प्रार्थना करता हूं कि भारत यह मैच जीत जाए, यदि भारत यह मैच जीत जाएगा तो मैं अपने सिर के बाल मुंडवा दूंगा। मेरी इच्छा है कि एक दिन मैं टीम इंडिया के लिए खेलूं। उसने 10 गेंदों में 34 रन बनाएं।

16 वर्षीय किताबें बेचने वाले राजू ने कहा कि हम भी टैलेंटेड हैं, लेकिन हमें कोई भी क्रिकेट खेलने के लिए आमंत्रित नहीं करता है, जबकि कोई भी यह बात नहीं जानता है कि हममें से भी एक विराट कोहली भी हो सकता है।

बढ़ते कदम की सचिव 16 वर्षीय ज्योति ने कहा कि सड़क व कामकाजी बच्चे टीम इंडिया के बहुत बड़े फैन हैं। ये बच्चे बहुत अच्छा क्रिकेट खेलते हैं। हम यह संदेश देना चाहते हैं कि सड़क व कामकाजी बच्चे भी भारत के नागरिक हैं, और वो भी देश से बहुत प्यार करते हैं। एक दिन ऐसा भी आएगा, जब उन्हें उनके अधिकार मिल जाएंगे।

चांदनी ने कहा कि इस मैच के दौरान बच्चों ने ट्रॉफी जीती और एक ग्रुप फोटो भी ली। सड़क व कामकाजी बच्चे भी गेंद की तरह होती हैं, यदि उन्हें सही दिशा व उचित मार्गदर्शन मिल जाए तो वे सही रास्ते पर चले जाते हैं और परिस्थितियों से बाहर निकल आते हैं।

विजेता टीम ने 10 ओवर में 71 रन बनाए। अंकित ने मैन ऑफ द मैच जीता।



Street Children united to feed to UN General Comment

हमने जो खोया है, क्या लौटा पाएंगे आप ?

सड़क व कामकाजी बच्चों ने पूरे विश्व के सम्मुख रखी अपनी मांगें

बालकनामा रिपोर्टर

आपने हमें अपनी कार के शीशे से देखा होगा? हमसे बात करने की कोशिश कीजिए, कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं।

पूरा विश्व हमारी बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है। क्यों पूरा विश्व हमें अनसुना कर रहा है? उन्हें हमारी बात सुननी चाहिए।

हमारी गणना हो और हमें हमारी पहचान मिले। हम एक सुरक्षित शेल्टर होम, साफ पीने का पानी और पौष्टिक भोजन की मांग करते हैं।

पुलिस को संवेदशील होना चाहिए, ताकि सड़क व कामकाजी बच्चे भयमुक्त जीवन जी सकें। हमें पुलिस की मार और शोषण से बच्चों को बचाना चाहिए और उनको एक सुरक्षित जीवन प्रदान करना चाहिए।

बच्चों के लिए अलग से और जल्द न्याय करने वाला प्रणाली तंत्र होना चाहिए, जो बच्चों को 'जीने दो' में मदद करे।





प्रत्येक सड़क व कामकाजी बच्चे को जन्म प्रमाण पत्र मिलना चाहिए और उनका 100 प्रतिशत स्कूल में प्रवेश हो, यह बात सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बाल विवाह पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और बाल विवाह को रोकने के लिए बनाया गया कानून का उचित पालन होना चाहिए तथा विशेष श्रेणी में आने वाले बच्चों के लिए इसमें विशेष प्रावधान होने चाहिए।

कृपया कुछ सड़क व कामकाजी बच्चों के माता-पिता को ढूंढने में उनकी मदद करें।

क्या रेलवे स्टेशनों के पास गुजर बसर करने बच्चों को पास में ही रहने के लिए एक शेल्टर होम मिल सकता है?

सड़क पर रहने वाले लड़कियों को अधिक सुरक्षा की अवश्यकता है।

सड़क व कामकाजी बच्चों को चिकित्सीय सुविधाएं भी प्रदान की जाएं।

सड़क व कामकाजी बच्चों को खेलने का भी अधिकार है, इसलिए सरकार द्वारा उन्हें ऐसा वातावरण प्रदान किया जाए, जहां वे खेल सकें।

चाइल्ड केयर सेंटर ऐसे बच्चों के लिए खोले जाएं, जो स्टेशन के पास भीख मांगते हों। हम भी मच्छरों से छुटकारा पाना चाहते हैं, इसलिए मच्छर मारने वाली दवा का छिड़काव वहां भी किया जाए, जहां हम रहते हैं।

हमें निःशुल्क सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग करने की सुविधा दी जाए, क्योंकि इस पर हमारा बहुत पैसा खर्च होता है।

नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले बच्चों और शराब पीने वाले उनके अभिभावकों के लिए रिहैबिलिटेशन सेंटर होने चाहिए।

बच्चों की निर्भरता गैर सरकारी संगठनों पर कम हो।

सड़क व कामकाजी बच्चों के माता-पिता को पढ़ने का अवसर मिले, ताकि वे शिक्षा की महत्ता को समझ सकें।

आप हमेशा कहते हैं कि स्कूल जाओ, वहां बहुत अच्छा भोजन मिलता है, लेकिन भोजन की गुणवत्ता बहुत खराब होती है।

बालकनामा की एडिटर चांदनी ने यून.सी.आर.सी. की सदस्य श्रीमती यासमीन जी से की बात

रिपोर्टर चांदनी और शन्नो

बालकनामा की एडिटर चांदनी ने यून०सी०आर०सी की सदस्य श्रीमती यासमीन जी का साक्षात्कार लिया। चांदनी ने उनसे पूछा कि आप यू.एन.सी.आर.सी के साथ मिलकर बच्चों के लिए कैसे काम करते हो?

तो उन्होंने बताया कि मैं बच्चों के साथ काफी समय से काम कर रही हूं और जब से मैंने इन बच्चों के लिए काम करना शुरू किया है, मैंने देखा है कि सच में इन बच्चों को मदद की बहुत जरूरत है। हमें इनके अधिकारों के लिए बहुत मेहनत करनी की जरूरत है। मैं हमेशा इनके लिए सोंचती हूं कि जो भी यह बच्चे हमसे चाहते हैं, अपनी बातों को हमारे सामने रखते हैं तो हमारा पूरा कर्तव्य बनता है कि हमें इनके लिए सच्चाई से काम करना चाहिए, क्योंकि हमें इनके अधिकारों के लिए काम करना है और यह बच्चे हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें इनकी मदद के लिए ही रखा गया है, ताकि बच्चों के अधिकार उन तक पहुंच सकें। हम इस बात का हमेशा ध्यान रखते हैं कि बच्चों को किसी भी तरह का नुकसान न पहुंचे।

चांदनी ने पूछा कि 38 बच्चों ने अंतर-र्ष्ट्रीय बैठक में आपके सामने बातचीत की और अपनी समस्याओं को आपके सामने रखा है तो आप यहां से जाने के बाद इन बच्चों के लिए क्या कदम उठाएंगी?

श्रीमती यासमीन जी ने कहा कि जब हम यहां से वापस जाएंगे तो सबसे पहले हमारी यू.एन.सी.आर.सी के सभी 18 सदस्यों के साथ एक बैठक होगी, जिसमें बच्चों के द्वारा कही गई बातों से मैं उन्हें अवगत कराऊंगी और जब उन तक आपकी बात पहुंच जाएगी तो वह सभी बच्चों की समस्याओं को यू.एन.सी.आर.सी के सामने जरूर रखेंगे। फिर यू.एन.सी.आर.सी बच्चों के लिए कुछ ना कुछ संज्ञान जरूर लेगी। बच्चों की समस्यओं को दूर करने के लिए अच्छे से काम किया जाएगा। यू.एन.सी.आर.सी बच्चों के अधिकारों का बहुत सम्मान करती है और उनके लिए वह हमेशा अच्छे कदम उठाती है। यदि बच्चों को कुछ समस्या है तो वह खुद भी यू.एन.सी.आर.सी को खत लिखकर भेज सकते हैं।





क्यों आयोजित की गई यह कार्यशाला

यहां निम्नलिखित विषय हैं, जिनको यूएन कमेटी के सदस्यों ने माना:-

बच्चों को सहयोग का अधिकारः (अनुच्छेद 15)

विशेष देखभाल एवं संरक्षण का अधिकारः परिवार के बिना सहयोग के जीवन व्यतीत कर रहे बच्चों पर विशेष ध्यान

भोजन, कपड़े के साथ साथ रहने के लिए सुरक्षित स्थान, चाहे वह समुदाय हो के प्रावधान का अधिकार

सरकार यह सुनिश्चित करे कि सड़क व कामकाजी बच्चों के अधिकारों का सम्मान किया जाए और सड़कों पर बच्चों का रहना व काम करना बंद किया जाए: जिसमें यह शामिल किया जाए कि आप सड़क व कामकाजी बच्चों के बारे में क्या सोचते हैं और समिति द्वारा सरकार को यह बताया जाए कि वह सुनिश्चित करे कि सड़क व कामकाजी बच्चों के अधिकारों का सम्मान हो।

बालकनामा रिपोर्टर

बच्चों के अधिकारों से संबंधित यूनाईटेड नेशन के अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों में 'स्ट्रीट चिल्ड्रन' नाम का कोई शब्द नहीं है। इस कारण से अधिकारियों द्वारा इनकी ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं दिया जाता है। इसलिए यह कार्यशाला कंसोर्टियम फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित की गई थी और चाइल्डहुड एन्हेंसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन (चेतना) और सीडब्ल्यूसी ने सड़क व कामकाजी बच्चों के संबंध में तकनीकी सहयोग प्रदान किया और यूएनसीआरसी के सदस्यों के सम्मुख सड़क व कामकाजी बच्चों की परिस्थितियों व मुद्दों को रखा।

प्रक्रिया

बालकनामा रिपोर्टर

यह कार्यशाला तीन दिनों तक चली और यह कार्यशाला एक व्यवस्थित तरीके से आयोजित की गई थी, जिसमें निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया.....

बाल केंद्रितः पूरी कार्यशाला बाल केंद्रित थी और उनके अधिकारों व मुद्दों पर आधारित थी। बच्चों अपने जीवन से जुड़े मुद्दों पर खुलकर बात की।

समावेश और लड़के-लड़कियों का संतुलित अनुपातः इस कार्यशाला में 8 विभिन्न राज्यों और नेपाल के 38 पूर्व एवं वर्तमान सड़क एवं कामकाजी बच्चों (21 लड़के और 17 लड़कियां) ने अपने विचार रखें। यह समावेशी और लड़के-लड़कियों के संतुलित अनुपात की कार्यशाला थी, जहां पर लड़के-लड़कियों दोनों ने भाग लिया और सड़क व कामकाजी बच्चों के मुद्दों पर चर्चा की।



कम से कम वयस्कों का योगदानः इस कार्यशाला में बच्चों ने पूरी क्षमता के साथ भाग लिया और कार्यशाला की गतिविधियों में कम से कम वयस्कों का योगदान रहा। बच्चों ने सदस्यों के सामने कलात्मक तरीकों जैसे- अभिनय, बैलून एक्सरसाइज, गैलरी वॉक, पिक्टर, पपेट इत्यादि के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यशाला में स्थानीय भाषा में अनुवाद करने वाले एक साथ 8 ट्रांसलेटर (अनुवादक) थे।

माता-पिता के लगाए झूठे आरोप के चलते बच्चे ने की खुदकुशी



बातूनी रिपोर्टर कन्हैया, रिपोर्टर ज्योति

यह एक ऐसी दिल दहला देने वाली घटना है, जिसमें अपने ही माता-पिता द्वारा बच्चे पर लगाए गए झूठे चोरी की आरोप के चलते उसने खुदकुशी कर ली। उसके घर में चोरी तो किसी और ने की थी, लेकिन उनके मम्मी पापा ने अपने ही 14 साल के नाबालिग बच्चे पर इसका इल्जाम डाल दिया कि तुम ने ही घर से सोना चोरी किया है। उस बच्चे ने अपने मम्मी पापा को बताया भी कि मैंने चोरी नहीं की है, फिर भी उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। और बहुत बुरे तरीके से उसकी पीटाई की।

यह बात उस बच्चे को बार बार परेशान कर रही थी, इसलिए वह दूसरे दिन गुस्से में आकर रेलगाड़ी की पटरी पर लेट गया और तेज रफ्तार से आने वाली रेलगाड़ी से उसका हांथ पांव कट गया। इस घटना के तुरंत बाद ही उसको सरकारी अस्पताल में एडमिट कराया गया, लेकिन तीन दिन बाद अस्पताल में ही उसकी मौत हो गई। इस बारे में बच्चों ने बालकनामा के पत्रकार से कहा कि ऐसे ही न जाने कितने सारे बच्चों को इस तरह की मुसीबताके का सामना करना पडता है। हम बच्चों को इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ती है। जब कि इस तरह के काम बच्चे नहीं करते हैं, लेकिन फिर भी हमारे मम्मी पापा हम पर ही शक करते हैं। हम बच्चों पर इसी तरह का झूठा इल्जाम लगाते हैं, जिससे हमें बहुत पीड़ा होती है। बालकनामा के रिपोर्टर ने इस बात पर और बच्चों से बातचीत की तो सभी बच्चों ने अलग अलग प्रकार की इसी तरह की समस्याएं बताई और कहा कि हमारे मम्मी पापा को अच्छे से समझाना पडेगा कि यह काम हम बच्चे नहीं करते हैं, तभी इसका हल निकलेगा।

अंकुर की हिम्मत को सलाम



बातूनी रिपोर्टर अंकुर, रिपोर्टर ज्योति

जवाहर कैम्प में बहुत सारी झुग्गी झोपड़ियां हैं। वहां पर रेलवे लाईन भी है और छोटे छोटे बच्चे अकसर वहां खेलते रहते हैं। एक दिन की बात है कि एक चार साल का बच्चा खेलते खेलते रेल की पटरी के किनारे आ गया और तभी अचानक से तेज रफ्तार से रेलगाडी आ रहा थी। जसै ही 15 वर्षीय अंकुर ने देखा कि एक चार साल का बच्चा पटरी के किनारे खेल रहा है और गाडी भी तेज रफ्तार में आ रही है तो अंकुर दौड़कर गया और उस बच्चे को वहां से हटाया।

जिस बच्चे की अंकुर ने जान बचाई थी, उसकी मम्मी रोते रोते अंकुर के पास आई और उसका धन्यवाद दिया। वह अंकुर से बोली कि अगर तुम आज मेरे बेटे को नहीं बचाते तो न जाने मेरे बेटे के साथ क्या हो जाता। तुमने अपनी जान को खतरे मे डालकर मेरे बेटे की जान बचाई है। इस तरह वहां उपस्थित सभी लोगों ने अंकुर को गले से लगा लिया और सब अंकुर की हिम्मत की सराहना करने लगे, सब कहने लगे कि यह हमारा हीरो है।

अंकूर बढ़ते कदम का सदस्य भी है और वह पढ़ने में भी बहुत तेज है। जब बालकनामा की पत्रकार ज्योति ने अंकूर से पूछा कि तुम्हें उस बच्चे की मदद करके कैसा लगा? तो अंकुर ने बताया कि मुझे बच्चों की मदद करना बहुत अच्छा लगता है और मैं बड़े होकर भी बच्चों के लिए ही काम करूंगा। मेरा सपना यही है कि मैं बच्चों के लिए एक स्कूल खोलूं।

न मां का आंचल है न बाप का साथ

पिता के रहते भी बच्चों को है सहारे की जरूरत

रिपोर्टर चांदनी

अभिषेक 15 साल का है। इसके दो छोटे भाई बहन हैं। इसकी बहन 10 वर्ष की है और भाई 8 वर्ष का है। यह तीनों भाई बहन एक डिस्पेंसरी में रहते हैं। अभिषेक की मां नहीं हैं, पापा हैं। लेकिन वह बहुत शराब पीते हैं और उनसे दूर रहते हैं। ज्यादातर वह बाहर ही रहते हैं। वह अपने बच्चों की देखरेख नहीं करते हैं। अभिषेक की बहन की तबियत बहुत खराब है। उसने बताया कि उसकी बहन को दो तीन बीमारियों ने जकड़ रखा है और पीलियां है। पेट में दर्द होता है। जिस डिस्पेंसरी में अभिषेक रहता था, उसे वहां से निकाल दिया गया, क्योंकि वह डिस्पेंसरी अब नई बन रही है।

अभिषेक यह देखकर कहीं दूसरी जगह काम पर लग गया, क्योंकि उसे अपनी बहन का इलाज कराना था। जब वह काम पर गया तो उसे पुलिस वाले पकड़कर ले गए, क्योंकि अभिषेक कम उम्र का है। इस वजह से उसे एक होम में ले जाकर बंद कर दिया। फिर कुछ दिनों



तक वह होम बंद रहा, उसके बाद कुछ लोग उसे वहां से छुड़ाकर वापस घर ले आए। जब वह वापस घर आया तो वह इस बात से बहुत परेशान है कि वह क्या करे। उसके पापा को अपने बच्चों की कोई परवाह नहीं है। अभिषेक ने अपने भाई बहन के बारे में जब बालकनामा की रिपोर्टर चांदनी को बताया तो चांदनी ने कहा कि आप अपने बहन भाई को होम में डाल दो। यह सुनकर अभिषेक ने कहा कि नहीं दीदी मैं अपने भाई बहन को होम में नहीं भेजूंगा, क्योंकि पुलिस वाले पहले मुझे वहां लेकर गए थे। वो जगह बच्चों के लिए अच्छी नहीं है। वहां पर हम बच्चों के लिए जंगल सा है। वहां मैं अपने भाई बहन को नहीं भेज सकता। क्योंकि हम वहां नहीं रह सकते हैं।

फिर चांदनी ने कहा कि सब होम एक जैसे नहीं हैं। सब होम अलग अलग तरह के होते हैं। यह बात सुनने के बाद अभिषेक अपने भाई बहन को होम भेजने के लिए तैयार हो गया और कहा कि ठीक है। मैं अपने भाई बहन को होम में भेज दूंगा उसके बाद इस बारे में चांदनी ने वहां के आस पड़ोस के रहने वाले लोगों से बातचीत की तो वहां के लोगों ने कहा कि यह बच्चे पूरे दिन यहां से वहां घूमते रहते हैं और इन बच्चों को खाना खाने की बिल्कुल फिक्र नहीं होती। इनकी देखरेख करने वाला कोई नहीं है और न ही इन बच्चों की कोई मदद करता है। लोगों का कहना है कि हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम इन बच्चों की मदद कर सकें और वैसे भी हमारे बच्चों के खाने पीने के लिए नहीं है तो हम इन बच्चों का क्या ध्यान रखेंगे।

मोती और फैजान का अनोखा रिश्ता

रिपोर्टर शम्भू

यह कहानी 14 वर्षीय फैजान की है। फैजान के माता पिता उसके साथ बहुत मार पीट करते थे। इस वजह से फैजान तीन साल पहले अपने घर से भागकर दिल्ली आ गया था। यहां आकर वह कबाड़ा बीनने का काम करने लगा। एक रोज जब फैजान स्टेशन पर बोतल बीन रहा था तो उसने देखा कि एक छोटा सा कुत्ते का बच्चा ट्रेन की पटरी पर खेल रहा था और उस ट्रेन्ज की पटरी पर सामने से टेञ्न आ रही थी। फैजान ने टेञ्न की पटरी पर से उस कुत्ते के बच्चे को उठा लिया और उसकी जान बचा ली। उस दिन के बाद से उस कुत्ते के बच्चे के साथ फैजान ने अपना परिवार बना लिया।

फैजान उस कुत्ते के बच्चे को मोती कहकर पुकारता है। जैसे हम सभी अपने परिवार के साथ रहते हैं, उठते बैठते हैं, खाते पीते हैं और अपने परिवार का ख्याल रखते हैं, वैसे फैजान के पास ऐसा परिवार नहीं है। इसलिए फैजान ने मोती को ही अपना परिवार बना लिया। मोती और फैजान का रिश्ता एक परिवार की तरह बन चुका है। वह एक दूसरे की बातों को समझते हैं। मोती फैजान का बहुत ख्याल रखता है। उन दोनों का रिश्ता इतना मजबूत हो गया है कि जब फैजान कहीं चला जाता है तो मोती के रहते फैजान का



उठाया कबाड़ा कोई छू भी नहीं सकता। फैजान जहां जाता है, मोती भी उसके साथ जाता है। जब फैजान को भूख लगती है तो वह खुद जो खाना खाता है वह मोती को भी खिलाता है। यह दोनों एक साथ खाते हैं, उठते बैठते हैं और हमेशा साथ में ही रहते हैं। फैजान के साथ साथ मोती भी बड़ा हो गया है। इनकी दोस्ती देखकर तो यही लगता है कि बेजुबान भी प्यार की जबान समझते हैं। फैजान और मोती का यह छोटा सा परिवार अच्छी दोस्ती की मिसाल है।

आखिर कहां गई रोशनी ?

डेढ़ साल से लापता रोशनी की मां बाप ने भी नहीं ली सुध

रिपोर्टर चांदनी

यह मामला लगभग डेढ़ साल पहले का है। नोएडा के सेक्टर 104 में रहने वाली 15 साल की रोशनी एक बंगाली औरत के साथ कोठियों में काम करने के बहाने ले जाई गई थी। रोशनी ने जिस दिन अपने कदम घर से बाहर निकाले उस दिन से आज तक उसने अपने घर में कदम नहीं रखे। रोशनी कहां गई ? कहां है ? किस हालत में है ? क्या कर रही है ? इन सभी बातों से उसके माता पिता अंजान और बेफिक्र हैं। अपनी बेटी की ओर मां बाप की ऐसी लापरवाही बहुत कम देखने को मिलती है कि कैसे उसके माता पिता ने एक अंजान औरत के सााथ सिर्फ पैसों की खातिर अपनी मासूम बेटी को कोठियों में काम करने के लिए जाने दिया।

जब हमारी बातूनी रिपोर्टर ने इस बात की खोज बीन की तो पता चला कि रोशनी के माता पिता ने एक बंगाली औरत की बातों के बेहकावे में आकर अपनी बेटी को उसके साथ कोठियों में काम करने के लिए जाने दिया था। उस औरत ने रोशनी के माता पिता को यह विश्वास दिलाया था कि रोशनी मेरी बेटी जैसी है और मैं इसका पूरा ख्याल रखूंगी। हर हफ्ते आप से मिलवाने लेकर आती रहुंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ हफ्ते दर हफ्ते गुजरते गए महीनो से लेकर साल में बदल गए। लेकिन रोशनी अपने घर लौटकर नहीं आ पाई। इतनी बड़ी बात होने के बाद भी उसके माता पिता ने पुलिस में एफ.आई.आर तक दर्ज नहीं करवाई और अंधविशवास के चक्कर में पड़े रहे।

बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि उनकी बस्ती में एक लड़की के ऊपर देवी आती हैं। उनसे जो पूछो उसका सही जवाब देती हैं। जब रोशनी के माता पिता ने अपनी बेटी की गुमशुदगी के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि रोशनी एक घर में खाना बना रही है और जोर जोर से रो रही है। उसके माता पिता को यह भी पता चला कि रोशनी की शादी किसी लड़के के साथ करा दी गई है। जैसे ही उन्हें रोशनी की शादी के बारे में पता चला तो उन्होंने उसकी तलाश बंद कर दी, ताकि बिरादरी में उनकी नांक न कटे।





शोषण से बचने के लिए ठाना नहीं करेंगे कोठियों में काम

बातूनी रिपोर्टर सक्को एवं रिपोर्टर शम्भू

सड़कों, फुटपाथों व झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चे कबाड़ा बीनने एवं कोठियों में काम करने और बोतल बेचने का काम करते है, क्योंकि काम करना इनकी मजबूरी है, लेकिन भाट कैंप में काम करने वाली लड़कियों के साथ कुछ ऐसा घटित हुआ कि उन्होंने कोठियों में काम करने से मना कर दिया। इसके पीछे उनकी बहुत बड़ी मजबूरी थी। वो कोठियों में काम नहीं करना चाहती थी और इसके पीछे की सच्चाई उन्होंने बालकनामा के रिपोर्टर शम्भू को बताई। जब शंभू ने कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों से बात की और उस वजह का पता लगाया कि आखिर किस कारण से ये लड़कियां कोठियों में काम करने की बजाए कबाड़ा बीनने जाती हैं तो उन्होंने बताया कि कबाड़ा बीनना हमारी मजबूरी है। हम पहले कोठियों में काम दिलाने के बहाने ऐसे लोगों के बहकावे में आ चुके थे, जो काम दिलाने के बहाने हमसे कुछ और ही उम्मीद कर रहे थे।

15 साल की सक्को (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमें भले ही दो रुपए भी न मिलें, लेकिन हम कबाड़ा ही बीनेंगे और कोई काम नहीं करेंगे क्योंकि इस काम में हम अपने आपको सुरक्षित महसूस करते है। शन्नो (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भईया कुछ महीने पहले एक लड़के ने दो तीन लड़कियों को कोठियों में काम पर लगवाया था, लेकिन उन लड़कियों को कोठियों में काम करने की वजह से बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। जिस लड़के ने उन लड़कियों को काम पर लगवाया था, उन्होंने उनके साथ जबरदस्ती की। इस कारण हम सभी लड़कियां बहुत डर गई हैं और हमारे माता पिता भी हमें घरों में करने नहीं भेजते हैं।

अकेले जीवन जीने को मजबूर बाल विवाह की शिकार लड़कियां

रिपोर्टर ज्योति

इक्कीसवीं सदी में होते हुए भी बाल विवाह जैसी घटनाएं वास्तव में माता पिता की पुरानी रीति रिवाजों की मानसिकता का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिसके चलते वे अपने बच्चों की जिंदगी बरबाद कर रहे हैं। अभी हाल ही में सराय काले खां रैन बसेरे में रहने वाले एक परिवार ने अपनी बेटी जो महज 14 साल की है, का रिश्ता उसी की उम्र के लड़के के साथ तय कर दिया और उन दोनों की शादी करवाने का फैसला ले लिया। दोनों परिवार वालों ने धूमधाम से शादी की खुशियां मनाई और किसी को भनक तक नहीं लगने दी।

बालकनामा की रिपोर्टर ज्योति ने बाल विवाह से संबंधित इससे भी चैंक-ाने वाली एक खबर बताई। ज्योति की मुलाकात लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट में काम करने वाली उन पांच 5 लड़कियों से हुई, जो बाल विवाह का शिकार थी और जिन्होंने बड़े होकर अपनी मर्जी से दूसरी शादी भी कर ली है। ज्योति ने जब उन लड़कियों से दूसरी शादी करने की वजह पूछी तो उन्होंने बताया कि हमारे माता पिता ने हमारी शादी बचपन में ही कर दी थी। जिस लड़के के साथ उन्होंने हमारी शादी की थी, वह हमे पसंद नहीं करते थे और नशा करते था। हमारे साथ बुरा व्यवहार करते थे। इस वजह से हमें वह लड़का और वह शादी भी पसंद नहीं थी। इसलिए हमने खुद के पसंद के लड़के से दूसरी शादी कर ली।



उन लड़कियों ने बताया कि ऐसी कितनी ही लड़कियां है, जिन्होंने ने दो शादियां की हैं। माता-पिता ने अपनी लड़कियों की बचपन में ही शादी कर-वाकर उनकी जिंदगी बरबाद कर दी है। अब वो न पहली शादी से खुश हैं और न दूसरी शादी से। क्योंकि उन लड़कियों ने जिन लड़कों से दूसरी शादी की है वह भी उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं, नशा करते हैं और उनके साथ मारपीट करते हैं। इसके साथ ही वह अब अपने परिवार से दूर हैं। कुछ के परिवारवाले तो दूसरी शादी करने की वजह से अपनी बेटियों से नाता भी तोड़ चुके हैं। ऐसे में यह लड़किया अपनी दोनों शादियों से दुखी होकर अकेले जीवन बिताने को मजबूर हैं।

गुमशुदा को पहुंचाया सेंटर होम

रिपोर्टर अरशद और ज्योति

बालकनामा अखबार के बातूनी रिपोर्टर अरशद ने 14 साल के किशन को सुरक्षित लाजपत नगर के सेंटर होम पहुंचाया, जहां वह बच्चा अच्छे से पढ़ाई कर रहा है। किशन के माता पिता उसे बहुत मारते पीटते थे। इस कारण वह अपने घर से भागकर लाजपत नगर मार्केट पहुंच गया और जोर से जोर रोने लगा। अरशद ने उससे जाकर पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो तो किशन ने बताया कि मैं अपने घर से भागकर आया हूं। फिर अरशद किशन को वहां एक संस्था द्वारा चलाए जा रहे सेंटर लेकर गया। किशन ने अरशद को धन्यवाद दिया और कहा कि अगर तुम न होते तो मैं आज मार्केट में ही रो रहा होता।

पांचवी मंजिल से ग्राउंड फ्लोर तक नाजुक कंधों पर कूड़ा ढोकर लाते बच्चे

रिपोर्टर शम्भू

13 साल की उम्र के छोटे छोटे बच्चे बड़ी बड़ी कोठियों में कूड़ा कबाड़ा उठाने का काम कर रहे हैं। यह बच्चे 4 से 5 मंजिल ऊपर चढ़ कर घरों का कूड़ा उठाने का काम करते हैं। यह बच्चे कूड़े से भरा थैला अपने नाजुक कंधों पर उठाकर चैथी, पांचवी मंजिल से लेकर नीचे आते हैं। जब बालकनामा के पत्रकार उन बाल साथियों से जाकर मिले तो उन्होंने बताया कि हम सुबह 6 बजे से लेकर 10 बजे तक लगभग 20 घरो में जाकर कूड़ा उठाते हैं। हमारे कूड़े के थैले सिर्फ घरों के ही कूड़े से भरे रहते हैं। जब हम बच्चे इतनी ऊंचाई से कूड़ा उठाकर नीचे लेकर जाते हैं तो हम बच्चों से कभी कभी कूड़ा उनकी सीढ़ियों पर फैल जाता है। तो वह हमसे कूड़ा उठवाने के आलावा सीढ़ियां भी साफ करवाते हैं।



बच्चों ने बताया कि कूड़े से बदबू आने के कारण हमसे खुलकर सांस भी नहीं ली जाती है। इस वजह से सांस लेने में बहुत कठिनाई होती है। उन्होंने पत्रकार को बताया कि हम बच्चों की एक टीम बनी हुई है और एक टीम चार-चार बच्चे होते हैं और उन चार बच्चों को जिस इलाके का एरिया दिया जाएगा वह वहीं का कूड़ा उठाएंगे। यह लोग बंगाल के रहने वाले हैं। बंगाल के जाति के लोग ज्यादातर यही कार्य करते हैं। बालकनामा के पत्रकार ने इस बात खोजबीन की कि कितने बच्चे इस तरह का काम कर रहे हैं तो वहां देखा कि 15 से 20 बच्चों का एक बहुत बड़ा ग्रुप बना हुआ है। यह ज्यादातर छोटे छोटे बच्चे ही हैं जो इसमें शामिल हैं। जब पत्रकार ने उनसे कहा कि तुम्हें इस काम में इतनी परेशानी होती है तो तुम यह काम क्यों करते हो। बच्चों ने बताया कि हम बहुत गरीब हैं, अगर हम यह काम नहीं करेंगे तो खाना क्या खाएगा।

पत्रकार ने पूछा आप यह कूड़ा उठाकर क्या करते हो तो उन्होंने बताया कि सभी घरों से कूड़ा उठाकर एक ठेले में जमा करते हैं। फिर एम.सी.डी कूड़ेदान के पास जमा करते हैं। उसके बाद हमारे मम्मी पापा इस कूड़े की छटाई करते हैं और छटाई किया हुआ माल मार्केट में कबाड़े की दुकान में बेच देते हैं, जिससे हमारी थोड़ी सी अलग से कमाई हो जाती है। क्योंकि भइया कूड़ा उठाने के ज्यादा पैसे कहां कोई देता है। जैसे कि ग्रांउड फ्लोर का 100 सौ रूपए, दूसरे फ्लोर का 150 रूपए और 4 से 5 मंजिल के 200 से 250 तक का रूपया ही प्रतिमाह देते हैं और अगर एक दिन भी छुट्टी कर लेते हैं तो हमें गाली गलौज भी सुनने को मिलती है। इसके साथ साथ अगले दिन ढेर सारा कूड़ा उठाना पड़ता है। इसलिए हम एक दिन की भी छुट्टी नहीं लेते हैं। क्योंकि छुट्टी लेने का कोई फायदा नहीं होता। इसलिए हम अलग इसी तरह कूड़ा छांटने का काम करते हैं, जिससे थोड़ा बहुत पैसा मिल जाता है।



दो दोस्तो की कहानी

रिपोर्टर ज्योति

हम बात कर रहे हैं 15 वर्षीय संदीप और 13 वर्षीय अरशद की। यह दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त हैं। यह दोनों गढ़ी गांव में रहते हैं और लाजपत नगर मार्केट में कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। यह रोज सुबह एक साथ कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं। हम जानते हैं कि जो कबाड़ा बीनने का काम करते हैं उनके हाथ में एक बड़ा थैला होता है और कपड़े भी बहुत मैले होते हैं, जिसे देखकर अकसर कुत्ते भी भौंकने लगते हैं।

इन दोनों बच्चों के साथ भी कुछ ऐसी ही घटना हुई। एक रोज यह दोनों दोस्त कबाड़ा बीनने के लिए निकले और अचानक से इन दोनों बच्चों पर एक कुत्ते ने भौंकना शुरू कर दिया। संदीप और अरशद दोनों बहुत डर गए और वहां से भागने लगे। संदीप किसी तरह वहां से अपने आप को बचाकर निकल गया, लेकिन कुत्ते ने अरशद को अपनी गिरफ्त में ले लिया और उसके पैर में बुरी तरह काट लिया। यह देख संदीप डरता डरता हिम्मत जुटाकर अरशद के पास गया और देखा कि कुत्ते ने अरशद को बुरी तरह जख्मी कर दिया था।

संदीप जल्दी से अरशद को एक रिक्शे में बैठाकर बस स्टैंड तक लेकर गया। उसके बाद वह सफदरजंग हॉस्पिटल लेकर गया। वहां जाकर डॉक्टर को इस घटना के बारे में बताया। डॉक्टर ने अरशद के इंजेक्शन लगाया, जिससे कि अरशद के शरीर में कुत्ते के काटने से रेबीज न फैले और वह खतरे से बाहर हो जाए। समय पर संदीप ने अरशद को हॉस्पिटल पहुंचाया जिसके कारण अब अरशद ठीक हैं।

बढ़ते कदम-सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन

रिपोर्टर विजय कुमार

आप सभी को यह बताकर खुशी हो रही है कि 12 अप्रैल, 2016 को इंटर-नेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे मनाया जाता है और हर वर्ष यह दिवस पूरे विश्व में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। हम सभी बच्चों का यह मानना है कि यह दिन हर एक सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ मनाया जाना चाहिए, क्योंकि यह दिवस खास उन बच्चों के लिए होता है, जो सड़कों, फुटपाथों और झुग्गी झोपड़ियों में रहकर अपना जीवनयापन करते हैं। जब से इन बच्चों को 12 अप्रैल इंटरनेशन स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के बारे में पता चला है तब से ये इस अवसर पर बहुत खुश होते हैं, क्योंकि यह अलग अलग माध्यम से अपनी बातों को दशार्तें हैं ताकि उनके लिए और बेहतर काम किया जा सके।

विश्व स्तर पर हम सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अधिकार और उनकी सुरक्षा के मुद्दे पर कोई न कोई काम करते हैं और इन कामों के कारण ही हम समाचार पत्रों व टी.वी. के माध्यम से इन बच्चों के जीवन से जुड़ी हकीकतों के बारे जान पाते हैं। हमको पता चलता है कि ये बच्चे किन परिस्थितियों में अपनी गुजर बसर कर रहे हैं। इसलिए हम सभी को इन बच्चों के अधिकारों के लिए और इनके सपनों को उज्जवल बनाने के लिए आगे आकर इनकी मदद करने चाहिए। आपको बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि एक तरफ हमारे समाज के लोग इन बच्चों के लिए इतनी सहानुभूति के साथ काम कर रहे हैं और इनकी हर तरह से मदद भी कर रहे हैं, लेकिन दूसरी तरफ आज भी बहुत से लोग सड़क एवं कामकाजी बच्चों को दृष्टिहीन नजरों से देखते हैं, घृणा करते हैं, भेदभाव करते हैं तथा मारपीट भी करते हैं।

9 जुलाई 2002 में 35 सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा बनाया गया सड़क और कामकाजी बच्चों का संगठन बढ़ते कदम है, जो बच्चों द्वारा बनाया गया, बच्चों का संगठन है और इस संगठन के प्रत्येक सदस्य ने ठान लिया है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन को बदलना है और उनके अधिकार दिलाने के लिए उन्हें सशक्त करना है। संगठन के माध्यम से उनकी आवाज विश्व स्तर पर पंहुचाना है। इस संगठन द्वारा इन बच्चों ने एक के बाद लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज किया है। बच्चों ने यह साबित कर दिखाया है कि कोई भी काम मुश्किल नहीं होता और हर मंजिल पाना आसान होता है, बस हमें इन बच्चों को इनके अधिकार के बारे में सिर्फ मार्गदर्शन देने की जरूरत है। यह बच्चे तो सड़कों पर भी रहकर अपने जीवन में बदलाव ला रहे हैं, लेकिन हमें भी बदलना होगा और अपने अंदर थोड़ा बदलाव लाना होगा। सड़क और कामकाजी बच्चों के साथ एक अच्छा रिश्ता बनाकर उन्हें उस जिंदगी से दूर करना होगा, जिससे उनका भविष्य नष्ट होने से बचाया जा सके। फिर वह दिन दूर नहीं, जब इन बच्चों को इनके अधिकार मिल चुके होंगे।



'हम बच्चे हैं समाज के फूल, हमें न समझो मिट्टी की धूल
हम भी पढ़ेंगे, हम भी लिखेंगे, हमें भी आगे बढ़ने दो, हमें भी आगे बढ़ने दो, बढ़ने दो

मुझे भी मिले दोबारा अपनी जिंदगी सुधारने का मौका

रिपोर्टर चांदनी

मेरा परिवर्तित नाम आशा है। मैं 15 वर्ष की हूं। मेरा घर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास है। जब मैं 9 वर्ष की थी, मुझे मेरे परिवार के एक सदस्य ने नशा करना सिखा दिया था। जब मेरे पिता को इस बात का पता चला तो मुझे उन्होंने बहुत मारा पीटा, इसी कारण से मैंने अपना घर छोड़ दिया। मैं घर से भागकर स्टेशन पर आ गई, क्योंकि वह मुझे घर में नशा नहीं करने देते थे और स्टेशन पर आकर मुझे नशा करने की पूरी आजादी मिल गई। तब से लेकर आज तक मैं नशे से बाहर नहीं आ पाई और मैं नशीले पदार्थों की बुरी तरह आदी हो गई। इस वजह से मेरे माता-पिता ने मुझे धीरे धीरे अपने से दूर कर दिया।

जब भी मेरे माता पिता मुझे घर ले जाते थे तो वहां मुझे नशा तो मिलता नहीं था तो मैं अपने माता पिता को गंदी गंदी गालियां देती थी, उनसे झगड़ा करती थी। मेरी इस आदत की वजह से मेरे माता पिता ने मुझे घर बुलाने की आस ही छोड़ दी। इस तरह मैं स्टेशन की जिंदगी से जुड़ गई। जहां मैं रहती हूं, वहां कम से



कम 100 आदमी और 20 बच्चे रहते हैं, जिसमें हम सिर्फ दो लड़कियां ही वहां उनके साथ रहती हैं। अपनी नशे की लत के कारण मैं शारीरिक शोषण की शिकार भी हुई। इसी बीच मैंने वहीं के एक लड़के से ऐसे ही विवाह भी कर लिया जो मुझे उन अस्लील लड़को से दूर रखने में मेरी मदद करता था, लेकिन व्हाइटनर का नशा करते करते मैं इतनी बिमार हो गई हूं कि मेरे पर्सनल पाट्र्स से गंदा पानी बहुत आता है। सब कहते हैं मुझे पीलिया की बिमारी ने पकड़ लिया। मैं खाना बहुत कम खाती हूं, खाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। खाना देखकर उल्टी करने का मन करता है। बस नशा करती रहती हूं। मैं नशा छोड़ना चाहती हूं। अपनी जिंदगी अच्छे से जीना चाहती हूं, लेकिन अब तो मेरे माता पिता भी मुझे अपने साथ नहीं रखेंगे। मैं ऐसी जगह से निकलना चाहती हूं किसी होम मैं जाना चाहती हूं, जिसमें मेरी बीमारी भी ठीक हो जाए और मेरा नशा भी छूट जाए।

संपादकीय

प्रिय दोस्तों,

हम सभी पाठकों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने बालकनामा अखबार को इतना प्यार दिया और इतना सराहा। यही वजह है कि बालकनामा अखबार दिन प्रतिदिन इतनी प्रसिद्धि हासिल कर रहा है। हमें बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि हम 12 अप्रैल को इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के अवसर पर अपना यह विशेष अंक प्रकाशित कर रहे हैं।

आप सभी को यह जानकर भी हार्दिक प्रसन्नता होगी कि बालकनामा टीम को कंसोर्टियम फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित की गई परिचर्चा में भाग लेने का अवसर मिला।

हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों के जीवन से जुड़ी वास्तविक घटनाओं को आपके बीच लेकर आ रहे हैं और बच्चों के बहादुरी के कारनामें भी लेकर आए हैं, ताकि आप उनका हौसला बढ़ाएं।

हम आपके बहुत आभारी होंगे यदि आप बालकनामा को किसी भी प्रकार से (छोटा या बड़ा या वित्तीय) सहयोग करें। आप नीचे दिए गए पते और balaknamaeditor@gmail.com इस मेल आई डी पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

बिहार से दिल्ली आया पढ़ाई करने और रिश्तेदारों ने लगवाया कबाड़े बीनने के काम पर

रिपोर्टर चांदनी

14 वर्षीय अमजत ने बताया कि वह पहले अपने माता पिता के साथ गांव में रहता था। वह स्कूल में पढ़ाई भी करता था। उसे पढ़ने का बहुत शौक था, लेकिन उसके पिता जी उसे बिना वजह बहुत मारते थे, क्योंकि वह अमजत के सौतेले पिता थे। अमजत की माता भी कुछ नहीं कहती थी, इसलिए अमजत अपनी नानी के घर चला गया। इस वजह से उसकी पढ़ाई भी छूट गई। अमजत की नानी के कुछ बिहार के रिश्तेदार दिल्ली आ रहे थे। उन्होंने अमजत से कहा कि दिल्ली में सेंटर होम है हम तुम्हारा दाखिला वहां करवा देंगे, जहां तुम बहुत अचछी पढ़ाई कर सकोगे। यह बात सुनकर मैं बहुत खुश हो गया। मेरी नानी ने कहा कि यह तो बहुत अच्छी बात है कि हमारे बेटे की वहां अच्छी पढ़ाई हो जाएगी। इस वजह से मैं उनके साथ दिल्ली आ गया और जब वह लोग मेरा दाखिला करवाने के लिए मुझे अपने साथ लेकर गए तो उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा दाखिला नहीं हो पाया, क्योंकि मेरी उम्र 12 वर्ष है।

यह बात बताकर उन्होंने मुझे कूड़े के काम पर लगवा दिया। इस तरह मैं कबाड़ा बीनने का काम करने लगा और फिर मुझे अपना पेट भी भरना था तो कुछ न कुछ काम तो करना पड़ता। मैं अपने घर वापस भी नहीं जा सकता था, क्योंकि वहां मेरे पापा मुझे जीने नहीं देते। मैं मार्किट में सुबह से लेकर रात तक कबाड़ा बीनने का काम करता हूं। अमजत ने बताया कि वह अपने



दोस्तों के साथ काले खां में रहता है और उनके साथ ही कूड़ा उठाने का काम करता है। अब यहां मुझे अच्छा लगता है। मैं यहां अपने दोस्तों के साथ रहता हूं पर अभी भी मैं पढ़ना चाहता हूं और सेंटर होम जाना चाहता हूं, क्योंकि यहां मुझे बहुत परेशानी होती है। अमजत के दोस्तों ने बताया कि उसकी नानी के रिश्तेदार कूडे के काम पर ही लगवाने आए थे और अब वह उसको कहीं नहीं जाने देंगे। यह बात सुनने के बाद रिपोर्टर ने अमजद से पूछा कि तुम क्या चाहते हो तो अमजद ने कहा मैं पढ़ने की वजह से यहां आया था और मैं पढ़ना चाहता हूं। सेंटर होम जाना चाहता हूं।

सरकारी स्कूलों में बुरे बर्ताव के चलते शिक्षा से दूर होते बच्चे

रिपोर्टर चांदनी

यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ना नहीं चाहते। वह घर में रहकर कोई काम कर सकते हैं, लेकिन सरकारी स्कूल जाना पसंद नहीं करते। इसके पीछे आखिर क्या कारण है और बच्चे सरकारी स्कूलों में क्यों पढ़ना नहीं चाहते.. इस बात की जांच पड़ताल बालकनामा की रिपोर्टर चांदनी ने की। चांदनी जब अंकित और उसकी बड़ी बहन रिंकी से मिली और उनसे बात की तो उन्होंने बताया कि हम दोनों स्कूल में पढ़ने जाते थे और हमें पढ़ने का बहुत शौक था। लेकिन हमने स्कूल जाना छोड़ दिया, क्योंकि वहां हमें अच्छी पढ़ाई नहीं दी जाती थी। इस कारण पढ़ने का मन भी नहीं करता था। इसी प्रकार दूसरे बच्चों ने भी बताया कि स्कूलों बच्चों के साथ अच्छा बरताव नहीं किया जाता है। उन्होंने बताया कि हमारी टीचर हमसे चाय के भगोने और गिलास मंजवाती थी और बहुत मारती भी थी इसलिए हम स्कूल नहीं जाते हैं।

स्कूल में बच्चों के साथ घट रही इन घटनाओं के बारे में उन्होंने जब चांदनी को बताया तो उसने कहा कि अगर आप के साथ



इस तरह का व्यवहार हो रहा था तो आपने शिकायत क्यों नहीं की? तो बच्चों ने कहा कि हमें तो वैसे भी टीचर की मार खानी पड़ती थी, हम डर के मारे किसी से कुछ नहीं बताते थे। हमने इसलिए स्कूल जाना छोड़ दिया। चांदनी ने कहा कि अगर आप सरकारी स्कूल में पढ़ना नहीं चाहते तो क्या आप प्राईवेट स्कूल में पढ़ना चाहते हो। तो इतना सुनते ही अंकित ने कहा कि मैंने और मेरी बहन ने माता पिता से कहकर प्राईवेट स्कूल में दाखिला करवाया था। हम स्कूल भी जाने लगे थे, लेकिन कुछ महीनों बाद एक टीचर का मोबाईल फोन स्कूल में चोरी हो गया था और उसके दूसरे दिन मैं और मेरी बहन रिंकी स्कूल नहीं गए थे, क्योंकि मम्मी ने हमें नहाने के लिए रोक लिया था। जब टीचर को पता चला कि अंकित नहीं आया है तो टीचर ने बच्चों से अंकित के बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी। एक बच्चे ने अंकित का नाम लगा दिया, क्योंकि अंकित और उस बच्चे की आपस में बनती नहीं थी। जब तीसरे दिन मैं स्कूल आया तो टीचर ने मुझसे पूछताछ करनी शुरू कर दी और उससे कहा कि मेरा फोन कहां है मेरा फोन लाओ। इतना सुनते ही मैंने उनसे कहा कि मैम मैंने आपका फोन नहीं लिया है। यह सुनकर वह अंकित को धमकी देने लगी और कहा कि मैं तुम्हें पुलिस से पकड़वा दूंगी, मेरा फोन वापस कर दो। पर मैंने फोन लिया ही नहीं था, जो उन्हें वापस करता। अंकित ने बताया कि मैंने टीचर से बहुत कहा कि मैम आपका फोन मैंने चोरी नहीं किया है, फिर भी मैम नहीं मानी। उसके बाद जिस बच्चे ने टीचर से कहा था कि अंकित ने ही फोन चुराया है, उसने अंकित से लंच के समय कहा कि मैंने तुम पर झूठा इल्जाम लगाया था कि फोन तुमने चोरी किया है। उसके बाद अंकित टीचर के सामने बहुत रोया उनके सामने गिड़गिड़ाकर कहा कि मैम मैंने आपका फोन चोरी नहीं किया, लेकिन फिर भी मैम नहीं मानी और काफी दिनों तक वह अंकित को डराती धमकाती रहीं। यह बरताव जब अंकित के साथ रोज होने लगा तो उसने और उसकी बहन ने स्कूल जाना छोड़ दिया। इस कारण अब वे दोनों किसी भी स्कूल में पढ़ना नहीं जाते हैं। यह घटना होने के बाद और बच्चों ने भी पढ़ने की आस छोड़ रखी है। इस तरह वहां रहने वाले लगभग 25 बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं और शिक्षा से दूर हो रहे हैं।

शिवा ने लगाई मदद की गुहार
कैसे करूं अपनी पढ़ाई पूरी

रिपोर्टर शम्भू

शिवा 11 वर्ष का है। उसकी सीधी आंख खराब है। शिवा के परिवार में एक बहन और एक भाई है। वह अपनी माता के साथ बदरपुर बॉर्डर में रहता है। शिवा के पिता जी का दो साल पहले देहांत हो चुका है और उस दिन के बाद से ही शिवा के घर की स्थिति बहुत खराब हो गई। उसकी मम्मी घरों में साफ सफाई करने जाती हैं। यह काम करने के उन्हें सिर्फ 1500 रूपए महीना मिलता है। शिवा के दोनों भाई बहन सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। उसकी बहन चैथी कक्षा में पढ़ती है और भाई तीसरी कक्षा में पढ़ाई करता है। शिवा की मम्मी इतने पैसों में घर का खर्चा नहीं चला पाती हैं, इसलिए शिवा बसों में पेन बेचने का काम करता है। वह रोज सुबह बदरपुर से हर बसों में चढ़कर पेन बेचता है, लेकिन शिवा भी अपने भाई बहनों की तरह पढ़ना लिखना चाहता है। पर वह चाहकर भी पढ़ नहीं पा रहा, क्योंकि उसकी घर की हालत ठीक नहीं है और उसके घर में कमाने वाला भी कोई नहीं है। अगर शिवा बसों में पेन बेचने नहीं जाएगा तो घर का खर्चा सिर्फ 1500 रुपए में चलाना बहुत मुश्किल हो जाएगा, इसलिए शिवा चाहकर भी पढ़ नहीं पा रहा है। शिवा का कहना है कि मेरे जैसे बहुत ऐसे बच्चे हैं जो इसी तरह काम करके अपने घर की मदद कर रहे हैं। मैं चाहता हूं कि सरकार हमारे जैसे बच्चों की मदद करे। अगर सरकार हम जैसे बच्चों की मदद करेगी तो हम बच्चों को कोई समस्या नहीं होगी। इस चिल्ड्रन डे पर आप हम बच्चों की बात जरूर सुनें।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

पिछले कुछ महीनों में बालकनामा और बढ़ते कदम को बहुत सारी प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रशंसा और अपने सहयोगियों की सराहना मिली, जिसके चलते लोग बहुत सारे अवसरों को संगठन के सदस्यों के साथ मिलकर मनाने लगे। हमारा यह विश्वास है कि इससे सड़क व कामकाजी बच्चों के अंदर आत्मसम्मान की भावना को बल मिला है। कृपया आप हमें इसी प्रकार से सहयोग करते रहें।





पिछले साल बढ़ते कदम संगठन के 250 सदस्यों का सरकारी स्कूलों में एडमिशन कराया गया और वे मन लगाकर पढ़ाई कर रहे हैं। अब वे बचत कैसे करें, इसके एंबेसडर भी बन रहे हैं



बढ़ते कदम के सदस्यों ने निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के जीआर-पी थाने के एस.एच.ओ. के साथ होली का त्योहार मनाया



बढ़ते कदम के 30 सदस्यों ने जयपुर का भ्रमण किया और उनका तहे दिल से स्वागत किया गया



बढ़ते कदम के सदस्य श्री संजीव शास्वती द्वारा आयोजित कला प्रर्दशनी का उद्घाटन करते हुए



संपादकीय मीटिंग में बातूनी रिपोर्टर अपनी खबर की जानकारी देते हुए



बालकनाम की प्रसिद्धि के बारे में पढ़ते हमारे पाठक



बालकनामा को 92.7 एफ.एम. में बिग हीरो के लिए आमंत्रित किया गया था

बालकनामा खबरों में... गर्वित क्षण

Balaknama reported in Voice of America Link - www.facebook.com/voiceofamerica/videos/10153633579013074/?fref=nf



Balaknama team was invited at 92.7 Big FM. The famous RJ Richa Anirudh will do live show in program kBigHeroesl



http://www.hindustantimes.com/videos/delhi/balaknama-delhi-s-street-children-inspire-change-with-newspaper/video-N8j0j7sNuAZ1TeZs3VxmvN.html



Street children are the unlikely team of heroes behind the worldl s most unique newspaper Balaknama http://social.yourstory.com/2016/04/balaknama/



यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471

Issue – 59 SEPTEMBER-OCTOBER 2016

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to the given address – 31 Basement, Gautam Nagar, New Delhi – 110049 Ph. No. 011- 41644471

balaknamaeditor@gmail.com

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

UNHEARD VOICES

STREET YOUTH UNITED AGAINST SEXUAL EXPLOITATION

Balaknama Bureau

Cases of sexual exploitation are on rise everyday and Street & Working children are also becoming its victim. Since it is a sensitive issue, Balaknama reporters did not find it appropriate to discuss about this with street children instead they spoke with former street and working youth. About 20 boys and girls took part in discussion and were interviewed separately. Balaknama is sharing their own version, leaving its interpretation to the readers. Th eir names are not raveled to protect their identity.







Female Youth- One day after finishing our driving class, we were going back to our home. Suddenly a boy came, and touched me at my back. Many people saw this act, but no one came to save me. Instead they advise me to keep mum. Th ey did not support me.

Male Youth- When I got to Agra for work, I live on bus stand. Th ere bus staff sexually abuse boys, and even threaten me if I do not sleep with them, they will through me away from bus stand.

Female Youth-My mother beat me and asks me to sleep outside and not at home. One boy offered me place to sleep with a condition that I

continued on pg. 5

Delhi Government can do stray dog's census, then why leave us?

APPEALED STREET CHILDREN

Talkative Reporter Javed, Reporter Shanno, Shambhu

Issue of counting stray dogs in Delhi is again in news. It may be noted that government decided to conduct stray dogs' census during commonwealth games and now again government has decided to conduct census to control the increasing population of stray dogs and to give them protection.

When Badhte Kadam members received this news they became very happy and said, "Good atleast our Delhi Government thought about conducting census and protecting the dogs that live with us. Th e thing which is disheartening is that the government immediately took an action when this happened with a dog but nobody bothers when this happen every day with street and working children. Condition of children staying on streets and railway stations is deteriorating day by day and people treat them worse than animals. We are happy that government is conducting dog census in South Delhi but sad that we do not exist for our authorities and there is no step being taken by the Government

continued on pg. 8



STREET CHILDREN'S FIGHTS CHIKUNGUNYA THEIR OWN WAYS

Talkative Reporter Kishan, Reporter Chetan

Street children are most vulnerable to vector borne diseases such as dengue, chikungunya as they mostly live close to places of mosquito breeding. 10 children fell ill to chikungunya in Nehru camp of West Delhi. Th ey were the one who were earning for their family so when they only fell ill so from where the money would come for their treatment. Government



hospitals are also full these days with chikungunya patients. Children suffering from this disease are not able to walk the how they would stand in long queues in hospitals for their treatment. Th eir parents also do not have money to get them treated at private clinics so the children kept lying in their houses without any medicines.

After seeing their condition, some children collected Rs 10 from each person nearby and took them to private clinic for their treatment. Finally these children got some relief and are safe now. As Delhi reels under the dengue and chikungunya, street children have found out some unique ways to tackle from these diseases. Children say, "We remain so under the influence of drugs that the mosquito's which bite us they also get killed so we do not fall ill to these vector borne diseases". 16 years old Ajeet said, "The mosquito which spreads dengue develops in clean water at clean place and

continued on pg. 6

EDITORIAL

Dear Readers,

We are thankful to our readers who have given their love and praise to our newspaper Balaknama. We have always tried to bring the real stories of street and working children and the problems which they face in front of you and this time also we have done the same.

In this edition, street and working children have raised the issue of their census in front of the authority and have asked them about the reason behind the inability of the government in conducting street and working children's census when they can conduct dogs' census living in Delhi.

We have brought the real situation telling you about the fast spread of Dengue and Chikungunya. We have brought the real stories of children in front of you as always and also bringing you some of the children's heroic stories so that you can motivate them more.

We would be glad if you support Balaknama in any way (small or big or financially). You can contact us on address below or can mail us at balaknamaeditor@gmail.com

The Editorial Board

IT IS SCARY TO SLEEP UNDER FLYOVERS!!

Balaknama Bureau



Balaknama Reporter conducted support group meeting with girls living under Moolchand flyover to discuss about the problems faced by them. 16 years old Sapna (name changed) said, "We work whole day at traffic lights for the survival of our family. We have to sleep here itself only at night as we have no safe place anywhere to go and we do not have enough money to rent a house for us. In case we have money then also nobody gives us their house on rent. Neither can we continue paying the rent for a longer time so we are compelled to sleep under the flyovers only after our work but we face many problems in sleeping here. Older boys under influence of alcohol keep roaming around us and abuse us". 14 years old Kajal (name changed) said, "We girls sleep in open under flyovers and become victims of abuse and molestation from nearby crossing people. At times, boys who consume drugs come and sleep with us so we are always under a fear of something wrong happening to us". Reporter asked, "Why have you not complained to Police about it?" 15 years old Preeti (name changed) said, "What do we complain to Police about? They are also the one who treat us badly and shoo us away at night when we sleep there. In this situation where do we go with our family?" Girls staying under the flyovers told the reporter, "We request our Government to provide us the facilities the way night shelters have been there in the city so that we can stay safe somewhere".

Street children compelled to drink contaminated water

Talkative Reporter Kailash, Reporter Shambhu



Balaknama Reporter conducted a support group meeting with children staying under Moolchand flyover and working there at red light. Children said, "We face many problems related to water here". 15 years old Aakash said, "We have to go far off places to get water for us. We get a water supply machine here from Delhi Jal Board from where we get our water for drinking and other purposes but there is a problem with the machine. We have suffered from electric shock many a times from that machine. We are always under the fear of ricking our life from the electric shock".

Ashok said, "Recently on 12th August when it rained heavily, a child amongst us named Kavita went to fetch water from that machine and got an electric shock and she was thrown away due to the current and was hurt badly. Our parents are scared after this incident so they do not let us go there but then we have to get water from somewhere for our needs. So we go far off places to fetch water. We drink water put to plants in the park which is very salty and taste and this water is making us sick also but we have no other choice". Balaknama Reporter then went to Delhi Jal Board to talk about the machine.

Reporter asked the security worker of Jal Board about this issue. He said, "This problem arises only when it rains heavily. The water gets clogged up in the machine otherwise Delhi Jal Board's machine supplies water safely in every home".

SCHOOL GOING CHILDREN SUFFER DUE TO LACK OF TOILETS

Balaknama Bureau

There are still many places in Delhi where basic facilities like toilets are not available. We are talking about a similar place Valmiki camp near Shakurpur in Delhi. The camp is near railway tracks so majority of people go to tracks for defecation. There is only one toilet in that area despite the camp is densely populated. Due to availability of only one toilet, there is an always a queue in morning from 5 to 11. Children going to school also gets late due to this problem and get scolded by their teachers so they have to go on tracks to relieve themselves to avoid the queue. Girls said, "We face a lot of problem when we go out in open to relieve themselves as older boys watch us and also abuse us after getting drunk". They added, "Small children and girls are the worst sufferers because of this problem. Along with this there is one more problem near tracks. There is a desolated place near tracks which is almost in ruins. Children get kidnapped from this place so children are scared to go out near tracks". Children said, "We want toilet in our camp as early as possible so that we are saved from abuse and then defecation in open leads to various diseases and affect our environment also. Our problem should be solved under Swachh Bharat Abhiyan campaign and help girls from exploitation so that they feel safe in the society".

Deplorable condition of shelter meant for street children

Balaknama Bureau



Balaknama Reporters met those children who live at Old Delhi Railway Station and work there only. Some children have been to shelter amongst them. 14 years old Ajeet (name changed) said, "Workers of nearby shelter homes take us forcefully with them as they see us working and staying there at railway station. This is very good for us that we are kept in centre home but the problem is that we face many problems there".

Vikas (name changed) said, "I was also taken to a shelter but I ran away from there as the food which was served to the children was not nutritious at all. Watery pulses are served in shelter and milk given to children in morning also has more water in it than milk content. And if we complaint to centre home workers, they abuse us and tell us to eat the same food or remain hungry. That is why we run away from the shelter and do not want to go again there as our life at station is much better".

He added, "Nobody scolds us at railway station. We get enough tasty food also by picking rags at station. We are happy here". Reporter asked, "How do you want your ideal shelter to be?" Vikas replied, "We want a shelter where the food is good and employees speak and listen to us properly. If we get such centre homes we would never run away from there".

CHILDREN SELLING FLOWERS AT DELHI'S TRAFFIC SIGNALS FOR SURVIVAL

Talkative Reporter Kishan, Reporter Shambhu

Often you see children selling bouquet of flowers at Delhi's traffic lights. Balaknama Reporter spoke to these children at red lights and got to know that small children are made to either beg at red lights or sell flowers. 15 years old Bhanwar (name changed) said, "We have come here from Rajasthan. Our parents bring us here with them when no work is left to do in Rajasthan. We work there also. There are around five fairs which take place in Rajasthan and we sell wooden stands made by us in fairs which are used to keep footwears"



14 years old Sapna (name changed) said, "We make stands from the wood which our parents bring from market. We face many problems in making them. Dust produed in the process of cutting the wood gets into our lungs which causes pain in our chest and stomach. After facing so many challenges we are able to sell the stands at cost of Rs.120 to Rs.200. This way we are able to earn Rs.2000 to Rs.3000 in each fair but this money gets over after the fair due to which many a times our siblings have to sleep without food". She added, "We have relatives already working in Delhi so we also move to Delhi in search of work here. We sell bouquet of flowers at red lights. We get one bundle of rose from Sadar market in Rs.20".

"And we are able to sell one bouquet of flowers at Rs. 50 to Rs.120. Rose bouquets are given to us by other person and then we go to different red lights and sell them. Children keep coming and going at traffic lights. Mostly 10-12 children are found at one traffic light", said Sapna. Rahul said, "Our owner gives us Rs.3000 per month".

Rag pickers children harassed by locals



Balaknama Bureau

Lajpat Nagar, one of the biggest market of Delhi where on one hand rich people come for shopping and on the other Street and working children pick rags for their survival. But people are not letting them survive there, they abuse these children the moment they come to the market. These children may not be well dressed, pick rags but they never do anything wrong rather work to earn some money so that they can feed themselves.

15 years old Salima (name changed) told Balaknama Reporter, "Many wrong things have been happening with us here. There are some older boys who roam around in the market and steal things and do pick-pocketing. But Police doubt us as we wear shabby clothes and pick rags. They blame us saying that we roam here and there in the market so we are the culprits and nobody else can do this. Sophia (name changed) works in the market said, "Whenever somebody's pocket is picked police catch us and take us to police station for inquiry. We are not the culprits; we work here so why would we steal anything. Thefts are done by the elder boys but nobody listens to us".

Young as 12, she stitch for livelihood

Talkative Reporter Manisha, Reporter Chetan



12 years old girls of Kamla Nehru camp do the work of stitching old and tattered clothes after coming back from school at 2 till 7 in the evening. These girls are working because their parents' financial condition is not well to take care of them. They stitch others' clothes to fund their education. They get Rs. 10 for stitching each cloth. These girls complete their studies while making food on the stove.

Girls said, "We mostly work on Sundays so we remain over burdened all the time as it is off for everyone. We keep sitting on our stitching machine from 9 in the morning till 7 in the evening on Sundays. We have to sit in one position for very long due to which our hands and legs start paining. This also has an impact on our eyes too due to which we are not able to see properly at times".

Forced by compulsions, girls leaving education

Talkative Reporter Lakshmi, Reporter Jyoti

10 girls have left their school in West Delhi. When reporter asked them about the reason behind this then 15 years old Kajal said, "My father fell ill and was not able to go to work. My family's condition worsened so to manage our expenses I had to leave my school". 16 years old Pooja said, "My mother goes to work in other people's house and I was the one left to take care of my house. In the remaining time, I have to go to pick sawdust in the factory. No time and energy is left after all this work so I left my school".

15 years old Meera said, "My parents go out to work and I had to take care of my siblings. I had to get them ready for school and then had to get ready for my school. I used to reach late in my school and always used to get scolded by the teacher. That is why I left my school and now I am busy in my daily chores so I do not get time to study". 16 years old Praveena said, "I used to study in Government school but when my father started drinking, he got my name stroked off my name from the school and got me open a junk shop to earn some money. Now I sit at shop whole day and buy bottles from other children and send junk to big junk shop".



13 years old Sonia said, "I used to study in government school but I had to leave school because of my parents. They used to always taunt me saying that would you become an engineer after studying so I left my school. Now I do only that work which my parents tell me to do. I wanted to become a teacher but my dream remained unfulfilled because of my parents".

These girls are taking full responsibility of their homes. They do work of pruning sawdust from 6 in the morning till 11 at night. They face many problems in doing this. They have to climb stairs of the building till 4th and 5th floor to carry the sawdust. They get tired in going up and down the stairs and at times sawdust gets spilled in the stairs so their owner scolds and abuses them. While pruning the sawdust, dust gets into their eyes, nose and mouth which affect their health too.

Save us from begging, appealed street children



Reporter Saurabh

All children of Sector-106, Noida beg on the streets. Balaknama Reporter asked them, "Why do you all beg?" Children said, "Begging has been done in our family since ages. Our parents also beg". 14 years old Karan (name changed) said, "The moment we grow up, our parents give us begging bowl in our hands rather than giving books and tell us to go out to beg and bring money. We do not know what study is; we only beg and face many problems while begging. People hate and abuse us. We get a feel as if we do not belong to this country. What do we do in such situation".

He added, "Children go to market to earn some livelihood for them. At time we are not able to earn enough money to have our food so we collect the rotten discarded vegetables thrown by vegetable sellers in the market and cook our food from it. We do not like to beg but we have to do it out of our helplessness for our survival".

Street children met to train accidents under drugs' influence



Reporter Poonam

Children staying near Agra Cantt Railway Station come to work at railway station. Most of the children do rag picking, sell tobacco or clean and beg inside the train. These children staying and working on railway station are meeting mishaps every day. This came into light when Reporter Poonam conducted a support group meeting with children and asked about their problems. Golu said, "We take drugs also along with our work and when we consume drugs in more quantity we do not remain in our senses. Under drugs' influence when we pick rags on railway tracks we are not able to judge the speed of approaching train and do not react on time. At times we get struck in between the tracks also and we are not able to save ourselves from the approaching train".

Krishna said, "We get on the running train to sell our products. At times our hands slip and we fell down on tracks and nobody come to our help".

14 years old Rahul said, "We run away from our homes due to bad behavior of our parents and come to station and then to survive here we start begging and picking rags. We start consuming drugs by seeing other children and now we have got addicted to drugs. Whenever we miss our parents, we consume drugs; if we do not get food we take drugs. We are getting entrapped in drugs day by day due to which more mishaps are happening with us".

PUSH TO WORK AT YOUNG, THEY LOSING THEIR CHILDHOOD

Talkative Reporter Manoj, Reporter Chetan

70 children who are staying in West Delhi have been brought from Madhya Pradesh are of age group from 12 to 16 years for construction of houses and sewers. When these children go for work their owners put 50kgs of sack on their shoulders. They work from 9 in the morning till 7 in the evening. After all this hard work children get Rs.250 at the end of the day. Children suffer a lot of pain in their back and waist due to heavy sacks. Children start eating tobacco and pan masala to gain strength and motivation to carry on with their work. Balaknama Reporter asked the children, "How do you get strength from eating tobacco?" 16 years old Manoj said, "We carry heavy sacks weighing 50kgs due to which we feel a lot of pain so we start eating tobacco fast so that our mind gets diverted and we feel less pain. But sad thing is that one of the boys has developed stone due to tobacco consumption and now he remains sick all the time. If he tries carrying a little weight only his stomach pains a lot". Explaining children, Reporter said, "Tobacco consumption is bad for health and it leads to many diseases. Children should not consume tobacco and whoever is eating tobacco should immediately leave this habit".

PEER RESCUED PEER FROM TRAIN STATION

Took her to shelter home with help of Balaknama Reporter

Talkative Reporter Gudiya, Reporter Jyoti

15 years old Gudiya used to stay with her parents in Mathura but her parents used to remain ill all the time. One day when they were going to the doctor from Mathura railway station alongwith gudiya and met with a train accident. When Gudiya lost her parents she was just 12 years old only and it all happened in front of her. She kept crying there, nobody came to help her. Gudiya did not know what to do now as she was all alone but then her nearby aunt took gudiya with her. Despite being very old, her aunt kept gudiya with her like her own daughter for one year but after that she also started falling ill so she also left Gudiya. Gudiya was alone again. She started working in other people's homes for her survival and one day she came to Delhi by train. Delhi was new to her; she had nobody to go to so she got scared and started crying. One girl who is a rag picker at Nizamuddin Railway Station saw her crying and went to her. Gudiya explained her whole story to Guddi. Then Guddi said, "I am a rag picker here and I stay in a night shelter. I go to a centre to study". Guddi asked her, "Do you want to go to a shelter home?" Gudiya refused to go to a shelter home so Guddi took her to Balaknama Reporter Jyoti. Jyoti explained her, "If you will stay here on station nobody will take care of you; you will be safe at shelter home". Then next day reporter Jyoti with help of CHETNA team member sent her to shelter home through legal process.

UNIMPEDED FAST RUNNING CARS, RISKING CHILDREN LIVES

Reporter Chetan and Jyoti

School going and working children have to daily face fast running cars between Punjabi Bagh and Rampur Ashoka Park due to lack of red lights. Vehicles run very fast on that road as there is no red light in that area. Children face difficulties in crossing the road. There is always a risk to children's lives in crossing the road as the cars speed away very fast but still children have to cross the road facing the challenge as that is the only way of reaching their school and work. Children said, "If at times a child stumbles while crossing the road then the car driver abuses back the child only as if he has committed some mistake by crossing the road. The icing on the cake is that there is no traffic policeman also so nobody stops". They added, "Recently an accident occurred where a bike hit the school child. Children got very angry and created ruckus then only the child was taken to the hospital but hospital also refused to admit the child. Seeing these children started raising slogans and then media was called". Children told media, "Children get hit every other day by fast running vehicles and they do not even stop to see the injured child. People run away after hitting the child as there is no traffic policemen in that area". Children said to Balaknama Reporter, "We want that authorities should immediately take this problem into account and find out some solution for it".

POOJA, A STREET CHILD GIFTED HER BIRTHDAY TO PEERS

Talkative Reporter Pooja, Reporter Chetan

15 years Pooja stays in Valmiki camp of West Delhi. She is one of those children who works hard the whole day and complete their studies. She goes to school and is also Balaknama's Reporter. Pooja knows how Street and working children survives and what kind of problems they face. Pooja tell all children around about the importance of studies along with work. Pooja said, "There are many children in Valmiki camp who does not even have clothes to wear. I thought why not to give some of my clothes to them and help them. So I called them to celebrate my birthday and gave them my clothes during the party".

Balaknama Reporter asked, "Why did you give them your clothes on your birthday only?" Pooja replied, "I wanted to help them but at the same time I didn't want them to feel that I am having pity on them. I am also among one of them and when someone shows pity on us, we feel very bad. I help these kids in whatever way I can. Seeing these kids happy makes me happy too". She added, "Being a small kid,



the way I have helped these kids, others can also help these street and working children so these can get clothes to wear. I have started helping kids when will you?"

Working like parents at 12, she take cares of siblings





Talkative Reporter Kaseena, Reporter Chetan

As we know that parents take care of their children well and give them love and affection for their growth but in this case we see a different situation. There are some parents who give birth to children but put their burden on their own children only and they leave for work. When children attain the age of 12, they are given the responsibility of handling their younger siblings and taking care of the home too. That is why these children do not grow up physically.

11 years old Kaseena of Kamla Nehru Camp is also performing such role. She is bringing up her four younger brothers and sisters. Kaseena said, "I wake up in the morning and cook food for everyone. My parents go out for work. After that I take care of my siblings. My younger brother is just 2 years old so I have to carry him on my lap all the time. I have to bathe them all and then give them food. My whole day goes in doing all work and I do not get time to out somewhere".

She added, "And If I do not do all this work, my parents abuse me". This way when parents burden their children too much, their physical growth stops which is not good.



She lives without parents

Talkative Reporter Muskaan, Reporter Chetan

Every child has the right to stay with their parents with all love and care. This is news of an 11 years old girl, Alka. When children are not left with any support in society they become very lonely. Alka do not have her parents. She lives with her aunt in Shaheed camp. She does not go to school, just roams here and there and plays with her friends the whole day. Alka told the reporter, "Getting educated is important. I also feel like going to school when I see other children going school but I cannot do anything". Alka does not get things of her choice. Alka may be living with her aunt but she feels lonely without her parents.

DRUNKEN FATHER PUSH HIM TO WORK

Talkative Reporter Ankit, Reporter Poonam

This is the story of 13 years old Ankit who stays with his parents and 2 siblings. Ankit's mother remains ill and his father works as a laborer. His father does not give a single penny at home and waste it on his drinks. So, a while back Ankit left his home in Patna and came to Agra. He stays in Valmiki slum near electricity house. He has started polishing anklets here for his family's expenses and is able to earn Rs. 2000 per month. Balaknama Reporter Poonam went to meet Ankit after knowing his story. Ankit told the reporter, "I work in Surya M.O.S Royal Company which provides us the powder and acid to clean the anklets. First we put acid in a cap and dip anklets in it. Then we rub these anklets by brush with our hands which gives them their shine". He added, "If I will not work then how will my family survive, how I will bring medicines for my mother. My siblings will also remain hungry". Reporter told Ankit, "1098 is toll free childline number where you can ask for any help".



STREET YOUTH UNITED AGAINST SEXUAL EXPLOITATION

from page 1

compromise for sexual offer.

Male Youth-I was in Noida and was attending marriage of one of my guest. There when we all friends were sleeping, a boy came and asked if he can also sleep with us. When we allowed, he started taking sexual advantage. He opened our pants, and touched our private parts. Then we realized he is not good boy, and we changed the place.

Male Youth-I was taken away by grown up boys on station roof. They started doing sex. I tried to call people around, but no one came to rescue

Female Youth: There was a boy on bike, and he said something that after hearing, I and my friend were literally shocked. He asked "are you wearing your underwear?"Is being a girl such a shame? Anyone can ask anything?

Female Youth-One day I was going on road and saw a boy on scooter. He said he wants to talk to me. I started moving but he was running his scooter side by side. I was so scared thinking if I disobey his offer he may harm me by acid attack or do something else.

Male Youth-There was a boy who uses to sleep over station roof, as police beats him if he sleeps on platform. Lack of shelter was main issue for his abuse. And when boys do substance abuse, they never realized pain of being sexually abused

Male Youth-Many types of abuses happen. Like forcibly asking to hold penis, hugging, make us uncomfortable, making indecent gestures, talking openly about sex, abusing by threat.

Female Youth-Sexual abuse mainly done by men, some women also do. It is done by our relatives, neighbors. It happen at work place, while we go on road, stalking, indecent talking, touching inappropriately.

Male Youth-It is a myth that sexual abuse is only by use of genital organs, it is done many other ways.

Female Youth-Sexual abuse ruins us completely, not only us but even our future generation. Hence we want any NGO or helpline to ban this completely to save future generations.

Female Youth-Every girl should learn self defense in today's world.

Female Youth-We should organize monthly or quarterly meetings with girls and women, and must ensure men to be present in the meeting. They will get awareness in the meetings.

Male Youth-Children should not get victim of sexual abuse any more, and those doing it must correct themselves.

Male Youth-In schools, the topic on sexual abuse should be taught.

Female Youth-If we want to overcome this issue, we need to work on root cause. We need to go to all those girls who are still unaware of these issues. What we are discussing in this close room must be discussed in public, where listeners should be boys, girls, or any one. We should agree to a point, that we all will raise voice if something happen wrong.

Female Youth-We need to be aware that sexual abuse should not be taken lightly. Hence if we change this in our mindset, it can be stopped.

Some of the solutions suggested by street and working youth were following.

Talk to those boys who have conservative mentality and say that sexual assault cannot happen with boys.

We should conduct such type of meetings with Police also so that they know that boys also face sexual assault and they should file such cases.

There should be counseling centres for these people who do sexual assault to keep them busy and to educate them about the pain suffered by sexual assault victims.

All girls should undergo self defense classes to protect themselves.

We should make a system where girls do not remain silent and raise their voice against such acts.

Communication networking should be made strong.

Children should fight together against sexual violence.

We should break the silence which makes us weak and should raise our voice.

Lot of discussion is important.

We have taken part in such a meeting for the first time. We can do such meetings on a larger scale in front of everyone so that those boys who harass us should know that we will not remain silent now.

We should help those who need help.

We can write about our stories so that people would know about our struggles.

We have to bring collective awareness to tell people that they are not alone; there are many people with us who will help us collectively.

Girls Courage makes Bholu happy

Talkative Reporter Bholu, Reporter Jyoti

Most of the time parents force their children to work. They send their children to work due to the pressure of their own bad habits as if children are their source of income. Some parents consume alcohol and for that they need money so they send their child to pick rags so that they get money to buy alcohol.

This is also a story of such kid. 12 years Bholu stay with his parents under Sarai Kale Khan flyover and his father sends him to pick up rags. His mother also picks up rags. Bholu's father is alcoholic so he does not let him study and forcefully send him to pick rags asking him to get money for him so that he is able to buy his alcohol. Bholu said, "I have to pick rags and beg the whole day to get money for my father and he spends all my earned money on his alcohol due to which at times my siblings also do not get any food to eat at night. He does not let any of my brother sister study".



Jyoti, National Secretary of Badhte Kadam met his father and said, "Why do you not send your children to study? If you would not send your children to study, I will call childline and will get you arrested for this". Hearing this Bholu's father got scared and said, "I will send my children to centre everyday to study and when they will get admission in a school, I will send them to school also". Bholu became very happy hearing this.

GIRL REACHED HOME SAFELY WITH HELP OF BALAKNAMA REPORTER

Talkative Reporter Poonam, Reporter Jyoti

Reporter Jyoti conducted support group meeting with children of Saansi camp where 12 years old Poonam, Badhte Kadam member also Balaknama's talkative reporter participated in the meeting. Poonam told Jyoti, "Many girls came to our place at the end of Navratra festival when girls are called to be worshipped. Amongst them I saw a girl roaming around here and there whose name was Pooja. I went to speak to her. Pooja said, "I came here along with other girls to receive Prasad but I am lost now. I do not know how to go back to my home and started crying". Poonam said, "Try remembering the direction from where you came. I will try to drop you at your home. After sometime she could remember that she stays near Badarpur Border. She was not able to tell anything more. She was so scared that she kept saying that I came with my friend and got separated by mistake. Please help me".



Poonam said, "I started searching for her home towards Badarpur. When I found Pooja's home, I saw her mother crying in front of her home. The moment she saw Pooja, she came running, hugged her and asked where she was. Then Poonam said to Pooja's mother, "You should not send your daughter alone anywhere. What could have happened if she was not found? What would have you done? Already fast moving trains pass through Sansi camp, if she would have met with an accident then? Pooja's mother said to Poonam, "Thank you dear that you saved my daughter. I will not send my daughter alone anywhere".

Chikungunya their own ways

from page 1

we sleep in very filthy area which stinks very badly so we are saved from these diseases".

16 years old Sunil who stays under flyover said, "We apply mobil oil at night while sleeping to keep away the mosquitoes from them. Children who do not apply mobil oil also get saved from mosquitoes as they sleep under flyover where vehicles pass at high speeds. The high volume of air created by them and the fumes released from these vehicles kill the mosquitoes. That is why we are saved from vector borne diseases".

He added, "But children who stay in colonies and work there are unsafe from these diseases. M.C.D has also not paid heed to this problem this time.



Earlier medicines to ward off mosquitoes were used to be released in the surroundings but nothing of this sort happened this time due to which people are falling prey to these diseases. These diseases would not have taken a face of epidemic if the authorities would have taken care of this problem earlier only and those medicines would have been released".

CHILDREN PUSHED TO DRUGS DUE TO PARENTS' NEGLIGENCE

Reporter Jyoti

Children get into bad habits due to parents' negligence at times. Similar thing happened with 12 years old Hakeem who used to study in class 6th in a Government school but due to parents' ill behavior towards him compelled him to go to station and pick rags. Slowly and gradually he went into substance abuse while staying at railway station. When Balaknama Reporter got to know about Hakeem from a kid, she went to talk to him. She asked Hakeem, "Why have you left your school and have started taking drugs also?" Hakeem replied with tears in his eyes, "My parents does not give me any money to buy pencils and copies for school so what do I do?? So I decided to move to station to pick bottles and started selling them at junk shop to earn some money. I get good food also from trains".

He added, "The only sad thing is that the elder boys staying here at railway station force us to consume drugs and if somebody refuses to take drugs they beat them and even sexually abuse them whether it's a girl or a boy. Police also harass us". Reporter Jyoti told Hakeem, "You may be getting good food here or some money also for your needs but children here get into drug addiction so it's better if you go to school and if there is any problem, I will talk to your parents". Hakeem told Jyoti, "I promise that I will not go to station to pick rags rather I will go back to school to study".



CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number **1098**

Police Helpline Number **100**

HATS OFF TO CHANDAN'S BRAVE EFFORTS

Reporter Shambhu

12 years old Chandan stays with his parents in Choona Bhatti of West Delhi. His mother works in others' homes for handling house expenses. She is able to earn Rs. 3000 per month from this. Chandan used to study in class 6th in government school and used to come first in his class. He was always ahead of everyone and helped other kids too. Once a child was playing on swings in the park and suddenly fell down from the swing. Seeing this Chandan ran towards him and saw that he was badly hurt. Chandan immediately took him to the hospital where doctors bandaged him and gave him tetanus injection along with some medicines.

Chandan said, "When I used to go to school, I used to help children but now I don't go to my school because when I went to village for last rites of my father, my name was cut from school. Since then I have not been able to go to school. Then after some days I came back to Delhi with my maternal uncle and aunt. I started picking up rags to earn something". He added, "When I met CHETNA's worker and told them that I wanted to go to school so they promised that they will get me re-admitted in school. Now I can think of going to school again. I am happy that I am getting an opportunity to study again after getting associated with Badhte Kadam federation. Now I will be able to study along with my work".

STREET GIRLS: MOST VULNERABLE TO SEXUAL ABUSE

Balaknama Bureau

14 to 18 years old girls staying at Old Delhi Railway Station are getting trapped in dangerous drug addiction. Balakanama reporter spoke to 20 girls who are involved in drug abuse and consume some dangerous drugs. 17 years old Anuradha (name changed) said, "We consume drugs like hashish and smack. We get these opiates from a person in Chandni Chowk. The person who sells these dangerous drugs has a very different appearance. Only we know this guy and we pay Rs.300-Rs.400 for a small quantity of hashish and smack. After buying these drugs, we sit at one place and smell it".

16 years old Kanchan (name changed) said, "We are around 20-30 girls who consume drugs". Reporter asked, "Why do you consume drugs?" She said, "After running away from our homes somehow we start living at railway stations. We learn consuming drugs from the girls who are already into it. Unintentionally also if we get to consume these drugs, we get badly addicted to them and we go to any extent to get these drugs. We have become so addicted to these drugs that we consume smack and hashish even when we are hungry".

She added, "We fall victims to various types of exploitation because of this drug abuse. Older boys who stay at railway stations lure us and make us consume drugs. Then they take us to cinema halls and sexually exploit us there. We do not even remain in condition of stopping them after intoxication. On regaining our consciousness we realize what happened with us. These boys sexually exploit other girls also at night when they are sleeping. These activities are increasing more and more and these girls become more vulnerable after consumption of drugs".

Reporter tried explaining these girls and said, "Why do not you leave drugs?" 15 years Sapna said, "We try a lot but we are not able to leave drugs. Our head pains a lot if we do not consume drugs. If we don't eat for one day that will work for us but if we do not get drugs for a single day we feel as if we will die. So we go to any extent to get drugs. We have tried a lot to come out of this trap but we are unable to do so".





INNOCENT CHILDREN LURED IN NAME OF EDUCATION

Balaknama Bureau

In the name of good education, 35 small children were lured but later made to sell things at Delhi's traffic lights. Balakanama Reporter spoke to the children working at Traffic lights.

Reporter asked those children, "Why do you work on traffic lights?" 16 years old Manish (name changed) said, "We do not work out of our own wish. We have an owner in Bihar who lured our parents by saying that he will make us study in Delhi and will give us money also".

15 years old Pawan (name changed) said, "Bhaiya, our families are very poor and do not have much knowledge so our parents came in his trap and sent us to Delhi with him. We are kept in Kotla right now where children make their own food and from 6 in the morning to 10 in the night they go to sell things at different traffic lights.

Their owner sends these children to different traffic light with full planning. We are divided in various groups and each group is given one traffic light to sell various products like dusters for cleaning cars, mobile chargers, toys etc."

Rahul (name chaged) added, "We have to carry the selling material weighing 8-9kgs for selling at different traffic lights. We get tired carrying all the material.

The moment a car stops at traffic light, children run towards it to sell their material. All products have different costs. These way children sell their material".

15 years old Amar (name changed) said, "There are days when Police beat us and do not let us sell our material on traffic lights, that day our owner beat us and abuse us for not able to sell the material. Then we have to do over time to earn money so that we can send money to our families each month".

"STREET CHILDREN DO NOT BECOME RAG PICKERS TO FUND THEIR PORN ADDICTION"

Balaknama Reporters refuses allegations

Talkative Reporter Rahul, Reporter Shambhu

There was news recently in a popular daily English newspaper that children staying in Sarai Kale Khan do rag picking to fund their porn addiction. Refuting these allegations, members of Badhte Kadam spoke to rag picking children on this issue.

Jyoti, National Secretary said in children's interest, "I also used to pick rags earlier but I dint even know that time what a porn film was. We never had information of our surroundings". 14 years old Rahul said, "We children work to feed ourselves. We never have any such thought in mind which can land us in trouble. We work really hard to make arrangement for our food. This is really wrong to say that we pick rags to watch porn movies".



He added, "Our life would be badly affected due to such news. We will be more prone to various types of exploitation now as we go far off places to pick up rags amongst different people. We are already looked down upon by people and after such news they would be sure that we do rag picking to watch porn movies. This will have worse effect on our lives. Now on seeing us people would think that we are doing this work for funding our porn addiction and they would try to take our advantage. People will not understand our helplessness rather those who are involved in such acts would approach us and say, "Leave rag picking. We will show you the porn movies". We are now always under the fear of getting sexually abused. Girls who go for rag picking will receive abusive remarks by these people and will become victims of sexual abuse. Every person will now consider us bad and will think that we work for watching porn movies. The news has created our wrong image in people's eyes. This is bad and we are highly disappointed by such news".

15 years old Raja who stays in a night shelter says, "We can still say that older boys are involved in such bad habits but we cannot say that they also pick rags to watch such stuff rather they fall prey to such things under influence of wrong people who are already involved in watching porn videos". He added, "If you really want to know why we have to pick rags then work then find out at ground level. Then only you will realize the reality that we work to feed ourselves and not to watch such videos". Children who pickup rags are really hurt the way the news has been produced in front of people and they completely refute all allegations and disagree with it.

Delhi Government can do stray dog's census, then why leave us?

from page 1

for census of street and working children".

"You will be shocked to know that members of Badhte Kadam Federation conducted a sample survey on 4th November, 2015 to know the count of street and working children in Delhi". During the survey, 1320 children came in counting, out of which we could meet 618 personally (they got wrong slip marked) and 483 children refused to talk. 219 were found during observation visit whose faces kept changing as they keep shifting from one place to other for work.

Out of total 618 children, 220 girls and 398 boys are living on streets in which 99 children are of age group of 0 to 5 years, 241 children are of age group 5 to 10 years, 203 children are of 10 to15 years and 73 children are of age group of 15 to 18 years. Majority of children are of the age group of 6 to 15 years.

Out of the children who are victims of Child Labor, 155 children are rag pickers, 64 children begs, 64 children roam around here and there, 52 children work in restaurants and Hotels. Apart from this 35 children work in Big bungalows, 15 children sell flowers, 13 children balloons, 7 children peanuts, 3 children sell clothes, etc.

342 children talked about the duration of their work in which 50% children work for around 5 to 9 hours, 23% work around 9 to 15 hours.

Balaknama urgently appeal Delhi Government to initiate the census of street children in the city.



Civic body conducts dog census in South Delhi

POPULATION CONTROL SDMC has given the work to Human Society International India which will finish the task in two months

COUNTING CANINES

The volunteers are conducting the census ward-wise, wherein one volunteer rides a motorbike and the pillion volunteer will using a specially designed mobile app to record data. "The team members are supposed to cover the designated 'driving routes' that have been created by using the boundaries submitted by SDMC," said Dr Amit Chaudhari, of Human Society International India.

The route has been planned keeping in mind various factors like total street length in a ward, density of population and human-dog ratio. HSI India will compile and analyse the data over eight weeks. A report will be submitted with SDMC by October.

SDMC has been running the street dog sterilization programme for more than four years. S BURMAULA / HT PHOTO

What street children says on this?

15 years old Javed said, "It is good that authorities are conducted dog's census to know about their population but what about us? We are also living among them only. The way these voiceless cannot express their pain, we also cannot tell our pain to anyone. We want our census to be done so that we also get some identity".

16 years old Nagma said, "Many a times dog bite people roaming here and there so it is good that after conducting their census they will be put in a safe place and they will not harm anyone. We want that authorities should think about us also and our census should be conducted. May be it will help in stopping child labor, count of those children can be done who are pushed into traffi cking, we can know how many children are put to different work".

14 years old Rahul said, "Th is is good that dogs should be protected so that public does not harm them but what about the oppression faced by the girls and boys on streets?"

15 years old Aakash said, "Authorities have not conducted any census of street and working children to know their population, to know how we are surviving. Our authorities should talk to us and should take care of our needs also".

BALAKNAMA- MOMENTS OF COURAGE AND GLORY

SHARING SOME OF THE PICTURES RELATED TO THESE MOMENTS WITH YOU















This edition is for limited distribution. All pictures are published in this edition after children's their approval.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Richa Somvanshi.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।



बालकनामा

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-59 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त-सितंबर, 2016 | मूल्य - 5 रूपए

अनसुनी पुकार यौन शोषण के खिलाफ युवाओं के विचार

बालकनामा ब्यूरो

दिन पर दिन यौन अत्याचारों की संख्या बढ़ती जा रही है और इसके शिकार सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी हो रहे हैं। चूंकि यह एक संवेदनशील विषय है, इसलिए बालकनामा के पत्रकारों ने यौन अत्याचारों की चर्चा बच्चों से करना ठीक नहीं समझा, लेकिन इस विषय पर पत्रकारों ने उन युवाओं से बात की जो पहले सड़क व कामकाजी बच्चे रह चुके हैं। इस चर्चा में कुछ युवक और युवतियों ने भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। चर्चा के लिए युवक और युवतियों को अलग अलग बैठाया गया और चर्चा के दौरान निम्न बातें निकलकर सामने आई........







युवती - एक दिन मैं अपने दोस्त के घर जा रही थी कि अचानक एक बाइक वाले ने अपनी बाइक रोककर मुझसे कहा कि आपने कपड़ों के अंदर कुछ पहना है? उस वक्त मुझे बहुत बुरा लगा कि कोई भी व्यक्ति लड़कियों से कुछ भी बोलकर निकल जाएगा, क्या हमारा कोई अस्तित्व नहीं है।

युवक - रेलवे स्टेशन पर जब नए बच्चे आते हैं तो उनसे बड़े लड़के कहते हैं कि तुम स्टेशन पर तभी रह सकते हो जब तुम मुझे अश्लील हरकत करने दोगे और जब वह उनके साथ अश्लील हरकत करते हैं तो उससे पहले वह उस बच्चे को इतना नशा करवा देते हैं कि अश्लील हरकत होते समय बच्चे को दर्द महसूस न हो, उसे पता न चले, न ही वह किसी और से यह बात बता सके।

युवती - कुछ पिता ऐसे हैं जो अपनी बेटी के साथ भी यौन अत्याचार करते हैं और उसकी मां के साथ अश्लील हरकत करते वक्त बेटी को सोते से जगाकर कहते हैं देखो मैं क्या कर रहा हूं। यदि लड़की अपने पिता की बात नहीं मानती है तो वह मार मार कर अश्लील हरकत देखने पर मजबूर करते हैं। डर के मारे उसकी मां भी कुछ नहीं कहती, क्योंकि अगर उसने किसी से कुछ भी कहा तो उसका पति उसे घर से निकाल देगा।

युवक - यह हर जगह होता है सबके साथ होता है यह सच नहीं है कि सिर्फ लड़कियों के साथ ही यौन शौषण होता है, सड़क पर रहने वाले लड़कों के साथ भी यह होता है।

युवती - जब हम मार्किट और बस स्टैंड या फिर सार्वजनिक वाहन में सफर कर रहे होते हैं तो लोग इन जगहों पर भी अलग अलग प्रकार से हमारा शोषण करते हैं, जैसे हमारे व्यक्तिगत अंगो को छूकर, ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हमारे व्यक्तिगत अंगों की तरफ घूर घूर कर देखकर, अपने व्यक्तिगत अंगों को दिखाकर या फिर अपने मुंह से अश्लील टिप्पणियां देकर तथा चेहरे पर गंदी अभिव्यक्ति करके।

युवक - परिवार में जो छोटी लड़कियां

शेष पृष्ठ 5 पर

कुत्तों की गणना करने वाली दिल्ली सरकार क्यों नहीं सुन रही स्ट्रीट चिल्ड्रन की गुहार?

बातूनी रिपोर्टर जावेद रिपोर्टर शन्नो, शम्भू

राजधानी दिल्ली में सात साल बाद कुत्तों की गणना का मामला फिर से सुर्खियों में है। ज्ञातव्य हो कि कॉमन वेल्थ गेम्स के दौरान दिल्ली सरकार ने सड़कों पर रहने वाले आवारा कुत्तों की गणना करवाने का निर्णय लिया था और एक बार फिर से सरकार द्वारा कुत्तों की बढ़ती संख्या और उनकी सुरक्षा की दृष्टि से उनकी गणना करने निर्णय लिया गया।

जब बढ़ते कदम के सदस्यों को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने कहा कि हमें इस बात की खुशी है कि हमारी सरकार ने दक्षिणी दिल्ली में कुत्तों की गणना करने का निर्णय लिया है, लेकिन दुख की बात यह है कि सरकार को जितनी चिंता सड़कों पर रहने वाले कुत्तों की संख्या की है, उतनी चिंता सड़कों, स्टेशनों और फुटपाथों पर रहने वाले बच्चों की नहीं है, जिनका जीवन बद से बदतर होता जा रहा है और लोग हमारे साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार करते हैं। सड़कों पर रहने वाले हम बच्चे तो आज भी गिनती में नहीं आते हैं और न ही सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना के लिए सरकार द्वारा कोई पहल की गई है। आपको जानकर हैरानी होगी कि बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने 4 नवंबर, 2015 को दिल्ली में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या का पता लगाने के लिए एक सैंपल सर्वे भी किया था।

गणना के दौरान 1320 बच्चे गिनती में आए, जिनमें से 618 बच्चों से व्यक्तिगत रूप से मिले (उन्होंने गलत पर्ची कटवाई) और 483 बच्चों ने बात करने से मना कर दिया। 219 बच्चे ऑब्जरवेशन विजिट के दौरान पाए गए, जिनके चेहरे रोज बदलते रहे और वो एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम करने जाने वाले बच्चे थे।



कुल 618 बच्चे, जिनमें 220 लड़कियां और 398 लड़के सड़कों पर रह रहे हैं। इनमें 0 से 5 वर्ष के 99 बच्चे, 5 से 10 वर्ष के 241 बच्चे, 10 से 15 वर्ष 203 बच्चे और 15 से 18 वर्ष के 73 बच्चे शामिल थे। ज्यादातर बच्चे 6 से 15 वर्ष की आयु सीमा के बीच के थे।

बाल मजदूरी के शिकार 155 बच्चे कबाड़ा बीनने वाले, 64 बच्चे भीख मांगने वाले, 64 बच्चे घुमंतू, 52 बच्चे रेस्टोरेंट व ढाबे में काम करने वाले थे। इसके अलावा 35 बच्चे कोठियों में काम करने वाले, 15 बच्चे फूल, 13 बच्चे गुब्बारे, 7 बच्चे मूंगफली, 3 बच्चे कपड़े इत्यादि बेचने वाले थे।

342 बच्चों ने अपने काम करने के समय के बारे में जवाब दिया, जिसमें 50 प्रतिशत बच्चे 5 से 9 घंटे, 23 प्रतिशत 9 से 15 घंटे काम करते थे।

शेष पृष्ठ 8 पर

चिकनगुनियां से सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसे कर रहें हैं अपना बचाव

बातूनी रिपोर्टर किशन, रिपोर्टर चेतन

पश्चिमी दिल्ली के नेहरू कैंप के 10 बच्चे चिकनगुनियां से बीमार हो गए थे, लेकिन उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपना इलाज करा सकें। क्योंकि यह बच्चे खुद काम करके घर का खर्चा चलाते हैं। जब घर में काम करने वाला ही बीमार पड़ जाए तो घर का खर्चा कैसे चलेगा और दवाई गोली कहां से आएगी। सरकारी अस्पतालों में भी इतनी सुविधा नहीं है। वह भी बुरी तरह से चिकनगुनियां के मरीजों से भरे पड़े हैं। चिकनगुनिया की चपेट में आए बड़े व्यक्ति और बच्चे चल फिर भी नहीं पा रहें हैं तो घंटों लाइन में कैसे खड़े रहकर वह दवाई ले पाएंगे। इसी कारण बच्चों ने अपनी दवा दारू नहीं की और अपने घर में ही बीमारी की हालत में पड़े हुए थे और उनके माता पिता के पास भी इतने पैसे भी नहीं थे कि वह अपने बच्चों का इलाज किसी प्राईवेट क्लीनिक में करा पाएं।



यह दशा देख वहां रहने वाले कुछ बच्चों ने अपने आस पास से हर एक व्यक्ति से 10-10 रुपए जमा किए। पैसे जमा करने के बाद इन दस बच्चों को प्राईवेट क्लीनिक ले जाया गया और दवा कराई गई। इस तरह इन 10 बच्चों को चिकनगुनियां से थोड़ी राहत मिली। अब यह बच्चे सुरक्षित हैं। इसके साथ ही ये बच्चे चिकनगुनियां से निपटने के लिए कुछ और भी उपाए कर रहें हैं। बच्चों का कहना है कि हम इतने नशे में रहते हैं कि हमारे शरीर में यदि मच्छर

शेष पृष्ठ 6 पर

संपादकीय

प्रिय दोस्तों,

हम सभी पाठकों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने बालकनामा अखबार को इतना प्यार दिया और इतना सराहा। दोस्तों हमेशा की तरह इस बार भी हमारा प्रयास रहा है कि हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ घट रही घटनाओं और समस्याओं की सच्ची खबरें आप तक पहुंचा पाएं और उनकी बात आपके बीच रख पाएं।

इस बार के अंक में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने सरकार के सम्मुख अपनी गणना का मुद्दा उठाया है और उनसे पूछा है कि जब दिल्ली में रहने वाले कुत्तों की गणना सरकार करवा सकती है तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना से क्यों पीछे हटती है?

इसी के साथ ही हमने तेजी से फैल रहे चिकनगुनिया और डेंगू की वास्तविक स्थिति भी आपके सम्मुख रखी है। हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों के जीवन से जुड़ी वास्तविक घटनाओं को आपके बीच लेकर आ रहे हैं और बच्चों के बहादुरी के कारनामें भी लेकर आए हैं, ताकि आप उनका हौसला बढ़ाएं।

हम आपके बहुत आभारी होंगे यदि आप बालकनामा को किसी भी प्रकार से (छोटा या बड़ा या वित्तीय) सहयोग करें। आप नीचे दिए गए पते और balaknamaeditor@gmail.com इस मेल आई डी पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

पुल के नीचे सोने से लगता है डर

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकार ने मूलचंद फ्लाई ओवर के नीचे रहने वाली लड़कियों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। पत्रकार ने सभी लड़कियों से मीटिंग के दौरान वहां पर होनी वाली परेशानियों पर चर्चा की। जो लड़कियां पूरे दिन अपने परिवार के गुजारे के लिए लालबत्ती पर काम करती हैं और फ्लाई ओवर के नीचे रात को सोती हैं तो उनको बहुत परेशानी आती है। 16 वर्षीय सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम लड़कियां यहां पर पूरे दिन काम करती हैं और रात को यहीं पर सोती हैं। हमें मजबूरन यहां सोना पड़ता है, क्योंकि हमारे रहने के लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं है और न ही हमारे पास इतने पैसों का जुगाड़ हो पाता है, जिससे हम किराए के मकान में रह सकें। अगर हमारे पास पैसे होते भी हैं तो कोई भी हमें कमरा किराए पर नहीं देता। लेकिन हमें कोई व्यक्ति यदि कमरा किराए पर दे भी दे तो हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि हम किराए का भुगतान कर सकें। इसलिए मजबूरन हमें कामकाज करने के बाद पुल के नीचे ही सोना पड़ता है। पर पुल के नीचे सोते समय हम लड़कियों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जैसे बड़े लड़के शराब पीकर इधर से उधर मंडराते रहते हैं। वह हम लड़कियों को देखकर उल्टा सीधा बोलते रहते हैं।



14 वर्षीय काजल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम लड़कियां पुल के नीचे सोती हैं। यहां बिल्कुल खुला होता है, जो भी लोग उस सड़क से गुजरते हैं वह हम लड़कियों को गलत नजर से देखते हैं और कई बार नशा करने वाले लड़के हम लड़कियों के पास रात को सो जाते हैं। इसलिए हम लड़कियों को हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं हम लड़कियों के साथ कुछ गलत काम न हो जाए। पत्रकार ने पूछा कि आप लोगों ने कभी पुलिस को यह बात क्यों नहीं बताई तो 15 वर्षीय प्रीती (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम पुलिस वालों से क्या शिकायत करें, वह तो खुद हम लड़कियों को उल्टा सीधा बोलते रहते हैं और रात को जब हम सो जाते हैं तो वह भी हमें लात मारकर वहां से भगाते हैं। ऐसी स्थिति में लड़कियां अपने परिवार के साथ कहां जाएंगी। पुल के नींचे रहने वाली और काम करने वाली लड़कियों ने पत्रकार से कहा कि सरकार हम जैसी गरीब लड़कियों और बच्चों के रहने के लिए कोई व्यवस्था करे। सरकार द्वारा जगह जगह पर रैन बसेरा बने हुए हैं वैसे हम लड़कियों के लिए सुविधाएं हों, जिससे हम महफूज रह सकें। हमारी सरकार से यही गुजारिश है कि हमें सुरक्षा प्रदान की जाए।

फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों को पीना पड़ रहा है पौधों में डालने वाला गंदा पानी

बातूनी रिपोर्टर कैलाश, रिपोर्टर शम्भू

मूलचंद फ्लाई के नीचे रहने वाले बच्चे जो लाल बत्ती पर अपने गुजारे के लिए काम करते हैं। उन बच्चों के साथ बालकनामा के पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने बताया कि भैया यहां पर हम बच्चों को पीने के पानी की बहुत परेशानी होती है। 15 वर्षीय आकाश ने बताया कि यहां पर हम बच्चे मजबूरी में रहते हैं। हम बच्चों को दूर दूर तक पानी भरने के लिए जाना पड़ता है। यहां पर दिल्ली जल बोर्ड की एक सप्लाई मशीन है और वहीं से हम बच्चे पीने के लिए और नहाने धोने के लिए पानी भरकर लाते हैं। लेकिन दिल्ली जल बोर्ड की सप्लाई मशीन पर एक समस्या है, जब हम बच्चे वहां से पानी भरते हैं तो कभी कभी हमें बिजली का करंट लग जाता है। इसलिए हम बच्चों को हमेशा डर लगा रहता है कि हम बच्चों को कहीं इस बिजली के करंट के चलते किसी दुर्घटना का शिकार न होना पड़े। इससे हमारी जान को भी खतरा हो सकता है।

अशोक ने बताया कि अभी हाल ही की बात है कि दो दिन पहले 12 अगस्त को बहुत तेज बारिश हुई थी। तब हम बच्चों में से एक लड़की कविता दिल्ली जल बोर्ड सप्लाई मशीन से पानी भरने के लिए गई थी। जैसे ही कविता वहां पर पानी भरने के लिए पहुंची कि अचानक कविता को बहुत तेज बिजली का करंट लग गया और वह गिर पड़ी। यह दुर्घटना देखकर हमारे माता पिता बहुत डर गए। इसलिए वह अब हम बच्चों को पानी भरने के लिए वहां नहीं जाने देते हैं। लेकिन पीने के लिए पानी कहीं से तो लाना ही पड़ेगा। इस वजह से हम बच्चों को दूर दूर इधर उधर पानी की खोज में भटकना पड़ता है और पार्क के अंदर जो पेड़ पौधों में पानी लगाया जाता है, उसका पानी हमें पीना पड़ता है। वह पानी बहुत खारा होता है जो पीने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता और शायद इस पानी की वजह से ही हम बीमार भी पड़ रहे हैं। यह जानने के बाद पत्रकार ने बच्चों से कहा कि दिल्ली जल बोर्ड मशीन कहां पर है मुझे ले चलो। वहां पहुंचकर पत्रकार ने जल बोर्ड की सुरक्षा करने वाले कार्यकर्ता से इस बारे में पूछताछ की तो उन्होंने बताया कि जब काफी तेज बारिश हो जाती है तो बारिश की वजह से मशीन में पानी भर जाता है। ऐसे में अक्सर मशीन में करंट आ जाता है। लेकिन दिल्ली जल बोर्ड की सप्लाई मशीन का पानी हर घर में सुरक्षित पहुंचता है।



शौचालय की सुविधा न होने के कारण समय पर स्कूल नहीं जा पाते बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली में आज भी कई इलाके ऐसे हैं जहां किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है और तो और उन इलाकों में शौचालय भी नहीं बने हुए हैं। वाल्मीकि कैंप में सिर्फ एक ही शौचालय बना हुआ। लोगों की इतनी संख्या होने की बावजूद लोग खुले में ही शौच करते हैं। ऐसी ही एक कॉलोनी की हम बात कर रहे हैं, जो वेस्ट दिल्ली वाल्मीकि कैम्प के शकूर पुर के नजदीक है। इस कॉलोनी में छोटे बच्चे और लड़कियों को बहुत परेशानी होती है, क्योंकि वाल्मीकि कैम्प के नजदीक रेलवे लाइन है इसलिए सभी लोग रेलवे लाइन के पास खुले में शौच करने के लिए जाते हैं। वहां पर एक ही शौचालय है, जिसमें सुबह 5 बजे से लेकर 11 बजे तक भीड़ लगी रहती है और वाल्मीकि कैम्प में कुछ बच्चे हैं जो सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं। यह बच्चे अपने स्कूल में अकसर समय पर नहीं पहुंच पाते हैं। इसलिए स्कूल के अध्यापक से उन्हें बहुत डांट खानी पड़ती है। क्योंकि वाल्मीकि कैंप में रहने वाले सभी बच्चे शौच करने के लिए रेलवे लाइन पर जाते हैं पर जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करने जाती हैं तो खासतौर पर उन्हें बहुत समस्या होती है, क्योंकि जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करती हैं तो बड़े बड़े लड़के उन्हें छुप छुपकर देखते हैं। वो लड़के शराब पीकर रेलवे लाइन के पास आ जाते हैं और हमें गाली देते हैं।

इस रोज रोज की समस्या से लड़कियां और छोटे बच्चे बहुत परेशान हैं। इस समस्या के साथ वहां पर एक और दुर्घटना हो रही है क्योंकि रेलवे लाइन के पास एक जगह जिसे लोग खंडहर के नाम से जानते हैं वह खंडहर वाली जगह बहुत दिनों से वीरान पड़ी हुई है। वो जगह एकदम सुनसान रहती है। अगर कोई बच्चा इस तरफ जाता है तो उनका अपहरण कर लिया जाता है। वहां से बच्चे गायब कर दिए जाते हैं। इसलिए बच्चे यहां हमेशा डर कर रहते हैं कि कहीं हमें बाहर खुले में शौच करते समय अपहरण न कर लिया जाए। शौच न होने की वजह से बच्चों और लड़कियों को अलग अलग समस्याओं का सामना कर पड़ रहा है। बच्चे चाहते हैं कि उनके लिए वाल्मीकि कैंप में जल्द से जल्द शौचालय बनवाएं जाएं ताकि यह बच्चे शोषण का शिकार न हों और वैसे भी खुले में शौच करने से बीमारियां पैदा होती हैं और वातावरण भी गंदा होता है। स्वच्छ भारत अभियान के चलते हमारी इस समस्या का समाधान हो और लड़कियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनकी मदद की जाए, जिससे समाज में रहने वाली लड़कियां सुरक्षित रह सकें।

शेल्टर होम में नहीं मिलता बच्चों को अच्छा खाना

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकार ने उन बच्चों से मुलाकात की जो पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रहते हैं और वहीं पर काम करते हैं। इनमें कुछ बच्चों ऐसे भी हैं जो शेल्टर होम में भी रहकर आ चुके हैं। 14 वर्षीय अजीत (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया स्टेशन पर ज्यादातर यह समस्या हो रही है कि हम बच्चे स्टेशन पर रहकर जैसे तैसे अपना गुजारा करने के लिए काम करते हैं और यहीं पर पूरे दिन रहते हैं। इसलिए शेल्टर होम के कार्यकर्ता हम बच्चों को जबरदस्ती उठाकर ले जाते हैं और होम में डाल देते हैं। यह हमारे लिए अच्छी बात है कि हम बच्चों को स्टेशन से हटाकर एक होम में रखा जाता है। लेकिन जिस भी शेल्टर होम में हम बच्चों को रखा जाता है, वहां हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है।

विकास (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मुझे भी पहले शेल्टर होम में लेकर गए थे। लेकिन मैं वहां से भागकर आ गया। क्योंकि वहां पर हम बच्चों को जो खाना दिया जाता है, वह खाना बिल्कुल पौष्टिक नहीं होता और जो दाल मिलती है वह दाल एकदम पानी की तरह होती है। देखने से लगता है कि वो दाल नहीं पानी है और जो सुबह सुबह बच्चों को पीने के लिए दूध देते हैं, उस दूध में भी पानी ज्यादा दूध कम होता है। अगर इस बात की शिकायत हम बच्चे होम के कार्यकर्ता से करते हैं कि हम यह खाना नहीं खाएंगे तो वह लोग हम बच्चों को डांटते हैं और कड़क आवाज में कहते हैं कि खाना है तो खाओ या फिर भूखे रहो। इसलिए हम बच्चे सेंटर होम से भागकर आ जाते हैं और वहां दोबारा नहीं जाना चाहते हैं। क्योंकि शेल्टर होम से हमें स्टेशन की जिंदगी अच्छी लगती है। स्टेशन पर कोई हमें डांटता नहीं है और स्टेशन पर कूड़ा कबाड़ा इकठ्ठा करके कम से कम हम बच्चों को अच्छा खाना मिल जाता है और वो खाना हमारे मन पसंद का होता है। साथ में बहुत स्वादिष्ट भी होता है। जिस खाने को हम भरपेट खाते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपको कैसा शेल्टर होम चाहिए? विकास ने बताया कि भैया हम बच्चों को ऐसा शेल्टर होम चाहिए, जिसमें खाना.पीना अच्छा हो



और वहां के कार्यकता हम बच्चों से प्यार से बात करें और हमारी बातों को सुनें। अगर ऐसा शेल्टर होम हम बच्चों को मिलेगा तो बच्चे शेल्टर होम से नहीं भागेंगे।

राजस्थान से आए बच्चे फूलों का गुलदस्ता बेचकर कर रहे हैं गुजर बसर

बातूनी रिपोर्टर किशन, रिपोर्टर शम्भू

दिल्ली की लालबत्ती पर छोटे छोटे काम करने वाले बच्चों से पत्रकारों ने बात की तो पता चला कि जो छोटे बच्चों से या तो भीख मंगावाने का काम कराया जाता है या फिर फूल बेचने का काम। ये छोटे छोटे बच्चे आपको अकसर लालबत्ती पर हांथो में फूलों का गुलदस्ता लिए बेचते हुए दिखाई देते होंगे। 15 वर्षीय भंवर (परिवर्तित नाम) से पता चला कि यह सभी बच्चे राजस्थान के रहने वाले हैं।

जब राजस्थान में कोई कामकाज नहीं चलता है तो इनके माता पिता इन्हें दिल्ली लेकर आ जाते हैं। यह बच्चे राजस्थान में भी काम करते हैं। वहां पर एक साल में पांच मेला लगते हैं और उन मेलों में यह बच्चे जूता चप्पल रखने



वाला लकड़ी का स्टैंड खुद बनाते हैं और बनाकर मेलों में बचते हैं।

14 साल की सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बच्चों के माता पिता मार्किट से लकड़ी खरीदकर लाते हैं और हम बच्चे खुद से ही चप्पल रखने का स्टैंड बनाते हैं। स्टैंड बनाते वक्त बच्चों को बहुत परेशानी भी होती है। जब बच्चे लकड़ी काटते हैं तो उसमें से बहुत धूल निकलती है, जिसके कारण बच्चों की छाती में दर्द, पेट दर्द में होता रहता है। इतनी कठिनाइयों का सामना करने के बाद बच्चे लकड़ी का स्टैंड बनाते हैं और मेले में 120 रुपए से 200 रुपए तक की कीमत का बेच देते हैं।

इस प्रकार एक मेले में हमारी कमाई दो हजार से तीन हजार रुपए तक की हो जाती है। पर जैसे ही मेला खत्म होता है उसके बाद हमारे कमाए हुए पैसे खत्म होने लगते हैं। इसलिए भाई बहनों को कई बार भूखे पेट भी सोना पड़ जाता है। इसी वजह से फिर हम पैसे कमाने के लिए दिल्ली की ओर रवाना हो जाते हैं क्योंकि दिल्ली में पहले से ही हमारे रिश्तेदार होते हैं जो काम कर रहे होते हैं। लाल बत्तियों पर हम गुलदस्ता बेचते हैं। सदर बाजार से गुलाब का फूल खरीदकर लाते हैं। सदर बाजार में एक बंडल की कीमत 20 रुपए है।

गुलदस्ता बनाकर जब हम बेचते हैं तो हमारा गुलदस्ता 50 से 120 रुपए तक की कीमत में बिक जाता है। गुलाब के फूलों का गुलदस्ता हमें दूसरे व्यक्ति बनाकर देते हैं और हम छोटे छोटे बच्चे अलग अलग लाल बत्ती पर घूम घूमकर फूलों का गुलदस्ता बेचते हैं। लाल बत्ती पर रोज बच्चे आते जाते रहते हैं। इनका कोई जगह ठिकाना नहीं होता है। यह बच्चे 10 से 12 संख्या में एक लाल बत्ती पर पाए जाते हैं। राहुल ने बताया कि हम बच्चों को इस काम में प्रतिमाह तीन हजार रुपए हमारा मालिक देता है।

चोरी करने का झूठा आरोप झेल रहे कबाड़ा बीनने वाले बच्चे



बालकनामा ब्यूरो

लाजपत नगर सेंट्रल मॉर्किट एक जाना माना मार्किट है। यहां पर बड़े बड़े लोग शॉपिंग करने के लिए आते हैं और दूसरी ओर सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी अपना पेट पालने के लिए उस मार्किट में कूड़ा कबाड़ा चुनते हैं। लेकिन इन बच्चों का इस मार्किट में काम करना दूभर हो रहा है। जब यह बच्चे मार्किट में काम करते हैं तो लोग इन्हें देखते ही सतर्क हो जाते हैं और इन बच्चों को उल्टा सीधा बोलते हैं। बेशक यह बच्चे गन्दे कपडे.पहने होते हैं, कूड़ा कबाड़ा उठाते हैं। मगर यह बच्चे कोई गलत काम नहीं करते, बल्कि अपनी मेहनत मजदूरी करके दो पैसे कमाते हैं। तब जाकर वह अपना पेट भरते हैं।

बालकनामा के पत्रकार को 15 वर्षीय सलीमा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया यहां पर बच्चों के साथ बहुत गलत हो रहा है। जो बड़े बड़े लड़के हैं वह इस मार्किट के अंदर ईधर से उधर घूमते रहते हैं और मार्किट के अंदर पब्लिक की जेब काटते हैं, चोरी चकारी करते हैं। मगर हमारे गन्दे कपड़े देख और कूड़ा कबाड़ा चुनते देखकर पुलिस वाले हम बच्चों पर शक करते हैं। वो हम बच्चे से कहते हैं कि तुम लोग ही इस मार्किट में काम करते हो, तुम्हारे आलावा चोरी और कोई नहीं करता। मार्किट में काम करने वाली एक बच्ची सोफिया (परिवर्तित नाम) ने भी कहा कि किसी भी व्यक्ति की मार्किट में अगर जेब कट जाती है तो उसकी जेब काटने के इल्जाम पुलिस वाले हम बच्चों को ही पकड़कर पुलिस थाने ले जाते हैं और थाने में ले जाने के बाद हम से पूंछताछ करते हैं। लेकिन सच बात तो यह है कि हम बच्चे चोरी नहीं करते हैं। मार्किट में बच्चे अपना पेट पालने के लिए कूड़ा कबाड़ा चुनते हैं तो बच्चे चोरी क्यों करेंगे। चोरी तो बड़े बड़े लड़के करते हैं जो बाहर से आते हैं।

फटे पुराने कपड़े सीकर छोटी लड़कियां कर रहीं है अपना गुजारा

बातूनी रिपोर्टर मनीषा, रिपोर्टर चेतन



कमला नेहरू कैम्प में 12 साल की लड़कियां सुबह स्कूल से आने के बाद दोपहर 2 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक फटे पुराने कपड़े सिलने का काम करती हैं। उन्हें एक फटा पुराना कपड़ा सिलने पर 10 रुपए मिलते हैं। जब ये लड़कियां मिट्टी के चूल्हे पर खाना बनाती हैं तो वह पढ़ाई करने के लिए अपने साथ अपनी कॉपी किताबें लेकर बैठती हैं। सिलाई करने वाली ये लड़कियां कैसे भी करके अपनी पढाई कर रही हैं। इनके परिवार की आर्थिक स्थिती ठीक नहीं है, जिस कारण इनके माता-पिता अपने बच्चों का सही ढंग से पालन पोषण नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए यह लड़कियां दूसरे लोगों के फटे पुराने कपड़े सिलकर अपना पढ़ाई का खर्चा निकालती हैं।

ये लड़कियां अधिकतर छुट्टी के दिन इस काम को करती हैं। ऐसे में इन लड़कियों पर लोगों का काम करने का दबाव ज्यादा रहता है, क्योंकि रविवार के दिन सबकी छुट्टी होती है। इसलिए लड़कियां रविवार के दिन ही सुबह 9 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक अपनी सिलाई मशीन पर बैठी रहती हैं। इस वजह से इनके हाथ पैरों और आंखो में भी दर्द होने लगता है, जिससे इन्हें कुछ समय तक ठीक से दिखाई भी नहीं देता है। सिलाई करने के चलते इन्हें बहुत देर तक एक ही जगह पर बैठकर मशीन चलानी पड़ती है।

घरेलू कामकाज के चलते छोड़ दिया अपना स्कूल

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी, रिपोर्टर ज्योति

पश्चिमी दिल्ली में रहने वाली लगभग 10 लड़कियों ने स्कूल जाना छोड़ दिया है। जब पत्रकार ने लड़कियों से इसका कारण पूछा तो 15 वर्षीय काजल ने बताया कि मेरे घर की स्थिति बहुत खराब हो गई थी, इसलिए मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि मेरे पापा बहुत बीमार हो गए थे और वह काम करने के लिए नहीं जा पाते थे इसलिए घर का खर्चा चलाने के लिए मुझे अपना स्कूल छोड़ना पड़ा। 16 वर्षीय पूजा को स्कूल इसलिए छोड़ना पड़ा क्योंकि उसकी मम्मी को दूसरों के घरों में काम करने के लिए जाना पड़ता था और पूजा को ही अपने घर की देखरेख करनी पड़ती थी। जो समय बचता था उस में फैक्ट्री से बुरादा उठाने के लिए जाती थी। यह सब करने के बाद उसको समय ही नहीं मिल पाता था, क्योंकि वह बहुत थक जाती थी।

15 वर्षीय मीरा ने बताया कि मेरे माता पिता काम करने के लिए बाहर जाते थे। इसलिए मुझे घर पर अपने छोटे बहन भाई का ख्याल रखना पड़ता था और भाई बहन को स्कूल के लिए तैयार करने में ही उसका समय बीत जाता था। जब मैं स्कूल पंहुचती थी तो



हमारी अध्यापिका बहुत डांटती थी। इसलिए मैंने स्कूल जाना बन्द कर दिया। मैं अब घर के काम में व्यस्त हो गई हूं। मुझे पढ़ाई करने का समय ही नहीं मिलता है। 16 वर्षीय प्रवीना पहले सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने जाती थी, लेकिन जब से उसके पिता जी ने शराब पीना शुरू किया प्रवीना का नाम स्कूल से कटवा दिया और पैसे कमाने के लिए एक कबाड़े की दुकान पर बैठा दिया। अब वह सारा दिन कबाड़े की दुकान पर ही बैठी रहती है और दूसरे बच्चों से बोतलें खरीदती है। फिर प्रवीन बड़े कबाड़े वाले की दुकान पर गाड़ी से कबाड़ा भेजते हैं।

13 वर्षीय सोनिया ने बताया कि मैं पहले सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने के लिए जाती थी। पर अपने माता पिता के कारण स्कूल छोड़ना पड़ा। क्योंकि हमेशा वह मुझे ताने मारते थे कि तू पढ़ाई लिखाई करके इंजिनियर बनेगी क्या? इसलिए मैंने पढ़ाई छोड़ दी और जो काम मेरे माता पिता करने के लिए बोलते हैं मैं वही काम करती हूं। मेरा सपना था कि मैं एक अध्यापक बनूं पर अपने माता पिता की वजह से मेरा यह सपना अधूरा रह गया।

यह सभी लड़कियां अपने पूरे घर की जिम्मेदारी उठा रही हैं। यह सुबह 6 बजे से लेकर रात को 11 बजे तक लकड़ी का बुरादा छांटने का काम करती हैं। इन्हें पहले फैक्ट्री में जाकर लकड़ी का बुरादा लाना पड़ता है। उसके बाद यह इसकी छटाई करती हैं। इन्हें बुरादा छांटते वक्त बहुत परेशानी होती है। क्योंकि जिस फैक्ट्री से यह लकड़ी का बुरादा लाती हैं, वह फैक्ट्री 4 से 5 मंजिल की होती है। इन्हें सीढ़ियां चढ़ने उतरने में बहुत थकावट हो जाती है। कभी कभी सीढ़ियों से उतरते वक्त लकड़ी का बुरादा गिर जाता है तो मालिक बहुत गाली देते हैं। बुरादे की छटाई करते वक्त बुरादे की धूल मिट्टी इनकी आंख, नांक मुंह में जाती है, जिस कारण से इनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है।

भीख मांगने से बच्चे चाहते हैं आजादी

रिपोर्टर सौरभ

नोएडा सेक्टर 106 में बच्चे भीख मांगने का काम करते हैं। जब बच्चों से पूछा गया कि वे भीख क्यों मांगते हैं तो उन्होंने बताया कि हमारे खानदान में शुरू से भीख मांगने का काम चलता आ रहा है। हमारे माता-पिता भी भीख मांगने का काम करते हैं। 14 वर्षीय करन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम जैसे ही अपना होश संभालते हैं, तभी से ही हमारे माता-पिता हमारे हाथों में किताबों की जगह एक कटोरा थमा देते हैं और कहते हैं कि तुम जाओ भीख मांगकर पैसा कमाकर लाओ। इसलिए हम बच्चे भीख ही मांगते हैं पढाई क्या होती है, हमें पता तक नहीं है। हम बच्चे सारा दिन इधर से उधर घूम घूमकर भीख ही मांगते रहते हैं और भीख मांगते समय हम बच्चों को काफी परेशानी होती है क्योंकि लोग हम बच्चों को घृणा की नजरों से देखते हैं, गाली गलौज करते हैं। ऐसा लगता है कि हम बच्चे इस देश के हैं ही नहीं। ऐसी परिस्थिति में हम बच्चे क्या करें। उन्होंने बताया कि हम अपना पेट पालने के लिए मार्किट में जाते हैं और सब्जी बेचने वाले जो कुछ कच्ची खराब सब्जियां कूड़े में फेंक देते हैं, उन सब्जियां उठाकर हम ले आते हैं। उस सब्जी से हम खाना बनाते हैं, क्योंकि कभी कभी हमें भीख मांगने पर पैसे नहीं मिलते हैं तो हमारे पास इतने पैसे नहीं हो पाते जिससे हम अच्छा खाना खा सके। इसलिए हम खराब सब्जियां उठाकर ले आते हैं और उसी से अपना गुजारा कर लेते हैं, लेकिन हमें भीख मांगना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता पर पेट पालने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा इसलिए मजबूरन हमें भीख मांगना पड़ता है।



दुर्घटना के शिकार होते स्टेशन पर रहने और नशा करने वाले बच्चे



रिपोर्टर पूनम

आगरा कैन्ट रेलवे स्टेशन के नजदीक रह रहे बच्चे स्टेशन पर रोज काम करने आते हैं और सभी बच्चे कबाड़ा बीनने, गुटखा बेचने तथा ट्रेन में झाड़ू लगाने और भीख मांगने का काम करते हैं। स्टेशन पर रहने और काम करने वाले ये बच्चे दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं। यह बात तब सामने आई जब पत्रकार पूनम ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के द्वारा उनकी समस्याओं के बारे में पूछा। तब गोलू ने बताया कि हम बच्चे काम भी करते हैं और नशा भी करते हैं। लेकिन जब हम बच्चे नशा ज्यादा कर लेते हैं तो होश में नहीं रहते। नशे में हम ट्रेन की पटरी पर कबाड़ा बीनते हैं पटरी पर जब ट्रेन आती है हम बच्चे नशे की हालत में होते हैं गाड़ी दूर होती है लेकिन धीरे धीरे हमारे पास आ जाती है। ऐसे में हमें समझ नहीं आता कि हम कहां जाएं। कभी कभी ऐसा होता है कि कैंची में भी हम बच्चे फंस जाते हैं और इतने में ट्रेन हमारे पास आ जाती है। अब ऐसे स्थिति में अपने हाथ पैर बचाएं या अपनी जान।

कृष्णा ने बताया कि स्टेशन पर जब ट्रेन आती है तब हम बच्चे अपना सामान बेचने के लिए चलती ट्रेन में लटकते हैं। कई बार लटकते वक्त हमारा हाथ ट्रेन से छूट जाता है, हम गिर जाते हैं और सीधे पटरी के नीचे आ जाते हैं। ऐसे में लोग देखते रहते हैं और कोई मदद करने नहीं आता है। 14 वषीर्य राहुल ने बताया कि हम बच्चे किसी न किसी कारण अपने मम्मी पापा को छोड़कर घर से भाग जाते हैं क्योंकि वह हम से गलत व्यवहार करने लगते हैं। जिसके कारण हम घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं और अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनना तथा भीख मांगना पड़ता है। हम दूसरे बच्चे को देखकर नशा भी करने लगते हैं और आज के समय में हम बच्चे बहुत नशा करने लगे हैं क्योंकि हमें अपनी मम्मी पापा की याद आती है तो हम नशा कर लेते हैं। जब हमें खाना नहीं मिलता है तब भी नशा ही करते हैं। हम दिन पर दिन नशे के दलदल में फंसते जा रहे हैं, जिसके कारण आए दिन दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं।

गांवों और कस्बों से बहला फुसलाकर लाए गए बच्चों से करा रहे हैं बाल मजदूरी

बातूनी रिपोर्टर मनोज, रिपोर्टर चेतन

पश्चिमी दिल्ली में रह रहे 70 बच्चे मध्य प्रदेश से आए हैं, जिनकी उम्र 12 साल से लेकर 16 साल तक है। इन बच्चों को मध्य प्रदेश से लाकर मकान व सीवर बनाने का काम करवाया जा रहा है। जब यह बच्चे काम पर जाते हैं तो इनके मालिक इन बच्चों के कंधों पर 50-50 किलो की सीमेंट की बोरी लाद देते हैं। यह बच्चे सुबह 9 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक काम करते हैं। मेहनत मजदूरी करने के बाद इन बच्चों को मालिक प्रतिदिन का 250 रुपए देते हैं।

इतने वजनदार कट्टे उठाने से बच्चों के छाती और कमर में बहुत दर्द होता है। काम में मन लगाने और ताकत के लिए ये बच्चे पान मसाला, तम्बाकू इत्यादि खाते हैं।

जब बालकनामा के पत्रकार ने काम करने वाले बच्चों से पूछा कि गुटका खाने से कैसे ताकत मिलती है तो 16 वर्षीय मनोज (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारे कंधो पर 50 किलो का सीमेंट का कट्टा लदा होता है। इसलिए हम गुटखा खाते हैं, जिससे हमारा दर्द कम हो जाता है क्योंकि जब हमें तेज दर्द होता है तो हम मुंह में लिए हुए गुटखे को तेजी से चबाने लगते हैं।

लेकिन दुख की बात यह है कि हम में से एक बच्चे को गुटखा खाने के कारण पेट में पथरी हो गई और वह बच्चा अब हमेशा बीमार रहता है। अब अगर वह बच्चा हल्का सा भी वजन उठा लेता है तो उसके पेट में बहुत तेज दर्द होने लगता है।

पत्रकार ने सभी छोटे छोटे बच्चों को समझाया कि गुटखा खाने से हमारी सेहत खराब होती है और हमारे शरीर में अलग अलग बीमारियां पैदा कर देता है। इसलिए बच्चों को गुटखा नहीं खाना चाहिए। जो भी बच्चा अभी गुटखा खा रहे हैं वह जल्द से जल्द गुटखा खाना छोड़ दें।

स्टेशन पर भटकती गुड़िया की गुड्डी ने की मदद

बालकनामा के पत्रकार की मदद से पहुंचाया शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर गुड़िया, रिपोर्टर ज्योति

15 वर्षीय गुड़िया जो अपने परिवार के साथ मथुरा में रहती थी। लेकिन उसके माता पिता बहुत बीमार रहते थे। उस वक्त गुड़िया सिर्फ 12 साल की थी। एक दिन उसके माता पिता की ज्यादा तबियत खराब हो गई और वह मथुरा स्टेशन से गुड़िया के साथ डॉक्टर के पास दवाई लेने के लिए जा रहे थे कि गुड़िया के माता पिता की अचानक एक ट्रेन हादसे में मृत्यु हो गई। यह हादसा देखकर गुड़िया जोर जोर से स्टेशन पर रोने लगी, क्योंकि उसके दोनों माता पिता चल बसे थे और वह बिल्कुल बेसहारा हो गई थी। गुड़िया को समझ में नहीं आ रहा था कि वह अकेले अब क्या करे। वह दूर खडी बस रोए जा रही थी। उस समय किसी ने भी उसकी मदद नहीं की, लेकिन गुड़िया के आसपास रहने वाली एक मुंह बोली चाची ने गुड़िया को देखा और उसे चुपचाप अपने साथ ले गई। गुड़िया की जो मुंह बोली चाची थी वह बहुत बुजुर्ग थी लेकिन फिर भी उन्होंने गुड़िया को अपनी बेटी बनाकर एक साल तक अपने साथ रखा। पर कुछ दिनों बाद वह भी बीमार पड़ने लगी तो वह गुड़िया को छोड़कर कहीं और चली गई।

गुड़िया फिर से अकेली हो गई। फिर उसने अपना पेट पालने के लिए दूसरे के घरों में काम करने लगी। एक दिन वह ट्रेन में बैठकर दिल्ली आ गई। जब गुड़िया दिल्ली आई तो बहुत रो रही थी, क्योंकि दिल्ली उसके लिए एकदम अंजान थी। दिल्ली के रास्ते भी उसे नहीं पता थे। इसके बावजूद वह भटकते हुए एक बच्ची से टकरा गई जो हरजत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा चुन रही थी। तभी उसने देखा कि वह लड़की रो रही है। गुड़िया ने गुड्डी को अपने बारे में सारी बातें बताई। फिर गुड्डी ने भी अपने बारे बताया कि मैं एक सेंटर में पढ़ाई करती हूं और रैन बसेरे में रहती हूं। मैं कबाड़ा चुनने का काम करती हूं। गुड्डी ने उससे पूछा कि तुम होम सेंटर जाना चाहती हो तो गुड़िया ने बताया कि मै वहां नहीं जाना चाहती। गुड्डी गुडिया को बालकनामा पत्रकार ज्योति के पास लेकर गई। पत्रकार ने गुड़िया को समझाया कि आप यहां पर रहोगे तो आप को कोई नहीं देखेगा और जब आप सेंटर होम में रहेंगे तो आप सुरक्षित रहेंगे। फिर दूसरे दिन पत्रकार ज्योति ने कार्यकर्ता सुरेंद्र जी को गुड़िया के बारे में बताया और उनकी मदद से गुड़िया को सेंटर होम भेज दिया।

न रेड लाइट न ट्रैफिक पुलिस का डर

बेरोक टोक चलती गाड़ियों की तेज रफ्तार का शिकार होते बच्चे

रिपोर्टर चेतन एवं ज्योति

पंजाबी बाग और रामपुर अशोका पार्क के बीच में लालबती न होने के कारण स्कूल जाने वाले और कामकाजी बच्चों को हर रोज तेज रफ्तार में चल रही गाड़ियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि अशोक पार्क वाले रोड पर रेड लाइट की सुविधा न होने के कारण उस रोड पर बहुत तेज वाहन चलते हैं। ऐसे में बच्चों का रोड पार करना बहुत मुशिकल हो रहा है। बच्चे रोड पार करने में बहुत डरते हैं कि कहीं उनके साथ कोई दुंघटना न हो जाए क्योंकि गाड़ी चलाने वाले इतनी जल्दी में होते है कि उस रोड पर कोई भी गाड़ी रोकता ही नहीं है। इसके बाद भी बच्चे इस रोड को एक चुनौती की तरह हर रोज पार करते हैं। क्योंकि बच्चों का स्कूल का रास्ता और उनके काम पर जाने का रास्ता एक ही है। उन्हें किसी भी हाल में वह रोड पार करके ही अपनी जगह पहुंचना होता है। रोड पार करते समय अगर कोई बच्चा वाहन को देखकर लड़खड़ा जाता है तो वाहन चलाने वाले लोग उस बच्चे को ही गाली देकर निकल जाते हैं जैसे लगता है उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

उस पर भी सोने पर सुहागा यह है कि इस रोड पर कोई ट्रैफिक पुलिस वाले भी नहीं होते हैं इसलिए लोग गाड़ी बहुत तेजी से चलाते हैं। अभी कुछ दिन पहले ही एक दुंघटना होने के कारण एक बहुत बड़ा हंगामा हुआ। स्कूल के समय में एक बाईक वाले ने एक स्कूल के बच्चे को टक्कर मार दी। यह देखकर सभी छात्र भड़क गए और उन्होंने हंगामा कर दिया। इसके बाद उस बच्चे को अस्पताल ले जाया गया अस्पताल वालों ने भी बच्चे को एडमिट करने से मना कर दिया। इस बात पर बच्चों ने नाराजगी जताई और गुस्से में सभी बच्चों ने नारे बाजी शुरू कर दी और बच्चों ने बड़े लोगों से बातचीत की तो लोगों ने मीडिया वालों को बुलाया और बच्चों ने उन्हें बताया कि यहां पर आए दिन बच्चों को गाड़ी वाले मारकर चले जाते हैं। वह रूककर बच्चों को देखते भी नहीं हैं कि बच्चे को कहां चोट आई है। निगरानी के लिए इस रोड पर ट्रैफिक पुलिस वाले भी नहीं होते हैं। इस मौके का लोग फायदा उठाते हैं और बच्चों को टक्कर मारकर भाग जाते हैं। बालकनाम के पत्रकार से बच्चों ने कहा कि हम बच्चे चाहते हैं कि इस समस्या पर समाधान हो और दिल्ली सरकार इस समस्या पर कोई संज्ञान जरूर ले।



दूसरों के लिए पूजा बनी मिसाल

अपने जन्मदिन पर अपने ही जैसे बच्चों को दिया तोहफा

बातूनी रिपोर्टर पूजा, रिपोर्टर चेतन

15 वर्षीय पूजा पश्चिमी दिल्ली की वाल्मीकि कैंप में रहती है। पूजा उन्हीं बच्चों में से एक है जो बच्चे रात दिन मेहनत मजदूरी करते हैं और अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं। पूजा भी स्कूल में पढ़ने जाती है और वह बालकनामा अखबार की बातूनी पत्रकार भी है। पूजा जानती है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों का जीवन कैसा होता है और इन बच्चों को किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह सभी बच्चों को समझाती है कि काम के साथ साथ पढ़ाई करना भी बहुत जरूरी है। वाल्मीकि कैंप में ऐसे बहुत बच्चे हैं, जिनके पास शरीर पर पहनने के लिए कपड़े तक नहीं हैं। ऐसे बच्चों को जब पूजा ने देखा तो उसने सोचा क्यों न मैं अपने कुछ कपड़ें इन बच्चों को दे दूं जिससे बच्चों की थोड़ी मदद हो जाए। इसलिए पूजा ने अपने जन्मदिन पर इन बच्चों को बुलाया और इनके साथ अपना जन्मदिन बडी धूमधाम के साथ मनाया और अपने जन्मदिन के बहाने इन बच्चों को अपने कुछ कपड़े भी बांटे।



बालकनामा पत्रकार ने पूजा से पूछा कि तुमने अपने जन्मदिन पर ही इन बच्चों को अपने वस्त्र क्यों दिए तो पूजा ने बताया कि भैया मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं अपने जैसे बच्चों की मदद करना चाहती थी और बिल्कुल भी यह नहीं जताना चाहती थी कि मैं उन पर दया कर रही हूं। ऐसा करने से हम बच्चों को बहुत ठेस पहुंचती है क्योंकि मैं भी इन्हीं बच्चों में से एक हूं। मुझसे जैसे भी होता मैं अपने जैसे बच्चों की मदद करती हूं। इससे मुझे बहुत खुशी मिलती है और मेरे साथ साथ दूसरे बच्चे भी बहुत खुश होते हैं। पूजा का कहना है कि जिस तरह मैंने एक बच्ची होकर बच्चों की मदद की है उसी तरह बड़े बड़े लोग भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों की मदद कर सकते हैं। ऐसा करने से जिन बच्चों के पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं, उन्हें कपड़े मिल सकेंगे। मैंने तो बच्चों की मदद करने की शुरूआत कर दी है, आप कब करेंगे।

माता पिता के जैसी जिम्मेदारी निभा रहे हैं छोटे बच्चे





बातूनी रिपोर्टर कसीना, रिपोर्टर चेतन

कहा जाता है कि माता पिता अपने बच्चों की परवरिश बड़ी खुशी से करते हैं और अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखते हैं। लेकिन इस मामले में ऐसा बिलकुल नहीं हो रहा है क्योंकि कुछ माता पिता संतान तो पैदा करते हैं लेकिन उस संतान का बोझ अपने बच्चों पर ही डाल देते हैं और खुद दोनों कमाने के लिए अपने घरों से निकल पड़ते हैं। जैसे ही छोटे बच्चे लगभग 12 साल के होते हैं। वह अपने से छोटे भाई बहनों का पूरे दिन घर में रहकर उनका ध्यान रखते हैं। माता पिता द्वारा इन बच्चों पर इतनी जिम्मेदारी दे दी जाती है कि अपने भाई बहनों का ध्यान रखने के साथ पूरे घर का कामकाज करते हैं और छोटे भाई बहन का पालन पोषण करते हैं। इसलिए इन बच्चों का शारीरिक विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है।

कमला नेहरू कैम्प के रहने वाली लगभग 11 साल की कसीना अपने घर में चार छोटे छोटे भाई बहनों का पालन पोषण कर रही है। कसीना को इनकी पूरी देखभाल करनी पड़ती है। अगर यह ऐसा नहीं करेगी तो इसके परिवार वाले भला बुरा कहते हैं। कसीना सुबह सुबह उठकर खाना बनाती है। इसके माता पिता दोनों काम पर चले जाते हैं। उसके बाद कसीना सुबह से लेकर शाम तक अपने भाई बहनों की देखरेख करती है। इसका एक भाई दो साल का है, जिसे यह पूरे दिन गोद में लिए इधर से उधर घुमाती रहती है और जिम्मेदारी के साथ इन्हें नहलाना धुलाना और समय से खाना खिलाना। कसीना इसमें इतनी व्यस्त रहती है कि घर छोड़कर कहीं और नहीं जा पाती है। इस तरह से जब माता पिता अपने बच्चों पर हद से ज्यादा भार डाल देते हैं तो बच्चों का पूर्ण रूप से शारीरिक विकास नहीं हो पाता है।



मां बाप के बिना सूनी है दुनियां

बातूनी रिपोर्टर मुस्कान, रिपोर्टर चेतन

हर एक बच्चे को अपने माता पिता के साथ रहने का पूरा अधिकार है। बच्चों को माता पिता के साथ घुल मिलकर रहना चाहिए। हम जिस बच्चे की बात कर रहे हैं उसका नाम अल्का है। अल्का अपने परिवार की एकलौती बेटी है। वह 11 साल की है और अपनी मौसी के साथ रहती है। अल्का भी चाहती कि मैं भी पढाई करूं। पर वह क्या करे वह मजबूर है क्योंकि उसको अपनी मौसी के साथ शहीद कैम्प में रहना पड़ता है। जब बच्चों का सहारा समाज में कोई नहीं रहता है तो वह बिल्कुल अकेले हो जाते हैं। अल्का की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। अल्का के माता पिता नहीं हैं। वह अपनी मौसी के साथ रहती है। वह स्कूल नहीं जाती है। वह दिनभर घर के आस पास घूमती रहती है और सहेलियों के साथ खेलती रहती है। अल्का जब दूसरे बच्चों को स्कूल जाते देखती है तो उसके मन में भी पढाई करने की इच्छा होती है। लेकिन कुछ कहती नहीं है। बस दूसरे बच्चों को स्कूल जाते हुए देखती रहती है। अल्का को उसकी जरूरत का सामान भी नहीं मिल पाता है। अल्का भले ही अपनी मौसी के साथ रहती है पर वह अपने आपको अकेला महसूस करती है। दुनिया में जब बच्चों के माता पिता उसके पास नहीं होते हैं तो बच्चे अकेलापन महसूस करते हैं। अल्का ने पत्रकार से कहा कि शिक्षित होना बहुत जरूरी है।

परिवार के लिए बच्चों को करना पड़ता है मेहनत मजदूरी

बातूनी रिपोर्टर अंकित, रिपोर्टर पूनम

यह कहानी 13 वर्ष के अंकित की है। अंकित के दो भाई बहन है। यह अपने माता पिता के साथ रहते हैं। अंकित की मम्मी की अकसर तबियत खराब रहती है। उसके पापा बेलदारी का काम करते हैं जो भी पैसे कमाते हैं, उन पैसों से अंकित के पापा शराब पी जाते हैं और एक भी पैसा वह अपने घर में नहीं देते हैं। इसी वजह से कुछ महीने पहले अंकित अपने गांव पटना से कुछ लोगों के साथ आगरा शहर आ गया और बिजली घर के पास चिलंगन वाल्मीकि बस्ती में रहता है। यहां पर वह अपने परिवार का खर्च चलाने के लिए पायल पर पॉलिस करने का काम करने



लगा। इस काम में अंकित को प्रतिमाह दो हजार रुपए मिल जाते हैं।

जब बालकनामा के पत्रकार पूनम को यह पता चला तो वह अंकित से मिलने गई। अंकित ने पत्रकार को बताया कि मैं एक सूर्य एम.ओ.एस. रॉयल कम्पनी में काम करता हूं। पायल साफ करने के लिए कम्पनी एक पाउडर देती है और तेजाब देती है। जिससे पायल साफ करते हैं। हम सबसे पहले एक ढक्कन तेजाब लेते हैं और उसमें पायल को डाल देते हैं। उसके बाद उस पायल को अपने हाथ में लेकर ब्रश से रगड़ते हैं जिससे पायल साफ हो जाती है। पायल में चमक आ जाती है। अंकित ने पत्रकार से कहा कि अगर मैं यह काम नहीं करूंगा तो मेरे घर का खर्चा कैसे चलेगा और मैं अपनी मम्मी की दवाई कहां से लाऊंगा, भाई बहन भी भूखे रह जाएंगे। पत्रकार ने अंकित को चाल्डलाइन नम्बर 1098 के बारे में बताया कि इस नंबर पर फ्री कॉल कर सकते हैं। चाइल्डलाइन द्वारा तुम्हारी पूरी तरह से मदद की जाएगी।

यौन शोषण के खिलाफ उठाई आवाज

पृष्ठ 1 का शेष

रहती हैं जब उनके माता पिता अपने काम के लिए चले जाते हैं तब उनके रिश्तेदार और आस पड़ोस के लोग उस लड़की को अकेला देखकर उसके साथ यौन शोषण करते हैं। इस बारे में जब लड़की अपने माता पिता से बताती है तो उसके माता पिता भी अपनी लड़की का यकीन नहीं करते हैं सिर्फ यह कहकर चुप करा देते हैं कि इस बात को किसी और से नहीं बताना वरना हमारी बदनामी होगी और घर की इज्जत खराब हो जाएगी।

युवती - एक आदमी ने मेरा एक साल तक पीछा किया इस बारे में मुझे पता नहीं था। लेकिन एक दिन उसने मुझे प्रपोज किया तो मुझे पता चला कि वह पिछले एक साल से मेरा पीछा कर रहा था। यह सुनते ही मैं चैंक गई और मैं इतनी डर गई कि मैं कई दिनों तक घर से बाहर ही नहीं निकली।

युवक - कुछ लड़के जिनकी भावना पूरी तरह लड़कों जैसी नहीं होती है वह दूसरे लड़कों से अश्लील हरकत करवाने के लिए उकसाते हैं, उन्हें गंदे इशारे करते हैं, अश्लील फिल्म दिखाते हैं, उनके व्यक्तिगत भागों को छूते हैं तथा पैसों का लालच देते हैं और कई बार उनकी खुद की वीडिओ बनाकर उनको ब्लैकमेल करते हैं और उनसे बार बार अश्लील हरकते करवाते हैं।

युवती - मेरे दोस्त ने चलती बस में यौन शोषण के खिलाफ आवाज उठाई और मैंने भी उसका साथ दिया। जब हम बस स्टैंड पर उतरे तो उसी बस स्टैंड पर वह लड़का भी उतर गया जो हमारे साथ गलत व्यवहार कर रहा था। उसने अपने दोस्तों को फोन किया और हमसे बदला लेने के लिए दोस्तों को बुलाया। उन लड़कों ने हमें चारो तरफ से घेर लिया। उस वक्त शाम हो चुकी थी और अंधेरा भी हो गया था। हम बहुत डर गए थे, लेकिन हमने किसी तरह हिम्मत कर पुलिस स्टेशन पहुंचकर उनकी शिकायत की और उन्हें पुलिस से पकड़वाया।

युवक - जो लड़के कंपनियों में काम करते हैं उनके ठेकेदार उनसे कहते हैं कि अगर तुम मेरे साथ अश्लील हरकत करने को तैयार होते हो तो मैं तुमसे ज्यादा काम नहीं करवाऊंगा और पैसे भी ज्यादा दूंगा। अगर इस बारे में तुमने किसी को बताया तो मैं तुम्हारे ऊपर चोरी का इल्जाम लगा कर पुलिस से पकड़वा दूंगा, जिससे तुम्हारी नौकरी भी चली जाएगी और कोई भी व्यक्ति तुम्हारा विश्वास नहीं करेगा।

युवती - हमारे इलाके में लड़के लड़कियों को आते जाते बहुत तंग करते हैं। इसलिए हम लड़कियां बाहर नहीं निकल पाती। हम अपने काम के लिए जब बाहर जाते हैं तो अपने घर के सदस्यों के साथ जाते हैं, क्योंकि हमारे यहां किसी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है।

युवक - लड़कों के साथ भी यौन शोषण अलग अलग प्रकार से किया जाता है जैसे छोटे लड़कों के वस्त्र उतारकर उनकी वीडिओ बनाकर, अपने व्यक्तिगत अंगो को छोटे लड़कों को स्पर्श करवाकर, अश्लील फिल्म दिखाकर, दबाव डालकर, लालच देकर या अश्लील बातें सुनाकर।

युवती - जिनके साथ यौन अत्याचार होता है वह अधिकतर चुप रहते हैं क्योंकि उनकी आवाज कोई नहीं सुनता है। बड़े लोग भी ऐसा करने की इजाजत नहीं देते हैं, क्योंकि वह बेघर हैं बेसहारा हैं। वह किसी की दी हुई छोटी जगह पर तिरपाल डालकर खुले में रहते हैं इसलिए अगर उन लोगों के खिलाफ आवाज उठाई तो वह अपने रहने की जगह भी खो देंगे।

युवक - अगर हम यौन उत्पीड़न के मुद्दे को अपने कार्यस्थल पर उठाएंगे तो हम अपनी नौकरी खो देंगे।

युवती - एक 10 साल की लड़की के साथ यौन शोषण किया गया, क्योंकि उसकी मां का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं था। वह घर पर नहीं रहती थी, इसलिए उसे अकेला देखकर उसके साथ यौन शोषण किया गया जाता था।

यौन शोषण से बचने के उपाए

●बड़ी संख्या में लड़कों को सुरक्षित करने के लिए रूढ़िवादी मानसिकता वाले लड़कों से बात करना चाहिए जो यह कहते हैं कि लड़कों के साथ यौन शोषण नहीं हो सकता।

●हमें इस तरह की मीटिंग पुलिस के साथ भी करनी चाहिए ताकि उन्हें भी जानकारी हो कि लड़कों के साथ भी यौन शोषण होता है और वह भी लड़कों के साथ हुए यौन शोषण के केस को फाइल करें।

●जो लोग यौन शोषण करते हैं उनको व्यस्त रखने के लिए काउंसलिंग सेंटर होने चाहिए, जहां उन्हें यह शिक्षा दी जाए कि जो यौन शोषण के शिकार होते हैं, उन्हें क्या क्या पीड़ा होती है।

●सभी लड़कियों को अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए आत्म रक्षा का प्रक्षिशण लेना चाहिए।

●हमें एक ऐसी प्रणाली बनानी चाहिए, जिससे लड़कियों में साहस आए ताकि वह अपनी चुप्पी तोड़ सकें।

●संचार नेटवर्किंग और मजबूत करनी चाहिए।

●बच्चों को एकजुट होकर यौन शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़नी चाहिए।

●अपनी आवाज उठानी चाहिए और उस चुप्पी को तोड़ना चाहिए जो हमें कमजोर बनाती है।

●अधिक से अधिक विचार विमर्श करने की जरूरत है।

●हमने ऐसी मीटिंग में पहली बार भाग लिया है। हम यह मीटिंग आगे भी कर सकते हैं सबके सामने ताकि जो लड़के हमें परेशान करते हैं उन्हें भी पता चले कि अब हम चुप नहीं रहेंगे।

●किसी को मदद की जरूरत हो तो उसकी मदद जरूर करनी चाहिए।

●हम अपनी कहानियां लिख सकते हैं ताकि लोग हमारे संघर्ष के बारे में जान सकें।

●हमें सामूहिक जागरूकता लानी होगी और लोगों को यह बताना होगा कि इस काम में हम अकेले नहीं हैं, बहुत लोग हमारे साथ हैं, जो सामूहिक रूप से हमारा सहयोग कर सकते हैं।

भोलू के चेहरे पर आई मुस्कान

बातूनी रिपोर्टर भोलू, रिपोर्टर ज्योति

माता पिता ही अपने बच्चों से जबरन काम करावाते हैं। वह अपनी गलत आदतों से मजबूर होकर अपने बच्चों को काम करने के आखाड़े में उतार देते हैं जैसे मानो माता पिता के लिए उनके बच्चे एक पैसे कमाने का जरिया बनते जा रहे हों। कुछ माता पिता शराब का सेवन प्रतिदिन करते हैं और शराब पीने के लिए उन्हें हर दिन पैसे चाहिए होते हैं। कुछ बच्चों के माता पिता सुबह से ही शराब पीकर बैठ जाते हैं और पैसे कमाने के लिए अपने बच्चों को पूरे दिन कबाड़ा बीनने के लिए भेज देते हैं।

भोलू 12 साल का है और अपने परिवार के साथ सराए काले खां पुल के नीचे रहता है। भोलू के पिता जी भी उसे जबरन काम करने के लिए भेजते हैं और उसकी माता भी कबाड़ा चुनने जाती हैं। भोलू के पिता भी बहुत शराब पीते हैं। इसलिए भोलू को पढ़ाई लिखाई



नहीं करने देते और कहते हैं कि अगर तुम पढ़ने जाओगे तो पैसे कमाकर कौन लाएगा और मैं शराब कहां से पीयुंगा। इसलिए भोलू मजबूरन सारे दिन कबाड़ा चुनकर, भीख मांगकर पैसे लाता है। उसके पिता उसके कमाए हुए सारे पैसे लेकर उसकी शराब पी ले लेते हैं। पैसे खत्म होने के कारण भोलू के भाई . बहनों को कभी .कभी रात को भूखे भी सोना पड़ता है।

भोलू के पिता अपने किसी भी बच्चे को पढ़ने नहीं देते। बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने उसके पिता से बात की, कि आप अपने बच्चों को पढ़ने क्यों नहीं भेजते हो, अगर आप अपने बच्चों को पढ़ाई करने नहीं भेजोगे तो मैं चाइल्डलाइन को फोन करके आप को जेल में बंद करा सकती हूं। यह बात सुनते ही भोलू के पापा डर गए और पत्रकार से बोले कि आज के बाद मैं अपने बच्चों को रोज सेंटर में पढ़ाई करने के लिए भेजुंगा और जब इनका दाखिला स्कूल में हो जाएगा तो इन्हें स्कूल भी भेजुंगा। यह सुनते ही भोलू के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

हकीम ने स्टेशन छोड़कर स्कूल में पढ़ने का किया वादा

रिपोर्टर ज्योति

मां बाप की लापरवाही की वजह से बच्चे गलत आदतों में फंस जाते हैं। ऐसे ही 12 वर्षीय हकीम पहले सरकारी स्कूल में कक्षा 6 में पढाता था, लेकिन उसके मम्मी पापा का व्यवहार हकीम के प्रति ठीक न होने की वजह से वह स्टेशन पर जाकर कबाड़ा चुनना सीख गया। स्टेशन पर रहने के कारण धीरे. धीरे वह नशे की अंधेरी दुनिया में फंसता चला गया। बालकनामा के पत्रकार को किसी बच्चे द्वारा हकीम के बारे में पता चला तो उसी वक्त पत्रकार ने हकीम से बातचीत की, कि आप स्कूल छोड़कर नशा करने लगे और स्कूल जाना भी बंद कर दिया और ऐसा क्यों कर रहे हो? तो हकीम ने पत्रकार को रोते हुए बताया कि दीदी मेरे पापा मम्मी मुझे स्कूल जाने के लिए कुछ भी खर्च नहीं देते थे तो आप ही बताइए मैं कॉपी पेन कहां से लाऊंगा। इसलिए मैंने स्टेशन का रास्ता चुना और खाली बोतलें बीनकर उन्हें कबाड़े की दुकानों में बेचने लगा। जिससे मेरे पास चार पैसे आ जाते हैं। मुझे रेल गाड़ी में से अच्छा. अच्छा खाना भी मिल जाता है।

लेकिन दुख की बात यह है कि जो भी बड़े बड़े लड़के यहां पर रहते हैं वह हम बच्चों को जबरदस्ती नशा करना सिखा देते हैं। अगर कोई नशा करने से



मना करता है तो वह बच्चों को मारते हैं। हम बच्चों के साथ शोषण भी करते हैं फिर चाहे वह लड़का हो या लड़की। पुलिस वाले भी बहुत परेशान करते हैं। पत्रकार ज्योति ने हकीम को बताया कि यहां पर भले ही दो पैसे मिल जाते हैं, अच्छा खाना मिल जाता है, लेकिन इस काम को करने के बाद यहां बच्चे नशे की लत में फंस जाते हैं, इससे अच्छा है कि आप स्कूल जाओ अगर कोई परेशानी होती है तो मैं आपके पापा मम्मी से बात करूंगी। फिर हकीम ने पत्रकार ज्योति से वादा किया कि मैं अब से स्कूल जाऊंगा और स्टेशन पर कबाड़ा बीनने नहीं जाऊंगा।

पूनम की मदद से पूजा पहुंची अपने घर

बातूनी रिपोर्टर पूनम, रिपोर्टर ज्योति

12 वर्षीय पूनम बढते कदम की सदस्य है और बालकनामा की बातूनी रिपोर्टर भी है। पत्रकार ज्योति ने सांसी कैम्प में बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की और पूनम भी इसी मीटिंग में शामिल हुई। पूनम ने बताया कि दीदी जब दशहरा चल रहा था तब कन्यां खाने के लिए कुछ बच्चे आए थे, उसमें पूजा नाम की एक लड़की थी, जो बदर बॉर्डर से आई थी। वह इधर उधर भटक रही थी उस समय मेरी नजर पूजा पर पड़ी तो मैंने पूजा से बात की। पूजा ने बताया कि मैं कन्यां खाने के लिए आई थी, लेकिन मैं रास्ता भटक गई हूं। मुझे नहीं पता कि अपने घर कैसे जाना है। यह कह कर वह जोर जोर से रोने लगी। फिर मैंने पूजा से पूछा कि आप याद करो कि आप किस तरफ रहते हो। मैं कोशिश करूंगी कि आपको घर छोड़ने की। तो पूजा ने थोड़ी देर बाद बताया कि वह बदरपुर



बॉर्डर की तरफ रहती है। इससे ज्यादा पूजा कुछ नहीं बता पा रही थी, बस डर रही थी और बार बार यह कह रही थी कि मैं अपनी सहेली के साथ कन्यां खाने के लिए आई थी गलती से बिछड़ गई हूं। आप मेरी मदद कीजिए।

मैं पूजा को उसके घर छोड़ने बदरपुर के रास्ते पर गई और पूजा का घर ढूंढना शुरू किया। बहुत देर बाद पूजा का घर मिला और मैंने पूजा को उसके घर छोड़ दिया। जब मैंने पूजा का घर ढूंढ लिया तो देखा कि पूजा की मम्मी घर में बैठी बहुत रो रही है थी। उन्होंने जैसे ही पूजा को देखा तो दौड़कर आई और पूजा को गले से लगा लिया और कहने लगी कि तू कहां पर रह गई थी। फिर पूनम ने पूजा की मम्मी को समझाया कि आप अपनी बेटी को कहीं पर अकेले मत भेजा करो। अगर आपकी बेटी सचमुच नहीं मिलती तो क्या होता? आप क्या करते? वैसे भी सांसी कैम्प में बहुत तेज ट्रेन चलती हैं, कोई दुंघटना हो जाती तो? पूजा की मम्मी ने कहा कि ठीक है बेटा अब से मैं अपनी बेटी को कहीं पर भी अकेले नही भेजूंगी। धन्यवाद बेटी जो आप ने मेरी बेटी की मदद की।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.	Child line Number **1098** Police Helpline Number **100**

चिकनगुनियां से सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसे कर रहें हैं अपना बचाव

पृष्ठ 1 का शेष

काटता है तो वह मच्छर खुद मर जाते हैं। इसलिए हम बच्चों को मच्छरों से होने वाली बीमारियां नहीं होती है।

16 साल के अजीत ने बताया कि हम बच्चे जहां पर सोते हैं वहां इतनी गंदगी होती है कि कोई वहां खड़ा भी नहीं हो सकता, लेकिन वो हमारे सोने की जगह होती है और डेंगू का मच्छर तो साफ पानी और साफ जगह में ही पैदा होता है और हम बच्चे तो बहुत गंदी बदबूदार जगह में रहते हैं। यहां मच्छर नहीं आते हैं।

पुल के नीचे रहने वाले 16 वर्षीय सुनील ने बताया कि जब हम बच्चे रात को सोते हैं तो मुबील का तेल अपने शरीर पर लगा लेते हैं जिससे हमें मच्छर नहीं काटते हैं और जो बच्चे यह तेल नहीं लगाते हैं तो भी मच्छर उन्हें नहीं काटते हैं क्योंकि जिस जगह हम सोते हैं पुल के नीचे उस जगह पर वाहन बहुत तेजी से चलते हैं जिसकी तेज हवा और गाड़ी से निकलते धुएं की चपेट में आकर मच्छर मर जाते हैं। इसलिए हम



बहुत कम मच्छर से होने वाली बीमारियों की चपेट में आते हैं। लेकिन जो बच्चे कॉलोनियों में रहते हैं और काम करते हैं वह इस बीमारी से असुरक्षित हैं। इस बारे में एम. सी.डी. ने भी कुछ नहीं सोंचा। पहले जब कभी इस तरह हुआ है तो एक दो बार मच्छर भगाने की दवाई छोड़ी जाती थी, लेकिन इस बार यह बहुत कम देखने को मिला है।

पहले की तरह इस बार ऐसा नहीं हुआ, जिसके कारण लोग इसके शिकार हो रहे हैं। अगर दिल्ली सरकार पहले से ही यह तैयारी रखती और हर रोज जा जाकर मच्छर भगाने की दवाई छोड़ती तो यह बीमारी ज्यादा नहीं फैलती।

चंदन की हिम्मत को सलाम

रिपोर्टर शम्भू

12 वर्षीय चंदन अपने परिवार के साथ पश्चिमी दिल्ली के चूना भट्टी में रहता है। उसके पिता जी का नाम दिनेश ठाकुर है और मम्मी का नाम मीरा देवी है। चंदन की मम्मी अपने घर का खर्चा चलाने के लिए दूसरे के घरों में काम करने जाती हैं। उन्हें इस काम में प्रतिमाह तीन हजार रुपए मिलते हैं। पहले चंदन सरकारी स्कूल में पढ़ने जाता था और कक्षा 6 में पढ़ता था वह पढ़ाई करने में हमेशा आगे रहता था और हमेशा अपनी कक्षा में फस्ट आता था। चंदन बहुत होनहार लड़का है और वह दूसरे बच्चों की मदद भी करता है। एक दिन की बात है कि पार्क में एक बच्चा झूला झूल रहा था। अचानक वह बच्चा झूले से नीचे गिर गया। चंदन दौड़कर उसके पास गया तो देखा कि उसे बहुत चोट आई थी। चंदन बच्चे को अस्पताल ले गया। अस्पताल के डॉक्टर ने उसे देखा तो उस बच्चे के पैर में बहुत चोट आई थी। डॉक्टर ने उसके पैर में पट्टी बांधी और टिटनेस का इंजेक्शन लगाया और कुछ जख्म सूखने की दवाईयां दी।

चंदन ने पत्रकार को बताया कि मैं जब स्कूल में पढ़ने जाता था तो इस तरह दूसरे बच्चों की मदद करता रहता था, लेकिन मेरा स्कूल छूट गया। क्योंकि जब मेरे पिता जी का देहांत हुआ तो मुझे अपने पिता जी को कांधा देने के लिए अपने गांव जाना पड़ा और इस वजह से मेरा स्कूल में से नाम काट दिया गया। उसके बाद से ही मैं फिर कभी स्कूल न जा सका और कुछ दिन के बाद मैं बिहार से अपने मामा मामी के साथ दिल्ली आ गया। दिल्ली में आकर दो पैसे कमाने के लिए कबाड़ा बिनने लगा। लेकिन जब मैं चेतना संस्था के कार्यकर्ता से मिला और अपने बारे में बताया कि मैं स्कूल में दोबारा जाना चाहता हूं तो चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने यह जिम्मेदारी उठाई है कि मेरा दोबारा स्कूल में दाखिला करवाएंगे। मैं अब दोबारा स्कूल पढ़ने जा सकूंगा। मैं अब बहुत खुश हूं कि बढ़ते कदम संगठन से जुड़ने के बाद मुझे दोबारा पढ़ने का अवसर मिल रहा है। अब मैं काम के साथ साथ पढ़ाई भी पूरी कर सकूंगा ।

नशे की आदी लड़कियों को नशे का लालच देकर करते हैं अश्लील हरकतें

बालकनामा ब्यूरो

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रहने वाली 14 से 18 साल तक की लड़कियां खतरनांक नशे की चंगुल में फंसती जा रही हैं। बालकनामा के पत्रकार ने इस विषय पर 20 लडकियों से बात की, जो रात दिन नशे में लिप्त रहती हैं और अलग अलग प्रकार के खतरनांक नशे का सेवन कर रही हैं। 17 वर्षीय अनुराधा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम सभी लड़कियां ड्रग्स, चरस और स्मैक का नशा करती हैं। हम यह खतरनांक नशा चांदनी चैक से खरीदकर लाते हैं और जो व्यक्ति इस खतरनांक नशे को बेचने आता है उस व्यक्ति का हुलिया दिखने में बिल्कुल अलग होता है। अनुराधा ने बताया कि उस व्यक्ति को बस हम लड़कियां ही जानती हैं, जिसे हम ड्रग्स और स्मैक, चरस खरीदने के लिए 300 से 400 रुपए की एक छोटी सी पुड़िया मिलती है। इस पुड़िया में थोडा सा ही नशा रहता है। जब हम नशा खरीदकर ले आते हैं उसके बाद हम एक जगह बैठकर इसको सूंघते हैं।

16 वर्षीय कंचन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यहां पर लगभग 20 से 30 लड़कियां हैं, जो इस प्रकार का नशा करती हैं। पत्रकार ने पूंछा कि आप लोग यह नशा क्यों करते हो? तो उन्होंने बताया कि हम लोग किसी कारण से अपने घरों से भागकर यहां पर आ जाते हैं और तभी हम इधर उधर भटकते हुए रेलवे स्टेशन पर आ जाते हैं।

यहां आने के बाद जो लड़कियां पहले से नशा करती रहती हैं, वह हमें नशा करना सिखा देती हैं। यह नशा ऐसा है कि अगर लड़की गलती से इस नशे का उपयोग एक से दो बार कर ले तो इसकी आदी हो जाती हैं और इस नशे की लत के कारण नशा करने के लिए हम लड़कियां किसी भी हद तक चली जाती हैं। हमारा मन करता है कि हम और नशा करें। जब हमें भूख लगती है तो हम खाना नहीं खाते, बल्कि चरस और स्मैक का नशा ही लेते हैं।

इस खतरनांक नशे में लिप्त होने के कारण हम लड़कियों के साथ यहां कई प्रकार का शोषण किया जाता हैं और जो बड़े बड़े लड़के स्टेशन पर रहते हैं वह हम लड़कियों को नशे का लालच देकर और नशे में धुत करके हमें सिनेमा हॉल फिल्म दिखाने के लिए ले जाते हैं। सिनेमा हॉल में ले जाकर वह हमारे साथ अश्लील हरकतें करते हैं, इधर उधर हाथ लगाते हैं। हम नशे में इतने धुत होते हैं कि कुछ बोल तक नहीं पाते हैं। जब हमें होश आता है तो पता चलता है कि हमारे साथ क्या हुआ था। इसके साथ जो कोई नई लड़की अगर यहां आती है और जब वह रात को सो जाती है तो उन लड़कियों के साथ भी यह बड़े बड़े लड़के यौन शोषण करते हैं। इस प्रकार की अश्लील हरकतें लड़कियों के साथ बढ़ती जा रही हैं। वह नशा करने के बाद बहुत असुरक्षित हो जाती हैं।

पत्रकार ने सभी लड़कियों को समझाते हुए कहा कि आप नशा छोड़ती क्यों नहीं हैं? 15 वर्षीय सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बहुत कोशिश करते हैं नशा छोड़ने की मगर हम से नशा छूटता ही नहीं है। जब हम एक दिन नशा नहीं करते हैं तो सिर में दर्द होता है। ऐसा लगता है कि सिर फटकर नींचे आ जाएगा। इसलिए हम नशा करते हैं और यह नशा हमें कैसे भी करके खरीदना पड़ता है। अगर एक दिन हम खाना नहीं खाएंगे तो चलेगा मगर नशा नहीं मिलेगा तो हम मर ही जाएंगे। हम लोगों ने काफी कोशिश की इस दलदल से बाहर निकलने की लेकिन हम निकल नहीं पा रहे हैं।

लाल बत्ती पर काम कराने के लिए लाए गए और नए चेहरे

बालकनामा ब्यूरो

छोटे छोटे 35 और मासूम बच्चों को पढ़ाई कराने के बहाने से बहला फुसला कर दिल्ली की लाल बत्ती पर सामान बेचने पर लगाया गया है। पत्रकार ने लाल बत्ती पर काम करने वाले बच्चों से मींटिग के दौरान बातचीत की। पत्रकार ने उन बच्चों से पूंछा कि आप लोग लाल बत्ती पर काम क्यों करते हो? 16 वर्षीय मनीष (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भईया हम बच्चे अपनी मर्जी से काम नहीं करते हैं। हम बच्चों का एक मालिक है जो बिहार का रहने वाला है। उसने हमारे माता पिता को यह लालच दिया था कि वह बच्चों को दिल्ली में ले जाकर पढ़ाई लिखाई करवाएगा और साथ ही प्रतिमाह पैसे भी देगा।

15 वर्षीय पवन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया हम बच्चों का परिवार बहुत गरीब है और जानकार भी नहीं है। इसलिए इस व्यक्ति के झांसे में आकर हमारे माता-पिता ने हमें उसके साथ दिल्ली भेज दिया था। अभी हम बच्चों को कोटला में रखा है। कोटला में बच्चे अपने से ही खाना पीना बनाते हैं और सुबह 6 बजे उठकर रात 8 बजे तक दिल्ली की अलग अलग लाल बत्ती पर जाकर सामान बेचते हैं। हम पांच लड़कों का एक ग्रुप बना होता है। एक ग्रुप को एक लालबत्ती की जगह दे दी जाती है। पूरी प्लानिंग करके मालिक इन्हें लालबत्ती पर सामान बेचने के लिए भेजता है। बच्चे अलग अलग प्रकार का सामान लालबत्ती पर बेचते हैं, जैसे गाड़ी साफ करने वाले डस्टरए मोबाईल चार्जरए खेल खिलौन आदि। राहुल ने बताया कि हम बच्चे सुबह आठ बजे से लेकर रात को दस बजे तक सामान बेचते हैं।





हमारे पास बेचने के लिए आठ नौ किलो सामान लदा होता है, जिसे लेकर हम लालबत्ती पर इधर उधर जाकर बेचते हैं। वजन उठा उठा कर हम बुरी तरह थक जाते हैं। जब लालबत्ती पर वाहन रूकते हैं वैसे ही यह बच्चे वाहन चलाने वालों के पास दौड़कर जाते हैं। इस प्रकार बच्चे अपना सामान बेचते हैं। कार साफ करने वाला एक डस्टर 40 रुपए का बेचते हैं, मोबाईल चार्जर 120 रुपए का। इस तरह अलग अलग सामान का अलग अलग रेट होता है।

15 वर्षीय अमर (परिवर्तित नाम) ने बताया कि पुलिस हमें लाल बत्ती पर से मार कर भगा देते हैं। उस दिन हमारा सामान नहीं बिकता है तो हमारा मालिक हम बच्चों को गाली देता है और मारता भी है। इसलिए हमें ओवर टाइम काम करना पड़ता है और इस तरह हम अपने घर हर महीने पैसे भेज पाते हैं।

अश्लील वीडिओ देखने के लिए ही बच्चे नहीं बीनते हैं कबाड़ा

बालकनामा ने किया खंडन

बातूनी रिपोर्टर राहुल, रिपोर्टर शम्भू

अभी कुछ दिन पहले ही प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक अखबार के द्वारा कबाड़ा बीनने वाले बच्चों के ऊपर एक खबर उजागर की गई थी, जिसके मुताबिक यह कहा गया है कि सराय काले खां में रहने वाले बच्चे अश्लील वीडियो देखने के लिए ही कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। इस खबर के बारे में जब बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों को पता चला तो उन्होंने इस बात का खंडन करते हुए कबाड़ा बीनने वाले बच्चों से बातचीत की।

बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने बच्चों के हित में बात रखते हुए कहा कि मैं भी पहले कबाड़ा बीनती थी, लेकिन मुझे उस समय यह पता ही नहीं था कि अश्लील फिल्म क्या होती है। हम बच्चों को यह तक जानकारी नहीं होती है कि हमारे आस पास क्या हो रहा है। राहुल जो 14 साल का है वह सराय काले खां में कबाड़ा बीनने का काम करता है। उसने बताया कि हम बच्चे अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनते हैं और दूर दूर तक हमारे जेहन में ऐसी कोई बात ही नहीं आती है कि जिससे हम गलत



आदतों में फंस जाएं। हम दिनभर कड़ी धूप में मेहनत करके कबाड़ा बीनते हैं तब जाकर हमारे पेट में अन्न जाता है। यह कहना तो बिल्कुल गलत होगा कि हम सिर्फ इसलिए कबाड़ा बीनते हैं क्योंकि हमें अश्लील फिल्म देखना है।

हम बच्चों के बारे में अगर इस तरह की खबरें उजागर की जाएंगी तो इससे हमारे जीवन पर बहुत बुरा असर पड़ेगा और हमारे साथ कई प्रकार का शोषण होने का भी खतरा हो सकता है क्योंकि बच्चे पूरे दिन बाहर दूर दूर जगहों में जाकर पब्लिक के बीच कबाड़ा बीनते हैं और पब्लिक तो पहले से ही हम बच्चों से घृणा करती है, गलत नजरों से देखती है। अब तो पब्लिक हमें दूर से देखकर यही समझेगी कि हम बच्चे कबाड़ा बीनने का काम अश्लील वीडियो देखने के लिए ही कर रहे हैं। इससे हमारी जिंदगी पर बहुत बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है क्योंकि जो लोग हम बच्चों को देखकर प्रभावित होते हैं वह हमें उसी नजर से देखेंगे कि यह बच्चा कबाड़ा बीन रहा है तो जरूर इसे अश्लील फिल्म देखना होगा तभी यह कबाड़ा बीन रहा है। वह हमारी मजबूरी नहीं समझेगा और हमारा गलत फायदा उठाने की कोशिश करेगा कि चलो हमारे साथ मैं तुम्हें अश्लील वीडियो दिखाऊंगा। तुम्हें कबाड़ा बीनने की जरूरत नहीं है। इस बात को जानते हुए वह शायद हमारा गलत फायदा भी उठा सकते हैं। अब हमेशा हमें इसी बात का डर लगा रहेगा कि कहीं वह व्यक्ति हमसे अश्लील तरीके से बात न करे क्योंकि उसके दिमाग में यही होगा कि हम अश्लील फिल्म देखने के लिए कबाड़ा बीनते हैं और वह कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों को अश्लील कमेंन्टस पास करेंगे कि अच्छा तुम्हें अश्लील फिल्म देखनी है और वह किसी भी बहाने से अपने साथ ले जाएगा। हर एक इंसान हमें उसी नजर से देखेगा कि अच्छा यह सारे बच्चे अश्लील फिल्म देखने के लिए ही कबाड़ा बीन रहे हैं। इस खबर से लोगों के बीच हमारी गलत पहचान बनेगी इस बात पर बच्चों ने बहुत नराजगी जताई है और कहा है यह कहना बिल्कुल गलत है।

15 वर्षीय राजा रैन बसेरा में रहता है। उसने बताया कि आप यह कह सकते हैं कि जो बड़े लड़के होते हैं वह शायद इस तरह की गलत आदतों में हो सकते हैं, लेकिन वह भी कबाड़ा इसलिए नहीं बीनते हैं क्योंकि उन्हें अश्लील वीडियो देखना होता है, बल्कि वह इस तरह की वीडियो जब देखते हैं जब वह गलत आदतों में फंस जाते हैं या फिर उन्हें उस तरह का गलत संगत वाला माहौल मिलता है। जिसकी वजह से वह इस तरह की गलत आदतों में फंस जाते हैं। अगर हमारे बारे में जानना है कि हम कबाड़ा क्यों बीनते हैं, किस समस्या के चलते हमें मजबूरन काम करना पड़ता है तो जमीनी स्तर पर इसकी जांच पड़ताल करें। उसके बाद उन्हें हकीकत पता चल जाएगी कि क्या हम बच्चे इस तरह की अश्लील वीडियो देखने के लिए काम करते हैं या अपना पेट पालने के लिए। इस बात से कबाड़ा बीनने वाले बच्चों के दिल को बहुत ठेस पहुंची है जो भी बात अखबार द्वारा लोगों के बीच लाई गई है बच्चे इस बात का खंडन करते हैं और इस बात से पूरी तरह से असहमत हैं।

कुत्तों की गणना कर रही है दिल्ली सरकार से सड़क के बच्चों ने भी लगाई गुहार

पृष्ठ 1 का शेष

बच्चों की राय

15 वर्षीय जावेद ने कहा कि अच्छी बात है कि सरकार कुत्तों की गणना कर रही है, इससे इन्हें पता चलेगा कि दिल्ली में कुत्तो की जनसंख्या कितनी है। पर हम बच्चों का क्या हम भी तो उन्हीं कुत्तों के बीच अपना जीवन गुजार रहे हैं। जिस तरह ये बेजुबान अपना दुख दर्द नहीं बता पाते, उसी तरह हम भी अपना दुख बयां नहीं कर सकते। हम भी चाहते हैं कि हमारी गणना की जाए, जिससे हमें एक पहचान मिलेगी।

16 साल की नगमा ने बताया कि अकसर कुत्ते सड़क पर घूमते रहते हैं और कभी कभी लोगों को काट भी लेते हैं। अच्छा है कि कुत्तों की गणना करके उन्हें एक सुरक्षित जगह पर रखा जाएगा। इस प्रकार वह किसी को हानि भी नहीं पहुंचाएंगे। हम चाहते हैं कि सरकार हमारे बारे में भी सोंचे और हमारी भी गिनती की जाए। इससे शायद बाल मजदूरी भी खत्म की जा सके, जानकारी मिल सके कि कितने बच्चे ट्रैफिकिंग के शिकार हो रहे हैं, कितने बच्चों को अलग अलग कामों में लगा दिया जाता है।



Civic body conducts dog census in South Delhi

POPULATION CONTROL SDMC has given the work to Human Society International India which will finish the task in two months

SDMC has been running the street dog sterilization programme for more than four years. S BURMAULA / HT PHOTO

COUNTING CANINES

The volunteers are conducting the census ward-wise, wherein one volunteer rides a motorbike and the pillion volunteer will using a specially designed mobile app to record data. "The team members are supposed to cover the designated 'driving routes' that have been created by using the boundaries submitted by SDMC," said Dr Amit Chaudhari, of Human Society International India.

The route has been planned keeping in mind various factors like total street length in a ward, density of population and human-dog ratio. HSI India will compile and analyse the data over eight weeks. A report will be submitted with SDMC by October.

Vibha Sharma

International (HSI) India which will finish the task in two months.

RBS Tyagi, director of SDMC's veterinary department.

14 वर्षीय राहुल ने बताया कि यह तो एक बात है कि कुत्तों को सुरक्षा मिलनी चाहिए ताकि आम पब्लिक उन्हें परेशान न कर सके। लेकिन सड़क पर रहने वाली हर एक लड़की और लड़के को हर रोज लोगों के कितने जुल्म सहने पड़ते हैं।

15 वर्षीय आकाश ने बताया कि सरकार ने अभी तक हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना नहीं की है और हम बच्चों की संख्या कितनी है, हम किस प्रकार रह रहे हैं यह जानने के लिए सरकार को हम बच्चों से बात करनी चाहिए तथा हम बच्चों की भी जरूरतों पर ध्यान देना चाहिए ।

बालकनामा के वितरण और अखबार में बच्चों की दिलचस्पी तथा अध्ययन की झलकियां



हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...













यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471

Issue – 61 February, 2016

बढ़ते कदम

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to the given address – 31 Basement, Gautam Nagar,
New Delhi – 110049
Ph. No. 011- 41644471
balaknamaeditor@gmail.com

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

BADHTE KADAM MEMBERS APPEALED TO THE WORLD COMMUNITY

Balaknama Bureau

Members of Badhte Kadam organized a meeting in South Delhi to express concern about the deteriorating and neglected condition of Street and Working Children. Balaknama covered this news.

Some important points were as follows:

• World has around 15 crores Street and Working Children.
• Out of 196 countries in World, 130 countries have Street and Working Children.
• These children are victims of indiscrimination, hunger, homelessness, illiteracy, disrespect, exploitation etc.



World countries have still not become one for Street and Working Children and neither there is any total count of them due to which the condition of these children and specially of the girls is very bad. Thus Balaknama team has demanded the following things from the world community.

• There should be worldwide recognition for the presence of Street and Working Children and countries should become one for them.
• Their count should be done and facilities should be provided according to their number.
• Street and Working Children should get their fundamental rights viz Right to Live, Right to Safety, Right to Development and Right to Participation.

16 years old Jyoti, Chairman of Badhte Kadam expressing her happiness said, "Street and Working Children would soon be mentioned in United Nations too".

THIS REPUBLIC DAY, BADHTE KADAM DEMANDS

Street and Working Children should be honored with bravery award

Balaknama Bureau

Every year, Children who help others are honored with bravery award by our Government on Republic Day. On other hand, this is also true that despite staying in harsh condition street and working children handle their conditions bravely. Unfortunate thing is that the bravery and fearlessness attitude of these children is neglected. Their selfless work and the capacity to face



situations does not value them less than a superman. That is why these kids have become hero of the inferior category.

14 years old Mohammad Ali saved a small child while coming from centre. He saw four people were beating a small kid and were trying to snatch away his money. Ali immediately ran towards the kid, fought them bravely and saved the kid's life.

continued on pg. 6

Impact of Balaknama Newspaper

RELIEF REACHED STREET AND WORKING CHILDREN IN LUCKNOW



बढ़ते कदम

बालकनामा

अंक-54 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अख़बार | जनवरी-फरवरी, 2016

बाल मजदूरी हटाओ राजधानी बचाओ

लखनऊ में एक और सर्वे के दौरान हुए खुलासे में बड़ी संख्या में पाए गए बाल मजदूर

बच्चे बना रहे झूठे परिवार और चुका रहे हैं झूठे रिश्तों की कीमत

बाल मजदूरी की तस्वीरों को किया उजागर

54th edition of Balaknama came out showing bad conditions of Street and Working Children in Lucknow. Seeing this, One World Foundation along with social institution like CHETNA started doing work for Street and Working Children at 6 places there. Till now, 300 children have attached to education and along with it these children have been joined to mainstream of society through telling them about child rights, providing them with basic health facilities, visits to Police Stations and exposure visits, etc.



STREET AND WORKING CHILDREN'S LIFE MISERABLE DUE TO WINTERS

Balaknama Bureau

On one hand where Street and Working Children have to spend their nights under open sky in these chilling winters, demonetization has reduced down their earnings. Balaknama Reporter asked these children, "How do you save yourselves from this winter?" Rag pickers and children who beg said, "4 to 5 children sleep in one quilt to save ourselves from winters". Some children were seen burning their own clothes to keep them warm and some were seen stealing drying ladies' sarees and wrapping them around their bodies to keep themselves warm. Children said, "We survive the whole night by burning our own clothes when it is very cold".

They added, "Neither we are getting rags nor anybody is giving us alms due to winters and demonetisation. Our parents also send us forcefully to beg". 15 years old girl said, "We pick rags but after winters we do not get bottles to pick so our parents ask us to do bad things as that is the only way to earn more money. Some girls are even doing this".

One girl said, "Our parents warn us saying that if we won't get them money then no food would be given to us so we have

continued on pg. 2

EDITORIAL

Dear friends,

Greetings!!

Street and Working Children wishes you all a very Happy New Year and best wishes.

We have come up with real stories of children this time also with this new edition of children's newspaper Balaknama. This year also we will work hard and with full dedication for Street and Working children like we have been doing every year and will share their issues and problems.

Balaknama reporters found out the problems faced by the children in this cold weather living at railway stations, footpaths, slums etc. and tried understanding those problems. We have brought the real pictures of how girls are feeling unsafe inside and outside their homes. We have come amongst you all with small and big news through our newspaper.

Hope you will like this edition. You can send your comments on the above mentioned address.

The Editorial Board

SMALL CHILDREN HELPING THEIR PARENTS IN GARBAGE SEGREGATION

Talkative Reporter Vikas, Reporter Chetan

Two siblings - 10 years old Vikas and 9 years old Chandni live with their parents in shaheed camp in very bad conditions. Vikas studies in fifth standard while Chandni studies in second standard. Vikas's father collects garbage from other people's homes at 5 in the morning and vikas and his mother prune that collected garbage.

Vikas starts working since 7 in the morning and works till 9 or 10 in the night and Chandni also joins them when she comes back from the school. And if they are not going to school, they both work the whole day and segregates the garbage. The garbage stinks so badly that nobody else can sit there. Vikas said, "I go with my father to pick garbage from other people's homes and also get the leftover food from there. If we get something good to eat in it, my whole family eats together.



We take the rotten things to the Godown which is in itself is home to many diseases. This Godown stinks very badly due to rotten garbage. Me and my sister stay here with my mother and do the work of segregation here only".

Innocent starving child compelled to eat from the bin

Talkative Reporter Vikas, Reporter Chetan

"I see a girl everyday in the morning when I leave for school. She never goes to school, pick rags and whenever she feels hungry she goes to a dustbin lying on the main road, searches for some food and whatever she gets she eats from that. I felt very sad seeing this and went to her one day", said Kalpana.

She said, "My parents do not work and I do not even go to school. Whenever I feel hungry, I eat food from this bin. I do not beg in front of people to give me food".

Kalpana said, "People scold her; hit her when she takes food out of the bin. Then she tells them with tears in her eyes that her parents do not work. That is why she has to eat food from here".



HOW CAN A MOTHER BE SO CRUEL ?

Talkative Reporter Kavita, Reporter Jyoti

This story is about two innocent brother and sister who stay under moolchand flyover. Their parents do not do anything. Father suffers from T.B. and stays at home all the time. Mother is such who may not get food but should get liquor to consume. Thats is why both siblings have to beg. Rahul is 6 years old and Rani is 4 years old. Rahul said, "Our mother asks us to go and earn money for our father's treatment but whatever money we get from begging she drinks liquor of that. Our father's health is deteriorating each day and he asks us not to go for begging and says that he will die like this only. But if we do not go to beg my mother beats our father. When I go to contact point to study, she tells us that if you won't go to beg then how I will get my liquor. When we both fell ill, she doesn't even get us treated. We dither in high fever but she never gets us any medicine".



STREET AND WORKING CHILDREN'S LIFE MISERABLE DUE TO WINTERS

from page 1

to forcefully beg in trains by becoming kinners. We do not get bottles to pick so we have to become kinners and beg". Children staying on roads said, "We do not have any homes and we stay on roads putting tarpaulin and beg at traffic lights the whole day".

Children told reporters, "We are receiving very less money since demonetisation happened and then harsh winters are also creating problem for us. People do not open their windows, we girls have to stand very close to the windows and then shout to beg, still people do not open their doors. Earlier we used to earn Rs.500 in a week but now we get only Rs.50. We are not able to meet our expenses with it so girls get into obscenity with boys who in return pay them some money. We consume drugs from that money to save ourselves from cold and also take care of our house expenses. Our parents do not listen to us they just want money howsoever we get it".

• Children said, "We face a lot of problems when we become kinners and go to beg in trains. People make obscene remarks and ask us to come with them saying we will pay you Rs.1000 per hour".
• People pass bad comments and ask us to come to them showing money.



• Girls living at stations consume drugs to save them from cold.
• Children burn their own clothes to keep them warm in winters.
• Children go to far off places to collect wood and if they do not get dry wood, they burn their books to warm themselves.
• 16 years old girl said, "We have started working in others' homes to save ourselves from cold".
• Some children staying at railway stations have stopped picking rags and have started selling blankets.
• Children are getting involved in obscene acts to save them from winters.
• Girls make dogs sleep with them to get warmth.

STREET CHILD HELPED ANOTHER CHILD ROAMING AT STATION

Took her to shelter home with help of Balaknama Reporter

Talkative Reporter Gudiya, Reporter Jyoti

15 years old Gudiya used to stay with her parents in Mathura but her parents used to remain ill all the time. One day when they were going to the doctor from Mathura railway station alongwith gudiya and met with a train accident. When Gudiya lost her parents she was just 12 years old only and it all happened in front of her. She kept crying there, nobody came to help her. Gudiya did not know what to do now as she was all alone but then her nearby aunt took gudiya with her. Despite being very old, her aunt kept gudiya with her like her own daughter for one year but after that she also started falling ill so she also left Gudiya. Gudiya became alone again. She started working in other people's homes for her survival and one day she came to Delhi by train. Delhi was new to her; she had nobody to go to so she got scared and started crying. One girl who is a rag picker at Nizamuddin Railway Station saw her crying and went to h er. Gudiya explained her whole story to Guddi.

Then Guddi said, 'I am a rag picker here and I stay in a night shelter. I go to a centre to study'. Guddi asked her, 'Do you want to go to a centre home?' Gudiya refused to go to a centre home so Guddi took her to Balaknama Reporter Jyoti. Jyoti explained her, 'If you will stay here on station nobody will take care of you; you will be safe at centre home'. Then next day reporter Jyoti told Mr Surendra about Gudiya and sent her to a centre home with his help.

CHILD BURDENED WITH FAMILY'S RESPONSIBILITIES IN SUCH TENDER AGE

Talkative Reporter Aslam, Reporter Chetan



"I am 12 years old and stay in Kamla Nehru camp. I used to study in class 6th but now I have left the school because my father drinks a lot and fights a lot in the home. My mother takes care of the whole family alone but the money she earns was not enough to take care of the whole family so I started working in a ration shop from 3 to 10", said Aslam. He added, "I was not able to handle this work with the school so I left my school to help my mother and manage all expenses. I have left the ration shop and make chairs now and manage my home too. I am handling all the responsibilities like an adult person now".

Lecherous eyes lurking from the cars

Talkative Reporter Shanno, Reporter Jyoti

Girls sell flowers at traffic red lights for their livelihood but people coming here see them as objects of satisfying their lust. 15 years old Kavita (name changed) said, "I sell flowers here every day. Recently, an uncle came to me asked the cost of flowers. I told him that they cost Rs.50 so first he said he will have two flowers but then after sometime he said take Rs.500 and come with me for some time. When I asked him where, I got to know that he is taking me for some bad thing. I got scared as I was alone that time, I had no friend around but I gathered my courage and hit that uncle with a belt. The hit was so severe that it broke his car's window panes and hurt his head too".

"Seeing this nearby aunt asked me what happened and I told her that this uncle is asking for sexual favors from me so I hit him. Immediately aunt tried calling up Police Station to help me but till then that person ran away from here in his car. Since then I am more scared as such incidences have increased in number. Such people disappear in their cars till we find help for us. How do we save us on roads in such situation? People take advantage of working girls like us and nobody is there to help us".

BALAKNAMA REPORTER HELPED A CHILD REACH SHELTER HOME

Talkative Reporter Isha, Reporter Jyoti

Balaknama Reporter did support group meeting in Kalkaji Temple to know about children's problems. 15 years old Isha said, "There is a child named Ravi who worked in a shop for month but when the time came to give him his salary, his owner abused him and sent him away without giving his money. Now this child keeps roaming here in the temple. He doesn't have money to have food also so whatever he gets here in the temple he eats that". Balaknama Reporter immediately went to meet that child and also went to his owner. The



owner said, "This child worked only for 10 days with me and kept roaming here and there during dusshera so I laid him off from the job". Reporter said, "First you have done wrong by employing a child and now you are lying also". Owner angrily replied, "Do whatever you want to, I will not give the money".

Reporter immediately called Childline at 1098 and their workers arrived in few hours there but the child said, "I do not want to fight with anyone. Please send me to shelter home, I will stay there only". Reporter asked Ravi, "Why don't you want to go to your home?" Ravi replied, "My family will abuse me and will send me away from home if I will go in this condition. So I want to go to shelter home only. I will go to my home once my condition improves". Ravi was sent to shelter home with help of Childline worker where he is safe now.

SCHOOL GOING CHILDREN SUFFER DUE TO LACK OF TOILETS

Balaknama Bureau

There are still many places in Delhi where basic facilities like toilets are not available. We are talking about a similar place Valmiki camp near Shakurpur in Delhi. The camp is near railway tracks so majority of people go to tracks for defecation. There is only one toilet in that area despite the camp is densely populated. Due to availability of only one toilet, there is an always a queue in morning from 5 to 11. Children going to school also gets late due to this problem and get scolded by their teachers so they have to go on tracks to relieve themselves to



avoid the queue. Girls said, "We face a lot of problem when we go out in open to relieve themselves as older boys watch us and also abuse us after getting drunk".

They added, "Small children and girls are the worst sufferers because of this problem. Along with this there is one more problem near tracks. There is a desolated place near tracks which is almost in ruins. Children get kidnapped from this place so children are scared to go out near tracks". Children said, "We want toilet in our camp as early as possible so that we are saved from abuse and then defecation in open leads to various diseases and affect our environment also. Our problem should be solved under Swachh Bharat Abhiyan campaign and help girls from exploitation so that they feel safe in the society".

SMALL CHILD WORKING TO MEET HER FAMILY'S ENDS

Talkative Reporter Nandini, Reporter Poonam

This story is about 15 years old Nandini who

and paternal aunt. Her mother died when she was just 6 months. Since then she has been brought up by her paternal uncle and aunt but her uncle also died when she reached 12 years of age. Since then family's responsibilities has come on her shoulders. Her aunt remains ill all the time so now Nandini has to work to manage her home expenses. Nandini now stays with



her aunt only and not with her siblings. Aunt has 3 children - two girls and a boy. The boy has some problem in his foot so he is not able to work thus Nandini has to work to get medicines for her aunt. She gets some 150 bunch of chains to make chains out of it and she gets Rs 9 for repairing a chain and Rs 27 in a day. How can a home be managed in Rs 27 these days, when Rs 100 easily gets used up. Nandini is just somehow managing the expenses. She wants to study but because of family situations she is not able to.

A STEP TOWARDS EDUCATION

Talkative Reporter Moni, Reporter Saurabh

12 years old Moni stays in Sector 52, Noida with her parents. Her father pulls rickshaw and mother works in other's homes then their house expenses are met. Moni has two younger siblings and as her mother leaves home at 10 in the morning and father pulls rickshaw whole day so she has to stay at home to take care of them but Moni wants to study. Other children told reporter, "Moni keeps studying something or the other at her home". Moni says, "I want to become teacher and teach those kids whose parents go to work in other people homes. That is why I want to study".

Children said, "Since the day Moni got to know that someone comes to teach kids like us at contact point so she goes there to study after taking permission from her parents. Moni's teacher is also happy to see her interest in studies and her parents are also assured that their daughter can study now".

Street Children met member of National Commission for Protection of Child Rights

Talkative Reporter Nagma, Reporter Shambhu

Roopa Kapoor, member of National Commission for Protection of Child rights met children staying at railway station to know the reason of leaving their homes and come here at stations. She asked Children, "What problems do you face here?" 16 years old Karan said, "Our parents beat us so we leave homes and when we reach here at station we get into habit of consuming drugs by seeing other children. Policemen also beat us when we go to stations to pick rags".

15 years old Nagma said, "Some of us stay under

and send us from there also. When 15th August and 26th January comes they do not let us stay there and ask us to pack our bags and go. When we ask them why they are doing this, they just say that we have got orders from above. We face so many

to study that is why we go to centre to study". Roopa Kapoor said, "You all are very talented kids and you deserve all appreciation. You can call me up if anyone harasses you anytime".

INDRAPRASTHA PARK - NEW HUB OF OBSCENITY

Balaknama Bureau

Indraprastha Park is in Sarai Kale Khan Area where children go to play and pick rags also but the park remains full of people who get involved in obscene acts there with girls and behind small trees. 14 years old Roopa (name changed) said, "As we love to play on swings there in the park so we go to pick rags there also. One day when we were playing in the park, an guy aged 23 came to us and asked us to come with him to show a video for which he was giving us Rs.300 also. We all girls understood about his bad intentions so we ran away from there. People here always do bad things with the girls and see all girls with bad intentions. If this continues it can have very bad effect on kids like us".

She further added, "There was a guard to look after the park but being a good guy he was killed and no guard joined after him. People doing obscenity acts publically in the park is making life hell for Street Children as people roaming around see those couples involved in obscene acts and then try to do same things with the children around and children also amongst each other try to do same things seeing the elders. These parks should be banned for such activities. We all children want that Delhi Government should take cognizance of this matter and take action against this so that we are able to play safely in the park and can go to study in nearby areas".

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

PIPAVAV RAILWAY CORPORATION'S EFFORTS GAVE NEW LEASE OF LIFE TO CHILDREN ADDICTED TO DRUGS

Talkative Reporter Ajeet, Reporter Shambhu

A place near GRP police station at Old Delhi Railway Station was started on 1st November, 2015 with an aim of bringing change in lives of children who pick rags all day on station for their survival and get involved in drugs. Continuous Outreach program led by Mr Sanat for 15 days has brought the children to the centre that remained under the

come there and study.

Reporter asked Sanat, "How did you handle



children when they used to be

replied, "I worked according to their mood. If they wanted to play I would allow them to do so. After getting tired the children would themselves tell me that they wants to study now so I used to teach them then because if you will tell the children staying at railway station that you just have to only study they run away. Children involved in studies and games together helped them to be away from drugs". Sanat added, "These kids were in horrible state when I met them for the

they have started coming here 17 children have left drugs completely and 19 children have reduced their consumption".

"8 students who have reached 18 years of age have been given housekeeping training at GMR centre so that they move ahead in their lives leaving station's life" ,said Sanat. Reporter asked children, "What changes have you found in yourself after coming here?" 15 years old Ajeet said, "Many changes have come in our life due to efforts of Sanat Bhaiya and Pipavav Railway Corporation Limited. We have started studying, we never thought we would be able to leave drugs and lead a normal life. We are very happy. Mr Amitabh, Chairman of Pipavav keeps visiting us and listens to our problems. We recently got cricket playing material from him as we told him that we love playing cricket a lot. Now we even get to go to different places like Red Fort, Zoo because of him. We are enjoying a lot".

"CONSTRUCT WALL BOUNDARY AROUND RAILWAY TRACKS" REQUESTS CHILDREN

Talkative Reporter Nisha, Reporter Chetan and Shambhu

There are around 3500 slums from Kamla Nehru camp to Jawahar camp and railway tracks cross throughout these camps. 15 years old Sapna said, "Mishaps keep happening on a regular basis here as parents go to work leaving behind their kids and they have to do this to for their livelihood otherwise how will their family survive. Children play all the day here and there alone and some children play near tracks as their elder brother sisters do the work of filings separation. The younger siblings also start doing the same work and suffer from chest and stomach pain as dust particles enter into their nose and mouth. These children risk their lives as they play on tracks while doing the work".

16 years old Shiva said, "At times trains crossing the tracks doesn't produce any sound. Recently 2 months back my father went at night to relieve himself but met with an accident. He was in hospital for three days but died on fourth day. It is not only me who has suffered but many children have lost their parents. We just want that there is enough warning of an approaching train so that we become alert. We children can't even say much as we stay



on government land and we fear that they will throw us away from here if we would say something".



MINOR GIRL SAVED FROM LOVE TRAP

Talkative Reporter Sapna, Reporter Shambhu and Chetan

Population of minor girls has been on increase in West Delhi's Nehru camp. Grown up girls get involved in love affairs and this is affecting the minor girls also. 16 years old Sapna (name changed) said, "Parents of these girls go to work in other's homes and when these girls go to play in parks they start doing the same thing as other girls do. They fall in love with guys and if they do not respond the same way they try committing suicide. Their parents beat them up but still there was no effect on them". "So, girls of Nehru camp decided to take out the girls stuck in the love traps and help them in improving. We recently brought changes in life of one girl Noorie (name changed). She was also involved in such love affairs with boys so we tried explaining her that this is not age of doing all this, she should concentrate on her studies right now. Love will destroy your life then only Noorie could understand. Now she studies and takes care of her siblings too. This is only one girl's story. We want that people should take care of minor girls where these activities are much prevalent and make them understand that studies are more important and they should not get distracted by such things. We explain girls this way only like we did with Noorie. We are trying our best to take care of the minor girls and to keep them away from this", added Sapna.

GIRL RAPED BY HER OWN COUSIN

Balaknama Bureau

Girls are not even safe in their own homes. Aarti (name changed) stays with her maternal aunt as her mother is mentally ill and father remains intoxicated all the time. Her parents do not bother about their daughter and her well being. There is aunt's daughter and son who stay with Aarti in that house. The boy is elder to Aarti and he sexually assaults her all the time. Aarti said, "If I object to the assault, he beats me badly. I told my maternal grandmother that whenever I am alone in the home, he comes to me when I am sleeping and force himself on me". Listening to this her grandmother suggested her to keep stick with her when she sleeps and hit him if he comes to her. Next day when he came to her and tried forcing himself on her, Aarti hit him hard on his head with stick which hurt him badly. Next day that guy complained to his mother saying that Aarti hit him

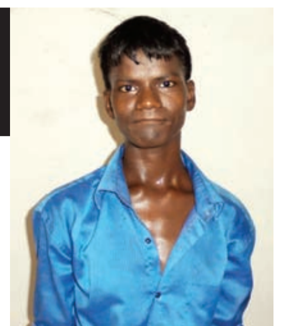


without any of his fault. Hearing this Aarti's aunt threw her out of the house.

Aarti said, "I roamed here and there the whole day but didn't get any place to stay. I asked a boy living in neighborhood for staying at his place at night. He offered the place but he also forced himself on me and I saw my aunt's son is now trying to force on my sister also. I got scared thinking that he is doing the same thing with my sister too. This time I told everything to Balaknama's Reporter". Reporter immediately called Childline at 1098. The childline workers came, examined all situations and brought her to the child welfare committee. Aarti was sent for medical examination but doctors refused to do because the papers did not have her parent's signature as her mother is mentally ill and father does not remain in his conscious due to intoxication. Child welfare committee sent Aarti to a shelter home.

This news is of Noida and other girls staying there told the reporter, "These kinds of incidents happen day to day with many girls. Earlier we were not safe outside but now we are not safe in our homes too. The person whom we consider our brothers does this to us".

HATS OFF TO THE COURAGE OF RAM AVTAR



Talkative Reporter Ramavtar, Reporter Shambhu

This story is about Ramavtar who ran away from his home after fighting with his parents and came to Old Delhi Railw ay Station. He remained hungry for few days after coming to station and afterwards started picking bottles for earning some money by which he could have something to eat. Ramavtar started consuming drugs like hemp, cannabis, cigarette, etc in company of children staying at railway station. His condition deteriorated due to drugs so he was taken to rehabilitation centre but he would always run away from there and come back to the station. He did not want to stay in a closed room; he just wanted drugs all the time.

Mr Sanat met Ramavtar during the outreach program conducted for children staying at Old Delhi Railway Station in association with Pipavav Railway Corporation Limited so that those children come to the contact point to study but Ramavtar never turned up on the centre. Mr Sanat's efforts paid off and Ramavtar started coming to the centre to study. Then slowly and gradually Sanat explained Ramavtar, "Children who take drugs do not anything good in their lives. They do not go ahead in life so leave drugs and see you moving ahead in life and doing wonders".

Ramavtar started leaving drugs gradually and now he doesn't consume at all. He is now 18 years old and completed a one and half month housekeeping course from GMR for which he has received the certificate too. He has now got the job of cleaning at Old Delhi Railway Station and gets Rs.9000 per month.

Ramavtar told the reporter, "I am so happy in my life. I never believed I will be able to do anything in life but see things have changed now and I will give whole credit to Sanat Bhaiya. If he wouldn't have persuaded me to leave drugs so I would have been at station only consuming drugs. I just want that all children should move ahead in their lives like I did".



BRUTAL TREATMENT OF CHILDREN BY SOME POLICE OFFICERS

Balaknama Bureau

Children work at railway stations to earn livelihood so that they can have something to eat. Some children work inside the trains. Working children said, "When we go to clean the trains or to pick bottles a one star police officer beat us very badly. They blame us for stealing things of public which we do not do. We only concentrate on our work. We get bottles and we move out of the train".

Children added, "Star studded policeman ask us to give him money and get saved from the torture but we do not do this. How we will manage our expenses if we will give our money to him? So they beat us badly for not giving them money. We are not able to handle this tortue in this cold weather as small injury also hurts alot in winters. We want that police do not beat us, we also feel the pain".

SMALL INNOCENT HANDS CARVE OUT BEAUTIFUL TAJ MAHAL OUT OF STONE

Talkative Reporter Priyanka, Reporter Poonam





There are around 56 kids in Agra city who make small Taj Mahal of stone to earn livelihood for their families. Balaknama Reporters spoke to these kids. 15 years old girl said, "We have an owner who makes us work on contract for which we get Rs.50 per day. The dust which fly out while design making on the stone gets into our nose which results in difficult breathing and chest pain". Reporter asked children, "What do you do of stone Taj Mahal after making it?" 16 years old boy said, "We pack them in a mirror box and then go to sell them in the market. We get Rs. 15per piece and when the pieces are not sold we have to give it at Rs.10 per piece also. All the money earned from this has to be given to the owner".

He further added, "We get more money if our owner's mood is good otherwise we do not even get Rs.50 per day. We do not know any work apart from this and the sad part is our parents have also been doing the same work from starting so we are also made to do the same work and we even learn this in our homes only". Reporter asked children, "Do you all not wish to go to school?" 14 years old boy said, "When any child comes to me in school dress to buy something from me, I always wish I could go to school and study. I would have got good clothes to wear but this all is not in our destiny as our father drinks alot, they may not get food but should surely get liquor to drink otherwise they create violence in the home".

CHILDREN'S PLAYGROUND CONVERTED INTO GARBAGE BIN



Talkative Reporter Premchand, Reporter Shambhu

Children in Subhash camp said, "Dirt and filth is on increase in our area. There is a ground in our area where rainwater gets accumulated but now people of that area has turned it into a garbage bin. They fill it with so much of garbage as if this is the only centre to throw garbage. Small children play around this ground. The problem with the area is that earlier it had only the water filled but due to people's bad habit, it has turned into a garbage ground".

16 years old Premchand said, "People have started throwing every kind of water in this ground like bathing water, dirty water left out after washing clothes and utensils. Since then diseases have grown in number". 14 years old Khushboo said, "People from the opposite side let their kids defecate in this ground and the cut left over chicken and fish is also thrown in this ground. The dead pigs are thrown here. The place stinks so well that children are not able to play there and feel nauseating all the time. Recently, people staying there fought with our parents saying that where would we throw our garbage when we stay here only? They were ready to beat our parents. It is terrible for us to stay in this stinking place".

"We want that the action should be taken against this as soon as possible and the ground should be cleaned immediately. A notice should be put up for keeping the ground clean then only we may get this place clean and children will be able to play here", added Khushboo.

Street and Working Children should be honored with bravery award

from page 1

Two small kids were sent to shelter home by efforts of Tulsi and Pooja. Their parents met with an accident and these kids reached Mathura Railway Station somehow from Bhilwara. The moment Tulsi and Pooja got this news they contacted Child Welfare Committee and helped these children to reach shelter home. Many a times these children put their life in danger to save other children's lives but their efforts are never appreciated.

Badhte Kadam federation appeal to Government to honor Street and Working Children's bravery too on the occasion of Republic Day.



PARENTS STOPPED GIRLS FROM GOING SCHOOL

Balaknama Bureau

Parents are stopping their daughters from going to school. When Balaknama Reporter got this news they went to talk to those girls. Reason for this was those boys who pass lewd remarks and eve tease the girls when they go to school. 16 years old Balika (name changed) said, "My parents are cobbler and they want me to study so that I do not have to do the same work but situations are very bad here for girls". 15 years old Balika said, "When I go out to attend my school, boys in the route pass lewd remarks on us. One day five boys stopped way of our three girls and started commenting on our school dress saying that it would be more interesting if this dress would have been more shorter. They comment like this regularly that is why our parents do not let us go to school. These boys trap girls by tempting them first, then do obscene things with them and make them pregnant on pretext of marriage and later ask them to abort the babies".

Reporter got the confirmation of this news by finding that three dead bodies of small babies were found in last one month. These girls are of age group of 16 to 17 years. Reporter met one of those girls who went through this torture and told about her experience with a guy.

GIRLS CHILD - VICTIMS OF CHILD MARRIAGE

Balaknama Bureau

During a survey of South Delhi area, Balaknama Reporter got to know that majority of people staying here belong to Dome caste. These people marry off their children at a very early age. On being asked by a reporter, a girl replied that – "In our Dome Caste, children get married at the age of 15 or 16 years". It was shocking news in itself as children are forced to get married at such younger ages. In this context, Balaknama reporter met a married girl of Dome caste. The girl got scared when the reporter tried talking to her. She asked, "Why are you asking me such questions?" Reporter introducing himself said, "I am reporter of a children's newspaper which is run by children themselves". The girl got very happy hearing this and explained reporter fully about dome caste. She said, "There is a belief being followed since many generations that wherever a girl is born in family, their parents should get their girls married off early otherwise they will take wrong paths in her life. So their parents get them married off in very young age. 16 years old Balika said, "A marriage proposal came to my family for me and they enquired if



I knew household chores and cooking. On which my parents lied that I know everything and handles the all household chores despite knowing that I know nothing. And when I asked my mother that why did she lie. She replied that if I would not have spoken a lie then how will your marriage take place? When I got married after 5 months, my mother-in-law asked me to make chapattis and I got scared as I did not know how to make one. My mother in law hit me on knowing this and my husband's attitude also doesn't remain good towards me as I cannot handle household chores". Balika further added, "This way here 14-15year old girls are married off by speaking lies and then they are only tortured at their in-laws place. They become mothers also in such young age. How can a small girl handle such big responsibility in young age? We girls want these old conservative customs and beliefs to end so that our lives are not ruined in their names".

LEAVING BEHIND DRUGS, A STEP TOWARDS EDUCATION

Talkative Reporter Rohit, Reporter Shambhu

15 years old Rohit used to stay in his village Mukanpur. Rohit's father did not do any work, was always into gamble and his mother worked as a labourer. Rohit's mother always took out her work's anger on him. One day her owner refused to give her month's salary so when she returned back to home she beat rohit badly out of her anger.

Thus rohit ran from his home and came to Old Delhi Railway Station. He remained hungry the whole day and when it became impossible for him to tolerate the hunger he started begging but he did not get any money. Then he observed that children are



begging alongwith cleaning the place so he started the same for his livelihood. During all this, other children got rohit addicted to drugs and he got so much addicted that he never remained in his conscious. CHETNA's worker met Rohit and explained him, "Drugs consumption is bad for health so do not consume drugs. I teach children like you in a centre near GRP police station. You can also come to study at this centre". After few days, Rohit started coming to the centre and now he has decreased his drugs consumption and come to centre regularly to study. He also does the cleaning work in train every day. A single step taken by the worker associated Rohit to education. You can also help children by associating them with education.

Malla selling cow dung cakes to fund her siblings' education

Talkative Reporter Malla, Reporter Poonam

15 years old Malla stays in Agra with her parents. Malla's father is drunkard and mother remains ill all the time. She has become so old that she cannot take care of her children. Malla said, "We ask our father to go to work but he remains intoxicated all the time and do not go to work and rather abuse us staying back at home. That is why I have to stay back at home leaving my studies and sell cow dung cakes to manage my house expenses. I utilize the money earned from selling cow dung cakes in getting food for my home. But there is a problem that the people steal my dung cakes from the place where I make them". She further told the reporter, "People here steal my dung cakes and I even complained in Police Station but nothing happened. Policemen send me back saying that we cannot file an FIR just for your one dung cake. I requested and even cried in front of them and asked them to help me as I send my siblings to school by selling these cakes only. If they won't help me then who else would but they did not help me. So, I request you to please help me".

Reporter told Malla, "Childline helpline number 1098 is a number which any child can call if they are in any distress. It is every child's right to call childline helpline if they face any problem. So, call them and share your problem with them".

ELDER BOYS HARASS YOUNG CHILDREN WHO BEG AND SNATCH AWAY THEIR MONEY

Talkative Reporter Priyanka, Reporter Poonam

Majority of children do the work of begging in Agra Cantt. Reporter met these children. Children told reporter, "There are around 25 children in Malvari village who do not do any other work and only begs. But the bad thing is that these kids earn money after hard day work and there are some elder boys who harass them showing their bossy attitude. If they do not give them money they snatch it after beating them badly. This is happening since very long". 14 years old Balika said, "This is their everyday's routine, these boys do not do any work, just come in the evening when we return back to our homes and first asks us with love to give them some money to eat something. When we refuse to give money they beat us and snatch away the money from us and nobody stops them. We even complained to Police one day but they also did not do anything".

"When we return back home crying, our parents also do not believe us and says that you do not know how to beg properly and then make excuse that somebody has snatched the money from you. Sometimes they do not even give us food to eat and we have to sleep hungry at night. We want freedom from this problem and help from someoneone who can save us from begging", added Balika.



"I have a younger brother who started taking drugs after my parents' death. We have tried explaining him but he doesn't listen. That is why I want to send my brother to centre safely to save him from taking any bad step in life"

I want my brother to go to centre home: Aarti

Talkative Reporter Aarti, Reporter Jyoti

11 years old Aarti stays with her uncle and aunty in a slum at Lodhi road. Aarti told the reporter "I have three sisters and two brothers. My parents died when we were very young. We had nobody to take care of us and our uncle aunty decided to keep us with them. Aunty loves us like her own children. They have got my siblings admitted in Government school. We go to school everyday. Our aunt go to work in others' homes. Uncle aunty manages their expenses and take care of us also so to help them I also startes working in nearby Sai Baba temple at Lodhi road. I keep people's shoes properly in the rack who visit Temple. Working there provides me with some money. There are some people who provide ua with their old clothes which I use for my siblings". She added, "I have a younger brother who started taking drugs after my parents' death. We have tried explaining him but he doesn't listen. He is ready to do any kind of work for taking drugs. Anyone who tells him to do this work and will get drugs in return he does that work so I want to send my brother to centre safely to save him from taking any bad step in life".

Balaknama newspaper in headlines

We are sharing some moments with you



Let us help Children shivering from cold.



Street and Working Children were taken to Bal Bhawan to increase their enthusiasm.



Children putting up their Mann ki baat in School's magazine.



. Reporters reading their own news.



Children staying at red light were taught life skills of how to say no.



THE TIMES OF INDIA, NEW DELHI
THURSDAY, DECEMBER 29, 2016

TIMES CITY

Light turns green for 3 kids saved from signal

Pankhuri Yadav
@timesgroup.com

New Delhi: It was a timely rescue that helped three children avoid an ominous future. They had been brought to Delhi from Bihar on the pretext of being offered jobs but were forced instead to beg at the Moolchand crossing in south Delhi. Chetna, an NGO dealing with rehabilitation of child beggars at traffic signals, has now handed the kids over to the Child Welfare Committee at Lajpat Nagar.

Sanjeet, who has since been arrested and an FIR filed against him, brought the three boys, aged between nine and 12 years, from their homes in Bihar to the capital two months ago. When contacted by the cops, the families of the youngsters reported that the man had told them he would take the trio to Delhi, where many opportunities for earning existed.

However, once the boys reached Delhi, they were mainly used to sell wares and to beg at the traffic crossing. Sanjeet threatened us and told us not to inform anyone about him, said the children. The boys also admitted that they would probably have avoided spilling the beans on Sanjeet because they were managing to send money to their families. However, the man who they thought was their benefactor had begun to beat them frequently and they could no longer bear his cruelty.

Last week some Chetna workers, who regularly interact with child beggars, felt the three children were missing the spark they had observed in earlier conversations with them. "We insisted that they tell us what was wrong, and they narrated the sad story of how the man who brought them to Delhi locked them inside a room and beat them frequently, often making them go without food for days," said a worker.

An FIR was registered at the Defence Colony police station on Sunday. "Sanjeet was arrested soon after," said a senior police officer.

Sanjay Gupta, director of Chetna, said that they have calculated the number of children exposed to beggary in Delhi at around 10,000. "When we started our project, Dreams on Street, a year ago, we assessed that there were over 200 major traffic signals in the capital, and 30-40 children begged at these spots," he said. "We have taken some steps to deal with this issue, and in the near future, will initiate more projects to rescue children who are trapped in such adverse situations."

Gupta added, "A survey we carried out revealed that that average earning of these children was Rs 375 per day. But to earn this money, the minors go through acute mental trauma and stress. This could be the reason why the three boys finally decided to speak out against Sanjeet."

RESCUED: The children were forced to beg at Moolchand crossing

News in Times of India



K. MOSES CHALAI

Government of India
Ministry of Women & Child Development

Dated 18th January, 2017

Dear Ms. Shanno,

... National Girl Child Day on **January 24th, 2017 at Pravasi Bhartiya Kendra, Chanakyapuri, New Delhi at 11.00 A.M.** ...

2. ... **National Girl Child Day on 24th January, 2017 and share your experience and thoughts with the audience.** ...

With regards,

(K. Moses Chalai)

Ms. Shanno,
Editor, Badhte Kadam,
31 Basement, Gautam Nagar,
New Delhi - 110049

Ministry of Women and Child Devlopment invited Shanno pathan, member of our editorial team to keep her view points in program of National Girl Child Day.



Reena Jain, Principal of KCL College receiving Balaknama copy.



Balaknama reached KCL inter college, Patholi, Agra

This edition is for limited distribution. All pictures are published in this edition after children's their approval.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Richa Somvanshi.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-61 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | दिसंबर-जनवरी, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

बढ़ते कदम के सदस्यों ने विश्व समुदाय से की अपील

बालकनामा ब्यूरो

बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने दक्षिणी दिल्ली में बैठक का आयोजन किया जिसमें बढ़ते कदम के सदस्यों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बिगडती स्थिति और उनकी अनदेखी पर चिंता जाहिर की बालकनामा की टीम ने इस मीटिंग का आवरण किया।

प्रस्तुत हैं उसके महत्वपूर्ण अंशः

● विश्व में लगभग 15 करोड़ सड़क एवं कामकाजी बच्चे है।

● विश्व में 196 देशों में लगभग 130 देशों में सड़क एवं कामकाजी बच्चे है।

● यह बच्चे असमानता, भुखमरी, बेघर, अशिक्षा, तिरस्कार, शोषण के शिकार हैं। अभी तक सड़क एवं कामकाजी बच्चों को लेकर विश्व के देश एकमत नहीं हैं और न ही इनकी संख्या का कोई सही अंदाजा है जिसके चलते सड़क एवं कामकाजी बच्चों में भी खासकर लड़कियों की स्थिति बेहद खराब है। इसलिए बालकनामा टीम ने विश्व समुदाय से निम्न मांग रखी हैं।





● सड़क एवं कामकाजी बच्चों की उपस्थिति को लेकर सभी देशों में एक मान्यता मान्यता मिले और एकमत बने।

● इनकी गणना हो और उनकी समस्याओं एवं संख्या के अनुरूप उनके लिए योजनाएं बने।

● सड़क एवं कामकाजी बच्चों के चारो अधिकारो क्रमशः जीने का अधिकार एसुरक्षा का अधिकार एविकास का अधिकार एवं भागीदारी का अधिकार सुनिश्चित हो।

बढ़ते कदम की अध्यक्ष 16 वर्षीय ज्योति ने प्रसन्ता जाहिर की कि जल्द ही युनाईटेड नेशन में भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों का उल्लेख हो सकता है।

बढ़ते कदम ने गणतंत्र दिवस पर की मांग

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को भी मिले बहादुरी पुरस्कार

बालकनामा ब्यूरो

गणतंत्र दिवस के अवसर भारत सरकार द्वारा हर साल जो बच्चे किसी की मदद करते हैं, उनको बहादुरी के पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इसके विपरीत एक सच्चाई यह भी है कि बहुत से सड़क एवं कामकाजी बच्चे कठिन परिस्थितियों में रहते हैं और बहादुरी से इन परिस्थितियों का सामना करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इन बच्चों की निर्भयता और बहादुरी को अनदेखा कर दिया जाता है। उनके निःस्वार्थ कार्यों और परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता उन्हें किसी सुपरमैन से कम नहीं आंकती और इसी वजह से ये बच्चे निम्न वर्ग के हीरो बन गए हैं।



तुलसी और पूजा

14 वर्षीय मो. अली ने एक बच्चे की जान बचाई। वह जब सेंटर से पढ़कर आ रहा था तो उसने देखा कि चार लोग एक बच्चे को पीट रहे हैं और उसके पैसे छीनने का प्रयास कर रहे थे। वह दौड़कर उसके पास

शेष पृष्ठ 6 पर

बालकनामा अखबार का दिखा असर

लखनऊ में सड़क एवं कामकाजी बच्चों को पंहुची राहत



बालकनामा

ज्ञातव्य हो कि बालकनामा अखबार के अंक 54 में नवाबों की नगरी लखनऊ में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दुर्दशा पर खबरें प्रकाशित की गई थी, जिसको पढ़ने के बाद वन वर्ल्ड फाउंडेशन और सामाजिक संस्था चेतना ने मिलकर लखनऊ में 6 स्थानों पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए कार्य करना प्रारम्भ किया। संस्था के सहयोग से अब तब लगभग 300 बच्चों को शिक्षा से जोड़ा जा चुका है. इसके साथ ही इन बच्चों को बाल अधिकारों, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं, पुलिस स्टेशन विजिट, एक्सपोजर विजिट इत्यादि के माध्यम से समाज की मुख्यधारा से जोड़ा गया है.



ठंड ने किया स्ट्रीट चिल्ड्रन के जीवन को बदहाल

बालकनामा ब्यूरो

एक ओर जहां कड़ाके की ठंड में सड़क एवं कामकाजी बच्चों को खुले आसमान के नीचे रात गुजारनी पड़ रही है, वहीं दूसरी ओर नोटबंदी ने इनका धंधा पानी चैपट कर रखा है। बालकनाम के पत्रकार ने जब सड़क एवं कामकाजी बच्चों से पूछा कि इतनी ठंड में आप कैसे अपना बचाव कर रहे हैं तो भीख मांगने और कबाड़ा चुनने वाले बच्चों ने बताया कि हम एक ही कंबल में चार से पांच बच्चे सो रहे हैं, ताकि ठंड न लगे। पत्रकार को कुछ ऐसे बच्चे भी मिले, जो रात में अपने खुद के कपड़े जलाकर ठंड से बचने का प्रयास कर रहे हैं और कुछ बच्चे ऐसे थे जो महिलाओं की सूखती साड़ियां रस्सी पर से चुराकर लाते हैं और उसी साड़ी को वह रात को अपने बदन पर चारों ओर लपेट कर सो जाते हैं। बच्चों ने बताया कि जिस दिन भी ज्यादा ठंड लगती है उस दिन वे अपने कपड़े जलाकर आग का प्रबंध करते हैं। वह इसी प्रकार अपनी पूरी रात गुजारते हैं।

इसके साथ ही बच्चों ने बताया कि ठंडी और नोटबंदी के चलते हमें कबाड़ा भी नहीं मिल रहा है और न ही हमें कोई भीख दे रहा है। हमारे माता पिता भी हमें जबरन पैसा कमाने के लिए कहते हैं। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम लड़कियां कबाड़ा बीनने का काम करती हैं। पर जब से ठंड पड़ने लगी है तब से हमारा काम मंदा हो गया है और बोतल नहीं मिलती हैं तो हमारे माता मिता गलत काम करने के लिए हमसे बोलते हैं। क्योंकि इसी तरह इस समय ज्यादा पैसे कमाए जा सकते हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार!

सड़क व कामकाजी बच्चो की ओर से आप सभी को नए साल की बहुत बहुत बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों का अखबार बालकनामा एक नए अंक के साथ सच्ची घटनाओं व खबरों को लेकर प्रकाशित हुआ है। जैसे हम हर साल काम करते हैं, वैसे ही इस नए वर्ष में भी हम उतनी ही मेहनत और लगन से सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए काम करेंगे और अपने अखबार के माध्यम से उनकी परेशानी व समस्याओं को उजागर करेंगे।

साथियों, बालकनामा के पत्रकारों ने इस ठंडी के चलते स्टेशनों, फुटपाथों, झुग्गी, झोपड़ियों का दौरा करके बच्चों की परेशानी को जाना व समझा। बच्चों को होनी वाली परेशानियों के बारे में जाना और कैसे लड़कियों के लिए घर हो या बाहर असुरक्षित महसूस हो रहा है, इसकी सच्ची तस्वीरें आपके समक्ष लेकर आए हैं। इस प्रकार हम अपने अखबार के माध्यम से छोटी, बड़ी खबरों के साथ आपके बीच उपस्थित हुए हैं।

आशा करते है कि इस बार का अंक आपको पसंद आएगा। अपनी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर अवश्य भेजने का कष्ट करें।

संपादकीय टीम

कूड़ा छांटकर अपने माता-पिता का सहारा बने दोनों भाई-बहन

बातूनी रिपोर्टर विकास, रिपोर्टर चेतन

शहीद कैम्प में रहने वाले दो बहन भाई जो बड़ी ही कठिनाईयों के साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे है। विकास 10 साल का है और इसकी बहन चांदनी 9 साल की है। विकास पांचवी कक्षा में पढ़ता है और चांदनी भी दूसरी कक्षा में पढ़ाई करती है। दोनों अपने मम्मी पापा के साथ रहते हैं। विकास के पापा सुबह पांच बजे दूसरे के घरों से कूड़ा उठाकर ले जाते हैं और विकास तथा उसकी मम्मी दूसरे के घर से लाए गए कूड़े को छांटते हैं। विकास सुबह सात बजे काम पर लगता है और रात को 9 से 10 बजे तक काम करता है। और चांदनी की जब स्कूल से छुट्टी होती है। तब वह भी काम पर लग जाती है। लेकिन जब इन दोनों की स्कूल की छुट्टी रहती है तो दोनों सारा दिन कूड़े की छटाई करते हैं। और कूड़ा भी इतना गंदा रहता है कि कोई दूसरा व्यक्ति वहां पर बैठ ही नहीं सकता।

विकास अपने पापा के साथ कभी कभी दूसरे के घर कूड़ा उठाने के लिए जाता है और जो भी बचा हुआ खाना होता है वह उठाकर लाता है। उसी खाने में से



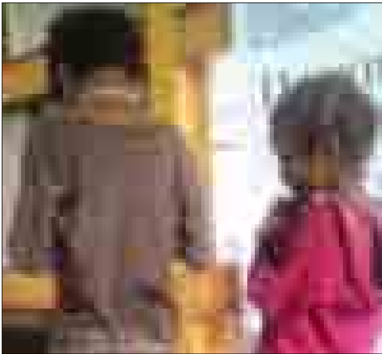
कुछ रोटी सब्जी अच्छा मिल जाता है तो वही खाना परिवार के साथ बैठ खाता है। कूड़े में जो सड़ा हुआ सामान होता है उसे गोदाम पर लेकर जाते हैं। पर यह गोदाम बीमारी का घर है क्योंकि इस गोदाम में से बहुत गंदी बदबू आती है।

विकास और चांदनी भी इसी गोदाम पर अपनी मम्मी के साथ रहते हैं। मम्मी घर में रहने के बजाए गोदाम में ही विकास और चांदनी के साथ रहती है और इसी गोदाम में रहकर वह कबाड़ा छांटने का काम करती हैं।

क्या मां ऐसी भी होती है?

बातूनी रिपोर्टर कविता, रिपोर्टर ज्योति

यह खबर दो मासूम भाईबहन की है। यह दोनों मूलचंद पुल के नीचे रहते हैं। इन दोनों के माता पिता कुछ काम नहीं करते हैं। सिर्फ घर में ही बैठे रहते हैं। पिता को टी.बी. की बीमारी है। वह हमेशा घर पर ही रहते है। माता ऐसी है खाना मिले या न मिले शराब मिलनी चाहिए। इसलिए मजबूर होकर इन दोनों बहन.भाई को भीख मांगने का काम करना पड़ता है। अगर भीख मांगने से मना करते हैं तो इनकी मां बहुत मारती है। रानी 4 साल की है और राहुल 6 साल का है। पिता को टी.बी. की बीमारी होने की वजह से इनकी मां बोलती है कि अपने पिता का इलाज कराने के लिए पैसे मांगकर लाओ तभी तो तुम्हारे पिता का इलाज हो पाएगा लेकिन जो पैसे भीख मांगकर लाते हैं उन्हीं पैसे से वह शराब पी लेती हैं और मेरे पिता को टी.बी. की वजह से दिन पर दिन बुरा हाल होता जा रहा है। ऐसे हालात को देखते हुए मेरे पिता बोलते हैं कि तुम लोग मेरे लिए भीख मांगकर मत लाओ मैं ऐसे ही मर जाऊंगा। पर जब हम दोनों बहन भाई भीख मांगने नहीं जाते हैं तो हमारी मां हमारे पिता को मारती हैं। जब कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर दीदी पढ़ाने के लिए आती हैं और मुझे बुलाकर ले जाती हैं तो मेरी मां हम दोनों बहन भाई से बोलती हैं कि तुम भीख मांगकर नहीं लाओगे तो मैं शराब कहां से लाऊंगी। जब हम दोनों



बहन भाई बीमार पड़ते हैं तो मेरी मां इलाज तक नहीं करवाती हैं। हम ऐसे ही बुखार में तड़पते रहते हैं। हमारी मां कभी हमारी दवा नहीं करवाती हैं।

माता-पिता के काम न करने कारण कूड़ेदान से खाना निकालकर अपना पेट पालती नन्हीं मासूम बच्ची

बातूनी रिपोर्टर कल्पना, रिपोर्टर चेतन

कल्पना ने बताया कि भईया जब मैं रोज सुबह स्कूल के लिए निकलती हूं तो रास्ते में एक लड़की मिलती है जो स्कूल नहीं जाती है। लेकिन वह लड़की कबाड़ा बीनती है और जब उसे भूख लगती है तो मेन रोड के समाने एक कूड़ेदान है। वह कूड़ेदान में खाना ढूंढती है और कूडेद्रान में से उसे जो भी कुछ खाने को मिलता है, उसे निकालकर खा लेती है। यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है। एक रोज मैं उसके पास गई उससे बात की तो उसने मुझे बताया कि उसके माता पिता कुछ काम नहीं करते और वह स्कूल पढ़ने भी नहीं जाती। जब उसे भूख लगती है तो वह रोज इसी तरह कूड़ेदान से निकालकर खाना खा लेती है। वह किसी से मांगती



नहीं है कि मुझे भूख लगी है, खाना दे दो। उसने बताया कि लोग मुझे डांटते हैं और मारते पीटते भी हैं कि तुम कूड़ेदान में से खाना निकालकर क्यों खाती हो। मैं अपनी परेशानी इन लोगों को रो रो कर बताती हूं कि मेरे माता पिता कुछ काम नहीं करते हैं, इसलिए मैं यहां से खाना निकालकर खाती हूं।

ठंड ने किया स्ट्रीट चिल्ड्रन के जीवन को बदहाल

पृष्ठ 1 का शेष

कुछ लड़कियां अपने माता पिता के कहने पर यह कदम उठा रही हैं।

एक बालिका ने बताया कि हमारे माता पिता हमसे बोतले हैं कि बोतल बीनकर लाओ नहीं तो खाना भी नहीं मिलेगा। अब इस ठंडी में कबाड़ा ज्यादा मिल नहीं रहा है तो लड़कियों को मजबूरी में आकर किन्नर बनकर रेलगाड़ी में भीख मांगने का काम करना पड़ रहा है। क्योंकि अभी हमारा बोतल बीनने का काम नहीं चल रहा है। इसलिए अब हम लड़कियां किन्नर बनकर रेलगाड़ियों में भीख मांगने जाती हैं। सड़क पर रहने वाले बच्चों ने बताया हमारा कोई घर नहीं है और हम सड़क पर तिरपाल डालकर रहते हैं। यह अपना पालन पोषण करने के लिए लालबती पर पूरे दिन भीख मांगते हैं।

बच्चों ने पत्रकार से बोला कि जब से पांच सौ, एक हजार का नोट बंद हुआ है, तब से हमें बहुत कम पैसे मिलने लगे हैं। ऊपर से दिल्ली की बढ़ती ठंड में भीख नहीं मिल रही है। लोग अपनी गाड़ियों के दरवाजे नही खोलते हैं। हम लड़कियां गाड़ी के पास खड़े होकर भीख मांगनी पड़ती है और आवाज़ लगानी पड़ती है। फिर भी दरवाजा नहीं खोलते। पहले हम एक सप्ताह में 500 रूपए तक कमा लेते थे, लेकिन अब सिर्फ 50 रुपए ही मिल पाते हैं। इतने कम पैसों में हमारे घर का खर्चा भी नहीं चल पा रहा है। इसलिए लड़कियां लड़कों के साथ अश्लील काम करती हैं और बदले में वह लड़के कुछ पैसे दे देते हैं। फिर वही पैसे से हम नशा खरीद कर ठंड से बचाव भी करते हैं तथा घर का खर्चा भी चलाते हैं। हमारे माता पिता हमारी बात नहीं सुनते, उनको तो सिर्फ पैसों से मतलब है। कैसे भी करके पैसे लाकर दो वह उसी में खुश रहते हैं।

üबच्चों ने बताया कि जब हम रेलगाड़ी में किन्नर बनकर भीख मांगने जाते हैं तो इस दौरान हमें बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लोग हम से अश्लीलता से बात करते हैं कि 100 के



बदले 1000 दे रहा हूं, चलेगी मेरे साथ एक घंटे के लिए।

üलोग अश्लील बातें बोलते हैं और पैसे दिखाकर अपनी ओर आने का इशारा करते हैं।

üस्टेशन पर रहने वाली लड़कियां ठंड से बचने के लिए नशीले पदार्थ कर सेवन कर रही हैं।

ü16 साल की बालिका ने बताया कि हमारे पास गर्म कपड़े नहीं हैं, जिससे हम ठंड से बचाव कर सकें। इसलिए हम लड़कियां नशे का सेवन करती हैं।

ü बच्चे ठंड से बचने के लिए अपने कपडे.को भी जला देते हैं।

üबच्चे लकड़ी बीनने के लिए दूर दूर जाते हैं, जब सूखी लकड़ी नहीं मिलती है तब वह अपनी पढ़ाई की किताबें भी जलाकर ठंड से बचाव करते हैं।

ü16 वर्षीय बालिका ने बताया कि ठंड से बचने के लिए हम लड़कियां दूसरे के घरों में झाड़ू पोछा का काम करने लगीं हैं।

üस्टेशन पर रहने वाले कुछ बच्चे कूड़े कबाड़े का काम छोड़कर अब कंबल बेचने का काम कर रहे हैं।

üठंड से बचने के लिए बच्चे अश्लील काम कर रहे हैं।

ü लड़कियां अपने पास कुत्ते को सुलाकर ठंड से बचाव कर रही हैं।

राजधानी दिल्ली में कितनी असुरक्षित हैं लड़कियां

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली में आज भी कई इलाके ऐसे हैं जहां किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है और तो और उन इलाकों में शौचालय भी नहीं बने हुए हैं। वाल्मीकि कैंप में सिर्फ एक ही शौचालय बना हुआ। लोगों की इतनी संख्या होने की बावजूद लोग खुले में ही शौच करते हैं। ऐसी ही एक कॉलोनी की हम बात कर रहे हैं, जो वेस्ट दिल्ली वाल्मीकि कैम्प के शकूर पुर के नजदीक है।

इस कॉलोनी में छोटे बच्चे और लड़कियों को बहुत परेशानी होती है। क्योंकि वाल्मीकि कैम्प के नजदीक रेलवे लाइन है। इसलिए सभी लोग रेलवे लाइन के पास खुले में शौच करने के लिए जाते हैं। वहां पर एक ही शौचालय है, जिसमें सुबह 5 बजे से लेकर 11 बजे तक भीड़ लगी रहती है और वाल्मीकि कैम्प में कुछ बच्चे हैं, जो सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं। यह बच्चे अपने स्कूल में अकसर समय पर नहीं पहुंच पाते हैं। इसलिए स्कूल के अध्यापक उन्हें बहुत डांट खानी पड़ती है। क्योंकि वाल्मीकि कैंप में रहने वाले सभी बच्चे



शौच करने के लिए रेलवे लाइन पर जाते हैं। पर जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करने जाती हैं तो खासतौर पर उन्हें बहुत समस्या होती है, क्योंकि जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करती हैं तो बड़े बड़े लड़के उन्हें छुप छुपकर देखते हैं। वो लड़के शराब पीकर रेलवे लाइन के पास आ जाते हैं और गाली देते हैं।

इस रोज रोज की समस्या से लड़कियां और छोटे बच्चे बहुत परेशान हैं। इस समस्या के साथ वहां पर एक और दुंघटना हो रही है क्योंकि रेलवे लाइन के पास एक जगह जिसे लोग खंडहर के नाम से जानते हैं वह खंडहर वाली जगह बहुत दिनों से वीरान पड़ी हुई है। वो जगह एकदम सुनसान रहती है। अगर कोई बच्चा इस तरफ जाता है तो उनका अपहरण कर लिया जाता है। वहां से बच्चे गायब कर दिए जाते हैं। इसलिए बच्चे यहां हमेशा डर कर रहते हैं कि कहीं हमें बाहर खुले में शौच करते समय अपहरण न कर लिया जाए। शौच न होने की वजह से बच्चों और लड़कियों को अलग अलग समस्याओं का सामना कर पड़ रहा है। बच्चे चाहते हैं कि उनके लिए वाल्मीकि कैंप में जल्द से जल्द शौचालय बनवाएं जाएं ताकि यह बच्चे शोषण का शिकार न हों और वैसे भी खुले में शौच करने से बीमारियां पैदा होती हैं और वातावरण भी गंदा होता है। स्वच्छ भारत अभियान के चलते हमारी इस समस्या का समाधान हों और लड़कियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनकी मदद की जाए, जिससे समाज में रहने वाली लड़कियां सुरक्षित रह सकें।

अकेले बच्चे के लिए सुरक्षित घर है शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर गुड़िया, रिपोर्टर ज्योति

15 वर्षीय गुड़िया जो अपने परिवार के साथ मथुरा में रहती थी। लेकिन उसके माता पिता बहुत बीमार रहते थे। उस वक्त गुड़िया सिर्फ 12 साल की थी। एक दिन उसके माता पिता की ज्यादा तबियत खराब हो गई और वह मथुरा स्टेशन से गुड़िया के साथ डॉक्टर के पास दवाई लेने के लिए जा रहे थे कि गुड़िया के माता पिता की अचानक एक ट्रेन हादसे में मृत्यु हो गई। यह हादसा देखकर गुड़िया जोर जोर से स्टेशन पर रोने लगी, क्योंकि उसके दोनों माता पिता चल बसे थे और वह बिल्कुल बेसहारा हो गई थी। गुड़िया को समझ में नहीं आ रहा था कि वह अकेले अब क्या करे। वह दूर खडी बस रोए जा रही थी। उस समय किसी ने भी उसकी मदद नहीं की, लेकिन गुड़िया के आसपास रहने वाली एक मुंह बोली चाची ने गुड़िया को देखा और उसे चुपचाप अपने साथ ले गई। गुड़िया की जो मुंह बोली चाची थी वह बहुत बुर्जुग थी। लेकिन फिर भी उन्होंने गुड़िया को अपनी बेटी बनाकर एक साल तक अपने साथ रखा। पर कुछ दिनों बाद वह भी बीमार पड़ने लगी तो वह गुड़िया को छोड़कर कहीं और चली गई। गुड़िया फिर से अकेली हो गई। फिर उसने अपना पेट पालने के लिए दूसरे के घरों में काम करने लगी।

एक दिन वह ट्रेन में बैठकर दिल्ली आ गई। जब गुड़िया दिल्ली आई तो बहुत रो रही थी, क्योंकि दिल्ली उसके लिए एकदम अंजान थी। दिल्ली के रास्ते भी उसे नहीं पता थे। इसके बावजूद वह भटकते हुए एक बच्ची से टकरा गई जो हरजत



निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा चुन रही थी। तभी उसने देखा कि वह लड़की रो रही है। गुड़िया ने गुड्डी को अपने बारे में सारी बातें बताई। फिर गुड्डी ने भी अपने बारे बताया कि मैं एक सेंटर में पढ़ाई करती हूं और रैन बसेरे में रहती हूं। मैं कबाड़ा चुनने का काम करती हूं। गुड्डी ने उससे पूछा कि तुम होम सेंटर जाना चाहती हो तो गुड़िया ने बताया कि मै वहां नहीं जाना चाहती। गुड्डी गुडिया को बालकनामा पत्रकार ज्योति के पास लेकर गई। पत्रकार ने गुड़िया को समझाया कि आप यहां पर रहोगे तो आप को कोई नहीं देखेगा और जब आप सेंटर होम में रहेंगे तो आप सुरक्षित रहेंगे। फिर दूसरे दिन पत्रकार ज्योति ने कार्यकर्ता सुरेंद्र जी को गुड़िया के बारे में बताया और उनकी मदद से गुड़िया को सेंटर होम भेज दिया।

इतनी कम उम्र में परिवार की पूरी जिम्मदारी निभा रहा है असलम

बातूनी रिपोर्टर असलम, रिपोर्टर चेतन

मैं असलम 12 साल का हूं और कमला नेहरू कैंप में रहता हूं। मैं पहले 6 कक्षा में पढ़ने जाता था। लेकिन अब मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया है। क्योंकि मेरे पापा शराब पीते थे और रोज घर में लड़ाई झगड़ा करते थे और मेरी माम्मी खुद अकेले ही पूरे घर का खर्चा चलाती थी। वह इतने पैसे नहीं कमा पाती थी कि वह घर का पालन पोषण ठीक से कर सकें, इसलिए मैं भी 3 बजे से लेकर रात को 10 बजे तक एक राशन की दुकान में काम करने लगा। मुझे सुबह स्कूल भी जाना होता था पर मैं इस काम के चलते स्कूल नहीं पहुंच पाता था। इसलिए मुझे अपने घर का खर्चा और मम्मी की मदद करने के लिए स्कूल छोड़ना



पड़ा और काम करने लगा। पहले मै राशन की दुकान पर काम किया करता था लेकिन अब मैं कुर्सी बनाने का काम करने लगा हूं। इसके साथ साथ घर की भी देखभाल करता हूं। मैं एक जिम्मेदार बड़े व्यक्ति की तरह अपना जीवन गुजार रहा हूं।

गाड़ियों से चलने वाले लोगों की अश्लील हरकतों से कैसे बचे हम?

बातूनी रिपोर्टर शन्नो, रिपोर्टर ज्योति

लालबत्ती पर लड़कियां अपने पेट पालने के लिए फूल बेचने का काम करती है लेकिन वहां पर आने जाने वाले लोग इन लड़कियों से अश्लील ढंग से बात करते हैं। 15 वर्षीय परिवर्तित नाम कविता ने बताया कि मैं यहां पर रोज फूल बेचती हूं।

अभी दो दिन पहले एक अंकल ने मुझ से पूछा कि यह फूल कितने का है मैंने बताया अंकल जी 50 रुपए का है। अंकलजी ने मुझे बोला कि मुझे दो फूल चाहिए और फिर कुछ देर के बाद बोला कि यह पांच सौ रुपए लो और कुछ देर के लिए मेरे साथ चलो।

मैंने अंकलजी से पूछा कि कहां चलना है और पूछने पर पता चला वह अंकल मुझे गलत काम करने के लिए ले जा रहे थे। उस वक्त मुझे बहुत डर लग रहा था क्योंकि मेरे आस पास कोई मेरा साथी नहीं था। मैं अकेली थी। फिर भी मैंने हिम्मत की और अंकल को एक पट्टा उठाकर तेज से मारा। जिसके कारण उनकी कार का कांच टूट गया और अंकल को भी सिर में काफी तेज चोट लग गई।

तभी एक आंटी मुझसे बोली कि आप उसे क्यों मार रहे हो बेटा? मैंने बोला कि यह अंकल मुझे यौन संबंध बनाने के लिए बोल रहे हैं इसलिए मैंने मारा है। यह बात सुनते ही आंटी ने मेरी मदद करने के लिए पुलिस को फोन कर ही रही थी कि तब तक वह व्यक्ति अपनी कार में बैठकर भाग गया। उस दिन से मैं और भी ज्यादा डर गई हूं। क्योंकि इस तरह की घटनाएं दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही हैं। जब तक हम किसी से मदद मांगते हैं तब तक गाड़ी में सवार होकर वहां से गायब हो जाते हैं। ऐसे में हम अपनी सुरक्षा सड़कों पर कैसे करें। हम कामकाजी लड़कियों का लोग गलत फायदा उठाते हैं, लेकिन हमारी मदद करने वाला कोई नहीं है।

पत्रकार के सहयोग से रवि पंहुचा सेंटर होम

बातूनी रिपोर्टर ईशा, रिपोर्टर ज्योति

कालकाजी मन्दिर में बालकनामा के पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी परेशानी बताई। 15 वर्षीय ईशा ने बताया कि दीदी यहां परएक लड़का है जिसका नाम रवि है। उसने एक दुकान में एक महीने तक काम किया और जब तंख्वाह देने का वक्त आया तो दुकान के मालिक ने मारकर भागा दिया।

अब वह बच्चा पूरे दिन मंदिर के आस पास इधर उधर घूमता रहता है। उसके पास खाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। इसलिए वहां पर जो लंगर बंटता है वही खाकर रह जाता है। यह बात सुनते ही बालकनामा पत्रकार उस बच्चे से जाकर मिले और उसके मालिक से भी जाकर मुलाकात की। मालिक ने बताया कि इस लड़के ने मेरे पास दस दिन तक ही काम किया है और पूरे दशहरे इधर उधर



घूमता ही रहता था। इसलिए मैंने नौकरी से निकाल दिया है। पत्रकार ने मालिक को समझाते हुए कहा कि एक तो आप ने छोटे बच्चे से काम करवाया और ऊपर से आप झूठ बोल रहे हो कि मेरे पास सिर्फ दस दिन तक ही काम किया है। मालिक ने पत्रकार को बोला जो करना है कर लो मैं पैसे नहीं दूंगा।

पत्रकार ने तुरंत चाल्डलाईन 1098 को कॉल कर दिया और कुछ ही देर में चाल्डलाईन 1098 के कार्यकर्ता आए। उनके आते ही बच्चे ने बोला कि मुझे लड़ाई झगड़ा नहीं करना है। मुझे आप शेल्टर होम ही भेज दीजिए मैं वहीं पर रहूंगा। पत्रकार ने रवि से पूछा कि आप अपने घर क्यों नहीं जाना चाहते तो हो? रवि ने बताया कि अगर मैं इस हालत में घर गया तो मेरे परिवार वाले मारकर भाग देंगे। इसलिए मैं शेल्टर होम ही जाना चाहता हूं। जब मेरी स्थिति ठीक हो जाएगी तो मैं घर चला जाउंगा। चाल्डलाईन कार्यकर्ता के सहयोग से रवि को शेल्टर होम भेजा दिया गया। अभी रवि शेल्टर होम में सुरक्षित रह रहा है।

चेन बनाकर अपनी चाची का इलाज करा रही है नंदनी

बातूनी रिपोर्टर नंदनी, रिपोर्टर पूनम

यह खबर 15 वर्षीय नंदनी की है। नंदनी के परिवार में पांच भाई बहन और चाची है। एक भाई विकलांग है। जब नंदनी छह महीने की थी, तब उसकी मम्मी की मृत्यु हो गई। जब से नंदनी को उसके चाचा चाची ने पाला है और कुछ साल के बाद जब नंदनी 12 साल की हुई तो उसके चाचा की भी मृत्यु हो गई। उस दिन के बाद से ही पूरे घर की जिम्मेदारी नंदनी के कंधों पर ही आ गई। अब चाची की भी तबियत हमेशा खराब रहता है। इसलिए नंदनी को अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए काम करना पड़ता है। अभी नंदनी अपने भाई बहन से अलग अपनी चाची के साथ रहती है। चाची के तीन बच्चे हैं



दो लड़की और एक लड़का। लड़के के पांव में फोड़ा है इसलिए वह काम करने नहीं जाता है। नंदनी को अपनी चाची की दवाई के लिए पैसे कमाकर लाने पड़ते हैं। इसलिए, नंदनी चेन बनाने का काम करती है, जिसमें उसे 150 चेन के गुच्छे मिलते हैं। उस चेन की मरम्मत करने के बाद नंदनी को एक चेन बनाने पर नौ रुपए मिलते हैं और पूरे दिन काम करने पर 27 रुपए। तब भी घर का खर्चा पूरा नहीं हो पाता। क्योंकि आज के जमाने में इतनी मंहगाई है कि सौ रुपए से भी ज्यादा खर्चा हो जाता है तो 27 रुपए से क्या होता है? जैसे तैसे वह अपने परिवार का गुजारा चला रही है। नंदनी पढ़ाई करना चाहती है पर घर का स्थिति खराब होने के कारण वह स्कूल नहीं जा पा रही है।

एक कदम शिक्षा कर ओर

बातूनी रिपोर्टर मोनी, रिपोर्टर सौरभ

12 वर्षीय मोनी नोएडा सेक्टर 52 में रहती है। पापा रिक्शा चलाने का काम करत हैं और मम्मी कोठियों में काम करती है। तब जाकर घर का गुजारा हो पाता है। मोनी के घर में दो छोटे बहन भाई भी हैं इसलिए मोनी घर पर रहकर अपने छोटे बहन भाई का ख्याल रखती है। मम्मी सुबह दस बजे ही काम पर चली जाती हैं और पापा पूरे दिन रिक्शा चलाते हैं तो मोनी अपने बहन भाई की पूरे दिन देखरेख करती है। लेकिन मोनी पढ़ाई करना चाहती है।

दूसरे बच्चों ने पत्रकार को बताया कि मोनी हमेशा अपने घर पर कुछ न कुछ पढ़ती रहती है। मोनी का सपना है कि मैं अध्यापक बनूं और जिन बच्चों के मम्मी पापा दूसरे के घरों में काम करने जाते हैं, उनके बच्चों को मैं पढ़ाउं। इसलिए मोनी पढ़ाई करना चाहती है।

जब से मोनी को पता चला है कि एक दीदी हम जैसे बच्चों को फ्री में पढ़ाने के लिए आती हैं तब से मोनी भी अपनी मम्मी पापा की इजाजत से रोज कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ाई करने जाती है। वह मैडम भी मोनी की पढ़ाई में रूची देखकर बहुत खुश हैं। अब मोनी के मम्मी पापा को भी लग रहा है कि मेरी बेटी पढ़ाई कर पाएगी।

राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग के सदस्य मिले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से

बातूनी रिपोर्टर नगमा, रिपोर्टर शम्भू

राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग की सदस्या रूपा कपूर जी स्टेशन पर रहने वाले बच्चों से मिलने आई कि किस कारण से बच्चे अपने घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं। साथ ही बच्चों से पूछा कि जहां पर आप रहते हो वहां पर क्या क्या परेशानियां आती हैं? 16 वर्षीय करन ने बताया कि हम बच्चों को माता पिता मारते हैं इसलिए अपने घर से भागकर चले आते है और स्टेशन पर आने के बाद में हम दूसरे बच्चों को देखकर नशा करना सीख जाते हैं और जब हम बच्चे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो पुलिस वाले भी मारते हैं।

15 साल की नगमा ने बताया कि दीदी हम में से कुछ बच्चे पुल के नीचे भी रहते हैं तो हम बच्चों को पुलिस वाले मारते हैं। 15 अगस्त या 26 जनवरी को वह हम बच्चों को मारकर भगाते हैं। वो रात को आते हैं और बोलते हैं यहां से अपना बोरी बिस्तार उठाओ और कहीं और ले जाओ। हम बच्चों जब उनसे बोलते हैं कि आप ऐसे क्यों करते हो? तो वह बोलते हैं कि ऊपर से आर्डर मिला है इसलिए भगा रहा हूं। इतनी परेशानियों का सामना करने के बाद भी हम बच्चे पढ़ाई करना चाहते हैं। इसलिए रोज सेंटर में पढ़ाई करने के लिए आते हैं। यह बात सुनते ही रूपा कपूर जी कहा कि आप सब बहुत होनहार हो। आप बच्चों की जितनी भी तारीफ की जाए उतनी कम है। उन्होंने यह भी बोला कि अगर आप बच्चों को अब कोई परेशान करता है तो आप मुझे फोन भी कर सकते हो।

इंद्र प्रस्थ पार्क बना अश्लीलता का अड्डा

बालकनामा ब्यूरो

सराय काले खां में इंद्र प्रस्थ पार्क है। वहां पर बच्चे खेलने एवं कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। इस पार्क में बड़े बड़े लोग लड़कियों के साथ अश्लील हरकते करते हैं। पूरे पार्क में वही लोग बैठे रहते हैं और छोटे छोटे पेड़ों के नीचे छिपकर अश्लील हरकते करते हैंक 14 वर्षीय रूपा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए पार्क में भी जाते हैं क्योंकि वहां पर खेलने के लिए झूले लगे हुए हैं। एक दिन कि बात है जब हम लड़कियां झूला झूल रही थी तो एक अंकल जिनकी उम्र लगभग 23 साल थी उस अंकल ने मुझसे बोला कि आप को एक विड़ियो दिखाऊं। हम सब ने बोला कि कौन सी विड़ियो है। उन्होंने बोला मेरे साथ उस पेड़ के नीचे आओगे तो मैं तीन सौ रुपए दूंगा फिर हम सब लड़कियां समझ गए कि यह अंकल हम लोगों के साथ गलत काम करना चाहते हैं। इसलिए हम लोग वहां से भाग गए। वहां पर लोग हमेशा लड़कियों से गलत व्यवहार किए जाते हैं। वह लोग सही लड़कियों को गलत नजर से देखते हैं। अगर इस पार्क में ऐसे ही हलात रहे तो हम जैसे कूड़ा कबाड़ा बीनने वाले बच्चों पर बहुत बुरा असर पड सकता है।

इस पार्क में पहले एक गार्ड भी रहता था। वह थोड़ा सही था तो उसका मर्डर हो गया। जब से कोई नया गार्ड नहीं आया है। पार्कों में इस तरह खुले आम अश्लील हरकते करना हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों का रहना दुंभर कर रहा है क्योंकि जो कपल पेड़ के नीचे बैठे होते हैं उन्हे वह सभी लोग देखते हैं जो आस पास घूमते रहते हैं और फिर वह लोग हम बच्चों को परेशान करते हैं और छोटे छोटे बच्चे भी बड़ों से सीखते फिर वह भी आपस में उनके जैसी हरकते करते हैं। ऐसे पार्कों में बहुत पाबंदी होनी चाहिए। हम बच्चे यही चाहते हैं कि दिल्ली सरकार इस आई पी पार्क के ऊपर जल्द से जल्द संज्ञान ले और कार्यवाही करे। ताकि हम बच्चे भी सुरक्षित इस पार्क में खेलकूद सकें उसके आस पास बने स्कूलों में भी सुरक्षित पढ़ने जा सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

पीपावे रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड के सहयोग से नशे में लिप्त बच्चों को मिला नया जीवन

बातूनी रिपोर्टर अजीत, रिपोर्टर शम्भू

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन जीआरपी थाने के पास एक नवंबर, 2015 को एक जगह मिली, जहां पर स्टेशन पर रहने वाले बच्चे जो पूरे दिन कबाड़ा चुनकर अपनी गुजर बसर करते थे और पूरे दिन नशे में लिप्त रहते थे उनके जीवन में कैसे परिवर्तन लाया जा सके इस उदेश्य से काम शुरू किया गया। उसके बाद सनत जी ने पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लगातार 15 दिन आउटरिच करने के बाद कुछ बच्चे पढ़ने के लिए आने लगे। ये बच्चे नशा करने वाले बच्चे थे।

पत्रकार ने सनत जी से पूछा कि जब बच्चे नशे में थे तो आप उन्हें कैसे संभालते थे? सनत जी ने बताया कि मैं बच्चों के मन के ऊपर काम करता था। वह जो बोलते थे कि मेरा मन खेलने



का करता है तो मैं उन्हें बोलता था कि ठीक है आप खेलो। जब खेलते खेलते बच्चे थक जाते थे तो वह खुद बोलते थे कि सनत भइया अब मुझे पढ़ाई करने का मन है तो मैं उनसे पढ़ाई करवाता था। क्योंकि अगर आप स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को एक बार में ही बोलगे कि आप लोग सिर्फ पढ़ाई करो तो भाग जाएंगे। इसलिए हम उनके हिसाब से चलते हैं और इसके जरिए बच्चे पढ़ाई और खेल में शामिल होते थे तो नशा भी नहीं करते थे। सनत जी ने यह बताया जब मैं पहली बार इन बच्चों से मिला था तो इन बच्चों का बहुत बुरा हाल था। लेकिन जब से मेरे पास बच्चे पढ़ाई करने के लिए आने लगे हैं तब से 17 बच्चों ने पूरी तरह से नशा करना छोड़ दिया है और 19 बच्चों ने नशा करना बहुत कम कर दिया है।

8 बच्चों को जो 18 वर्ष के हो गए हैं उनको स्टेशन की दुनिया से दूर करने के लिए जीएमआर सेंटर से हाउस कीपिंग का कोर्स कराया गया है। ताकि वह अपने जीवन में आगे बढ़ सकें। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोगों में क्या बदलाव आया है यहां से जुड़कर? 15 साल के अजीत ने बताया कि पीपावे रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड और सनत भइया की मदद से आज हम बच्चों के जीवन में बहुत बदलाव आया है। हम सभी बच्चे पढ़ाई लिखाई करने लगे हैं। हम बच्चों ने कभी सोचा ही नहीं था कि नशे से दूर हो पाएंगे। हमारे जीवन में बदलाव आएगा, हम बच्चे बहुत खुश हैं। पीपावे के निर्देशक श्री अमिताभ जी हम बच्चों से मिलने आते रहते हैं। हम बच्चों की परेशानियों को सुनते हैं। अभी हाल ही में वह क्रिकेट खेलने का पूरा सामान हम बच्चों के लिए लेकर आए। हम बच्चों ने उनसे बोला कि हमें क्रिकेट खेलना बहुत पसंद है और उनकी मदद से अब हम बच्चे हर महीने अलग अलग जगह घूमने के लिए भी जाते हैं जैसे चिड़िया घर, लालकिला। हम बच्चों को बहुत नई नई जगह घूमकर बहुत अच्छा लग रहा है।

बच्चे चाहते हैं ट्रेन की पटरी के पास दीवार हो जाए

बातूनी रिपोर्टर निशा, रिपोर्टर शम्भू और चेतन

कमला नेहरू कैम्प से लेकर जवाहर कैम्प तक लगभग 3500 तक झुग्गियां हैं और ट्रेन की पटरियां इन झुग्गियों से होकर निकली हैं। 15 वर्षीय सपना ने बताया कि भइया यहां पर आए दिन एक्सीडेंट की घटनाएं घटती रहती हैं, क्योंकि बहुत सारे बच्चों के माता पिता अपने बच्चों को छोड़कर कोठी में काम करने जाते हैं। वह अपने बच्चों को छोड़कर काम करने नहीं जाएंगे तो घर का खर्चा कैसे चलेगा। इसलिए बच्चे पूरे दिन अकेले इधर से उधर खेलते रहते हैं। ज्यादातर बच्चे पटरियों के किनारे ही खेलते रहते हैं, क्योंकि कुछ बच्चों के बड़े भाई बहन पटरियों के किनारे बुरादा छांटने का काम करते हैं। अपने बड़े भाई बहन को देखते हुए छोटे बच्चे भी बुरादे को छांटने का काम करने लगते हैं, जिसकी वजह से बच्चों के नांक मुंह में बुरादे की धूल चली जाती है और छाती में दर्द, पेट में दर्द होता रहता है। बुरादा छांटते छांटते बच्चे पटरियों पर खेलने के लिए चले जाते हैं।

बच्चों ने बताया कि कभी कभी ट्रेन की सीटी तक नहीं बजती है। 16 साल की शिवा ने बताया कि दो महीने पहले की बात है कि मेरे पापा शौच करने के लिए रात को बाहर निकले थे। और ट्रेन की दुर्घटना के शिकार हो गए, जिसकी वजह से उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। दो तीन दिन तक अस्पताल में भर्ती रहे और चैथे दिन मेरे पापा की मृत्यु हो गई। ऐसी घटना मेरे साथ ही नहीं, हर बच्चे के साथ होती रहती है और मेरी तरह उन बच्चों के सिर से भी माता पिता का साया हट गया है। हम बच्चे यही चाहते हैं कि जब ट्रेन यहां पर आती है तो काफी दूर से ही सीटी बजने लगे ताकि हम सावधान हो जाएं और सुरक्षित रहें। हम बच्चे कुछ बोल भी नहीं सकते क्योंकि हम बच्चे सरकारी जमीन पर रहते हैं और यह सारी जमीन रेलवे की है। हमें डर लगा रहता है कि कहीं हम बच्चों को यहां से भगा न दिया जाए, इसलिए कुछ नहीं बोलते हैं।





कैसे प्यार मोहब्बत के चंगुल से बचाया नाबालिग नूरी को

बातूनी रिपोर्टर सपना, रिपोर्टर शम्भू और चेतन

वेस्ट दिल्ली नेहरू कैंप में छोटी छोटी लड़कियों की जनसंख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। जो लड़कियां बड़ी हो गई हैं, वह प्यार मोहब्बत के चक्कर में रहती है, उनको देखकर छोटी लड़कियों पर भी इसका गलत असर पड़ रहा है। 16 वर्षीय सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इन लड़कियों के माता पिता कोठियों में काम करने जाते हैं। यह छोटी लड़कियां जब पार्क में खेलने जाती हैं तो बड़ी लड़कियों को जैसा करते देखती हैं, वह भी ऐसे ही करती हैं। यह छोटी लड़कियां किसी भी लड़के से प्यार करने लगती हैं। अगर किसी लड़के ने इन लड़कियों को प्यार करने से मना कर दिया तो यह लड़कियां अपना हाथ काट लेती हैं। इनके मम्मी पापा भी इन्हें बहुत मारते हैं फिर भी इन लड़कियों पर कोई असर नहीं हो रहा था।

तभी नेहरू कैम्प में रहने वाली लड़कियों ने यह निर्णय लिया कि जो लड़कियां प्यार मोहब्बत के चक्कर में फंसी हुई हैं। उनको हम सुधारने की कोशिश करेंगे। अभी हम लड़कियों ने एक लड़की का जीवन सुधारा है जिसका परिवर्तित नाम नूरी है। वह भी पहले लड़कों से प्यार करती थी। पर हम लड़कियों ने समझाया कि अभी आपकी उम्र पढाई लिखाई करने की है प्यार मोहब्बत करने की नहीं। प्यार मोहब्बत के चलते आपका जीवन नष्ट हो जाएगा। तब जाकर नूरी हमारी बात मानी। अब नूरी सिर्फ पढ़ाई लिखाई करती है। साथ में अपने भाई बहन का भी ख्याल रखती है। अभी तो सिर्फ एक लड़की का जीवन बदला है। हम चाहते हैं कि जिस जगह पर इस प्रकार का माहौल है वहां पर लोग इनको समझाएं कि अभी उनकी उम्र पढ़ाई लिखाई करने की है। अभी इन बातों पर ध्यान नहीं देना है। हम लड़कियों को इसी तरह समझाते हैं जैसे नूरी को समझाया है। हमारी कोशिश है कि हम छोटी लड़कियों पर ध्यान दे और इन्हें इन सभी बातों से दूर रख पाएं।

चचेरे भाई की हवस का शिकार बनी आरती

बालकनामा ब्यूरो

आज कल लड़कियां घर में भी सुरक्षित नहीं हैं। आरती (परिवर्तित नाम) अपनी मौसी के साथ रहती है और आरती की मां की दिमागी हालत ठीक नहीं है और पापा भी हमेशा नशे में लिप्त रहते हैं। उसके माता पिता को परवाह ही नहीं है कि मेरी बेटी कैसी है, कहां है। मौसी के घर में आरती के साथ उसकी एक छोटी बहन और मौसी का एक बड़ा लड़का भी रहता है। जो आरती के साथ रोज यौन शौषण करता था। जब भी आरती इस लड़के को यौन शौषण करने से मना करती थी, तब यह लड़का आरती को बहुत बुरी तरह से मारता था। इसलिए आरती ने अपनी परेशानी नानी से बताई, कि जब मैं अकेले घर में सो जाती हूं तो मौसी का लड़का रोज रात को मेरे पास आकर मेरे साथ यौन शौषण करता है। यह सुनते ही उसकी नानी ने आरती को सलाह दी कि तुम अपने साथ एक डंडा लेकर सोना और जैसे ही वह गलत करने की कोशिश करे तो उसे डंडे से मारना। आरती ने ऐसा ही किया। जब वह रात को सोने के लिए आया तो आरती ने उसके सिर पर डंडा मारा, जिससे उसके सिर में काफी चोट आ गई। अगली सुबह उस लड़के ने अपनी मम्मी से बोला कि मम्मी आरती को मैंने कुछ भी नहीं किया फिर भी उसने मेरे सिर में डंडा दे मारा। यह बात सुनते ही आरती की मौसी ने उसे घर से निकाल दिया।



घर से निकलने के बाद वह पूरे दिन इधर से उपर भटकती रही और जब रात होने लगी तो पड़ोस में एक लड़का रहता था उसके पास आरती गई और बोली कि मुझे रात को सोने के लिए जगह चाहिए तो उसने उसे सोने के लिए जगह तो दे दी, लेकिन बदले में उसने भी आरती के साथ यौन शौषण किया। फिर जब आरती अपनी मौसी के घर मे छांककर देखा तो मौसी का लड़का आरती की बहन के साथ अश्लील हरकत कर रहा था। यह देख आरती बहुत घबरा गई। उसने सोचा कि मेरे जाने के बाद उस लड़के ने मेरी बहन के साथ अश्लील हरकतें करनी शुरू कर दी। लेकिन जब आरती बालकनामा के पत्रकार के सम्पर्क में आई तो आरती ने पत्रकार को इस पूरी घटना के बारे में विस्तार से बताया। यह बात सुनते ही पत्रकार ने चाल्डलाइन 1098 को कॉल कर दिया चाल्डलाइन 1098 के कार्यकर्ता ने जांच की और आरती को बाल कल्याण समिति में पेश किया गया। फिर मेडिकल के लिए भेजा गया। पर डॉक्टर ने मेडिकल करने से मना कर दिया। क्योंकि आरती के माता पिता के साइन चाहिए थे, लेकिन मम्मी का दिमागी हलात ठीक नहीं है इसलिए वह साइन नहीं कर पाई और पापा तो हमेशा नशे में ही रहते हैं। उसके बाद चाल्डलाइन कार्यकर्ता ने आरती को बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया तो समिति द्वारा आरती को शेल्टर होम भेज दिया गया।

यह घटित घटना नोएडा की है। पत्रकार को वहां की रहने वालीलड़कियों ने बताया कि हम जैसी लड़कियों के साथ ऐसी घटनाएं रोज होती रहती हैं। पहले तो हम लड़कियां बाहर सुरक्षित नही थी पर अब तो हम घर के अंदर भी सुरक्षित नहीं हैं। घर में जिसे हम भाई समझते है वही गलत करते हैं।

रामअवतार के हौसले को सलाम

बातूनी रिपोर्टर राम अवतार रिपोर्टर शम्भू

यह कहानी राम अवतार की है। राम अवतार जब आठ साल का था तब अपने माता पिता से लड़ाई करके पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भाग कर आ गया था। स्टेशन पर आने के बाद वह कुछ दिन तक भूखे रहे और अपना पेट पालने के लिए ट्रेन में बोतल बीनने का काम करने लगे। जिससे राम अवतार को कुछ पैसे मिल जाते थे तब जाकर खाना खा पाता था। स्टेशन पर रहने के कारण बड़े बच्चों ने राम अवतार को नशा करना सिखा दिया जैसे गांजा, चरस, शिगरेट आदि। नशा करने के कारण उसका हाल बहुत बुरा हो गया। रामअवतार की ऐसी हालत देखकर उसे नशा मुक्ति सेन्टर ले जाया गया पर वह उस सेंटर से भागकर स्टेशन पर आ जाता था। क्योंकि राम अवतार एक बन्द घर में नहीं रहना चाहता था। वह तो खुले में रहना चाहता था। नशा करना चाहता था। पूरे दिन नशे में लिप्त रहता था। खाना मिले या न बस नशा मिलना चाहिए।

लेकिन जब पीपावे रेलवे कॉरपोरेशन लिमिटेड के सहयोग से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बच्चों के लिए कॉन्टेक्ट प्वाइंट चलाया गया और सनत जी आउटरीच के दौरान राम अवतार से मिले और अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने के लिए बुलाने लगे। फिर भी राम अवतार नहीं आते थे।



पर कुछ दिनों बाद सनत जी की मेहनत रंग लाई और राम अवतार कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढाई करने के लिए आने लगे। फिर धीरे धीरे सनत जी ने राम अवतार को समझया कि नशा करने बच्चे अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। आप नशा करना छोड़ दो। फिर आप आगे बढ़ सकते हो क्योंकि नशे कि लत में आप कुछ नहीं कर सकते हो।

कुछ दिनों के बाद राम अवतार ने नशा करना धीरे धीरे कम कर दिया। अभी बिल्कुल नशा नहीं करता हैं। अब राम अवतार 18 साल का हो गया है। उसे जीएमआर से डेढ महीने का हाउस कीपिंग का कोर्स कराया गया है। अब राम अवतार को हाउस कीपिंग के कोर्स का प्रमाण पत्र भी मिल गया है और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर ही साफ सफाई करने की नौकरी भी उसे मिल गई है। अब वह प्रतिमाह 9000 रुपए कमा रहा है।

राम अवतार अब अपने जीवन में बहुत खुश है। उसने पत्रकार को बताया कि भइया मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं भी कुछ कर सकता हूं, लेकिन आज मैं बहुत खुश हूं। मेरी इस कामयाबी में सबसे बड़ा हांथ सनत भइया का है। अगर वह मुझे नहीं समझाते तो आज भी मैं स्टेशन पर नशा करता रहता। मैं यही चाहता हूं कि जिस तरह मैं अपने जीवन में आगे बढ़ा हूं इसी तरह सभी बच्चे आगे बढ़े।



डंडे के बल पर बच्चों से बात करते हैं कुछ पुलिस अधिकारी

बालकनामा ब्यूरो

रेलवे स्टेशन पर बच्चे अपने गुजारे के लिए काम करते हैं, जिससे उन बच्चों को दो वक्त की रोटी मिल सके। कुछ बच्चे रेलगाड़ी में काम करने जाते है लेकिन काम करने वाले बच्चों ने बताया कि जब हम बच्चे रेलगाड़ी में बोतल उठाने के लिए जाते हैं या झाड़ू लगाने का काम करने जाते हैं तो एक स्टार वाले पुलिस वाले भइया हम बच्चों को बुरी तरीके से मारते हैं। वह हम बच्चों पर झूठा आरोप लगाते हैं कि तुम लोग ही पब्लिक का सामान चोरी करते हो। लेकिन हम बच्चे चोरी नही करते हैं, सिर्फ अपने काम से ही मतलब रखते हैं। जैसे कुछ बोतल मिले उसे उठाकर रेलगाड़ी में से बाहर निकल लाते हैं।

ये एक स्टार वाले पुलिस भइया बोलते हैं कि अगर तुम लोग मुझे कुछ पैसे दे दो तो कोई हांथ तक नहीं लगाएगा। पर हम बच्चे ऐसा नहीं करते। अगर हम अपने कमाए हुए पैसे पुलिस को देंगे तो हम अपना गुजारा कहां से करेंगे। पैसे नहीं देने की वजह से हम बच्चों को बहुत बुरी तरह से मारते हैं। अभी हम बच्चे मार खाकर रह लेते हैं पर ठंड के मौसम में हम बच्चों हर रोज पुलिस के डंडे से मार खाना बहुत भारी पड़ रहा है। क्योंकि गर्मी के मौसम में डंडों से इतना दर्द नहीं होता है, जितना ठंड में होता है। ठंड के मौसम में थोड़ी चोट से भी बहुत तेज दर्द होता है। हम चाहते हैं कि पुलिस हमें डंडों से न मारे। हमें भी दर्द होता है।

अपने नन्हें हाथों से 56 बच्चे बनाते हैं पत्थरों का ताजमहल

बातूनी रिपोर्टर प्रियंका, रिपोर्टर पूनम

आगरा शहर के इलाके में 56 बच्चें ऐसे हैं जो अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए पत्थर का ताजमहल बनाने का काम करते हैं। जब इन बच्चों से पत्रकार ने बात की तो 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारा एक मालिक है और वह हम बच्चों से ठेके पर काम कराता है। हम बच्चों को वह एक दिन के 50 रुपए देता है। बच्चों ने यह भी बताया कि जब वे पत्थर से डिजाइन बनाते हैं तो बहुत धूल मिट्टी निकलती है और नांक में जो धूल जाती है, उससे छाती में बहुत दर्द होता है। सांस लेने में बहुत परेशानी होती है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोग पत्थर का ताजमहल बनाने के बाद इसका क्या करते हो? 16 वर्षीय बालक ने बताया कि डिजाइन बनाने के बाद शीशे के डब्बे में पैक करते हैं फिर बाजार में सेल करने के लिए जाते हैं और लोग एक पीस कें 15 रुपए देते हैं और कभी कभी हमारा माल नहीं बिकता है तो हम बच्चों को 10 रुपए का एक पीस बेचना पड़ता है। ताजमहल बेचकर सारे पैसे मालिक को देना पड़ता है।

अगर मालिक अच्छे मूड में होता है तो ज्यादा पैसे दे देता है, नहीं तो 50 रूपया भी मिलना मुश्किल होता है। हम बच्चों को इसके अलावा और कुछ काम करना नहीं आता। बड़े ही दुख की बात है कि मेरे माता पिता भी शुरू से यही काम करते आ रहे हैं। इसलिए हम बच्चों से यही काम कराया जाता है और हम बच्चे यह काम घर में ही सीख जाते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को स्कूल जाने का मन नहीं करता? 14 साल के बालक ने बताया कि जब मैं बाजार में सामान बेच रहा होता हूं, तब कोई बच्चा स्कूल की ड्रेस में मेरे पास आता है तो मेरा भी दिल अंदर से बोलता है कि काश मैं भी स्कूल जाता तो अच्छे अच्छे कपड़े पहनने को मिलते। दूसरे बच्चों की तरह मुझे भी पढ़ना लिखना आता है, लेकिन हम बच्चों के नसीब में पढ़ाई लिखाई नहीं है, क्योंकि हमारे पिता शराब पीते हैं। उनको खाना मिले या नहीं मिले शराब तो जरूर मिलनी चाहिए, नहीं तो घर में मारपीट शुरू कर देते हैं।





बच्चों का खेलने का मैदान बना कूड़ाघर



बातूनी रिपोर्टर प्रेमचंद, रपोर्टर शम्भू

सुभाष कैम्प में रहने वाले बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि हमारी बस्ती में दिन पर दिन गंदगी बढ़ती जा रही है। हमारी बस्ती में एक बहुत बड़ा मैदान है, जिसमें बारिश होने पर ढेर सारा पानी भर जाता था। लेकिन अभी यह स्थिति है कि उस मैदान को लोगों ने कूड़ाघर समझ लिया है। क्योंकि वहां रहने वाले लोग अब उस मैदान को इतनी बुरी तरह भर देते हैं जैसे मानो पूरी गंदगी का ठिकाना उस मैदान में ही है। उस मैदान के आसपास छोटे छोटे बच्चे खेलते रहते हैं। सबसे ज्यादा परेशानी यह है कि उस मैदान में पहले सिर्फ बारिस का पानी जमा होता था, लेकिन लोगों द्वारा उस मैदान का गलत उपयोग किया जा रहा है। उस मैदान में बारिश के बिना भी बहुत पानी भरा रहता है।

16 वर्षीय प्रेमचंद ने बताया कि लोग अपने घरों का गंदा पानी जैसे नहाने, कपड़े धोने और बर्तन धोने का गंदा पानी उसी मैदान में फेंकने लगे हैं। जब से लोग ऐसा करने लगे हैं तब से यहां पर गंदगी फैलने लगी है। 14 वर्षीय खुशबू ने बताया कि जो लोग उस पार रहते हैं वह लोग इसी मैदान में अपने बच्चों को शौच कराते हैं और घर में जो मुर्गा मछली काटते हैं वह भी इसी मैदान में डालते हैं। तथा जिन लोगों के पालतू सुअर मर जाते हैं उसको भी वह इस मैदान में फेंक देते हैं। इसलिए हम बच्चे अब अपने घर के पास नहीं खेल पाते हैं, क्योंकि इतनी बुरी बदबू आती है कि उल्टी आने लगती है। अभी कुछ दिनों पहले हम बच्चों के माता पिता के साथ लड़ाई भी हुई थी। वह हमारे माता पिता को मारने के लिए तैयार हो गए। वह लोग बोल रहे थे कि हम लोग इस जगह पर रहते हैं तो कूडा.कचरा कहां पर डालने जाएंगे। हम बच्चों को यहां पर रहने में बहुत परेशानी होती है।

हम सभी बच्चे चाहते हैं कि इस पर जल्द से जल्द कार्यवाही की जाए। और उस मैदान की गंदगी साफ की जाए और वहां एक नोटिस लगा दिया जाए, जिससे मैदान में गंदगी करना लोग बंद कर दें। तभी इस गंदगी से छुटकारा मिल सकेगा और हम बच्चे फिर से उस मैदान में खेलकूद सकेंगे।



माता पिता ने लड़कियों के स्कूल जाने पर लगाया प्रतिबंध

बालकनामा ब्यूरो

लड़कियों के माता पिता उनको स्कूल जाने से मना कर रहे हैं। जब पत्रकार को इस बात की भनक लगी तो पत्रकार लड़कियों से बात करने के लिए उनके घर पर गए। वहां पर पता चला कि लड़कियों को लड़के परेशान करते हैं उन से अश्लील ढंग से बात करते हैं। 16 वर्षीय परिवर्तित नाम बालिका ने बताया कि मेरे माता पिता मोची का कार्य करते हैं पर मुझे पढ़ाना चाहते हैं। ताकि मैं अपने माता पिता की तरह मोची का काम नहीं करूं। लेकिन हम लड़कियों का बहुत बुरा हाल है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि जब मैं घर से स्कूल के लिए निकलती हूं तो रास्ते में लड़के बहुत अभद्र बाते बोलते हैं। एक दिन पांच लड़कों ने हम तीन लड़कियों को घेर लिया और जो हम स्कूल का ड्रेस पहनते हैं वह हल्की छोटी होती है तो वह लड़के बोल रहे थे कि अगर ये ड्रेस थोड़ी छोटी और होती तो बहुत मजा आता। ऐसे ही रोज बोलते हैं। इसलिए हमारे माता पिता स्कूल नहीं जाने देते हैं। और ये लड़के बहुत सारी लड़कियों को परेशान करते हैं। पहले तो लड़कियों को लालच देकर दोस्ती करते हैं। कुछ दिनों तक उनके साथ अश्लील हरकत करते हैं। जब वह गर्भवती हो जाती हैं तो लड़के शादी करने से माना कर देते हैं और वह लड़कियों से बोलते हैं कि बच्चे को गिरा दो।

पत्रकार ने इसकी पुष्टि की तो पता चला कि एक महीने में तीन बच्चों की लासे मिली। इन लड़कियों की उम्र 16 से 17 साल है। पत्रकार ऐसे ही एक लड़की से मिली जो इस घटना का शिकार हो चुकी है। उसने बताया कि किस प्रकार उसके साथ लड़के ने व्यवहार किया है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को भी मिले बहादुरी पुरस्कार

पृष्ठ 1 का शेष

गया और बड़ी बहादुरी से उनका सामना किया और उस बच्चे की जान बचाई।

तुलसी और पूजा के प्रयास से दो छोटे बच्चों को आश्रय गृह में भेजा गया। इनके माता पिता का कार एक्सीडेंट में निधन हो गया था और भीलवाड़ा से भटकते हुए मथुरा रेलवे स्टेशन पर आ गए थे। जब तुलसी और पूजा को इसकी सूचना मिली तो इन्होंने बाल कल्याण समिति से संपर्क किया और उनकी मदद से दोनों बच्चों को आश्रय गृह भेज दिया गया। इसी प्रकार ये बच्चे न जाने कितनी बार अपनी जान जोखिम में डालकर कितने बच्चों की मदद करते हैं, लेकिन इनके कार्यों को कभी सराहा नहीं जाता है।

बढ़ते कदम संगठन सरकार से यह अपील करता है कि गणतंत्र दिवस के मौके पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बहादुरी को भी सम्मानित किया जाए।

बाल विवाह की शिकार होती लड़कियां

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा पत्रकार ने साउथ दिल्ली का दौरा किया तो पता चला कि साउथ दिल्ली में डोम जाति के लोग अधिक संख्या में रहते हैं। यह लोग अपने बच्चों की शादी बहुत छोटी उम्र में ही कर देते हैं। पत्रकार ने एक बालिका से पूछा तो उसने बताया कि हमारी डोम जाति में बच्चों की शादी बहुत छोटी उम्र में ही कर देते हैं जैसे ही बच्चा 15 से 16 साल तक होता है तभी उनकी शादी कर देते हैं। यह बात होश उड़ा देने वाली है कि बच्चों की इतनी कम उम्र में शादी कर दी जाती है। पत्रकार ने डोम जाति के एक ऐसी लड़की से मुलाकात की जिसकी शादी हो चुकी है। उस लड़की से पत्रकार ने बात करने की कोशिश की तो वह काफी डर गई। उसने पत्रकार से कहा कि आप मेरे से यह सब क्यों पूछ रहे हो? पत्रकार ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं एक अखबार का पत्रकार हूं। जो बच्चों का ही अखबार है यह अखबार बच्चे खुद चलाते हैं। यह सुनकर वह लड़की काफी खुश हुई और पत्रकार को अपनी जाति के बारे मे पूरी तरह से बताया कि हमारी जाति में यह सदियों से चला आ रहा है जिसके भी घर में लड़कियां जन्म लेती हैं तो उसके माता पिता को लगता है कि मेरी बेटी की अगर मैंने शादी नहीं किया तो वह गलत कदम उठा लेगी। इसलिए इनके माता पिता छोटी उम्र में शादी कर देते हैं। 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि मेरे घर पर एक रिश्ता आया था, जो मेरे बारे में बात कर रहे थे कि आपकी बेटी को घर का कामकाज और खाना बनाना आता है तो मेरे माता पिता ने उनसे झूठ बोला कि हमारी बेटी को सब कुछ करना आता है। वह पूरे घर का काम संभालती है लेकिन मुझे कुछ नहीं आता है।



जब मैंने अपनी मम्मी से पूछा कि आप लोगों ने उनसे झूठ क्यों बोला तो मेरी मम्मी ने बताया कि अगर मैं झूठ नहीं बोलूंगी तो तेरी शादी कैसे होगी। 5 महीने बाद जब मेरी शादी हुई तो मेरी सासू मां ने मुझसे रोटी बनाने के लिए बोला तो मैं घबरा गई। मैंने सोचा कि अब मैं रोटी कैसे बनाउंगी। जब मैंने खाना नहीं बनाया तो मेरी सासू मां ने मुझे बहुत तेज हाथ पर मारा और मेरे पति का भी व्यवहार मेरे प्रति ठीक नहीं रहता है क्योंकि मुझे अभी ठीक से घर का काम करना नहीं आता है। बालिका ने कहा कि हमारे यहां इसी प्रकार झूठ बोलकर शादी कर दी जाती है बहुत ऐसी लड़कियां हैं, जिनकी उम्र 14 से 15 साल है। इतनी कम उम्र में ही उनकी शादी कर दी गई और वह अब अपने ससुराल में सिर्फ मार खाती रहती हैं, क्योंकि उन्हें घर का काम तो आता नहीं है। और कम उम्र में ही वह बच्चों की मां भी बन जाती हैं। इतनी बडी जिम्मेदारी एक छोटी बच्ची आखिर कैसे निभाए। हम लड़कियां चाहती हैं कि सदियों से चले आ रहे रीति रिवाज बंद कर देने चाहिए, क्योंकि इन रीति रिवाजों के चक्कर में हम बच्चों की जिंदगी खराब हो रही है।

नशा छोड़कर बढ़ाए कदम पढ़ाई की ओर

बातूनी रिपोर्टर, रोहित रिपोर्टर शम्भू

15 वर्षीय रोहित जो दो साल पहले अपने गांव मुकनपुर में रहता था। रोहित के पापा गांव में कुछ काम नहीं करते थे। वह हमेशा घर पर जुआं ही खेलते रहते थे और मम्मी घर का खर्चा चलाने के लिए बेलदारी का काम करती थी। रोहित की मम्मी जब भी काम पर से आती थी तो काम का गुस्सा अपने बेटे रोहित पर ही निकालती थी। एक दिन रोहित की मम्मी के मालिक ने एक महने की पगार नहीं दी तो रोहित की मम्मी ने गुस्से में घर पर आकर रोहित को बहुत मारा।

उसके बाद रोहित घर से भागकर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आ गया। यहां आने के बाद रोहित पूरे दिन रेलवे स्टेशन पर भूखा प्यासा पड़ा रहा। जब उससे भूखा प्यासा नहीं रहा गया तो वह गाड़ियों में जाकर भीख मांगने लगा पर उसे किसी से पैसे नहीं मिले। तब उसने देखा कि दूसरे बच्चे झाडू लगाकर भीख मांग रहे थे तो रोहित ने भी इसी तरह भीख मांगने का काम शुरू किया और अपना पेट पालने लगा। इसी दौरान दूसरे बच्चों ने रोहित को नशा करना भी सिखा दिया। रोहित इतना नशा करने लगा कि



उसको कोई होश नहीं रहता था। रोहित जब चेतना कार्यकर्ता को मिला तो उन्होंने रोहित से बात की। रोहित को समझाया कि आप इतना नशा मत करो और मैं आप ही जैसे बच्चों को जीआरपी थाने के पास पढ़ाता हूं। आप भी वहां पर रोज पढ़ाई करने आ सकते हो। कुछ दिनों बाद रोहित चेतना कार्यकर्ता के पास पढ़ाई करने जाने लगा। अब रोहित ने नशा करना बहुत कम कर दिया है और रोज पढ़ाई करने के लिए आता है। रोज रेलगाड़ी में झाडू लगाने का काम करता है। कार्यकर्ता के एक कदम ने रोहित को शिक्षा से जोड़ा है। आप भी इसी तरह बच्चों की मदद करके उन्हें शिक्षा से जोड़ सकते हैं।

कंडे बेचकर अपने भाई बहनों को पढ़ा रही है मल्ला

बातूनी रिपोर्टर मल्ला, रिपोर्टर पूनम

15 वर्षीय मल्ला अपने माता पिता के साथ आगरा में रहती है। मल्ला के पिता पूरे दिन शराब के नशे में डूबे रहत हैं। माता हमेशा बीमार रहती हैं, क्योंकि वह इतनी बुजुर्ग हो गई हैं कि अपने बच्चों का ख्याल भी नहीं रख पाती हैं। पिता थोड़ा ठीक हैं पर वह नशे में ही रहते हैं। उनसे बोलते हैं कि आप काम करने के लिए चले जाओ लेकिन वह नहीं जाते हैं। घर में गाली गलौज करते रहते हैं। इसलिए मल्ला अपनी पढ़ाई लिखाई छोड़कर घर में ही रहती है और घर का खर्चा चलाने के लिए गोबर के कन्डे बनाने का काम करती है। उसके बनाए हुए कन्डे को बेचकर जो पैसे आते हैं, वह अपने घर के खाना खर्च में लगाती है। लेकिन दुख की बात यह है कि जहां पर मल्ला कन्डे बनाती है, वहां कुछ लोग ऐसे हैं जो कन्डे को चोरी कर लेते हैं इसलिए वह हमेशा रोती रहती है।

जब पत्रकार ने मल्ला से बातचीत की तो मल्ला ने बताया कि मेरे कन्डे यहां पर रहने वाले लोग चोरी कर लेते हैं और मैंने पुलिस थाने में भी शिकायत दर्ज की पर कुछ नहीं हुआ। वह मुझे बोले कि तुम यहां से जाओ मैं एक कन्डे की रिपोर्ट दर्ज नहीं कर सकता हूं। मल्ला ने पुलिस वाले भइया के सामने रोते हुए कहा कि मैं इसी कन्डे को बेचकर अपने बहन भाई को स्कूल भेजती हूं। अगर आप मेरी मदद नही करोगे तो कौन करेगा। पर मल्ला की किसी ने मदद नहीं की। उसके बाद मल्ला ने अपनी सारी परेशानी पत्रकार को बताई कि रोज रात को मेरे कन्डे चोरी हो जाते हैं। मैंने पुलिस थाने में शिकायत दर्ज की, पर किसी ने मदद नहीं की। आप ही मेरी मदद कीजिए।

फिर पत्रकार ने मल्ला को चाल्डलाइन के बारे में बताया और कहा कि आपको जो भी परेशानी हो वो आप खुलकर 1098 चाइल्डलाइन को बोल सकते हो और साथ ही बाल अधिकार के बारे में बताया कि हम बच्चों का अधिकार है कि जब हमें कोई परेशान करता है तो 1098 पर कॉल कर सकते हैं।

भीख मांगने वाले 25 बच्चों से बड़े लड़के करते हैं दादागिरी और छीन लेते हैं उनके पैसे

बातूनी रिपोर्टर प्रियंका, रिपोर्टर पूनम

आगरा कैन्ट में अधिकतर बच्चे भीख मांगने का काम करते हैं। जब पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि मालवाड़ी गांव में 25 बच्चे ऐसे हैं जो भीख ही मांगते हैं। उसके अलावा कोई और काम नहीं करते हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि जब बच्चे पूरे दिन मेहनत करके पैसे मांगते हैं और वहां पर कुछ बड़े लड़के हैं जो अपनी दादागिरी करते हैं और छोटे बच्चों को परेशान करते हैं। अगर पैसे नहीं देते हैं तो मारपीट करके सारे पैसे छीन लेते हैं। यह घटना काफी महीनों से चलती आ रही है। 14 वर्षीय बालिका ने बताया कि उन लड़कों का यह रोज का काम है। वह लड़के कुछ काम धंधा तो करते नहीं है बस शाम के समय जब हम बच्चे घर जा रहे होते हैं तो आते हैं पहले तो प्यार से बोलते हैं कि बाबू कुछ पैसे दे दो खाने के लिए। जब हम बच्चे मना करते हैं तो वह हमारे साथ मारपीट करने लगते हैं और सारे के सारे पैसे भी छीन लेते हैं। पर कोई कुछ नहीं कहता है। एक दिन हम बच्चों ने पुलिस अंकल से शिकायत की, पर उन्होंने भी कुछ नहीं बोला।

जब हम बच्चे घर जाते हैं रोते हुए तो माता पिता भी हम से सही से बात तक नहीं करते हैं। वह बोलते हैं कि तुम लोग सही से मांगते ही नहीं हो और झूठ बोलते हो कि किसी ने पैसे छीन लिए। कभी कभी तो खाना भी नहीं देते हैं। हम बच्चों को रात को भूखे ही सोना पड़ता है। इस परेशानी से हम बच्चे छुटकारा पाना चाहते हैं कि कोई भईया दीदी हम बच्चों की मदद करे, ताकि हम बच्चों को भीख मांगने न जाना पड़े।



''मेरा एक छोटा भाई है जो मेरे माता पिता की मृत्यु के बाद से नशा करने लगा। उसको हम लोगों ने बहुत समझाया पर वह हमारी बात नहीं सुनता। इसलिए मैं चाहती हूं कि मैं अपने भाई को सुरक्षित सेंटर भेज दूं, ताकि वह गलत कदम नहीं उठाए।''

सेंटर होम में भेजना चाहती हूं आपने भाई को: आरती

बातूनी रिपोर्टर आरती, रिपोर्टर ज्योति

11 वर्षीय आरती जो अपने चाचा चाची के साथ लोधी रोड के पास एक झुग्गी में रहती है। आरती ने पत्रकार को बताया कि वह तीन बहन और दो भाई हैं। आरती ने यह भी बताया कि जब मैं छोटी थी तब मेरे माता पिता की मृत्यु हो गई। जब से हम भाई बहन को देखने वाला कोई नही था। पर ऐसे हालत में मेरी चाची जी ने हम भाई बहनों का हाथ थामा और अपने साथ रखने का फैसला लिया। चाची तो हमें अपने बच्चों की तरह मानती हैं। उन्होंने मेरे भाई बहनों का सरकारी स्कूल में भी दाखिला करा दिया है। हम लोग रोज पढ़ाई करने स्कूल जाने लगे हैं। मेरी चाची दूसरे के घरों में काम करने जाते हैं। आरती के चाचा चाची उसके भाई बहनो का खाना खर्चा खुद उठाते हैं। इसलिए आरती भी अपने भाई बहनों के खर्चे में हाथ बंटाने के लिए लोधी रोड सांई बाबा मंदिर में जो लोग दर्शन के लिए आते हैं वह उनके जूते चप्पल स्टैंड में संभालकर रखती है और उसके बदले में आरती को दो तीन रूप्ए मिल जाते हैं। वहां पर कुछ बड़े लोग ऐसे भी हैं जो बच्चों को अपने पुराने कपड़े दे जाते हैं। वह कपड़े मेरे भाई बहन के काम आते हैं। आरती ने अपनी एक और बात बताते हुए कहा कि मेरा एक छोटा भाई है जो मेरे माता पिता की मृत्यु के बाद से नशा करने लगा। उसको हम लोगों ने बहुत समझाया पर वह हमारी बात नहीं सुनता। नशा करने के लिए वह किसी भी प्रकार के काम करने के लिए तैयार हो जाता है। अगर उसे कोई बोले कि मैं तुझे नशा लाकर दूंगा तुम मेरा यह काम कर दो तो वह तैयार हो जाता है। इसलिए, मैं चाहती हूं कि मैं अपने भाई को सुरक्षित सेंटर भेज दूं, ताकि वह गलत कदम नहीं उठाए।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...



आओ करें ठंड से ठिठुरते हुए बच्चों की मदद



सड़क एवं कामकाजी बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए कराया गया बाल भवन का भ्रमण



स्कूल वॉल मैगज़ीन में लगा रहे बच्चे अपने मन की बात



अपनी खबरों को पढ़ते हुए रिपोर्टर



रेड लाईट पर काम करने वाले बच्चों को जीवन कौशल कार्यशाला देते हुए बताया कि कैसे कहें ना



Light turns green for 3 kids saved from signal

टाइम्स ऑफ इंडिया में छपी खबर



भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बालकनामा की संपादकीय टीम की सदस्य सुश्री शन्नो पठान को राष्ट्रीय बालिका दिवस के कार्यक्रम में अपने विचार रखने हेतु आमंत्रित किया.



केसीएल कॉलेज की प्रिंसिपल रीना जैन बालकनामा को प्राप्त करते हुए



केसीएल इंटर कॉलेज पाथोली आगरा के पास पहुंचा बालकनामा

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471

Issue – 62 March, 2017

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to the given address – 31 Basement, Gautam Nagar, New Delhi – 110049
Ph. No. 011- 41644471
balaknamaeditor@gmail.com

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

WHY STREET AND WORKING CHILDREN ARE NOT USING PUBLIC TOILETS?

STREET CHILDREN EXPLAINED TOILETS' ECONOMY

When Balaknama Reporters got to know about the new announcement done by Delhi Government that people can use any toilet by giving Rs.1 only, they went to speak to children living on streets to know the effect of this announcement on them.

STREET CHILDREN SHARED ISSUES AND COMPLAINTS RELATED TO TOILETS

Reporters met street and working children who do asked them about the Delhi Government's new scheme related to toilets. 12 years old Rohit said, "We face many problems because we are 5 members in our family and my parents goes to work in others homes. They get Rs.3000 per month only because of which we cannot use toilets as we children go to toilets 3-4 times a day. Toilet boards display that Rs.2 for using the toilet for urine and Rs.5 for stool but the person who takes care of toilet takes more money from us like Rs.5 for urine and Rs.10 for stool. Thus we spend around Rs.150 alone in using toilets. This is the reason my family members defecate in open because if we will go to use toilets, our one day earning will go in that only".



If I want to keep my society clean then I have to shell around Rs.100 to Rs.150 every day. Reporter met with a family who spends Rs.100 alone on using toilets. 16 years old Kamla (name changed) said, "I have 12 members in my family in which we are 8 sisters and if we want to pee also we use toilets. We have to shell Rs.5 – Rs.10 every time we use toilets. Females have to give around Rs.40 for using toilets three times a day. Boys can relieve themselves by standing anywhere but we need toilets, we cannot sit here and there".
She added, "My whole family spends Rs.150 every day for using toilets only. It is better to relieve in open than wasting so much of money. Atleast we would save our money. This is the reason children go here and there".

15 years old Karan said, "Our parents do begging and I also beg on roads. We earn Rs. 50 also with great difficulty then from where we will give Rs.10 for going to toilets. All street and working children say that Swachh Bharat Campaign is going on but we are compelled to defecate in open as we do not have enough money to spend Rs.100 – Rs.150 every day".

13 years old Nazaran said, "Bhaiya, girls face the difficulty very much. We pay for using the toilets and still they are not clean. Everybody is ready to take money but no one is ready to clean the place. Toilets are filled with shit all the

continued on pg. 2

Savior turns Devourer

Balaknama Bureau

Reporters conducted support group meeting with Children working at stations. 15 years old boy said, "Police behave very good with us when NGO people are there



with us and the moment they go, policemen starts abusing and beating us again. We are related to every incident which happens at station. Whenever anything is stolen at station we are picked up at night while asleep, taken to police station and are beaten badly when we even did not do anything. Don't we have the right to live?" 17 years old boy said, "We stay at railway station and many a times police come and ask us to visit the police station saying that they have got clothes for us but instead they do bad things with us". Reporter asked these children, "What kind of bad things they tell you to do?" 12 years old boy said, "One day when I was picking bottles from train with my friends a policeman came and asked one of us

continued on pg. 4

WORKING WITH BURNING TANDOORS EFFECT CHILDREN'S HEALTH BADLY

Balaknama Bureau

Reporter met a child who has been working in a restaurant since childhood. He has become 15 years old now working there. Earlier he used to do dough kneading but now he does the work of putting chapattis in tandoor. Child told reporter,

continued on pg. 5



IMPORTANT INFORMATION
(STREET TALK)
BE A PART OF IT



Come and listen to the Street Talk - message of Badhte Kadam- Federation of Street and Working Children and their newspaper Balaknama on 11th April, 2017 (Eve of International Street Children Day). You will hear Street Children's stories in their own words. The program will be organized in India Islamic Centre, 87-88, Lodhi Road, New Delhi – 110003 from 4:30 to 6:00pm. Send us your wishes to support us on badhtekadam1@gmail.com and tweet @ balaknama1.

EDITORIAL

Dear friends,

Greetings!!
Wish you a very Happy Holi from Street and Working Children.
Friends, Like always this time also street children's newspaper Balaknama has brought many real stories in front of you with its new edition. Balaknama reporters spoke to street and working children to know their views regarding the new scheme of Delhi's Government of availing toilets in one rupee.
Balaknama Reporters got to know about the problems of children staying on stations, footpaths, slums, etc. We have come up with the real pictures depicting problems faced by children, how girls feel unsafe inside and outside of their homes. This way we have brought small, big news in front of you through our newspaper.
Hope you like this edition also. Do send us your responses on above given address.

The Editorial Board

BUY 5KG THINGS AND GET YOUR DRINKING WATER!!

Talkative Reporter Aarti, Reporter Shambhu

15 years old girl said, "It is very difficult to stay under Okhla flyover near the railways tracks. Trains cross at very high speed resulting in accidents". 15 years old boy said, "Recently an old man met with a train accident and died. We got very scared seeing that as his body was torn in pieces and was scattered near tracks. There is a forest also nearby and such incidents keep happening". 14 years old girl said, "Most severe problem faced by children staying here under the flyover is that we do not get drinking water anywhere near so we have to go far off places to get water. There is a water tap in the premises of a temple nearby but that has been occupied by an old lady. She earns her livelihood through running a ration shop and asks our parents to buy ration from her then only she will let them take water from the tap. Our parents are forced to buy 5ks rice or 5kgs flour from her to fetch water from the tap and those who do not buy from her shop; she does not allow them to fetch water". One day we all children asked her, "Why don't you give us water when our parents buy ration from you only?" She replied, "1-2kgs do not work, you have to buy 5kgs ration then only I will give you water". "We tried explaining her that we stay inside a tarpaulin home under the flyover where there are too many rats who eat away our ration so we buy ration in less quantity from her. But she did not listen to us and ask us to buy 5kg ration only and then only she allows us to take water. We waste our money also and our ration also gets wasted due to rats", added 14 years old girl.



HOW TO TAKE CARE OF CHILDREN?

BADHTE KADAM TAUGHT PARENTS THROUGH STREET PLAYS

Talkative Reporter Khushi, Reporter Shambhu

There are no whereabouts of street children living in our country. Where they go who takes them nobody has any idea and when their parents go to Police station for filing the complaint nobody listens to them. Police rather blame them only for their carelessness for not taking care of their children and ask them to go away from there. Badhte Kadam members prepared a play on this incident and showed in every street that how children are kidnapped and how their parents can keep an eye on their children and take care of them so that they are not kidnapped. They also showed in the play that how children's parents become careless.

Badhte Kadam members did this play in every street of Sarai Kale Khan and explained the parents to take care of their children properly and not to be careless. 17 years old Khushi said, "There are still many children in our country who get kidnapped". 14 years old Shenaz said, "We have got to know now that every 8 minute a child gets stolen and nobody gets to know where these children are taken. The sole motive of this play is to make people aware about it so that they take care of their children and not let their children play outside alone and whenever he or she goes anywhere please keep an eye on them".



STREET CHILDREN EXPLAINED TOILETS' ECONOMY

from page 1

time. When we ask the care taker he says if you have a problem clean yourself. If you want to use toilet do otherwise go from here".

There are around 1500 slums in Badarpur Border where many street and working children stay. Reporters spoke to these children also. Children said, "There is no toilet in our area and we all go to relieve ourselves in open only. Some children go to railway stations. Children get into any train which enters railway station for using its toilet and after using the toilet they get down anywhere from the train. This is only because they have no money to use the available toilets".

Delhi Government announced that one can use toilet in Rs.1 but in a family of 8 members, if all uses toilet 3 times a day also would cost them Rs.24 per day and Rs.720 per month. This much money a child belonging to rag picker family or beggar family cannot give so children have to sit outside in open only.

15 years old Shambhu said, "I live in Sarai Kale Khan. All members of my family go out in open to relieve themselves as we do not have a single toilet in our area".



Children's Suggestions

- There is a solution to reduce the expenses on toilets. There can be a toilet card for each child with his or her photo on it with one month's validity. Its cost can be RS.10 to 15 which children can give.
- Toilets to be made free for children.
- It should be applicable that one child can use toilet in Rs.1 for whole day.
- Toilets to be made according to the population of a particular area.
- Children want Government should build toilets where there are no toilets and they should be cleaned.

SMALL CHILDREN MAKE PAPER ENVELOPES



Talkative Reporter Shambhu, Reporter Jyoti

During the visit reporter got to know that 7 to 11 years old small innocent children make envelopes by cutting newspapers for keeping peanuts. Reporter asked these children, "You are all so small so how are you all able to make these envelopes?" 7 years old Pawan said, "We have been making these envelopes since our childhood. Our parents do not send us school and it is very common in our caste that the moment child grows their parents put scissors and newspapers in their hand rather than giving him books and ask us to make envelopes at home. My mother works in other's homes and my father sell different things according to the weather like peanuts or any hot item in winters and vegetables and toys in summers. Reporter asked children, "How much hours do you make these envelopes?" 10 years old Yamini said, "We make envelopes from 8 in the morning till 9 in the night and our mother provide us with the adhesive before had only. We work the whole day without eating anything. We prepare all envelopes and then pack them too. Our parents then go to market and sell them on shops". 11 years old Rani said, "One packet contains 10 pieces and get sold at Rs20".

BALAKNAMA SAVED TWO CHILDREN FROM SEXUAL EXPLOITATION

Balaknama Bureau

Two small kids - 8 years old girl and 12 years old boy stay with their parents in West Delhi. Their parents go to work at others' homes to make their ends meet. Recently their maternal uncle came to stay with them at their home. Innocent children used to spend time with their uncle without knowing his intentions and used to sleep with him. Girl said, "My uncle sexually assaulted me when everybody used to sleep at night and I did not tell my parents out of fear that they will beat me instead. I remained silent but one day I saw him doing same thing with my brother. I got scared seeing that and decided to disclose this incident. Next day I told about this incident to children in neighborhood and those children informed Balaknama Reporter about it". Reporter said, "First I investigated about the whole thing and then I called the Child line helpline 1098 to report the issue. Childline workers spoke to both the kids and assured their parents about the safety of children. The proceedings of the case are going on".

FEMALE FOETICIDE BY THEIR OWN MOTHERS

Balaknama Bureau

Girls' population from Dome caste of Bihar is getting reduced because girls of this caste are married at a very young age and boys' family asks for so much of dowry that girls' parents have to sell of their property. Due to all this, four ladies did not give birth to their daughters and killed them in their womb only. Reporters spoke to all these ladies. First lady said, "I committed this sin because if I would have given birth to my daughter then she would have also lead a life full of sadness because girls are married off early in our caste and if in case the boy meet with any mishappening or die then our girls have to lead their full life as widow. Reporters asked all ladies, "How do you get to know that you will give birth to a girl?" Ladies said, "This is not a city. In this village doctor tells you everything". Third lady said, "There are many ladies like us who takes part in female foeticide the moment they get to know that a girl is there in their womb. This is happening all because of our customs and rituals which have not changed since long".





EARNING LIVELIHOOD BY SELLING PYJAMA THREADS

Talkative Reporter Shravan, Reporter Shambhu

Reporter spoke to the small children who earn their livelihood by selling toys and Pyjama threads in the market whole day without eating anything. 15 years old boy said, "We face many problems in selling our stuff in this market. Earlier guard used to beat us but now police have also started abusing us so we go to different markets to sell our products like Sarojini Market or when some fairs take place we go there to sell". Another boy aged 14 years old said, "We

Safdarjung Airport. Our fathers and elder brothers get the products in bulk from Sadar Market. The pyjama threads we get from the market remains entangled which we solve

of it. We sell these in market and whatever we earn from it is used for our house expenses. We see police beating one or the other child every day. Our parents also sell the same things at red lights. They do not come to the market because of the bad behaviour of police".

Small child pulls boat to earn food grains

Talkative Reporter Karan, Reporter Shambhu



This news is about 12 years old Karan who stays in Jamalpur, a small village in Bihar. His father works in Kolkatta and mother is a farmer. There is a large river in Bihar where Karan does the work of pulling boat. Reporter asked Karan, "You are so small, how you manage to ply boat in such a large river?" Karan replied, "I have never gone to study and there are not even good schools in our village. So, I started doing this work and pull boat from 7 in the morning till 10 at night". Reporter asked him, "Does not your hand pain when you pull the boat loaded with so many people?" Karan replied showing his hand, "These blisters used to pain earlier but now it is ok. My chest pains when I pull boat. Earlier I used to fear that if in case I fell in the river then how will I come up and will get drowned but now I have learnt swimming so that fear has also gone. I feel scared at night because there is no light in the village and it becomes too dark. There is risk to my life if I fell in the river at night

me". Reporter asked, "Do you get some money for working day and night?" Karan said, "I do not get money but whatever grains are produced in our village in a year, villagers give 60kg of grains to my family. I get rice, wheat, pulses, corn by pulling boat that is only my earning".

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

INNOCENT CHILDREN MADE TARGET

Balaknama Bureau

Children living at stations are always abused. Recently the reporter got to know that smaller kids are made to carry out criminal activities by elder children. 15 years old Girl said, "I do rag picking at station. I have seen how elders take advantage of the innocent children who come at station after running from their homes".

"A child ran from his home and came to station in search of some food where he met a person who was and made children to beg. He asked the child why he was crying. To which the Child replied that his parents had sent him out of home and he was crying as he was too hungry".

The girl further shared, "The person said to the child that he will have to do a work given by him to get food. The person asked him to go and pick the pocket of any



good person he sees coming towards him".

"This way these people entrap these innocent children by taking advantage of them. They apply such methods to earn money through these children. They prepare them to pick pockets. This kind of pressure is always there on small kids at every station and they even get into habit of taking drugs with these people. These way small children are being entrapped in criminal activities".

No education in village schools

Balaknama Bureau

There are 4 Government schools in Biraul, a small village in Bihar for poor children. The board displayed there says, "Poor children have to study and education needs to be spread in Bihar" but the situation there is complete opposite. The school where children should study are seen playing outside that same school and teachers are seen gossiping on their personal talks and their whereabouts.

14 years old Boy said, "I study in class 5th but till now I don't even know how to write my name. When



exams happen, teachers write the answers on blackboard of the questions asked in the exam while children copy

Everyday children come to study in school but not even study for more than one hour and during that also teachers ask them to play outside. If any child wants to study also, teachers do not let him and make fun of him". 15 years old boy said, "This has been happening since very long. We want freedom from this issue now so that every child of Bihar becomes educated".

BIG RESPONSIBILITIES IN YOUNG AGE

Talkative Reporter Aasma, Reporter Poonam

15 years Aasma used to stay with her parents. She

father was an alcoholic who used to create mess all the time in the area outside his house after getting drunk. Neighbours were also fed up of her father. Due to this Aasma left his father and went to live with her grandmother along with her siblings. She is currently working to take of her siblings and takes care of her grandmother too as she is too old. Aasma is taking care of her siblings alone and does the work of making undergarments at home.

Her siblings also help in her work. Aasma said, "I do this work for a company who provides me the cloth and thread at my home only. I make undergarments the whole day and get Rs.3 for 12 pieces." Reporter asked, "How do you manage your expenses in such

siblings make undergarments from 8 in the morning till 10 at night then only we are able to earn Rs.50 to 60 per day. And after this I do all my household chores and take care of my grandmother too as she is very old".

GIRLS FED UP OF THE MISBEHAVIOUR

Talkative Reporter Khushi, Reporter Shambhu

Raghuvir Nagar is the area where girls and old people all work. A market takes place in Raghuvir Nagar called as Sunday market or Old market. This is near Rajouri Garden road. Girls are mainly the sellers in this market and sits in the shop since 6 in the morning till 12 in the afternoon. These girls sell those clothes which they get from houses in exchange of utensils. They wash these clothes properly and then sell them in the market. Reporters met these girls and tried knowing about this trend. Girls said, "Our parents do not sit at shops and tells us to sit there". 16 years old girl said, "Our parents make us sit here at shops because boys also come to this market and buys more clothes".

17 years old girl said, "Whenever boys come to buy clothes they



indulge in obscene talks with us. They ask us the rate of clothes and our rate too. When we extend our hands to give them clothes, they hold our hands. We feel bad when our parents also say that it is ok if they say anything or touch you, atleast we are getting money. They say that if you will not sit at shops then how will clothes get sold and then everybody will have to remain hungry in the house". 15 years old girl said, "We have to give Rs.50 to the contractor also for putting up the shop. Then we have to go out also at 12 and there also these boys follow us and misbehave with us. We are scared of something bad which can happen to us but our parents are not bothered about what is happening with us. They just want money as we are the only source of money. Our expenses are met through this only".

Savior turns Devourer

from page 1

to come to police station to collect clothes. Listening this I went to police station with

to massage his foot which I did. I thought I will get clothes after this but it did not happen rather he started sexually abusing me and forced my hands into his private parts. I got scared and ran away from there by making an excuse. Next day he called another boy to his room and did the same thing after switching off the lights. That boy also ran away from him but he does not leave any child and entrap these children by giving them temptations and then sexually abuse them. This policeman talks to us very sweetly but in return sexually abuses us and if we do not listen to him then next day he does not allow us to pick rags on station and beat us badly".

STRICT PARENTS STOPPED GIRLS' EDUCATION

Balaknama Bureau

There is a place named Vilochpura in Agra which is inhabited by Muslims. Reporter got to know that there are around 25 girls aged between 13 to 17 years who are not allowed to go out by their parents. Parents say that girls in our families do not go out and if in case they have to then they have to go out in burqa only. 16 years old girl said, "I love going school and I want to go to school like other children. Recently some workers from an organization came to teach us but our parents put forward the demand that there would be no boys amongst us to study. Workers asked our parents, "Now nobody discriminates between girls and boys then why are you saying like this?" On this parents angrily replied, "We do not want our girls to be spoilt like other children". Reporter

and got to know that there are around 25 such girls who always remain at home and if ever they are found talking with any boy then they are beaten very badly. 15 years old girl said, "Tradition of keeping girls in burqa is still being followed in our caste the way it was followed earlier. We are not allowed to talk to anybody that is why we are not sent to schools. We cannot go to the nearby market also. Our parents get us the things if we require something. We want to get freedom from such stressful environment. We also want equal opportunities and not want discrimination between boys and girls in our area too like it are everywhere".

FILTHY SMELL SICKENING CHILDREN

Balaknama Bureau

There are around 150 to 200 slums in Rasalpur area of Agra. There is a long drainage which crosses through this slum area.

through this drainage which stinks a lot and children keeps playing around this drainage. Reporter got to know that children are

and dirt of this drainage but still people keep on throwing their garbage in this dirty canal. Reporter asked children, "How many children have fallen sick till now?" 15 years old boy replied, "4 to 5 children have fallen sick in last one



month as they play around it and when they sit for eating their food at home, it stinking smell reaches their home too because of which they are not able to eat their food".

15 years old girl said, "This drainage smells worst in the morning. In evening, People collect their garbage and throw in it. Even the dead pets are thrown into

This may be the reason of children's illness". 17 years old boy said, "Swachh Bharat Campaign is running in our country so aggressively still people do not keep cleanliness nearby in their areas and throw garbage here and there. We want that canal in our area should also be cleaned and people should be made aware not to throw their garbage in it. They should cooperate with each other in keeping the surroundings clean".

GIRLS EXPRESS THEIR WORRIES: DO NOT FEEL SAFE

Talkative Reporter Lakshmi, Reporter Shambhu

Many girls stay under tin sheets near Kalkaji Temple. These girls face many problems at night. Reporters went to speak to these girls. 15 years old girl said, "We sleep in a house made of tin sheets near Kalkaji Temple. This house is such which has no walls and only has a roof. We have put tarpaulin sheets around but that also does not help much. Anybody enters into it. We are always scared of the boys who roam around at night in inebriated state and keep stalking us. Recently, an incident happened with a girl. People gathered when the girl shouted and they took that boy to police station". 16 years old girl said, "Do we girls have no right to life safely? We do not have any arrangement to bathe here so we have to go to Jungle to bathe. Boys keep looking at us and pass lewd comments because of which our parents get us married in younger age only so that something bad does not happen with us. And after marriage also we are tortured and ill – treated".

Mentally challenged children sexually abused

Talkative Reporter Varsha, Reporter Chetan

A very poor family stays in Kamla Nehru camp. Family has two mentally challenged children in which 13 years Mani is very weak mentally and is not able to speak properly too. He cannot even tell his name properly when you ask him. Mani does not stay at home and keeps roaming outside his home. He always stays in a nearby temple and begs when he feels hungry. When Mani's parents go out to call him he runs away from there. But Mani faces many problems in staying out of his home.

People misbehave with him when he stays out. People take advantage of his mental condition as he does not say anything to



anybody. People are aware of his condition so think that they can do any and he will not tell anybody. They call him by luring him of some money and then sexually abuse him. Mani tries to tell his pain to his parents with his hands but they are not able to understand his actions. Balaknama reporter got to know his problem from children staying nearby. Reporter also got to know that his parents go to work in other homes because of which they are not able to take care of him.

HELPLESSNESS COMPEL CHILDREN TO WORK

Balaknama Bureau

80 to 100 children of 13 years to 17 years of age group are sent to city to work from Bihar. Reporter met a child who came back to his home after working in the city. Explaining his family's condition child said, "There is no earning member in my family and my father worked in the city who died there only. I have

mother goes to work in the

for their marriage. I go to city to work so that I can marry them off in a good home because boys' families ask for dowry. They will not get married if I do not go to city to work. My paternal uncle's sons also work in other people's houses and I



also do the same work and stay with my paternal uncle there".

He added, "Small children get to work in people's home and a bit elder children get to work in city's hotels and restaurants. Small children are not kept in restaurants so they earn while working in people's homes. People keep small children at their homes easily because no one comes to check at homes and nobody questions. Children remain hidden inside the homes".

WORKING WITH BURNING TANDOORS EFFECT CHILDREN'S HEALTH BADLY

from page 1

"I belong to Bihar and have been working here since childhood. I was learning the work when I was young, now that I have learnt the work so I put chapattis in tandoor. It is easy to put chapattis in tandoor in winters but as the summers are approaching it

of tandoor results in red sores on my body which burn a lot. There is sweat all the time on my body while working on tandoor which itches more. This work is more dangerous than other works, at times my hands get burnt by the coal inside while putting chapattis inside tandoor". Reporter asked that child, "Do you want to go to school?" He replied laughingly, "What are you talking Bhaiya. My half of the life has been spent; I may live only for few years now because my blood has got burnt by working on tandoor and a kind of sensation remains in my hands all the time. I feel very weird as if this work has affected my health a lot".

POLICE FEAR STOPPED GIRLS FROM BEGGING



Talkative Reporter Aarti, Reporter Shambhu

There is a change seen in the girls of Sansi camp with the help of Police. Few months back Sansi camp girls were begging when suddenly four boys started misbehaving with them. These girls saw a Policeman passing nearby and immediately ran to him and asked for help. That policeman beat those four boys and saved the girls. Policeman asked the girls, "Why do you beg? Why can't you do some other work?"

15 years girls replied, "It is not our choice to beg. This is a ritual in our families. All girls beg only and we do not know any other work". Policeman asked, "Why don't you study?" 16 years old girl said, "We study through open basic education with the help of an organization but we are not able to go there regularly as we go here and there to beg". Policeman explained those girls, "If you will not study you will face such kind of problems in future as well as complete your studies with help of your organization and tell your parents also the importance of studies".

He added, "If your parents force you to beg, you tell me without any fear I will explain your parents. If they will not listen I will lock them and take action against them". Girls told this about way back home so their parents out of fear do not force them to beg. Now girls do not go to beg and do work at their home only. They study when the workers from organization come to teach them.

Children beg under pressure

Balaknama Bureau

There are around 60 children who go to different homes to beg flour and rice on 6 days in a week and beg money on Saturdays in a temple. Reporter met these children to know the reason. Children said, "It is not our wish to beg rather our parents ask us to beg. If we refuse to beg our parents do not give us anything to eat and make us sleep hungry at night. Out of this fear we children beg flour and rice for 6 days. We are pressurized to get atleast 5kg of rice and flour otherwise we are beaten badly".

They added, "We get 2kgs only in a day that too with great difficulty. Our parents do not understand this. When Saturday comes we give them money by begging. They abuse us if they do not get money and blame us that we keep playing that is why we do not get money. We always remain in fear



every day that if we will not get money we will have to remain hungry today night also. This is the reason we go to beg in busy places like temple and market on Saturdays. We even cry in front of other people but they push us away without giving us any money. Our parents do not care about us. They are not bothered about we face while we beg for money".



Pawan's Struggle

Talkative Reporter Pawan, Reporter Shambhu

12 years old Pawan stays in a tarpaulin home on Lodhi road with his family. He has started plying rickshaw after his father's death. Pawan said, "The responsibility of my family has come on my shoulders since my father died. I work because I have to take care of my mother and sister. I do any kind of work. I clean utensils in Army camp, apart from this I ply rickshaw also. And occasionally I work in marriage parties too when I get work there".

Pawan said, "Rickshaw plying is most difficult for me. It is ok to ply when I get one customer but pulling two people on rickshaw results in pain in my chest. It feels as if I will faint on the road but I try to do my work with all courage. I work very hard so that my mother and brother sister do not have to beg. That is why I do every kind of work. There are so many children like me who has to struggle every day".

CHILDREN MADE AWARE OF CHILD RIGHTS

Talkative Reporter Yashika, Reporter Chetan

Yashika, 11 years old stays in B-3 Raghubir Nagar and she is a sincere leader at her contact point. In such a young age, she gives information regarding children to children and makes them aware about child rights. She also tells them about the childline number where they can ask for help if they face any problem or if they see any other child in problem. Recently only Yashika conducted a support group meeting which was attended by 42 Street and working children. Informing children Yashika said, "Children are being employed as labor in Raghubir Nagar and their



rights are being exploited. That is why I will tell you the way to get freed from child labor and how to get your rights. If any child is in any problem like you see any child being forcefully employed by anyone then you can call on 1098 to help that child. If any child works in a bungalow or do labor work then also you can call on 1098. This is childline number. If you see any child in distress you can help that child".

BEGGING ON THE STREETS, CHILDREN STILL WANT TO STUDY

Talkative Reporter Arjun, Reporter Shambhu

There are some children who beg the whole day near Tuglakabad Railway Station. They are around 8 to 10 years old. These children beg out of compulsion. Their parents also do this work. Children told reporter, "People abuse us when we go to beg and they do not give us anything. After begging for whole day we earn Rs.15 to Rs.20 only but we want to study. We all want to go to school and study



like all other children but we do not have any identity proof because of which we are not able get admission in any school. We can move ahead in life if somebody can come to our place and teach us". Reporter event took their test to check their capability and found that they are seriously brilliant children. 10 years old Arjun said, "We do not want to do begging. We also want to study but nobody is helping us so that we can study further. People misbehave with us when we go to beg, they scold us saying that we have made this our business and we cannot do any other work. We are not able to get admission in schools also due to lack of identity proof. How do we study then?"



POLICE NEEDS TO BE FRIENDLY WITH CHILDREN STAYING AT STATION

Talkative Reporter Salman, Reporter Shambhu

Children staying at station said, "Police is harassing us from last few days. When we wash our clothes at station they start beating us saying that you are wasting stations' water which is for washing the trains but that is not true. We do not waste water and use it very judiciously. They do not say anything to other people who wash their clothes or bathe there. But the moment they see us they come running to us with their stick to beat us".

15 years old boy said, "Old police were very good but new ones hate us. Old police used to tell us to remain clean all the time and never beat us. They used to listen to our problems and always helped us. If in case we ever missed going to our classes at our contact point, they sued to come to us and ask us if we have any problem. The new police which have come on station harass us a lot and beat us with their sticks".

SUCCESS LIES IN UNITY

Talkative Reporter Tanga, Reporter Chetan

Working children of a slum of South Delhi are not educated. This is the reason that they remain busy in their work. When morning comes, children have gunny bag on their shoulders to pick rags in place of the school bag. These children do not know anything related to education. They just remember that if they will not get rags then how they will manage their home expenses. So they pick rags, iron, plastic and bottles by roaming around at different places. Children said, "When we go to pick rags, we get divided in two groups and go to pick rags in groups. Boys go one side and girls go other side.



We children do this so that nobody is able to misbehave with any of the child".

Children said, "We used to face many problems when we used to go alone to pick rags because nobody used to be left behind to take care of the collected rags. People used to take advantage of this and would steal our rags and sell them. We used to get beaten at home also for this but now when we go in groups we are left with rags of much quantity and nobody steals our material as we work united now". They added, "We are now each other's strength. Since the time we have started working in groups, we not get full fruit of our hard work and not half. Unity has given strength and more benefits".

CHILDREN STAYING AT STATION LEARNT MEANING OF UNITY

Talkative Reporter Rohit, Reporter Shambhu

Children staying at railway stations do the work of picking rags for their survival and are involved in drugs all the time. These children did not know the meaning of Unity. They always fought amongst themselves so Balaknama Reporter conducted support group meeting with them. Reporter asked children, "What is unity for you all?" 15 years old Rohit asked, "Bhaiya what is unity?" Children did not know its meaning at all as they are always involved in their work at station. How will they know what is Unity. Children said,



"We have heard this word for the first time". Then Reporter explained all the children, "Unity means that we are together. If we face any problem, we all should face it together. That is called Unity. Now tell me what unity is". Children replied, "Now we understood what unity is like we all children do begging and at times some children do not get any money and if we have money then we can buy them food from our money so that they do not remain hungry. And together we can face those people also who beat us". Children decided that from now onwards we will help each other and will try to leave drugs.

HATS OFF TO SAPNA'S COURAGE

Talkative Reporter Sapna, Reporter Shambhu

16 years old Sapna stays with her family in a slum in Badarpur Border. Her parents work to manage their home's expenses. Sapna has two younger siblings who go to school. Sapna being eldest does not go to school and stays back to do household chores. She also goes to beg outside during festivals.

Sapna went to Kalkaji Temple on Dusshera to be part of a Navratri festival where girls are offered food where she saw a child of around 7 to 8 years old who was crying loudly calling her mother.

Sapna went there and asked the child, "Why are you crying baby?"

Child replied, "I came to temple with my mother but



now I am not able to find my mother. Then Sapna started searching for his mother at different places and other girls also started the search for the child's parents who came there with Sapna. Child's parents were found near Lotus temple after one hour. And Sapna got to know that they were also searching for their child.

Sapna gave their child to them and said, "Auntyji, Please take care of your child as this is Dusshera time and there is so much of crowd". She came back after explaining them. This way Sapna also tries to explain the children around her area. She tells them not to get involved in gamble and rather encourage them to go to school. Sapna stays in a slum where parents go to work after leaving their children back at home and Sapna takes care of all of them very well. She also takes care of children playing around the railways tracks as many trains cross from there. She just wants freedom from begging.

MAJEEDA REACHED SHELTER HOME SAFELY

Talkative Reporter Salman, Reporter Shambhu

15 years old Majeeda ran from her home and reached Old Delhi Railway Station. When Balaknama Reporter met Majeeda, she told about her sad story. She said, "My father died two years ago after which my mother married another person. My step father used to beat us all three siblings. He even got me employed in somebody's house where I used to work for whole day. I never used to get any money as my step father used to go at my workplace and collect money before the end of month. They did not even give me money when I required rather he would ask if I did not get money from my employer. I used to feel so bad knowing that my step father already has my earned money with him and he is lying to me".



"I used to ask my mother also for money but she also did not give me. My parents used to send my brother and sister to beg and if they did not used to get any money they were not given food to eat. They used to send them forcefully to beg and would abuse them on not going. So I ran away from my house. I was scared when I first came to railway station. I started crying thinking where to go and then I met Salman who told me about himself", added Majeeda. Salman told Majeeda, "I also stay at railway station and I am talkative reporter of Balaknama newspaper. I help other children". Then he gave her some food and with help of other reporter he sent Majeeda to shelter home through organization's worker.

SMALLER KIDS BEING BULLIED BY ELDER ONES

Balaknama Bureau

Children who stay on railway stations do the work of picking up bottles from trains. One child told the reporter, "We face many problems when we go to pick up bottles in trains. There are two people who do not let us pick bottles from trains and beat us badly. They have taken control of all express trains which come there and bully all people around. They do not let us pick rags from any train and by mistake also if we get in any train they beat us very badly". He further added, "Due to this we



started picking bottles from the trains running at night. But that has also become difficult for us; we are beaten at night also. Police blame us saying that we come at night to steal things of the travelling passengers. We tried explaining the police allowed to pick bottles in the day time. There are two persons who do not let us work in trains and if we try to do, they beat us. Because of this we come at night to pick up the bottles. Still Policeman did not believe us and started beating 13 years old child badly".

BALAKNAMA SPREAD MESSAGE THROUGH PLAY

Talkative Reporter Salman, Reporter Shambhu

Children staying at railway station were taught through plays how children come to stay at railway station after running away from their homes and how they fall prey to the world of drugs. First children stay with their family but after getting frustrated from the exploitation done by their own parents or relatives, they leave their homes and come to station. That child keeps roaming here and there at railway station and nobody helps him/her so he also start doing the same things which other children do like rag



picking and stealing. And while living at stations they get into drugs also. And one day comes when they get into habit of taking drugs also. Children were made aware about the ill effects of drugs through play. Children were given the message that if a child destroys his/her life by consuming drugs and also risks his/her life if he/she consume drugs regularly for 6 months. 15 years old Salman said, "If any child comes to railway station after running from their homes then they should not get into dark horrors of drugs rather should try to go to a shelter home as soon as possible or return back to thei homes".

BALAKNAMA AND BADHTE KADAM IN NEWS

WE ARE SHARING SOME PICTURES OF THESE MOMENTS WITH YOU….



Children of D.C. Vedic Inter College forming Human Chain



Balaknama's stakeholders taking balaknama



Police interact with street children to end 'cop fear'

ABHAY SINGH
abhay8942@gmail.com
New Delhi, 20 February

"If you are in trouble, inform us, we will help you," Delhi Police has told street children. They were trying to make this most vulnerable group of homeless children understand how they work.

"It was a great thing when the police uncle told me that they are there to help us if we face some harassment," said 14-year-old Nagma, a homeless girl living in the shelter home in Sarai Kale Khan.

Talking to The Statesman, the homeless children said that they had earlier feared police as they had no knowledge about police work. They have only seen police arresting them. "Before meeting them, some one had warned me that police would arrest me if I frightened but after meeting them I know that police will arrest only bad people," said Sangeeta, another homeless girl, living in the shelter. During their visit to Lajpat Nagar police station in south east Delhi, station house officer (SHO) Kishan Pal welcomed these children and listened to their problems.

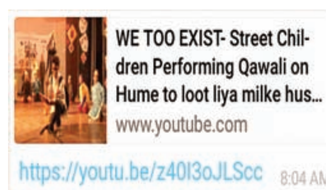
A senior police officer told this newspaper that children had some misunderstanding about police as they have never talked to us but after meeting us they were very happy. "They are a vulnerable lot and we have given them confidence that if they see anything wrong happening in the society or any one harasses them they could come to us for any help," said the officer.

The street children said that police have told them if they found anyone taking drug or beat them, they should just inform the police.

According to NGO Chetna, policeman is the first person who comes in contact with street children on behalf of state. Children often face abuse by locals. This is the right time for police and children to come together and to have a trustworthy relation.

"We approached six Delhi police stations during the police week and received overwhelming response. More than 200 children have already benefited. Children also expressed willingness to meet the police commissioner and we are in touch with his office," said Sanjay Gupta from Chetna.

Coverage of Street and Working children in Statesman Newspaper



https://youtu.be/z40I3oJLScc 8:04 AM



Balakanama Reporter with Actress Dia Mirza



Balaknama: A Turning Point In The Lives Of Children Living On The Streets -...
everylifecounts.ndtv.com

Balak nama's coverage on NDTV news channel

This edition is for limited distribution. All pictures are published in this edition after children's their approval.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Richa Somvanshi.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 ख़बरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-62 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मार्च, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

शौचालयों का इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

स्ट्रीट बच्चों ने समझाया शौचालय का अर्थशास्त्र

बालकनामा के पत्रकारों को जब पता चला कि दिल्ली सरकार ने यह घोषणा की है कि अब लोग एक रूपया देकर किसी भी शौचालय का इस्तेमाल कर सकते हैं तो इस घोषणा से सड़कों पर जीवन गुजारने वाले बच्चों के जीवन में क्या प्रभाव पड़ेगा इसके लिए बालकनामा पत्रकार ने बच्चों से बात की।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताई शौचालयों की समस्याएं और शिकायतें

पत्रकारों ने दिल्ली में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मुलाकात की जो लालबत्ती एवं पुल के नीचे भीख मांगने का काम करते हैं। इन बच्चों से पत्रकार ने दिल्ली सरकार की शौचालय से संबंधित नई योजना के बारे में पूछा तो 12 वर्षीय रोहित ने बताया कि भईया हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है क्योंकि मेरे परिवार में पांच लोग हैं और हमारे माता पिता कोठी में काम करने के लिए जाते हैं। उनको प्रतिमाह तीन हजार रूपये मिलते हैं, जिसकी वजह से हम बच्चे शौचालय का प्रयोग नहीं कर पाते हैं, क्योंकि हम बच्चे दिन में चार से पांच बार तो शौचालय जाते ही हैं। शौचालयों में मूत्र करने का दो रूपये और मल करने के पांच रूपये बोर्ड पर लिखे होते हैं लेकिन जो व्यक्ति शौचालय की देखरेख करता है वह ज्यादा पैसे लेता है जैसे मल करने का दस रूपया और मूत्र करने के पांच रूपए लेता है। इसलिए हम केवल शौचालय के लिए हर दिन लगभग 150 रूपए खर्च कर देते हैं। इस वजह से परिवार के सभी सदस्य खुले में शौच करने जाते हैं, क्योंकि हम बच्चे शौचालय का प्रयोग करेंगे तो एक दिन की पूरी कमाई हमारी सिर्फ शौचालय में ही खर्च हो जाएगी।



अगर मैं अपने समाज को स्वच्छ रखना चाहूं तो मुझे प्रतिदिन लगभग 100 से 150 रूपए खर्च करने पड़ेंगे। पत्रकार एक ऐसे परिवार से मिला जिसमें वह सिर्फ शौचालय इस्तेमाल करने के लगभग 100 रूपये खर्च करता है। 16 वर्षीय परिवर्तित नाम कमला ने बताया कि, ''मेरे घर में 12 सदस्य हैं जिसमें हम 8 महिलाएं हैं अगर हम को मूत्र करने भी शौचालय जाना होता है तो हम जाते हैं जिसके हमें एक बार शौचालय इस्तेमाल करने पर 5 से 10 रूपये देने पड़ते हैं। महिलाएं अगर पूरे दिन में तीन तीन बार भी शौचालय जाती हैं तो उन्हें लगभग 120 रूपये खर्च करने पड़ते हैं। लड़कों को मूत्र करने जाना होता है तो वह एक बार को कहीं भी खड़े होकर कर सकते हैं, लेकिन हम लड़कियों को शौचालय की जरूरत पड़ती ही है, हम इधर उधर नहीं बैठ सकते हैं।''
मेरी पूरी फैमली लगभग 150 रूपए इसी काम में खर्च कर देती है। शौचालय का इस्तेमाल अगर हम करते हैं तो हमें पूरे दिन में लगभग 150 रूपए रोज इसी काम के लिए खर्च करने पड़ते हैं। इससे अच्छा तो यही होगा कि हम भी बाहर खुले में ही शौच करें। इससे कम से कम हमारे पैसे तो बच जाएंगे। इसी वजह से बच्चे इधर उधर जाते हैं।

15 वर्षीय करन ने बताया कि हमारे माता पिता भीख मांगने का काम करते हैं। मैं भी भीख ही मांगता हूं। हम लोग पूरे दिन मुश्किल से 50 रूपए भी नहीं कमा पाते हैं तो शौचालय करने के लिए 10 रूपये कहां से लाएंगे। सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों का यही कहना है कि अभी स्वच्छ भारत अभियान चल रहा है, लेकिन हम बच्चे मजबूर होकर खुले में शौच करते हैं। क्योंकि हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम प्रतिदिन 100 से 150 रूपए शौचालय पर खर्च कर सकें।

13 साल की नजराना ने बताया कि भईया हम लड़कियों को तो बुहत परेशानी होती है। एक तो हम पैसे देकर भी शौचालय का प्रयोग करते हैं। इसके बावजूद शौचालय बहुत गंदा रहता है। पैसे लेने के लिए तो सब तैयार रहते हैं लेकिन साफ सफाई करने के लिए कोई तैयार नहीं होता है। शौचालय में मल ऐसे उपर नजर आता है। हम लड़कियां शौचालय की देखरेख करने वाले व्यक्ति से बोलते हैं तो वह बोलते हैं कि अगर तुम लोगों को ज्यादा परेशानी हो रही है तो खुद क्यों नहीं साफ कर देती हो। शौचालय उपयोग करना है तो करो नहीं तो यहां से जाओ।

शेष पृष्ठ 2 पर

रक्षक बने भक्षक

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर काम करने वाले बच्चों के साथ पत्रकार ने उनकी समस्याओं के बारे में पूछा तो 15 वर्षीय बालक ने बताया कि जब बच्चों के लिए काम करने वाली गैर संस्थाओं के कार्यकर्ता हमारे साथ होते हैं तब तो पुलिस वाले हम बच्चों से



अच्छे से बात करते हैं, लेकिन जैसे ही वह चले जाते हैं तो पुलिस वाले हमसे फिर गाली से बात करने लग जाते हैं। हमारे साथ मारपीट करते हैं। ऐसा लगता है कि जो भी स्टेशन पर घटना होती है वह हम बच्चे ही करते हैं। जब पब्लिक का सामान चोरी हो जाता है तो रात को सोते समय भी हम बच्चों को उठाकर थाने में ले जाते हैं और बुरी तरह से मारते हैं। जब कि हम बच्चे कोई गलत काम नहीं करते हैं। क्या हम बच्चों को जीने का अधिकर नहीं है।

17 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे अभी स्टेशन पर रहते हैं। स्टेशन पर पुलिस वाले आते हैं और हमें बुलाते हैं कि थाने चलो मैं तुम्हारे लिए कुछ कपड़े लाया हूं। पर कपड़े के बहाने से गलत काम करते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोगों से क्या गलत काम करने के लिए बोलते हैं? 12 वर्षीय बालक ने बताया कि एक दिन मैं अपने दोस्तों के साथ गाड़ी में से बोतल बीनकर छटाई कर रहा था तभी एक पुलिस वाले आए और बच्चों से बोला कि तुम लोगों के लिए मैंने

शेष पृष्ठ 4 पर

जलते तंदूर की आंच से स्वास्थ्य पर पड़ा बुरा असर

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने एक ऐसे बच्चे से मुलाकात की जो बचपन से ही एक ढाबे में काम करता आ रहा है। पहले वह बहुत छोटा था लेकिन अब वह ढाबे में काम करते करते 15 साल का हो गया है। शुरू शुरू में वह ढाबे में सिर्फ आटा गूंधने का काम करता था। लेकिन अब वह बच्चा तंदूर में तंदूरी रोटी लगाने का काम कर रहा है। पत्रकार से उस बच्चे ने बताया कि मैं बिहार का रहने वाला हूं और मैं बचपन से यही काम करता आ रहा हूं। पहले जब मैं छोटा था तब मैं यह सब काम सीख रहा था। अब जब मैं काम सीख गया हूं तो मैं खुद तंदूर में तंदूरी रोटी लगाने लगा हूं। उसने बताया कि ठंड के मौसम में आसानी से रोटी लगा लेते थे लेकिन अब धीरे धीरे गर्मी का मौसम वापस आ रहा है। इन दिनों में तो तंदूर में रोटी लगाने पर हालत खराब हो जाती है, क्योंकि गर्मी के मौसम में तेज तपती तंदूर की आंच से हमारे शरीर में लाल लाल दाने हो जाते हैं जो शरीर में बहुत जलन करते हैं। गर्मी में जब तक तंदूर के पास काम करते हैं तो हमारे शरीर पर पसीना रहता है तंदूर के अंदर हाथ डालने पर तो कोयले की जलती आंच से हाथ भी जल जाते हैं। यह काम और दूसरे काम से बहुत खतरनाक है। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप स्कूल जाना चाहते हो? तो उसने कहा कि कैसी बात कर रहे हो मेरी आधी जिंदगी तो ऐसे ही गुजर गई अब मैं शायद कुछ सालों का मेहमान हूं।



तंदूर में रोटी लगाने की वजह से मेरे शरीर का खून जल गया है, मेरे हाथों में हमेशा झनझनाहट रहती है मुझे अजीब महसूस होता है। ऐसा लगता है कि जैसे इस काम को करने से मेरे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार!

सड़क व कामकाजी बच्चो की ओर से आप सभी को होली की बहुत बहुत बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों का अखबार बालकनामा एक नए अंक के साथ सच्ची घटनाओं व खबरों को लेकर प्रकाशित हुआ है। बालकनामा पत्रकारों ने दिल्ली सरकार की एक रुपए में शौचालय जाने की योजना के बारे में सड़क एवं कामकाजी बच्चों से बात की और उनके विचार जानें।

साथियों, बालकनामा के पत्रकारों ने स्टेशनों, फुटपाथों, झुग्गी, झोपड़ियों का दौरा करके बच्चों की परेशानी को जाना व समझा। बच्चों को होनी वाली परेशानियों के बारे में जाना और कैसे लड़कियों के लिए घर हो या बाहर असुरक्षित महसूस हो रहा है, इसकी सच्ची तस्वीरें आपके समक्ष लेकर आए हैं। इस प्रकार हम अपने अखबार के माध्यम से छोटी, बड़ी खबरों के साथ आपके बीच उपस्थित हुए हैं।

आशा करते हैं कि इस बार का अंक आपको पसंद आएगा। अपनी प्रतिकियाएं ऊपर लिखे पते पर अवश्य भेजने का कष्ट करें।

संपादकीय टीम

पांच किलो समान लेने पर मिलता है बच्चों को पीने का पानी

बातूनी रिपोर्टर आरती रिपोर्टर शम्भू

दिल्ली के ओखला पुल के नीचे रहने वाले बच्चों को सबसे ज्यादा समस्या पीने के पानी की हो रही है। यहां आस पास कहीं भी पीने का पानी नहीं मिलता है। इसलिए बच्चे दूर दूर तक पानी भरने के लिए जाते हैं। यहां एक मंदिर है। उस मंदिर के पास एक नल है। पर उस नल पर एक बूढ़ी औरत ने कब्जा कर रखा है। वह बूढ़ी औरत अपने गुजारे के लिए राशन की दुकान चलाती है और बच्चों के माता पिता से बोलती है कि अगर तुम मेरी दुकान से सामान लोगे तभी मैं तुम्हें पीने का पानी भरने दूंगी। और वह पांच किलो आटा लेने पर ही पीने के लिए पानी भरने देती है। इसलिए बच्चों के माता पिता को मजबूरन उसकी दुकान से सामान लेना पड़ता है क्योंकि वह जबरन बोलती है कि पांच किलो आटा, पांच किलो चावल लेने पर ही पानी भरने दूंगी। जो लोग उसकी दुकान से राशन नहीं लेते वह उन्हें पीने के लिए पानी भी नहीं भरने देती।

एक दिन सभी बच्चों ने मिलकर उनसे बोला कि आन्टी जी हम बच्चों के माता पिता तो आप की ही दुकान से सारा सामान खरीदते हैं फिर आप हमें पानी क्यों नहीं भरने देती हो।



तो आन्टी ने बोला एक दो किलो लेने से कुछ नहीं होता है जब तक पांच किलो नहीं लोगे तब तक पानी नही भरने दूंगी। हम बच्चों ने उन्हें समझाया कि आप तो जानते हो हम लोग त्रिपाल के घर में पुल के नीचे रहते हैं और उस जगह में बहुत चूहे हैं जो हमारा सारा का सारा सामान खा जाते हैं। इसलिए हम थोड़ा थोड़ा सामान आप से खरीदते हैं। यह जानने के बाद भी वह हमसे पांच किलो सामान ही लेने के लिए बोलती हैं और तभी हमें पीने के लिए पानी भरने देती हैं। एक तो हमारे इतने पैसे खराब होते हैं, दूसरी ओर चूहे भी हमारा सारा का सारा राशन खा जाते हैं

नाटक के माध्यम से माता पिता को बताया कि कैसे रखें अपने बच्चों का ख्याल

बातूनी रिपोर्टर खुशी, रिपोर्टर शम्भू

हमारे देश में जो बच्चे सड़कों पर रहते हैं इन बच्चों को कौन कब उठाकर ले जाता है, कुछ पता ही नहीं है। जब पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखवाने के लिए जाते हैं तो उन बच्चों के माता पिता की कोई सुनता नहीं है कि क्या हुआ, कैसे हुआ। पुलिस उनसे कहती है कि पहले तो तुम खुद अपने बच्चों का ख्याल रखते नहीं हो जब तुम्हारा बच्चा तुम्हारी लापरवाही की वजह से चोरी हो जाता है तो रोते हुए थाने चले आते हो और उन्हें भगा देते हैं। बढ़ते कदम के बाल साथियों ने इस घटना के ऊपर एक नाटक तैयार किया और गली गली घूमकर नाटक दिखाया कि किस प्रकार बच्चों का अपहरण हो सकता है तथा नाटक द्वारा यह भी बताया कि बच्चों की देखरेख और निगरानी माता पिता कैसे कर सकते है। जिससे कि उनके बच्चों का कोई अपहरण न कर सके। नाटक में बच्चों ने यह भी दिखाया कि कैसे बच्चों के माता पिता लापरवाह हो जाते हैं।

बढ़ते कदम के सदस्यों ने यह नाटक सराए काले खां की हर एक गली में जा जाकर किया और उन्हें समझाया कि वह अपने बच्चों का सही से ध्यान रखें लापरवाही न बरतें।

17 वर्षीय खुशी ने बताया कि हमारे देश में अभी भी बहुत बच्चों का अपहरण किया जाता है। 14 वर्षीय शहनाज ने बताया कि अब हम बच्चे यह जान गए हैं कि हर आठ मिनट पर एक बच्चा चोरी होता है। उस बच्चे को कहां ले जाते है कुछ नहीं पता। हम बच्चों को नाटक दिखाने का यही मकसद है कि लोग अपने बच्चों का ख्याल रखें अपने बच्चों को ऐसे ही कहीं बाहर खेलने के लिए नहीं भेजें। अगर बच्चा कहीं खेलने भी गया है तो उस पर अपनी नजर साधे रहें।



स्ट्रीट बच्चों ने समझाया शौचालय का अर्थशास्त्र

पृष्ठ 1 का शेष

बदरपुर बॉर्डर में लगभग 1500 झुग्गी झोपड़ियां बनी हुई हैं, जहां भारी मात्रा में सड़क व कामकाजी बच्चे भी हैं। वहां के रहने वाले बच्चों से भी पत्रकारों ने बात की तो उन्होंने बताया कि हमारे यहां एक भी शौचालय नहीं है और सभी बच्चे और उनके माता पिता खुले में ही शौच करने के लिए जाते हैं और कुछ बच्चे स्टेशन पर चले जाते हैं और जब भी कोई स्टेशन पर रेलगाड़ी आती है तो वह बच्चे किसी भी रेलगाड़ी में शौच करने के लिए रेल में चढ़ जाते हैं। रेलगाड़ी में शौच करने के बाद रेलगाड़ी में से कहीं पर भी उतर जाते हैं। इसका कारण है कि उनके पास पैसे नहीं हैं जो वह शौचालयों का इस्तेमाल कर सकें।

दिल्ली सरकार ने घोषणा की है कि 1 रूपए में शौचालय जा सकते हैं, लेकिन अगर घर में 8 सदस्य हैं और इन सदस्यों ने अगर प्रतिदिन दिन में 3 बार शौचालय का इस्तेमाल किया हो तो उनके लगभग 24 रूपये खर्च होंगे और महीने का 720 रूपए खर्च होंगे। इतने पैसे एक कबाड़े बीनने वाला परिवार या भीख मांगने वाले बच्चे नहीं दे सकते तथा इस कारण से बच्चे बाहर खुले में ही बैठ जाते हैं।



15 वर्षीय शम्भू ने बताया कि मैं सराए काल खां में रहता हूं। मेरे परिवार में सभी लोग बाहर खुले में ही शौच करने जाते हैं। इसकी वजह है कि हमारे मोहल्ले में एक भी शौचालय नहीं है।

बच्चों के सुझाव

- शौचालयों पर कम पैसा खर्च हो उसके लिए उपाय है या तो हर एक बच्चे के लिए एक टॉयलेट कार्ड बनाकर दें, जिसकी वैधता एक महीने की हो और उस कार्ड में बच्चे की फोटो हो। उसकी कीमत 10 से 15 रूपये हो सकती जो हम बच्चे दे सकते हैं।
- बच्चों के लिए शौचालय निःशुल्क कर दिया जाए।
- एक बच्चा सिर्फ 1 रूपए में पूरे एक दिन शौचलाय इस्तेमाल कर सके, यह लागू कर दिया जाए।
- हर मोहल्ले में पब्लिक की संख्या के हिसाब से शौचालय बनाए जाएं।
- बच्चे चाहते है जिस जगह शौचालय नहीं बना हुआ है, उस जगह सरकार को शौचालय बनाना चाहिए ताकि गंदगी नहीं फैले और शौचालयों को स्वच्छ रखा जाए।

कागज के लिफाफे बनाते हैं छोटे बच्चे



रिपोर्टर शम्भू एवं ज्योति

पत्रकार को विजिट के दौरान पता चला कि 7 से 11 साल तक के मासूम बच्चे अखबार काटकर मूंगफली रखने वाले लिफाफे बनाते हैं। जब पत्रकार ने इन बच्चों से बात की और पूछा कि आप लोग तो बहुत छोटे हो यह लिफाफे कैसे बना लेते हो? 7 साल के पवन ने बताया कि हम बच्चे बचपन से ही लिफाफे बनाने का काम करते आ रहे हैं। हमारे माता पिता हम बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं और हमारी जाति में यही होता है कि जब भी बच्चा अपना होश संभालता है तो उसके माता पिता हाथ में कॉपी किताब देने के बजाए कैची और अखबार थमा देते हैं और बोलते हैं कि घर पर बैठकर लिफाफे तैयार करो। मेरी मम्मी दूसरे के घरों में काम करने के लिए जाती हैं। पापा मौसम के अनुसार अलग अलग प्रकार का सामान बेचते है, जैसे सर्दियों में मूंगफली एवं गर्म खाने वाली चीज बेचने का काम करते हैं और गर्मी के मौसम में सब्जी एवं खिलौने बेचने का काम करते हैं।

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोग कितने घंटे लिफाफे बनाते हो? 10 वर्षीय यागनी ने बताया कि हम सुबह आठ बजे से लेकर रात को नौ बजे तक लिफाफे बनाते हैं और हमारी मम्मी पहले से ही आटा का मलीदा बनाकर रख देती हैं। और हम बच्चे पूरी दिन भूखे प्यासे लिफाफे बनाने में लगे रहते हैं। जब लिफाफे तैयार हो जाते हैं, उसके बाद हम लिफाफों की पैकिंग भी करते है। फिर हमारे माता पिता दुकानों पर जाकर लिफाफे बेचते हैं। 11 साल की रानी ने बताया कि एक पैकेट में दस पीस होते हैं और एक पैकेट 20 रूपये का बिक जाता है।



नाड़े बेचकर करते हैं गुजर बसर

बातूनी रिपोर्टर श्रवन, रिपोर्टर शम्भू

छोटे छोटे मासूम बच्चे अपने गुजारे के लिए पूरे दिन मार्किट में भूखे प्यासे खिलौने और नाड़े आदि बेचने का काम करते हैं। जब इन काम करने वाले बच्चों से पत्रकार ने बातचीत की तो 15 साल के एक बालक ने बताया कि भईया हम बच्चों को इस मार्किट के अंदर सामान बेचने में बहुत परेशानी होती है। पहले सिर्फ गार्ड अंकल जी मारते थे। अब तो पुलिस वाले भी हम बच्चों को मारते हैं। इसलिए हम बच्चे एक ही मार्किट में सामान नहीं बेचते हैं। अलग अलग जगह की मार्किटों में जाकर अपना सामान बेचते हैं जैसे कि सरोजनी नगर मार्किट या जहां पर मेला लगता है उस जगह पर बेचते हैं।

14 साल के दूसरे बालक ने बताया कि हम लोग सफदरजंग एयरपोर्ट के पास जो पुल है उसके नीचे रहते हैं। जो सामान हम बेचते हैं वह हमारा बड़ा भाई और पापा सदर बाजार से खरीद कर लाते है क्योंकि सदर बाजार में सामान किलो की दर से मिलता है। लेकिन अगर हम नाड़े खरीदकर लाते हैं तो वह बहुत उलझा हुआ रहता है जिसे हम बच्चे खुद सुलझाते हैं और सुलझाने के बाद नाड़े कई पोले बनाते है फिर हम बच्चे नाड़े के 100 पोले लेकर मार्किट में जाते हैं। पूरे दिन की दुकनदारी करके जो पैसा हम कमाते हैं उसी से हमारे घर परिवार का खर्चा चलता है। लेकिन पुलिस वाले आए दिन किसी न किसी बच्चे को मारते पीटते रहते हैं। बच्चों ने बताया कि हमारे माता पिता भी लालबत्ती पर यही सामान बेचते है क्योंकि मार्किट में इसलिए नहीं आते हैं जब हम बच्चों को इस प्रकार से मार पीटकर भगा देते है तो हमारे माता पिता के साथ किस तरह से व्यहार करेंगे।

शोषण के चंगुल से निकले दो मासूम बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

दक्षिणी दिल्ली में रह रहे एक परिवार में दो बच्चे हैं एक लड़का और एक लड़की। लड़की की उम्र आठ साल की है और लड़का 12 साल का है। इन बच्चों के माता पिता कोठी में काम करने के लिए जाते हैं। जब जाकर इनके परिवार का गुजारा हो पाता है। कुछ महीने पहले इनके गांव से इनके मामा इनके परिवार के साथ आकर रहने लगे। आमतौर पर बच्चे तो अपने मामा से प्यार करते हैं और उनके आस पास ही रहते हैं। उनसे लगाव भी रखते हैं। लेकिन इन छोटे छोटे मासूम बच्चों को क्या पता कि उनका मामा किस इरादे से उनके पास सोता था। उनका मामा 8 साल की बच्ची के साथ आए दिन अश्लील हरकत करता था। जब सारे लोग घर में सो जाते थे तब उस बच्ची का मामा उसके साथ यौन शोषण करता था। यह बच्ची अपने माता पिता से कुछ नहीं बोलती थी।

इस मासूम बच्ची को डर लगता था कि अगर मैं अपने माता पिता से बोलूंगी तो मुझे ही पीटा जाएगा। इसी डर से वह चुप रहती थी। लेकिन एक रात उस बच्ची ने देखा कि उसका मामा उसके भाई के साथ भी वही सब कर रहा है जो वह उसके साथ करता था। ऐसा होते हुए उस बच्ची ने खुद अपनी आंखों से देखा। यह देखकर वह बच्ची और भी डर गई। लेकिन उसने इस बार चुप्पी तोड़ी और दूसरे ही दिन पड़ोस में रहने वाले बच्चों को इस बारे में बता दिया। यह बात सुनते ही बच्चों ने इसकी जानकारी बालकनामा के पत्रकार को दी।

उसके बाद पत्रकार ने इस मामले की पूरी छानबीन की। फिर पत्रकार चाल्डलाइन हेल्प लाइन नंबर 1098 पर कॉल करके इसकी पूरी जानकारी दी। फिर चाल्डलाइन के अधिकारियों ने उन दोनों बच्चों से बातचीत करके पूछताछ की तथा चाइल्डलाइन के अधिकारियों ने बच्चों के माता पिता को बताया कि आपके बच्चे सुरक्षित हैं उन्हें कुछ नहीं होगा। अभी भी इस मामले की कार्यवाही जारी है।

नांव खींचकर कमाता है अनाज

बातूनी रिपोर्टर करन, रिपोर्टर शम्भू

12 वर्षीय करन बिहार के एक छोटे से गांव जमालपुर में रहता है। पापा शहर कलकत्ता में काम करने के लिए जाते हैं। मम्मी खेतीबाड़ी का काम करती हैं। बिहार में एक बहुत बड़ी नदी है करन भी उस नदी में नांव चलाने का काम करता है। पत्रकार करन से मिला और करन से पूछा कि आप इतने छोटे हो इस नदी में अकेले नांव कैसे चला लेते हो? करन ने बताया कि मैं कभी पढ़ाई करने नहीं गया और गांव में सही से पढ़ाई नहीं होती है। इसलिए मैं नांव चलाने का काम करने लगा। सुबह 7 बजे से लेकर रात को 10 बजे तक नांव चलाने का काम करता हूं। पत्रकार ने करन से पूछा कि आप इतने लोगों को बैठाकर नांव खींचते हो हांथ में दर्द नहीं होता है। करन ने बताया कि पहले बहुत दर्द होता था, पर अब कम होता है। करन के हाथ में छाले भी पड़े हुए थे।

करन ने बताया कि छाले तो दर्द नहीं करते हैं, लेकिन जब मैं नांव को खींचता हूं तो छाती में दर्द होता है। पहले हमेशा डर लगा रहता था कि अगर मैं नदी में गिर गया तो कैसे ऊपर निकलूंगा, लेकिन अब मुझे यह डर नहीं लगता है। क्योंकि अब



मुझे तैरना आ गया है। कभी कभी रात को काफी डर लगता है क्योंकि गांव में बिजली और लाइट भी नहीं है। यहां अंधेरा रहता है। अगर मैं नदी में रात को गिरता हूं तो मेरी जान को खतरा रहता है कि कहीं सांप या मछली काट न ले। पत्रकार ने करन से पूछा कि आप पूरे दिन काम करते हैं तो कोई पगार के पैसे देता है तो करन ने बताया कि पगार में पैसे तो नहीं मिलते हैं, लेकिन गांव वाले साल में जितनी भी फसल करते हैं वह उस फसल में से मेरे परिवार के लिए 60 किलो अनाज मेरे घर में पंहुचा देते हैं। नांव खींचने पर मुझे गेंहू, धान, मक्का, दाल मिल जाता है यही मेरी पगार है।

चार महिलाओं ने की अपनी बेटियों की भ्रूणहत्या

बालकनामा ब्यूरो

बिहार में डोम जाति की लड़कियों की जनसंख्या घटती ही जा रही है। इसका राज यह है इनके जाति में लड़कियों की सगाई छोटी उम्र में कर देते हैं। लड़के वाले दहेज इतना मांगते है कि इनके माता पिता को घर जमीन बेचकर कर अपनी बेटी को दहेज देना पड़ता है। इसी वजह से अभी हाल ही में चार महिलाओं ने कुछ महीनों पहले ही लड़की को जन्म नहीं दिया और उसकी भ्रूणहत्या कर दी। पत्रकार ने इन चारों महिलाओं से बातचीत की तो पहली महिला ने बताया कि मैंने भ्रूणहत्या इसलिए की, कि अगर मैं अपनी बेटी को जन्म देती तो उसे भी दुख भरी जिंद्री जीनी पड़ती क्योंकि हमारी जाति में छोटी उम्र में लड़कियों की सगाई तो हो ही जाती है लेकिन अगर उस लड़के के साथ किसी भी तरह की कोई भी घटना या फिर उसकी मृत्यु हो जाए तो हमारी बेटियों को पूरी जिंद्री विधवा बनकर ही अपना जीवन गुजारना पड़ता है। इसी तरह पत्रकार ने चारों महिलाओं से मुलाकात कर उनसे पूछा कि आप लोगों को कैसे पता चला कि आपके गर्भ में लड़की ही पल रही है। तो महिलाओं ने बताया कि अरे बाबू ये शहर नहीं है यह एक गांव है यहां पर डॉक्टर सब कुछ बता देता है। तीसरी महिला ने कहा कि हमारे यहां हमारे जैसी ऐसी कई महिलाएं हैं जो पता चलते ही कि मेरे गर्भ में बेटी पल रही है तो वह हमारी ही तरह गर्भपात करवा लेती हैं। यह हमारे धर्म और रीति रिवाज की वजह से हो रहा है। जो कभी बदला नहीं है।



CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

मासूम बच्चों को बनाया जाता है मोहरा

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ हमेशा शोषण होता रहता है। अभी हाल ही में पत्रकार को पता चला कि जो स्टेशन पर बड़े बच्चे रहते हैं, वह छोटे बच्चों से अपराध वाले काम करवाते हैं।

15 वर्षीय बालिका ने बताया कि मैं स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाती हूं। मैंने देखा है जो बच्चे किसी न किसी कारण घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं, उन छोटे छोटे मासूम बच्चों का गलत उपयोग बड़े व्यक्ति अपने फायदे के लिए करते हैं।

एक बच्चा घर से भागकर आ गया था और वह बहुत रो रहा था खाना खाने के लिए वह स्टेशन पर आया वहां आकर एक व्यक्ति से मिला। उसने बहुत नशा कर रखा था जो कि वह दूसरे बच्चों से जबरदस्ती कबाड़ा भी बिनवाता है उस व्यक्ति ने बच्चे से पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो। उसने बताया कि मेरे माता पिता ने मुझे मारकर घर से भगा दिया है इसलिए रो रहा हूं। बहुत तेज भूख भी लगी है।

उस लड़के ने उस छोटे बच्चे से बोला कि अगर तुम को भूख लगी है तो मैं एक काम करने के लिए कहूंगा वह काम करना पड़ेगा। उस व्यक्ति ने बच्चे से बोला कि जो भी व्यक्ति अच्छा दिखे उसकी तुम्हें जेब काटनी है। तब मैं तुम को खाना लाकर दूंगा।



बडे व्यक्ति इसी तरह के हथकंडे अपनाकर छोटे और नए बच्चों को अपने जाल में फंसाते हैं और इसी प्रकार बडे व्यक्ति छोटे नए बच्चों का इस्तेमाल कर रहे हैं। उन छोटे छोटे बच्चों को जेब काटने के लिए तैयार कर रहे हैं। वह बच्चों को इसी तरह नए नए हथकंडो से अपना शिकार बनाते हैं और उनसे पैसे कमाते हैं। इस तरह का दबाव छोटे बच्चों पर हर स्टेशन पर होता है। इसके साथ साथ बड़े लड़के उन छोटे बच्चों को नशा भी करना सिखा देते हैं। इसी तरह छोटे बच्चे अपराध में फंसाए जा रहे हैं।

गांव के स्कूल में नहीं हो रही है अच्छी पढ़ाई

बालकनामा ब्यूरो

बिहार के एक छोटे से गांव बिरौल में गरीब बच्चों के लिए 4 सरकारी स्कूल बने हैं। उस स्कूल की बोर्ड पर यह भी लिखा है कि गरीब बच्चों को पढ़ना है, शिक्षा को बिहार में फैलाना है। पर सच्चाई इसके बिलकुल विपरीत है। जिस स्कूल में बच्चों को पढ़ाना चाहिए, उसी स्कूल के बाहर बच्चे कबड्डी खेलते रहते हैं और स्कूल के अंदर अध्यापक अपनी घरेलू बातें करते रहते हैं कि मेरे घर में कल क्या क्या हुआ था, तुम कल कहां गए थे।

14 वर्षीय बालक ने बताया कि मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ाई करता हूं। पर मुझे अभी तक अपना नाम भी नहीं लिखना आया है। जब पेपर होते हैं तो अध्यापक ब्लैक बोर्ड पर प्रश्न का उत्तर लिख देते हैं और सारे बच्चे देखकर अपनी पेपर शीट भर लेते है। रोज बच्चे पढ़ाई करने आते हैं, लेकिन मुश्किल से एक घन्टे पढ़ते है और अध्यापक बोलते हैं कि चलो खेलने का समय हो गया। आप लोग खेलने जाओ। अगर कोई बच्चा पढ़ाई भी करना चाहता है तो उससे अध्यापक बोलते हैं कि पढ़ाई का ज्यादा बुखार है तुम्हें। 15 साल के बालक ने बताया कि यह बहुत साल से चलता आ रहा है। पर हम बच्चे इस परेशानी से मुक्ति पाना चाहते हैं ताकि बिहार का हर एक बच्चा शिक्षित हो, अशिक्षित न रहे।



छोटी उम्र में निभा रही है आसमा बड़ों की जिम्मेदारी

बातूनी रिपोर्टर आत्मा, रिपोर्टर पूनम

15 वर्षीय आसमा जो अपने माता पिता के साथ रहती थी। आसमां पांच भाई बहन हैं, जो आसमा से छोटे हैं। आसमा की माता की मृत्यु हो गई है। और उसके जो पिता हैं वह बहुत शराब पीते हैं। इसी वजह से वह रोज घर में आने के बाद मोहल्ले में खड़े होकर झगड़ा करते थे। बस्ती के लोग भी आसमा के पापा से दुखी हो गए थे और वह सभी आसमा के साथ ताना शाही करते थे। इसी कारण से आसमा अपने पापा को छोड़कर आपने भाई बहन को लेकर अपनी नानी के साथ रहने लगी। वर्तमान में आसमा अपने भाई बहन का पालन पोषण करने के लिए खुद काम करती है और साथ ही अपनी नानी का भी ध्यान रखती है। क्योंकि उसकी नानी बहुत बुजुर्ग हैं। आसमा अकेले ही अपने भाई बहनों का पेट पाल रही है और घर में अंडर वियर बनाने का काम करती है।

इस काम में इसके भाई बहन भी हांथ बंटाते हैं। आसमा ने बताया कि मैं अंडर वियर का काम एक कंपनी से लेकर बनाती हूं जो मुझे कपड़े और धागे मेरे घर पर ही देकर जाते हैं। मैं पूरे दिन अंडर वियर बनाती रहती हूं। मुझे 12 पीस बानाने पर तीन रूपये मिलते है। पत्रकार ने पूछा कि इतने कम पैसों में कैसे आपके परिवार का खर्चा चलता है? आसमा ने बताया कि हम पांचों भाई बहन सुहब आठ बजे से लेकर रात को 10 बजे तक अंडर वियर बनाते हैं तब जाकर एक दिन में 50 से 60 रूपये तक की कमाई होती है। साथ ही आसमा ने बताया कि मैं यह काम करने के बाद अपने घर का पूरा काम करती हूं और नानी भी बुजुर्ग हैं तो उनकी भी देखरेख करती हूं।

बदसलूकी से परेशान हैं लड़कियां

बातूनी रिपोर्टर नंदनी, रिपोर्टर चेतन

रघुवीर नगर एक ऐसा इलाका है, जहां पर बड़े बूढ़े और लड़कियां सब काम करते हैं। रघुवीर नगर में एक बाजार लगता है जिसको लोग पुराना बाजार या संडे बाजार के नाम से जानते हैं। यह टैगोर गार्डन रोड के पास है। जिसमें ज्यादातर लड़कियां ही दुकान लगाती हैं और सुबह 6 बजे से लेकर दोपहर 12 बजे तक दुकान पर बैठती हैं। यह लड़कियां वह कपड़े बेचती हैं जो घरों से बर्तन देकर कपड़े लाते हैं और उन कपड़ों की अच्छी तरह धुलाई करने के बाद बाजार में जाकर बेचती हैं। इस बाजार में ज्यादातर लडकियां ही काम करती हैं। पत्रकार ने इस बारे में जानने की कोशिश की और उन लड़कियों से मुलाकात कर पता लगाया तो उन्होंने बताया कि इनके माता पिता दुकान पर नहीं बैठते हैं और लड़कियों को ही दुकान पर बैठने के लिए बोलते हैं। 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारे माता पिता इसलिए दुकान पर बैठाते हैं कि कपड़े ज्यादा बिके क्योंकि इस बाजार में लड़के भी आते हैं। लड़कियों को देखकर ज्यादा कपड़े खरीदते है।



17 वर्षीय बालिका ने बताया कि जब लड़के कपड़े खरीदने के लिए आते हैं तो अश्लील बाते बोलते हैं। कहते हैं कि जाने मन कैसे दे रही हो यह कपड़े, इसकी कितनी कीमत है और अपनी भी बता देना। जब हम हाथ बढ़ाकर उन्हें कपड़े देते हैं तो वह लड़के हमारा हाथ पकड़ लेते हैं। हमें बहुत बुरा लगता है पर हमारे माता पिता बोलते है कि कोई बात नहीं बोलने दे, छूने दे ऐसा कुछ नहीं होगा पैसे तो आ रहे हैं। अगर तुम लोग दुकान पर नहीं बैठोगी तो कपड़े कैसे बिकेंगे। अगर कपड़ा नही बिका तो घर में सबको भूखे ही रहना पड़ेगा। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि दुकान लगाने के भी हम लोगों को 50 रूपए ठेकेदार को देना होता है। फिर 12 बजे के बाद हम लड़कियां फेरी पर भी जाती हैं। वहां भी यह लड़के लोग आते हैं अश्लील बातें बोलते हैं। हम लड़कियों को डर लगता है कि कहीं हमारे साथ कोई गलत न कर दे। पर हमारे माता पिता को चिंता नहीं है कि हमारे साथ क्या हो रहा है। उनको सिर्फ पैसे से मतलब है। क्योंकि हम लड़कियां ही उन्हें पैसा कमाकर देती हैं। हमसे ही हमारा घर का खर्चा चलता है।

रक्षक बने भक्षक

पृष्ठ 1 का शेष

कपड़े रखें हैं तुम में से कोई एक बच्चा कपड़े लेने आ जाओ। इतना सुनकर मैं पुलिस वाले के साथ थाने चला गया। पुलिस वाले ने मुझे थाने ले जाकर कहा कि मेरे पैर दबा दे। फिर मैंने पैर दबाना शुरू कर दिया मुझे लगा पैर दबाने पर ही वह मुझे कपड़े देंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ पुलिस वाले मेरे साथ अश्लीलता से पेश आने लगे और मेरा हाथ जबरन अपने व्यक्तिगत अंग तक ले गए। मैं बहुत डर गया और किसी तरह पानी पीने के बहाने से वहां से भाग आया। अगले दिन फिर मेरी ही जैसे किसी दूसरे बच्चे को उन्होंने अपने पास अपने रूम में किसी बहाने बुला लिया और रूम की लाइट बंद करके उसके साथ भी वही अश्लील हरकत करने लगे। वह बच्चा भी मेरी तरह भाग आया। लेकिन वह पुलिस वाले किसी भी बच्चे को नहीं छोड़ते हैं। जिससे भी मौका मिलता है वह बच्चों को बहला फुसलाकर अपने पास बुलाकर इसी तरह अश्लील हरकत करते हैं। यह पुलिस वाले हम बच्चों से बहुत प्यार से बात करते हैं, लेकिन बदले में वह बच्चों के साथ अश्लील हरकत करने लिए बोलते हैं। अगर हम बच्चे उनकी बात नहीं मानते है तो वह दूसरे दिन स्टेशन पर कबाड़ा नहीं बीनने देते हैं और मारकर भगाते हैं।

माता पिता की सख्ती नहीं पढ़ेंगी बेटियां

बालकनामा ब्यूरो

आगरा में एक जगह है जिसे लोग विलोछपुरा नाम से जानते हैं। वहां पर ज्यादा संख्या में मुस्लिम जाति के लोग रहते हैं। उस जगह पर पत्रकार को पता चला कि 25 लड़कियां ऐसी हैं जिनकी उम्र लगभग 13 साल से लेकर 17 साल तक है। इन लड़कियों के माता पिता इन्हें घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं। इनके माता पिता बोलते हैं कि हमारी जाति में लड़की घर से बाहर नहीं जाती है और अगर कहीं जाती भी हैं तो हमेशा बुरखे पहन कर जाती हैं। 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि मुझे पढ़ने का बहुत शौक है कि मैं दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में पढ़ने जाऊं। अभी कुछ दिनों पहले संस्था के कुछ कार्यकर्ता हम लड़कियों को पढ़ाने के लिए आए भी थे लेकिन हमारे माता पिता ने उनसे शर्त रख दी कि मेरी बेटी एक ही शर्त पर आपके साथ पढ़ने के लिए जाएगी जब इनके बीच कोई भी लड़के पढ़ने नहीं आएंगे।

यह सुनकर संस्था के कार्यकर्ता ने बोला कि अब तो लोग लड़का और लड़की को एक सामान मानते हैं। फिर आप लोग ऐसा क्यों बोल रहे हो। उन्होने बोला कि हम अपनी बेटी को दूसरे क बच्चों की तरह बिगड़ते हुए नहीं देख सकते हैं। फिर पत्रकार ने दूसरे दिन बड़ी मुश्किल से उन लड़कियों से बात की। पत्रकार को पता चला कि लगभग 25 ऐसी लड़कियां हैं जो हमेशा घर में ही रहती हैं। अगर यह लड़कियां किसी भी लड़के के साथ बात करते हुए दिख जाती हैं तो इनके माता पिता इनकी बहुत पिटाई करते हैं।

15 साल की बालिका ने बताया कि हमारी जाति में अभी भी पहले जैसी परंपरा है। जैसे पहले लोग हमेशा बुरखे में रहते थे तथा किसी भी व्यक्ति से बात नहीं करते थे। अब यह हमारे साथ भी हो रहा है। इसलिए हमें पढ़ाई नहीं करने देते हैं और न ही हम लड़कियों को बाजार में जाने देते हैं। अगर हमें किसी चीज की जरूरत होती है तो हमारे माता पिता ही हमें लेकर देते हैं। हम लड़कियां इस तनाव जैसी जिंदगी से मुक्त होना चाहती हैं जैसे अन्य जगह पर लोग लड़का और लड़की में भेदभाव नहीं करते हैं वैसा ही यहां भी होना चाहिए। हमारी बस्ती में लड़का और लड़की को लेकर भेदभाव न किया जाए, उन्हें भी बराबर का मौका मिले।

मानसिक रूप से कमजोर बच्चों का करते हैं शोषण

बातूनी रिपोर्टर वर्षा, रिपोर्टर चेतन



कमला नेहरू कैम्प में एक परिवार है जो बहुत गरीब है। उस परिवार में दो ऐसे बच्चे हैं जिनकी दिमागी हालत ठीक नहीं है, जिसमें 13 वर्षीय मनी मानसिक तौर से बहुत कमजोर है मनी सही से बोल भी नहीं सकता। अगर उससे उसका नाम पूछो तो वह अपना नाम तक सही से नहीं बता पाता है। मनी इधर उधर बाहर ही घूमता रहता है। वह अपने घर में नहीं रहता है। बाहर वह कभी कभी मंदिर चला जाता है। जब उसे भूख लगती है तो वह भीख मांगकर खाना खाता है और हमेशा मंदिर पर ही रहता है। मनी को जब उसके माता पिता बुलाने के लिए जाते हैं तो वह भाग जाता है। लेकिन उसके बाहर रहने पर उसे बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

जब वह बाहर रहता है तो लोग उसके साथ छेड़छाड़ भी करते हैं। मनी लोगों से कुछ नहीं बोलता है क्योंकि उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। इसी का लोग फायदा उठाते हैं। लोग जानते है कि यह बच्चा तो बोल नहीं पाता है। इसके साथ हम कुछ गलत भी करेंगे तो किसी से कुछ नहीं बोलेगा। लोग मनी को पैसे का लालच देकर अपने पास बुला लेते हैं और उसके साथ अश्लील हरकत करते हैं। मनी अपने माता पिता को हाथों के इशारों से अपना दर्द बताता है, लेकिन उसके माता पिता समझ नहीं पाते हैं कि उनका बेटा उनसे क्या कह रहा है। बालकनामा के पत्रकार को मनी की परेशानी के बारे में वहां के रहने वाले बच्चों से मालूम हुआ। वहां लोगों से बात करने पर पता चला कि उसके माता पिता दोनों कोठियों में काम करने जाते हैं इसलिए वह अपने बच्चे का ध्यान नहीं रख पाते हैं।

नाले की बदबू से बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

बालकनामा ब्यूरो

आगरा में लोग एक जगह को रसूलपुर के नाम से जानते हैं। उस जगह में 150 से 200 तक झुग्गी झोपड़ियां हैं। उस झुग्गी के पास से होकर एक बड़ा नाला निकलता है उस नाले में बहुत गंदा पानी बहता है। उस नाले में से बहुत गंदी बदबू आती है। उसी नाले के आस पास बच्चे खेलते रहते हैं। पत्रकार को पता चला कि इसी नाले की गंदगी और बदबू की वजह बच्चे बीमार हो रहे हैं। उसके बावजूद भी लोग उस गंदे नाले में घरेलू कूड़ा कबाड़ा दें कते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि अब तक कितने बच्चे बीमार हो चुके हैं तो 15 वर्षीय बालक ने बताया कि एक महीने में लगभग चार से पांच बच्चे बीमार हो चुके हैं, क्योंकि बच्चे उस नाले के पास खेलते हैं और बताया कि जब बच्चे अपने घर में खाना खा रहे होते हैं तो इस नाले की बदबू घर के अंदर तक जाती है, जिससे बच्चों से खाना भी नहीं खाया जाता।

15 साल की बालिका ने बताया कि सबसे ज्यादा सुबह के समय इस नाले में से बदबू आती है। जब शाम होने वाली होती है तो लोग अपने घरों का कूड़ा कबाड़ा इकट्ठा करके नाले में ही फेंक देते हैं। अगर कोई पालतू जानवर मर जाता है तो उसे भी इसी नाले में फेंक देते हैं। जिससे हम बच्चों को बदबू के मारे सांस लेने में भी बहुत परेशानी होती है। शायद बच्चे इसलिए बीमार हो रहे है। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि अब



तो हमारे देश में स्वच्छ भारत अभियान का नारा बड़ी जोर शोर से चल रहा है। इसके बावजूद लोग अपने आस पास सफाई नहीं रखते हैं और इधर उधर कूड़ा कबाड़ा फैलाते रहते है। हमारे यहां के नाले की भी सफाई की जाए और कोई उसमें अपने घरों का कूड़ा कबाड़ा न डाले। अपने मोहल्ले को साफ रखने में एक दूसरे की मदद करें।

मजबूरी में आते हैं बच्चे शहर में काम करने

बालकनामा ब्यूरो



बिहार में 100 में से 80 बच्चों को काम करने के लिए शहर भेजा जाता है, जिनकी उम्र 13 से लेकर 17 साल तक होती है। पत्रकार एक ऐसा बच्चे से मिले जो शहर से काम करके वापस आ गया था। उस बच्चे ने अपने घर की स्थिति बताते हुए कहा कि भईया मेरे घर में कोई कमाने वाला नहीं है और मेरे पापा शहर में काम करते थे। जिनकी शहर में ही मृत्यु हो गई थी। मैं अपने घर में सभी बहनों से बड़ा हूं। मेरी पांच छोटी बहनें हैं, जिनकी शादी करने के लिए मम्मी भी दूसरे के खेतों में काम करने जाती हैं। मैं इसलिए शहर जाकर काम करता हूं ताकि मैं अपनी बहनों की अच्छे घर में शादी कर सकूं क्योंकि शादी करने के लिए लड़के वाले दहेज मांगते हैं। अगर मैं शहर नहीं गया तो मेरी बहनों की शादी नहीं होगी। बच्चे ने बताया कि मेरे चाचा के लड़के भी शहर में कोठी में काम करने जाते हैं और मैं भी उनके साथ यही काम करने जाता हूं और अपने चाचा के साथ शहर में रहता हूं।

बच्चे ने बताया कि छोटे बच्चों को शहर में कोठी में काम करने का ही काम मिलता है और जो थोडे बड़े होते हैं उन्हें शहर में होटल या ढाबों में काम मिल जाता है। छोटे बच्चों को ढाबे वाले काम पर नहीं रखते हैं। इसलिए छोटे बच्चे कोठियों में ही काम करके दो पैसे कमा लेते हैं। लोग छोटे बच्चों को कोठी में काम करने के लिए इसलिए आसानी से रख लेते हैं क्योंकि वहां कोई भी व्यक्ति जल्दी चेकिंग नहीं करता और न ही कोई सवाल करता है घरो में बच्चे छुपे हुए रहते हैं।



लड़कियों ने जताई चिंता : नहीं हैं सुरक्षित

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी, रपोर्टर शम्भू

मंदिर के पास बहुत सी लड़कियां टीन के नीचे रहती हैं। इन लड़कियों को रात को सोते समय बहुत कठिनाई होती है।

पत्रकार ने इन लड़कियों से बात की तो 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि कालकाजी मंदिर के पास एक टीन से बना हुआ घर है उस में हम लड़कियां रात को सोती हैं और वह टीन का घर ऐसा है जो चारों तरफ से खुला हुआ है सिर्फ छत ही है। हम लोगों ने त्रिपाल से कुछ जगह पर पर्दा किया है। पर उससे भी कुछ नहीं होता है। कोई भी उसके अंदर आ जाता है। हम लड़कियों को हमेशा इसी बात को डर लगा रहता है कि बड़े बड़े लड़के शराब पीकर रात को इधर से उधर घूमते रहते हैं। हम लड़कियों को देखते हैं। अभी कुछ महीने पहले की बात है। एक लड़की के साथ एक हादसा हो गया था। तब उस लड़की ने जोर से चिल्लाया। उसके बाद लोग वहां इकट्ठा हो गए और उस लड़के की पिटाई की और पुलिस थाने लेकर गए।

16 वर्षीय बालिका ने पत्रकार से कहा कि भईया क्या हम लड़कियों को सुरक्षित रहने का अधिकार नहीं है। हम लड़कियों को यहां पर नहाने की भी व्यवस्था नहीं है। इसलिए हम लोग जंगल में नहाने के लिए जाते हैं। तब लड़के लोग हम लोगों को देखते रहते हैं। अश्लील बाते भी बोलते हैं कि क्या माल लग रही है। इसलिए हमारे माता पिता हम लड़कियों की छोटी उम्र में शादी कर देते हैं ताकि हमारे साथ कोई गलत न कर दे। और शादी के बाद भी हम लड़कियों पर बहुत अत्याचार होता है। हमारे साथ भी बुरा व्यवहार होता है।

महत्वपूर्ण सूचना

(स्ट्रीट टॉक)

आप भी शामिल हो



कृपया सड़क एवं कामकजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम एवं उनके अखबार बालकनामा का संदेश सुने ये स्ट्रीट टॉक सड़क से जुड़े बच्चों की कहानी उनकी जुबानी 11 अप्रैल 2017 को (अंतराष्ट्रीय स्ट्रीट चिल्ड्रन डे की पूर्व संध्या) को आयोजित होगा। इस कार्यक्रम का संचालन इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर 87-88 लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 शाम 4:30 से 6:00 बजे तक किया जाएगा। हमें समर्थन करने के लिए अपनी शुभकामनाएं हमें इस पते पर badhtekadam1@gmail.com और tweet @ balaknama1 पर भेजें।

पुलिस के भय से मां बाप नहीं भेज रहे है अपनी लडकियों को भीख मांगने



बातूनी रिपोर्टर आरती, रिपोर्टर शम्भू

पुलिस की मदद से सांसी कैम्प की लड़कियों में बदलाव आया है। कुछ महीने पहले सांसी कैम्प की कुछ लड़कियां भीख मांग रही थी। तभी चार व्यक्ति उन लड़कियों को परेशान कर रहे थे। तभी इन लड़कियों को एक पुलिस वाले सड़क पर जाते दिखाई दिए। फिर ये लड़कियां उनके पास दौड़कर गई और उनसे बोला कि भईया चार व्यक्ति हम लड़कियों को बहुत पेरशान कर रहे है और गाली गलौज भी कर रहे है। तो पुलिस वाले ने उन लड़कियों की मदद की और उन चारों लड़कों को मारकर भगा दिया। पुलिस वाले ने उन लड़कियों से पूछा कि आप लोग भीख क्यों मांगते हो और कुछ दूसरा काम क्यों नहीं कर सकते हो?

तो 15 साल की बालिका ने बताया कि भईया हम लड़कियां अपनी मर्जी से भीख नहीं मांगती हैं। हमारी जाति की यह परमपरा है। सभी लड़कियां भीख ही मांगती हैं। दूसरा काम हम लड़कियों को नहीं आता है। पुलिस वाले ने बोला आप लोग पढ़ाई नहीं करते हों? 16 वर्षीय बालिका ने बताया एक संस्था के सहयोग से ओपन बेसिक एजुकेशन से पढ़ रही हूं। पर रोज नहीं जाती हूं क्योंकि रोज इधर उधर भीख मांगती हूं। पुलिस वाले ने उस सभी लड़कियों को समझाया कि अगर आप लोग पढ़ाई नहीं करोगे तो आपको आगे भी इसी तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए अपनी संस्था के कार्यकर्ता सहयोग से पढ़ाई करो और अपने माता पिता को भी समझाओ पढ़ना बहुत जरूरी है।

पुलिस वाले ने कहा कि अगर तुम्हारे माता पिता भीख मांगने के लिए तुम्हें भेजेंगे तो तुम बिना झिझक मुझसे बताओ मैं तुम्हारें माता पिता से बात करूंगा। अगर नहीं माने तो उन्हें बंद कर दूंगा और तुम्हारे माता पिता के खिलाफ कार्यवाही करूंगा। इस बारे में लड़कियों ने घर जाकर अपने अपने माता पिता को बताया इसलिए उनके माता पिता अब पुलिस के भय से उन्हें जबरन भीख मांगने के लिए नहीं भेजते हैं। अब लड़कियां भीख मांगने नहीं जाती हैं। अपने घर में जो काम होता है वही काम करती हैं और संस्था के कार्यकर्ता जिस दिन पढ़ाने के लिए आते हैं उस दिन पढ़ाई करती हैं।

दबाव में मांगते हैं भीख

बालकनामा ब्यूरो



आजमपाड़ा में 60 बच्चे ऐसे हैं जो सप्ताह में 6 दिन घर घर जाकर आटा चावल मांगते हैं और हर शनिवार मंदिर पर जाकर पैसे मांगते हैं। जब पत्रकार इन बच्चों से मिले तो बच्चों ने बताया कि हम बच्चे अपनी मर्जी से भीख मांगने नहीं जाते हैं हमारे माता पिता बोलते हैं कि भीख मांगने जाओ। अगर हम बच्चे भीख मांगने से मना करते हैं तो हमारे माता पिता खाने के लिए खाना भी नहीं देते हैं और रात को भूखा सुला देते हैं। इसी डर से हम बच्चे सप्ताह में 6 दिन इधर उधर से आटा चावल मांगते रहते हैं। हम बच्चों पर दबाव रहता है कि एक दिन में कम कम से 5 किलो आटा चावल मांगकर नहीं लाए तो हमारी बहुत पिटाई की जाएगी।

पर हम बच्चों को मुश्किल से एक दिन में दो किलो भी नहीं मिलता है। हमारे माता पिता यह बात समझते ही नहीं हैं। जब शनिवार का दिन आता है तो हम बच्चे पैसे मांगकर देते हैं। पैसे नहीं मिलने पर गाली से बात करते हैं कि सारे दिन खेलते रहते हो इसलिए पैसा नहीं मिला और हम बच्चों को हमेशा डर लगा रहता है कि अगर आज पैसे नहीं मिलेंगे तो आज रात भी हम बच्चों को खाना नहीं मिलेगा। इसलिए हम बच्चे शनिवार को मंदिर और बाजार जैसी भीड़भाड़ वाली जगहों पर भी भीख मांगने जाते हैं। तब भी लोग पैसे नहीं देते हैं उनके सामने रोते भी हैं तो लोग धक्के मारकर भगा देते हैं। हमारे माता पिता को हमारी कोई परवाह नहीं है कि हमारा बच्चा पूरे दिन किस हालात से गुजकर दो पैसे मांगकर लाता है।



पवन का संघर्ष

बातूनी रिपोर्टर पवन, रिपोर्टर शम्भू

12 वर्षीय पवन सड़क पर तिरपाल से घर बनाकर रहता है। पापा की मृत्यु होने के बाद से ही उसने रिक्शा चलाने का काम शुरू कर दिया था। पवन अपने परिवार के साथ लोदी रोड पर तिरपाल डालकर रहता है। पवन ने बताया कि जब से मेरे पापा का मृत्यु हुई है तब से मुझ पर जिम्मेदारी आ गई है। मुझे अपनी मम्मी और बहन की देखरेख करने के लिए काम करना पड़ता है। इसलिए मैं दो पैसे कमाने के लिए कोई भी काम कर लेता हूं। मैं फौजी कैम्प में बर्तन धोने का भी काम करता हूं। इसके अलावा मैं रिक्शा भी चलता हूं और समय समय पर शादी पार्टी का काम मिलने पर मैं शादी पार्टी के काम पर भी जाता हूं।

पवन ने बताया कि सबसे ज्यादा परेशानी मुझे रिक्शा चलाने में होती है क्योंकि जब मैं एक व्यक्ति को अपने रिक्शा पर बैठाता हूं तो कम परेशानी होती है लेकिन जब दो लोग रिक्शा पर बैठते हैं तो मेरे छाती में दर्द होता है ऐसा लगता है कि अब मैं रास्ते में बेहोश हो जाऊंगा। लेकिन मैं अपनी हिम्मत बनाए रखता हूं। कड़ी मेहनत करके पैसे कमाता हूं, जिससे मेरी मम्मी और बहन भाई को भीख न मांगना पड़े। इसलिए मैं सभी काम करता हूं। मेरे जैसे ना जाने ऐसे कितने बच्चे हैं जिनको मेरी तरह संघर्ष करना पड़ता है।

42 बच्चों ने जानें अपने अधिकार

बातूनी रिपोर्टर यशिका, रिपोर्टर चेतन



यशिका रघुवीर नगर बी 3 में रहती है। यशिका कहने को तो 11 साल की है लेकिन वह अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट की एक होनहार लीडर भी है। इतनी कम उम्र में वह बच्चों को बच्चों से जुड़ी जानकारी देती है तथा उन्हें उनके अधिकारों के बारे में भी बताती है। वह बच्चों से जुड़ी हेल्पलाइन नम्बर के बारे में भी बच्चों को बताती रहती है कि कैसे हम अपनी समस्याओं के चलते इस पर मदद ले सकते हैं। और दूसरे बच्चों की भी मदद कर सकते हैं। अभी हाल ही में यशिका ने एक सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराई, जिसमें 42 सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने भाग लिया। मीटिंग के दौरान यशिका ने बाल साथियों को बच्चों के अधिकारों के बारे में बताया कि कैसे तेजी से रघुबीर नगर में मासूम बच्चों से बाल मजदूरी कराई जा रही है। जिससे उनके अधिकारों का हनन हो रहा है। इसलिए मैं आप सभी बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त होने का तरीका और अपने अधिकारों को कैसे पाना है यह बताने जा रही हूं। अगर कोई बच्चा कहीं मुसीबत में फंसा हुआ हो तो आप मदद कर सकते हो जैसे कि एक बच्चे को कोई जबरदस्ती काम करा रहा है तो आप 1098 पर कॉल करके उस बच्चे की मदद कर सकते हो। अगर कोई बच्चा कोठी या लेबर का काम करता है तो भी आप 1098 पर कॉल कर सकते हो। यह नम्बर चाल्डलाइन का है। यदि आपको कोई भी बच्चा मुसीबत में दिखे तो आप उसकी मदद कर सकते हो।

भीख मांगने वाले बच्चे भी चाहते हैं पढ़ाई करना

बातूनी रिपोर्टर अर्जुन, रिपोर्टर शम्भू

तुगलकाबाद स्टेशन के आस पास रहने वाले कुछ बच्चे ऐसे हैं जो पूरे दिन भीख मांगते रहते है। इन बच्चों की उम्र आठ से दस साल है। यह बच्चे मजबूरी में आकर भीख मांगते हैं। इन बच्चों के माता पिता भी भीख मांगने का ही काम करते हैं। बच्चों ने पत्रकार को बताया कि जब हम बच्चे भीख मांगने के लिए जाते हैं तो लोग भीख नहीं देते हैं, गाली गलौज करते है। पूरे दिन मांगने पर 15 से 20 रूपये मिलता है। लेकिन इन बच्चों को पढ़ाई करने का जुनून है। यह सभी बच्चे चाहते हैं कि मैं भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में जाकर पढ़ाई करूं। पर इन सभी बच्चों के पास कोई भी आईडी.प्रूफ



नहीं है। जिसकी वजह से इनका स्कूल में दाखिला नहीं हो पा रहा है।

इसलिए ये बच्चे चाहते हैं कि कोई दीदी भैया हम बच्चों को घर पर ही आकर पढ़ाए, तभी हम बच्चे आगे पढ़ सकते है। पत्रकार ने खुद इन बच्चों का टेस्ट लिया तो देखा कि वास्तव में ये बहुत प्रतिभाशाली हैं। 10 वर्षीय अर्जुन ने बताया कि हम सभी बच्चे भीख मांगना नहीं चाहते हैं। हम बच्चे भी पढ़ाई करना चाहते हैं पर हम बच्चों की कोई मदद नहीं कर रहा है, जिसके वजह से हम बच्चे पढ़ाई करके आगे बढ़ सकें। जब भी हम बच्चे भीख मांगने के लिए जाते हैं तो लोग हम बच्चे से गलत व्यवहार से बोलते हैं कि तुम लोगों का तो रोज का ही धन्धा है और इसके अलावा कुछ और काम तो कर ही नहीं सकते सिर्फ भीख ही मांगना। हमारी पहचान न होने की वजह से हमारा स्कूल में भी दाखिला नहीं हो रहा है हम बच्चे कैसे पढ़ें।

एकता से मिला मेहनत का फल

बातूनी रिपोर्टर टंगा, रिपोर्टर चेतन

दक्षिणी दिल्ली की एक बस्ती के बच्चे कामकाजी हैं और शिक्षित नहीं हैं। यही कारण है कि यह काम में बहुत व्यस्त रहते हैं। जब सुबह होती है तो बच्चों के कंधों पर स्कूल बैग न होकर इनके कंधों पर कबाड़ा बीनने वाला बोरा होता है और यह बच्चे शिक्षा से संबंधित कुछ भी नहीं जानते हैं। सिर्फ इतना ध्यान रखते हैं कि अगर कबाड़ा नही मिला तो हमारा घर का खर्चा कैसे चलेगा। इसलिए यह अलग अलग जगहों पर घूम घूमकर लोहा, प्लास्टिक और बोतल बीनने का काम करते हैं। ज्यादातर बच्चों ने बताया कि जब हम कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो हम लड़के अलग हो जाते हैं और लड़कियां अलग हो जाती हैं। हम बच्चे दो समूह में बंट जाते हैं और अपना अपना समूह बनाकर कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं। ऐसा हम बच्चे इसलिए करते हैं ताकि कोई भी व्यक्ति बच्चों के साथ किसी भी तरह से टेड़छाड़ न कर सके।

बच्चों से बात करने पर पता चला कि जब वह अकेले कबाड़ा बीनने जाते थे तो उन्हें बहुत परेशानी होती थी।



क्योंकि वह अपना कबाड़ा एक जगह पर जमा कर देते थे और निगरानी करने वाला कोई नहीं रहता था और उनका कबाड़ा चोरी करके कोई और बेच देता था। जिसके कारण घर पर भी मार पड़ती थी। लेकिन जब से इन बच्चों ने अपना समूह बनाया है और यह इकट्ठा होकर कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं तो इनके पास कबाड़ा भी भारी संख्या में जमा हो जाता है तथा कोई भी व्यक्ति इन बच्चों का माल चोरी नहीं कर पाता है। क्योंकि अब यह बच्चे एकजुट होकर काम करते हैं। बच्चों ने कहा कि हम बच्चे एक दूसरे की हिम्मत बने रहते हैं। जब से हमारा समूह में काम करना शुरू हुआ है तभी से हमारा कबाड़ा अब कोई चोरी नहीं करता है हमारी मेहनत का हमें आधा फल नहीं, बल्कि पूरा फल मिलता है। एकता से ही हम बच्चों में हिम्मत आई है और ज्यादा फायदा भी होता है।



स्टेशन पर रहने वाले बच्चे चाहते हैं पुलिस बने हमारे मित्र

बातूनी रिपोर्टर सलमान, रिपोर्टर शम्भू

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने बताया कि कुछ दिनों से हम बच्चों को पुलिस बहुत परेशान कर रही है। स्टेशन पर जब हम बच्चे अपने कपड़े धोते हैं तो मारने लग जाते हैं। वह बोलते है कि स्टेशन पर जो पानी होता है वह गाड़ी साफ करने के लिए होता है और तुम लोग पानी बर्बाद कर रहे हो। लेकिन हम बच्चे पानी बर्बाद नहीं करते हैं। जितने पानी की जरूरत होती है उतने ही पानी का इस्तेमाल करते है। और जब कोई और लोग पूरे दिन कपड़े धोते हैं या नहाते रहते हैं उसे कुछ नहीं बोलते हैं। लेकिन पुलिस वाले जैसे ही हम बच्चों को देखते हैं वैसे ही डंडे लेकर हम बच्चों के पीटे मारने के लिए दौड़ते हैं।

15 वर्षीय बालक ने बताया कि पहले पुलिस वाले बहुत अच्छे थे। पर जब से नए पुलिस वाले आए हैं, तब से हम बच्चों को बहुत परेशान कर रहे हैं। पहले के पुलिस वाले हम बच्चों से बोलते थे कि हमेशा साफ सुथरा रहा करो और कभी नहीं मारते थे। हम बच्चों की परेशानियों को सुनते थे और हम बच्चों की हमेशा मदद भी करते थे। अगर हम एक दिन भी संस्था के कार्यकर्ता के पास पढ़ाई करने नहीं जाते थे तो खुद आकर मिलते थे और हम बच्चों से पूछते थे कि बच्चों आप लोगों को कोई परेशानी तो नहीं है। स्टेशन पर जो नए पुलिस वाले आए हैं वह बच्चों को बहुत सता रहे हैं और डंडों से मारते हैं।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने जाना एकता क्या होती है

बातूनी रिपोर्टर रोहित, रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशन पर जो बच्चे अपने गुजारे के लिए कूड़ा कबाड़ा बीनने का काम करते हैं और दिन भर नशे में लिप्त रहते थे, इन बच्चों को पता ही नहीं था कि एकता क्या होती है। यह बच्चे आपस में हमेशा लड़ते झगते रहते थे इसलिए बालकनामा के पत्रकार ने सभी बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की और सबसे पहले बच्चों से ही पूछा कि एकता किसे कहते है? 15 वर्षीय रोहित ने बताया कि भैया एकता क्या होती है? बच्चों को बिलकुल पता नहीं था, क्योंकि बच्चे हमेशा स्टेशन पर अपने कामों में लगे रहते हैं। इन्हें कहां से पता होगा कि एकता क्या होती है। बच्चों



ने कहा कि मैंने तो पहली बार यह नया शब्द सुना है। फिर पत्रकार ने सभी बच्चों को समझाया कि एकता का मतलब होता है कि हम एक साथ है। अगर हम बच्चों पर कोई परेशानी आती है तो हम सभी को मिलकर सामना करना चाहिए। उसे ही एकता बोलते हैं फिर पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि अब आप लोग बताओ एकता किसे कहते हैं। बच्चों ने कहा कि अब हम समझ गए कि जैसे हम बच्चों में से बहुत बच्चे भीख मांगते हैं उनको किसी दिन कुछ भी नहीं मिलता है तो हमारे पास पैसे होते हैं उस पैसे में से हम बच्चे उनको खाना खिला सकते हैं। ताकि वह भूखे न रहें। और जब कोई व्यक्ति हम बच्चों को मारते पीटते हैं तो उसका मुकाबला भी कर सकते है। बच्चों ने निर्णय लिया कि आज के बाद हम एक दूसरे की मदद करेंगे और हम जो थोड़ा बहुत नशा करते हैं उसको छोड़ने का कोशिश करेंगें।

सपना की हिम्मत को सलाम

बातूनी रिपोर्टर सपना, रिपोर्टर शम्भू

16 वर्षीय सपना बदरपुर बॉर्डर के पास एक झुग्गी में रहती है। पिता का नाम रामकुमार है। माता का नाम कमली है। दोनों घर का खर्चा चलाने के लिए काम करते हैं। सपना के दो छोटे बहन भाई हैं, जो स्कूल जाते हैं। सपना घर में बड़ी है इसलिए स्कूल नहीं जाती है। घर का काम करती है। साथ ही वह कोई भी त्यौहार आने पर भीख मांगने के लिए बाहर भी जाती है।

ऐसे ही सपना दशहरा पर कन्या खाने के लिए कालकाजी मंदिर गई थी तभी सपना ने देखा कि एक छोटा बच्चा जिसकी उम्र लगभग 7 से 8 साल होगी, वह मम्मी मम्मी कहकर रो रहा था।

तभी सपना वहां पर गई और उस बच्चे से पूछा कि बाबू आप क्यों रो रहे हो?

उस बच्चे ने बताया कि मैं अपने मम्मी के साथ मंदिर आया था पर मेरी मम्मी मिल नहीं रही है। फिर सपना



ने हर जगह पर खोजना शूरू किया जो सपना के साथ लड़कियां कन्या खाने के लिए आई थीं उन्होंने भी बच्चे के माता पिता को खोजना शुरू कर दिया। एक घंटे बाद बच्चे के माता पिता कमल मंदिर के पास मिले। उनसे मिलने के बाद पता चला कि वह भी अपने बच्चे को इधर उधर ढूंढ रहे थे।

सपना ने बच्चे को उनके माता पिता को सौंप दिया और कहा कि आंटी जी आप अपने बच्चे का ध्यान रखो क्योंकि अभी दशहरे का समय है भीड़ भाड़ बहुत है। वह बच्चे के माता पिता को समझाकर चली आई। सपना इसी तरह अपने घर के आस पास रहने वाले बच्चों को भी समझाती है। उन्हें जुआं खेलने को मना करती है। कहती है जुआं मत खेलो यह अच्छी बात नहीं है, बल्कि स्कूल जाया करो। सपना ऐसी बस्ती में रहती है, जहां माता पिता अपने बच्चों को घर पर छोड़कर काम करने के लिए बाहर जाते हैं और सपना इन सभी बच्चों का बाखूबी ध्यान रखती है। क्योंकि वहां पर बहुत रेलगाड़ियों का आना जाना लगा रहता है और बच्चे अकसर वहां आस पास खेलते रहते हैं। सपना चाहती है कि मुझे भीख मांगने से किसी तरह छुटकारा मिल जाए।

मजीदा पहुंची सुरक्षित शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर सलमान, रिपोर्टर शम्भू

15 वर्षीय मजीदा जो अपने घर से भागी हुई थी वह पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आकर रहने लगी थी। जब पत्रकार मजीदा से मिला तो मजीदा ने अपनी दुख भरी कहानी बताते हुए कहा कि दो साल पहले मेरे पापा की मृत्यु हो गई थी उसके बाद मेरी मम्मी ने दूसरी शादी कर ली थी। लेकिन जो सौतेले पापा हैं वह हम तीनों भाई बहन को बहुत मारते थे। मजीदा ने रोते हुए कहा कि मेरे सौतेले पापा ने मुझे कोठी में काम पर लगवा दिया था। जहां मैं पूरे दिन कोठी में काम करती रहती थी जो भी पैसे मेरे काम के मिलते थे वो पैसे मुझे नहीं देते थे, क्योंकि महीना पूरा होने से कुछ दिन पहले ही मेरे सौतेले पापा कोठी जाकर पैसे ले आते थे। जब मुझे किसी चीज कि जरूरत होती थी तो मुझे पैसा नहीं देते थे। वह बोलते थे कि तुम्हारे मालिक ने पैसे नहीं दिए। यह सुनकर मुझे बहुत बुरा लगता था, क्योंकि मैं जानती थी कि पूरा महीना होने से पहले ही मेरे सौतेले पापा पैसे ले आते थे। पर मेरे से झूठ बोलते थे कि कोठी के मालिक ने पैसे नहीं दिए।



मैं अपनी मम्मी से भी बोलती थी कि मुझे पैसे कि जरूरत है। यह लोग मेरे दोनों भाई बहन को भीख मांगने के लिए भेजते थे। जिस दिन उन्हें भीख नहीं मिलती थी तो उन्हें खाना भी नहीं देते थे। वह उन्हें जबरन भीख मांगने भेजते थे नही जाने पर गाली गलौज करते थे। इसलिए मैं घर से भागकर आ गई। मजीदा ने बताया कि जब मैं घर से भागी थी और स्टेशन पर आई तो स्टेशन पर मुझे बहुत डर लग रहा था। मैं वहां रोने लगी कि मैं कहां जाऊं तब मेरी मुलाकात सलमान से हुई सलमान ने मुझे अपने बारे में बताया कि मैं भी स्टेशन पर रहता हूं। साथ ही यह भी बताया कि मैं बालकनामा अखबार का बातूनी रिपोर्टर भी हूं। मैं दूसरे बच्चों की मदद करता हूं। फिर मुझे सलमान ने खाना खिलाया। यह सुनने के बाद पत्रकार और सलमान ने मिलकर मजीदा को संस्था के कार्यकर्ता के सहयोग से शेल्टर होम भिजवा दिया।

बड़े व्यक्ति बच्चों पर दिखा रहे हैं दादागीरी



बालकनामा ब्यूरो

रेलवे स्टेशनों पर जो बच्चे रहते हैं, वह अपने गुजारे के लिए रेलगाड़ी में से बोतले उठाने का काम करते हैं। एक बच्चे ने पत्रकार से बोला कि भईया यहां पर हम बच्चों को बहुत बड़ी समस्या है जिस रेलगाड़ी में हम बच्चे बोतल बीनने के लिए जाते हैं वहां दो व्यक्ति हमारे साथ मार पीट करके हमें भगा देते हैं। जो भी रेलवे स्टेशन पर एक्सप्रेस गाड़ी आती है उन सभी गड़ियों पर उन दोनों व्यक्तियों ने कब्जा कर रखा है। इन दोनों की ही गुंडा गर्दी यहां पर चलती है। यह दोनों हम सभी बच्चों को किसी भी गाड़ी में कबाड़ा बीनने के लिए नहीं जाने देते हैं। अगर हम बच्चे गलती से भी किसी गाड़ी में चले गए तो बहुत बुरी तरह से मारते हैं। इसलिए हम बच्चों ने रात को आने वाली रेगाड़ियों में से बोतल उठाने का काम शुरू कर दिया है।

अब रात में भी बोतल उठाने पर हमें मार खानी पड़ती है। पुलिस वाले मारते हैं। कहते हैं कि तुम लोग रात में कबाड़ा बीनने के लिए इसलिए आते हो ताकि तुम रेलगाड़ी में सफर कर रहे लोगों का सामान चोरी कर सको। हम सभी बच्चों ने पुलिस वाले को पूरी बात बताई और कहा कि दिन में हमें रेलगाड़ी में से बोतल उठाने नहीं दिया जा रहा है। स्टेशन पर दो व्यक्ति हमें रेलगाड़ी में काम नहीं करने दे रहे हैं। अगर हम काम करते हैं तो वह हमें बुरी तरह मारते हैं। यही वजह है कि हम रात में रेलगाड़ी में बोतल बीनने के लिए आते हैं फिर भी पुलिस वाले ने बच्चों की बातों का विश्वास नहीं किया और एक बच्चा जिसकी उम्र 13 साल है उस बच्चे को बुरी तरह मारने लगे।



नाटक करके स्टेशन के बच्चों को दिया संदेश

बातूनी रिपोर्टर सलमान, रिपोर्टर शम्भू

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को नाटक के माध्यम से बताया गया कि किस प्रकार बच्चे अपने घर से भागकर स्टेशन पर अपना जीवन गुजारने लगते हैं और किस प्रकार वह नशे की अंधेरी दुनिया में शामिल हो जाते है। पहले बच्चे अपने घर में रहते हैं लेकिन वहां भी उनके साथ माता पिता या परिवार के अन्य सदस्य उसके साथ शोषण करते हैं। इसलिए बच्चे घर से परेशान होकर स्टेशन पर भागकर आ जाते हैं। यहां आने के बाद वह बच्चा खाना खाने के लिए इधर से उधर भटकता रहता है और उस बच्चे की कोई भी मदद नहीं करता है। इसलिए वह दूसरे बच्चों को जैसा करते देखता है, वह भी वैसा करने लगता है, जैसे कबाड़ा बीनना और चोरी करना। जब यह रात दिन स्टेशन पर ही रहने लगते हैं तो दूसरे बच्चों को देखकर धीरे धीरे नशा भी करने लगते हैं। एक दिन ऐसा आ जाता है कि वह बहुत नशा करने लग जाते हैं। नाटक द्वारा नशे से क्या नुकसान होते हैं इसके बारे में बच्चों को जागरूक किया गया। बच्चों को एक संदेश भी दिया गया कि अगर कोई भी बच्चा नशे की लत में फंस जाता है तो वह अपने जीवन को किस प्रकार नष्ट कर लेता है और बताया कि अगर लगतार 6 महीने तक बच्चा नशा करता है तो जान का खतरा भी हो जाता है। 15 वर्षीय सलमान ने बताया कि अगर कोई बच्चा घर से भागकर स्टेशन पर आ जाता है तो वह नशे की अंधेरी दुनियां में न फंसे, बल्कि जल्द जल्द से शेल्टर होम या फिर अपने घर वापस जाने की कोशिश करे।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...



डी.सी. वैदिक इन्टर कॉलेज स्कूली बच्चे मानव श्रृंखला करते



बालकनामा के स्टेकहोल्डर बालकनामा लेते हुए



Police interact with street children to end 'cop fear'

ABHAY SINGH
New Delhi, 20 February

"If you are in trouble, inform us, we will help you," Delhi Police has told street children. They were trying to make this most vulnerable group of homeless children understand how they work.

"It was a great thing when the police uncle told me that they are there to help us if we face some harassment," said 14-year-old Nagma, a homeless girl living in the shelter home in Sarai Kale Khan.

Talking to The Statesman, the homeless children said that they had earlier feared police as they had no knowledge about police work. They have only seen police arresting them. "Before meeting them, some one had warned me that police would arrest me if I frightened but after meeting them I know that police will arrest only bad people," said Sangeeta, another homeless girl, living in the shelter. During their visit to Lajpat Nagar police station in southeast Delhi, station house officer (SHO) Kishan Pal welcomed these children and listened to their problems.

A senior police officer told this newspaper that children had some misunderstanding about police as they have never talked to us but after meeting us they were very happy. "They are a vulnerable lot and we have given them confidence that if they see anything wrong happening in the society or any one harasses them they could come to us for any help," said the officer.

The street children said that police have told them if they found anyone taking drug or beat them, they should just inform the police.

According to NGO Chetna, policeman is the first person who comes in contact with street children on behalf of state. Children often face abuse by locals. This is the right time for police and children to come together and to have a trustworthy relation.

"We approached six Delhi police stations during the police week and received overwhelming response. More than 200 children have already benefited. Children also expressed willingness to meet the police commissioner and we are in touch with his office," said Sanjay Gupta from Chetna.

बालकनामा की कवरेज एन.डी.टीवी न्यूज चैनल में





अभिनेत्री दिया मिर्जा के साथ बालकनामा अखबार के पत्रकार



सड़क एवं कामकाजी बच्चों की कवरेज द स्टेटमैंट न्यूजपेपर में

Balaknama: A Turning Point In The Lives Of Children Living On The Streets -...
everylifecounts.ndtv.com

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471

Issue – 63 April, 2017

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

THIS IS OUR TIME, PLEASE DO HEAR US

STREET CHILDREN MESMERIZE AUDIENCE THROUGH STREET TALK



On the eve of International Street Children's Day, ten street and working children spoke at Street Talk, a live talk by street and working children. The speakers mesmerized an auditorium full of three hundred people at India Islamic Cultural Centre by sharing their difficult life journeys. They spoke about what went wrong in their lives, and how they could have been in a better position if they had been helped at the right time. At various instances, the audience choked with awe and got a deep sense of how dedicated these children are despite facing all hardships. A senior government official felicitated all the speakers. Five children were given bravery awards for demonstrating courage and honesty. One such awardee was a 14 year old child living at a railway platform who handed over to the police all the lost and found items in the train. The speakers expressed their desired to be talked about in Mann ki Baat by the honourable Prime Minister.





As the program was going to start, many people had turned up in numbers to witness and hear the speeches of the children who had an achievement story to tell. There were various dignitaries, well wishers and children from in an around the city present in the event.



And the auditorium was getting filled with audience to witness and hear the most awaited speeches of those 10 street children who had lots of things to tell about their achievements.



Before entering the auditorium hall the dignitaries and the guests had done their registration, after which they were given a Balaknama newspaper (Newspaper for and by street Children) and a card where the name of the speakers were written.



As the audiences were filling the auditorium, the speakers were making themselves prepared and also making themselves confident on the backstage for the speeches, as it was only a matter of few minutes for the program to start.

Sanno took the responsibility of anchoring and welcomed everyone with a brief introductory speech. After that she asked the children to come one by one and speak out their heart infront of the audiences.









Pictures of the children while they were delivering their speeches



After the speech of the children was over, Jyoti who was also a street child before had spoken a few words of her achievements which she had made in her life till now. She is now a contestant for the upcoming MCD election, in Delhi.

Then one by one all the children spoke out their heart with confidence which made the audiences get a clear picture of the street children's life. The children also gave the audience a chance to ask a few questions after their respective speeches and the audiences came up with some fine questions to which the children replied delightfully and which made the event more remarkable.







Pictures of the audiences while they were asking questions to the speakers



The dignitaries, guest, well wishers and the children are all deep into the never heard real life stories of the children.

continued on pg. 2

EDITORIAL

Dear friends,

Greetings!!

Best wishes to all of you from Street and Working Children on the occasion of International Street and Working Children's Day.

This time also street children's newspaper Balaknama has brought many real stories in front of you with its new edition.

This is great news for street and working children that street and working children have got recognition in UNCRC and this has been accepted that there are street and working children in world and solutions need to be found out for their problems.

We are very grateful that Children have got the recognition and they would not be neglected now and something better would be done.

We, Street and Working children are bringing the same thing (this is now our time. Are you listening to us) and some other real stories fighting with their struggle.

We hope that you will like this edition and please give your suggestions on above address.

The Editorial Board

Children staying under flyovers remain vulnerable

2-3 CHILDREN GOES MISSING EVERY YEAR

Balaknama Bureau



Children come to Delhi to work with their parents from Bihar and Rajasthan. These children are compelled to stay under flyovers as their parents do not have sufficient money to stay in safe homes. Reporter got to know that children start coming to stay under flyovers one month before winters start. 2 children went missing during this. Reporter asked parents, "How did you not get to know that your children got kidnapped?" Parents replied, "We get so tired working the whole day that we do not get to know what is happening around us while we sleep". Reporter asked parents, "Did you get your complaint registered in Police Station regarding this?" Parents said, "We went to police station but they do not listen to us and rather blame us that we do not take care of children and wait till they are kidnapped and then come to them crying. They ask us to go away from there". Reporter got to know from other children that 2 to 3 children go missing every year and the shocking thing is that it is still not known who kidnaps children and what happens to that child after kidnapping.

DRUNKEN PEOPLE GET NAKED AND CREATE RUCKUS CHILDREN FED UP OF THIS HABIT

Balaknama Bureau

There are around 1000 to 1500 people staying in slums at Lawrence road who are involved in gambling the whole day. Some workers from an organization come in the evening to teach children whose family condition is not good and that time only these people start playing their game. They also indulge in obscene talks. Children said, "We face many difficulties in our studies. These people get drunk and shout a lot. When we ask them to stop their game while we study and play later, they ask us what you will do by studying, and you will also do gambling like us. Nothing happens by studying. At times they also get naked in front of us while playing in their inebriated state. They fight with our parents also if we complain to them. They tell our parents that this is their place also and will do whatever they want. They do not care". Children told the reporter, "These people not only are involved in gambling but they take drugs also in front of us and take off their clothes in their lost conscious. So, we children want that we get a solution for this problem soon".



THIS IS OUR TIME, PLEASE DO HEAR US

from page 1

After the speeches were over, the dignitaries were invited to the stage and were asked to give the awards and the token of love to the children.





Dignitaries Rashmi Sahani (Left) and Bharti Sharma (Right) along with Sanjay Gupta felicitating the children by giving the Bravery Awards who had done some bravery act to save and secure someone's life. They were being praised by the dignitaries for their act. They were an inspiration to all the children present in the event.



So, with this the event had concluded by providing the children a platform to share their thoughts which will boost their confident more in the upcoming time.





Dignitaries Sumedha Sharma, Country Director, Ipartner India (picture on the left) felicitating the speakers by giving them a small prize as a "Token of Love", who had given their speeches infront of the audiences.



In the end, Jyoti who was also a speaker of the event had given a vote of thanks to each and everyone who made the event a successful one.

During the program while delivering the speeches, the children had made some certain key demands for the welfare of the street and working children which are being ensured to solve. They are:

- Let every child on the street has to get access to their birth certificate and UID.
- Let make it a point that not a single child should go missing from the streets.
- Let the children in the streets should have an access to banking facilities for saving their money they earn.
- Let all the children in the street get equal respects and dignity.
- Let the children have access to proper shelters or a place where the life of the children remain safe and sound.
- Let the children to understand the vulnerability of their existence and help to find better solution to such problems.

PARENTS ADOPTING SUPERSTITIOUS WAYS TO TREAT CHILDREN'S ITCHING

Talkative Reporter Guddi, Reporter Vijay Kumar

Some people staying in Juggi slum of ShramVihar Lucknow, capital of Lucknow believes that if any child has itching problem then get that child bath in the dirty canal and his all problems will be gone. If any child here suffers from any skin itching problem, he has to bathe for two hours in the dirty canal. Badhtekadam and Balaknama reporter Guddi spoke to the people around.



Rani Devi said, "This canal is connected to sewers of all colonies of Lucknow so you can understand how dangerous it could be for children's health". RajuPrajapati said, "We even try to explain people of this slum but they do not listen to us and rather tell us that we also bathe in the same canal when we have itching so we get our children also bathe in the same canal and their itching goes away". 13 years old Rahul said, "Whenever we have any kind of itching our Parents force us to bathe in this dirty canal and we bathe for around two hours in it. While we bathe sewage and foul smell enter into our mouth due to which children are even found unconscious but we are helpless". 32 years old Ram said, "Children had faced many serious problems after bathing in dirty water but children's parents do not care at all. They just believe that itching goes away by bathing in dirty water".



DREAMS LOST IN CHILD LABOR

Talkative Reporter Shravan, Reporter Chetan

8 years old Shravan works as a motor mechanic in a garage. Reporter asked Shravan, "How do you work at such a young age?"Shravan said, "I work because of my family's financial condition is bad. My father works stands under the underpass at Lawrence road and pushes the heavy loaded rickshaw up to the end. He gets Rs.20 to 30 from it and at times he is not able to earn anything. That is why out of compulsion I work her in garage". He added, "I face many difficulties while working in the garage. Parts which I repair for the cars are very heavy. I am not able to pick them. Police also come to this garage to get their car repaired but they also ignore me. I work here only because of my family. I also had a dream of studying and getting a good job but I am not able to study with my work. If my parents would have some permanent job then maybe I would not have to work at garage shop and I would have also been going to school".

RAG PICKING GIRLS LURED FOR SEXUAL FAVORS

Balaknama Bureau

Girls gave serious information to Balaknama Reporter this time. There are five boys in the market who stalk girls and then indulge in dirty talks with them. Girls said, "These boys keep eyes on rag picking girls and then try different ways to trap them. They ask different questions from girls like why do you pick rags, how much money do you get for this work, how much money do you need in a day? We will give you the money which you require but nobody of you will do the work of rag picking now. When girls ask them back that why do you want to help us? Boys reply that we are not helping you, we just do not like when you pick rags. This way they trap the girls and later they start offering them food. When the girls start falling for these boys,



they start coming to girls and start doing obscene things with them and touch their private parts. And when girls object they ask them to keep quiet and tell them if you will stop us we will not give you money. These boys have targeted around 9 girls till now and then do obscene things with them". Reporter told all girls and their parents, "Do not send your girls alone to pick up rags and told girls about the child line helpline number 1098 where you can complaint about those boys and you can tell the police also. And if you want to keep your complaint secret then Police and child line will keep your name and address secret. They will arrest those boys and send them to jail. This way they will not target any girl in future".

Children threatened, physically abused openly

Balaknama Bureau

15 years old girl stays with her family in a slum. She sells charger and ear phones on footpath in Karol Bagh for survival of her family. Her parents also do the same work. She has an elder brother who stays away after getting married. There is always some kind of brawl happening in her slum. Recently, a neighbor started fighting with her parents and started abusing physically also and when the girl tried to intervene in between they started beating her also. Girl says,



"There was a policeman also standing there when I was being beaten and I even asked for help but he remained standing there watching the whole scene. They threatened me in front of the policeman to take care of my siblings otherwise it would cost much ".Girl told the reporter, "Whenever there is a fight in the slum it is with same people and they threaten like this only. It is believed that these are behind the disappearance of two children in past as they beat them and threaten them openly".

Slum people say, "These people kidnap small children and then ask money from their parents and if they do not get their asked amount they threaten to harm the children. This is the reason that nobody in the slum takes a step against these people ".

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

CHILDREN ARE ENGAGED IN A VERY YOUNG AGE

Balaknama Bureau

People of some caste get their children engaged after few days of their birth and the boy's family asks for dowry during the engagement only. Reporter met such 17 years old girl who was victim of this incident.

Reporter asked that girl, "You also got engaged in such a young age?" Girl said, "Yes, I was also engaged in young age and I am still being punished for that. The boy with whom my parents got me engaged loves some other girl and he does not even want to talk to me. I also do not like that boy but what to do. There are certain strict rules being followed in



our caste andtheir breaking is considered as disrespect by our parents. That is why our parents follow them. If boy refuses to get married on growing up then boy's parents ask for more money from girl's parents giving the reason that our son became you son-in-law since he got engaged to your daughter and who will give the money spent on his upbringing?"

She added, "This way boy's family keep asking for money. That is why we have to marry this person out of compulsion and have to take responsibility of whole house. And not only this, when our husband comes drunk at night then we have to do all that which they ask for. We have to take responsibility of home as well as have to bear husband's torture too".

Children stealing coal and cement from trains to fulfill their needs

Balaknama Bureau



Most of the goods trains carrying coal and cement come to Shakurbasti Railway Station and remain there for 2 to 3 days. Some children staying there take advantage of this. They go to that place and climb up the train and fill bags of coal and cement and then sell them at various dhabas



and restaurants. Dhabas or restaurant owners give them Rs.20 for 1kg of cement and buy coal for a very less amount of Rs.5 to 10 only. Reporter met these children and asked them, "Why do you take out cement and coal from trains? This is not good". 15 years old boy replied, "Our parents do not have enough money to fulfill our needs like we do not get good food to eat or new clothes to wear. Our parents always give us chapatti only. So we take out cement and coal from the trains and sell them to shops. We buy the things like food and clothes from that small money".

NO WATER FOR CHILDREN STAYING UNDER FLYOVER

Talkative Reporter Ram Singh, Reporter Shambhu

Reporter was taking a session on cleanliness with children staying under Moolchand flyover. He explained, "You should keep your body neat and clean otherwise microbes can spread in your body due to dirt and you can fall sick also". Hearing this, children told the reporter about their problem. They said, "How do we save ourselves from spread of microbes? There is no facility here". 15 years old girl said, "We face major difficulty of water availability. There is no water facility nearby. We have to walk 3kms for fetching water.



We bathe from a broken pipeline of Delhi Jal Board but that water is very dirty and it smells very bad. We do not wash our dirty clothes due to unavailability of water rather we bath wearing our clothes. This way our clothes also get washed and we can bathe in open also. All children cannot walk for 3 kms everyday so they take a gap of 4-5 days to go and bathe there. Few girls also go along with these children to bathe. Children want that the government provides water facility under the flyover also like they do in night shelters so that children do not have to go so far away".

CHILDREN PUSHED INTO CHILD LABOR



Balaknama Bureau

15 years old boy said, "I used to study in my village but my parents were lured by a person by who said that I will take you child to Delhi and will make him study and will give him money also. My parents sent me to Delhi hearing this. But that person made me work from 8 in the morning till 10 at night rather than sending me to school". 16 years old boy said, "We have been doing different kinds of work since the time we have come here in Delhi like selling water, working in hotels and restaurants". Children said, "We face many problems in pushing water lorry. We feel sever pain in chest while pushing it as it carries more than 100 litres of water. We are not able to handle the lorry while moving up the road.We sell a glass of water on the lorry for Rs.2 and some people do not even pay. This money is deducted from our salary. When we talk to our parents on phone, our owner tells us not to tell them that he beats us and if we will say anything, he will not give our salary. We do not say anything out of fear. We want to go back to our village but our owner does not let us go".



POLISHING SHOES GIVES SOME MONEY

Balaknama Bureau

There are 4 such children in Karol Bagh who do shoes polishing from 7 in the morning till 8 at night. Reporter met them at Karol Bagh metro station and asked them, "Do you go to school?" 11 years old Vishwas said, "We do not go to school and do shoes polishing the whole day. We want to study but we are not able to do. Our parents force us to work and if we do not go to work any day, they beat us. That is why we polish shoes roaming here and there in the market". 9 years old Sachit said, "Sometimes people do not pay us for boot polishing and shoo us away, beat us and say that this is not a shop that I should pay. They pay us Rs.10 or Rs.20 where one boot polish costs Rs.40 that too after much request". Children said, "At times MCD people also create ruckus, they snatch away our things from us. That day we have to face parents' anger too as they say that we must be playing somewhere else that is why MCD people took away the things. And when we go to MCD to take back our things, they ask us for the money which is not even the cost of things so we do not take back our things. Somehow we again manage to collect money to buy the things needed for polishing shoes and start working again for our survival".

GIRLS BEING EVE TEASED- PARENTS STOPPED THEIR EDUCATION

Balaknama Bureau

Reporter reached homes of those 12 girls who have been stopped to go to school. Reporter first met the parents there. Parents said, "We do not want our girls to go to school because there are some people who tease them and pass lewd comments when they are on their way to school. There is a leather shop on the road, these people sit on its roof and tease our girls so we are taking out their names from the school. They will study at home only or will learn household chores only". Reporter talked to girls also. 15 years old girl said, "It has become very difficult for us to pass from that way. Those people go up on the roofs and pass lewd comment on us, whistles and wink at us. They say that that whatever you are going to study, we have left that after studying. We will teach you far better from what your teacher will teach you". Reporter asked the girls, "Do you not tell all this to your teacher?" 17 years old girl said, "We told our teacher about them and he registered a complaint also against them but they run away from that place before the arrival of police. These people do not have a fixed place; they keep roaming here and there and tease girls. Our parents got our admission in school after so much of difficulty but because of these people they have stopped us from going to school and have asked us to do household work only. We do not want to leave our schools. We want to complete our studies and want these people to be punished so that they do not dare to tease any other girl".



COOK FOOD BY BURNING CLOTHES

Talkative Reporter Kailash, reporter Shambhu

Reporter conducted a support group meeting with children. Children said during the meeting, "We are facing a major problem as we have to roam here and there to collect fire woods then only food is cooked in our homes. Food is not cooked in our homes if we do not go to collect wood for one day even. Finding firewood is also not easy. Climbing a tree is also risky so we cut wood from a lowered down tree. If we go to park to collect wood, the guards run to beat us".

"But this sad thing is that after so much of hard work, our wood gets stolen. Whenever we go out of our home leaving behind the woods, we do not find them on returning back. We collect wood after so much of hard work and it all goes in vain. That is why our parents get irritated that how do they make food for their children. They shout on us after returning back from work saying that we would not have gone for collecting woods. Who steals our wood every day? Our parents have to burn their clothes to cook food on the days when our all collected wood get stolen", added children.





Parents getting their children addicted to drugs

Balaknama Bureau

While surveying in Agra, Reporter got to know that parents of children who stay in slums and under the flyovers consume drugs not only themselves but also make their children consume the drugs the moment they reach the age of 5 years. Some parents send their children to beg to buy liquor. Their parents buy the liquor from the money earned by the children and drink it while partying at night and make their children also drink along with them. Children said, "Our parents behavior is not good, they make their children badly addicted to intoxicated drugs in young age and when they grow, the difficulties increases. Children feel nauseating and dizziness after consuming liquor. Their parents beat their children if they do not earn money from begging. And if children refuse to beg they are asked to pick rags by their parent as they want liquor at any cost otherwise they start creating ruckus". Children added, "There are around 60 children in Ajampada, a small village of Agra who consume liquor, cigarette and tobacco with their parents. This is having a very bad effect on their mental health".





Fraud Baba

Balaknama Bureau

Children are becoming victims to the superstitious practices held at Jag Jeevan Nagar. There is a fraud baba who indulges in some kind of magic. Whenever any child or parents fall sick they go to him rather than going to a doctor. Children said, "Earlier this baba survived by begging here and there but since last few years he has occupied the village. He charges Rs.300 from any person who goes to him for the treatment. Baba tells people that your house has been occupied by ghosts. That is why you are getting ill again and again. He tells them if you will not conduct havan in your home, the ghost will kill you and the baba charges Rs.3000 to conduct havan in each house". 14 years old boy said, "He has conducted havan in around five homes but nothing has changed and those people falls more sick listening to him and then they have to go to doctor only. Our parents tell him that your magic did not help and we had to take medicines from doctor only to feel better but he says no it was not doctor's medicine but his magic only which has made them better". 15 years old girl said, "We want freedom from this fraud person otherwise our village would go bankrupt. Our parents earn after facing many difficulties and that also we have to give him".

Atul's Struggle

Talkative Reporter Atul, Reporter Shambhu

13 years old Atul stays with his parents and his two siblings in a small village Biraul in Bihar. His father works in Kolkata and Mother does farming. Atul studies in third class and is taking care of his home since a very young age. He works in maize fields during maize and wheat season. He covers small maize plants with dust with the help of spade and he gets Rs.2 for covering each maize plant. He is able to take care of his family's expenses with that amount. Atul said, "It is the rule in his village that the moment a child grows, his parents send him to work. There are many children like him who are working like this. He gets his ration from his earnings and whatever his father sends from Kolkata that is used in grand parents' treatment".

SMALL CHILDREN WORKING IN MARRIAGE PARTIES

Balaknama Bureau

There are around 70 small innocent children in the age of 12 to 17 years in Laldiggi area who work in marriage parties. Reporter went to speak to these children. 15 years old boy said, "It is not our wish to work in marriage parties, our parents force us to go. Our parents do not do anything and sit at home. They do leather pruning if they ever want to do. This is marriage season so we do this work otherwise we



do other work according to the season". Reporter asked children, "What kind of work you do in marriage parties?" Children said, "We wash utensils or make chapattis or do the work of waiter. We face many difficulties while we work. Those who pay us deduct our money if in case we break any utensil. We get around Rs.100 to 200 from one marriage party after working from 4 in the evening till 2 at night". Reporter asked children, "Why only small children like you work in the marriage parties?" 17 years old boy said, "They pay less to small children and they know in what circumstances we have to work so they take advantage of it. Elder people ask more money so they employ children".

CLASS LEADERS BULLY SMALL CHILDREN

Balaknama Bureau

15 years old boy said, "Our leader scare us. He does not let us go to toilet whenever we wish to. He abuses us all the time. Children tells their leader to not to behave like this but he says to keep quite otherwise he will send them out of the class. Our teachers also ignore this". Children said, "Not a single day goes when the leader does not beat us. We also complain about this to our parents. When our parents meet the teachers and ask them about the



leader's behavior. They say that it is not leader's fault; children do not study well that is why they beat them. Leader beats to make your children's future. If you pity so much your child then why do you send them to school, keep them in your home only".

Elder boys steal – blames small Innocent children

Balaknama Bureau

Balaknama Reporter got to know that small children are in majority in a slum near Badarpur border while conducting support group meeting with them. Out of these few children pick rags and some elder boys are involved in stealing. When police come for investigation the blames come on those innocent children as they are seen picking rags and police beat them. 15 years old boy said, "We only do the work of picking rags and do not do any bad thing. And if we do not get anything to pick we come back with empty bags and do not pick anything of any person. Those elder boys indulge in stealing but put the blame on us so that nobody doubts them". 16 years old



boy said, "These boys get on to buses in school uniforms and pick people's pockets that is why bus drivers do not stop their buses generally at Badarpur Border. Elder boys buy school uniforms from markets and go on to steal things. They disguise themselves in school uniforms and then steal so that they are not easily caught".

CHILDREN LEARN FROM THEIR ENVIRONMENT



Balaknama Bureau

During the survey in South Delhi, West Delhi and Noida, Reporter found out that there are around 250 children who remain do gambling the whole day. Reporter met these children and tried to know how these children got addicted to habit of gambling in such a young age?

15 years old boy said, "Environment surrounding our homes is not good. Most of the people here are involved in gambling and children also learnt playing from them". Majority of children from South Delhi were found involved in habit of gambling. Children start doing gambling leaving their schools and do not go to study. They tell their parents that it is their off today. These children play at their homes also. Their parents are busy with their work so are not able to take care of their children. 15 years old boy said, "Children have started committing crimes for gambling now. Children start selling their things from home. Children who go for rag picking do not give money to their parent". 17 years old boy said, "These children have learnt gambling from their surroundings. If surrounding environment would be good, children will not learn bad things".

Proper shelter can help children study

Talkative Reporter Balle, reporter Shambhu

Reporter met such children whose parents are laborer. Their parents live in Bihar and move to different places when they do not get work there. That is why children are not able to study. 15 years old boy said, "I used to study in class third in my village. Now I have come with my parents to Delhi. My parents are contractual laborers; they do not have their own proper work. They move to the places wherever they get work to do. That is why; I am not



able to study". 15 years old boy said, "I came to Delhi last year with my parents and now this work is also about to get over so we are going back to our village. Children started going to organization's study centre to study from last few months but again some other contractual work will come from somewhere and children will have to move". All children told reporter, "Unless and until our parents would not have some fixed work and proper shelter, we cannot study".

Dog, the forever friend of children staying at station

Talkative Reporter Salman, Reporter Shambhu



There are around 26 children who stay at Old Delhi Railway station and do not want to go back to their homes. If they are asked to go back to their homes, they always say that our parents will again misbehave with us if we will go back. So we do not want to go back home. Children were asked, "You do not miss your parents?" 16 years old boy said, "How can we miss a thing which brings sadness. A dog is much better than our parents who take care of us. Our parents also do not love us so much the way this dog loves us. Our parents always want money from us and even if we get money, there is still fight and the brawl in the home. This dog only eats food twice a day and stays with us whole day and night. He goes with us wherever we go. He is partner in all our sadness and happiness. He takes care of us and our stuff when we sleep at night".

Elders making small children consume drugs

Talkative Reporter Salman, Reporter Shambhu



14 to 16 years old children are getting addicted to drugs. Earlier they used to consume solution only but now they are made to forcibly consume cannabis. When reporter spoke to these children they got to know that children are not consuming drugs with their own wish rather five elder people come from outside and motivate them consume drugs. These people make befriends the rag picking children and plays also with them. When these consume cannabis they ask the smaller children also to take drugs. If children refuse to take they threaten to snatch away all rag and starts beating them. 15 years old boy said, "Children wants to leave the habit of consuming solution and here they are getting into habit of other kind of drugs. This drug comes in a small packet and it smells very bad while drinking". One child said, "One day when I was asked to drink the cannabis, I started feeling dizzy and I vomited also then I realized this drug is more dangerous than solution". Children want that to send away these five children so that they are saved from the trap of drugs.

Working to support Siblings

Talkative Reporter Durga, Reporter Deepak

16 years old Durga stays with her family in a slum at Lawrence road. They are living in this slum from last 20 years. Durga has 5 siblings. Her parents consume alcohol. Her father does the work of taking care of files in Canara bank and mother works as maid in two bungalows. Durga said, "My father drinks a lot and he has T.B. One day he took TB medicine along with the liquor which had a negative effect on his body. He passed away in the morning when he went to toilet. Family condition deteriorated since he died. Now my mother works in bungalows and I work in a factory where lunch boxes are made. I do the work of packaging here for 12 hours and get Rs.6500 per month. I am studying through open basic education. I want just want that my siblings do not have to work in factory and gets admission in school".

FAMILY'S RESPONSIBILITY ON SMALL SHOULDERS

Talkative Reporter Khushboo, Reporter Chetan



9 years old Khusbhoo stays in Nehru camp. Her family has seven members and father drinks a lot. He roams here and there and does not do any work. Her mother takes care of the two younger siblings. Her one small brother of 7 years old keeps playing near the railway tracks. The bad thing is that Durga has to work in a bungalow to manage house expenses. She gets Rs.2000 per month by which the house is managed. If she would not work, every member will have stay hungry. She said, "Earlier when I did not go to work, my mother and younger siblings used to cry for food. Then I met an aunty who was working in a bungalow so I requested her who got me some work. Now my family is living a better life but I have to work a lot. I get very tired after working at bungalow but I have to do household chores also after returning from work. I want that my father leaves alcohol and starts working so that my family situation improves".

TILL WHEN SHOULD WE STAY ON ROAD? ASKS STREET CHILDREN

Balaknama Bureau



Children staying under the flyover have to face one problem or the other every day. This is also the news of such Children. Reporter saw Police surrounding people staying under flyover and asking the parents to take away their things from this flyover and go somewhere else and those who were not going, they were forcefully being made to move out of there. Reporter went to a Policeman and telling him that he is a newspaper reporter asked him, "Why there is so much of crowd here? And why are Children being sent somewhere else?" Policeman said, "An official is going to pass from under this flyover an we are deputed here on duty. We are sending these children somewhere else so that he do5 see any child living on streets". 15 years old girl said, "Whenever an official passes from here, same behavior is done with us or we are taken to some other place for one day and then we return back when te official goes away". 17 years old boy said, "Our government does not want to see us on roads that is why they send us somewhere else when the official passes from there then why don't they provide children a safe place to live in. Only making night shelters doesn't solve our problem. We are still on the same road, we have to bathe there and cook there only. We have to do the work either on roads or on the sides of road".

SUBASH WANTS READMISSION IN SCHOOL

Talkative Reporter Subhash, Reporter Deepak

14 years old Deepak works in a footwear factory to manage his family's expenses. Reporter went to meet him. Subash said explaining his problems, "Everybody works in my family. My father is a laborer and my mother does the work of stitching at home". Reporter asked, "Why do you not go to school?" Subhash smilingly said, "I left my school four months back because my school's bad condition. But I still want to study. I always had a dream of studying well and working so that my father does not have to do labor work and my whole family remains happy. I have to work 12 hours in a day in this factory and I get very tired. I do not like to work here as all people abuse each other. I want somebody who can help me to get me readmitted to my school".



BALAKNAMA REPORTER MET TDH MEMBER

Reporter Shambhu

Reporter participated in a meeting where he got to know that there are around 500 children in Nepal staying on roads and working in restaurants and hotels for their survival. Reporter met ShShyamShresth, member of organization TDH of Nepal.

Reporter – In which Conditions Street and working stay in Nepal?

ShyamShresth– Number of Street and Working children is more in India but the count in Nepal is around 500.

Reporter –I am glad to hear that population of street and working children is less in Nepal but how did this magic happen?

ShyamShresth– Nepal's Government is very good. They completely help the poor children and they are very attentive towards children staying on roads. Nepal's Government has opened various centres for these children in different places where children can stay.

Reporter – Why then those 500 children are also at roads when the Government is cooperating so much?

Shyam Shresth– Government is trying completely to provide its support for the growth of these children but there are some organizations which take money from the Government but are not able to contribute fully. That is why some children are still on roads.



Reporter – Do the children staying on roads do drugs too?

ShyamShresth– Children who come out of their homes get into bad company and start taking drugs. Drugs which children in India use are not available there. They only consume tobacco and cigarette.

PARENTS FORCING THEIR CHILDREN TO DO WRONG DEEDS

Balaknama Bureau

There are around 40 children in the age group of 10 to 15 years whose parents ask them to sell intoxicants. During investigation it was found that these children get into trouble while doing this. Police do checking at the place where these children go to sell these intoxicants. Their parents suggest them to hide the intoxicants in their clothes to save themselves from police. They are beaten very badly by Police whenever they get held by police by mistake. Parents also torture these children back at home. These children live in a state of fear.Parents do not give food to their children if they refuse to do this work and Police beat them if they get caught.

Children said, "Intoxicants are generally bought by rickshaw pullers and truck drivers. We earn around Rs.200 to 300 per day by doing this work". 14 years old boy said, "Children want to study but their parents do not send them to school. If children talk about going to school so their parents ask them what will happen by studying."

Working to save siblings from begging

Talkative Reporter Prakash, Reporter Deepak and Chetan

Prakash has started working at a rag shop due to his parents' bad behavior. His parents fight every day at home and ask his younger siblings to beg. If they refuse to beg, their parents throw them out of their home. Prakash said, "My parents taunt me that the small children in our neighborhood earn for their parents and my son do not earn to feed us. They keep on roaming here and there". He added, "If my parents do not get liquor at night, they abuse me. That is why I went to a junk shop and requested the owner to give me work. Now I do rag picking and work at the shop. I go to slipper making factory at 8 in the morning to collect the left over junk. I earn around Rs.150 per day for this work and apart from this I go and do the work of washing utensils if I get work of marriage parties. Whatever money I earn, I give to my parents. I am working this hard just because that my parents do not send my younger siblings to beg".



BALAKNAMA AND BADHTE KADAM IN NEWS

WE ARE SHARING SOME PICTURES OF THESE MOMENTS WITH YOU….



Participation of Editor in Street Children's Conference Program



Balaknama's distribution edited and published by Street Children



26 मार्च 2017

अमर उजाला

रविवार

बच्चों ने पहली बार देखे वन्यजीव

लखनऊ। नवाब वाजिद अली शाह प्राणि उद्यान में शनिवार को वन्यजीवों की अठखेलियां देख बच्चे खिलखिला उठे। मौका था समाज से उपेक्षित, सड़कों पर गुजारा करने वाले और कूड़ा बीनकर अपना पेट भरने वाले बच्चों का पहला जू भ्रमण। निशुल्क जू भ्रमण व्यवस्था के तहत चेतना संस्था के विजय कुमार समेत 45 बच्चों को विजिट कराई गई थी। बच्चों ने वन्यजीवों का दीदार करने के साथ ही बाल ट्रेन की सैर भी की। वन्यजीवों की खालों, पंखों एवं पंजों को छूकर महसूस किया। निदेशक जू अनुपम गुप्ता की मौजूदगी में पहली बार प्राणि उद्यान का भ्रमण कर रहे बच्चों ने बब्बर शेर, सफेद बाघ और दरियाई घोड़े के बच्चों को भी देखा।

Coverage in Amar Ujala Newspaper



Balaknama's Editorial meeting

Selection of participants of Street talk



Street talk Program



Balaknama acknowledge part support from Sardar Nagina Singh and Family

This edition is for limited distribution. All pictures are published in this edition after children's their approval.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Richa Somvanshi.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-63 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अप्रैल, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

अब समय हमारा है क्या आप हमें सुन रहे हैं ?

12 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय स्ट्रीट चिल्ड्रन दिवस मनाया जाता है। बढ़ते कदम और बालकनामा से जुड़े हुए स्ट्रीट चिल्ड्रन ने 11 अप्रैल को एक स्ट्रीट टॉक का आयोजन किया जिसमें चुने हुए बच्चों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम पूर्व की झलकियां यहाँ प्रस्तुत हैं।

बालकनामा ब्यूरो

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पिछले वर्ष अप्रैल 2016 में संगठित होकर यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों के सामने अपनी बातो को रखा था तथा सडक एवं कामकाजी बच्चों को हो रही समस्याओं के मुद्दे भी उठाए गए थे इस मीटिंग में भारत के विभिन्न राज्यों और नेपाल के 38 पूर्व एवं वर्तमान सड़क एवं कामकाजी बच्चों 21 लड़के और 17 लड़कियों ने दिल्ली में संगठित होकर यू. एन. जनरल के सामने अपने विचार रखे थे। यह किसी भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था इस कार्यशाला का लाईव कवर करने के लिए टीम बालकनामा को विषेश आमंत्रण मिला था जबकि दूसरे मिडिया कर्मियों को इस

शेष पृष्ठ 2 पर



चेतन की जिंदगी का सफर में ज्वलंत एक सवाल है कि वह कौन से तरीके हो सकते है जिससे अति पिछड़ा वर्ग और अति संपन्न वर्ग के बीच की खाई को पूर किया जा सके।



मिलिए पूनम से जिसकी उम्र 16 साल है ने बहुत सारे सड़क से सम्पर्क में आए बच्चों को शोषण से निकाला । स्वयं भी सड़क के मुश्किलो का सामना किया बावजूद इसके कि वह बहुत अंतरमुखी थी ।

MESSAGE

Dear members of Badthe Kadam-street Children Federation and Balaknama Newspaper for and by Street Children,

I am extremely pleased to receive your invitation.I am so proud of your courage and initiative to organise this event.A lot of planning and thought has gone into making this event a reality .We always say that children should participate but rarely give children the opportunity to participate.This is definately your day , a day that has been recognised as your day internationally.I hope your voices will be heard by all concerned. I am certain that all of you will do well in this event " Street Talk by street connected children " .My best to wishes to all of you in all your future undertakings.

Yasmeen Shariff
Former Member
UNCRC



यह कहानी शम्भू की है जिसने अपने परिवार को चलाने के लिए अलग अलग तरह के कार्य किए और आज बालकनामा जो कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार है का संपादक है ।



अखलेश 16 वर्षीय छला गया कई बार सड़को पर जिस पर भी उसने विश्वास किया । जिद थी उसकी इस जीवन से बाहर निकलने की। उसने खोजा अपना खुद का रास्ता अपने लगातार प्रयास और हौसले के दम पर ।



एक शक्तिशाली कहानी 14 वर्षीय शिव शंकर की जिसने देखी आशा की एक किरण रेलवे स्टेशन पर जब वह गुजर रहा था जीवन के सबसे मुश्किल दौर से ।



17 वर्षीय दीपक का अनंत संघर्षो से जूझता बचपन जिसने देखे जीवन के कई उतार चढ़ाव और आज बना हजारों सड़क एवं कामकाजी बच्चों की आवाज।



16 वर्षीय काजल के ज्वलंत दो सपने (कराटे सीखना एवं पढ़ना) जो आज भी जिंदा है हासिल करने को परिस्थिति ने जिसे न पूरा होने दिया . क्या आप करोगे इसके सपने को पूरा ।



17 वर्षीय ज्योति बनी हजारों बच्चों के लिए एक बड़ी मिसाल जो सड़क पर रहते हुए आ जाते है नशे की चंगुल में ।



अपनी परिवारिक समस्याओं के बीच उलझकर भी 13 साल की नीशा ने पढ़ने के सपने को पूरा किया और वर्तमान कक्षा सात में पढ़ रही है ।





17 वर्षीय मुसर्रत प्रवीण जिसने अपनी जिंदगी में हर मोड़ पर संघर्ष किया और यह साबित कर दिखाया की कोई भी काम मुश्किल नहीं होता बस जजबा होना चाहिए । इसी जजबे और हिम्मत से आज मुसर्रत प्रवीण कक्षा 10 में पढ़ाई कर रही है वह अपने जीवन में आगे बढ़ रही है वर्तमान में वह अपने जैसी लड़कियों को पढ़ने के लिए भी प्रेरित कर रही है।

संपादकीय

प्रिय साथियों,
नमस्कार !

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की ओर से आप सभी को अंतराष्ट्रीय सड़क एवं कामकाजी बच्चो के दिवस के उपलक्षय में हमारी ओर से बहुत शुभकामनाएं ।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चो का अखबार बालकनामा एक नए अंक साथ सच्ची घटनाओं व अखबारो को लेकर प्रकाशित हुआ है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह बेहद ख़ुशी की बात है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को (यू.एन.सी. आर.सी) में मान्यता मिल गई है । और यह मान लिया है कि विश्व में सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते है और उनकी निम्न समस्याएं है जिसका समाधना करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

हम बच्चे बहुत अभारी है कि बच्चो को मान्यता मिली है अब हमें कोई अंदेखा नहीं कर सकेगा और कुछ बेहतर किया जा सकेगा ।

इसी को लेकर हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे ला रहे हैं (अब समय हमारा है क्या आप हमें सुन रहे हैं) और कुछ ऐसे संघर्ष से जूझती सच्ची कहानियां ।

आशा करते हैं कि आपको इस बार का अंक पसंद आएगा आपकी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर आवश्यक भेजने का कष्ट करे।

संपादकीय टीम

पुल के नीचे से गायब हो जाते हैं हर साल कुछ बच्चे

बालकनामा ब्यूरो



बिहार और राजस्थान से मजदूरी करने दिल्ली आते है है बच्चे अपने माता पिता के साथ। बच्चों के माता पिता के पास इतना पैसा नही होता है कि वह एक सुरिक्षत घर में रहकर गुजारा कर सके इसलिए वह पुल के नीचे ही रहकर अपना गुजारा करते है। पत्रकार को पता चला कि बच्चे ठंड शूरू होने से एक महिना पहले ही पुल के नीचे आने लगते है। इसी बीच अभी हाले ही में वहां से दो बच्चे गायब हो गए। पत्रकार ने बच्चों के माता पिता से पूछा कि बच्चे कैसे गायब हो गए। माता पिता ने बताया कि हम लोग दिनभर काम करते रहते है इसलिए हम बहुत थक जाते है जब रात को सोते है तो कुछ भी पता नही चलता है कि रात में क्या हुआ। पत्रकार ने पूछा कि आप लोगो ने पुलिस थाने में इसकी शिकायत दर्ज कराई कि नहीं? माता पिता ने बताया कि हम लोग थाने में शिकायत दर्ज कराने के लिए गये थे लेकिन पुलिस वाले हमारी बात नहीं सुनते हैं। वह हमसे कहते हैं कि तुमलोग अपने बच्चों का खुद तो ध्यान रखते ही नही हो घटना होने तक इंतजार करते हो और जब कोई तुम्हारे बच्चों को उठाकर ले जाता है तो रोते हुए पुलिस वालों के पास आ जाते हो। और कहते हैं चलो यहां से भागो। पत्रकार ने जब इस बारे और दूसरे बच्चों से बातचीत किया तो पता चला कि हर एक साल में दो से तीन बच्चे गायब हो जाते है। चौंकाने वाली बात यह है कि इस बारे में अब तक पता नही चल पाया है कि कौन है यह लोग जो बच्चो को अगवाह करके ले जाते हैं और चोरी अगवाह करने के बाद उस बच्चे के साथ वह क्या दुर्व्यवहार कर रहे हैं।

नशे में धुत अपने वस्त्र उतारकर करते हैं हंगामा.. पढ़ते बच्चे हो रहे हैं परेशान

बालकनामा ब्यूरो

लोरेन्स रोड की झुग्गी झोपडी में लगभग एक हजार से 1500 सौ तक लोग रहते हैं। यह लोग पुरे दिन अपने बस्ती में जुआ खेलते रहते है। जिन बच्चों की घर के स्थिति ठीक नहीं है उन बच्चों को संस्था के कार्यकर्ता पढ़ाने आते हैं तभी शाम को सभी बच्चे पढ़ाई करने के लिए बैठते है वहां के आसपास रहने वाले लोग जुआ खेलना शुरू कर देते है। आपस में अश्लील बात बोलते रहते है।

बच्चों ने बताया कि भईया हम सभी बच्चों को पढ़ाई करने में बहुत परेशानी होती है यह लोग शराब पीते है एवं बहुत चिल्लाते है। जब हम बच्चे इन से बोलते है कि चाचाजी आपलोग अभी जुआ खेलना बंद कर दो बाद में खेल लेना अभी हम बच्चे पढ़ाई कर रहे है। वह लोग बोलते है कि तुम लोग पढ़ाई करके क्या करोगे? तुमलोग भी हमारे तरह जुआ खेलोगे पढ़ाई करने से कुछ नही होता है। इतना ही नही कभी कभी यह लोग बहुत शराब पीकर जुआ खेलते है तो हम बच्चों के सामने अपने वस्त्र भी उतार देते है। बच्चे अपने मात पिता से बोलते है तो उनके मात पिता से भी लड़ाई करने लग जाते है। वह सभी लोग बोलते है कि यह तुम्हारी जमीन नही है जो तुम लड़ाई कर रहे हो यहां पर मैं भी रहता हूं जो मेरा मन होगा मैं करूंगा जिसको जो करना है वह कर ले। इससे मुझे कोई फर्क नही पड़ेगा।

पत्रकार से बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि यह लोग यहां जुआ तो खेलते ही है लेकिन इसके साथ साथ नशीले पदार्थ का सेवन करके वह प्रतिदिन बच्चों के सामने नशे में धुत होकर अपने वस्त्र तक उतार देते है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि इस समस्या का जल्द समाधान हो।



अब समय हमारा है, क्या आप हमें सुन रहे हैं?

पृष्ठ 1 का शेष

कार्यक्रम में आना मना था यह कार्यक्रम कंसोर्टियम फोर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित किया गया था और चाइल्डहुड एन्हांस्मेंट थ्रू टेंनिंग एण्ड एक्शन ;चेतना द्ध ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संबंध में तकनीकी सहयोग प्रदान किया था हम आपको बताएंगे कि इस कार्यक्रम में क्या हुआ और बच्चों द्वारा कहे गए वे वास्तविक कथन क्या थे हम सभी निमार्ताओं से यह अपील करेंगे कि बच्चों द्वारा गई इन महत्वपूर्ण टिप्पणियों पर ध्यान दें।

- सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने यू. एन.सी.आर.सी के सदस्यों के सामने इन मुद्दो को उजागर किया था
- सड़क एवं काकमाकजी बच्चे के विश्व के सबसे कमजोर वर्ग में गिने जाते हैं उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत सारे खतरों का सामना करना पड़ता है शहरों की भागमभाग भरे जीवन में उन्हें दो वक्त की रोटी के लिए बहुत मेहनत करनी पडती है और कोई भी उनकी ओर देखने वाला भी नहीं होता है रहने से लेकर काम करने वाली जगह तक उनका शोषण होता है अपने अस्तित्व के लिए इन बच्चों को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है
- इस कार्यशाला में बच्चों ने अपनी सुरक्षा संबंधित निम्नलिखित मुद्दे उठाए
- हमें दूसरों के द्वारा पीटने के लिए छोड़ दिया जाता है काम करने कम लिए मजबूर किया जाता है और यौन शोषण का सामना करना पडता है।
- छुट्टियों के दौरान बडे घरों के बच्चे घूमने फिरने जाते हैं और हम अपने परिवार का सहयोग करने के लिए काम पर जाते हैं।
- हम नशीले पदार्थों और समूहों की हिंसा के शिकार हो जाते हैं समाज द्वारा हमें अनदेखा किया जाने के कारण हम नशीले पदार्थों के आदी हो जाते हैं।
- हम पुलिस की हिंसा के शिकार होते हैं पुलिस हमें डंडो से पीटती है और हमारी बात नहीं सुनती है।
- पुलिस का व्यवहार हमें हठी बना देता है और हमें अपराधों की दुनिया धकेलता है।
- हमें लैंगिक हिंसा और अन्याय का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए आम बात है
- हमें अनदेखा किए जाने और हमारा शौषण होने के कारण कभी कभी हमारे मन में आत्महत्या करने के विचार भी आते हैं।
- गैर सरकारी संगठनों की अनुपस्थिती में हमें विक्लांगताएनागरिकता और पहचान को लेकर भी बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड रहा है।
- शारीरिक दंड के चलते हम स्कूल छोड़ देते हैं और समुदाय की एकजुटता के अभाव में हमें अपराध की दुनिया में धकेल दिया जाता हैं।
- हमें काम करना पड़ता है क्योंकि हमें खेलने का अवसर नहीं दिया जाता है फसल खराब होने ए स्थानांतरण होने और डॉक्टर द्वारा हमारी कोई सहायता न करना ये सब हमें समाज से अलग बनाते है
- बेहद खुशी की बात है कि बच्चों द्वारा रखी गए इन सभी मुद्दो को यू.एन.सी. आर. में सरहाना देते हुए यह मान लिया गया है कि विश्व में सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते है और उनकी निम्न समस्याएं हैं जिसका समाधना करना बहुत ही महत्वपूर्ण है

इस बारे में जब बालकनामा के पत्रकारों ने सड़क पर रहने वाले बच्चो को यह सूचना दी और उनकी अभिलाशा को सुना।

- स्टेशन पर रहने वाले बच्चो ने बताया कि अगर हम बच्चों की चलती समस्याओं के मुद्दो पर गौर किया गया है तो अब तो यह मुम्किन है कि हम बच्चों की भी गणना की जा सकेगी और उनके मुताबिक हम बच्चों के पुर्नवास के लिए नियुक्त योजनाओं की सेवाएं हम बच्चों तक पहुंचेगी।
- कहना था कि अगर ऐसा हुआ है तो अब तो हमारे बारे में लोग जान सकेंगे जिसके आधार पर शायद हम बच्चों को एक नई पहचान भी मिलेगी और लोग हमारा सम्मान करेंगे
- अब हम जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकेगा कि सड़क पर रहने वाले यह बच्चे कहां से आए है अब हम भी खुलकर जी सकते हैं हम भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- अब तक हम बच्चों को अनदेखा किया जा रहा था पर अब ऐसा लग रहा है की किसी भी सड़क एवं कामकाज बच्चों की समस्या पर जरूर एक्शन होगा।
- सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए स्पेशल नाईट शेल्टर होम की भी सुविधा कराई जा सकेगी।
- सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए स्पेशल वोकेशनल ट्रेनिंग के इन्स्टीयूट भी हो जिसमें हम बच्चे ट्रेनिंग ले सकें।

अंधविश्वासी नुस्खा अपनाते लोग

बच्चे बढ़ती खुजली से परेशान

बातूनी रिपोर्टर गुड्डी रिपोर्टर विजय कुमार

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ श्रम विहार में बसी एक झुग्गी बस्ती में यहां के कुछ बस्ती के लोगो का मानना है कि अगर किसी बच्चे को खाज खुजली होती है तो बच्चे को गंदे नाले में नहला दो तो खाज खुजली की बिमारी जड़ से खत्म हो जाती है। किसी भी बच्चे को वहां खाज खुजली होती है तो बच्चों को गंदे नाले में कम से कम दो घंटे तक नहाना होता है। यहां जब बढ़ते कदम और बालकनामा की पत्रकार गुड्डी ने यहां के लोगो से बात की तो रानी देवी का कहना था कि यह पूरा नाला लखनऊ की सभी कलोनियों के गटर से जुड़ा हुआ है। आप समझ सकते है कि यह नाला बच्चों के स्वास्थय के लिए कितना खतरनाकं हो सकता है। राजू प्रजापति का भी यह कहना था कि कई बार हम लोग यहां की झुग्गी वासियों को समझाते हैं तो वह नहीं मानते हैं। उनका कहना है हमें खाज खुजली होती है तो हम भी इसी नाले में नहाते थे। तो जब हमारे बच्चों को खाज खुजली होती है तो हम भी अपने बच्चों को इसी नाले में नहला देते हैं जिससे उनकी खुजली खत्म हो जाती है। 13 वर्षीय राहुल का कहना है कि जब हमें खाज खुजली हो जाती है तो हमारे माता पिता हमें जबरन इस गंदे नाले में नहाने के लिए कहते है। नहाते वक्त हमारे मुंह में मल और उसकी बदबू तथा गंदे पानी की गंदगी आती है और कई बार बच्चे बेहोशी हालत में मिलते है। लेकिन बच्चे क्या करे ? बच्चों ने बताया कि जब हम गंदे नाले से नहाकर निकल आते है तो साफ पानी से 1 घंटे तक नहाते है जिससे हमारे शरीर से नाले की बदबू दूर हो जाती है। 32 वर्षीय राम कुमार जी का कहना है कि कई बार बच्चो को



नहाने के बाद बहुत खतरनांक बिमारियों का सामना करना पड़ा है। लेकिन बच्चो के माता पिता इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते है। यहां की सोंच है कि गंदे नाले या गंदे पानी में नहाने से खाज खुजली जड़ से खत्म हो जाती है।



काम के बोझ से दबता बचपन

बातूनी रिपोर्टर श्रवन रिपोर्टर चेतन

8 वर्षीय श्रवन गैरिज की दुकान पर मोटर मेकेनिक का काम करता है। पत्रकार ने श्रवन से पूछा कि आप तो बहुत छोटे हो फिर आप कैसे काम कर लेते हो?

श्रवन ने पत्रकार को बताया कि मेरे घर की स्थिती ठीक नही है इसलिए मैं काम करता हुं साथ ही मेरे माता पिता भी लोरेन्स रोड अंडर पास के नीचे खड़े रहते है और जो भारी रिक्शा आता है तो उस रिक्शे को धक्का लगाकर ऊपर ले जाते है। इस काम के 20 से 30 रुपए मिल जाते है और कभी तो कुछ भी कमाई नही होती है। इसलिए वह मजबूर होकर गैरिज में काम करता है।

उसने बताया गैरिज में काम करते वक्त उसे बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है जो गाड़ियां वह सही करता है उनके पूर्जे बहुत भारी होते हैं। वह इन पूर्जो को उठा नही पाता है। इस गैरिज की दुकान पर पुलिस वाले भी आते है जो अपनी गाड़ी सही करवाते है लेकिन वह उसे देखकर भी अनदेखा कर देते है। उसका कहना है कि वह अपने परिवारिक स्थिती ठीक न होने की वजह से यह काम करता है। उसका भी एक सपना था कि पढ़ाई करके अच्छा काम करेगा पर वह काम के चलते पढ़ाई नही कर पा रहा है। अगर उसके माता पिता का लगा बंधा काम होता तो शायद उसे गैरिज की दुकान पर काम नही करना पडता और वह भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में पढ़ाई कर रहा होता।

कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों को अपने जाल में फंसाकर करते हैं अश्लील हरकत

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा पत्रकार को लड़कियों ने गंभीरता से सूचना दी कि मार्किट में 5 लड़के हैं जो कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों को अश्लील नजरो से देखते हैं और गंदी गंदी बाते करते हैं। वह लड़के जिन लड़कियों पर अपनी नजर रखने लगते हैं तो किसी तरह अपने जाल में फंसाते है। कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों के साथ वह नए नए पैंतरे अपनाते है ताकि उन्हें अपने जाल में फंसा सके। वह उन्हें कहते हैं कि यहां कबाड़ा क्यों बीनते हो? इस काम के तुम्हें कितने पैसे मिलते है और तुम्हें हर दिन कितने पैसों की जरूरत होती है। जितने पैसे तुम हमें बाताओगी हम तुम्हें उतने ही पैसे दे देंगे। पर तुम में से कोई भी लड़की मार्किट में कबाड़ा नही बीनोगी। इतना सुनते ही लड़कियां उन लड़को से सवाल भी करती हैं कि आप हम लड़कियों की मदद क्यों करना चाहते हो? तो जवाब में वह लड़के कहते हैं कि हम आपकी मदद नही कर रहे हैं लेकिन तुम लोग कबाडा बीनते हो तो हमें अच्छा नही लगता है। और इसी



तरह वह लड़कियों को अपने जाल में फंसा लेते हैं। फिर लड़के उन्हें खाने पीने का लालच देते है। जब वह लड़कियां उन लड़कों की बातो में आने लगती है तो उन लड़कियों के पास जाकर वह लड़के उनके साथ गलत एवं अश्लील हरकत करते हैं। उनके व्यक्तिगत अंगो को स्पर्श करते हैं और जब वह उन लड़को से बोलती हैं आप यह हमारे साथ क्या रहे हो ? तो वह लड़के बोलते है कुछ नही कर रहा हूं चुप रहो अगर तुम हमें अपने साथ ऐसा करने से मना करोगी तो हम तुम्हें पैसे नही देंगे। इन लड़को ने इस तरह के हथकंडे अपनाकर अब तक लगभग नौ लड़कियों को फंसाया है।

पत्रकार ने सभी लड़कियों से बातचीत की और उनके माता पिता को भी समझाया कि आप अपनी लड़कियों को अकेले कबाड़ा बीनने के लिए मत भेजो। और लड़कियों को सलाह देते हुए चाईल्ड हेल्प लाईन नम्बर 1098 के बारे में बताया कि आप इस नम्बर पर उन लड़को के बारे में शिकायत कर सकते है तथा पुलिस को भी बता सकते है।

और अगर आप अपनी शिकायत को गुप्त रखना चाहतें हैं तो पुलिस या चाईल्ड लाईन में आपका नाम और पता गुप्त रखा जाएगा तथा उन लड़को को पकड़कर सजा भी दी जाएगी। ऐसा करने से वह लड़के आगे से किसी भी लड़की को वह मोहरा नहीं बना सकते।

धमकी के साथ बच्चों की करते हैं खुली पिटाई

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय बालिका जो अपने परिवार के साथ झुग्गी में रहती है। परिवार के गुजर बसर करने के लिए करोल बाग में पटरी पर चार्जर व एयरफोन बेचने का काम करती है साथ में बालिका के माता पिता भी यही काम करते है। बालिका का एक बड़ा भाई है जो शादी करके अपने माता पिता से अलग रहता है। बालिका जिस झुग्गी में रहती है वहां पर हमेशा लड़ाई झगड़ा होता रहता है।

एक दिन की बात है किसी वजह से



बालिका के माता पिता से उसके पड़ोसी से लड़ाई हुई और मारपीट भी होने लगी। बालिका अपने माता पिता को उस लड़ाई में से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी लेकिन वह लोग बालिका के माता पिता को बुरी तरह पीट रहे थे और उन्होनें बालिका को भी पीटना शुरू कर दिया। बालिका का कहना है कि जिस वक्त मुझे वह लोग मार रह थे उस वक्त पुलिस वाले भईया भी वहीं पर मौजूद थे। उसने पुलिस वाले भईया से मदद मांगी पर पुलिस वाले भईया ने उसकी मदद नही की वह खड़े खड़े तमाशा देखते रहे। जिन लोगो ने उसके साथ मारपीट की वह पुलिस वाले भईया के सामने ही उसे धमकी भी दे रहे थे कि अपने भाई बहनों को सम्भालकर रखना नही तो बहुत मंहगा पड़ेगा। बालिका ने पत्रकार को बताया कि हमारी झुग्गी में जब भी किसी भी व्यक्ति की इन्हीं लोगो से लड़ाई होती है तो ऐसे ही वह सभी को धमकी देते है। बस्ती में रह रहे लगभग 2 बच्चे भी गायब हुए थे जिनका शक इन्हीं लोगो पर है जो खुलेआम मारपीट करके बच्चों को धमकी देते है। बस्ती वालो का कहना है कि यह लोग छोटे बच्चों का अपहरण कर लेते है और किसी दूसरी जगह पर ले जाकर उनके माता पिता से फिरोती मांगते है जितना फरोती मांगते हैं अगर उतना नही देते है तो बच्चों को नुकसान पंहुचाने की धमकी देते हैं। इस डर की वजह से कोई भी बस्ति वाला उनके के खिलाफ कदम उठाने की कोशिश भी नहीं करता है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

छोटी सी उम्र में ही कर देते हैं बच्चों की सगाई

बालकनामा ब्यूरो

कुछ खास जाति के लोग बच्चों के जन्म के कुछ दिन बाद ही उनकी सगाई कर देते है और बदले में लड़के वाले लड़की वालो से दहेज भी उसी सगाई के वक्त ले लेते है। पत्रकार एक ऐसी ही 17 वर्षीय बालिका से जाकर मिला जो इस घटना की शिकार हो चुकी हैं।

पत्रकार ने उस बालिका से पूछा कि आपकी भी सगाई बचपन में ही कर दी गई थी ? उस बालिका ने बताया कि हां दीदी मेरी सगाई भी बचपन में ही हो गई थी और उसकी सजा मुझे अभी मिल रही है। मेरे माता पिता ने जिस लड़के के साथ मेरी सगाई की थी वह किसी और लड़की से प्रेम करता है वह मुझसे बात तक नही करना चाहता है। फिर भी मेरे माता पिता उसी लड़के के साथ शादी करना चाहते है। मुझे भी वह लड़का पसंद नही है पर क्या करे हमारी जाति के कुछ ऐसे कड़े नियम है जिसका उलंघन करने से माता



पिता समझते है कि उनकी इज्जत नहीं रहेगी। इसलिए जाति के सभी नीयमों को उनके माता पिता को पालन करना पड़ता है अगर लड़का बड़ा होकर शादी से इंकार कर देता है तो उसके माता पिता लड़की के घर वालो से ओर पैसो की मांग रखते है क्योंकि वह बोलते है कि जब सगाई हुई थी उसी वक्त से हमारा बेटा तुम्हारा दमाद हो गया था और उसके पालन पोषण करने में जो पैसा खर्च हुआ है उसका पैसा कौन देगा?

इसी तरह लड़के वाले लड़की के माता पिता से पैसों की मांग करने लगते है अगर माता पिता किसी भी वजह से रिश्ता तोड़ते हैं तो लड़की वालो से इसी तरह बोलकर पैसे मांगते है। इसलिए हम लड़कियों को मजबूरी में उस लड़के से शादी करने पड़ती है और पूरी घर की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है इतना ही नही जब रात को हमारे पति शराब पीकर घर आते है जो वह काम बोलते है वो काम न करने पर बहुत मारते है। घर की जिम्मेदारी तो सम्भालनी ही पड़ती है साथ साथ पति का भी आत्याचार झेलना पड़ता है।

बच्चे रेल गाड़ी से निकालते हैं कोयला और सिमेंट

बालकनामा ब्यूरो

शकूर बस्ती में एक रेलवे स्टेशन है जहां पर ज्यादातर कोयले और सिमेंट की रेल गाड़ियां आती है। वह रेल गाड़ी शकूर बस्ति के रेलवे स्टेशन पर दो से तीन दिन तक रूकी रहती है। इस बात का फायदा शकूर बस्ति में रहने वाले कुछ बच्चे उठाते है। वह बच्चे सिमेंट साईडिंग पर जाकर रूकी हुई रेल गाड़ी में चढ़ जाते है एवं कोयले और सिमेंट को अलग अलग थेलों में भरकर होटल या ढ़ाबे पर बेच देते है। होटल व ढ़ाबे वाले भईया एक





किलो सिमेंट पर बच्चों को 20 रुपए देते है और कोयला तो बहुत ही कम पैसों में खरीदते है उसके केवल पाचं से दस रुपए बच्चों को दे देते है। पत्रकार इन बच्चों से जाकर मिला और पूछा कि आप सभी बच्चे कोयला और सिमेंट रेल गाड़ी में से क्यों निकालते हो यह ठीक बात नहीं है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि उसके माता पिता के पास इतने पैसे नही है कि वह उनकी जरूरतों को पूरा कर सके। जैसे कि इन बच्चों को पहनने के लिए कपड़े और खाने के लिए कोई चीज नहीं मिलती है। उनके माता पिता सिर्फ रोटी खिलाते है लेकिन उन बच्चों को कपड़े और खाने की चीजों का मन करता है। इसलिए यह बच्चे कोयले और सिमेंट रेल गाड़ी से निकालकर दुकानो में बेचने का काम करते है जिससे उन्हें थोड़े बहुत पैसे मिल जाते है और वह अपनी जरूरत का सामान तथा कुछ खाने के लिए चीज खरीद लेते है।

पुल के नीचे रहने वाले बच्चों को हो रही है पानी की किल्लत

बातूनी रिपोर्टर राम सिंग रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने मूलचंद पुल के नीचे रहने वाले सभी बच्चों को साफ सफाई के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आप बच्चों को अपने शरीर को साफ सुथरा रखा करो नही तो गंदगी की वजह से आपके शरीर में किटानु फैल सकते है और आप बच्चे बिमार भी पड़ सकते है। यह बात सुनते ही बच्चों ने पत्रकार को अपनी समस्या बताई कि भईया हम बच्चे कैसे अपने शरीर को किटानू फैलने से रोक सकते है। यहां किसी चीज की सुविधा नही है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि यहां सबसे ज्यादा पानी की परेशानी है हमारे आस पास कहीं पानी नही मिलता है हम सभी बच्चे पानी के लिए तीन किलो मीटर पैदल जाते है। वहां पर एक दिल्ली जल बोर्ड कि पाईप लाईन टूटी हुई है वही पर हम बच्चे नहाते धोते हैं लेकिन उसका पानी बहुत गंदा है। उस पानी में से बहुत गंदी बदबू भी आती है। पानी की असुविधा



के कारण हम गंदे कपड़े जल्दी नहीं धोते है बल्कि कपड़े पहने हुए ही नहा लेते हैं ऐसा करने से हम बच्चे आसानी से खुले में नहा भी लेते हैं और हमारे कपड़े भी साफ हो जाते है। सभी बच्चे रोज सिर्फ पानी के लिए तीन किलो मीटर पैदल नहीं जा सकते इसलिए वह बच्चे वहां पर चार पांच दिन का नागा करके वहां नहाने जाते है और कुछ बड़ी लड़कियां भी बच्चों के साथ नहाने के लिए जाती हैं। सभी पुल के नीचे रहने वाले बच्चे चाहते है कि जिस तरह रैन बसेरों में सरकार द्वारा पानी भेजा जाता है इसी तरह पुल के नीचे रहने वाले बच्चो को भी पानी मिल जाए तो बच्चों को इतनी दूर न जाना पड़े।

बहला फुसलाकर लाते है बच्चों को दिल्ली, करवाते हैं काम

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय बालक ने बताया कि मैं गांव में पढ़ाई करने के लिए जाता था लेकिन मेरे माता पिता को लालच दिया कि मैं आपको बच्चे को दिल्ली ले जाकर पढ़ाई करवाऊंगा और साथ ही साथ पैसे भी दूंगा। यह बात सुनते ही मेरे माता पिता ने मुझे दिल्ली भेज दिया। दिल्ली आने के बाद उसका मालिक उसे स्कूल भेजने के बजाए उस बच्चे से सुबह आठ बजे से लेकर रात को दस बजे तक काम करवाता है। 16 साल बालक ने बताया कि जब से हम बच्चे दिल्ली आये है तब से अलग अलग प्रकार के काम करते है जैसे पानी बेचना होटल या ढ़ाबो में काम करना पड़ता है। बच्चों ने बताया हमें पानी का ठेला ले जाने में बहुत परेशानी होती है ठेले को धक्का लगाते वक्त छाती में तेज दर्द होता है क्योंकि उस ठेले पर 100 लीटर से भी ज्यादा पानी होता है। ठेले को सड़क पर ले जाते वक्त चढ़ाई भी आती है तो बच्चों से ठेला सम्भाला नहीं जाता है। ठेले पर बच्चे



दो रूपया ग्लाश पानी बेचते है कुछ लोग पैसे भी नही देते है। इसलिए हम बच्चों की तंख्वाह में से पैसे काट लेते है। जब बच्चे अपने माता पिता से फोन पर बात करते है तो उनका मालिक बोलता है कि अपने माता पिता से कुछ भी मत बताना कि मैं तुमलोग को मारता पीटता हूं अगर बोल दिया तो महीने की तंख्वाह भी नही दूंगा। इस डर से यह बच्चे कुछ नही बोलते है। इन बच्चों का मन अपने गांव वापस जाने को करता है लेकिन उनका मालिक उन्हें उनके गांव वापस नहीं जाने देता हैं।



जूता पॉलिश करके कमाते हैं दो पैसे

बालकनामा ब्यूरो

करोल बाग में चार बच्चे ऐसे है जो रोज सुबह सात बजे से लेकर रात को आठ बजे तक जूता पोलिस करने का काम करता है। इन बच्चों से पत्रकार करोल बाग मेट्रो स्टेशन पर मिला और पूछा कि आप लोग स्कूल जाते हो ? 11 साल के विश्वास ने बताया कि भईया हम बच्चे स्कूल नही जाते है हम दिनभर जूता ही पोलिस करते है। हम बच्चों को पढ़ाई करने का मन करता है पर हम पढ़ाई नही कर पा रहे है। हमारे माता पिता काम पर जबरदस्ती भेजते है अगर हम बच्चे एक दिन भी काम पर नही आते है तो बहुत मारते है। इसलिए हम बच्चे मार्किट में इधर उधर घूम घूमकर जूता ही पोलिस करते है। 9 वर्षीय सचित ने बताया कि हम बच्चे लोगो का जूता पोलिस करते है तो कभी कभी पैसे भी नही देते है। मारकर भागा देते है और बोलते है कि यह कोई दुकान नही है जो मुझे पैसे देने पड़ेंगे चलो भागो। वह हमें इसी तरह धुतकरते हैं और बहुत गुजारिश करने के बाद जहां एक जूता पोलिस करने का जहां 40 रुपए बनता है वहां लोग हमें 10 से 20 रूपय बड़ी मुश्किल में देते हैं बच्चों ने बताया कि कभी कभी एम.सी.डी वाले भी हड़कम मचा देते है। और जो भी हमारे पास सामान होता है वह भी छीन लेते है और उस दिन घर जाने पर माता पिता भी बहुत गुस्सा होते है कि सामान छोड़कर कहीं खेल रहा होगा इसलिए एम सी डी वाले सामान उठाकर ले गये। अगर हम बच्चे अपना सामान एम. सी.डी वापस लेने जाए तो जाए कैसे इतने का सामान नहीं है जितने वैसे उस सामान वापस करने पर लेते है इसलिए हम अपना सामान वापस नहीं लेकर आते है किसी तरह फिर से पैसे जोड़कर जूता पोलिस करना का सामान खरीदते है और फिर से अपनी रोजी रोटी और पेट पालने के लिए काम करना शुरू कर देते है।

छात्राओं को छेड़ते हैं बड़े व्यक्ति, लगाया उनके स्कूल जाने पर प्रतिबंध

बालकनामा ब्यूरो

लगभग 12 लड़कियों के माता पिता ने उनके स्कूल जाने पर लगाया प्रतिबंध इसलिए पत्रकार खुद इन लड़कियों से मिलने के लिए उनके घर पहुंचे और उनके माता पिता से मुलाकात की और उन्होंने बताया कि वे अपनी बेटियों को स्कूल भेजना चाहते है पर जिस रास्ते से उनकी बेटियां स्कूल जाती हैं उसी रास्ते में एक चमड़े की दुकान है। उस दुकान की छतो पर चढ़कर बड़े व्यक्ति उनकी लड़कियों को परेशान करते है व अश्लील बाते भी बोलते है। इसलिए वह अपनी लड़कियों का स्कूल से नाम कटवा रहे है अब वह घर में ही थोड़ा बहुत पढ़ाई करेंगी नही तो घर के कामकाज सीखेंगी। पत्रकार ने लड़कियों से भी बात चीत की तो 15 वर्षीय लड़की ने बताया कि दीदी हमें उस रास्ते से गुजरना भी बहुत मुश्किल होने लगा है बड़े व्यक्ति छत पर चढ़कर सीटी मारते हैं और बोलते है जो तुम्हारे अध्यापक स्कूल के अंदर पढ़ाई करवाते हैं उससे भी अच्छी पढ़ाई हम बाहर ही करा देंगे। पत्रकार ने लड़कियों से पूछा इस बारे में आपने अपने अध्यापक को बताया है ? 17 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम लड़कियों ने अपनी अध्यापक को भी बताया था उन्होने पुलिस थाने में इन बड़े व्यक्तियों के खिलाफ शिकायत दर्ज की



है। पर पुलिस के आने से पहले ही वह भाग जाते है। क्योंकि इन बड़े व्यक्तियों का कोई एक ठिकाना नही है यह दिनभर इधर उधर घूमते रहते है और हम जैसी लड़कियों को परेशान करते है। हमारे माता पिता ने कितने मुश्किलों से स्कूल में दाखिला करवाया था लेकिन इन बड़े व्यक्तियों की वजह से हमारा स्कूल जाना बंद हो गया है। मात पिता ने कहा कि अब उनकी लड़कियां स्कूल नही जायेंगी ए घर में काम करेंगी। लेकिन यह लड़कियां स्कूल नही छोड़ना चाहती हैं एवं अपनी पढ़ाई को पूरा करना चाहती हैं और चाहती है कि जो बड़े व्यक्ति लड़कियों को परेशान करते है उन्हें कड़ी से कड़ी सजा मिले।

वस्त्र जलाकर बनाते हैं खाना

बातूनी रिपोर्टर कैलाश रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मीटिंग किया मीटिंग के दौरान बच्चों ने बताया कि भईया हम बच्चो को बहुत बड़ी परेशानी है कि हम दिनभर इधर उधर लक्कड़ बीनने के लिए जाते है तब जाकर हमारे घर में खाना बन पाता है। अगर हम बच्चे एक दिन भी लकड़ी बीनने के लिए नहीं जाते है तो हमारे घर में खाना नहीं बनता है और लकड़ी भी बहुत मुश्किल से मिलती है। यदि हम बच्चे किसी पेड़ पर चढ़ते है तो गिरने का भी डर रहता इसलिए जो पेड़ नीचे झूका होता उसी पेड़ से लकड़ियां काटकर लाते है। क्योकि पार्क में लकड़ी बीनने के लिए जाते है तो गार्ड मारने के लिए दौड़ते है।

लेकिन दुख कि बात यह है इतनी मेहनत करने बाद भी हमारी लकड़िया कोई चोरी कर लेता है। जब भी लकड़ियों को घर पर रखकर कहीं बाहर जाते है वापस आने तक कोई हमारी लकड़ियां उठाकर ले गया होता है। दिनभर हम बच्चे मेहनत करके लकड़ियों का इंतजाम करते है दिनभर की मेहनत पर पानी फिर जाता हैं। इसलिए हमारे माता





पिता खाना बनाने से परेशान हो जाते है कि कैसे वह अपने बच्चों को खाना बनाकर खिलाएंगे। कभी कभी तो जब हमारे माता पिता काम पर से वापस आते है तो हम बच्चों पर ही गुस्सा करते है कि तुमलोग लकड़ियां बीनने के लिए गये ही नही होंगे। रोज रोज लकड़ियां कौन चारी करके ले जाता है। जिस दिन लकड़िया सारी की सारी चोरी हो जाती है उस दिन हमारे माता को जो वस्त्र हम पहनते है वही वस्त्रों को जलाकर ही खाना बनाते हैं।



ढोंगी बाबा

बालकनामा ब्यूरो

जग जीवन नगर में रहने वाले बच्चे अंध विश्वास का शिकार हो रहे है वहां पर एक ढ़ोगी बाबा है जो जादू टोना जानता है जग जीवन नगर में कोई भी बच्चा या बच्चे के माता पिता बिमार होते है तो डांक्टर के पास जाने के बजाए वह उस ढ़ोगी बाबा के पास जाते है। बच्चों का कहना है कि पहले वह बाबा इधर उधर से मांगकर अपना गुजारा करते थे लेकिन कुछ सालों से गांव में ही कब्जा कर रखा है। वह बाबा एक व्यक्ति का 300 रुपए लेता है। बाबा बोलता है कि आपके घर में भूतो का बसेरा है इसलिए आपलोग बार बार बिमार हो रहे हो और अगर आप अपने घर से भूतो को नही भगाओगे तो वह आप लोगो को मार देगा इसलिए आपको हवन करना पड़ेगा। वह बाबा एक घर में हवन करने लिए कम से कम तीन हजार रुपए लेता है। 14 वर्षीय बालक ने बताया अभी तक वह बाबा पांच घरो में हवन कर चुका है पर आज तक कुछ नही हुआ है जो लोग बिमार होते है वह उस बाबा की बात सुनकर और बिमार हो जाते है फिर जब डांक्टर से दवाई लेते है तो थोड़ा ठीक होते है। बच्चों के माता पिता बाबा के पास जाते है और बोलते हैं कि बाबा आपका जादू टोने से तो हम लोग ठीक नही हुए जब हमने डांक्टर से दवाई ली तब जाके ठीक हुए। बाबा बोला कि नही वह डांक्टर की दवाई से तुम्हारा बिमारी ठीक नही हुआ है मेरा जादू टोना से ठीक हुआ है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम बच्चे यह चाहते है कि इस ढोंगी बाबा से हमारे गांव को मुक्ति मिल जाए नही तो हमारे माता पिता बर्बाद हो जाएंगे।

छोटी उम्र में माता पिता ने सिखाया नशा करना

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने दक्षिणी दिल्लीए आगरा में दौरा किया तो पता चला कि जो छोटे बच्चे झुग्गी झोपड़ी या पुल के नीचे रहते है उन बच्चों के माता पिता खुद तो नशा करते है। साथ ही साथ उनका अपना बच्चा जब पांच साल का हो जाता है तो उसे भी वह नशा करना सिखा देते है। कुछ माता पिता नशा खरीदने के लिए अपने बच्चों को भीख मांगने के लिए भेजते है। बच्चे पुरे दिन कमाई करके जो पैसे लाते हैं उनके माता पिता उन पैसो से शराब खरीदकर ले आते हैं और रात को पार्टीकर शराब पीते हैं और साथ में अपने बच्चों को भी शराब पीलाते है। बच्चों का कहना है कि उनके माता पिता का व्हार भी ठीक नहीं है क्योंकि वह अपने बच्चों को भी छोटी उम्र में नशो की बुरी लत में फंसा देते हैं। जब उनके बच्चे बड़े होने लगते हैं तो उनकी तकलीफ बढ़ने लगती है। शराब पीने के बाद सर घुमने लगता है उलटी आने लगती है। जब किसी दिन उन बच्चों को भीख नही मिलती तो उनके



माता पिता बच्चों मारते है। आगरा में रहने वाले बच्चों में पाया गया है कि जब बच्चे भीख मांगने से मना करते है तो उनके माता पिता उन्हें कबाड़ा बीनने के लिए भेजते हैं। क्योंकि उन्हें किसी भी हाल में शराब चाहिए ही चहिए नही तो घर में हंगाम मचाने लगते है। बच्चों ने बताया कि आगरा की एक छोटी से गांव आजमपाड़ा में लगभग 60 बच्चे ऐसे है जो अपने माता पिता के साथ बैठकर शराबए शिगरेटए गुटका का सेवन करते है इसलिए इन बच्चों की मानसिक स्थिती पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है।

अतुल का संघर्ष

बातूनी रिपोर्टर अतुल रिपोर्टर शम्भू

अतुल 13 साल का है। वह अपने माता पिता के साथ बिहार के एक छोटे गांव बिरौल में रहता है। उसके दो भाई बहन है। उसके पापा कोलकाता में काम करते है। मम्मी गांव में खेतीवाड़ी का काम करती है। अतुल सरकारी स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ाई करता है। वह छोटी उम्र से ही घर की जिम्मेदारी उठा रहा है। जब मक्का और गेंहू का सीजन चलता तो वह मक्का का खेतो में काम करता है। छोटे छोटे मक्का के पेड़ पौधे पर कुदाल से मिट्टी चढ़ाता है। एक मक्का के पौधे पर मिट्टी चढ़ाने के दो रुपए मिलते है। उससे वह घर का खर्चा आराम से चला पाता है। अतुल ने बताया कि उसके गांव में यह नियम है कि जब भी बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है तो उसके माता पिता उसे काम करने के लिए भेज देते है। उसके जैसे बहुत से बच्चे है जो इस तरह के काम करते है। जो वो पैसा कमाता है उससे उसके घर का राशन लाया जाता है। पापा कोलकाता से जो पैसा भेजते है उस पैसे से दादा दादी का ईलाज होता है।

शादी पार्टी का काम कर रहे छोटे बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

लाल डिग्गी गावं में 70 ऐसे बच्चे है जिनकी उम्र 12 से 17 साल है यह छोटे मासूम बच्चे शादी पार्टी के काम करने के लिए जाते है। पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की तो 15 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे अपने मर्जी से शादी पार्टी में काम करने नहीं जाते है बल्कि हमारे माता पिता भेजते है क्योंकि हमारे माता पिता कुछ भी काम नही करते है अगर कभी कभी इनका मन होता है तो चमड़े की छटाई का काम कर लेते हैं। अभी शादी का सीजन चल रहा है इसलिए हम बच्चे शादी पार्टी में काम करते है नही तो मौसम के अनुसार काम करते लेते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि शादी पार्टी



में क्या काम करते हो ? बच्चों ने बताया कि हम शादी पार्टी में बर्तन धोने एवं तंदूरी रोटी बनाना या वैटर का काम करते हैं। और बच्चों ने बताया कि शादी पार्टी में काम करते वक्त हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है जब कभी कोई बर्तन टूट जाता है तो हमारे जो पगार देते है उस में से पैसे काट लेते है। ऐसे एक शादी पार्टी में काम करने का 100 से 200 रुपए देते है। शाम चार बजे से लेकर रात को दो बजे तक काम करना पड़ता है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा शादी पार्टी के काम में आप छोटे बच्चों को ही क्यों ले जाते है ? 17 वर्षीय बालक ने बताया कि हम छोटे बच्चे को वह लोग कम पैसे देते है और वह भी हमारी मजबूरी को जानते है कि हम बच्चे किस प्रकार अपना जीवन गुजार रहे है। इसलिए हमारा गलत फायदा उठाते है क्योंकि जब किसी बड़े व्यक्ति से शादी पार्टी का काम करने बोलेंगे तो वह बहुत पैसे मांगेगा इसलिए वह हम बच्चों से काम लेते है।

कक्षा के लीडर छोटे बच्चों को दिखाते हैं अपनी दादागिरी

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय बालक ने बताया कि हमे हमारा लीडर डरा धमका कर रखता है। हमें जब शौचालय जाना होता है तो शौचालय नही जाने देता है ए हर वक्त गाली गलौज से बात करता है। बच्चे अपने लीडर से बोलते है कि वह इस तरह का व्हार न करें। लीडर बोलता है कि चूप रहो नही तो स्कूल से बाहर निकाल दिए जाओगे। हमारी अध्यापक इसे देखकर भी अंदेखा कर देती है। बच्चों ने बताया कि ऐसा कोई दिन नहीं गया होगा जिस दिन हमने अपने लीडर से पीटाई नहीं खाई होगी। इस बारे में बच्चों अपने माता पिता से भी शिकायत करते है तो उनके माता पिता अध्यापक जी से मुलाकात कर उनसे बोलते है कि हमारे



बच्चों के साथ लीडर इस तरह का व्हार क्यो करता है। अध्यापक उनके माता पिता से बोलते है कि लीडरो का कसूर नही है बच्चे सही से पढ़ाई नही करते है इसलिए उन्हें मारते है। लीडर तुम्हारे बच्चों को भविष्य बनाने के लिए ही मारता हैं अगर तुमको अपने बच्चे पर ज्यादा दया आती है तो स्कूल क्यों भेजती हो घर में रखा करो।

बड़े लड़के करते हैं चोरी, लगता है इल्जाम मासूम छोटे बच्चों पर

बालकनामा ब्यूरो

बदरपुर बोर्डर के पास एक बस्ती में पत्रकार ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मीटिंग किया मीटिंग के दौरान पता चला कि इस बस्ती में छोटे बच्चे की जनसंख्या अधिक है। उप बच्चो में से कुछ बच्चे दिनभर इधर उधर कबाड़ा बीनते है और यहां पर रहने वाले बड़े लड़के चोरी करते है जब पुलिस छानबीन करने आती है तो जो छोटे बच्चे कबाड़ा बीनते है उन पर चोरी करने का आरोप लगाती है और पुलिस वाले भईया हम छोटे बच्चों को जबरदस्ती मारते पीटते है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया हम सिर्फ कबाड़ा बीनने का काम करते है पर कोई गलत काम नही करते है। लेकिन जब हम बच्चों को कुड़ा नहीं मिलता है तो हम बच्चे खाली बोरी लेकर वापस घर आ जाते है पर किसी व्यक्ति का सामान नही उठाते है चोरियां तो यह बड़े लड़के करते है और पुलिस वाले भईया से बचने के लिए हम छोटे बच्चे पर इल्जाम लगाते है ताकि इन पर कोई शक न करे। 16 वर्षीय बालक ने बताया कि यह लोग स्कूल की वर्दी पहनकर बस में चढ़ जाते है पब्लिक की जेब काटते है



और इसलिए बस ड्राईवर बदरपुर बोर्डर के बस स्टोप पर जल्दी बस नही रोकते हैं। बड़े लड़के स्कूल की वर्दी मार्किट से खरीदकर ले आते है और उसे पहनकर चोरी करने के लिए निकल पड़ते हैं। वह स्कूल की वर्दी पहनाकर इसलिए चोरी करते है ताकि चोरी करते समय अगर वह पकड़ा जाए तो लोग उसे आसानी से पहचान नहीं सकेंगे कि वह स्कूल वर्दी में स्कूल का छात्र है या चोर।

वातावरण जैसा छोटे बच्चे सीखते हैं वैसा



बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने दक्षिण दिल्ली ए पश्चिमी दिल्ली और नोएडा में दौरा किया तो पता चला कि लगभग 250 ऐसे बच्चे है जो दिनभर जुआ खेलने में लिप्त रहते है। पत्रकार इन बच्चों से मिला और यह जानने की कोशिश की कि यह बच्चे इतनी छोटी उम्र में जुआ खेलना कैसे सीख गये ?

15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया हम बच्चों के घर के आस पास का वातावरण ठीक नही है यहां पर अक्सर लोग दिनभर जुआ खेलते रहते है इनको देखकर बच्चे भी जुआ खेलना सीख गये है। अधिकतर दक्षिण दिल्ली के बच्चे जुए की लत में उलझे पाए गए। बच्चे अपना स्कूल छोड़कर जुआ खेलने लग जाते है और पढ़ाई करने स्कूल नही जाते है। अपने माता पिता से बोलते है कि आज स्कूल की छुट्टी है। और घर पर भी जुआ खेलते है। इन बच्चों के माता पिता कामकाज में लिप्त रहते है इस वजह से अपने बच्चों का पूरी तरह से ख्याल नही रख पाते। 15 वर्षीय बालिक ने बताया कि यहां पर बच्चे जुआ खेलने के लिए गलत कदम भी उठा लेते है। बच्चे अपने घरो का सामान बेच देते है और उससे जुआ खेलते है। जो बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है वह अपने माता पिता को पैसे नही देते। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि यह बच्चे अपने आस पास का माहौल देखकर जुआ सीख गए हैं अगर यह वातावरण सही रहेगा तो बच्चे कभी गलत नही सीखेंगे।

अगर मिले रहने का ठिकाना तो कर पायेंगे बच्चे पढ़ाई

बातूनी रिपोर्टर बल्ले रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार कुछ ऐसे बच्चों से मिला जिनके माता पिता मजदूरी का काम करते है इन बच्चों के माता पिता बिहार में रहते है। वहां पर काम न होने की वजह से अलग अलग जगह पर काम करने के लिए जाते है इसलिए बच्चे पढ़ाई नही कर पाते है। 15 वर्षीय बालक जो पहले गांव में तीसरी कक्षा में पढ़ाई करता था वह अपने माता पिता के साथ दिल्ली आ गया। उसके माता पिता सड़क से संबंधित कार्य करते है। माता पिता ठेकेदार का काम करते हैं इनका अपना काम नही होता है। जिस जगह से काम के ठेके आते है वही जगह पर चले जाते है इसलिए इनके बच्चे पढ़ाई नहीं कर पा रहे है। 15 वर्षीय बालक ने बताया एक साल पहले हम बच्चे अपने माता पिता के साथ दिल्ली आये थे अब यह भी काम खत्म



होने वाला है इसलिए बच्चे गांव जा रहे है। कुछ महीने से बच्चे संस्था के कार्यकर्ता के पास पढ़ाई करने जाने लगे थे लेकिन फिर कुछ दिनों के बाद कही से काम का ठेका आएगा तो बच्चों को जाना पड़ेगा। सभी बच्चों ने पत्रकार बोला कि जब तक हमारे माता पिता को काम का मुस्ताकिल ठिकाना नही मिल जाता तब तक बच्चे पढ़ाई नहीं कर सकते।

कुत्ता बना स्टेशन पर रहने वाले बच्चों का साथी

बातूनी रिपोर्टर सलमान रिपोर्टर शम्भू



पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लगभग 26 बच्चे ऐसे है जो काफी सालो से रहते है। यह बच्चे घर जाना नही चाहते है। जब भी कोई इन्हें घर जाने के लिए बोलता है तो यह बोलते है कि अगर हम बच्चे घर जाएंगे तो फिर से हमारे माता पिता हमारे साथ दुर्व्यवहार करेंगे। इसलिए हम घर नहीं जाना चाहते। जब बच्चों से पूछा गया कि उनको अपने माता पिता की याद नहीं आती है ? तो 16 वर्षीय बालक ने बताया कि जो हमे दुख देता है वह कैसे याद आएगा। हमारे माता पिता से अच्छा एक कुत्ता है जो हम बच्चों का पूरी तरह से ख्याल रखता है इतना प्यार हमसे हमारे माता पिता ने भी नही किया होगा जितना यह कुत्ता हमसे प्यार करता है। हमारे माता पिता को हमेशा पैसा चाहिये होता है अगर हम बच्चे पैसे भी लाकर देते है। फिर भी घर में लड़ाई झगड़ा होता रहता है। यह कुत्ता सिर्फ दो वक्त की रोटी खाता है और हमारे साथ दिन रात रहता है ए हम जहां जाते है ए यह भी हमारे साथ जाता है ए हमारी सुख दुख में साथ देता है जब हम बच्चे रात को सोते है तो वह हमारा और हमारे सामान का पूरा ध्यान रखता है।

पांच बड़े व्यक्ति छोटे बच्चे को करा रहे हैं गांजे का नशा

बातूनी रिपोर्टर सलमान रिपोर्टर शम्भू



14 से 16 साल के बच्चे हो रहे है नशे में लिप्त पहले यह बच्चे सिर्फ सुलेशन का नशा करते थे लेकिन अब इन बच्चों के जबरदस्ती गांजा का नशा कराया जाता है इन बच्चों से पत्रकार ने बातचीत की तो पता चला कि बच्चे अपने मर्जी से नशा नहीं करते हैं बल्कि पांच बड़े व्यक्ति बाहर से आते है जो इन्हें नशा करने के लिए प्रेरित करते है। जो बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है उनसे पहले यह लोग दोस्ती करते हैं और इनके साथ खेलते भी है। जब यह बड़े व्यक्ति गांजा का सेवन करते है तो इन बच्चों को भी नशा करने के लिए बोलते हैं। अगर ये बच्चे गांजा का सेवन नहीं करते तो कबाड़ा छीनने की धमकी देते है और मारपीट शूरू कर देते है 15 वर्षीय बालक ने बताया कि बच्चे चाहते है कि कैसे भी करके सुलेशन का नशा से छुटकारा मिल जाए। लेकिन यहां तो हम दूसरे अन्य नशे की ओर बढ़ते जा रहे है। बच्चों ने बताया कि एक कागज की पुड़िया में पैक होता है और उस गांजे को पीने पर अजीब सी बदबू आती है। एक बच्चे ने अपने बारे में जिक्र करते हुए बताया कि एक दिन मुझे जबरदस्ती गांजा पीलाया तो मेरा सर घरूमने लगा और उलटी भी आई तब पता चला कि गांजे का नशा सुलेशन से ज्यादा खतरनांक है। बच्चे चाहते है कि कैसे भी करके इन पांच बड़े व्यक्तियों को यहां से भागा दिया जाए ताकि बच्चे नशे के चंगुल से बच पाए।

उठानी पड़ रही है अपने भाई बहन की जिम्मेदारी

बतूनी रिपोर्टर दुर्गा रिपोर्टर दीपक

16 वर्षीय दुर्गा जो कि लोरेन्स रोड की झुग्गी में अपने परिवार के साथ रहती है। यह लोग इसी झुग्गी में पिछले बीस वर्षो से रह रहे है। दुर्गा पांच भाई बहन है उसके माता पिता दोनो शराब पीते है। दुर्गा एक साल से काम कर रही है उसके पिताजी लोरेन्स रोड में कैनरा बैंक में फाईल की देखरेख का काम करते थे और माताजी दो कोठियों में काम करती थी। दुर्गा ने बताया कि उसके पिताजी को टी.बी की बिमारी है और वह बहुत शराब पीते है एक रात वह बहुत शराब पी लिये थे और उसके बाद टी.बी की दवाई भी खा ली दोनो चीज के एक साथ इस्तमाल करने की वजह से उनकी हालत बिगड़ गई। जब वह सुबह शौच करने के लिए गए तो शौचालय में ही उनकी मुत्यु हो गई। मुत्यु होने के बाद घर की परेशानी बढ़ गई। अब दुर्गा की माताजी कोठी में काम करती है और दुर्गा लन्च बॉक्स की फैक्ट्री में 12 घंटे पेकिंग का काम करती है इस काम के दुर्गा को प्रतिमाह 6500 सौ रुपए मिलते हैं। इसके साथ साथ दुर्गा अपनी पढ़ाई ओपन बेसिक एजुकेशन से कर रही है। उसकी इच्छा है कि वह अपने भाई बहन का स्कूल में दाखिला करा दे ताकि उसके भाई बहन को उसकी तरह किसी फैक्ट्री में काम न करना पड़े।

छोटे कंधों पर परिवार की जिम्मेदारी

बातूनी रिपोर्टर खुशबू रिपोर्टर चेतन



खुशबू 9 साल की है जो कमला नेहरू कैम्प में रहती है। उसके परिवार में सात लोग है और पिता शराब पीते है। वह दिनभर इधर उधर घुमते रहते है कुछ भी काम नही करते है। खुशबू की माता जी अपने दो छोटे बच्चो की देखरेख करती है। उसका एक छोटा भाई सात साल का है जो दिनभर रेलवे लाइन की पटरियों पर खेलता रहता है। लेकिन दुख कि बात यह है कि खुशबू अपने परिवार के गुजारे के लिए कोठी में काम करती है। प्रतिमाह उसे दो हजार रूपए मिलते है जिससे कुछ दिनो तक घर का खर्चा चलता है। अगर खुशबू काम नहीं करेगी तो परिवार में सभी सदस्यों को भूखा रहना पड़ जाता है। उसने बताया कि जब मैं पहले काम करने नहीं जाती थी तो हमारी माताजी और छोटे भाई बहन खाना खाने के लिए रोते रहते थे। इसलिए मैं एक आंटी से मिली जो एक कोठी में काम करने के लिए जाती है उन आंटी से गुजारिश की तब जाकर मुझे भी एक कोठी में काम पर लगा दिया है। अभी हमारे परिवार के लोग अच्छे से रह रहे है लेकिन मुझे बहुत काम करना पड़ता है। जब मैं कोठी से काम करके आती हूं तो मुझे बहुत थकावट महसूस होती है। इसके बाद भी घर का भी काम मुझे ही करना पड़ता है। मैं चाहती हूं कि किसी तरह मेरे पिताजी शराब पीना छोड़ दे ओर कोई अच्छा काम करने लगे ताकि हमारी घर की परेशानी दूर हो जाए।

आखिर कब तक रहें बच्चे सड़क पर?

बालकनामा ब्यूरो



जो बच्चे सड़क पर रहते है उन बच्चों को आए दिन किसी न किसी वजह से तकलीफ होती ही रहती है ऐसे ही यह खबर है पुल के नीचे रहने वाले बच्चों की। वहां पर पत्रकार ने देखा कि काफी पुलिस वाले भीड़भाड़ लगाए हुए है और जो भी बच्चे पुल के नीचे रहते है उनके माता पिता से बोल रहे है कि यहां से अपना सामान उठा कर कहीं ओर ले जाओ। जिन बच्चो के परिवार वहां से नहीं जा रहे थे वह उनको जबरदस्ती पुल के नीचे से भगा रहे थे।

पत्रकार एक पुलिस वाले भईया से मिला और अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि मैं एक अखबार का पत्रकार हूं मैं यह जानना चाहता हूं कि यहां पर इतनी भीड़ क्यों है? और बच्चो को यहां से क्यों भगाया जा रहा है ? उन्होंने बताया कि इस पुल के नीचे से बड़े अधिकारी गुजरने वाले है इसलिए हमारी ड्यूटी यहां लगाई गई है। हम इन बच्चो को यहां से भगा रहे है। ताकि उनको सड़क पर रहते हुए कोई बच्चा नजर नही आए। 15 साल की बालिका ने बताया कि भईया जब भी कोई बड़े अधिकारी इस पुल के नीचे से गुजरते हैं तो हम बच्चो के साथ ऐसा ही बर्तावं करते हैं या फिर पुरे दिन के लिए किसी दूसरे स्थान पर भेज देते है। जब बड़े अधिकारी यहां से गुजर जाते है तो फिर हम वापस आ जाते है। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि सरकार हम बच्चों को सड़क पर देखना नही चाहती है इसलिए तो जब भी यहां से गुजरते है तो हम बच्चों को भगा देते है। अगर सरकार चाहती है कि हम बच्चे सड़क पर नही रहे तो बच्चों के लिए अच्छी जगह पर घर बना दे ताकि बच्चे उस घर में सुरक्षित रहे केवल सड़क पर रैन बसेरे बना देने से बच्चों की समस्या दूर नहीं होती है। आखिर हैं तो हम तब भी सड़क पर ही खाना बनाना ए नहाना धोना यह सब काम फिर भी बच्चों को सड़क पर या उसके किनारे ही करना पड़ता है।



सुभाष चाहता है मिले दुबारा स्कूल में दाखिला

बातूनी रिपोर्टर सुभाष रिपोर्टर दीपक

14 वर्षीय सुभाष अपने पविार के गुजारे के लिए चप्पल फैक्ट्री में काम करता है पत्रकार सुभाष को काम करते हुए देखा तो उनसे मिलने गए सुभाष ने अपनी परेशानियों के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे घर में सभी लोग काम करते है मेरी माताजी घर में ही रहकर कपड़े सिलाई करती है ए पिताजी मजदूरी का काम करते है। पत्रकार के पूछने पर सुभाष ने हस्ते हुए कहा कि कैसी बात कर रहे हो मैंने चार महीने पहले ही अपना स्कूल छोड़ दिया है क्योंकि मेरे स्कूल की स्थिति ठीक नही है। लेकिन मैं अभी भी पढ़ाई करना चाहता हूं क्योंकि मेरा सपना है कि मैं भी पढ़ाई लिखाई करके एक अच्छा काम करूं ताकि मेरे माता पिता को मजदूरी नहीं करना पड़े और मेरे परिवार के सभी सदस्य खुश रहे। अभी मुझे फैक्ट्री में 12 घंटे काम करना पड़ता है जिससे पूरे दिन मेरे शरीर में दर्द रहता है मुझे यह काम करना बिल्कुल पसंद नहीं है क्योंकि यहां पर लोग हर वक्त गाली गलौज से बात करते है। मैं चाहता हूं कि मेरी मदद कोई करे ताकि मैं दुबारा स्कूल जा सकूं।



पत्रकार ने मुलाकात की (टी डी एच) मेंम्बर से

रिपोर्टर शम्भू

श्याम श्रेष्ठ जी से पूछे कुछ सवाल

पत्रकार ने एक मीटिंग में भाग लिया उस मीटिंग में नेपाल में रहने वाले बच्चो के बारे में चर्चा हो रही थी उस चर्चा से पता चला कि नेपाल में अभी भी 500 बच्चे है जो सड़क पर रहते है वह अपने गुजारे के लिए होटल या ढ़ाबो में काम करते है इसको लेकर पत्रकार ने श्री श्याम श्रेष्ठ नेपाल के (टी.डी. एच,) संस्था के कार्यकर्ता से मुलकात की।

पत्रकार - नेपाल में सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस स्थिति में रहते हैं ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - भारत में सड़क एवं कामकाजी बच्चो की संख्या बहुत अधिक है लेकिन नेपाल में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या लगभग 500 के करीब है।

पत्रकार - मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि नेपाल में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की जनसंख्या कम है। लेकिन यह चम्तकार कैसे हो गया ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - नेपाल की सरकार बहुत अच्छी है वह गरीब बच्चों की पूर्ण मदद करती है और सड़क पर बच्चे न रहे उसके लिए वहां की सरकार बहुत सतर्क है। नेपाल की सरकार इन बच्चों के लिए अलग अलग जगहों पर सेंटर खुले हैं जिसमें बच्चे आराम से रहते है।

पत्रकार - सरकार बच्चों की पूरी तरह से सहयोग कर रही है तो 500 बच्चे भी सड़क पर क्यों है ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - सरकार इन बच्चों को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग कर रही है। कुछ संस्था ऐसी है जो सरकार से पैसे लेती है पर पूरा योगदान नहीं कर पाती। इसलिए कुछ बच्चे अभी भी सड़क पर है।

पत्रकार - जो बच्चे सड़क पर है क्या वो नशा भी करते है ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - जो बच्चे अपने घर से बाहर निकल जाते है वह थोड़ी गलत संगत में पड़ जाते है और नशा भी करते हैं। मगर जो भारत में बच्चे नशा उपयोग करते है वो वहां पर नहीं मिलता सिर्फ गुटखा ए सिगरेट आदि का नशा करते है।

माता पिता के दबाव में बच्चे कर रहे हैं गलत काम

बालकनामा ब्यूरो

लगभग 40 बच्चे जिनकी उम्र 10 से 15 साल तक है। इन बच्चों के माता पिता खुद नशीले पदार्थ बिकवाते है। इस बारे में जब छानबीन किया गया तो पता चला कि यह बच्चे बहुत मुश्किल में आ जाते है। चूंकि जिस जगह पर यह बच्चे नशा बेचने के लिए जाते है वहां पर पुलिस वाले काफी चेकिंग करते है। इनसे बचने के लिए माता पिता उन्हें यह सुझाव देते है कि जो कपड़े वह पहने होते हैं उसकी समीज और शर्ट में नशीला पदार्थ छुपाकर ले जाए। अगर कभी गलती से भी किसी बच्चे को पुलिस वाले भईया पकड़ लेते हैं तो उस बच्चे की बहुत पीटाई होती है। घर पर जाने के बाद उसके माता पिता भी उन बच्चो पर आत्याचार करते है। यह बच्चे एक डरी हुई जिंदगी जी रहे है। अगर बच्चे यह काम नही करेंगे तो माता पिता खाना पीना नही देंगे और अगर वो काम करते हुए पकड़े जाते है तो पुलिस वाले पिटाई करेंगे। बच्चों ने बताया कि नशा ज्यादातर ट्रक वाले ए रिक्शे वाले लेते हैं। दिनभर काम करने पर 200 से 300 तक की कमाई हो जाती है। 14 वर्षीय बालक ने बताया कि बच्चे पढ़ाई करना चाहते है पर उनके माता पिता स्कूल नही भेजते। अगर बच्चे स्कूल जाने की बात करते है तो उनके माता पिता बोलते है कि पढ़ाई लिखाई करके क्या होगा ?

छोटे भाई बहनों को भीख मांगने ना भेजें : प्रकाश

बातूनी रिपोर्टर प्रकाश रिपोर्टर दीपक व चेतन



प्रकाश अपने माता पिता के गलत व्यहार की वजह से एक कबाड़े की दुकान पर काम करने लगा क्योकि उसके माता पिता आए दिन घर में लड़ाई झगड़ा करते है उसके माता पिता उसके छोटे भाई बहन से भीख मांगवाते है अगर वह भीख मांगने नही जाते है तो घर से बाहर भगा देते है। प्रकाश ने बताया कि मुझे भी दो दिन यही बोल रहे थे कि हमारे पड़ोस में जो छोटे बच्चे है वह अपनी माता पिता को कमाकर खिलाते है पर मेरे बेटे ऐसे कहां है जो कमाकर खिलायेंगे ए दिनभर इधर ऊधर घुमते रहते है। प्रकाश ने बताया कि जब रात को शराब नही मिलती तो घर में गाली गलौज करते है। इसलिए मैं एक कबाड़े की दुकान पर गया और मालिक से काम पर रखने के लिए से गुजारिश की कबाड़े की दुकान पर काम मिलने के बाद वह कबाड़ा बीनने लगा। अब वह कबाड़े की दुकान पर भी काम करता है और सुबह आठ बजे चप्पलो की फैक्ट्री में जाता है वहां से बचा हुआ कबाड़ा लाता है इस काम के उसे पुरे दिन में लगभग 150 रूपए तक कमा लेता है। और इसके साथ साथ बीच में अगर कभी शादी पार्टी का काम मिलता है तो वह बर्तन धोने का काम करने चला जाता है जो भी पैसे कमाकर लाता है वह अपने माता पिता को दे देता है प्रकाश इतनी मेहनत इसलिए करता है ताकि उसके माता पिता उसके छोटे भाई बहन को भीख मांगने के लिए ना भेजे।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...



स्ट्रीट चिल्ड्रन सम्मलेन कार्यक्रम में संपादक की भागीदारी



स्ट्रीट चिल्ड्रन द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित बालकनामा का वितरण



अमर उजाला

26 मार्च 2017

रविवार

बच्चों ने पहली बार देखे वन्यजीव

अमर उजाला अखबार में कवरेज



बालकनामा की सम्पादकीय टीम की मीटिंग



स्ट्रीट टाक मैं हिस्सा लेने वालों का सिलेक्शन



स्ट्रीट टाक कार्यक्रम

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

Issue – 63 May 2017

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to the given address – 31 Basement, Gautam Nagar, New Delhi – 110049
Ph. No. 011- 41644471
balaknamaeditor@gmail.com

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

WHY DID PEOPLE BEAT STREET AND WORKING CHILDREN

CHILDREN FROM 14 STATES PUT FORWARD THEIR THOUGHTS

Two day meeting was organized in National Bal Bhavan by Campaign Against Child Labor. Children from following 14 states participated in this meeting – Andhra Pradesh, Karnataka, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Gujarat, Chhattisgarh, Delhi, Tamil Nadu, Jharkhand, Orissa, Haryana, Rajasthan, Telangana. Balaknama Team covered this event. Things heard, seen and felt by Balaknama Reporters were as below

Reporter –Shambhu, Chetan and Deepak

Children discussed the issues of child labour through plays and charts, how children are getting involved in child labour. Children who are working in their homes were told by their parents to get involved in small work in homes but sooner or later they get involved in bigger works. Parents keep their children involved in work for the whole day which is harmful for them. This type of work is becoming dangerous for children as children who are 14 years of age or less get involved in family work and these children who help their parents remain devoid of education. Small children are working in their homes. Is this not child labour? Government has made the law that a child of 14 years of age cannot be involved in child labour but can be involved in family work but in reality if we see children are getting involved in dangerous works inside their homes too. Government law has not

done by children that is why children are mostly now seen employed in homes. Children showed their anger and said, "Children are getting devoid of education because they are compelled by their own parents to work and that is why children get distracted from their studies. Children start moving to the feeling of greed that working gives you money and not studying and this money will support their parents too". After this children explained through the medium of chart paper that child rights memorandum of understanding says that if parents of a child are not getting proper wages then it is responsibility of the government that they help such parents so that their family's situation can change and they can send their children to school and should make sure that their rights are not exploited. Children further said, "People who employ children forcefully will not be spared from legal action. We all are against those people who make children work in their adolescence".

Children added, "Government announced that children can be involved in non-dangerous work and people are taking advantage of children from this. People employ us in dangerous work saying that we will be working in non-dangerous work. Government has given the permission to children to work by making the workable age as 14 years". Street and working children said showing their anger, "This should not at all happen that a child of 14 years can work. This decision is against us. This should be stopped and 18 years should only be the working age. Nobody has the right to exploit our rights". This way street and working children shared their worries and on other hand they expressed their happiness about the world conference on child labour to be held in Argentina who is asking our country

continued on pg. 2



WHY PEOPLE BEAT STREET AND WORKING CHILDREN?

1. Madhya Pradesh Bhopal Chetakbridge, 16 years old Akash (name changed): I work at a tea shop. If I get a bit late, my owner beats me up and threatens me to go away.
2. 15 years old Reshma (name changed): I stay at railway station and people ask me to do bad things and if I refuse to do that they beat me.
3. 15 years old Ankit (name changed): I do the work of picking garbage from people's homes. If the garbage gets spilled on the stairs, the owner abuses me and sometimes even beat me too.
4. 14 years old Aarti (name changed): I sell toys in the market. Whenever I go to market people starts beating me and shoo me away from the market.
5. 17 years old Ravi (name changed): I pick rags at railway station. People there consider me a bad element and thus beat me up.
6. 15 years old Asha (name changed): I beg at red lights. People molest me there and at times beat me up.
7. 13 years old Kundan (name changed): I work at a garage shop. My owner asks me to pick heavy car tools and if I am not able to do so he abuses me and hit me by the tool itself.
1. 17 years old Payal (name changed): I work in a bungalow. I do not do any mistake still my owner beats me.
2. 14 years old Hari (name changed): I wash utensils at a dhaba. One day by mistake I broke a glass for which my owner beat me and did not give me salary for one month.
3. Tamil Nadu Shalu (name changed): I work in a mill for the whole day. They do not allow me to use washroom and if I say two three times, they abuse me and starts hitting me.

EDITORIAL

Dear friends,
Heartily wishes from street and working children on the occasion of International Street and working children.
Friends Street and working children's newspaper Balaknama has come up again with real stories and news with this edition.
It is a very happy moment for street and working children that they are recognized by UNCRC now. It is now believed that street and working children exists in the world and they also have their problem which needs to be addressed.
We are glad that we have got the recognition and our problems will also be taken care of now and something good will be done for us.
Thus Street and Working children are bringing with it (This is our time now, are you listening to us) and some similar stories of struggle.
We hope that you will like this edition and do send us your feedback on above mentioned address.

The Editorial Board

CHILDREN PUSHED INTO SEXUAL EXPLOITATION BY THEIR OWN PARENTS

Reporter Vijay Kumar

When reporter went to meet children in slums, he got to know that wrong things are happening with children there and nobody was ready to talk about it. Children were very scared and were not ready to disclose anything to the reporter. 13 years old Girl said, "My mother forcefully sends me to an uncle and in return takes money for it. And if I refuse she beats me up and does not even give me food so I have to go. But whom do we tell our problems to". When reporter asked a 14 years old girl about her problem, she said, "There are some dominant people who get involved in obscenity with our mother too. When we or our mothers go to pick wooden logs, area staff sexually exploits us and they even snatch our logs and beat us too". Reporter got to know from other people that this is their profession. People come here from nearby colony and pay for this obscenity. Their parents are also involved in it. Children said, "We have been seeing these people since very long. Nothing has changed in them". Reporter got to know from 12 to 15 years old girls that around 40 to 50 children are into sex work pushed by their known or their parents. They said, "50% children do not go to school here and their parents do not even want them to go. Children here work with their parents and do the work of monkey play, begging, boot polishing and of cleaning ears. When reporter spoke to these children, they said, "We want to study but our parents make us do wrong things forcefully".

REPAIRING CARS TO RUN HOME

Talkative Reporter Vikas, Reporter Chetan

There is a market where iron is sold and bought where people come in their cars from far off places to buy iron. Labours load iron in the cars. There are two kids here who do the work of repairing the cars. One is 14 years old and other is 8 years old. These two repair all the cars which break down like they fill water in the water tank of the cars if it becomes less. Reporter asked these children, "Why do you only repair these cars?" The child replied, "When cars are loaded with iron then they cannot be taken anywhere because if it de load the car again then the labour has to be paid again. So we roam here in this market only. Whosoever needs us can call us". Reporter asked, "You guys are very small, how do you do this work?" 14 years old boy said, "We have been doing this work since childhood. Earlier it was scary but now we does not feel scared. Our homes run on Rs 40 or 50 which we get from repairing one car". Reporter asked, "Do you feel any problem while repairing cars?" 8 years old boy said, "We face difficulty while removing a punctured tyre. We have to apply much strength to open the tyre nuts, due to which we feel pain in our bodies. We have to do this work out of compulsion".



CHILDREN SELLING RAW ALCOHOL OPENLY

Balaknama Bureau

"These children are 10 to 15 years old only". Reporter was shocked seeing that this work was done by such small kids. After investigating reporter got to know that their parents make the raw alcohol but does not supply on their own. They get it sold by the children near them. 15 years old boy said, "We remain involved in this work since morning till 9 at night. We supply in the markets also and most of the people come to buy from us only as they all know that nobody sells this raw alcohol here except us. Our parents have set up shops selling betel leaves and tobacco. People come here to eat betel leaf and buys alcohol also". Reporter asked, "Do you not fear police while supplying raw alcohol?" Children replied, "Police also come to us to buy alcohol and our parents handle those who say something. We children do not suffer anything". Reporter asked, "Where do you get this alcohol from?" 14 years old boy said, "We do not buy it from anywhere, it is made by our parents only. They have been doing this work since very long". Reporter asked, "What is the cost of one packet?" Children said, "That depends on you, what kind of packet you require. We sell three kinds of alcohol packets, one is very small, second a bit larger than it and third the largest. They are priced according to their size". Reporter asked children, "Do you all go to school?" 16 years old boy replied laughingly, "We have been selling liquor from the time we have gained consciousness. Our parents have also never discussed about studies. Only money matters for them. We children are into this work for the whole day". 14 years old boy said, "I once said to my parents that I want to go to school but they scolded me and said what will you get by going there, do your work. Since them studying is only a dream for me".

WHY DID PEOPLE BEAT STREET AND WORKING CHILDREN

from page 1

about our law and status of child labour. Children said, "People from India would be present there and we are glad that they are also asking about the condition of street and working children of our country". Then children who performed plays said to the children who came from 14 different states, "This is a golden opportunity for all of us to share our problems. We can tell our children's status to them by participating in this conference so that they can help street and working children so that we can become capable of moving ahead in our lives".

Some main points discussed there:

- If Government makes any law regarding street and working children they should surely consult them before doing so.
- People who are employing children to work should not do so and they should not exploit children's rights.
- Vocational training centre should be opened for street and working children so that they are trained according to their skills and to keep their future secure.
- There should be no kind of children's exploitation. Children would not do heavy work in their homes too because that is also considered child labour only. Children would be working for 15-20 minutes only otherwise their study time and playing gets wasted and no proper development takes place.

Children who have come from different 14 states had also spent their life miserably. There were some girls among these children who have done work of lifting lights in marriages and there were boys who do work of carrying bricks. These children asked following questions to Sh Omkar Sharma, Labour Department Officer who puts forward the things favourable for children in front of the Government-

- Does 14 years to 18 years old children not work?
- Is it necessary for children of age 7 to 14 years to work after their school?
- If children help in family work, will it not be considered child labour?

Sh Omkar Sharma said, "Any person who employ children in some work will be imprisoned for 6 months and have to pay Rs.20, 000 as fine. According to Government, 14 to 18 years is the adolescent age. If you see any such children working somewhere you can tell us through social media so that those children can be given help".

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

Street and Working children suffering from scorching heat

Balaknama Bureau

Reporter asked street children, "How are you staying in such scorching heat?" 15 years old boy said, "Increasing heat is troubling us a lot. Our work has also reduced due to scorching sun as earlier we could sell our things the whole day in market but now it is not possible so we sell things in the evening". Children staying in night shelters and under the flyovers are facing terrible water problems. Reporter saw there are three tanks outside the shelters but all were empty with no single drop. Children said, "Tanker comes daily from Delhi Jal Board in morning and night but these three tanks also remain insufficient due to large population here. Water is also not good in it as these three syntax tanks were put here in winters and since then they have not been cleaned and its lid is also broken. All dirt gets inside it and water becomes hot too. This water stinks badly still we have to drink this only". They added, "We go to railway station when there is no water inside the tanks but we are scolded away by Policeman there. Then we go to a temple there also we are shooed away. There is Gurunanak drinkable water in market and people get cold water to drink from there free of cost but the uncle does not let street and working children drink water from there, scare us and tell us to go away".



PARENTS' UNEMPLOYMENT LEADING TO CHILD LABOUR

Balaknama Bureau

20-25 children are brought from places like Uttar Pradesh, Bihar and Bengal to make them employ in different kind of work. Reporter got to know from children that these children are involved in work for the whole day but are seen in the evening only. Reporter visited in the evening to confirm this information. Reporter saw that a 14 year old child is working at the momos shop and as the evening approaches the crowd increases at the shop and the child faces difficulty in frying momos in large quantity but he still manages somehow.



Reporter tried to talk to the child after people left but child did not talk. After contacting child for around 3-4 days regularly, the child responded. Reporter asked, "Why were you not talking to me earlier?" Child replied, "There was a boy standing beside me whenever you tried talking to me. This boy is sent by our owner to keep a watch on us that is why I was not talking to you. This boy is sent to check if we are saving any money". Reporter asked him the first question, "I got to know that you work the whole day but the momos shop get opened in the evening then how come you are involved in the work for whole day?"

Child replied, "It is correct that momos shop get opened in the evening but the whole day we are busy preparing momos veg roll and non-veg roll. Our owner just gets us all the material and we prepare everything with the help of an uncle". Reporter asked second question, "Do you face any problem while preparing these momos?" Child replied, "Police does not create any problem for us or our owner handles them. We face problem while frying the momos and veg roll as the place where we have our shop remains too crowded so it becomes difficult for us to manage".

Reporter asked third question, "Why have you come here to work from your village and how much do you earn?" 15 years child said, "Our parents do not get any work in our village. That is why we have to roam here and there in search of work leaving or studies behind. We get Rs. 3000 per month".

NEW POLICE OFFICER ON DUTY

CHILDREN STAYING AT RAILWAY STATION SUFFER

Balaknama Bureau

Children staying at railway station sharing their sad story said, "We pick rags at railway station for our survival but new Police officers who come at railway station behave badly with us". A child said, "I ran away from my house because of the physical abuse which I had to bear and I chose railway station as my home. We have been staying here from last 4 years. Recently only Police officer became our friend here, he used to listen to all our problems and help us. We were also studying properly but the sad thing is that he recently got transferred to a new place. New police officer tortures us badly. He just doesn't want to see us here. Whenever we go to pick bottles from trains, he comes running with sticks to beat us". He added, "Old police officer had also arranged a place for sleeping for us but our problem has increased since the old officer left. We all children used to stay together earlier but now we again have to sleep somewhere on railway platform. Same problems have started arising again. So we want that whenever a police officer is transferred, he leave a written notice behind for children so that the new officer does not treat us badly".



GIRL STAYING COMPULSIVELY WITH MOTHER BEING TORTURED

Balaknama Bureau

Two children were staying happily with their parents in their village but after their father dies, their mother became mentally unstable who was not then able then able to differentiate between right and wrong. Their maternal uncle aunty threw them from their house. Currently these children are staying in a temple with their mother. Their mother does not work and remains all the time in the drunken state. People do wrong things with these kids- a boy aged 12 years old and a girl aged 15 years old, taking advantage of their mother's mental condition. Talkative reporter got to know that anybody comes and pick them up from there as they sleep outside the temple and sexually exploit the girl. Nearby children told the reporter that people give money to their mother. Talkative Reporter spoke to the girl. Girl told fully about her. She said, "It hurts a lot when people sexually exploit me. My mother also does not say anything when I tell her about this. She is only bothered about her liquor. Whenever somebody gets her liquor she asks that person to take me with him. I want freedom from this but I am not getting it". Talkative Reporter asked, "Why don't you go to a shelter? You will be safer there". She replied, "My mother will become alone if I will leave her. That is why I do not anywhere".



BEGGING, THE ONLY OPTION FOR SURVIVAL



Balaknama Bureau

A 17 years old girl was seen begging at the red light with her mother and a small baby in her mother's lap. Balaknama reporters went to talk to them and got to know the reason behind their begging at red light. Blind girl said explaining her sad story, "I got married to a man at the age of 14 years and when I got pregnant he started torturing me and stopped giving me any money for managing household chores. When my baby was born he started working in marriage parties. He met with an accident there and lost his hand due to felling of an electric wire. He stopped working and I lost all livelihood options. What work can a blind girl do, thinking this me, my mother with my one year old baby resorted to begging at red light. Now I am able to take care of my child and my husband easily. I do household chores also after begging and my mother manages the cooking as I am unable to cook due to lack of eyes. I am able to do the cleaning part and can also take care of my baby". She added, "It is very difficult for me to beg at red light as fast running cars cross near red light. That is why I come with my mother who holds my hand and take me here and there. I can only listen to the voices of people as it is dark for me everywhere. I want that the Government should take cognizance of me and my child. Government should take care of children like us so that we don't have to beg for our livelihood".

RUN AWAY CHILDREN ARE EASY TARGET

Balaknama Bureau

Balaknama reporter conducted a support group meeting with children staying at railway station. Children shared their problems during the meeting. They said, "We do not get much bottles to pick up from railway station so we go to different places to pick up bottles. One day we went to Connaught place and we were shocked to see many children like us picking the bottles there as two days back there were no kids to be seen. 15 years old child tried talking to one of the child but he got scared and ran away. This same kid was seen picking up rags on the second day also so they again tried talking to him. He replied in a scary tone, "Why do you want to talk to me?" We told him that we also pick bottles like you but you run away whenever you see us. 14 years old child said, "We do not do this work with our wish. We have an owner of us who make us do this work and he has asked us to not to talk to anyone and not to tell us about anything. That is why I was not talking to you". Then the child asked him, "Where have you all come from?" child replied, "We have come from different places. Some have come from Bihar, Nepal and Rajasthan. We are around 15 children of 14 to 17 years of age. We had come to Delhi due to bad family conditions but we did not know we had to suffer like this here. Our owner is an old man and he makes such children his prey that has run away from their homes or is into dark world of drugs. He makes them work for his selfish interest". One child asked them, "How much money does he give you whom you work with?" Child said, "He does not give us money. He only provides us with food in morning and night. In afternoon we beg food from others. But whatever money we earn he drinks liquor from that".





MISUSE OF FREE INTERNET-ELDER CHILDREN SHOW PORNOGRAPHY TO YOUNGER KIDS

Balaknama Bureau

People have been enjoying full internet and calling service since Jio announced its free service from October 2016. On the other side it is having a bad impact on children staying at railway station. Children told, "Elders are enjoying this facility but our lives have become miserable as small children and girls also come to station to pick rags". 15 years old boy said, "There is an elder boy who uses Jio sim and watches pornography on his phone all the time. In the evening when we were going to pick up rags we saw four children with this man in the train near the cleaning lane. These children did not know about his habits that is why came in his trap. That man stopped his phone till the time we reached there. We asked those children sitting with him, "What are you doing here?" Those children replied, "Bhaiya when we were going to pick rags, he called us and started showing us this porn video. When we refused to see the video he threatened us that he will not let us pick rags on this station. That is why we started watching this video out of compulsion". A 16 year old boy said, "I also became his prey once like these children. He called me to show a good video but later he started the porn video and tried touching my private parts. So I ran away". 16 year old girl said, "Earlier we did not have to face any problem. This has started since Jio sim has come. Boys are also not even safe now. These elder boys did not used to see porn videos as they had to pay for the internet services but now these are available free of cost so now whole day they watch porn videos. They also show these videos to small children and then sexually exploit them. Many children are getting exploited because of this".

CHILDREN COMPELLED TO MAKE INJURIES ON THEIR BODIES FOR BEGGING

Balaknama Bureau

Some families staying under flyover make their children work. Reporter recently got to know that they send their children to beg in this scorching heat and if children refuse then they abuse them. Reporter met a child who was begging in the sun. On talking to him, child told, "Our parents send us to beg. They do not work at all and compel us to beg. This is our family ritual like I have 6 siblings in my family and my parents ask them also to beg. We do not any work except begging". Reporter asked children, "You beg whole day, do people give you money?" Children said,



"Most of the people do not give money. At times we get hit by vehicles too during begging which leads to injuries in our body parts. Our parents do not even get them treated and rather increase them so that we can request people for money for its treatment". Reporter saw a child begging whose head and nose was hurt badly. He asked the child, "You are hurt so badly why you have not got it treated?" To this child replied, "If I get it treated then how will I get money. My parents also increase it every day so that it doesn't get ok and I keep getting money by showing my injury marks". Children said, "We give all the money which we earn to our parents and they buy liquor for themselves out of that money. They do not give food also when we are hungry. We have to beg food also from others".

YOUNG CHILDREN UNDER BAD INFLUENCE OF THE ELDER ONES

Balaknama Bureau

During the support group meeting conducted by the reporter, Children said, "Small children are getting into bad company of elder boys and girls. Elders who stay in our locality are getting involved in love. Boys roam around with girls openly in front of younger children and even do bad things with her. Some



of the children among us see this happening in front of us every day. Due to this younger children have also left their studies and have started moving towards love affairs". They added, "If ever a girl refuses to love a boy, he cuts his hand and starts writing her name on his hand with blade". Listening to this reporter met some of those girls who are getting entrapped into it. 15 years old girl said, "If we refuse to love a boy then those boys says that he will kill himself if we would not love them. The reason would be us. They threaten us that they will tell our parents that we have relationship with you daughter. That is why we come into these boys' trap. They do bad things also with us so we want to get freedom from this as early as possible".



WHEN WILL THIS ORDEAL END?

Talkative Reporter Kajal, Reporter Chetan

Our Delhi Government has announced that anybody can use toilets in one rupee but they are not aware that today also there are places where people fight over using toilets. Golden slum of Rampura Ashoka Park has only one toilet and number of people using it is more than 2000. People start making line as soon as the morning starts and only five are able to use it. It becomes so dirty after that it feels like puking. That is why children keep roaming here and there. There is a big forest near Ashoka Park which is used by some children to relieve them. Some girls go to Metro stations to use their toilets but people who work there charge them Rs.30 to use it. So girls stopped going there also and started going to forest to relieve them. Reporter got to know that those girls face various problems there. Girls said, "The forest is too thick and if somebody sees us relieving there they start harassing us. They start passing lewd comments. We want that the way government has announced this scheme; similarly please construct five toilets at a place for us so that we do not have to roam here and there".

CHILDREN TORTURED BY THEIR OWNER

Balaknama Bureau

Some people occupy Government's land and then give it on rent to the people who working nearby. These people make their slums over the land and pay rent to the owner but the saddest thing is that if ever the rent does not reach the owner on time at the end of month, the parents are given the warning to remove their belongings from there otherwise it will be thrown out by the owner. Recently four slums were destroyed in an area (The name of the place is not disclosed). Family staying in those slums used to sell balloons. Every time rent used to reach on time but for one month it became late by 10 days only. So the owner threw away their belongings out of the slum and destroyed the slum too. That is why children have to go through these problems. That family has to stay in front of the destroyed slum now. They are not allowed to enter the slum unless and until they pay the remaining amount. On the other hand children said, "Our owner's torture has been increasing day by day. Earlier he used to take Rs.500 as rent, then increased to Rs.700 and presently he takes Rs.1000. Our parents asked the owner, "What is the reason of increasing the rent?" To which Owner replied, "Stay if you want to otherwise go and live like people who stay under the flyovers. You will not have to give money there". 14 years old girl said to her parents, "Let us go to some other place where we will take a new slum on rent". But their parents say, "How we will manage our work if we will go from here. Here it is only Rs.1000 if it would be more at some other place, where we will go from there". Children had nothing to say listening to their parents.

MOTHER'S DEATH INCREASED SALMAN'S DIFFICULTIES

Talkative Reporter Salman, Reporter Deepak

7 years old Salman was living happily with his family without aware of his future bad days. Salman lost his mother at a very young age and his father married to someone else leaving



him alone. Salman started living with his grandmother. After some days Salman's grandmother has to go somewhere in the village so she left Salman with their neighbour in Delhi. The place where Salman is staying is near to the railway station where trains keep coming and going. Children keep playing near railway station. One day Salman was also playing with the kids and their ball reached the railway tracks while playing. Salman went to tracks where a train was there on the tracks but was not moving so Salman tried taking out ball from the tracks with his hand but was not able to do so he tried taking out ball with his leg and suddenly the train started moving which resulted in cutting of his one foot. Nearby people took him to Safdarjung Hospital where he was treated for 15 days. Doctors advised that since Salman's foot has been cut by iron so there is a risk of infection so it needs to be cut more. Salman's grandmother came running back from village the moment she heard this news but his father did not come to see him despite knowing about it. Salman has not been able to walk since this incident. His grandmother is running pillar to post in hospitals and government offices to get a wheelchair so that it becomes easy for Salman to move but it has not been possible. If he wants to go to washroom or any other place his grandmother carries him in his lap. Salman wants that he gets the wheelchair as soon as possible so that he is able to walk on his own with the help of the chair.

CHILDREN COMPELLED TO TAKE DRUGS IN SCHOOL

Balaknama Bureau

Reporter conducted support group meeting with children studying in Government Schools. Children shared their problems during the meeting. They said, "Our school environment is very bad. Recently an incident happened. 10 year old girl was compelled to consume drugs. Due to which her health was getting deteriorated. We also saw that she was becoming frailer day by day. We even tried talking to her but she was not able to speak properly. She remained sad always. Her parents also asked her if she has any problem but she didn't reply. One day she got very ill and had to be admitted in hospital where doctor told that she had been taking drugs which has affected her health. She died after two days in hospital". Some children informed that drugs are sneaked into school in some hidden way and children are compelled to have drugs. Reporter asked children, "What do you want?" 12 years old girl said, "We want a security guard in our school so that every child who enters in school should be searched properly. Our teachers should also be alert so that nothing bad happens in our school and children do not get into bad habit. No children will go to school to study if these things keep happening here".

Children burning clothes to save them from Mosquitoes

Talkative Reporter Rustam, Reporter Jyoti

During the survey in Delhi, Reporter found that street and working children are suffering from mosquito bites a lot. Keeping this objective in mind, reporter spoke to different children. 15 years old Rahul said, "We sleep under flyovers or under the open sky. Mosquitoes start biting us as the evening arrives". 14 years old Priyanka said, "We do not have enough money to buy a room of our own. The place where we stay is surrounded by filth from everywhere. Recently, Delhi Government got sprayed Mosquito repellents all over Delhi which helped in reducing the mosquitoes but now with increasing temperature, mosquitoes' population is also increasing". Children said, "Mosquitoes are of red colour. Their bite results in itching and swelling". 15 years old Sapna said, "Whatever torned clothes we get while picking rags from the garbage, we burn them at night. Mosquitoes do not bite till the time the clothe burns but its smells like hell and that smell causes pain in our nose and at times results in vomiting too". 16 years old Rakesh said, "Delhi Government should get the mosquitoes repellent sprayed again like they did earlier so that we are safe from mosquitoes and the diseases spread through them".



CAN YOU NOT SPEND EVEN ONE RUPEE?

Balaknama Bureau

Reporter discussed the problems faced by street and working children in Lajpat Nagar. Children said, "We pick rags near the car parking area in this market. When all the rags are collected we sit there and separate bottles from it. At times we eat our food there itself". 15 years old boy said, "The place where we eat our food stinks very badly due to which we feel like vomiting". Children told, "People who roam in the market, piss outside that is why that place stinks so badly". Listening to this Reporter said, "Why are people not using the toilets provided in the Lajpat Nagar market? Toilets are made everywhere for this only so that people do not spoil the nearby places". 15 years old Girl said, "There is a toilet nearby but people has to pay some money to use it. So to save their money people do not use it and pee outside. And when we stop them from doing this, they turn towards our side and pee. Even the guards and car drivers who work in this market also pee here. We children face many problem while working here. We have to smell that stingy smell while we eat our food there. Sometimes we do not eat there but everytime we cannot change the place. We have to come back to the place where we work. We just want to appeal to all people to not to pee outside and use toilets provided. When Delhi Government has even announced that you can use any toilet in one Rupee still people want to pee out on the roads.



FALSE PROMISES LED TO HOMELESS CHILDREN

Balaknama Bureau

With immense pain we want to tell you that the place which you call Karol Bagh market was once home to several children. There were thousands of slums where small children stayed with their families and used to study also. But as the time progressed rich people started buying out their slums and slowly all slums were sold. People who came to buy these slums promised to children's parents that they will be given a separate land but nothing like this happened. Children who were living happily with their parents have now come on roads. These children now roam in this market only through which their family runs. Earlier these children used to study but now they do not even study. These children do not know what studies are. They hate educated people as the ones who came to their parents and made false promises were also educated. These people promised their parents that these children will be admitted in school and will get proper home to live. These children do not want to speak to anybody. Reporter got to talk to these children after much effort. Then they shared their problems with the reporter. Children said, "Those people harass us till now also. They send goons to threaten us so that we leave this market and go somewhere else. But we do not want to go anywhere from this place as we have been here since our childhood".

Who will fulfill Pradeep's dream? (Will You?)

Talkative Reporter Pradeep, Reporter Deepak

9 years old Pradeep stil has the zeal to study. Two years back his mother used to drop him to school but the sad thing is that his mother succumbed to a disease and pradeep had to stay at home for some time. Then later for few months his grandmother dropped him to the school but she also died due to her age. Pradeep is now working at a chowmein shop where he gets Rs.1000. Reporter asked Pradeep, "Why do you not go to school alone?" Pradeep said, "Bhaiya, I stay in Mahatma Gandhi Punjabi Bagh and my school is about 3kms away from my home. I have to cross ring road while going to school which is very difficult as cars run very fast on this road and there is no red light also. That is why I used to go with my mother".



He added, "There is nobody with whom I could go to school after my mother and grandmother's death. Father is there at home but he is all the time drunk. He is not bothered about us. All house responsibilities have come on me after my mother's death. But I do not want this and I do not want my siblings also to work on a shop like I have to do. That is why I drop my siblings to school. I still want to study. I had a childhood dream of studying in a school and later in stage wanted to join a company also but I think my dream will never be fulfilled".

WORKING CHILDREN ALSO WANTS TO STUDY

Talkative Reporter Fareen, Reporter Poonam

During the survey Reporter got to know that children are involved in various kinds of work. One side 12 to 14 girls were seen making designson anklets the whole day and other side children are seen making design on the shoes by thread. Reporter asked these children, "Why do you do this work?" 15 years old girl said, "Everyone in our family does this work. Our family's expenses will not be met if we will not do this work. We are able to make Rs.50 after making designs on 12 anklets so our parents also help with us so that more and more designs are made". Other girls said, "Our hands pain when we make designs on shoes by thread and working through minute needle and thread continuously for 6 to 7 hours results in pain in our eyes too. We want to study too". 15 years old girl said, "I am not satisfied with this work. I want to go to school like other children. But because of my family condition I am not able to go to school. We all children just wish that our parents get job somewhere so that we can also go to school".



CHILDREN'S PLAYGROUND TURNED INTO A CEMETERY

Balaknama Bureau

Children of Sansi camp shared their problems during the support group meeting held by the reporter. Children said, "Bhaiya we do not have any place for playing near our slum. One side there is a cemetery where people are buried and on the other side railway tracks lie where fast trains run".

"We are always worried of something bad or a mishap happening to us", children added. 15 years old boy said, "Two years ago we had a very nice park for us but it was converted into a cremation ground. There is a small space left near the cremation ground but our parents don't allow us to go to that area. And if ever some children goes to play there hiding from others he/she get nightmares at night."



16 years old boy said, "We are living in fear all the time. We go inside our slums as the evening starts. We are aware that playing is our right. How will our body develop if we will not play? This is exploitation of our rights".

Talking about a different park, Children said, "There is a park 5kms away in our slum. When we go to play in that park then the guard which takes care of that park beat us and tells us that this park is not for you. Only elder persons come here. So we want a park in our slum like we used to have so that we can play there safely".

Boys break lights of underpass to harass girls

Balaknama Bureau

There is an underpass between the Barah Pulla and the Sarai Kale Khan where thousands of people and children pass through this underpass as there is a market on its one side and on the other side people live. If anybody wants to go to market or for any other thing he has to cross this underpass but at night passing through this underpass is terrible. This underpass does not have a light. When reporter investigated for this, he got to know that whenever MCD workers fix light here, some boys later break them. 15 years old girl said, "These boys break these lights so that they can harass us. Some girls pass through this underpass after picking rags and some girls go to market to buy vegetables after work. It is very dark during the night in this tunnel and in this darkness only the boys hide and harass the girls".



16 years old girl said, "My mother goes to work in a bungalow and returns around 10 at night. One night I was returning home with my mother then a boy held my hand and started touching me at wrong places. We ran from there". Working girls here say, "Underpass should have a security guard to ensure that nobody is able to break lights of this underpass then only we can stay safely".

RABINA'S SIBLINGS IN HOPE OF GOING TO SCHOOL

Talkative Reporter Rabina, Reporter Deepak

8 years old Rabina stay with her family in Shakurbasti. She has 6 siblings, her father is a labourer and mother is a home maker. All of her siblings are involved in work; none of them go to school. Rabina expressing her problems in front of the reporter said,

"We are fed up of our father because he is always drunk when he returns from his work and start abusing us. Sometimes he even hits our mother. We want that our father stops drinking and stay happily in the family but that does not happen. My father used to be very nice earlier but the people with whom he goes to work drinks and have got my father also addicted to this bad habit. Earlier he used to talk politely with me and my siblings and used to listen to our problems".



She added, "We still want to study despite these problems. We also wish to go to school like other children but I think our dream will never fulfil due to bad family circumstances".

RIDICULE FACED BY BABU OPENED HIS DOORS FOR SCHOOL

Talkative Reporter Babu, Reporter Chetan

This story is about 10 years old Babu who started working at a Chowmein and Momos shop in near Narayana village railway station due to the bad financial conditions of his family. Reporter got to know that his father is disabled and his mother also has some problem in her legs so nobody works in his family. There are two elder brothers in the family but they are not bothered about their parents, they just roam around here and there. That is why Babu started working. Babu said, "When I used to wash utensils in the morning near railway station, my friends used to make fun of me while going to school. And then I decided that I will also go to school like them. After 15 days I took admission in a coaching centre by earning on my own". Seeing Babu's dedication towards studies his coaching centre's teacher advised him to take admission in a government school for which you will get the certificate too. On the advice of his teacher Babu went to a government school with his mother and got admission in third standard. Presently Babu work along with his studies. One day babu's friends came and said, "We are sorry. We always used to make fun of you". Babu smilingly said, "Why are you being sorry? If you people would not have made fun of me for my work then I would have never thought of going to school. I am thankful to you all because of whom I got a new life".

SAMANTH'S FLIGHT TOWARDS STUDIES

Talkative Reporter Samanth, Reporter Shambhu

This news is about 15 years old Samanth who stays with his parents in Peti market. His mother works in others' homes and father does the work of putting zip in bags and trousers. Samanth has seen his parents working like this since childhood. His parents have never studied so they never thought of getting samanth educated. His parents think that children of poor people study but they do not get successful in their lives. Thus whatever his father do, he also does the same thing. Presently he also goes to different colonies to put chains in bags. At times he gets into trains at railway station to put chains. Samanth saw that some workers of an organization comes at station and teach children staying at railway station. Samanth also joined them and decided to show his parents that he can also study. Since last two months he is coming to the classes by lying to his parents. Samanth says, "I want to become a nice child after studying so that my father gets to know that child of a poor man can also become successful. I want to send this message to all working children that all those children should raise their voice whose parents do not allow them to study. Otherwise you will never be able to study".



CHILDREN BEING TORTURED DUE TO SURROUNDINGS

Talkative Reporter Aftab, Reporter Chetan

A family was living happily but the sad thing was that there was no child in the family. Due to which family remained sad all the time. Some years later, when they were going out, they saw a three years old baby on the way who was crying and there was nobody seen around him. The family took the child thinking that may be God sent this child for them as they did not have any child in their family. So they took him from there with them. Child grew up with time. When he was five year old he was admitted in third standard. This child used to study hard. When he was about to enter in standard five, problems came on him. Child said, "My family lives in Kamla Nehru camp and people living here send their children to pick rags so my parents also got my name cut from school and started sending me for picking rags. If I refuse to pick rags they beat me and say we raised you since childhood, who will pay for that. Earlier they used to make me eat with them only but now they give me food in the courtyard itself". Currently this child has run away from his home because of his parents' torture and child helpline's worker is taking care of this case.

BALAKNAMA TEAM PRESENTED STREET AND WORKING CHILDREN'S THOUGHTS

Reporter Shambhu

Balaknama team was specially honored at a programnamed "Role of media in changing India". Editors of different newspapers like Mr. Vinod Dua, Siddharth Sharma, Vinod Sharma, and Jai Shankar Gupta also participated in the program. Shanno, Balaknama Advisor informed all the members and students present there about the newspaper. She explained about the situation of street and working children, how public behaves with them. She said, "Public see street and working



children with wrong intentions and do not consider them part of our society. I just want that they should not be considered like this and should be helped in moving forward so that a day comes when no children is seen on the street. We publish children's news in Balaknama, if no child will be seen on streets then there would be no need of Balaknama". Shambhu, Balaknama's editor giving information about the newspaper said, "Balaknama newspaper was first published in year 2003. And since then 63 editions have been published. In year 2014, the English translation of this newspaper started. Balaknama newspaper is published according to the following steps:

meetings are organized with the children in the

provides us the news.

meeting is done.

This way newspaper comes out

publication is given

to children so that they feel that there is someone who listens to their problems and is conveying same to the people". Telling about herJyoti, National Secretary of Badhte Kadam said, "Few years back I used to pick rags on railway station and was addicted to drugs. But now I have left all this and I am now working for 10,000 street and working children. I put forward their issues in front of governmental and non-governmental organizations. My dream is to share my thoughts with Mr Narendra Modi on a cup of tea with him". All editors congratulated balaknama team and appreciated them on doing this good work. They said, "We have learnt a good thing from all of you".

HATS OFF TO SHALU'S COURAGE

Talkative Reporter Shalu, Reporter Chetan

15 years odl Shalu lived in furniture block with her family. She has three siblings. Her mother cannot walk and father is a drunkard. Because of this Shalu's siblings remain fed up and hungry. Her parents also do not think to get their children educated. Father is badly addicted to liquor. He is not bothered about family members. He keeps sitting with the person who provides him liquor and mother cannot do anything. Thus Shalu has herself taken the responsibility to take care of her siblings. Shalu said, "The way other children go to pick rags, I do not want my siblings to do the same so I have started working in somebody's home. I go in the



morning and after returning home I do my household chores like cooking, washing siblings' clothes and taking care of my parents". Shalu takes care of her father despite of his drinking habit. She gets him home from the place where he keeps lying after getting drunk. At present, Shalu is taking well care of her family.

A GIRL REACHED SHELTER HOME WITH SHABANA'S HELP

Talkative Reporter Shabana, Reporter Jyoti

15 years old Shabana used to pick rags at railway station and lived under a

staying in a night shelter and is the student of basic education with the help of an organization. Along with this she is also talkative reporter of Balakanama. She helps every child who is in distress. Recently a girl ran away from Jhansi and came to Nizamuddin railway station and the reason behind her running away from home was that her father used to beat her badly and did not give her food on time. Shabana saw this girl crying while she was crossing the area when she was going to study at GRP police station. When Shabana tried talking to this girl, the girl replied in a scary voice, "I am hungry and thirsty". Then Shabana took her to GRP Police station and gave her water to drink and asked her to rest go back to her home. But the girl said, "I do not want to go back to my home. Everyone beats me at my home". Then Shabana shared the information about the child helpline number and said, "I will send you to a shelter home with the help of them. You can stay there safely". And by the evening Shabana called the child helpline number and with the help of their worker the girl was sent to a shelter home. Now that girl is safe in the shelter home.

BALAKNAMA AND BADHTE KADAM IN NEWS

WE ARE SHARING SOME PICTURES OF THESE MOMENTS WITH YOU....



1. ITM University, Gwalior invited Balaknama team in their editor conclave. Eminent reporters participated in this conclave.



2. Balaknama Reporters putting forward their views on Radio FM



3. Balaknama Reporter Shambhu reporting to TV channel



4.CNN published this picture in relation to Balaknama



5. Balaknama Reporter Chetan asking question in one of the editor conclave



6. Invitation letter sent to Balaknama by ITM University

Balaknama acknowledge part support from Sardar Nagina Singh and Family

This edition is for limited distribution. All pictures are published in this edition after children's their approval.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Richa Somvanshi.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार “बालकनामा” लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-64 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मई, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को लोगों ने क्यों मारा ?

14 राज्यों के कामकाजी बच्चों ने रखी अपनी बात

राष्ट्रीय बाल भवन में दो दिन की मीटिंग रखी गई थी जिसके मुख्य आयोजक कम्पैन अगेंस्ट चाइल्ड लेबर हैं। इस मीटिंग में 14 राज्यों के बच्चों ने भाग लिया जिनके नाम इस प्रकार है - आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश गुजरात, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, तमिलनाडु, झारखण्ड, उड़िसा, हरियाणा, राज्यस्थान, तेलांगना। जिसको बालकनामा की टीम ने कवर किया ।
बालकनामा के रिपोर्टरों ने जो बातें सुनी और देखी व अनुभव किया वो इस प्रकार है

–रिपोर्टर : शम्भू, चेतन व दीपक

ग्रुप में बच्चों ने नाटक और चार्ट पेपर के माध्यमों से बाल मजदूरी जैसे बड़े मुद्दे पर गहराई से चर्चा की। कैसे बच्चे बाल मजदूरी में लिप्त होते जा रहे हैं। जो बच्चे अपने घरों में काम कर रहे हैं उनके माता-पिता उनसे छोटा मोटा काम करने को बोलते हैं लेकिन बच्चे घरों में भी बड़े बडे कामों में लिप्त होते जा रहे हैं । बच्चो के माता पिता छोटे छोटे बच्चों को घरों में ही कामों में लिप्त रखते हैं वह पूरे दिन भर काम करते रहते है जो बच्चों के लिए बहुत हानिकारक है इस तरह का काम करना बच्चों के लिए खतरनांक साबित हो रहा है क्योंकि अब जो 14 साल के या उससे कम उम्र के बच्चे है वह ज्यादातर फैमली वर्क में शामिल होते जा रहे है जो अपने माता-पिता के साथ काम करवाते है और वह शिक्षा से वंचित होते जा रहे है। छोटे छोटे बच्चे आज भी अपने घरो में भारी संख्या में काम कर रहे है क्या यह बाल मजदूरी नहीं है? सरकार ने जो कानून बनाया है कि 14 वर्षीय बच्चा बाल मजदूरी नहीं कर सकता लेकिन वह बच्चा घर का परिवारिक काम कर सकता है लेकिन वास्तव में अगर देखा जाए तो घरों के अंदर भी बच्चे कई प्रकार के खतरनाक कामों में शामिल हो रहे है । क्योंकि सरकार की घोषणा में काम के प्रकार की शायद व्याख्या नहीं की गई और इसलिए बच्चे अब ज्यादातर घरों में ही कामो में लिप्त होते नजर आ रहे हैं बच्चों के लिए काम करने के प्रकार की परिभाषा नहीं बताई गई कि वह घर में किस प्रकार का काम कर सकते है । बच्चों ने इस बात पर बड़ी नारजगी जताई और गंभीरता के साथ बताया कि इसी वजह से वह शिक्षा से वंचित हो रहे है क्योंकि बच्चों पर काम करने के लिए माता पिता भी दबाव डालते हैं। इसलिए बच्चों की पढ़ाई की ओर से ध्यान भटकता चला जाता है। वह एक लालच की ओर बढ़ने लगते हैं ओर उनके दिमाग यह बात बैठा दी जाती है कि पढ़ाई करके पैसे कैसे मिलेंगे सिर्फ काम करने से ही पैसे घर में आते है जिससे माता पिता को सहारा लगता है। उसके बाद बच्चों ने चार्ट पेपर के माध्यम से बताया कि बाल अधिकार समझौते में लिखा है कि अगर किसी बच्चे के माता-पिता को सही वेतन रोजगार नही मिल रहा है तो सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि उन बच्चों के माता पिता की मदद करे ताकि उनके घरों की स्थिति ठीक रह सके और वह अपने बच्चे को स्कूल भेज सकें। उनके बच्चों के अधिकारों का हनन ना हो। बच्चों ने बताया कि जो लोग बच्चों से जबरदती काम करवाते हैं उन लोगों को कानूनी शिंकजे से बचाया नही जा सकता। हम सभी बच्चे उन लोगों के खिलाफ हैं जो लोग किशोर अवस्था में बच्चों से काम करवाते हैं।

सरकार ने यह तो घोषणा कर दी कि बच्चे गैर खतरनाक काम कर सकते हैं और बात का लोग बच्चों से फायदा उठा रहे हैं लोग हम बच्चों का गलत उपयोग भी कर रहे है गैर खतरनाक काम बोल कर खतरनाक काम में बच्चों को शामिल किया जा रहा है । सरकार ने हम बच्चों की काम करने उम्र 14 साल बोलकर बच्चों को काम करने की आज्ञा दे दी है कि बच्चा इस उम्र में गैर खतरनाक काम कर सकता है । लेकिन सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने इस बात पर बहुत नाराजगी जताते हुए कहा कि ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि 14 साल का बच्चा काम कर सकता है । यह फैसला हम बच्चों के विरूद्ध है यह फैंसला बंद किया जाए और जो हमारी 18 साल आयु थी वही रहना देना चाहिए। किसी को भी यह हक नहीं है कि कोई हमारी उम्र के साथ खिलवाड़ करें। इस तरह सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने अपनी चिंता जाहिर की और दूसरी ओर बच्चों ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा कि बाल मजदूरी पर अर्जेंटाइना में वर्ल्ड कांफ्रेंस होने वाला है और वह पूछ भी रहे हैं कि हमारे देश के कानून और बालश्रम की क्या दशा है और भारत के लोग भी वहां पर उपस्थिति रहेंगे और वह हम सभी काम करने वाले बच्चों से पूछ रहे है कि हमारे देश में बच्चों की क्या स्थिति है । फिर नाटक करने वाले बच्चों ने 14 राज्यों से आए हुए बच्चों को बताया कि हम बच्चों के पास एक सुनहेरा मौका है अपनी बातों को रखने के लिए । हम उस कार्यक्रम में शामिल होकर अपने देश के बच्चों कि दशा उन तक पहुंचा सकते है ताकि वह लोग हम जैसे कामकाज करने वाले बच्चों की मदद कर सकें और हम अपनी जिंदगी में आगे बढ़ने में सक्षम हो पाएं।

वहां जो बातें हुई उसके कुछ मुख्य अंश इस प्रकार हैं

- सरकार हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों से सबंधित कोई भी कानून बनाती है तो हम बच्चों से सलाह अवश्य लेना चाहिए
- जो लोग बच्चों से जरबदस्ती काम करवाते हैं उन्हें बच्चों से काम नहीं करवाना चाहि ए और बच्चों के अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए।
- सड़क एवं कमाकाजी बच्चों के लिए वोकेशनल टेजनिंग सेंटर खोले जाएं जिसमें उन्हें उनका मन चाहा काम सिखाया जा सके उनकी कलाओं के हिसाब से ताकि उनका आने वाला

शेष पृष्ठ 2 पर



सड़क एंव कामकाजी बच्चों को लोगों ने क्यों मारा?

- मध्य प्रदेश भोपाल चेतकब्रिज 16 वर्षीय परिवर्तित नाम आकाश : मैं चाय की दुकान पर काम करने जाता हूं। अगर मैं थोड़ा सा भी लेट हो जांऊ तो मेरा मालिक मुझे मारता है और मुझे धमकाकर भगा देता है ।
- 15 वर्षीय परिवर्तित नाम रेशमा: मैं रेलवे स्टेशन पर रहती हूं और लोग मुझे अश्लील काम करने के लिए कहते हैं अगर मैं वह काम करने के लिए राजी नहीं होती हूं तो वह लोग मेरे साथ मारपीट करते हैं।
- 15 साल परिवर्तित नाम अंकित : मैं घर घर में कूड़ा उठाने का काम कारता हूं जब भी कूड़ा घर से ले जाता हूं तो सीढ़ीयों पर कूड़ा गिर जाता है तो मालिक गाली गलौज करते हैं कभी कभी मार भी देते हैं।
- 14 वर्षीय परिवर्तित नाम आरती : मैं बाजार में खिलौने बेचने का काम करती हूं। जब भी मैं बाजार में खिलौना बेचने के लिए जाती हूं लोग मुझे मारने लगते है और उस बाजार से भगा देते है ।
- 17 वर्षीय परिवर्तित नाम रवि: मैं रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने जाता हूं वहां पर लोग मुझे गलत समझते हैं और मारकर भगा देते हैं।
- 15 साल की परिवर्तित नाम आशा: मैं लालबत्ती पर भीख मांगने का काम करती हूं । तब लोग मेरे से अश्लील बातें करते हैं और कभी कभी मारपीट करते हैं।
- 13 वर्षीय परिवर्तित नाम कुंदन : मैं गैरज की दुकान पर काम करता हूं। मेरे मालिक मुझे गाड़ी के भारी समान उठाने के लिए बोलते हैं अगर समान नहीं उठते है तो गाली देते हैं और औजार से मार देते हैं।
- 17 वर्षीय परिवर्तित नाम पायल : मैं कोठी में काम करती हूं। मेरे से कोई गलती नहीं होती है तो फिर भी मेरी मालिकन मुझे मारती है।
- 14 वर्षीय परिवर्तित नाम हरि: मैं ढ़ाबा पर बर्तन धोने का काम करता हूं। एक दिन मुझसे कांच का ग्लास टूट गया जिसकी वजह से मेरे मालिक ने मुझे मारा और एक माह का पैसा भी नहीं दिया।
- तमिलनाडु परिवर्तित नाम शालू : मैं मिल में काम करती हूं वहां सारा दिन काम करना पड़ता है अगर मुझे शौचालय जाना होता है तो नहीं जाने देते हैं अगर दो तीन बार बोलूं कि मुझे शौचालय जाना है तो गाली गलौज से बात करते हैं और मारने भी लगते है।

–रिपोर्टर : शम्भू, चेतन व दीपक

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार !

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की ओर से आप सभी को अंतराष्ट्रीय सड़क एवं कामकाजी बच्चो के दिवस के उपलक्ष्य में हमारी ओर से बहुत शुभकामनाएं ।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चो का अखबार बालकनामा एक नए अंक साथ सच्ची घटनाओं व अखबारो को लेकर प्रकाशित हुआ है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह बेहद खुशी की बात है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को (यू.एन.सी. आर.सी) में मान्यता मिल गई है । और यह मान लिया है कि विश्व में सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते है और उनकी निम्न समस्याएं है जिसका समाधना करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

हम बच्चे बहुत अभारी है कि बच्चो को मान्यता मिली है अब हमें कोई अंदेखा नहीं कर सकेगा और कुछ बेहतर किया जा सकेगा ।

इसी को लेकर हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे ला रहे हैं (अब समय हमारा है क्या आप हमें सुन रहे हैं) और कुछ ऐसे संघर्ष से जूझती सच्ची कहानियां ।

आशा करते हैं कि आपको इस बार का अंक पसंद आएगा आपकी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर आवश्यक भेजने का कष्ट करे।

संपादकीय टीम

माता-पिता स्वयं करा रहे बच्चों का यौन शोषण

रिपोर्टर विजय कुमार

पत्रकार जब लखनऊ के झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात की तो पता चला कि यहां पर रहने वाले बच्चों के साथ गलत हो रहा है। लेकिन कोई भी इस बात को बताने के लिए तैयार नही है। पत्रकार इन बच्चों से बात की तो वह बच्चे काफी डरे व सहमे हुए थे और बताने को भी राजी नही थे। पर 13 वर्षीय बालिका ने बताया कि मेरी मां जबरजस्ती मुझे बड़े अंकल के पास भेजती है और उनसे पैसा लेती है। मना करने पर मारपीट करती है और खाना भी नही देती तो मुझे मजबूरन जाना पड़ता है। लेकिन हम अपनी परेशानियों को किसे बतायें। 14 वर्षीय बालिका से जब पत्रकार ने बात की और उनकी समस्या पूछी तो बताया कि यहा के कुछ प्रभुत्व लोग भी हमारी मां के साथ अश्लील काम करते है। जब हमारी मां या हम लड़कियां एरिये में लक्कड़ बीनने जाते है तो वहा के स्टाफ पकड़ कर अश्लील काम करते है और कई बार हम लड़कियां लक्कड़ बीनने के लिए जाते है तो लाधी हुई लक्कड़ भी ले लेते है और मारपीट भी करते है। यहा पर रहने वाले कुछ लोगो से बात की तो पता लगा की इन बस्ती वालो का यही पेशा है।

कई बार तो पास के कालोनी वाले आते है और अश्लील काम करने के पैसे देते है। इनके माता पिता भी इस काम में शामिल है। यह लोग आपको अपनी झूठी कहानी भी सुना देगे। इनको हम बच्चें कई सालो से देखते आ रहे है। इनमें कोई सुधार नही आया है।

12 व 15 साल की लड़कियों से बात की तो जानकारी प्राप्त हुई की यह लगभग 40 से 50 मासूम बच्चों को गलत कार्यो में जबरजस्ती इनके जानने वाले व उनके माता पिता शामिल कराते है। यहां के 50 प्रतिशत बच्चे स्कूल नही जाते और इनके माता पिता भेजना भी नही चाहते है।

यहा के बच्चे अपने पिता के साथ बंदर का खेल दिखाने का काम करते है एवं भीख मांगने, जूता पॉलिश, कान का मेल साफ करने का काम करते है। पत्रकार ने इन बच्चों से बात की तो बच्चों ने अपनी बात रखी की हम बच्चे भी पढ़ाई करना चाहते है। लेकिन हमारे माता पिता हम बच्चों से जबरजस्ती गलत काम करवाते है।



खुलेआम करते मासूम बच्चे कच्ची शराब की सप्लाई

बालकनामा ब्यूरो

इन बच्चों की उम्र 10 से 15 साल तक है यह बात सुनते ही पत्रकार चैक गया कि इतने छोटे बच्चे ऐसा काम कैसे कर लेते है और छानबीन किया तो पता चला कि इन बच्चों के माता पिता कच्ची शराब बनाते है और वह खुद सप्लाई नही करते है। उनके पास जो भी छोटे बच्चे होते है उन बच्चों से जबरन कच्ची शराब बेचवाते है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया हम बच्चे सुबह से रात नौ बजे तक इसी काम में लिप्त रहते है। हम बच्चे बाजार में भी सप्लाई करते है और ज्यादातर लोग हम बच्चों के पास ही खरीदने के लिए आते है क्योंकि उन सभी लोग को पता है कि हम बच्चों के अलावा यहां कच्ची शराब कोई नही बेचता है। हम बच्चों के माता पिता ने पान और गुटके की दुकान लगा रखी है। लोग पान खाने की वजह से हमारे दुकान पर आते है और कच्ची शराब लेकर जाते है। पत्रकार बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को पुलिस वाले भईया से डर नही लगता कच्ची शराब सप्लाई करते हुए। बच्चों ने बताया कि हमारे पास तो पुलिस वाले भईया भी शराब लेने के लिए आते है। अगर कभी ज्यादा बोलने लगते है तो हमारे माता पिता सम्भाल लेते है। हम बच्चों को कोई परेशानी नही है। पत्रकार बच्चों से पूछा कि आप बच्चे यह कच्ची शराब कहां से लाते हो ? 14 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे कही से खरीद कर नही लाते है हमारे माता पिता खुद बनाते है। यह काम हमारे माता पिता कई सालो से करते आ रहे है। पत्रकार पूछा कितने रुपए का एक पैकेट देते हो? बच्चों ने बताया कि वह तो आप पे निर्भर है कि आपको कैसा सा चाहिए हम बच्चे तीन तरह के कच्ची शराब की पैकेट बेचते है एक तो काफी छोटा होता है दूसरा उसे हल्का बड़ा। तीसरा उससे भी बड़ा होता है। वह पैकेट की मुताबिक अलग अलग पराईज है। पत्रकार बच्चों से पूछा कि आप बच्चे स्कूल जाते हो क्या? 16 साल का बालक ने हस्ते हुए कहा कि जब से हम बच्चों ने अपना होश सम्भाला है तब से शराब कैसे बेचते है वही सिखा है। पढ़ाई लिखाई के बारे में हमारे माता पिता ने भी कभी जिक्र नही किया। उनको सिर्फ पैसो से मतलब होता है। हम बच्चे पूरे दिन इसी कामों में लिप्त रहते है। 14 साल का बालक बताया ने कि एक बार मैने अपने माता से बोला कि मुझे स्कूल जाना है तो डाट कर बोली स्कूल जाकर क्या मिलेगा सिर्फ काम करो। जब से मेरा पढ़ाई का सपना। सपना बन कर ही रह गया।

गाड़ियों के ठीक करके चलता है घर का खर्चा

बातूनी रिपोर्टर विकास रिपोर्टर चेतन

लोहामंडी जहां पर हर प्रकार के लोहे का व्यपार किया जाता है। यह मंडी एक ऐसा मंडी है। जहां पर लोग दूर दूर से गाड़ीयां लेकर आते है लोहा खरीदने के लिए। लेवर गाड़ी में लोहा लोड करते है। इस मंडी में दो बच्चे ऐसे है जो गाड़ीयां ठीक करने का काम करते है। एक बालक की उम्र है 14 साल दूसरे की उम्र है आठ साल यह दोनो जो भी गाड़ी खराब होती है उसको ठीक करते है। जैसे गाड़ी की टंकी में पानी कम हो जाता है तो उसमे पानी भरते है। पत्रकार इन दोनो बच्चे से पूछा कि आप लोग ही इस गाड़ीयों को क्यों ठीक करते हो ? बच्चे ने बताया कि जब गाड़ी लोहा से लोड हो जाती है तो उसे कही नही ले जा सकते है। क्योंकि अगर दूबारा गाड़ी खाली करेगा तो लेवर को दूवारा पैसा देना पड़ेगा। इसलिए हम दोनो बच्चे इसी मंडी में घुमते रहते है। जिसको भी हमारी जरूरत होती है। वहलोग बुला लेते है। पत्रकार दोनो बच्चों से पूछा कि आप दोनो तो बुहत छोटे हो यह काम कैसे कर लेते हो ? 14 वर्षीय बालक ने बताया कि यह काम बपचन से करते आ रहे है पहले डर लगता था। अब डर नही लगता है। ऐसे भी एक गाड़ी ठीक करने का 40 से 50 रुपए मिलता है जिससे हमारा घर का गुजारा होता है। पत्रकार पूछा गाड़ी ठीक करते वक्त कोई परेशानी होती है ? 8 साल का बालक ने बताया भईया जब गाड़ी पेंमचर हो जाती है तो उस वक्त बहुत परेशानी होती है क्योंकि जब हम टायर की नट खोलते है तो बहुत जोर की ताकत लगानी होती है। जिससे हम दोनो के शरीर में बहुत तेज दर्द होता है यह काम हम दोनो अपनी मजबूरी में करते है।

14 राज्यों के कामकाजी बच्चों ने रखी अपनी बात

पृष्ठ 1 का शेष

भविष्य गलत स्थिति में नहीं पड़े।

● किसी भी प्रकार का हम बच्चों का शोषण नहीं करना चाहिए। बच्चे अब अपने अपने घरों में भी भारी काम नहीं कर सकते क्योंकि वह भी एक बाल मजदूरी है और तो और बच्चे अपने घरो में 15 से 20 मिनट तक काम कर सकेंगे। क्योंकि उन बच्चों का पढ़ाई करने का समय बर्बाद होता है खेलने और विकास भी फिर सही ढंग से नहीं हो पाता है।

जो बच्चे इस कार्यक्रम में आए हुए थे वह 14 अलग अलग राज्यों से थे और इन बच्चों ने भी अपना जीवन बहुत कष्ट में जिया है । इन बच्चों में कुछ ऐसी लड़कियां शामिल थीं जिन्होंने शादियों में लाईट के गमले उठाने का काम किया है। और कुछ लड़के जिन्होनें ईट ढोने का काम किया है इन बच्चों ने लेबर डिपार्टमेंट के सदस्य श्री ओमकार शर्मा जो बच्चों की हितों की बातें सरकार तक ले जाते हैं उनके सामने बच्चों ने रखे कुछ सवाल-

● क्या 14 से 18 साल तक का बच्चा काम नही करता है?

● 7 से 14 साल तक के बच्चों को स्कूल से आने बाद काम करना जरूरी है?

● अगर परिवारिक व्यापार में हाथ बटाएं तो क्या यह बाल मजदूरी नहीं है?

4) श्री ओमकार शर्मा जी - कोई भी व्यक्ति बच्चों से काम कराता है तो उसे 6 महीने की जेल होगी और बीस हजार रुपए जुर्माना लग सकता है। उन्होने बताया कि 14 से 18 साल के बच्चों को किशोर अवस्था कहते है जो सरकार द्वारा लागू की गई है। अगर आप इस तरह के बच्चों को काम करते हुए देखते हो तो आप सोशल मीडिया पर बता सकते हैं ताकि उन बच्चों की मदद की जा सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

गर्मी में तड़प रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चे गर्मी में कैसे रह रहे हो ? 15 वर्षीय बालक ने बताया कि पड़ती हुई गर्मी की गरमाहट से हम बच्चे बहुत परेशानी हो रहे है। अभी धूप बुहत तेज होने लगी है। इसलिए हमारा काम भी मंदा हो गया है। क्योंकि पहले हम बच्चे पूरी दिन बाजार में सामान बेचते थे। अभी ऐसा नही हो पा रहा है काफी धूप होती है इसलिए हम बच्चे शाम को काम करते है। पुल और रैन बसेरो में रहने वाले बच्चों ने बताया कि हम बच्चों को पानी की बहुत तकलीफ हो रही है। रैन बसेरे के बाहर पत्रकार ने देखा कि तीन पानी के सिनटैक्स रखे है। पर उसमें में एक बून्द पानी नही है। बच्चों ने बताया कि भईया सुबह शाम दिल्ली जल बोर्ड की गाड़ी आती है। लेकिन यहां पर रहने वाले लोगो की जनसंख्या ज्यादा होने के कारण तीन टंकिया पानी भी कम पड़ जाता है। क्योंकि गर्मी में हम बच्चे पानी ज्यादा ही इस्तेमाल करते है। इसलिए टंकियों का पानी खत्म हो जाता है। इसका पानी भी अच्छा नही होता है। क्योंकि ठन्ड से पहले ही यह तीन सिनटैक्स इस जगह पर लगाए गए थे और काफी महिनों से सफाई भी नही हुई और उसका ढक्कन भी टूटा हुआ है। इसलिए इसके अंदर कचड़ा चला जाता है। इसी वजह से पानी भी गंदा व गर्म होता है पीने पर बधबू आती है फिर भी हम बच्चे यही पानी पीते है। जब इस टंकी में पानी नही होता तो हम बच्चे रेलवे स्टेशन पर पानी भरने के लिए जाते है वहां पर भी पुलिस वाले भईया मारते है। फिर एक मंदिर पर जाते है। वहां से भी भगाया जाता है। बच्चे ने बताया कि मार्किट में गुरूनांनक प्याऊ है वहां पर ठन्डा पानी मिलता है। और सभी लोगो को मुफ्त में पीने के लिए दिया जाता है। लेकिन हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे पानी पीने जाते है तो वह अंकल पानी पीने के लिए नही देते और मारने लगते है और डरा धमका कर भगा देते है।



माता-पिता को काम नहीं मिलने की वजह से जलता बचपन

बालकनामा ब्यूरो

लगभग 20 से 25 बच्चों को अलग अलग स्थान से काम कराने के लिए लाया गया है और यह बच्चों को खास काम कराने के लिए लाया जाता है। इनमें से कुछ बच्चे बिहार यू पी राज्यस्थान व बंगाल के है। पत्रकार को बच्चों द्वारा जानकारी मिली कि यह बच्चे पूरे दिन काम में लिप्त रहते है लेकिन यह बच्चे शाम को ही दिखाई देते है। यह बात को पता करने के लिए पत्रकार शाम को विजिट करी। पत्रकार ने देखा कि 14 साल का एक बच्चा मोमोस की दुकान पर काम कर रहा है शाम होते ही मोमोस की दुकान पर काफी लोग इकट्ठे हो जाते



है। कि वह बच्चे से मोमोस तक तले ही नही जाते। फिर भी काफी परेशान होकर वह बच्चा मोमोस तलता रहा है। लोगो के जाने के बाद पत्रकार उस बच्चे से बात करना चाहा पर उस बच्चे ने कुछ नही बोला चार पांच दिन लगातार उस बच्चे से सम्पर्क करने के बाद उस बच्चे ने बात की। फिर पत्रकार पूछा कि आप क्यों नही बात कर रहे थे। उस बच्चे ने बताया कि भईया जब भी आप मेरे से बात करना चाहते थे उस वक्त मेरे आस पास दूसरा लड़का खड़ा हुआ था जिसको मेरे मालिक ने हम बच्चे की निगरानी के लिए रखा है। इसलिए मैं आप से बात नही कर रहा था। उस लड़के को हमारा मालिक ही भेजता है ताकि हम बच्चे कही पैसे को छूपाकर रख तो नही लेते है। पत्रकार ने इस बच्चे से पहला सवाल पूछा कि मुझे पता चला कि आप बच्चे पूरे दिन काम करते हो पर यह मोमोस की दुकान शाम को ही लगती है तो आप पूरे दिन काम में कैसे लिप्त रहते हो ? बालक ने बताया कि भईया हां यह सही बात है कि मोमोस कि दुकान शाम को ही लगती है लेकिन हम बच्चे पूरे दिन मोमोस वेज रोल नोनवेज रोल यह सब पूरे तैयार करते रहते है। हमारे जो मालिक है वह सिर्फ सामान लेकर रख देता है। हमारे साथ एक बड़े अंकल है। उन्के साथ मिलकर सब मोमोस तैयार करते है। पत्रकार दूसरा सवाल पूछा कि आप बच्चों को काम करते वक्त कोई परेशानी भी आती है बच्चों ने बताया कि पुलिस वाले भईया लोग से तो कोई परेशानी नही होती है क्योंकि उन्को तो हमारा मालिक ही सम्भाल लेता है। हम बच्चों को मोमोस और रोल तलने में परेशानी होती है। क्योंकि जहां हम बच्चे दुकान लगाते है। वह जगह भीड़भाड़ वाली जगह होती है। ज्यादा लोगो के आने से बुहत परेशानी होती है। पत्रकार तीसरा सवाल पूछा कि आप बच्चे गांव से यहा पर काम करने के लिए क्यों आए हो और प्रतिमाह कितने पैसे देते है ? 15 वर्षीय बालक ने हंसते हुए कहा कि भईया जब हमारे माता पिता को गांव में कुछ नही मिलता है। इसलिए तो हम पढ़ाई लिखाई छोड़कर ईधर ऊधर काम की तलाश में धुमते रहते है और प्रति माह तीन हजार रुपए देते है।

नये पुलिस अधिकारी आने पर परेशान हैं स्टेशन पर रहने वाले बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने अपनी दुख भरी खबर बताते हुए कहां कि हम बच्चे स्टेशन पर अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनते है। लेकिन स्टेशन पर जो भी नऐ पुलिस अधिकारी आते है वह हम बच्चो से गलत व्यवहार से बात करते है। बालक ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहां कि मैं अपने घर से इसलिए भागकर आया था कि मेरे घर में सभी लोग मुझ पर अत्याचार करते थे इसलिए मैं अपना घर छोड़ दिया। और स्टेशन को घर के रूप में चुना। हम बच्चे चार साल से इस स्टेशन पर रह रहे है। अभी हाल ही में पुलिस वाले भईया से इतनी दोस्ती हो गई थी कि वह हमारा दुख दर्द सुनते थे और पूरी तरह से मदद करते थे। हम बच्चे भी अपनी देखरेख और अच्छी से पढ़ाई लिखाई करते थे। लेकिन दुख कि बात यह कि जो पुराने पुलिस अधिकारी हम बच्चों को जानते थे उनको दूसरी स्थान पर ट्रांस्फर कर दिया गया है। अब जो नऐ पुलिस अधिकारी आये है वह हम बच्चों पर आत्याचार करते है। हम बच्चों को स्टेशन पर देखना नही चाहते है। जैसे ही हम बच्चे रेलगाड़ी में बोतले बीनने के लिए जाते है। वैसे ही पुलिस अधिकारी डन्डे लेकर दौड़ते है। पहले पुलिस वाले भईया ने हमारे लिए रात को सोने के लिए इंतजाम किया था। लेकिन जैसे ही वह यहां से गये तब से हम बच्चों पर मुसीब्बत ही आ गई। पहले हम बच्चे एक साथ मिलकर रहते थे। वर्तमान में ऐसा नही है फिर से हम बच्चों को वही प्लेटफोर्म पर सोने को मिलता है। वही परेशानी दोबारा आने लगी है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि जब भी पुलिस वाले भईया को दूसरी स्थान पर ट्रांस्फर करते है तो हम बच्चों के लिए एक नोटिस लिखकर छोड़ दे ताकि नऐ पुलिस वाले भईया हम बच्चों को परेशान ना करे।



मां के साथ मजबूरीवश रहती बच्ची के साथ हो रहा अत्याचार

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर दो बच्चों की है यह दोनो बच्चे अपने परिवार के साथ गावं में बहुत खुश रहते थे लेकिन जब से इनके पिता की मृत्यु हो गई है तब से इसके माता कि मानसिक स्थिती खराब हो गई है। और इसे कुछ पता नही की क्या गलत और क्या सही है इन दोनो बच्चों के चाचा चाची ने गांव से भागा दिया है। वर्तमान में यह दोनो बच्चे और इनके मां एक मंदिर पर एक साथ रहते है इनकी मां खुद काम नही करती है हर वक्त नशे में लिप्त रहती है। इनकी मां की मानसिक स्थिती खराब होने के कराण लोग इनके बच्चों के साथ लोग गलत काम करते है दो बच्चों में से एक लड़का है जिसकी उम्र 12 साल है दूसरी बच्ची जिसकी उम्र 15 साल है। बातूनी रिपोर्टर दूवारा यह जानकारी मिली के इसके साथ लोग गलत काम करते है क्योंकि यह लोग मंदिर के बाहर सोते है रात को कोई भी उठाकर ले जाते है और इस बच्ची के साथ अश्लील हरकत करते है। आस पास रहने वाले बच्चों ने बताया कि लोग इसके माता को कुछ पैसे देते है। बातूनी रिपोर्टर ने जब इस बच्ची से बात की तो उस बच्ची ने अपने बारे पूरी तरह से बताया कि लोग मेरे साथ किस तरह से व्यवहार करते है जब लोग मेरे साथ अश्लील हरकत करते है तो बहुत तेज दर्द होता है। जब मैं अपनी मां से बोलती हूं तो वह कुछ नही बोलती है। और बच्ची का कहना है मेरी मां को सिर्फ शराब से मतलब है। उन्हे कोई भी व्यक्ति शराब लेकर देता है तो मेरे मां बोलती है कि ले जाओ मेरी बेटी को। मैं चाहती हूं कि इस परेशानी से मुक्ति मिले पर ऐसा नही हो रहा है। बातूनी रिपोर्टर यह बात सुनते ही बोला कि आप शेल्टर होम क्यों नही चले जाते हो। आप उस जगह पर सुरक्षित रहोगे। पर इस बच्ची ने बोला कि मैं चाहकर भी कही नही जाती क्योंकि मेरी मां अकेली हो जाएगी इसलिए मैं जाना नही चाहती हूं।



भीख मांगना छोड़ दिया तो कैसे चलेगा घर का खर्चा



बालकनामा ब्यूरो

17 वर्षीय नेत्रहीन बालिका और उसके साथ उसकी मां एक साल के छोटे बच्चे को गोद में लिए कड़ी धूप में लाल बत्ती पर भीख मांग रहे थे। यह देख बालकनामा के पत्रकार उसके पास जा पहुंचे और उनसे बातचीत के दौरान पता चला कि उन्हें लाल बत्ती पर भीख मांगने के लिए क्यों आना पड़ा। उस नेत्रहीन बालिका ने अपनी दर्द भरी दांस्तां बताते हुए कहा कि उसका एक व्यक्ति से विवाह हुआ था जब वह 14 साल की थी। उसके बाद जब वह गर्भवती हुई तो उसके पति ने उस पर अत्याचार करना शुरू कर दिया उसे परेशान रखने लगा। इसके साथ साथ घर का खर्चा भी देना बंद कर दिया और रोज मार पीट करने लगा। इन्हीं दिनो उसके बच्चे ने जन्म लिया बच्चे के जन्म लेते ही बच्चे के पिता ने कमाना शुरू किया और शादी पार्टी के काम पर जाने लगा। लेकिन एक रोज बालिका के पति के साथ शार्दी पार्टी के काम पर ही उसके साथ दुर्घटना हो गई उसके पति के हाथ पर एक बिजली का तार टूटकर गिर पड़ा और इस हादसे में उसके पति का एक हाथ खराब हो गया इस वजह से बालिका के पति ने बिल्कुल काम करना बंद कर दिया। वह घर में ही रहने लगा। और इस तरह घर का पालन पोषण बंद हो गया था ऐसे में एक नेत्रहीन बालिका को भीख मांगने के अलावा और कौन सा काम मिल सकता था यह सोंचकर मैं और मेरी मां मेरे एक साल के छोटे बच्चे को लेकर लाल बत्ती पर भीख मांगने का काम करने लगे जिससे हमारा घर का खर्चा चलता है और मेरे पति और बच्चे का पालन पोषण आसानी से हो जाता है। नेत्रहीन बालिका ने बताया कि मैं भीख मांगने के बाद अपने घर का भी काम करती हुं और मेरे घर का खाना पकाने का काम मेरी मां कर देती है क्योंकि मुझे दिखाई नहीं देता मैं खाना पकाने में सक्षम नहीं हुं मैं सिर्फ अपने घर में झाड़ू पौछा लगाने का काम करती हुं और अपने बच्चे की देखरेख भी कर लेती हुं बालिका ने बताया कि भीख मांगते वक्त मुझे बहुत तकलीफ होती है क्योंकि लालबत्ती पर बहुत तेज गाड़ीयों का आना जाना लगा रहता है। इसलिए मैं अपनी माता के साथ आती हूं। वह मेरा हाथ पकड़ कर इधर ऊधर ले जाती है क्योंकि मेरे लिए तो हर तरफ अंधेरा ही अधेरा है मैं सिर्फ लोगो की आवाज़ सुन सकती हूं। मैं चाहती हुं कि सरकार मेरी और मेरे बच्चे की देखरेख के लिए कुछ संज्ञान ले मै चाहती हुं कि मेरे जैसे बच्चों की जल्द से जल्द सरकार मदद करें ताकि उन्हें अपना पालन पोषण करने के लिए भीख न मांगना पड़े।



मुफ्त के इंटरनेट का किया जाता है गलत उपयोग

बड़े-व्यक्ति छोटे बच्चों को दिखाते अश्लील वीडियो

बालकनामा ब्यूरो

अक्टूबर 2016 से जीयो सीम मुफ्त सेवा शूरू हुआ है जब से लोगो ने भरपूर इंटरनेट व कोलिंग का आन्नद उठा रहे है लेकिन दूसरी ओर स्टेशन पर रहने वाले बच्चों पर इसका गलत प्रभाव पड़ रहा है। बच्चों ने बताया कि भईया लोग तो इसका आन्नद उठा रहे है लेकिन हम स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को जीना दुश्वार हो गया है क्योंकि स्टेशन पर बहुत छोटे छोटे बच्चे और कुछ लड़कियां भी कबाड़ा बीनने के लिए आती है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया एक बड़ा व्यक्ति है वह भी जीयो सीम इस्तेमाल कर रहा है। वह हर वक्त अपने फोन में अश्लील वीडियो देखता रहता है। शाम को जब हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जा रहे थे तो हम बच्चों ने देखा कि सफाई लाईन के पास जो रेलगाड़ी खड़ी होती है। उस रेलगाड़ी में चार बच्चे थे साथ ही वह व्यक्ति भी था जो अश्लील वीडियो देखता है हमे तो मालूम है कि वह सही व्यक्ति नही है पर उन चार बच्चों को इस व्यक्ति के बारे में बिल्कुल नही पता। इसी वजह से उनके शिंकेजे में आए गये। जब हम बच्चे उस रेलगाड़ी तक पंहुचे तब तक वह अपना फोन बंद कर चुका था। मैंने उन बच्चों से पूछा जो उस व्यक्ति के पास थे। कि आप बच्चे यहां पर किया कर रहे हो ? बच्चों ने बताया कि भईया हम तो कबाड़ा बीनने के लिए जा रहे थे तभी ये भईया हम बच्चों को बुलाया और अपने फोन में गंदी वीडियो दिखाने लगे। जब हम देखने से मना करने लगे तो ये भईया बोलने लगे कि अगर ये वीडियो नही देखोगे तो मै इस स्टेशन पर कबाडा बीनने नही दूंगा। इसलिए हम बच्चे इसके दबाव में आकर अश्लील वीडियो देख रहे थे। 16 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया पहले मैं भी उस व्यक्ति का शिकार हो गया था जैसे इन बच्चों को बुलाया है। वैसे मुझे भी बुलाया था और अच्छी वीडियो बोलकर अश्लील वीडियो दिखाने लगा। और मेरे शरीर के अंगो को स्पर्श करने लगा। तभी मैं वहां से भाग निकला। 14 साल की बालिका ने बताया कि पहले ईतनी परेशानी नही थी। जितना जीयो सीम आने से हुआ है। लड़कियां तो लड़कियां लड़के भी सुरक्षित नही है अब पहले बड़े लडके इस तरह की अशलील फिल्म नहीं देखते थे क्योंकि पहले पैसे खर्च होते थे लेकिन जब से फ्रि इंटरनेट की सुविधाएं आईं हैं तब से यह लड़के दिन रात अश्लील फिल्म देखते हैं और छोटे छोटे बच्चों को जबरन यह अश्लील फिल्म दिखकर उनके साथ शौषण भी करते है। इस वजह से बहुत बच्चे के साथ शौषण हो रहा है।

घर से भागे हुए बच्चों को बनाया जाता है मोहरा

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मीटिंग की मींटिग के दौरान बच्चे अपनी परेशानियों को रखते हुए बताते है कि भईया अब हम बच्चों को स्टेशन पर बोतल कम मिलने लगा है। इसलिए हम बच्चे पूरे दिन ईधर ऊधर घूमकर बोतल बीनते है एक दिन हम बच्चे कनाड प्लेस गए थे। वहां पर हम बच्चों ने देखा कि बहुत सारे हमारे जैसे बच्चे बोतल बीन रहे थे यह देखते ही हम बच्चे चैक गए कि दो दिन पहले यहां पर कोई बच्चा बोतल बीनते नजर नही आ रहा था आज आचानक इतने सारे बच्चे कहां से आ गए 15 वर्षीय बालक ने एक बच्चे से बात करना चाहा पर उस बच्चे ने बात नही की वह डरकर भाग गया। दूसरे दिन इन बच्चों ने उस बच्चें को फिर से उसी जगह पर कबाड़ा बीनते हुए देखा इन बच्चों ने उस बच्चे से बात करने कि कोशिश की लेकिन वह डरते डरते बोला की। आप मेरे से बात क्यों करना चाहते हो? बालक ने बताया कि मैं भी आप कि तरह बोतल बीनने का काम करता हूं। लेकिन मैंने देखा है। कि आप हम बच्चे से डरकर भाग जाते हो ? 14 साल का बालक अपने बारे में जिक्र करते हुये कहां कि मैं अपनी मर्जी से काम नही करता हूं हमारा एक मालिक है जो हम बच्चों से जबरदस्ती काम करवाता है उन्होने सभी बच्चों से बोल रखा है। कि अपने बारे में किसी को नही बताना है अगर कोई तुम बच्चों से बात भी करना चाहे तो भाग जाना। इसलिए मैं आप से बात नही कर रहा था। बालक ने पूछा कि आप बच्चे कहा से आए हो ? उन्होने बताया कि हम सभी बच्चे अलग अलग जगह से आए है। कुछ बच्चे बिहार नेपाल और राजस्थान से भी आये है लगभग 15 बच्चे है। हम बच्चों की उम्र 14 से 17 साल तक है। हम बच्चे घर की स्थिति खराब होने के कारण दिल्ली आ गये। पर हम सभी बच्चों को पता नही था कि हम बच्चों को ऐसी मुश्किलो से गुजरना पड़ेगा। जो हमारा मालिक है वह बुजुर्ग है वह मोहरा ऐसे ही बच्चों को बनाता है जो घर से भागकर आते और जो नशे की अंधेरी दुनियां में लिप्त होते है। उन बच्चों से अपना काम निकलवाता है। एक बच्चे ने पूछा कि आपको वह कितना पैसा देता है जिसके पास आप काम करते हो उस बच्चे ने बताया कि हम बच्चों को पैसा नही देता है सिर्फ सुबह और रात को खाना देता है। दिन में तो हम बच्चे मांगकर ही खा लेते है। लेकिन जो भी हम बच्चे पूरे दिन में पैसे मांगकर लाते है उस पैसे की शराब पी जाते है।



शरीर पर जख्म बढ़ाकर भीख मांगने पर मजबूर बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पुल के नीचे रहने वाले कुछ परिवार अपने बच्चे से जबरन काम करवाते है। अभी हाल ही में पता चला कि यह लोग अपने बच्चों कड़ी धूप में भीख मांगने के लिए भेजते है। जब यह बच्चे भीख मांगने से मना करते है तो इन बच्चों पर शोषण करते है। पत्रकार ऐसे बच्चे से मिला जो धुप में भीख मांग रहा था। बच्चे से बात की तो बच्चे ने बताया कि भईया हमारे माता पिता भीख मांगने के लिए भेजते है। हमारे माता पिता कुछ काम नही करते है। सिर्फ हम बच्चों से ही भीख मांगने के काम करवाते है। बच्चों ने बताया कि यह हमारा खानदानी रीति रिवाज है। जैसे कि मेरे घर में 6 भाई है उनसे भी हमारे माता पिता भीख के लिए बोलते है। इसके अलावा कोई दूसरा काम हम बच्चों को नही आता है। पत्रकार बच्चों से पूछा आप बच्चे पूरे दिन भीख मांगते हो क्या कोई व्यक्ति पैसा देते है ? बच्चों का कहना है ज्यादातर



लोग पैसे नही देते है। इसलिए हम बच्चों को कभी किसी गाड़ी से चोट लग जाती है। हांथ पैर एवं शरीर के अन्य अंगों में चोट लगने की वजह जख्म होते है तो उसे भी ठीक नही कराते है। इस जख्म को और बढ़ा देते है ताकि इस जख्म को दिखाकर लोगों से गुजारिस करे कि इस जख्म को इलाज करने के लिए पैसे की जरूरत है। पत्रकार ने एक बच्चे को देखा जिसके सर और नांक पर बहुत चोट लगा हुआ था। वह बच्चा भीख मांग रहा था। पत्रकार उस बच्चे से पूछा कि आप के सर पर चोट लगा है आप दवाई क्यो नही ली। उस बच्चे ने बताया कि अगर मैं दवाई ले लूगा तो मेरा जख्म ठीक हो जाएगा। फिर भीख कैसे मिलेगा इसलिए इलाज नही कराया और मेरे माता पिता भी इस जख्म को रोज बढ़ा देते है ताकि यह ठीक ना हो और लोगो को देखाकर ज्यादा पैसे मिल सके। बच्चों ने बताया कि हम बच्चे पूरे दिन की कमाई अपने माता पिता को देते है और वह शाम को उस पैसे से शराब पीते है। जब हम बच्चों को भूख भी लगती है तो खाना नही देते है। हम दूसरे लोगो से मांगकर खा लेते है।

मालिक के अत्याचार से बच्चे हो रहे परेशान

बालकनामा ब्यूरो

कुछ लोगो ने सरकार की जमीन पर कब्जा कर रखा है दूसरे व्यक्ति जो कामकाज करने वाले होते है उनको किराए पर रहने के लिए जमीन देते है। वह खुद जुग्गी बनाकर रहते है बदले में उनको जमीन का किराये देना पड़ता है लेकिन दुख की बात यह है कि अगर महिना पूरा होने तक किराया नही पंहुचता है तो बच्चों के माता पिता को धमकी दी जाती है। कि अपनी जुग्गी का सारा समान बाहर निकाल लो नही तो मैं खुद ही बारह फेक दूगा। स्थान का नाम गुप्त रखा गया है एक जगह ऐसी है जहां पर चार जुग्गीयां तोड़ दी गई है। क्योंकि उस जुग्गी में रहने वाले परिवार गुब्बारे बेचने का काम करते थे। हर बार माह पूरा होने से पहले ही किराया पंहुचा दिया जाता था लेकिन एक महिना का किराया देने में सिर्फ दस दिन देर हो गई थी। इसलिए उस जुग्गी के मालिक ने सारा समान बाहर फेक दिया और जुग्गी भी तोड़ दी। इसी वजह से इन बच्चों को मुश्किलो से गुजरना पड़ रहा है। उस बच्चे के सभी परिवार के सदस्यों को टूटी जुग्गी के बाहर रहना पड़ता है जब तक वह बकाया राशि पूरा नही कर देता है तब तक उस जुग्गी में प्रवेश नही कर सकते है। दूसरी ओर बच्चों का कहना है कि हमारे जुग्गी के मालिक का आत्याचार बढ़ता ही जा रहा है चार साल पहले पांच सौ रुपए किराया लेता था फिर धीरे धीरे सात सौ किराया बढ़ा दिया। वर्तमान में एक हजार रुपए लेता है। हमारे माता पिता ने जुग्गी के मालिक से बात की। आप इतने पैसे क्यों बढ़ाते जा रहे हो ? उन्होने बोला कि रहना है तो रहो नही तो जैसे लोग पुल के नीचे रहते है तुम भी ऐसे रहना शुरू कर दो। वहां पर पैसे नही देना पड़ेगा। 14 वर्षीय बालिका ने अपने माता पिता को समझया कि यहां से किसी दूसरे स्थान पर चले जाते है वही पर एक नया जुग्गी किराए पर ढून लेगे। लेकिन इनके माता पिता बोलते है कि अगर हमलोग यहां से चले गए तो हमारा काम कैसे चलेगा यहां तो एक हजार रुपए देने पड़ते है दूसरी स्थान पर इसे भी ज्यादा किराया होगा तो वहां से हम कहां जायेगे। बच्चे अपने माता पिता कि इस बात को सुनकर खामोस रह गए।



आखिर कब तक जाएं जंगल?

बातूनी रिपोर्टर काजल रिपोर्टर चेतन

हमारे दिल्ली सरकार ने यह घोषणा तो कर दी है कि अब लोग किसी भी शौचलय का एक रुपए में इस्तेमाल कर सकते है पर कुछ जगह ऐसे भी है जहां पर अभी भी शौचलय से संबंधि मारपीट होती रहती है। रामपुरा अशोका पार्क गोल्डन बस्ती इस जगह पर एक ही शौचलाय है लेकिन इस शौचलय का इस्तेमाल करने वाले लोग की जनसंख्या लगभग दो हजार से भी अधिक है सुबह होते ही लोग लाईन में खड़े.हो जाते है। बड़े मुश्किल से पांच लोग इस शौचलय का प्रयोग कर पाते है क्योंकि यह इतना गंदा है। देखकर उलटीया आने लगते है। इसलिए वहां पर रहने वाले सभी बच्चे इधर ऊधर भटकते रहते है। अशोका पार्क के पास एक बहुत बड़ा जंगल है उस में कुछ बच्चे शौच करने के लिए जाते है कुछ लड़कियां मेट्रो स्टेशन के शौचलाय में शौच करने के लिए जाती थी पर वहां पर कार्य करने वाले कार्यकर्ता इन लड़कियों से तीस रुपए लेते थे। इसलिए लड़कियो ने वहां पर जाना बंद कर दिया और वह भी जंगल में शौच करने के लिए जाने लगी। पत्रकार द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि जो लड़कियां शौच करने के लिए जंगल में जाती है उन्हे भी बहुत तकलीफ होती है। क्योंकि जंगल बहुत घणा हुआ है अगर इन लड़कियों को कोई व्यक्ति शौच करते देख लेते है तो पीछे पड़ जाते है। अश्लील बाते बोलते रहते है। इसलिए यह लड़कियां चाहती है कि जिस तरह दिल्ली सरकार ने यह घोषणा कर दिया है। ऐसे ही हम बच्चों के लिए 5 शौचलय एक स्थान पर बना दिया जाए ताकि हम बच्चों को इधर ऊधर भटकना ना पडे।

माता की मृत्यु होने के बाद सलमान पर हुआ अत्याचार

बातूनी रिपोर्टर सलमान रिपोर्टर दिपक

सात साल का सलमान अपने परिवार के साथ हंसी खुशी जीवन गुजार रहा था लेकिन सलामन को क्या पता था कि उसके भी बुरे दिन आने वाले है। छोटी सी ही उम्र में माता कि मृत्यु हो गई जिसकी वजह से सलमान के पिता ने दूसरी शादी करके अपने परिवार से अलग घर बसा लिया सलमान अकेला हो गया सिर्फ दादी के साथ रहने लगा। कुछ दिनों के बाद सलमान की दादी को किसी काम से गांव जाना पड़ा और सलमान को दिल्ली में किसी पड़ोसी के पास छोड़ दिया था। जिस जगह सलमान रह रहा है वहां निटक में ही रेलवे स्टेशन है। जहां हमेशा रेलगाड़ी आती जाती रहती है। वहां पर कुछ बच्चे हर वक्त खेलते रहते है। एक दिन सलमान भी खेल रहा था और खेलते वक्त गेंद रेलगाड़ी की पट्टी के पास चला गया। जब सलमान गेंद लेने के लिए वहां पंहुचा और रेलगाड़ी चक्के पास हांथ डालकर गेंद निकालने कि कोशिश की लेकिन गेंद तक हांथ नही पंहुचा। फिर सलमान ने अपना पैर से गेंद निकलने कोशिश करने लगा। तभी आचानक से रेलगाड़ी चलने लगी। एक पैर पर रेलगाड़ी चक्का चढ़



गया जिसकी वजह से सलमान की पैर थोरा सा कट गया। यह देखते हुए लोगो ने सफदजंग अस्पताल में लेकर गए वहां 15 दिन तक इलाज चला और डांक्टर ने सलाह दी की सलमान के पैर लोहे से कटा है इसलिए डर है कि कही शरीर में इंफैक्शन नही फेल जाएगे इसी वजह डांक्टर ने बोला कि थोरी सी और पैर को काटना पड़ेगा। जब यह बात सलमान की दादी को पता चला तो गांव से दौड़ती हुई आई पर पिता को इस बात का पता चला फिर भी वह सलमान को देखने तक नही आए। जब से सलमान के साथ ऐसा घटना हुआ। तब से अकेला चल भी नही पता है इसलिए दादी अस्पताल व सरकारी दफतर की चक्कर काट रही है। ताकि विकलांग किर्सी मिल जाएगे। जिससे सलमान को चलने फिरने असानी हो पर ऐसा नही हो रहा है। जब भी सलमान को शौचलय व कही जाना होता है तो दादी गोद में उठाकर ले जाती है। इसलिए सलामन चाहता है कि उसको किर्सी मिल जाए ताकि वह उस किर्सी के सहारे अपने से चल फिर सके।

बड़े लड़के की वजह से छोटे मासूम बच्चों पर पड़ी गलत संगत

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी समस्या को रखते हुए कहा कि छोटे छोटे बच्चे बुरी संगत की ओर बढ़ते रहे है। इसकी वजह है बड़े लड़के और लड़कियां



क्योंकि यह बड़े बच्चे भी हमारे महेले में रहते है और बड़े बच्चे प्यार मोहब्बत की ओर बढ़ते ही जा रहे है। बच्चों ने बताया कि खुलेआम हम बच्चों के शामने लड़की के साथ घूमते है। उस लड़की साथ गलत भी करते रहे है। हम बच्चे में से कुछ बच्चे ऐसे है जो इस बर्तव आयदिन देख रहे है। इसी वजह से छोटे बच्चे भी अपना पढ़ाई लिखाई छोड़कर अपना ध्यान प्यार मोहब्बत की ओर बढ़ाने लगे है। जैसे बड़े लड़के किसी लड़की से प्यार करते है अगर वह लड़की प्यार करने से इंकार करते है। उसी वक्त लड़के अपना हांथ काट लेता है और उस लड़की की नाम अपने हांथ पर ब्लैड से लिखते है। यह बात सुनते ही पत्रकार ने कुछ ऐसे लड़कियां से मिली जो इस शिकंजे में उलझ रही है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि अगर हम लड़कियां किसी लड़के को प्यार करने से मना करते है। वह बोलते है मेरे से प्यार नही करोगी तो मैं अपनी हांथ काटकर जान दे दूगा। इसकी वजह तुम होगी। और बोलते है कि मैं तुम्हारे माता पिता को बोल दूगा कि आपके बेटी के साथ मेरा पहले से ही संबंध है। इसलिए हम लड़किया इन लड़के के बातो में आ जाते है। और हम लड़कियों के साथ गलत भी कर देते है इसलिए हम लड़कियां चाहते है कि इस परेशानी से जल्द से जल्द मुक्त मिले।

स्कूल के अंदर भी नशीले पदार्थ का सेवन

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार सरकारी स्कूल जाने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग किया मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी स्कूल की परेशानी रखते हुए बताया कि भईया हमारे स्कूल के वातावरण ठीक नही है। अभी हालेही में एक घटना घट चुकी है। 10 साल की बच्ची को जरबदस्ती नशा करवाते थे। जिसकी वजह से उस बच्ची की तबीयत दिन पर दिन खराब होती जा रही थी। हम बच्चों ने भी देखा था कि वह बहुत कमजोर होती जा रही थी। हम बच्चे उस बच्ची से बात भी करना चाहे। तो वह सही से बात नही कर पाती थी। हमेशा उदास रहती थी उसके माता पिता ने भी उसे पूछा था कि तुम्हे कोई परेशानी है तो उसने कुछ जवाब नही दिया था। कुछ दिनों के बाद अचानक उसी तबीयत बहुत खराब हो गई और उसे अस्पताल में ले जाया गया डांक्टर द्वारा जानकारी मिली कि यह बच्ची नशा करती थी इसलिए बीमार हो गई है डांक्टर ने अस्पताल में एडमीड कर लिया और दो दिन बाद उस बच्ची की मृत्यू हो गई। कुछ बच्चों के कहना है कि स्कूल में ही चोरी छूपके नशा लाया जाता है और बच्चों से जबरदस्ती नशा कराया जाता है। पत्रकार बच्चे से पूछा कि आप लोग क्या चाहते हो ? 12 वर्षीय बालिका ने बताया कि भईया हम सभी बच्चे चाहते है कि हमारे स्कूल सिक्योरिटी गार्ड होना चाहिए ताकि जो भी बच्चे पढ़ाई करने के लिए आते है। उसको तलासी लिया जाये। और हमारी अध्यापक को भी सतर्क होना चाहिए ताकि हमारे स्कूल के अंदर कुछ गलत न हो और बच्चे गलत संगत में न पड़े सके। अगर स्कूलों में भी यह सब होने लगा तो कोई बच्चा स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं जाएगा।

मच्छर से बचने के लिए फटे पुराने वस्त्र जला रहे हैं बच्चे



बातूनी रिपोर्टर रुस्तम रिपोर्टर ज्योति

पत्रकार दिल्ली में दौरा किया तो पता चला सड़क एवं कामकाजी बच्चों को मच्छर बहुत परेशान कर रहे है इस उदश्य को लेकर पत्रकार बच्चों के साथ बात चीत की 15 वर्षीय राहुल ने बताया कि हम बच्चे ज्यादातर पुल और खुले आसमान के नीचे सोते है। और शाम पड़ते ही मच्छर काटने लगते है। 14 साल की प्रियंका का कहना है कि हम बच्चों के पास इतना पैसा नही है कि हम बच्चे एक अच्छे जगह पर कमरा लेकर रह सके। जहां पर हम बच्चे रहते है वहां आस पास बहुत गंदी पड़ी रहती है। कुछ महिने पहले हमारे दिल्ली सरकार ने मच्छर से बचने के लिए मच्छर मारने वाली दबाई पूरे दिल्ली में छिड़काई गई थी। जिससे बहुत सारे मच्छर कम हो गये थे। लेकिन अभी जैसे जैसे गर्मी बढ़ते ही जा रही है वैसे ही मोसम के अनुसार मच्छर भी बढ़ते ही जा रहे है। बच्चों ने बताया कि ये मच्छर लाल रंग के होते है काटने पर हमारे शरीर में सुजन और खुजली होने लगती है। 15 साल की सपना ने बताया कि जब हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है तो जो भी फटे पुराने वस्त्र कूडेदान में मिलते है। उसको हम बच्चे सोते समय जलाते है। जब तक वह वस्त्र जलते है तब तक तो मच्छर नही काटते है। लेकिन गंदी बदबू आती है। जिससे हम बच्चों के नांक में बहुत तेज दर्द होते है और कभी कभी तो उल्टीयां भी आ जाती है। 16 वर्षीय राकेश का कहना है जैसे पहले दिल्ली सरकार ने मच्छर से बचने के लिए दबाई को छिड़काया था वैसे ही दोबारा छिड़काना चाहिए। ताकि हम बच्चे मच्छर से सुरक्षित रहे और बिमारीयों का शिकार ना हो।

क्या आप एक रुपए खर्च नही कर सकते ?

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार लाजपत नगर में काम करने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बातचीत करके उनकी समस्याओं के बारे में जाना बच्चों ने पत्रकार को बताया कि लाजपत नगर मार्केट में हम बच्चे कबाड़ा चुनते है हम कार पार्किंग के आस पास सारे दिन चुनते है जब हम कबाड़ा चुनकर इकट्ठा कर लेते है तो हम कबाड़े में से खाली बोलतों की छटाई बीनाई करते है और उसी जगह पर हम अपना खाना पीना भी खाते हैं। 15 बालक ने बताया कि जब हम बच्चे वहां बैठकर खाना खाते हैं तो उस जगह बहुत गंदी बदबू आती हैइस बदबू के कारण कई बार हम बच्चों को उल्टी भी हो जाती है बच्चों ने बताया कि जो लोग मार्केट में होते है वह सभी बाहर खुले में ही मूत्र करते



है जिससे वह जगह भी गंदी व बदबूदार हो जाती है यह सुनकर पत्रकार बच्चों से कहां कि लाजपत नगर मार्केट के अंदर शौचालय बना हुआ है लोग उसे इस्तेमाल क्यों नही करते है? उन्होने बच्चों को जानकारी देते हुए कहां कि इसलिए तो हर जगह शौचालय बनाए जाते है ताकि लोग आस पास की जगह को गंदा न करे। यह बात सुनकर 15 साल की बालिका ने बताया कि इस मार्केट के अंदर शौचलय है पर उसमें जाने के लिए कुछ पैसे देने पड़ते है इसलिए लोग पैसों की लालच की वजह से बाहर खुले में ही मुत्र करते है और अगर हम बच्चे उसे मना करते है और कहते है कि यहां पर शौच क्यों कर रहो हो तो वह हमारी ओर घूमकर मुत्र करने लगते है यहां तक की इस मार्केट में कार्य करने वाले कर्मचारी गार्ड या कार ड्राईवर भी यही पर आकर मूत्र करते है इस वजह से हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है क्योंकि हम बच्चे भी इसी मार्केट में काम करते है उसी एक जगह पर उठने बैठने का ठिकाना बना हुआ है इसलिए जब भी हम बच्चे खाना खाते है तो रोज इस बदबू का सामना करना पड़ता है कभीकभी हम बच्चे वहां पर बैठकर खाना नही खाते लेकिन हम रोज रोज तो अलग जगह जाकर खाना नही खा सकते। हम बच्चे अपनी जगह जाकर काम तो करेंगे ही। हम बच्चे आप सभी से यह अपील करते है कि आप खुले में शौच न करे और शौचालय का इस्तेमाल करें क्योंकि अब तो दिल्ली सरकार ने यह घोषणा कर दी है कि अब लोग एक रूपया देकर किसी भी शौचालय का इस्तेमाल कर सकते है। फिर भी लोग खुले में शौच करना चाहते है।

झूठे वादे करके बच्चे हुए बेघर

बालकनामा ब्यूरो

आपलोगो से यह बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि जिसे आप करोल बाग मार्किट के रूप में देख रहे है वहां पर पहले हजारो जुग्गीयां हुआ करती थी और उसमें छोटे छोटे बच्चे अपने परिवार के साथ रहते थे साथ ही पढ़ाई लिखाई भी करते थे। समय के अनुसार कुछ बड़े लोगो ने पैसो की लालच देकर उनकी जुग्गीयां खरीदने लगे और धीरे धीरे सारे जुग्गीयां खरीद ली गई। इन बच्चों के माता पिता से पहले जो लोग जुग्गीयां खरीदने के लिए आये थे। उन्होने वादा किया था कि इन लोगो को जमीन भी दिलाई जायेगी। पर ऐसा कुछ नही हुआ। जो बच्चे अपने परिवार के साथ हंसी खुशी जिदंगी गुजार रहे थे वह भी सड़क पर आ गए है। अब यह लोग पूरे दिन इसी मार्किट में फेरी करते है। जिससे इनका गुजारा होता है। भूतकाल में बहुत बच्चे पढ़ाई भी करते थे लेकिन वर्तमान में एक भी बच्चे पढ़ाई नही करते है। इन बच्चों को पता नही है कि पढ़ाई क्या होती है। यह बच्चे पढ़े लिखे लोग से नफरत करते है। क्योंकि जिन्होने भी इनकी जुग्गीयां खरीदी थी वह पढ़े लिखे थे। इनके माता पिता से बोला था कि आपके बच्चों को स्कूल में दाखिला दिलाया जायेगा और रहने के लिए अच्छा घर भी मिलेगा। अब यह बच्चे किसी से बात नही करना चाहते।

पत्रकार इन बच्चों से बहुत मुश्किल से बात की तो बच्चों ने खुलकर अपनी बात रखी और बताया कि भईया अभी भी वहलोग परेशान करते है हम बच्चों को भगाने के लिए गुन्डे भेजते है ताकि हम बच्चे इस मार्किट से कही और जगह पर चले जाए। लेकिन हम बच्चे इस जगह से कही दूसरी जगह पर नही जाना चाहते है क्योंकि हमने अपना बचपन यही पर सम्भाला है।

कौन करेगा प्रदीप का अधुरा सपना पूरा (क्या आप)

बातूनी रिपोर्टर प्रदीप रिपोर्टर दिपक

9 वर्षीय प्रदीप अभी भी पढ़ाई का ज्जवा लेकर जी रहा है दो साल पहले प्रदीप की माता थी तो वे स्कूल छोड़ने के लिए जाती थी लेकिन दुख की बात यह है कि प्रदीप की माता बिमारी की शिकार हो गई और कुछ दिन तक प्रदीप घर में रहा। फिर उसको दादी कुछ महिनों तक स्कूल छोड़ने जानी लगी। लेकिन उम्र की वजह से प्रदीप की दादी की मृत्यु हो गई।

वर्तमान में प्रदीप एक चैमीन की दुकान पर काम करता है जिससे इसको एक हजार रुपए मिलता है। पत्रकार प्रदीप से पूछा कि आप अकेले स्कूल क्यों नही जाते थे ? प्रदीप ने बताया कि भईया मैं महात्मा गांधी पंजाबी बाग में रहता हूं। वहा से मेरा स्कूल लगभग तीन किलो मीटर दूर है और रास्ते में रिंग रोड भी पड़ता है उस रिंगरोड को पार



करने में हम बच्चों को बहुत मुश्किल होती है। क्योंकि वाहन बहुत तेजी से निकलती है। वहा पर कोई लालवत्ती भी नही है इसलिए मैं अपने माता के साथ जाता था।

जब से मेरे माता और दादी की मृत्यु हुई कोई मुझे छोड़ने के लिए नही जाता है पिता है पर वह घर में शराब के नशे में लिप्त रहते है। उन्हे हम बच्चों से कोई मतलब नही होता है जब से माताजी की मृत्यु हुई तब से घर का सारा बोझ मेरे ऊपर आ गया है। लेकिन मैं यह नही चाहता हूं। जिस तरह मैंने अपना स्कूल छोड़ दिया और एक दुकान पर काम कर रहा हूं। इसी तरह मेरे भाई बहन भी किसी दुकान पर काम ना कड़े। इसलिए मैं खुद अपने भाई बहन को स्कूल छोड़कर आता हूं। मैं अभी भी पढ़ाई करना चाहता हूं। मेरा बचपन से सपना है कि स्कूल में ही पढ़ाई करू और बड़े होकर एक अच्छा कंम्पनी में कार्य करू पर लगता है यह सपना अधुरा ही रह जायेगा।

पायल बनाने का काम करने वाले बच्चे भी जाना चाहते हैं स्कूल

बातूनी रिपोर्टर फरीन रिपोर्टर पूनम

आगरा कैंट में पत्रकार दौरा किया तो पता चला कि वर्तमान में बच्चे अलग अलग प्रकार के कामो में शामिल हो रहे है। एक तरफ देखा कि लगभग 12 से 14 लड़कियां पूरे दिन पायल पर डिजाईन बनाने का कार्य करती है और दूसरे ओर जूतो पर धागे से डिजाईन करती है। पत्रकार इन बच्चों से पूछा कि आप बच्चे यह काम क्यों करते हो ? 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हमारे परिवार सभी लोग यही काम करते है अगर हम बच्चे यह काम नही करेगे तो हमारा घर का खर्चा नही चलेगा। बच्चों का कहना है कि 12 पीस पायल पर डिजाईन करते है तब जाकर हम बच्चों को 50 पैसा मिलता है। इसलिए हमारे माता पिता भी हम बच्चों के साथ मदद करते है ताकि ज्यादा से ज्यादा डिजाईन कर सके। दूसरी ओर लड़कियों ने बताया कि जब हम बच्चे जूतो पर डिजाईन करते है तो हाथों में बहुत तेज दर्द होता है 6 से सात घंटे काम करते है तो आंखो में दर्द होता है। क्योंकि सूई



धागे से हम बच्चे जूतो पर डिजाईन करते है। लेकिन इन बच्चों में भी पढ़ाई की लालशा पनप रही है। 15 साल की बालिका ने बताया कि मुझे इन सब कामों में संतुस्टि नही मिलती है। मेरा मन है कि जैसे दूसरे बच्चे पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाते है वैसे मैं भी जाऊ लेकिन परिवारिक स्थिती खराब होने के कारण मैं स्कूल नही जा पा रही हूं। हम बच्चे यही चाहते है कि हमारे माता पिता को कही ना कही काम मिल जाए ताकि हम बच्चों को काम ना करना पड़े।

बच्चों के खेलने का पार्क बना शमशान

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार सांसी कैम्प में रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी समसया को बताते हुये कहां कि भईया हम बच्चों को यह परेशानी है हमारे जुग्गी के आस पास कही खेलने का जगह नही है। एक तरफ शमशान घाट है जहां लहासो को दफनाया जाता है दूसरी ओर रेलगाड़ी पट्टीयां जहां तेज रफ्तार से रेलगाड़ी निकलती है।

यहां हम बच्चों को हर वक्त डर लगा रहता है कि कही बच्चों के साथ दूर्घटना नही हो जाये। 15 वर्षीय बालक



ने बताया कि दो साल पहले हम बच्चों के लिए एक बहुत अच्छा पार्क था अब उस पार्क को शमशान घाट के रूप में बदल दिया गया है शमशान घाट की ओर थोड़ी जगह बची हुई है तो हमारे माता पिता उस थोड़ी जगह पर खेलने के लिए नही जाने देते है। हम में से कुछ बच्चे उस शमशाम घाट में चोरी छूपके खेलने के लिए जाते है तो रात को डराबने डराबने सपन आते है।

16 साल के बालक ने बताया कि हम बच्चे एक डर का खोप जी रहे है। हम बच्चे शाम होते ही अपने अपने जुग्गी के अंदर चले जाते है। बालक ने बताया भईया हम सभी बच्चों को पता है कि हमारे खेलने का अधिकार है अगर हम बच्चे नही खेलगे तो हमारा शरीर का विकास कैसे होगा ? यह हमारे अधिकरो का हनन हो रहा है।

साथ ही बच्चों ने दूसरे पार्क का जिक्र करते हुए कहां कि हमारे जुग्गी से पांच किलो मीटर दूर एक पार्क है उस पार्क में हम बच्चे खेलने जाते है तो पार्क की देखरेख करने वाले गार्ड अकंलजी मारते है वह बोलते है कि यह पार्क तुम बच्चे के लिए नही है इस पार्क में बड़े लोग आते है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि जैसे पहले पार्क था वैसे ही हमारे जुग्गी के पास एक पार्क बना दिया जाए ताकि हम बच्चे सुरिक्षत से खेल पाय।

स्कूल जाने की उम्मीद लगाए बैठे हैं रबीना के भाई बहन

बातूनी रिपोर्टर रबीना रिपोर्टर दिपक

आठ वर्षीय रबीना अपने परिवार के साथ शकूर बस्ती में रहती है। रबीना 6 भाई बहन है पिता मजदूर का काम करते है माता अपने घर में ही काम करती है। रबीना के घर में कोई भी भाई बहन स्कूल नही जाता है। बड़े से छोटे सभी कामों में लिप्त रहते है। रबीना पत्रकार के शामने अपने बात रखते हुए कहां कि हम बच्चे अपने पिताजी से बहुत परेशान है। क्योंकि जब वह अपने काम पर से शराब पीकर लौटते है तो हम भाई बहन से गाली गलौज और गंदी गंदी बाते बोलते है। कभी कभी तो मम्मी को भी पीटाई कर देते है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि हमारे पिता शराब नही पीये। घर में खुशी से रहे पर ऐसा नही होता है। जिसके साथ मेरे पिता काम करने के लिए जाते है वहलोग भी शराब पीते है इसी वजह से मेरे पिता भी शराब के बुरी लथ में लिप्त हो गए है नही तो पहले बहुत अच्छे थे। हमारे सभी भाई बहन से बहुत प्यार से बात करते थे हमारी परेशानीयों को सुनते थे। यह परेशानियों



को देखते हुए भी हम भाई बहन के मन में पढ़ाई की लालशा पनप रही है हम भाई बहन का मन होता है कि दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाऊं। लेकिन परिवारीक स्थिती ठीक न होने की वजह से स्कूल जाने का सपना लगता है कभी पूरा नही हो सकता।

बड़े लड़के अंडर पास की लाईट तोड़कर करते है छेड़छाड़

बालकनामा ब्यूरो

बारह पुल्ले और सराय काले खां के बीच एक अंडर पास बेसमेंट बना है इस अंडर पास बेसमेंट में से हजारो लोग व बच्चे आते जाते है। क्योंकि एक तरफ मार्किट लगती है दूसरी तरफ लोग रहते है। अगर कभी भी किसी व्यक्ति व बच्चे को मार्किट या किसी चीज के लिए बाहर जाना पड़ता है। तो वह इसी अंडर पास बेसमेंट से गुजकर निकलते है। लेकिन रात को इस अंडर पास बेसमेंट से होकर गुजरना बहुत मुश्किल होता है। इस अंडर पास बेसमेंट में लाईट नही लगी हुई है। जब पत्रकार ने इसी बात को लेकर छानवीन की तो पता चला। इस अंडर पास बेसमेंट में जब भी एमएनसीण्डी के कार्यकर्ता लाईट लगाते है। तो कुछ बड़े लड़के गुन्डा गर्दी करके लाईट तोड़ देते है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि ये बड़े लड़के लाईट इसलिए तौड़ते है। ताकि हम लड़कियों को परेशान कर सके। क्योंकि इसी अंडर पास बेसमेंट से होकर कुछ कबाड़ा बीनकर अपनी घर लौटती है और कुछ लड़कियां काम पर से आने के बाद रात को मार्किट सब्जि खरीदने के



लिए जाती है और इस अंडर पास बेसमेंट में रात को काफी अंधेरा होता है इसी अंधेरे में छूपकर बड़े लड़के लड़कियों को परेशान करते है 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि मेरी मम्मी कोठी में काम करने के लिए जाती है। और रात 10 बजे तक काम पर से लौटती है एक रात मैं भी अपनी मम्मी की साथ थी तो एक लड़का अधेरे में मेरा हांथ पकड़ लिया गलत जगहो पर हांथ लगाने लगा। तभी हमलोग वहां से भागे। इस जगह पर कामकाज करने वाली लड़कियों का यही कहना है कि अंडर पास बेसमेंट को देखरेख करने के लिए सिक्योरिटी गार्ड रखना चाहिए ताकि इस अंडर पास बेसमेंट की कोई लाईट नही थोड़ सके। तभी हमलोग सुरक्षित रह सकते है।

समंथ की उड़ान पढ़ाई की ओर

बातूनी रिपोर्टर समंथ रिपोर्टर शम्भू

यह खबर 15 वर्षीय समंथ की है समंथ अपने माता पिता के साथ पेटी मार्किट में रहता है उसकी माता कोठि में काम करने के लिए जाती है पिता बैंग व पेजामे में चेन लगाने का काम करता है और समंथ भी इसी तरह बचपन से ही अपने पिता को काम करते देखा है। उसके माता पिता ने कभी पढ़ाई नही की। इसलिए समंथ को भी इसके माता पिता ने पढाना नही चाहा वह सोचते है कि आजकल गरीब के बच्चे



पढ़ाई भी करते है। पर वह अपने जींवन में कामयाब नही हो पाते है। इसलिए जैसा काम पिता करता है वैसे ही काम बेटा करता है। समंथ वर्तमान में गली महल्लो में घूम घूमकर पूरे दिन चेन लगा लो चेन लगा लो बोलकर चेन लगाता है। कभी कभी स्टेशन पर भी रेलगाड़ी में चढ़कर बैंग में चेन लगाता है समंथ ने देखा कि एक संस्था के कार्यकर्ता कुछ स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को पढ़ाई करा रहे है उस दिन से समंथ भी पढ़ाई करने लगा और समंथ ने अपने मन में ठान लिया है। अब मैं अपने माता पिता को पढ़ाई करके दिखाऊगा और माता पिता से झूठ बोल कर पिछले दो महिने से पढ़ाई करने के लिए आता है समंथ चाहता है कि मैं पढ़ाई करके एक अच्छा बच्चा बनू ताकि मेरे पिता को लगे गरीब का भी बच्चा पढ़ाई करके अपने जींवन में कामयाब हो सकता है। समंथ ने बताया कि मैं उन सभी कामकाज करने वाले बच्चों के लिए संदेश दे रहा हूं जिन बच्चे के माता पिता पढाई करने से मना करते है उनके खिलाफ ऐसे ही आवाज़ उठाना चाहिए नही तो कोई भी बच्चा पढ़ाई नही कर पाऐगा।

बातूनी रिपोर्टर बाबू रिपोर्टर चेतन

यह खबर 10 साल बाबू की है बाबू के घर की आर्थिक स्थिती खराब होने के कारण नारायणा गांव रेलवे स्टेशन पर चैमीन और मोमोस की दुकान पर काम करने लगा। पत्रकार द्वारा यह बात पता चली कि इसके पिता विक्लांग है और माता के भी पैरो में तकलीफ इसकी वजह से कोई भी काम नही कर सकते है। घर में दो बड़े भाई है वह अपने माता पिता से कोई मतलव नही रखते दिनभर इधर ऊधर घूमते रहते है। इसलिए बाबू ने काम करना शूरू कर दिया। जब रोज सुबह स्टेशन पर बाबू झूठी प्लेटे धो रहा होता था तो उसके पास से इसके दोस्त स्कूल जा रहे थे और बाबू का मजाक उड़ाते थे यह देखते हुए बाबू ने निर्णय लिया कि मैं भी इनके तरह स्कूल जाऊगा। 15 दिन के बाद खुद की कमाए हुए पैसो से कोचिंग सेंटर में दाखिला लिया। और मन लगाकर पढ़ाई करने लगा पढ़ाई में रूची देखते हुए कोचिंग सेंटर की अध्यापकजी ने सलाह दी आप भी सरकारी स्कूल में दाखिला करवा लो। इससे तुम्हे प्रमानपत्र भी मिल जाएगा। अध्यापकजी की बात सुनकर बाबू अपने माता के साथ सरकारी स्कूल पहुंचा और तीसरी कक्षा में दाखिला करवाया। वर्तमान में बाबू काम के साथ साथ पढ़ाई करता है। एक दिन बाबू के दोस्त क्षमा मांगने के लिए आए कि मैं हमेशा तुमको गलत बोलता था। इसके लिए क्षमा चाहता हूं। बाबू ने हंसते हुए कहां क्षमा किस बात पे मांग रहे हो ? अगर उस दिन आपलोग ने मेरे काम को देखकर मुझे बुरा नही बोला होता। तो शायद मैं कभी स्कूल जा नही पाता। शुक्ररगुजार तो आपको करना चाहिए आपके वजह से मुझे एक नई जिदंगी मिली है।

वातावरण देखकर बच्चों पर हो रहे हैं जुल्म

बातूनी रिपोर्टर आफताव रिपोर्टर चेतन

एक परिवार हंसी खुशी जिंदगी गुजार रहा था। लेकिन दुख की बात यह है कि इस परिवार में एक भी बच्चे नही थे। इसलिए यह हमेशा उदास रहते थे। कुछ सालो बाद यह परिवार कही बाहर जा रहे थे। तभी इनको रास्ते में एक तीन साल के बच्चे की ओर नजर पड़ी। वह बच्चा बहुत रो रहा था। आस पास कोई भी व्यक्ति नजर नही आ रहा था उसी वक्त इनलोगो ने सोचा की हमारे घर में एक भी बच्चा नही है। शायद भगवान ने हमारे लिए ही इस बच्चे को भेजा है। यह सोचकर उस बच्चे को वहां से उठाकर लाया गया। वक्त के अनुसार वह बच्चा बड़ा होता गया। जब वह पांच साल का हुआ तो इस बच्चे को तीसरी कक्षा में दाखिला दिलाया गया। और यह बच्चा मन लगाकर पढ़ाई करता रहा। जब इस बच्चे को पांचवी कक्षा में प्रवेश करने का समय आया तो इस पर मुसिब्बत ही छा गई। बच्चे ने बताया कि हमारा परिवार कमला नेहरू कैम्प में रहता है और यहां पर रहने वाले कूछ लोग अपने बच्चों को कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए भेजते है। इनही लोगो को देखकर मेरे जो नकली माता पिता है। उन्होने मेरा स्कूल से नाम कटवा दिया है। और कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए भेजते है। जब मैं कूड़ा कबाड़ा बीनने से मना करता हूं तो बहुत मारने पीटने लगते है और बोलते है कि बचपन से जो हमने पालन पोषण किया है उसका पैसा कौन चुकायेगा। पहले अपने साथ ही खाना खिलाते थे लेकिन अब तो मुझे घर के बाहर आंगन में खाना खाने के लिए देते है। वर्तमान में यह बच्चा अपने माता पिता के आत्याचार की वजह से घर छोड़कर भाग गया है और चाल्ड हेल्प लाईन कार्यकर्ता इस केश को देखरेख कर रही है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की बात रखते हुए बालकनामा टीम

रिपोर्टर शम्भू

बदले हुए भारत में मीडिया की क्या भूमिका होती है। इस कार्यक्रम में स्पेशल बालकनामा टीम को सम्मानित किया गया। साथ में अलग अलग अखबार के एडिटर्स भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। श्री विनोद दुआ सिद्धार्थ शर्मा विनोद शर्मा जय शंकर गुप्त और आये हुए सभी विद्यार्थीयों को बालकनामा की सलाहकार शन्नो जी ने अखबार की जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दशा किया है। उन बच्चों से पब्लिक किस तरह से व्यवहार करती है सड़क पर रहने वाले बच्चों को पब्लिक गलत नजरिये से देखते है उन्हे हमारे समाज का सदस्य नही मानते है। मैं यही चाहती हूं कि जो भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे है उन से इस तरह का व्यवहार नही किया जाए और उन बच्चों को आगे बढ़ने के लिए मदद करे। ताकि एक समय ऐसा आये कि सड़क पर एक भी बच्चा नही दिखाई दे। जो हम बालकनामा अखबार में बच्चों



की खबर छापते है अगर सड़क पर कोई भी बच्चा नही दिखेगा तो बालकनामा निकालने की जरूरत ही नही पड़ेगी। बालकनामा के संपादक शम्भू अपने अखबार के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सन 2003 में बालकनामा अखबार का प्रकाशित किया था तब से 63 अंक प्रकाशित हो चुके है। सन 2014 से अंग्रेजी में सेम ट्रांसलेट करने की शुरूआत कि थी संपादक ने बताया बालकनामा अखबार को किस प्रकार चलाया जा रहा है।

। एक्शन प्लान बनाया जाता है।

। फील्ड में बच्चों के साथ सपोर्टर ग्रुप मीटिंग की जाती है।

। बातूनी रिपोर्टर हमे खबरो को देते है।

। एडिटोरियल मीटिग की जाती है।

इस प्रकार से अखबार निकलता है। और निकलने के बाद सबसे पहले बच्चों को अखबार दिया जाता है ताकि उन बच्चों को लगे कि कोई तो है जो हमारी परेशानियों को सुन रहा है और लोगो तक पहुंचा रहा है। बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि मैं भी कुछ सालो पहले रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनती थी नशा करती थी। अब मैंने यह सब छोड़ दिया है और फिर बताया कि अब मैं दस हजार सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए काम करती हूं। उनकी परेशानियों की सरकारी या गैर सरकारी मीटिंग में बात रखती हूं मेरा सपना है कि श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ चाय के बहाने अपनी मन की बात रखू। बालकनामा टीम को सभी अलग अलग अखबार के संदपाक ने बधाई भी दी और उन्हाने कहा कि आप बच्चे बहुत अच्छा कर रहे हो। आप बच्चे से हमलोग को एक अच्छी सीख मिली है।

शालू की हिम्मत को सलाम

बातूनी रिपोर्टर शालू रिपोर्टर चेतन

शालू अपने परिवार के साथ फर्नीचर ब्लॉक में रहती है। और इसकी उम्र 15 साल की है। इसके तीन बहन भाई है। शालू की मां अपने पैरो से लाचार है और पापा शराब पीते है। इसकी वजह से शालू के बहन भाई परेशान और भूखे रहते है। लेकिन इसके माता पिता कभी भी यह नही सोचते कि अपने बच्चों को पढ़ा लिखा लू। बस पिता शराब के नशे में लिप्त रहते है। इनको अपने परिवार के सदस्यों से कोई मतलब नही रहता है। जो व्यक्ति इनको शराब पीलाते है। उसके पास ही बैठे रहते है। और मां तो कुछ कर ही नही सकती है। इसलिए अब शालू अपने छोटे छोटे बहन भाई को पालने के लिए खुद जिम्मेदारी उठाई है। शालू का कहना है जिस तरह दूसरे बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है। इस तरह मेरी बहन भाई नही जाए। इसलिए शालू एक कोठि में काम पर लग गई सुबह काम पर जाती है और शाम को घर लौटने के बाद भी अपने घर का सारा काम करती है जैसे खाना बनाना



अपने बहन भाई के वस्त्र साफ करना और साथ ही माता पिता का भी देखरेख करती है। वेशक शालू के पिता शराब पीते है। उनको भी ख्याल रखती है। जिस जगह पर शालू के पिता शराब पीकर पड़े रहते है उस जगह से उठाकर घर लाती है। और वर्तमान में शालू अपने परिवार की जिम्मेदारी सम्भाल रही है।

शबाना की मदद से एक बच्ची पहुंची शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर शबाना रिपोर्टर ज्योति

15 वर्षीय शबाना पहले स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाती थी और पुल के नीचे रहकर अपना व्यतीत करती थी। वर्तनाम में रैन बेसरा में रहती है और साथ ही संस्था के सहयोग से ओपन बेस्कि एजुकेशन की छात्र है और साथ ही साथ शबाना बालकनामा की बातूनी रिपोर्टर भी है। इनको जो भी बच्चा मुसीब्बत में नजर आता है उनकी मदद करती है। अभी हालेही में एक बच्ची झांसी से भागकर स्टेशन पर आ गई थी। स्टेशन पर आने की वजह कुछ ऐसी थी के इस बच्ची के पापा बहुत बुरी तरह से मारते थे और तो और इस बच्ची को खाना भी समय पर नही दिया जाता था। इसी कारण यह बच्ची निजामुददीन रेलवे स्टेशन पर भाग आई। और शबाना उसी रास्ते से गुजरते हुए जीए आरए पीए थाने में पढ़ाई करने जा रही थी। तभी देखा कि एक छोटी बच्ची रो रही है।

जब शबाना ने इस बच्ची से बात करने की कोशिश की तो बच्ची ने रोते और घबराते हुए कहा कि मुझे भूख और प्यास लगी है। फिर शबाना ने जी एआर एपी थाने में ले जाकर पानी पिलाया और शबाना ने उस बच्ची को तसल्ली पूर्वक आराम करने को कहा। तभी शबाना ने उस बच्ची कों सलाह दी। कि आप घर चले जाओ।

लेकिन उस बच्ची ने रोते हुए कहा कि मैं घर जाना नही चाहती हूं। मेरे घर में सभी लोग मुझे मारते पीटते रहते है। फिर शबाना ने चाल्ड हेल्प लाईन नम्बर की जानकारी देते हुए कहा कि आपको इनकी सहयोग से मैं शेल्टर होम भेजवा देती हूं। आप वहां पर सुरक्षित रह सकते है और उसी दिन शाम तक शबाना ने चाल्ड हेल्प लाईन नम्बर पर कॉल किया। चाल्ड हेल्प लाईन कार्यकर्ता के सहयोग से उस बच्ची को शेल्टर होम भेजवा दिया गया। अभी वह बच्ची शेल्टर होम सुरक्षित है।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...



आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर ने अपने एडिटर कॉन्क्लेव में बालकनामा एडिटर्स टीम को भी आमंत्रित किया। इस कॉन्क्लेव में देश के दिग्गज पत्रकारों ने भाग लिया



स्ट्रीट चिल्ड्रन अपने स्कूल में मेरिट में आने पर मार्कशीट दिखते हुए



रेडिओ एफएम में बालकनामा के रिपोर्टर अपनी बात कहते हुए



आईटीएम यूनिवर्सिटी द्वारा बालकनामा को भेजा गया आमंत्रण पत्र



बालकनामा का रिपोर्टर शम्भू टीवी चैनल को रिपोर्ट करता हुआ



सीएनएन ने बालकनामा के सम्बन्ध में रिपोर्ट प्रकाशित करके ये फोटो छापी



एक एडिटर कॉन्क्लेव में बालकनामा रिपोर्टर चेतन प्रश्न पूछते हुए

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471

Issue – 65 July, 2017

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to the given address – 31 Basement, Gautam Nagar,
New Delhi – 110049
Ph. No. 011- 41644471
balaknamaeditor@gmail.com

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

WE WANT FUTURE, NOT ALMS

APPEALED CHILDREN INTO BEGGING



Reporter Shambhu and Head Jyoti

As we all can see that during these days number of children begging at red lights, temples and mosques in cities like Delhi is slightly increasing day by day, which is a serious matter of concern. Have you ever thought of the reason behind this issue? Our Balaknama team

solution for this problem and interviewed many people. Our team members asked many

reason for:

wants?

in begging?

begging is increasing day-by-day?

them to beg?

Our team also asked for the suggestions and tips from these street and poor children and to their families for government in order to rehabilitate them. How did government should deal with this problem? So that children can get freedom from begging and they can also start a better life. They can also go to school for studying to have a better future.

Some of our reporters went to meet children begging in streets, temples, mosques and at red lights. Expressing their pain and problems, children spoke their hearts out. Our reporters asked them about their compulsions which force them to beg and also asked for some suggestions and tips they want to give to our government to deal with this serious topic.

Regarding this issue, one of our reporters talked to a 13 years old boy, Kanhaiya (name changed), who begs at the red light of Lodhi Road. Telling his story, Kanhaiya said, "I run away my home due to the misbehavior of my parents. I beg for food. I beg here for my survival." Expressing his feeling, he further added, "If someone would have explained my parents, when they used to misbehave me, I would have not begging here today for my survival. Can anybody take my responsibility by talking to my parents for taking care of me? Can anybody take the responsibility for proper care of me?"

Taking more interest in the interview, another 14 years old girl Radha (name changed) said, "I live alone, under the Okhla Bridge. As I live alone, so I beg in temples and Okhla Mandi for my survival. Looking at my condition, one year before, I was sent to a shelter home with the help of a NGO. I stayed there for almost 4 months, but due to the misbehavior of shelter home workers I run away from there and again came back to roads and again started begging to earn money for my survival." Giving some tips, she further added, "If we



Loksabha speeker Mrs Sumitra Mahajan honour Balaknama reporters in a function at New Delhi

start getting all the facilities of shelter home properly then we children would not run away from shelter homes and will not have to beg. Could it be possible that workers of shelter home would not abuse children living there and talk to them politely? By doing this, there will be a beautiful change in our

begging if we start feeling safe in shelter homes."

Another 14 years old boy, Gopal shared his story. He said, "I live with my mother and 3 siblings. My mother is very old. Two years ago, my father died. As I am the eldest one in my family and my mother is very old, all the responsibilities of my family come on my shoulder. So I have to go to many places for begging and the amount I get after begging, I use it to nurture my family." Asking for help, he further added, "If someone helps us to earn my mother's widow pension then

someone help me?"

A 14 years old girl, Saahida

due to our compulsions. As our parents don't go for work, we children have to go for begging. If our parents get some kind of work by the government, then we will not have to beg."

Complaining about the policemen, another 13 years old girl, Aasha (name changed) said, "Begging is becoming a serious matter of concern for

our happiness but we have to beg due to our compulsions. As in our slum, whenever a policeman comes, he asks for money to our parents. Parents of some children go for work, they hardly get to earn something for their survival but some parents don't even go for work then how can we give money to policeman. If our parents don't give them some money then they break our homes (slum) that's why we children beg so that we can collect some money to give to the policeman." Asking for some help from

continued on pg. 2

BALAKNAMA VIEWS

THIS IS HOW YOU CAN STOP BEGGING

First, total number of children and families who beg should be counted so that we can get to know the number of people begging.

Interaction should be done on a regular basis with these street children and families in order to know more about their problems.

Unique programs should be organized in big cities for such families and children.

Government should provide some type of work to these families like:
1. Foil packing work 2. Envelope making work
3. Households 4. To look after old age people
5. Cleaning cotton in factories 6. Garments packing work
By doing all these work, parents of street families will not send their children for begging.

will understand their problems

Government should make a number where these poor children can call and share their problems. For example: Posters should be made and on them this should be written 'If anyone is forced to beg, you can contact on this number and share your problem.' And slogans should be made to spread awareness like "give us a better future in place in begging"

Awareness should be spread through school children also.

Special schools should be made for such poor children.

Let people stop and talk to children begging on street. Keep talking to them and covey that study can make their future.

Local resident welfare association and shopkeeper association should come forward to help children.

Small learning centers can be opened in local police stations

EDITORIAL

Dear friends,
Greetings

It is our pleasure that your favorite newspaper 'Balaknama', which highlights the problems of street and working children is reaching to the people who make decisions for street and working children. Blissfully, the media of our country, India and abroad is also appreciating our work. Recently in a program, one of our Balaknama reporters is also honored by Mrs. Sumitra Mahajan, President of Lok Sabha. Truly, it is a matter of pride of our team. Our aim is to bring the concerns and problems of street and working children in front of the liable citizens of the society in order to find some solutions for them. All over, Balaknama has become a medium for expressing the pain and struggle of street and working children. It is our request to all the respected and capable citizens of the society, to feel the pain and sensitivity of these lifeless street and working children and also to help them whole heartedly as much as possible in order to find the solutions for their problems. 'Balaknama' is just a newspaper but it gives the real testimony of problems and struggle of street and working children.

As like every edition, we hope you will also like this new edition of Balaknama.

You can also share your thoughts and suggestions on the above address.

The Editorial Board

WORKING LATE NIGHTS, STILL HUNGRY-HORRIBLE STORY OF STREET GIRLS

Talkative Guddi and Reporter Vijay Kumar

This news is about 30 to 40 street girls of almost 10 to 15 years old, living in Shram Vihar, Lucknow. Due to some compulsions and poor financial condition, these street girls used to work as rag pickers. They work with their mothers from 11 pm to 4 am. These late night rag pickers have to face many problems. Sharing their problems, a 10 years old girl, Sona (name changed) said, "We feel shy in collecting rag during day time. Also during day time, some boys try to misbehave with us. Even less number of train come at the Char bagh station that's why we prefer to work at night only. During day time we don't get much bottles to collect as less number of train come at the Char Bagh station but at night as the number of train is much more, we get enough bottles to collect." Telling more about their problems another 12 years old girl, Priyanka (name changed) said that, "Though we get enough bottles and extra rag to collect at night but due to this we don't get enough sleep. Because of which we feel very sleepy when we go for work." After talking to these street girls, we can say that lack of sleep and working as rag pickers are some of the reason for bad health of these street girls. These street girls further said that even after working for whole day and night, sometimes they have to sleep hungry in the morning. At times, they did not even get single meal during twenty four hours of a day. These street girls are so unhealthy that it looks like they are suffering from malnutrition. Our Balaknama team tried to find out whether they have some other disease or is suffering from malnutrition but was unable to do so.

GIRLS POSING AS TRANS-GENDER TO LIVE-UNSAFE ACT

Balaknama Bureau

This news is about the girls, who used to beg at Badarpur Border, in their past. Due to getting less amount of money after begging, they stared others works like begging in the market, going house-to-house and in trains on Saturdays, etc. Even after doing all these things they were not able to earn enough money for their survival. One day, when they were begging in train, they noticed that people were giving more amount of money to transgender beggars that too very easily. There were beggars who were dressed up like transgender and people were giving Rs 50- Rs 100 to them instead of giving Rs 10- Rs 20 notes, which was more than the amount of money these girls get to earn even after working for whole day. From that scenario, they got an idea of dressing like transgender so that they can also earn more amount of money. On the very



next day, they changed their looks and went for begging as transgender.

At present, we got to know that these girls have to suffer a lot while begging as people recognizes that they are not transgender. A 17 years old girl, Radhika (name changed) said, "When we go for begging as transgender, some people recognize us and they look at us with obscenity. They talk filthy about us. Sometimes, boys ask us for going with them. They offer us more amount of money like someone said that he will give us Rs 500 instead of Rs 100 but we have to go with them. At times, boys try to touch our body and lure us for sex." She further added, "Boys don't misbehave with other transgender or beggars. They do this with only the ones who dress up like third person." Expressing her pain and feelings, Radhika raised some questions like, "Why people misbehave with us? Why they try to take advantage of our compulsions?" Another 16 years old girl told us that even when they go for work to bungalows to earn some money, people living there look at them with obscenity and misbehaves with them. Expressing her pain, she raised some questions and said, "Do girls like us don't have any right to live peacefully in this society? If yes, then why people misbehaves with us and lure us for sex? Does it like girls like us have to pay through our body due to our compulsions?"

Parents of begging children vows concerns

● **Mrs. Kamini Devi, 25 years old:** "I used to live in Bihar with my family but due to unemployment we came to Delhi from there. We came here in search of some work but unfortunately, there is no work for us. We came here with a contractor. He told us that he will give us labor work in Delhi but when we came here, he left us in Delhi and himself run away. After this cheating, we did not get any kind of work despite our survival became difficult. In order to survive, we started begging and also told our children to beg so that we can get enough money for



our survival. Similarly, many families are sent to Delhi in order to get some work but after reaching they are left alone on the roads. In such condition, children have to beg if they want to survive. Will government give some type of work to such families, so that our children don't have to beg for money?"

● **Mrs. Kamla Devi, 26 years old:** "We people don't have any type of identity card and that is why we can't find any job. Due to this, unwontedly, we have to send our children for begging."

● **Mrs. Rupa, 32 years old:** "I belong to Kanpur, UP. Some miscreants broke my house in Kanpur due to which I came to Delhi with my family. Now I beg for money and also make my children beg. As begging is the only thing we can do for our survival."

WE WANT FUTURE, NOT ALMS

from page 1

our government, he further added, "Can government give a local area for rehabilitation of children like us? An area where children don't have to beg to collect money for giving it to the policemen." Giving more tips, another boy, Rakesh said, "If we want to stop children from begging then we must fulfill the needs of these street children. Then only we can stop children to work as beggars." Talking about his compulsions, another boy, Kishan said, "It seems like begging has became a ritual for our family. Since my grandparents used to beg therefore my parents also force me to beg. In place of sending us to school for studying, they want us to go for begging." Wanting himself free from begging, he said, "Can we change this tradition of begging? I want our government to organize and visualize a unique program to explain the worthlessness of



these old customs. To explain our parents that everything should change with the time. To make them understand that they are spoiling the future of their children just because they still follow the old rituals made by them. May be, through this program, there will be a decrease in the number of children who go for begging."

STREET GIRLS ABUSED AT THE STATIONS

Balaknama Bureau

These days stations are becoming a huge hub for working and street children. Children, who run away from their homes, mostly start their livelihood at bus stands, railway stations or at the streets. The number of girls and boys among street children is almost equal. One of our Balaknama reporter went to one of such station and interviewed some girls living there, to find out the problems street girls have to face. During the interview, the girls said, "After facing many problems, we came here so that we can start a better life. But even at these stations, we are not safe." Expressing their fears and problems, they further added, "Boys living at the stations take us for granted. Whenever they find us alone, they try to lure us for sex." The surprising thing our team got to know is that, till today there is not even a single girl whom these boys spared from abuse. At first, these boys enter them in their trap and later sexually assault them. Giving more information about the problems, one of the girls, Sonam (name changed) shared her story with our reporter. She said, "When I was new at this station, I met a boy. At first, he was very polite with me and used to treat me nicely. He told me that he also ran away from his home as his parents used to beat him a lot. After listening to his story, I started trusting him and we both became good friends." She further added, "I thought that he will help me, but after some time, he took me to the cleaning shed, where the train coaches are cleaned and offered me to take intoxicants. I refused to take the intoxicants. At that time he did not said anything but at night when I was sleeping, he came and covered my face with his one of his hands and started touching my private parts." At last, all girls said that all boys do such obscenity with all the girls and that is why girls are unsafe on the stations.

STEPFATHER EXPLOITED HIS OWN DAUGHTER

Balaknama Bureau

This news is about a 17 years old girl, Khushbu (name changed) who used to live happily with her family but due to her stepfather's behavior towards her now she is living at the station.

Her mother was a housewife and father used to pull rickshaw. When she was just 12 years old, her real father died in a road accident. After this sad incident, Khushbu and her mother spend 2 years with many difficulties. When she turned 15, her mother married to another man. After her mother's second marriage Khushbu's life was horribly changed. Telling her story, Khushbu said, "My stepfather used to misbehave with me. At nights, he used to come into my room and lure me for sex." Khushbu told us that her father exploited her for a long period of time. One day, Khushbu showed some courage and told about her stepfather to her mother but unexpectedly, her mother did not help her. Rather she supported Khushbu's stepfather. Sadly, she was with her husband in this scandal. Khushbu further said, "My mother used to mix sleeping pills in my food. Unwontedly, when I sleep after eating the food, my stepfather used to exploit me. At night, I did not feel any kind of pain due to the sleeping pills but in the morning when I wake up, my body feels totally exhausted and I have heavy headache." After some months, Khushbu started vomiting and feeling dizziness. Seeing her, one of her aunt told her that she was pregnant. She ran to her mother and told about her pregnancy. Instead of helping Khushbu, her mother pushed her into a swamp. Somehow, Khushbu managed to save her life. After this incident, Khushbu ran away from her home and came to station. But sad thing is that even at the station, she was not safe. Whenever she used to tell her story to someone, he also tries to take advantage of her and lure her for sex. After this, Khushbu interacted with some girls who used to take intoxicants. She shared her story with them and told them about her pregnancy. When she asked for some solution of her pregnancy, those girls gave her some medicines and helped her in starting livelihood at the station. After taking those pills, Khushbu's problem was solved. Now Khushbu is living with these street girls only for her survival.



STREET CHILDREN FORCED TO DRINK DIRTY DRAIN WATER

Balaknama Bureau

In Balmiki Camp, there are about seven hundred to eight hundred street children living in the slum areas. Sad thing about this slum is that children living here have to travel 5 kilometers in search of drinking water due to the shortage of drinking water in their slum since last 5 to 6 months. Mothers of these children works as domestic helpers and father do labor work and thus, the responsibility for filling drinking water comes on the shoulders of these children. A 14 years old said, "We, children don't even have drinking water to feed our siblings and that is why we go to factories to fill water, but there are many chances of road accidents. Also working staff of the factory look at us with obscenity and talk filthy about us. They don't even allow us to fill water rather they scold us and order us to go back." She further added, "We don't find any solution for this problem. When we share our problems with our community head, he comforts us by saying that water will be supplied as soon as possible." She told us about that place from where they used to fill water. She said, "One day, when we were looking for water, we saw a dirty drain. There was a drinking water pipeline going from that drain and some water was also leaking from those pipes. At that time only, we pulled that pipeline slightly above by putting our hands into the drain. Now we fill water from there only. Sometimes, when we fill drinking water, dirty water of the drain also gets mixed with it. Due to our compulsions, we have to take this dirty water only to our homes and have to use this water for drinking and cooking also." Putting forward their issues, children of this area only want taps for drinking water in their slum. If tankers are sent in place of tap water then those tankers should also supply water in the slum areas so that children can get pure drinking water and they don't have to wander here and there.



DAUGHTERS UNSAFE IN OWN HOMES

Balaknama Bureau

This story is about a 16 years old girl, Kajal (name changed), who lives in West Delhi with her mother. When she met our journalist, she expressed her pain and shared her story. She said, "When I was in fourth grade, my father died. After this sad incident my life was awfully changed as I have to leave my school and studies because my mother used to go to bungalows (Kothi) to earn money for our survival and I have to stay at home to look after our house. After my father's death, few months later my mother married with another person. During the starting days of my mother's second marriage, my stepfather used to treat me very well. He also used to go for work and help us in home. But now, he is drastically changed. Now, he stays at home and don't go for work instead he play placards with his friend and drink too much alcohol with them. And whenever he comes home drunk, he uses abusive language and also talks filthy to my mother. Due to this, my mother has to work again for our survival." Unfortunately, Kajal's life was horribly changed after her mother's second marriage. She told us that her father used to think nasty about her. He often tries to misbehave with her when her mother is out for work. She said, "Whenever he comes home getting drunk, he used to misbehave with me and lure me for sex. He also used to touch my genitals. And that is why I was afraid of him." Sad thing is that when Kajal told about her stepfather to her mother, she did not believed her. Kajal further told us what she did to make her mother believe her. She said, "One night when my father came drunk, and again tried to misbehave with me I got up and made my mother see what my stepfather was trying to do with me. My mother was totally shocked by looking at him doing such things. At that time only, she just threw out my stepfather from our home." Now they both live happily. Kajal told us that now her mother never leaves her alone. Even when she go for work, she took Kajal with her.



CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

DEFECATING GIRLS VIDEO-GRAPHED BY BOYS

Balaknama Bureau

This news belongs to a slum in Prithivinath Ajam Pada area of Agra. There are about three hundred to four hundred slums in that area. Bad thing about this area is that due to lack of toilets, people living here have to go to railway tracks for defecating under their compulsions. Due to this, there are more chances of day-to-day accidents. A 15 years old girl, Sapna (name changed) said, "When we go to railway tracks for defecating, some boys try to misbehave with us and talk filthy about us." Another 17 years old girl, Rani (name changed) said, "Some boys always hide behind the walls and when we go for defecating, they touch their genitals by looking at us. They also act vulgarly. When we told about it to our parents instead of thinking about some solutions, they just said that we should not bother about what others are doing. Rather than looking here and there, we should mind our own business and take care of ourselves. But they don't know that we girls are always afraid of those boys." Sharing her problems and fears, she further said, "On an evening, when we four girls were going washroom, we saw that one boy from behind the wall was making our video. When we asked him that why he was making our video? He replied in a very bad manner and said, 'Baby, its fun to watch you like this.' And started coming towards us. We four became very afraid and started running towards our homes to save our lives." Telling more about other problems, she further said "Due to this, people living here are more prone to accidents. Two years ago, a child collided with the train and died." Expressing her pain and needs she said, "We people just want to get rid of these problems and live happily." Pointing towards the Swachh Bharat Abhiyaan, she further added, "As our prime minister ordered to make toilets under Swachh Bharat Abhiyaan, we people also want to construct toilets in our slum. So that we don't have to face such situations and we can also live happy and healthy."

No school holidays for working kids

Talkative Muskan and Reporter Shambhu

As we all know that in the months of May-June, all schools have summer vacations. Every child goes to their grandparent's house or visit new places and lounges to enjoy their holidays. Also after lot of fun they do complete their holiday's homework. Do you really think that the kids really visit their grandparent's house and enjoy their vacations? Let's talk about it.

Balaknama took the challenge for getting answer of this question. We interviewed five children who are from Bihar and come to Delhi for their vacations. We asked a question, but why did they come to Delhi? A 15 years old girl, Radha (name changed) said that, "I study in fifth class in Betiyan School in Bihar. My parents made me travel to Delhi due to summer vacations but not for having fun or visiting new places rather in search of some work so that i can earn money and send it to my parents in my hometown." As her summer vacation work, Radha is selling water to earn some money. Similarly, another 14 years old girl, Kamla (name changed) said, "I thought that during these holidays, I will go to different places and will have fun but it did not happen. My parents said that during these 45 days of my vacations, they will make me travel to crowded cities like Delhi and Mumbai so that I can earn money by selling cucumber and corn at my stalls." At present, Kamla's parents are selling cucumber and corns at stalls and same like Radha, Kamla is also selling water at different metro stations, parks and red lights. Showing her feelings and pain, Kamla said, "We children think that during our holidays we will also go to different places and have fun like other children. But unlike them, almost each and every parent makes their child travel to crowded cities like Delhi to find some work and earn money." These five children told us that it's very easy for small children to find some work like selling water and cucumber at different places, stations, parks and red lights. Expressing their problems, they further said, "When we go for selling water in the parks to the couples sitting there, they did not talk to us politely. Rather sometimes they abuse us and also scold us. After all these things, when we go to our homes in the evening, we also have to do our holiday homework."



Holidays are for relaxation of children. Children go to different places and enjoy with their family and friends. These children also travel to Delhi with their parents but sadly not for having fun or visiting new places, rather in search of some work to earn some pennies.

Cast Discrimination in schools

Balaknama Bureau



This news is of Marvadi Nagar, Agra where government school's children have been treated badly. We all know that the government schools are evenly important and same for all the children of any religion or castes. In spite of this, children studying in government schools are treated badly and are being compared according to their castes and the category they belong to. It's very sad that the teachers of these schools only compare students on the basis of their religion and castes. If the teachers are doing such things then what can we expect from their students and parents? Some children informed us that teachers talk politely to the ones who are from normal categories where as they always scold the ones belonging to lower castes and order them to work in the school. Similarly, the maid of the school who cooks food for the students also compares them on the basis of their castes. Some students said, "She also talk very politely to high castes students and serve them food in the school plates only where as she asks lower castes children to carry their own plates to get food. Also she orders them to wash the used plates of high castes children." May be these are some of the reasons why these children did not perform well in their studies. Suffering students did not even try to tell about these things to others as they fear that if they did so then their teacher will scold them and will not allow them to sit in the class. Even higher castes children also take advantage of lower castes student's compulsions. Higher castes children laugh at them and make fun of them. They also force them to do their work. Even the teachers of this school made them clean the floors by broom sticks.

Sharing other problems they face in the school, children said that the fans and lights do not work properly. There is no facility of drinking water in their schools. Whenever they feel thirsty, they have to go far away from the school to fill drinking water. These children further told one more problem that at the place of drinking water, there are many monkeys. As till now, monkeys have attacked many students and that's why they fear to go for filling drinking water.

CHILDHOOD BURNT UNDER FIRE



Balaknama Bureau

We have seen many children of about 14 to 16 years old selling roasted corn at the stalls in Delhi. Do you ever thought of the problems these children have to face in roasting corns and selling them under the hot sun? To get the answer of this question, our journalist went to these children and talked to them. During the interview, the children said that they belong to very poor families. Their parents also labor to earn money but that amount is not enough for their survival and hence they also have to work so that they can earn some more money and help their families economically. First, these children go to markets in the morning with their parents to buy raw corns and then later put them on their stalls. They do the roasting work for almost six hours that is from 4 PM in the evening till 10 PM at the night. Telling about their problems, a 15 years old boy, Kailash said that, "It's difficult for us to roast the corn as during roasting we have to use hand fans and sometimes burning coal's flames touches our hands due to which our hands also burn. In spite of this we have to continue roast the corn on very high flames so that the corn can roast well." These children don't even get enough sleep. Due to burning hands, they feel pricking and burning sensations in their hands because of this pain they cannot spend their nights peacefully. Expressing his pain and compulsions, Kailash further said that, "During the summer season especially in the month of May, while roasting the corns we get enough sweat because of the flames of burning coal as well as the sun heat. Due to which we get body rashes and also we feel burning sensations in our body. Even after all these things we have to work for our survival."

COMPULSIONS FORCED CHILDREN TO BEG



Talkative Sameer and Reporter Shambhu

Our journalist saw some children who used to sell balloons and toys but at present they are begging. Looking at this serious and strange issue, our team decided to have a meeting with these children. During the meeting, one of our journalist questioned them that why are they begging? A 12 years old girl, Sapna (name changed) painfully replied, "We children used to sell balloons in the market but in the month of June, due to heat and strong sunshine, many of our balloons used to burst which causes great damage to us. As there was our loss and no earning was there because almost every balloon used to get burst, our parents decided that they will not make us sell balloons anymore and asked us to beg to earn money. So we started begging instead of selling balloons. Our parents also beg for money. Since, we started begging our earning is also increased." Telling more about the places and timings she said, "We beg from morning 8 AM till night 10 PM. Our siblings go to bus stands, markets, and at red lights for begging and our parents go to Mosques and temples in the evening." These children beg for whole day but their parents beg only for about two to four hours. Expressing their fear and pain, another 15 years old girl, Rekha (name changed) said, "After begging for whole day, when we give our money to our parents, they do not talk to us with love. Rather they scold us and force us to beg more and earn more money. Whenever we try talk to our parents, they don't talk about other things in spite they always talk about begging and earning more and more amount of money."

Children living in fear under the bridge

Balaknama Bureau

In South Delhi, there are about 300 slums under the bridge from where trains are passed. On interacting with the children living under the bridge, a 15 years old girl, Shalu said, "There are day-to-day accidents taking place here because the parents leave their children alone in the slums and go to work and whole time children wander here and there to play which increases the chances of accidents. Mostly, children play on the railway tracks only because of which our parents are always afraid of accidents and fear to leave us alone under the bridge. As the train passes with high speed and at times does not even ring



the horn our parents always fear of us." This is probably the reason of why there are day-to-day train accidents under the bridge? Now-a-days, the children of this area are very scared as recently a man had an accident with train. Children are so much scared that when these children hear the noise of the train coming under the bridge they did not come out of their slums. Even at the night they do not come out of their slums, even if they want to defecate they don't come out. The children living under the bridge are facing such problems. The children said, "We cannot tell our pain to anybody because no one can understand us. We fear that if we tell this to anybody then all of us will have to move from here and then where will we go in a condition where we don't even get to eat enough food to fulfill our stomach." Requesting for homes some of them said, "We want government to help us by making shelters so that we can spend our night in those shelters. Also, then we don't have to fear about train accidents and can live happily and safely."



PARENTS FORCING FOR CHILD MARRIAGE

Balaknama Bureau

Our reporter met some children of almost 14 to 17 years. On interacting with them, they shared their problems with us. They told us that even in today's world they are been forced for child marriage by their parents. Their parents give them the examples of their ancestors and pressurize them for child marriage. Their parents don't even allow them to go to school in fact they took back the names of their children from the schools. They force them by saying that they are growing up and now they should understand their responsibilities. They should start looking after their houses and their parents. Putting forward their problems, children said, "We are worried by the fact that our parents want us to get married so early. These are our playing days. But they want us to travel to different cities in search of work to earn money." They told that so far 5 children have been sent to cities in search of work but they come and said that they can't find any kind of work as the people don't want to hire children of young age to work as a laborer in their companies or factories. Children are doing art and craft work and sell their craft to earn money. Some of them said, "As we can't find any job due to young age, we make paper flowers and sell them. We give the amount of money which we earn from our art and craft to our parents." Expressing themselves, a 16 years boy, Aksar said, "When I asked my mother that I am just 16 years old so why are you forcing me to get marry at such a young age? She replied that there is no one to look after our house. She wants me to get marry so that after marriage I and my wife could look after them and also take care of our house." Explaining his mother about the consequences of child marriage, Aksar tried to make his mother understand this fact by saying that, if he marries at such a younger age then the life of both, his and his wife's lives will get destroyed. Also it will spoil their studies. But it seems like no one try to understand them and their prayers. Sadly, all they see is child marriage, responsibilities and money.

Street Children denied access to public parks

WHERE TO PLAY?

Balaknama Bureau

During a visit in Shakur basti, West Delhi, our journalist found that there is a very beautiful park in that area. But the shocking thing we got to know is that street and working children are not allowed here to play and enjoy by children belonging to good houses. Our journalist asked them that why children belonging to good houses do such discrimination with them? Telling their problems, a 15 years old boy, Golu replied, "Children living in big houses judge us on our looks. They discriminate us as we don't wear washed and clean clothes. They close the front door of the park by seeing us and say that as we belong to poor families, if they will play with us then it will affect their parent's reputation. We poor children love to go to that park as there is everything we can ask for. Swinging rides on the one hand and green grass on the other." Sharing more, another 16 years old girl, Kamla said, "Where we used to live before, there were no such parks because of which we children had to face many problems for playing and enjoying. Our families changed the rooms so that we can also play like other children and enjoy our childhood. But here also, due to these children we have to suffer." Expressing their problems and pain, another 17 years old boy, Raja said, "We survive on very little earning of our parents. If we keep changing our rooms like this, then how will we complete our studies? We used to play in this park in the evening, but from last some days children belonging to big houses don't allow us to enter the park. We also want to play. We always crave for playing in such beautiful parks like them but at last we have to make up our minds and keep smiling by looking at them only. For playing in the park, we also tried to enter the park by climbing the boundary but one day some of the children saw us while entering the park and told their parents about it. After some days, their parents covered the boundaries with steel wires so that we cannot enter the park." Sadly, even after coming to a better area, these poor children don't get to enjoy their childhood. Brave thing about these poor children is that even after facing all these things, they still have hopes to enter the park someday.

Children at the stations, taking harmful substnces

Balaknama Bureau

Our journalist went to meet some children who are always drunk just to find that how the children living at the stations spending their life under such sunshine and heat. The journalist raised some questions in front of these street children like, "Even in such sunny days why you children take drugs? Don't you feel harmful effects in summer due to your addiction?" A 17 years old boy, Gopal (name changed) said, "The type of drug which we take is very dangerous. It's written on its box that it should be kept away from children and if we bring a burning matchstick near it, it will explode. This time due to bright sunshine and heavy summer, it's very dangerous for us to take this drug." Journalist then asked a different question that is, "When you don't know anything about the drug then why do you take it?" Another 16 years old boy, Salman (name changed) replied, "We children had decided not to take drugs during this summer, but we all live here in a group and as like every group we also have a group leader. Our group leader himself orders us to take drugs. If anyone from us denies for taking the intoxicants then our leader removes that child from the group." Journalist then asked a third question, "Why can't you stay away from the group?" A 15 years old boy, Sagar (name changed) said, "If we don't



stay in groups then children of other groups don't allow us to live on the station and also they don't allow us to collect the trash in the trains coming at the station." Expressing their pain, the children said that they themselves don't want to take drugs but they have to do so because of their compulsions. If a child wants to stay at the station, he has to follow the orders of his group leader irrespective of good or bad. Due to this these children are getting weak day by day. But they have to do so as if their leader removes them then they have to leave the station and they may die. Due to this, the children are afraid. They are trapped in world of drugs. Sharing their problems children said, "If we don't get to eat food, that's ok for us but if we don't get drugs, our body starts reacting. Now we are addicted to it. It seems like it is necessary for us to get drugs and our body is addicted to it." Our reporter found that during these hot days, due to the drug addiction, more and more number of children are becoming ill.

NO SAFE PLACE TO LIVE, STREET CHILD GOT ELECTROCUTED

Balaknama Bureau

Our journalist visited about 1700 sloping slums in West Delhi. Sadly, there are zero facilities in these slums. Families living here use plastic sheets as roof top for covering their homes. Parents of these families work very hard to earn some money to fulfill their stomach. Fathers of some children pull rickshaw to earn money. When the parents go for work, they leave their children at home to take care of their houses.

One of the nasty thing our journalist got to know is that these people are troubled by our protectors, Policemen. Whenever a policeman visits their slum, he often cuts the ropes of their homes and plastic sheets also which they managed to get after working so hard. At night, when their parents come at home, first they again have to bind the ropes and buy new sheets to improve their homes after that only they cook food and get to eat something. Many times policemen throw water even at their burning stoves just for troubling them.

Another problem our journalist recognized is that homes of these children are so weak that they are easily spoiled in rainy season and many times families have to get wet whole night. Worst problem of this slum area is that connection of electric wires is very weak. Also electric wires are hanging so low that anybody can get a shock. People of the slum shared and incident with our reporter, they told us that, three years ago on 28th May, a 3 years old child died due to heavy rains and weak electric wires. In the stormy season wires fell down on a rickshaw and as soon as the child touched the rickshaw he died due to electric shock.

POLICE TAKING BRIBE FROM STREET CHILDREN

Balaknama Bureau

This story is of a huge market in Shakur Basti, which people know as Wednesday market. It has been informed to us that some parents and children go to this market and sell toys and goods for their livelihood. But police trouble these poor children. They ask for weekly income from children. Police force them for giving weekly money and trouble the ones who deny doing so. A 16 years old girl, Aarti (name changed) said, "We sell goods in the market to earn some money for our survival. We sell goods in front of Lawrence road and whatever amount of money we earn, we use it for our survival." Other children said, "When we go to sell our goods, we don't even find a proper place to make our shop. We first have to clean the roads and then we put our shops on the road side areas. When the policemen visit the market, they first see us. They beat us and spoil our shops. They do not listen to us even if we say that these shops are the only way for our survival. They still beat us. When police asks for money from us, we say that we barely get to earn only Rs 200. If we give money to you then how will we manage our house and fulfill the demands of our siblings? So the policemen reply in anger that they have not taken the responsibility of our siblings. If we want to sell the goods then we have to pay weekly to them. Else they will not allow us to sell goods and will throw our stuffs." Telling more about this misbehavior of policemen, another 17 years old boy, Rahul (name changed), said, "Sometimes police makes big vehicles and rickshaws to stand in front of our shops due to which people cannot see our goods and we did get to earn. When the policeman leaves we pull the rickshaw but we children cannot move the cars. Due to this, we do not earn anything." Expressing their pain, they said, "We just want the policemen to cooperate with us and act politely so that we can earn enough for our survival."



Shopkeepers not paying correct prize

WORKING CHILDREN SUFFERING LOSS OF INCOME

Balaknama Bureau

Our journalist had a meeting with the children living at the station. During the meeting, children told how they collect each bottle from outside the shops and the roads. They sell them as junk for their survival. But the shopkeepers take advantage of their compulsions. A 15 years old boy, Rahul said, "I go to the same shopkeeper to sell the collected bottles but that shopkeeper does not give the correct price of the bottles. Now-a-days, the correct price of the bottle is Rs 40 per kg in the market but he buys them on half rate. It also seems like he does not weigh the bottles correctly. If the total weight is 5 kg, he tells us that the weight is 4 kg and also takes it on half rates." This results into heavy loss of these children. When they get to know about the scam, shopkeepers do with them, they opposed them. On opposing, shopkeepers warn them that if they don't cooperate with them then they will not buy the bottles from them and also they will not allow them to collect bottles and trash on the railway stations. Also they will not allow them to stay on the station. After hearing all these things, children have to cooperate with the shopkeepers with heavy hearts as they don't have any other option for their survival. Expressing their pain, these street children said, "We want that some strict actions should be taken against these shopkeepers so that at least we can earn the money according to our work. Also we want some strict rules so that the scam can be stopped and we can get enough money to fulfill our stomach."



EXTREME VIOLENCE, EFFECTING MENTAL PEACE OF STREET CHILDREN

Balaknama Bureau

Due to poor salary, some families live under the bridges as they cannot afford the rent of the rooms. On been interviewed, some children said, "When we were living in the villages, our parents used to work in fields to earn money for our survival. In greed of earning little bit more, our parents come to Delhi. Even after coming here, we don't found any work. At times our parents get to work, and many times they did not get any kind of work, even for weeks. During that time we children don't even get to eat single meal and have to sleep like this only. In such conditions, how will our parents pay the rent for rooms?" At present, these children live under the bridges. Expressing their pain, 15 years old boy, Manish (name changed) said, "The number of people living in these shelters is already very high. So our parents don't want to live here. We just want government to make shelters for children like us so that we can also live peacefully and don't have to face violence of police.



SHELTER WORKER'S RUDE BEHAVIOR, CHILDREN LEAVING HOMES

Balaknama Bureau

Shelter homes are the safest place for all the ones who lives at the station. Children go there so that they can get rid of station life and can focus on their studies. But some children said that shelter homes are not good for them. Workers of shelter home don't treat them equally. Every new child has to face many problems in shelter homes. Recently, a boy came back to station from shelter home as he did not felt safe there. On being asked that why he left shelter home even when he was told that shelter homes are the best place for them? The child started crying and replied, "Yes, I agree with you that shelter homes are the best place for us but you don't know what we all have to go through inside those shelter homes. Workers of shelter home order the children to clean the home. If a child denies following their orders, they beat us very badly. Do you consider such place as safe place? If a child tries to escape then he is threatened to give electric shocks. We children get very scared to hear about electric shocks. We keep on crying due to pain and fear but cannot share our pain with anyone in the shelter home. The worker's behavior towards us is also very rude. They use abusive language when they talk to us. No one talk to us politely. Some children sleep as they cry. Nobody asks them why they are sad or crying? We don't even get enough food to eat in shelter homes. Due to all these reasons and bad behavior of workers of shelter home towards us, some children run away from there and come back to station." Listening to all these things we have came to a conclusion that some rules should be made for shelter home workers in order to behave good with children living there. Children should not be treated badly and abused. They all should be well fed. Last but not the least, behavior of every worker should be polite and sensitive towards any child. After all these things only, future of children living in shelter homes will be brightened.

BADHTE KADAM'S MEMBER SAVED STREET GIRLS

Talkative Archana and reporter Vijay Kumar

Our Balaknama team organized on sport group meeting in Ramswaroop Kheda. Almost 20 children participated in this meeting. The group leader of these 20 street children was Archana. She introduced and welcomed the children at the starting of this meeting. During the meeting, street girls shared many problems they have to face. Sharing their problems, an 11 Years old girl, Aarti said, "Each evening, a big boy comes from the temple side and talk filthy things to us. When our parents go for work, he stares us." Group leader, Archana, was also agreed with what Aarti has said. After Aarti, Archana herself shared an incident and said, "One day when I was alone, that same boy tried to took advantage of my loneliness and grabbed me inside the street. When I screamed loudly, he ran away from there. Unexpectedly, when I told about it to my parents, they did not take any actions against him." After listening to the problems of these street girls, one of our badhte kadam's members called the child helpline at 1098 and shared the problems of street girls with them. Child helpline workers came and listened to their problems. After listening to them, child helpline workers helped them out and since that day only, that boy did not came again. At present, these street girls are safe and are living happily.

STATION WORKERS TORTURES THE CHILDREN

Balaknama Bureau

Our journalist organized a meeting with children living on Agra Cantt Railway Station. During the meeting children shared their problems. Some of them said, "As you can see that it's very hot now-a-days so during day time we come at the station for some shed. When we go to waiting rooms to sit under the fans, station workers torture us and policemen beat us. They don't allow us to sit and relax in waiting rooms." Some children said, "There are water coolers on the station for drinking cold water. When tourists, travelers, in fact people from slums fill water from the cooler, nobody scold them. But when we go for drinking water from these water coolers, station workers don't allow us in spite they



scold us and the policemen again beat us. It is so hot outside here, that sometimes we want to take bath but unfortunately, stations workers and policemen don't even allow us to drink water then how can they allow us to take bath." These street children crave for single water droplets even after enough supply of water on the station. Sharing other problems with us, they said, "Due to shortage of water, we don't get to bath for several days and because of which our body gets dirty. Also when we get sweated during the day time, we feel itchiness due to which we got so many wounds in our body. We don't have enough money to go to private bathrooms and take bath. Whatever money we get after begging, station workers take that also from us." At last, expressing their needs and pain, children said what they want; they said "We just want station workers to treat us like other children. We are forced to live on the stations due to our compulsions. Same like other children; we also want to live happily and want to be treated properly. Also we want that they should not take the amount we earn so that we can fulfill our stomach by eating something from that money."

WHY STREET CHILDREN ARE ALWAYS HATRED?

Talkative Ranjeet and reporter Shambhu

We usually see children working and wandering here and there on roads on a regular basis. There are no rules in society for the betterment of these children. If these children are seen begging or collecting trash, then people say that it's their regular day work. Except this, they can't do any other kind of work. These street children live on the railway station for their survival. There also they have to face many problems. They are troubled by ticket checkers and policemen on regular basis. They are not allowed to board the trains to collect the trash as policemen think that they are not good. They think that street children won't board the trains for collecting trash, rather for stealing public's goods and purse. But these street children don't do such things; they just want to collect the trash for their survival. Of course, they wear dirty cloths but they are pure by hearts. As soon as they get a bottle, they de board the train couches and sell them, and eat



something from the money they get to earn. If the see anybody in trouble, they go and help them out. Sharing their story, 17 years old boy, Raja (name changed) said, "When we were going to the market to buy new shirts for ourselves by the money we earned from selling our trash, we saw a drunken man walking towards the railway track. Looking at him, we pulled his hands and dragged him out of the railway track to save his life. But while dragging him he went on another track and got injured. Looking at his injuries, we took him to the hospital and without getting selfish, paid for his treatment." Telling more about their pure hearts and helping nature, he further added, "Not only this but whenever we see lost bags, we take them to the G.R.P police station so that the person's good can be return back to him safely. When station workers have trouble in pulling the luggage, we go and help them out. Even after all these things, people's attitude is not good towards us. They think that the children living at the station are not good and they are involved in bad company. Also they see us with hatred eyes." It is sad that even after helping and caring for everyone, no one cares for these poor children rather they are been troubled by everyone.

Hats off to Rahul for raising his siblings

Talkative Rahul and reporter Deepak

Due to parental abuse, some children are always ready to leave their house. One such story is of 11 years old boy, Rahul. Two years Rahul and his family used to live at Ajmeri Gate, but after his real father's death his mother did the second marriage in order to take care of her children and raise them properly. After her mother's second marriage, Rahul's life as drastically changed. His mother did the second marriage in order to take care of her children but they didn't know that the person her mother is going marry will leave them after few months and also misbehave with them. Telling his story, Rahul said, "My real father was a very good person. He used to love all of us 6 brother and sisters. He used to work hard for our survival and due to all these tensions and work load he always had health issues. When he died, all responsibility came upon my mother's shoulder. So my mother did the second marriage in order to raise us properly." Expressing his pain he further added, "Unlike my real father, my stepfather pulls rickshaw and whatever amount he earns,



he uses it for drinking alcohol. He never worried about our health, problems, and family. When my mother asks him why he drinks so much alcohol, he starts beating my mother and start talking filthy to her. He says that he has not taken the contract of raising her children. One day when he was drunk, he told her that he was planning to get separated with my mother after marriage. I was shocked to hear that. Sometimes when he is drunk, he beats us also. Because of all these daily arguments, I left my home." Rahul told us that as soon as he reached the station, he met some more children whose stories were similar like his story. Due to compulsions, they also ran away from their homes. Telling about his work, Rahul further said, "I have to collect garbage and trash then only I can afford meal for two times to fulfill my stomach. I still go to my house. During day time, I stay on the railway station. At the evening, I catch a bus and go back to my home."

Rahul also takes care of his sibling and his mother. He buys drinks and food for his siblings with the money he earn, so that they can get enough food and they don't have to starve at night. All together, he is taking care of his siblings as a big brother and fulfilling all the responsibilities of his father.

Rudy Teachers, Children effected

Balaknama Bureau

It has been found that in some schools of Delhi, teachers are not teaching the students of class 1st to class 5th properly. As per the information, teachers are always busy in their world over phone and showing rude behavior towards children. Sharing their problems, a 8 years old boy, Rahul (name changed) said, "Our sir always scold us. They come and write our work on the black board and then they go. When we tell them that we don't understand anything and asks them that what is written on the black board? Then our sir always replies in anger and says that don't you understand anything in one time and order us to go back to our seats. They are always busy in talking with madams. When our bell rings, they just write the homework on black board and then they leave." Further these children said that they cannot understand what they are being taught. Even after coming back to their home, and asking questions to their parents, they get scolding. Their parents say that why are they learning in their schools? When they tell the truth about teachers, their parents don't believe them. Due to this, these poor children are now attending other coaching classes/ tuitions for studying. Telling about situations they have to face, Rahul further said, "Our coaching teacher also gets very angry with our school teachers. She says that when they did not taught us anything then how can they give us such hard work for homework. She asked us that why don't we tell our school teachers about our problems? When we told her the truth she was also shocked."

These poor children just kept a simple demand or can say request to all the teachers and said, "We children just want to study for our bright future. Government says that education is equal for all of us then why we children are not been treated well? Our parents have enrolled our names in the schools after facing many difficulties. They just want us to achieve something in our lives. They want us to get educated and employment unlike them. We just want to study nothing else."

SPOILED CHILDHOOD

Talkative Saahran and reporter Deepak

This story is about an 11 years old boy, Saaharan. He was living happily with his parents in Bihar. Few years before, his parents sent him to Delhi with his elder sister and brother-in-law so that he could earn some money to repay the loan his parents took for his sister's marriage. In greed of earning money, he also left his studies and came to Delhi.

when he was selling cucumbers in bright sunshine and the cucumber stalls was so heavy that he was not even able to push it properly. After looking at him, our reporter asked him that

heavy heart, he replied, "I do this because of my compulsions. My parents are so old that they can't work and therefore I have to work for our survival." Then our reporter asked him that what type of difficulties he face in his work? Telling about the problems, he replied, "I face many difficulties like if go to any market policemen beats us and orders us to move from that place. Then if we stand in front of any shop then shopkeepers scold us not to stand there. Sometimes they even throw our stalls. Due to this when we don't get to sell our cucumbers then unfortunately, we have to throw them as cucumbers get easily spoiled when they are kept then asked: still there is some earning or not? He replied, "After working for whole day, I hardly get to earn around 100 rupees. That too I give to my brother-in-law so that he can transfer it to my parents. But I don't think that they gave it to my parents as whenever I want to talk to them; my brother-in-law and sister don't allow me to do so. They always comfort me by saying that as my parents' lives in the village; their number is out of reach due to signal problems." Expressing his fear and pain, Saaharan further said, "It's been a year, I am living with my sister and since then I have not talked to my parents. They don't even allow me to go and visit my parents. I always worry about how they are?" Telling more about his cruel sister and brother-in-law, he said, "After working for whole day, when I reach home at 7 pm-8 pm, my sister asks me to do her household works too. I feel like no one loves me and there is no one to look after me. I am alone in this world."

WITH THE HELP OF CHILD HELPLINE, JAVED SAVED THE LIVES OF TWO CHILDREN

Talkative Javed and reporter Shambhu

Javed is a 16 years old boy, who lives in Sarai Kale Khaan with his family. He is one of our, balaknama's talkative reporter also. He always takes care about how street and working children around him are living. Like, he talks to some children about their problems they used to face while going to railway tracks for collecting trash. He always asks them that are they facing any kind of problems and anything they are suffering from. He always worries for them because he has seen the life of roads very closely. Few years ago, Javed also used to go to railway tracks for collecting trash. He was a drug addict at that time. But with the help of Balaknama, he stopped taking drugs and now he doesn't even go for collecting trash. At present, he is studying in 3rd class in an open school,

conditions were also not good. His family members also used to hate him. They also used to abuse him a lot. They did not even wanted him to live with



them because he was indulged in bad company and used to drink too much alcohol also. But as soon as he got connected with Balaknama newspaper he stopped drinking. As we told him that our newspaper is all about street and working children and if he wants to be from one of our reporter then he has to study and for this he have to stop drinking. Keeping this in mind, he started taking fewer amounts of intoxicants day by day. At present, he has totally left his addiction. Now he used to live happily with his family. Javed shared an incident with us and said, "Past few days, when I was returning to home, I saw that two children were crying on the platform. I went to them and tried to talk to them but they did not say anything.

Seeing them like this, I called the child helpline number and informed them about these two crying children. I requested them to help these children." After his call, on the very next day, child helpline took the picture of those children and

after 10 days, both the children

and were sent back to their home. Now they both are living happily. In this way, our encouraging reporter, Javed saved the life of two children.

Kuldeep still try to study even after suffering from many problems

Talkative Kuldeep and reporter Chetan

This news is about a boy Kuldeep, who wants to study. From the age of 10, Kuldeep has improved his family's economic

2011, Kuldeep used to earn 100 rupees after working for 12 hours in a factory. Sad thing is that his father died due to heart attack. After his father's death, their family income became zero. As all his elder brother and sisters got married, they all used to live at different places. Unexpectedly, nobody helped Kuldeep in his family. His mother was also unwell. All his mother's medicines, drinks and food's burden were on his shoulders only. So he used to work with all his heart. After his father's death, he started working in another factory. There he used to earn about 290 rupees after working for 8 hours. He used to take 500 bucks in advance on

to survive. But now he is not going to work as once his foot slipped and he felt down. He got fractured in his hand. Now his family's condition is getting worse day-by-day. Expressing his pain, he said that, "I gave the amount I saved, to my mother. Our household work is going with that amount only. But how long will we run our house like this?" Despite having poor family conditions and fracture in his hand, he still wanted to study. He also wanted to get success like other children so he took admission in an open school in class 3rd.

Little efforts resulted into schooling of 3 children

Talkative Aman and reporter Chetan

This news is about a 12 years old boy, Aman who lives in Shakur basti with his family. He studies in 5th class. Aman is very kind in nature. He is always ready to help the children around him. If he sees someone in trouble, he helps them out. Few months back, he saved the life of an old man, as he dragged him from the railway track, when the old man was totally drunk. Except this, he recently admitted 3 children in government school for studying. These children used to see Aman daily when he used to go to school. Seeing him, they also decided to go to school and study. Sharing his



story, Aman said, "One day, when I was returning from school these 3 children came to me and said that they also want to go to school like me. I asked the names and address of these children and told them to introduce me to their parents." After meeting their parents, Aman went to a government school near the town with the 3 children and their parents and talked to the vice principal of the school. Aman told us that the vice principal also was very politely to him and after talking for sometime he agreed for the admission of the 3 children.

Due to little efforts and courage, at present, 3 of them go to school daily. They love studying so much that they daily attend the school and during holidays also, they sit and study at home only.

BALAKNAMA AND BADHTE KADAM IN NEWS

WE ARE SHARING SOME PICTURES OF THESE MOMENTS WITH YOU….



State minister of UP Mrs. Swati Singh with members of Badte Kadam.



Free eyes checkup of Street Children organized by Delhi Police and GRP



TELENTED Sonia (2012)with Balaknama team



Information about child line help number giving by Badte Kadam members in a school



Tiwari discus problem of street children with Balaknama team

Balaknama acknowledge part support from Sardar Nagina Singh and Family

This edition is for limited distribution. All pictures are published in this edition after children's their approval.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Vibha Shakya.

Published by Badhte Kadam ,31, Basement, Gautam Nagar, New Delhi-110049 "newsletter for limited circulation". Photos of children are published by their consent. For info or support; balaknamaeditor@gmail.com or call 41644471

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार “बालकनामा” लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-65 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

भीख नहीं भविष्य दो

बच्चों और परिवारों ने दिए सुझाव



रिपोर्टर शम्भू और ज्योति

आजकल दिल्ली जैसे शहरों में लालबत्ती मंदिरो मस्जिदो में भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या तेजी से बढ़ रही है जो एक चिंता का विषय है इसी विषय पर बालकनामा की टीम ने जाएजा लिया और लोगो और बच्चो से जानने की कोशिश की कि वह क्या चाहते हैं। पत्रकारों ने बात की कि वह आखिर भीख क्यो मांगते है और इस कार्य में बच्चों की इतनी बढ़ोतरी क्यों है? इसका क्या कराण है? तथा बच्चो से इस मुद्दे को लेकर उनसे सुझाव भी मांगे की सरकार व अन्य कार्यकारी लोग बच्चो के पुर्नवास करने के लिए क्या करे? इस समस्या कैसे निपटा जाए? ताकि बच्चों को भीख मांगने से आजादी मिल सके और भीख मांगने वाले बच्चो को शिक्षा से जोड़कर उनका बेहतर विकास किया जा सके। पत्रकारो ने सड़क, मंदिरों, लालबत्ती पर भीख मांग रहे बच्चो से जा जाकर बातचीत की और उनका दर्द व मजबूरी जानने की कोशिश की। कि इतने छोटे छोटे बच्चे आखिर भीख क्यों मांगते हैं? और उन बच्चो से कुछ उपाय भी मांगे कि इस गंभीर विषय से कैसे निपटा जा सकता है। इसी मुद्दे को लेकर पत्रकार ने 13 वर्षीय परिवर्तित नाम कन्हैया- जो लोधी रोड की लालबत्ती पर भीख मांगता है ने बताया मैं अपने माता.पिता के दुर्व्यव्यहार की वजह अपने घर से भागकर आ गया था। मैं यहां अपना पेट पालने के लिए भीख मांगता हूं। अगर कोई मेरे माता पिता को उस वक्त समझाता तो मुझे यहां लालबत्ती पर भीख नहीं मांगना पड़ता। क्या कोई मेरे माता पिता से बातचीत करके मेरी सही देखरेख का जिम्मा उठा सकता है?

14 वर्षीय परिवर्तित नाम राधा ने बताया कि मैं ओखला पुल के नीचे अकेली रहती हूं। मंदिर और ओखला मंडी में भीख मांगकर अपना पेट भरती हुं क्योंकि मेरा यहां कोई नही है जो मेरा पेट भर सके। लेकिन मेरी यह दशा देखते हुए एक साल पहले मुझे एनजीओ के कार्यकर्ता के सहयोग से शेल्टर होम पंहुचा दिया गया था। मैं वहां चार महिने तक रही लेकिन शेल्टर होम के कार्यकर्ता के दुर्व्यव्यहार की वजह से मैं शेल्टर होम से भागकर सड़क पर फिर से आ गई और अपना पेट पालने के लिए मैं भीख मांगने लगी। अगर हम बच्चों के लिए शेल्टर की सुविधाए सही रूप से सीधे बच्चो को मिल जाए तो कोई भी अकेला व अनाथ बच्चा शेल्टर होम से भागकर सड़क र नहीं आएगा और उसे भीख नहीं मांगनी पडेगी। क्या ऐसा हो सकता है कि शेल्टर होम के कार्यकर्ता बच्चो से अपशब्द न बोले और उनसे विनम्रता से पेशा आए? ऐसा करने से बहुत बच्चो के जीवन में बदलाव आ सकता है वह भीख मांगने के गिरोह में वापस नही जाएंगे।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि मेरे 3 भाई बहन है जो मुझसे छोटे हैं मेरी मां बुजुर्ग है मेरे पिता जी की मृत्यू आज से 2 साल पहले हो गई थी जिस वजह से मुझे भीख मांगना पड़ा क्योंकि मुझे सारा घर का कामकाज करना पड़ता है तथा घर का खर्चा चलाने के लिए मैं जगह जगह जाकर भीख मांगकर कुछ पैसे जुटाता हुं जिससे मेरे घर का पालन पोषण होता है। अगर कोई मां की विधवा पेंसन बनवा दे तो मुझे भीख नहीं मांगना पडेगा। क्या कोई मेरी मदद कर सकता है ?

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) साहिदा ने बताया कि हम बच्चे भीख इसलिए मांगते है कि हमारे माता पिता काम करने के लिए नही जाते है इसी मजबूरी में बच्चो को भीख मांगना पड़ता है क्या सरकार हमारे पिता को मजदुरी दे सकती है। जिससे हमें भीख मांगने न जाना पड़े।





बालकनामा के रिपोर्टर और अन्य साथियों का सम्मान करती हुई लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन

13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) आशा ने बताया कि भीख मांगना बच्चो के लिए एक चिंता का विषय बनता जा रहा है और भीख मांगना बच्चो की मजबूरी बनती जा रही है क्योंकि जिन जुग्गी झोपड़ियों में बच्चे रहते हैं वहां पर कुछ पुलिस अधिकारी बच्चों के मात पिता से पैसे मांगते है हमारे माता पिता तो कुछ के माता पिता कामकाज करते हैं और कुछ के नहीं पर वह अपने गुजारे लायक ही हर दिन पैसे कमा पाते हैं तो फिर पुलिस अधिकारी को हम कहां से पैसा देंगे अगर हम उन्हें पैसे नही देते है तो वह हमारी जुग्गी तोड़ देते है इसलिए हम बच्चे भीख मांगकर पुलिस को देने के लिए पैसे जमा करते हैं ताकि जब पुलिस वाले भईया हमारे माता पिता से पैसे मांगे तो वह भीख से मांगा हुआ जमा किया हुआ पैसा पुलिस को दे दें। जिससे वह हमारी बनी जुग्गी को नहीं तोड़ सके। क्या सरकार हम बच्चो के पुर्नवास के लिए एक स्थानीय जगह दे सकती है? जहां बच्चों को पुलिस को देने के लिए भीख मांगकर पैसे न जुटाने पड़े। राकेश ने बताया कि अगर बच्चो को भीख के विषय से आजादी दिलाना चाहते हैं तो हमारी जरूरतो को पूरा करना होगा तभी हम बच्चे भीख मांगना बंद

शेष पृष्ठ 2 पर

भिक्षावृत्ति रोकने के लिए बालकनामा का सुझाव

- हर जगह में पहले तो ऐसे बच्चो और परिवारो की गिनती करें ताकि इनकी स्थिती का आंदाजा हो सके ।
- जो यह बच्चे हैं और इनके परिवारो से लगातार सम्पर्क बनाया जाए ताकि इनकी की परेशानियों का पता चल सके।
- किसी भी बड़े शहर में ऐसे भीख मांगने वाले जो भी व्यक्ति होते है या बच्चो होते हैं उनके लिए कोई न कोई कार्यक्रम जरूर हो ।
- सरकार हम बच्चों के माता.पिता को कुछ ऐसा छोटा मोटा कामकाज दिला दे जैसे पन्नी पैक करने वाला काम, कागज के लिफाफे बनाने वाला काम, घरों में बड़े- बुजुर्गों की सेवा करने का काम एघरेलू कामकाज एछोटी फैक्टरियों में रूई साफ करने का काम और कपड़ो की पैकिंग का काम दिला दे । ऐसा करने से हमारे माता पिता के पास अच्छा रोजगार होगा वह हमें भीख मांगने नहीं भेजेंगे और बच्चो को भीख मांगने से आजादी मिल जाएगी ।
- हमें यह मानना पड़ेगा कि भीख मांगने वाले बच्चो की समस्या है तभी हम उन बच्चो से सीधा समपर्क कर सकेंगे ।
- सरकार को चाहिए की कोई एक नम्बर जहां मजबूरी में भीख मांगने वाले बच्चे अपनी मजबूरी को बता सके। उदाहरण के लिए हर जगह यह पोस्टर लगवाए जाए कि यदि आप से कोई जबरदस्ती भीख मंगवा रहा है या अगर आप मजबूरी में भीख मांग रहे हैं तो इन नम्बरों पर फोन करें या इस नम्बर पर फोन करके हमें बताए। साथ ही साथ लोगो को जागरूक करने के लिए स्लोगन जैसे (भीख नहीं भविष्य दो) बनवाए जाए।
- स्कूल में पढ़ने वाले बच्चो के माध्यम से इस विषय पर जागरूकता फैलाई जाए ।
- ऐसे बच्चो के लिए खास स्कूल बनावाए जाए।
- बढ़ते कदम की राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्योति ने सड़क एवं कामकाजी बच्चो के समक्ष अपनी मन की बातो में कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है यह बताते हुए कि हमारे प्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत देश को स्वच्छ रखने के लिए स्वच्छता भारत अभियान की पहल की और इस पहल से हमारे देश के वासी भारत को स्वच्छ करने मे जुटे है मुझे यह देख बेहद खुशी है कि लोगो ने इसका पालन किया है और मुझे यह भी यकीन है कि अगर हमारे प्रीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपने मन की बातों में सडक एवं कामकाजी बच्चो के समक्ष बात करे और यह कहे कि भारत में भीख मांगने वाले बच्चो का पुर्नवास किया जाए तथा हमारे देश से (भीख) जैसा गंभीर विषय जड़ से हटा दिया जाए । ऐसा करने से हमारे देश के नागरिक भीख मांगने वाले बच्चो की मदद करने हेतू मजबूर होंगे और अपनी जिम्मेदारी समझेंगे।

संपादकीय

प्रिय साथियों,
नमस्कार !

हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं को प्रमुखता से सामने लाने वाले आपके चहेते अखबार 'बालकनामा' की पहुंच अब कामकाजी बच्चों के बारे में निर्णय करने वाले लोगों तक पहुंच रही है। देश-विदेश का मीडिया आपके काम की सराहना कर रहा है। अभी हाल ही में 'बालकनामा' के रिपोर्टरों को लोकसभा की अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने एक कार्यक्रम में सम्मानित किया है, सचमुच हमारे लिए यह गौरव की बात है। हमारा प्रयास होता है कि हम स्ट्रीट चिल्ड्रन की चिंताओं और समस्याओं को समाज के जिम्मेदार नागरिकों के सामने लाएं ताकि उसकी समस्याओं का समाधान हो सके। 'बालकनामा' स्ट्रीट चिल्ड्रन के संघर्ष और कष्टदायक जीवन को समाज के सामने लाने का माध्यम बन गया है। हम समाज के समर्थ सज्जनों से अपील करते हैं कि अभावग्रस्त स्ट्रीट चिल्ड्रन की बुनियादी समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ महसूस करें और समस्याओं के निदान के लिए यथासंभव अपना सहयोग दें। 'बालकनामा' के पन्नों पर बिखरी खबरें हम स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं की सच्ची गवाही देती हैं।

आशा करते हैं कि आपको इस बार का अंक पसंद आएगा आपकी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर आवश्यक भेजने का कष्ट करे।

संपादकीय टीम

मजबूरी ने बनाया किन्नर

बालकनामा ब्यूरो

बदरपुर बोर्डर की कुछ लड़कियां भूतकाल में भीख मांगने का काम करती थीं लेकिन भीख मांगने में कम पैसे मिलने की वजह से इन लड़कियों ने काफी मेहनत की। जैसे कि बाजार में भीख मांगना, शनिवार को घर-घर में जाकर और रेलगाड़ी आदि में। इतनी मेहनत करने के बाद भी उतना पैसा नहीं मिल पाता था, जिससे इन लड़कियों के परिवार का गुजारा हो सके। इन लड़कियों ने देखा कि रेलगाड़ी के अंदर कुछ लोग किन्नर बनकर भीख मांग रहे हैं और उन्हें लोग दस बीस रूपये देने के बजाए सौ-पचास रूपये दे रहे हैं, जो हम पूरे दिन कड़ी मेहनत करके भी नहीं कमा पाते हैं और दिनभर भीख मांगने पर भी सौ-पचास रूपये तक भी नहीं हो पाते थे। किन्नरों को तो लोग सौ-पचास रूपये ऐसे ही दे देते हैं। यह देखकर उसी समय इन लड़कियों ने निर्णय लिया कि अब से वे भी इसी तरह किन्नर बनकर भीख मांगेंगीं, तो इनकी ज्यादा कमाई हो पाएगी, और इनके घरों का खर्चा भी ठीक से चल सकेगा। उसके दूसरे ही दिन से इन सभी लड़कियों ने



किन्नर बनकर भीख मांगने का काम शुरू कर दिया।

वर्तमान में पता चला है कि जो लड़कियां किन्नर बनकर भीख मांग रही थीं, उन्हें उसका बहुत बुरा परिणाम भुगतना पड़ रहा था। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधिका ने बताया कि जब हम रेलगाड़ी में किन्नर बनकर भीख मांगने के लिए जाते हैं, तो लोग हमें अश्लील नजरों से देखते है और गंदी-गंदी बातें बोलते रहते है कि चल रही है, मेरे साथ ? अगर तू मेरे साथ चलेगी तो मैं सौ रूपये के बदले पांच सौ रूपये दूंगा। पर मेरे साथ चलना होगा। कभी-कभी तो लोग हमसे बात करते-करते ही हमारे गुप्त अंगो को भी टूने लगते हैं। राधिका ने बताया कि जब हमारे साथ यह सब हो रहा होता है, तो बहुत दुख होता है कि हम पैसे कमाने के लिए किन्नर बनकर आते हैं और लड़के सबके सामने हमारे साथ बदसलूकी करते हैं लेकिन किन्नरों के साथ तो वह ऐसा नहीं करते। वह सिर्फ हमारे साथ ही इस तरह से पेश आते हैं। हम लड़कियों के साथ लोग ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? हमारी मजबूरी का लोग गलत फायदा क्यों उठा रहे हैं ? 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि अगर हम लड़कियां कोठियों में भी काम करने के लिए जाती हैं, तो वहां भी हमारे साथ अश्लील तरीके से बातें की जाती हैं। क्या हम लड़कियों को इस समाज में जीने का कोई हक नही है ? अगर है तो इस तरह का व्यवहार क्यों ? हमारी मजबूरी है इसलिए हम लड़कियां किन्नर बनकर भीख मांगती हैं। इस मजबूरी की कीमत क्या हमें अपने जिस्म से चुकानी पड़ेगी ?

स्टेशनों पर असुरक्षित हैं कामकाजी बालिकाएं

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन एक विशेष गढ़ बनता जा रहा है सड़क एवं कामकाजी बच्चों का। ज्यादातर बच्चे अपने घरों से भागकर सबसे पहले स्टेशनों या सड़क के बस स्टॉप पर आ जाते हैं और अपना कामकाज वहीं रहकर शुरू कर देते हैं। इन बच्चों में लड़के और लड़कियों की संख्या लगभग सामान्य देखी गई है। पत्रकार जब ऐसी लड़कियों से स्टेशनों पर मिला और उनसे बातचीत की तथा यह जानने की कोशिश की कि वह स्टेशनों पर आकर अपना जीवन कैसे बिताती हैं तथा उन्हें वहां रहकर क्या-क्या समस्याएं झेलनी होती हैं ? पत्रकार से स्टेशन पर रहने वाली लड़कियों ने अपना दुख-दर्द बताया कि वे किन-किन मजबूरियों में स्टेशन पर आती हैं और आने के बाद वह स्टेशन पर सुरक्षित नहीं रह पाती हैं, क्योंकि स्टेशनों पर जो लड़के होते हैं, उनका बरताव स्टेशन पर रहने वाली लड़कियों के प्रति ठीक नहीं रहता है। मौका देखते ही वह उनके साथ अश्लील हरकतें करते हैं। चौंका देने वाली बात यह है कि आज तक ऐसी कोई भी लड़की नहीं है, जिसे इन लड़कों ने बख्शा हो। यह लड़के स्टेशन पर ही पूरे दिन कामकाज व नशा करते हैं और जो भी नई लडकी घर से भागी हुई नजर आती है, वह उस लड़की को अपने जाल में फंसाते हैं और उनके साथ अश्लील हरकत करने को कहते हैं तथा उनके साथ यौन शोषण करते हैं। इस बारे में और जानकारी देते हुए पत्रकार से 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सोनम ने बताया कि जब वह दो साल पहले घर से भागकर स्टेशन पर आ गई थी, तो उसकी मुलाकत सबसे पहले एक लडके से हुई। उस लड़के ने सोनम से शुरूआत में बहुत अच्टे से बात की तथा उसे अपने बारे में बताया कि वह भी उसकी तरह ही घर से भागकर स्टेशन पर आया है; क्योंकि उसके माता-पिता उसे बहुत मारते-पीटते थे। यह सब बात सुनने के बाद सोनम को उस लड़के पर विश्वास हुआ और उससे दोस्ती कर ली। उसे लगा कि वह दोस्त बने रहकर उसकी मदद करने में उसका साथ देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह लड़का सोनम को बहला-फुसला कर सफाई लाईन के पास ले गया, जिस जगह पर रेलगाड़ियों की सफाई की जाती है। उस जगह पर ले जाने के बाद उस लड़के ने सोनम को नशा करने को कहा, तो उसने नशा करने से मना कर दिया। उस वक्त तो उस लड़के ने सोनम से कुछ नहीं कहा, न ही उससे जबरदस्ती की; लेकिन जब सोनम रात को स्टेशन पर सो रही थी, तब वह लड़का उसके पास गया और उसका मुंह हाथ दबाकर उसके साथ अश्लील हरकत करने लगा। इसी तरह टेशनों पर रहने वाले लड़के; लड़कियों के साथ अश्लील हरकतें करते हैं और इन्हीं की वजह से कोई भी लड़की स्टेशनों पर सुरक्षित नहीं रह पाती है। उनके साथ आए दिन यौन शौषण किया जाता है, जिसकी लोगों को भनक तक नहीं लगती। यहां बहुत सारी ऐसी लड़कियां है, जो इस अत्याचार के चलते स्टेशनों पर ही गर्भवती हो जाती हैं और उन्हें सलाह देने वाला कोई नहीं होता है। हमारी जानकारी में अब तक लगभग बीस लड़कियां यौन-शौषण का शिकार हो चुकी हैं।

भीख नहीं भविष्य दो

पृष्ठ 1 का शेष



कर सकते है।

15 वर्षीय (परिवर्तित नाम किशन) अपनी मजबूरी बताते हुए कहां कि हमारे परिवार में यह रिती रिवाज सदियों से चला आ रहा है मेरे दादा दादी भी भीख मांगते थे और हमारे माता.पिता भी बच्चों से भीख ही मागवा रहे है वह हमें पढ़ाई.लिखाई करवाने के बजाय हमे भीख मांगने के लिए भेजते है। क्या इस परंपरा को बदला जा सकता है ? सरकार को चाहिए की एक ऐसा अनोखा कार्यक्रम की योजना व कल्पना करे जो सिर्फ ऐसे बेकार के पुराने रिजी रिवाजो का पालन करने वाले लोगो को समझाने का बीढा उठा सके। लोगों की सोच को बदलने का कार्य करे वह हमारे माता.पिता को यह एहसास दिलाए कि समय के अनुसार सब कुछ बदलता है और उन्हें यह समझाए कि वह अपने द्वारा बनाए पुरानी रिती रिजाव को का पालन करके अपने बच्चो का भविष्य केवल बर्बाद कर रहे हैं। ऐसा करने से भीख मांगने वाले बच्चो की संख्या कम हो सकेगी।

भीख मांगने वाले बच्चों के माता पिता का दर्द

● 25 वर्षीय श्रीकामनी देवीरू जी बिहार के बेतिया जिला की रहने वाली है ने बताया कि हमलोग बेजरोजगार है हम बिहार से दिल्ली आए हैं काम की तलास में लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि काम का कोई ठिकाना ही नही है । जिन ठेकेदारो ने हम लोगो को यह कहकर बुलाया था कि आप लोगो को दिल्ली में लेबर का काम दिलाऊंगा लेकिन जो ठेकेदार हमें बिहार से दिल्ली लेकर आया उसी ने हमें धोखा दे दिया और हमें दिल्ली छोड़कर भाग गया । ऐसे हालात में कुछ काम तो मिला नहीं बल्कि खाने के लाले पड़ गए इस वजह से हम और हमारे बच्चों ने भीख मांगना शुरू कर दिया । इसी तरह बहुत से परिवारों को बहला फुसलाकर काम के बहाने दिल्ली लाया जाता है और सड़को पर छोड़ दिया जाता है ऐसे में बच्चे भीख मांगने के काम करने लग जाते हैं। क्या सरकार इस तरह को लोगो की मदद कर सकती है उन्हें रोजगार दे सकती है ? जिससे हमारे बच्चो को भीख न मांगना पड़े।



● 26 वर्षीय कोमल देवी जीरू ने बताया कि हमारे पास कोई आडेंटी कार्ड नही है जिसकी बदौलत हम लोग कहीं काम की तलास कर सके। इसलिए हम अपने बच्चों को भीख मांगने के लिए भेजते है ।

● 32 वर्षीय परिवर्तित नाम रूपा जीरू ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं कानपुर के रहने वाली हूं वहां पर कुछ बदमासों ने मेरा घर तोड़ दिया इसलिए हम अपने बच्चों को दिल्ली लेकर आ गए और मैं खुद भी भीख मांगती हूं और अपने बच्चों से भी भीख मंगवाती हूं क्योंकि यह हमारी मजबूरी है अगर हमलोग भीख मांगने नही जाएंगे तो हमारा पेट कैसे पलेगा।

सौतेले पिता का बेटी पर बुरा साया



बालकनामा ब्यूरो

यह दर्दनाक खबर 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) खुशबू की है। खुशबू जब 12 साल की थी, तो इसके पिता रिक्शा चलाने का काम करते थे, मम्मी अपने घर में ही काम करती थी। बालिका उस समय अपने परिवार के साथ बहुत खुश थी अचानक कुछ महीने के बाद खुशबू के पिता के साथ दर्घटना हो गई, जिसकी वजह से उनकी जान चली गई। दो साल बहुत मुश्किल से गुजरे और जैसे ही खुशबू 15 साल की हुई, तो उसकी माता ने दूसरी शादी कर ली। उसके बाद तो मानो जैसे खुशबू पर मुसीबत ही आ गई; क्योंकि उसके सौतेले पिता उसके साथ गलत व्यवहार से पेश आने लगे थे। खुशबू ने बताया कि जब वह रात को अपने कमरे में सोई हुई रहती थी, तो उसके सौतेले पिता उसके साथ अश्लील हरकत करते थे। यह हादसा उसके साथ काफी दिनों तक चलता रहा, फिर उसने एक रोज हिम्मत जुटाकर अपनी मम्मी से अपने सौतेले पिता के बारे में शिकायत की। लेकिन उसकी मम्मी ने भी खुशबू की मदद नहीं की। उसकी मम्मी भी उसके सौतेले पिता का साथ दे रही थी। खुशबू ने बताया कि जब वह खाना खाने के लिए जाती थी, तो उसकी मम्मी खाने में कुछ डाल देती थी, जिससे खुशबू को गहरी नींद आ जाती थी और उसके सौतेले पिता उसके साथ घिनौनी हकरत करते थे। लेकिन खुशबू को दर्द का एहशास उस वक्त बिल्कुल नहीं होता था, पर जब उसे होश आता था, तो सर में दर्द होता था और पूरे शरीर में थकावट महसूस होती थी। देखते ही देखते कुछ महीनों के बाद उसे उल्टी और चक्कर आने लगे। तभी उसे किसी आन्टी से पता चला कि खुशबू गर्भवती हो गई है। जब खुशबू को यह पता चला, तो वह सदमें में चली गई; क्योंकि सबकुछ बताने के बावजूद उसकी मम्मी ने भी उसकी मदद नहीं की। उल्टे उसे दलदल में झौंक दिया। इसलिए खुशबू घर छोड़कर स्टेशन पर आ गई और वहीं अपनी जिंद्गी बिताने लगी। लेकिन दुख की बात यह है कि वह अपने घर से भागने के बाद भी सुरक्षित नहीं है; क्योंकि जब वह स्टेशन पर आई तो उसने जिन लोगों से अपने लिए मदद मांगी उन लोगों ने भी उसके साथ अश्लील हरकत करने की कोशिश की; फिर वह स्टेशन पर कुछ नशा करने वाली लड़कियों के साथ रहने लगी और उनसे अपनी समस्या के बारे में बताया कि वह गर्भवती है। ऐसे में वह क्या करे ? उन लड़कियों ने खुशबू को कुछ दवाईयां लाकर दीं। उसके बाद उसकी समस्या हल हो गई। खुशबू अब इन्हीं लड़कियों के बीच रहकर अपना पेट पाल रही है।



पानी की तलाश में बच्चे पी रहे हैं गंदा पानी

बालकनामा ब्यूरो

बाल्मीकी कैंम्प में रहने वाले बच्चों की जनसंख्या सात सौ से आठ सौ तक है लेकिन दुख की बात यह है कि इन झुग्गियों में लगभग पांच-छह महीनों से पीने का पानी नहीं आ रहा है। इसलिए इन बच्चों को पांच किलोमीटर तक पैदल जाना पड़ता है। इन बच्चों की माताएं दूसरों के घरो में काम करने के लिए जाती हैं और इनके पिता लेबर का काम करने के लिए जाते हैं। लेकिन पीने का पानी भरने की जिम्मेदारी अपने बच्चों को देकर जाते हैं। 14 वर्षीय बालिका ने बताया कि भईया हम बच्चों को पीने का पानी भरने में बहुत तकलीफ होती है; क्योंकि हमारे आस-पास कहीं भी पानी नहीं मिलता है। इसी कारण हम बच्चे फैक्ट्रियों में भी पीने का पानी भरने जाते है, तो रास्ते में गाड़ियों से भी दुर्घटना होने का डर रहता है और फैक्ट्रियों में काम करने वाले लोग गलत नजर से देखते हैं। गंदे-गंदे शब्द बोलते हैं और पीने का पानी भी भरने नही देते हैं। डांटकर भगा देते हैं। इन परेशानियों से हम बच्चे रोज गुजरते हैं। लेकिन इस समस्या का हल हमारे मोहल्ले के प्रधान जी भी नहीं निकालते हैं। जब हम उन्हें समस्या बताते हैं, तो उनका कहना होता है कि पीने का पानी जल्द से जल्द लाया जायेगा। एक दिन हम बच्चे पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहे थे। तभी अचानक रास्ते में गंदा नाला दिखाई दिया। उस गंदे नाले के अंदर से पीने के पानी का एक पाईप भी निकला हुआ था और उस पाईप में से थोड़ा पानी भी निकल रहा था। तभी हम बच्चों ने उस गंदे नाले में हाथ डालकर उस पाईप को हल्का खींचकर उपर किया। अभी हम बच्चे उसी पाईप में से पीने का पानी भरते हैं। पानी तो हमें किसी तरह मिल जाता है लेकिन कभी-कभी पानी भरते वक्त गंदे नाले का पानी पीने के पानी में मिक्स हो जाता है, हम बच्चो को मजबूरी में वही गंदा पानी भरना पड़ता है और उसी को पीना पड़ता है। उसी पानी से घर में खाना बनाया जाता है और नहाने-धोने का काम होता है। बच्चे चाहते हैं कि हमारी झुग्गियों में नल लगा दिया जाए। यदि नल नहीं लगवा पा रहे हैं तो जैसे दिल्ली सरकार लोगों के लिए दिल्ली जल बोर्ड की ओर से पीने का पानी टैंकरों से भेजती है, वैसे ही हमारी झुग्गियों में भी जल बोर्ड का पानी भेजा जाए, तो बच्चों को पानी के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। हमें भी स्वच्छ पानी मिल सकेगा।

घर में भी सुरक्षित नहीं हैं बेटियां

बालकनामा ब्यूरो

वेस्ट दिल्ली में रहने वाली 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल जब पत्रकार से मिली, तो उसने अपनी समस्या उनके सामने रखी। उसने बताया कि वह कैसे अपने परिवार के साथ रह रही है। दो साल पहले वह चौथी कक्षा में पढ़ाई करती थी लेकिन उसके पापा का देहांत होने के बाद उसकी पढ़ाई टूट गई; क्योंकि उसे अपने घर का कामकाज करना पड़ता था और उसकी मम्मी को घर का खर्चा चलाने के लिए कोठियों में काम करने जाना पड़ता था। कुछ महीनों तक ऐसे ही चलता रहा लेकिन उसके बाद काजल की मम्मी ने किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह कर लिया। विवाह के बाद उसके सौतेले पापा अच्टे से काम करने के लिए जाते थे लेकिन अब काम पर नहीं जाते हैं। घर पर ही बैठे रहते हैं। अपने दोस्तों के साथ तांस खेलते रहते हैं। साथ ही दोस्तों के साथ दिन भर शराब भी पीते रहते हैं। वह जब भी घर आते हैं तो गाली-गलौज करते हैं। इस कारण काजल की मम्मी को फिर से काम करना पड़ा। उसकी मम्मी रोज कबाड़ा बीनने जाती है, जिससे दो पैसे घर में आते हैं। दुर्भाग्य की बात यह थी कि काजल के सौतेले पिता जब नशे में रहते थे, तो उनका व्यवहार अपनी सौतेली बेटी के प्रति ठीक नहीं रहता था; क्योंकि काजल के सौतेले पिता उसे गलत नजरों से देखते थे। कभी-कभी तो शरीर के गुप्त अंगो पर हाथ भी लगाते थे। इसी वजह से काजल अपने सौतेले पापा से हर वक्त डरकर रहती थी। काजल ने जब इस बारे में अपनी मम्मी को बताया, तो उसकी मम्मी ने उसका यकीन नहीं किया। तब काजल ने अपनी मम्मी को विश्वास दिलाने के लिए एक रात जब उसके सौतेले पिता अश्लील हरकत कर रहे थे तभी काजल ने रात को ही उठकर अपनी मम्मी को बताया कि मम्मी देखो पापा क्या हरकत कर रहे है। जब काजल की मम्मी ने अपनी आंखों से उसके पिता को यह अश्लील हरकत करते देखा, तब जाके विश्वास किया और उसकी मम्मी ने काजल के सौतेले पिता को उसी रात घर से निकाल दिया। अब काजल की मम्मी उसे अकेला नहीं छोड़ती। यहां तक कि जब वह काम पर जाती है, तो भी उसे अपने साथ लेकर जाती है।



रात भर कबाड़ा बीनने के बाद भी भूखे पेट सोते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर गुड्डी व रिपोर्टर विजय कुमार

लखनऊश्रम बिहार की झुग्गी झोपड़ी में रहने वाली लगभग 30 से 40 लड़कियां हैं, जिनकी उम्र 10 से 15 साल तक है। यह लड़कियां अपनी मम्मी के साथ रात 11 बजे से लेकर सुबह चार बजे तक कबाड़ा बीनने का काम करती हैं। 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सोना ने अपनी समस्या बताई कि अगर हम दिन में कबाड़ा बीनने जाते हैं, तो हमें बहुत लज्जा आती है और कुछ लड़के हमारे साथ बत्तमीजी करते हैं। डर के मारे हम अपनी समस्या किसी को नहीं बताते हैं और ना ही हम किसी से मदद लेते हैं। और चार बाग रेलवे स्टेशन पर दिन में रेलगाड़ियां भी बहुत कम आती हैं। सोना ने बताया कि अगर हम दिन में कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो कोई फायदा नहीं होता है और सारा दिन बेकार चला जाता है; क्योंकि लखनऊके चार बाग रेलवे स्टेशन पर ज्यादातर गाड़ी रात को ही आती हैं, तब जाके रात में ज्यादा बोतलें मिलती हैं। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) प्रियंका ने बताया कि कबाड़ा तो रात को ज्यादा मिल जाता है लेकिन जब हम लड़कियां रात को कबाड़ा बीनने के लिए स्टेशन पर जाती हैं, तो नींद पूरी नहीं हो पाती है, जिसके कारण स्टेशन पर कबाड़ा बीनते वक्त बहुत तेज नींद आती है। इस वजह से इनका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। इसके अलावा इनके आस-पास जो बच्चे रहते है, वह भी इसी प्रकार अस्वस्थ होते जा रहे हैं; क्योंकि जब रात को कबाड़ा बीनकर ये घर लौटते हैं, तो कभी-कभी इन्हें एक वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता और इन्हें भूखे पेट ही सोना पड़ता है; जिसकी वजह से हम बच्चे दिन पर दिन कमजोर होते जा रहे है। उनका शरीर सूखता जा रहा है, देखने में ऐसा महसूस होता है; जैसे वह कुपोषण जैसी बीमारी का शिकार हो रहे हैं, या उसकी चपेट में आ गए हैं। बालकनामा के पत्रकार को यह पता नहीं चल पाया है कि वाकई इन बच्चों को कोई बीमारी है भी या नहीं।

पटरियों पर शौच करती हुई लड़कियों की बना रहे हैं अश्लील फिल्म

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर आगरा के पृथ्वीनाथ आजम पाड़ा की है। वहां लगभग तीन सौ से चार सौ तक झुग्गी-झोपड़ी हैं लेकिन दुःख की बात यह है कि इन झुग्गियों में एक भी शौचालय न होने के कारण बच्चे व उनके माता-पिता मजबूरी में रेलगाड़ी की पटरियों पर शौच करने के लिए जाते हैं। इसकी वजह से इन बच्चों को आये-दिन दुर्घटना होने का डर लगा रहता है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सपना ने बताया कि हम लड़कियां पटरी पर शौच करने के लिए जातीं हैं, तो कुछ लड़के परेशान करते हैं। अश्लील बातें भी बोलते है। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रानी ने बताया कि जिस पटरी के पास हम लड़कियां शौच करने के लिए जाती हैं, वहां कुछ बड़े लड़के दीवार के पीटे टुपे रहते है और वह हम लड़कियों को देखकर अपने शरीर के विशेष अंगो (गुप्तांगों) पर हाथ लगाकर गलत हरकत करते रहते हैं। यह बात हमने अपने माता-पिता को भी बताई पर हमारे माता-पिता ने हम से बोला कि तुम्हें उससे क्या मतलब है। वह कुछ भी करें। बस अपना खयाल रखा करो। लेकिन हम लड़कियां जब भी शौच करने के लिए जाती हैं, तो बहुत डर लगता है कि कहीं हमारे साथ कोई लड़का गलत हरकत ना कर दे। एक दिन शाम को हम चार लड़कियां शौच कर रहीं थीं, तभी एक लड़का दीवार के पीटे से फिल्म बना रहा था। हमने उस लड़के से बोला कि आप फिल्म क्यों बना रहे हो, तो उसने गलत तरीके से बोला कि जान, देखने में बहुत मजा आता है। और हमारी ओर बढ़ने लगा तभी हम लड़कियां वहां से भाग निकलीं। दूसरी परेशानी यह है कि यहां पर रेलगाड़ी भी तेज रफ्तार से निकलती है। उससे भी आये-दिन दुर्घटना होने का डर रहता है। दो साल पहले एक बच्चे की यहीं पर रेलगाड़ी से टकरा कर दुर्घटना हो गयी थी, जिसके कारण उस बच्चे की मृत्यु हो गयी। यहां के सभी लोग चाहते हैं कि इस परेशानी से जल्द से जल्द टुटकारा मिले; क्योंकि हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहे हैं और गरीब लोगों के लिए शौचालय भी बनवा रहे हैं, ताकि हमारा देश स्वच्छ हो सके। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारी झुग्गियों में भी शौचालय बनें, ताकि हम लड़कियों को इस प्रकार की परेशानियों से न गुजराना पड़े।

स्कूल की छुट्टियों में भी नहीं मिलता घूमने का अवसर

बातूनी रिपोर्टर मुस्कान व रिपोर्टर शम्भू

आप सभी जानते हैं कि जून के महीने में सभी सरकारी स्कूलों की टुट्टियां पड़ जाती हैं और इन छुट्टियों में बच्चे अपने नाना-नानी के घर तथा दूर-दूर मौज करने के लिए जाते हैं। खूब मस्ती करने के बाद वह अपने स्कूल से मिला होमवर्क भी पूरा करते हैं। आइए जानते हैं कि क्या वास्तव में इन स्कूल की टुट्टियों में बच्चे घूमने जाते हैं, या नहीं ? बालकनामा के पत्रकारों ने इसका जायजा लेते हुए 5 ऐसे बच्चों से मुलाकात कर बातचीत की, जो बिहार के रहने वाले हैं और स्कूल की टुट्टियों में दिल्ली आए हैं। लेकिन वह दिल्ली क्यों आए हैं ? जब इन बच्चों से बात की, तो 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधा ने बताया कि वह बिहार के एक जिला बेतिया की रहने वाली है। वह बेतिया स्कूल में 5वीं कक्षा की छात्रा है। स्कूल की छुट्टियां पड़ जाने की वजह से उसके माता-पिता उसे दिल्ली लेकर आ गए हैं। लेकिन वह दिल्ली में घूमने के लिए नहीं आए हैं; बल्कि कुछ काम-काज करने के लिए आए हैं; ताकि वह दिल्ली से कुछ पैसे कमाकर अपने गांव ले जा सकें। वह भी अपने माता-पिता के साथ काम पर लग गई है। राधा दिल्ली में स्कूल की टुट्टियों में पानी बेचने का काम कर रही है। इसी प्रकार 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कमला ने अपने बारे में बताया कि मैंने सोचा था कि इस बार स्कूल की टुट्टियों में हम बहुत मजे करेंगे और अलग-अलग जगहों पर घूमने के लिए भी जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसके माता-पिता ने कहा कि इन 45 दिनों की टुट्टियों में क्यों न वह अपने बच्चों को दिल्ली व मुम्बई जैसी भीड़-भाड़ वाले शहरों में ले जाएं; ताकि वहां जाकर खीरा और भुट्टे की दुकान लगा कर कुछ पैसा कमा सकें। कमला के माता-पिता दिल्ली में खीरे बेचने का काम कर रहे है और कमला को उसके माता-पिता ने पानी बेचने के काम पर लगवा दिया है।



वह दिल्ली के मेट्रो स्टेशनों और पार्कों में जा-जाकर पानी बेचने का काम कर रही है। कमला ने बताया कि स्कूलों की टुट्टियां पड़ने के बाद हर बार ज्यादातर बच्चों के माता-पिता उन्हें दिल्ली लेकर आते हैं और अपने बच्चों को छोटे-मोटे काम पर लगा देते हैं। छोटे बच्चों को पानी और खीरे बेचने का काम दिल्ली में आसानी से मिल जाता है। इसलिए छोटे बच्चे ज्यादातर पानी बेचने का काम करते हैं और पार्क, मेट्रो स्टेशन, बस अड्डा आदि जगहों पर पानी बेचने के लिए जाते है। इन बच्चों को पानी बेचने में ज्यादा दिक्कत पार्कों में होती है; क्योंकि पार्कों में युगल लोग बैठे रहते हैं। बच्चे उन्हें पानी लेने के लिए बोलते हैं, तो वह गुस्से से गाली देने लगते है। उनका व्यवहार बच्चों के प्रति बिल्कुल ठीक नहीं रहता है। जब यह बच्चे पूरे दिन काम करने के बाद रात को घर लौटते हैं, तो घर पर जाकर अपना स्कूल से मिला होमवर्क भी करते हैं। अक्सर स्कूल की छुट्टियों में बच्चे घूमने-फिरने जाते हैं और खूब मस्ती करते हैं। अलग-अलग कार्यक्रमों का लुत्फ उठाते हैं लेकिन यह बच्चे इन टुट्टियों में अपने माता-पिता के साथ दिल्ली तो आए लेकिन घूमने के लिए नहीं; बल्कि दिल्ली में आकर इनके माता-पिता ने इन्हें पानी और खीरे बेचने के काम पर लगवा दिया और यह बच्चे पानी और खीरे बेचकर दो पैसे कमाने में जुट गए।



आग की आंच में तप रहा बचपन

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली के कई स्थानों पर लगभग 14 से 16 साल के बच्चे भुट्टा भूनने का काम करते हैं लेकिन इन बच्चों को भुट्टा भूनते समय क्या-क्या समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह जानने के लिए पत्रकार ने इन भुट्टा भूनने वाले बच्चों से जाकर बातचीत की। बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि उनके परिवार बहुत गरीब हैं। उनके माता-पिता भी काम करते है लेकिन फिर भी हमारा गुजारा नहीं हो पाता है; क्योंकि जो उनके माता-पिता काम करते हैं, उसमें उन्हें बहुत कम आमदनी मिलती है। इसलिए बच्चे भुट्टा भूनने का काम करते हैं। अपने परिवार के सदस्यों के साथ भुट्टा खरीदने के लिए मंडी भी जाते हैं। और शाम चार बजे से लेकर रात को दस बजे तक भुट्टा भूनने और बेचने का काम करते है। 15 वर्षीय कैलाश ने बताया कि भइया जब हम भुट्टा भूनते हैं, तो परेशानी होती है। कोयले की आंच हमारे हाथ पर पड़ती है, उसकी तेज तपन से कभी-कभी हाथ भी जल जाते है। इसके बावजूद कोयले की आंच बढ़ाने के लिए हाथों से भुट्टा भूनते समय पंखा चलाना पड़ता है; ताकि तेज आंच पर भुट्टा अच्छी तरह सिक जाए। जब इन बच्चों के आराम का समय होता है, उस समय इन्हें दर्द के मारे चैन नहीं मिलता। हाथ पैरों में बहुत दर्द और चुभन महसूस होती है। कैलाश ने अपना दर्द बताते हुए कहा कि अब तो मई के महीने में बहुत गर्मी पड़ रही है और इस गर्मी में हम आंच के पास रहते हैं। जब भुट्टा भूनते है तब पसीने से हम तरबतर हो जाते हैं। इस कारण हमारे शरीर में दाने भी हो जाते हैं, जिनमें बहुत खुजली व जलन होती है।

बच्चों ने बताई स्कूल की दशा

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर आगरा के मारवाड़ी इंद्रानगर की है जहां सरकारी स्कूलों में बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। यह बात हम सभी जानते हैं कि सरकारी स्कूल हर एक धर्म के बच्चे के लिए मान्य हैं। इसके बावजूद आगरा के सरकारी स्कूल में बच्चों को उनकी नीची जाति का अनुभव कराया जाता है। इस स्कूल के अध्यापक बच्चों के साथ जात-पांत का भेदभाव करते है। बहुत गंभीर बात है कि अगर स्कूल के अध्यापक ही बच्चों के साथ भेद-भाव करेंगे, तो हम बच्चों को और उनके माता-पिता को क्या सही शिक्षा दे पाएंगे ? कुछ छात्रों ने बताया कि जो बच्चे ऊंची जाति के होते हैं, उन बच्चों से तो अध्यापक बहुत स्नेह से बात करते हैं, दूसरी ओर नीची जाति के बच्चों से अध्यापक ठीक से बात भी नहीं करते हैं और उनसे काम करवाते हैं। ऐसा ही व्यवहार देखा स्कूल की कर्मचारी का भी; जो बच्चों के लिए खाना बनाती है, वह भी इन बच्चों के साथ भेद-भाव करती है; जैसे ऊंची जाति वाले बच्चों को स्कूल की प्लेट में ही खाना देती है और नीची जाति वाले बच्चों को स्कूल की प्लेट में खाना नहीं देती; बल्कि उनसे घर से प्लेट लाने के लिए कहती है और उनकी प्लेट में ही उन्हें खाना खाने के लिए देती है और वह ऊंची जाति वाले बच्चों के झूठे बर्तन भी उन से ही धुलवाती है। इस वजह से बच्चे पढ़ाई नहीं करते हैं। बच्चों के मन में यह डर बैठा हुआ है कि अगर



वह काम नहीं करेंगे, तो हमारी स्कूल की अध्यापिका हम बच्चों को स्कूल से बाहर निकाल देगी और हमें कक्षा में नही बैठने देगी। इस डर की वजह से कोई भी बच्चा इस बारे में किसी से भी शिकायत नहीं करता। यह देखकर ऊंची जाति वाले बच्चे हम बच्चों का मजाक उड़ाते हैं और हमें परेशान करते हैं। हम बच्चों से अपना काम करवाते हैं। अध्यापिका बच्चों से स्कूल में झाड़ू लगवाती है। इसके अलावा स्कूली समस्याएं कुछ इस प्रकार हैं, जैसे कक्षाओं में पंखे व लाइट बहुत कम चलती हैं और पीने के पानी की सुविधा भी स्कूल में मौजूद नहीं है। जब बच्चों को प्यास लगती है, तो बच्चों को स्कूल से बहुत दूर जाकर पीने के लिए पानी भरना पड़ता है। बच्चे जहां पानी भरने जाते हैं, वहां बंदरों का समूह भी होता है। इन बंदरों के काटने से कई बार बच्चे जख्मी भी हुए हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

भीख मांगने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर समीर, रिपोर्टर शम्भू

जिन बच्चों को पहले गुब्बारे व खिलौने बेचते हुए देखते थे, वही बच्चे वर्तमान में भीख मांग रहे हैं। इस विषय को लेकर पत्रकार ने भीख मांगने वाले बच्चों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान इन बच्चों से सवाल जबाव किए गए कि आप बच्चे भीख क्यों मांग रहे हो? 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सपना ने बताया कि हम बच्चे बाजार में गुब्बारे बेचते थे लेकिन जून के महीने में बहुत तेज धूप पड़ रही है और इस तेज धूप में हमारे बहुत गुब्बारे फूट जाते थे। जिससे हमारा बहुत नुकसान होता था। इसलिए हमारे माता-पिता ने निर्णय लिया कि अब हम गुब्बारे बेचने का काम नही करेंगे; क्योंकि गुब्बारे फूटने की वजह से नुकसान तो हो ही रहा था और कुछ कमाई भी नहीं होती थी। तो हमारे माता-पिता ने हमें भीख मांगकर पैसे कमाने को कहा, इसलिए हमने गुब्बारे बेचने का काम छोड़कर भीख मांगना शुरू कर दिया है। हमारे माता-पिता भी हमारी तरह भीख मांगते है। जब से हमने भीख मांगना शुरू किया है, तब से हमारी ज्यादा कमाई होने लगी है। हम सुबह आठ बजे से लेकर रात को दस बजे तक भीख मांगते है। छोटे-छोटे भाई बहन बाजार, बसों और रेड लाईटों पर भीख मांगने के लिए जाते हैं और हमारे माता-पिता केवल शाम को मस्जिद और मंदिरों पर भीख मांगने जाते है। बच्चे तो पूरे दिन मांगने का काम करते हैं लेकिन उनके माता-पिता एक दो घंटे ही मांगने के लिए जाते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रेखा ने बताया कि हम पूरे दिन कड़ी मेहनत करके लोगों से पैसे मांगकर लाते हैं। उसके बाद भी हमारे माता-पिता खुशी से पैसे नहीं लेते है। वह अपने बच्चों से कहते हैं और पैसे मांगकर लाओ। पैसों के लालच में बच्चों के माता-पिता गुस्से से बात करते है और जब भी बात करते हैं, सिर्फ पैसे कमाने के लिए ही बोलते है।





आज भी होते हैं बाल विवाह

बालकनामा ब्यूरो

14 साल से 17 साल तक के बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता शादी का किस्सा लेकर हम बच्चों पर दबाव डाल रहे है। वे हमारा स्कूल में से नाम भी कटवाने के लिए तैयार हो गए हैं। हमारे माता-पिता बोलते हैं कि तुम लोग बड़े हो रहे हो अब तुम लोगों को घर की जिम्मेदारी समझनी चाहिए। आखिर हम लोग तुम्हारे साथ कब तक रहेंगे। इस वजह को लेकर हम बच्चे बहुत चिंतित हो रहे हैं कि अभी हम बच्चों के खेलने-कूदने की उम्र में हमारे माता-पिता शादी करने के लिए तैयार हो गए हैं और हम छोटी उम्र के बच्चों को अलग-अलग शहरो में काम करने के लिए भेज रहे हैं। अभी तक लगभग 5 बच्चों को दूसरे शहरों में काम की तलाश में भेज दिया है पर उन बच्चों का फोन आया, तो उन्होंने बताया कि हम बच्चों को काम ढूंढना बहुत मुश्किल हो रहा है; क्योंकि हम बच्चे बहुत छोटे हैं। इसलिए कोई भी दुकानदार व कंम्पनी वाले बच्चों को काम पर नहीं रख रहे है। बच्चे अपने माता-पिता के दबाव की वजह से आर्ट एंड ग्राफ के कार्य में शामिल हो रहे हैं। कुछ बच्चों ने बताया कि हम बच्चों को कोई भी जल्दी काम पर नहीं रखता है। इसलिए हम बच्चे कागज-पेपर और कुछ अखबार से फूल गुलदस्ते बनाते हैं और उसे ही बेचकर जो भी पैसे होते है। वह अपने माता-पिता को देते हैं। 16 वर्षीय अक्सर ने बताया कि मैंने अपनी मम्मी को समझाया कि मैं तो अभी बहुत छोटा हूं। आप मेरी शादी क्यों कर रहे हो ? मम्मी ने बताया कि घर की देख-रेख करने के लिए कोई नहीं है, इसलिए तुम्हारी शादी कर रही हूं; ताकि शादी होने के बाद तुम और तुम्हारी पत्नी घर की जिम्मेदारी उठाओ और हम लोगों का ख्याल भी रखो। बच्चे ने अपनी मम्मी को समझाते हुए कहा कि मम्मी अगर आप मेरी छोटी उम्र में शादी कर दोगी, तो हम दोनों की जिंद्गी खराब हो जाएगी और अभी तो हम बच्चों की उम्र पढ़ाई-लिखाई करने की है, लेकिन इन बच्चों की पुकार कोई नहीं सुन रहा है और छोटी उम्र में शादी और काम ही काम दिख रहा है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को पार्क में क्यों नहीं खेलने देते अच्छे घरों के बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने पश्चिमी दिल्ली शकूरबस्ती में विजिट किया तो विजिट के दौरान पता चला कि शकूरबस्ती में एक बहुत अच्छा पार्क है। लेकिन उस पार्क में सड़क एवं कामकाजी बच्चे खेलने के लिए जाते हैं, तो बड़े घर के बच्चे उन्हें मारकर भगा देते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि वह बड़े घर के बच्चे आप सभी बच्चों से इस प्रकार का भेद-भाव क्यों करते हैं ? 15 वर्षीय गोलू ने बताया कि भइया वह हम बच्चों के साथ भेद-भाव इसलिए करते हैं, क्योंकि हम बच्चों के कपड़े साफ सुथरे नहीं होते है। हमें देखते ही वह पार्क का मेन गेट बंद कर देते हैं, वह बोलते हैं कि तुम बच्चे बहुत गरीब हो अगर हम लोग तुम्हारे साथ खेलेंगे तो हमारे माता-पिता की क्या इज्जत रह जाएगी; और डांटकर भगा देते हैं। हम बच्चों को उस पार्क में जाने का बहुत मन करता है; क्योंकि उस पार्क में हर चीज की सुविधा है। उस पार्क में एक तरफ झूला व दूसरी तरफ हरी-भरी घास है। उस पार्क को देखकर हम बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। 16 वर्षीय कमला ने बताया कि पहले हम बच्चे किसी दूसरी जगह पर रहते थे तो वहां पर इस तरह का कोई पार्क नही था। इसलिए हम बच्चों को खेलने में बहुत परेशानी होती थी। हमारे माता-पिता ने उस जगह से कमरा खाली कर दिया है और शकूरबस्ती में नया कमरा लिया है; ताकि हम बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी सकें। 17 वर्षीय राजा ने बताया कि हमारे माता-पिता बहुत मुश्किल से दो पैसे कमाते हैं, तभी हमारा गुजारा हो पाता है। अगर हम बच्चे इसी तरह लगातार घर बदलते रहेंगे तो बच्चे अपनी पढ़ाई कैसे पूरी करेंगे ? इसलिए बच्चे शकूरबस्ती में ही रहते हैं। रोज शाम को इस पार्क में खेलने के लिए जाते थे लेकिन कुछ दिनों से यह बड़े घर के बच्चे हम बच्चों को उस पार्क में खेलने नहीं देते हैं। इन बच्चों को देखकर हम बच्चों के मन में लालसा आती है कि इनकी तरह काश्खेल हम भी उस पार्क में खेल पाते। लेकिन हमें उस पार्क को देखकर अपना मन बहलाना पड़ता है। इसलिए बच्चे चोरी-टुपे पार्क की दीवार के उपर चढ़कर पार्क में जाते हैं। लेकिन एक दिन हमें दीवार पार करते हुए उन लोगों ने देख लिया, उस दिन के बाद से उन बच्चों ने अपने माता-पिता से बोलकर कांटे वाली तार से पूरे पार्क का घेरा लगवा दिया है, ताकि हम बच्चे उस पार्क में नहीं जा सकें। पर हम बच्चे अभी भी उम्मीद लगाए बैठे हैं कि एक दिन जरूर हम बच्चों को उस पार्क में खेलने का मौका मिलेगा।

पुल के नीचे रहने वाले बच्चों में भय

बालकनामा ब्यूरो



दक्षिणी दिल्ली में एक पुल के नीचे लगभग तीन सौ झुग्गी-झोपड़ी हैं और रेलगाड़ी की पटरियां इन झुग्गियों से होकर निकलती हैं। 15 वर्षीय शालू ने बताया कि भइया यहां पर आए दिन दुर्घटना होती रहती है; क्योंकि बहुत सारे बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों को छोड़कर काम पर चले जाते हैं और फिर बच्चे पूरे दिन इधर से उधर खेलते रहते हैं। ज्यादातर बच्चे रेल की पटरी पर ही खेलते हैं। इस वजह से बच्चों के माता-पिता हमेशा भयभीत रहते हैं कि हमारे बच्चे अकेले पुल के नीचे रहते हैं। बच्चों के साथ रेल से कोई दुर्घटना न हो जाए; क्योंकि पुल से रेलगाड़ी काफी तेज रफ्तार से होकर निकलती है और कभी-कभी तो हॉर्न भी नहीं देती है। शायद यही कारण है कि यहां पुल के नीचे आए दिन हादसे होते रहते हैं। अभी हाल ही में एक व्यक्ति की रेलगाड़ी से दुर्घटना हो गई थी। यह देखकर बच्चों के अंदर बहुत डर समा गया है। जब बच्चे पटरियों पर दौड़ती रेल को देखते हैं तो बच्चो को अकेले रहने में या रात को पुल के नीचे सोते समय उन्हें घबराहट होती है। डर के मारे बच्चे रात को शौच करने के लिए भी बाहर नहीं निकलते हैं। पुल के नीचे रहने वाले बच्चे इन सभी समस्याओं से गुजर रहे हैं। बच्चों ने कहा कि हम अपनी पीड़ा किसी से भी नहीं कह सकते; क्योंकि हमें डर है कि अगर हमने अपना किसी के सामने मुंह खोला तो बच्चों के साथ-साथ पुल के नीचे रह-रहे सभी लोगों को भगा दिया जाएगा और अगर यहां से हमें भगा दिया गया, तो हम कहां जाएंगे; ऐसी दशा में, जबकि हमें दो वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से नसीब होती है। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि सरकार हम जैसे बच्चों के लिए सुरक्षित जगह पर एक रैन बसेरा बनवा दे ताकि हम बच्चे उस रैन बसेरे में सुरक्षित रह सकें, और रेल की पटरी पर हो रही दुर्घटना के भय से बचे रहें।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने बताई अपनी दशा

बालकनामा ब्यूरो



कड़कती धूप में स्टेशन पर रहने वाले बच्चे किस प्रकार अपना जीवन गुजार रहे है, इसकी छानबीन करने के लिए पत्रकार स्टेशन पहुंचा और मुलाकात की कुछ ऐसे बच्चों से जो हर वक्त नशे में लिप्त रहते हैं। बच्चों से पत्रकार ने कुछ सवाल-जबाव किए कि आजकल कड़ी गर्मी पड़ रही है। आप बच्चे यह नशा क्यों करते हो ? इतनी गर्मी में नशा करने से आपको कोई हानि भी पहुंच सकती है ? 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि हम बच्चे जो नशा कर रहे हैं, वह बहुत खतरनाक है। इस नशे के डिब्बे पर भी यह लिखा है कि इसे बच्चों से दूर रखना चाहिए; क्योंकि यह नशा इतना खतरनाक है कि अगर इस पर माचिस जलाएं तो फौरन आग लग जाती है। इस बार तो इतनी ज्यादा गर्मी पड़ रही है, ऐसे में इसका नशा करना बहुत खतरनाक है। पत्रकार; आप बच्चे जब इतना कुछ जानते ही हो फिर नशा क्यों करते हो ? 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सलमान ने बताया कि हम बच्चों ने यह निर्णय लिया था कि हम गर्मी में नशा नहीं करेंगे; लेकिन स्टेशन पर बच्चे समूह बनाकर रहते है। जो बच्चों के समूह का लीडर होता है, वही बच्चों को नशा करने के लिए बोलता है। अगर बच्चे नशा छोड़ने की बात करते हैं, तो समूह का लीडर उस बच्चे को समूह से निकाल देता है। इसलिए हम बच्चे नशा नहीं छोड़ पा रहे हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा- कि आप समूह से अलग क्यों नहीं रह सकते हो ? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सागर ने बताया कि अगर हम बच्चे अपने समूह में नहीं रहेंगे, तो दूसरे समूह के बच्चे हमें स्टेशन पर नहीं रहने देंगे; अथवा जो भी रेलगाड़ी आएगी उसमें हमें कबाड़ा भी नहीं बीनने देंगे। बच्चों ने बताया कि वे इस नशे की समस्या से जूझ रहे हैं और अपना पेट पालने के चक्कर में उन्हें नशा करना पड़ता है। स्टेशन पर रहने के लिए अपने समूह के लीडर की हर एक बात माननी पड़ती है, फिर चाहे उसमें हमारा भला हो या नुकसान। नशा करने की वजह से हमारा शरीर कमजोर हो रहा है। यह जानते हुए भी हमें नषा करना पड़ता है। लेकिन अगर स्टेशन से लीडर ने भगा दिया तो हर दिन भूखे पेट मरना पड़ेगा और अब तो बच्चे नशे में बुरी तरह फंस चुके हैं। एक बार को अगर हमें खाना नहीं मिलेगा तो उससे हमें फर्क नहीं पड़ेगा; लेकिन अगर हमें एक दिन नशा न मिले तो हमारी जैसे शरीर से जान ही निकल जाएगी; ऐसा लगता है। इसलिए, हमारे लिए जितना जरूरी पेट पालना हो गया है, उतना ही जरूरी नशा करना भी हो गया है। इस कड़कती गर्मी में स्टेशन पर रहने वाले बच्चे ज्यादा बीमार हो रहे हैं।

घटना से ग्रस्त होकर बच्चे की हुई मौत

बालकनामा ब्यूरो

पश्चिमी दिल्ली में पत्रकार ने एक ऐसे स्थान पर विजिट किया जहां लगभग 1700 कच्ची झुग्गी-झोपड़ियां बनी हुई है। दुःख की बात यह है कि इन झुग्गियों में किसी प्रकार की सुविधा नहीं है। इन बच्चों के माता-पिता ने तिरपाल डालकर अपना घर बना रखा है। वह अपने पेट के गुजारे के लिए मजदूरी करते हैं। रिक्शा चलाकर दो पैसे कमाते हैं और अपने बच्चों को घर की देखभाल करने के लिए घर पर ही छोड़ जाते हैं। जब पुलिस वाले उनके इलाके में चक्कर लगाने के लिए जाते हैं, तो वह बच्चों के बने घर की तोड़-फोड़ कर देते हैं। इसी तरह पुलिस वाले आए दिन बच्चों को परेशान करते हैं। उनके तिरपाल चाकू और ब्लेड से काटकर चले जाते हैं। जब बच्चों के माता-पिता घर वापस लौटते हैं, तो वह खाना पकाने के बजाए अपने घर को फिर से सुधारते हैं। फिर से अपनी झुग्गी के लिए नया तिरपाल खरीदकर लाते हैं, फिर वह खाना बनाने में लगते हैं। कई बार तो पुलिस वाले जलते चूल्हे में पानी डाल देते हैं। बारिश के मौसम में तेज आंधी आने पर झुग्गी टूट जाती है तथा तेज बारिश होने की वजह से घरों में पानी भर जाता है, और उन्हें रात भर बारिश में भीगना पड़ता है। इस बस्ती में बिजली के तार बहुत कमजोर हो चुके हैं। बिजली के तार काफी हद तक नीचे की ओर ल हुए हैं वह इतने कमजोर हो चुके हैं कि तेज हवा चलने पर बिजली का एक तार टूटकर गिर भी चुका है, जिसकी वजह से 3 साल के बच्चे की मृत्यु हो चुकी है। यह घटना 28 मई की है। इस तेज बारिश के चलते बिजली का तार टूटकर रिक्शे पर गिर गया। आचानक खेलते-खेलते एक बच्चा रिक्शे के पास जा पहुंचा, जैसे ही उसने रिक्शे को टूआ तो तुरन्त उस बच्चे को बिजली ने पकड़ लिया और उसकी मौत हो गई।

पुलिस मांगती है बच्चों से हफ्ता

बालकनामा ब्यूरो



शकूरबस्ती में एक बहुत बड़ा बाजार लगता है, जिसे लोग बुध बाजार के नाम से जानते हैं। पता चला है कि उस बुध बाजार में कुछ माता-पिता और कुछ बच्चे अपने गुजारे के लिए सामान बेचने जाते हैं; जैसे- खिलौने कपड़े व छोटी-मोटी वस्तुएं आदि। इन बच्चों को पुलिस वाले बहुत परेशान करते हैं। बच्चों से हफ्ता मांगते हैं। इनमें से कुछ ही बच्चे ऐसे हैं, जो पुलिस को हफ्ता दे पाते हैं और जो बच्चे हफ्ता नहीं दे पाते हैं, उन बच्चों पर पुलिस अत्याचाार करती है। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) आरती ने बताया कि भइया हमारा परिवार बहुत गरीब है। अगर हम बच्चे इस बाजार में सामान नहीं बेचेंगे तो हमारा गुजारा नहीं हो पाएगा। इस बाजार में हम बच्चे लॉरेन्स रोड से सामान बेचने के लिए आते है और जो भी दो पैसा कमाते है उसी से हमारा घर चलता है। बच्चों ने बताया कि हम बच्चे बहुत मुश्किल से दुकान लगाते हैं; क्योंकि जब हम बच्चे बाजार में दुकान लगाने आते है, तो हमें कहीं भी दुकान लगाने के लिए जगह नहीं मिलती। लेकिन हम बच्चे सड़क का कूड़ा-करकट साफ करके सड़क के किनारे अपनी दुकान लगाते हैं। जब कोई पुलिस कर्मचारी बाजार में चक्कर लगाने आते हैं, तो उनकी नजर सबसे पहले हम बच्चों पर ही पड़ती है। हमें देखते ही वह हमें मार-मार कर भगाते हैं और हमारी दुकान वहां से हटवा देते हैं। जब हम बच्चे उनको कहते हैं कि सर अगर हम दुकान नही लगाएंगे, तो हमारे घर का गुजारा नहीं चलेगा। फिर भी वह नहीं सुनते हमें मारते-पीटते और डांटते हैं। पुलिस उनसे दुकान लगाने के लिए जब हफ्ता मांगती है, तो बच्चे उनसे कहते हैं कि सर हम बच्चे बहुत मुश्किल से सौ-दो सौ रूपये कमा पाते हैं। अगर आपको हफ्ता दे देंगे तो हमारे पास क्या बचेगा और हम अपने भाई-बहन की परवरिश कैसे करेंगे। तो पुलिस वाले भइया गुस्से से बच्चों से बोलते हैं कि मैंने तुम्हारे भाई-बहन को पालने का ठेका ले रखा है। अगर तुम लोगों को इस बाजार में सामान बेचना है, तो हफ्ता देना ही पड़ेगा। नहीं तो मैं सारा सामान दें क दूंगा। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया कि कभी-कभी तो पुलिस वाले भइया हम बच्चों की दुकान के सामने बड़ी गाड़ी या रिक्शा खड़ा करवा देते हैं; ताकि हमारा सामान लोगों को न दिखे और न ही बिक पाए। जब रिक्शा खड़ा कर देते हैं तो हम बच्चे पुलिस वाले सर के जाने के बाद रिक्शा हटा देते हैं लेकिन बड़ी गाड़ी को हम बच्चे नहीं हटा सकते हैं। इसलिए हमारा सामान नहीं बिक पाता है। हम बच्चे यही चाहते है कि पुलिस वाले भइया हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार ना करें और हमारी परेशानियों को सुनें तभी हमारा परिवार खुशी से रह पाएगा ।

बोतल बीनने वाले बच्चों पर दुकानदारों का रूआब

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने बताया कि वह किस प्रकार एक-एक बोतल इकट्ठा करते है, फिर उन बोतलों की छटाई-बिनाई करके बच्चे कबाड़े की दुकान पर बेचते हैं, तब जाकर इन बच्चों का गुजारा होता है। लेकिन कबाड़े वाले दुकानदार बच्चों से फायदा उठाते हैं। बच्चों द्वारा जानकारी मिली कि एक बाजार है जिसका नाम गुप्त रखा गया है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया कि वह रोज बोतल बीनकर उसी दुकानदार के पास बेचने जाता है लेकिन वह दुकानदार बोतल की सही कीमत नहीं देता है। वह अपनी मनमानी करता है। अभी बाजार में चालीस रूपये किलो के हिसाब से बोतल बिक रही है पर जहां जिस दुकानदार के पास यह बच्चे अपनी बोतल बेचते हैं वह उसके आधे रेट में उनसे बोतल खरीदता है। वह 20 रूपए किलो के हिसाब से बच्चों से बोतल खरीदता है। उसके बावजूद वह अपने तराजू से माल भी सही से नहीं तौलता है। उसमें भी घोटाला करता है और कुछ माल कम तौलता है। अगर बच्चे की पांच किलो बोतल होती हैं, तो वह उसे चार किलो ही बताता है। इस तरह वह दुकानदार बच्चों से बहुत पैसे कमा लेता है और बच्चों को बहुत नुकसान होता है। उन्हें बहुत कम पैसे मिलते हैं। जब बच्चों को पता चला कि वह बच्चों के साथ घोटाला करके पैसे कमाता है,



तो बच्चों ने इसका विरोध किया। विरोध करने पर उल्टा दुकानदार धमकी देने लगा कि अगर वह उसके पास बोतल नहीं बेचेंगे, तो वह बच्चों को स्टेशन पर काम करने नहीं देगा और वहां से भगा देगा। इस डर की वजह से बच्चे उससे अब कुछ नहीं बोलते हैं। वे खामोश रहते हैं और उसी दुकानदार को चुपचाप अपनी बोतल बेचते हैं। दुकानदार जैसा कहता है बच्चों को वैसा ही करना पड़ता है। बोतल बीनने वाले बच्चे चाहते हैं कि इस दुकानदार के खिलाफ जल्द से जल्द कोई कार्यवाही हो जिससे हमें हमारी मेहनत के सही पैसे मिल सकें और हमारी बोतल के सही दाम हमें मिलें। हमारे साथ घोटाला करके पैसे कमाने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही जरूर होनी चाहिए ।

दुर्व्यवहार से परेशान पुल के नीचे रहने वाले बच्चे



बालकनामा ब्यूरो

गुजारे लायक वेतन/रोजगार नहीं होने के कारण कुछ परिवार पुल के नीचे रह रहे है; क्योंकि राजधानी दिल्ली में कमरे का किराया इतना ज्यादा है कि बच्चों के माता-पिता किराए पर कमरा ले ही नहीं सकते। जब हम बच्चे गांव में रहते थे, तब हमारे माता-पिता दूसरे के खेतों में काम करके अपना गुजारा करते थे। दो पैसे ज्यादा कमाने की लालच में हमारे माता-पिता हम बच्चों को दिल्ली लेकर आ गए। दिल्ली आने के बाद भी काम का कहीं कोई ठिकाना नहीं है। कभी काम मिलता है, तो कभी नहीं। इसलिए हमारे माता-पिता को सात-सात दिन बिना काम के ही बैठना पड़ता है। जब हमारे माता-पिता को कई-कई दिनों तक काम नहीं मिलता है, तो हम बच्चों को खाना भी नसीब नहीं होता है। बच्चों को भूखे पेट ही रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में हमारे माता-पिता एक कमरा किराए पर कहां से ले पाएंगे। वर्तमान में हम बच्चे पुल के नीचे रह रहे है। यहां पर सबसे ज्यादा कुछ पुलिस वाले भइया परेशान करते हैं। जब हम बच्चे आधी रात को नींद में सोए हुए होते हैं, तो पुलिस वाले भइया डंडा मारकर उठा देते है, कई बार तो दिन में जब मम्मी खाना बना रही होती है, तो खाने में लात मारकर सारा खाना दें क देते हैं। माता-पिता जब इन पुलिस वाले भइया से बात करते हैं और कहते हैं कि हम अपनी मजबूरी में यहां पर रहते हैं। हम लोगों को आप इस तरह से परेशान मत किया करो। तो पुलिस वाले भइया उनके साथ गाली-गलौज से बात करने लगते है। पत्रकार ने बच्चों को सलाह देते हुए कहा कि यहां पर तीन रैन बसेरे हैं। आप लोग उन रैन बसेरों में क्यों नहीं रहते हो ? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मनीष ने बताया कि उन रैन बसेरों में रहने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है, इसलिए हमारे माता-पिता उन रैन बसेरों में नहीं रहना चाहते हैं; क्योंकि जो व्यक्ति रैन बसेरे में पहले से रह रहे हैं, उन्हीं लोगों के रहने के लिए जगह नहीं हो पाती है, तो हम लोग उन रैन बसेरों में कैसे रह सकते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि जिस तरह सरकार ने रैन बसेरे बना दिये हैं। वैसे ही बच्चों के लिए स्पेशल एक और रैन बेसेरा बना दें, ताकि हम बच्चों को पुलिस का आत्याचार नहीं सहना पड़े।

शेल्टर होम के कार्यकर्ता बनें बच्चों के प्रति संवेदनशील

बालकनामा ब्यूरो

हर स्टेशन पर रहने वाले बच्चे के लिए सुरक्षित घर शेल्टर होम होता है। बच्चे शेल्टर होम में इसलिए जाते हैं, ताकि वह अपनी स्टेशन की जिंद्गी से टुटकारा पा सकें, और वहां पर पढ़ाई-लिखाई कर सकें। लेकिन बच्चों ने बताया कि ऐसा बिल्कुल नहीं किया जाता है। जो भी बच्चा शेल्टर होम में रहने के लिए जाता है, उन बच्चों के साथ बहुत अत्याचार होता है। हाल ही में एक बच्चा शेल्टर होम से भागकर दोबारा स्टेशन पर आ गया। जब पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप फिर से स्टेशन पर क्यों आ गए हो ? आपको कितना समझाया था कि आपके लिए शेल्टर होम ही सुरक्षित स्थान है। बच्चे ने रोते हुए कहा कि भइया हां मैं आपकी बात मानता हूं कि हम बच्चों के लिए शेल्टर होम अच्छी जगह है, पर जो शेल्टर होम के अंदर होता है, वह आपको नहीं पता। जो बच्चे शेल्टर होम के अंदर रहते है, उन्हीं बच्चों से शेल्टर होम कार्यकर्ता जबरन काम करवाते हैं। अगर वह बच्चे काम नहीं करते तो बुरी तरह से उनकी पिटाई करते है। क्या आप ऐसी जगह को सुरक्षित स्थान मानते हो ? अगर कोई बच्चा भागने की कोशिश करता है तो उसको बिजली के झटके देने के लिए धमकाया जाता है; ताकि वह बच्चा शेल्टर होम से भागने की कोशिश न करे। जिस वक्त बिजली का झटका देने के लिए बच्चों को धमकाया जाता है, तो बच्चे यह सुनकर बहुत डर जाते हैं। वह रोते रहते हैं, डर के मारे किसी से भी अपना दुःख-दर्द नहीं कह पाते हैं। वहां उन्हें बहुत अकेलापन महसूस होता है। कोई भी व्यक्ति शेल्टर होम में अपने जैसा नहीं लगता है। शेल्टर होम के कार्यकर्ताओं का स्वभाव बच्चों के प्रति बिल्कुल भी संवेदनशील नहीं है। वह हमेशा बच्चों के साथ गाली-गलौज करके ही पेश आते हैं। कोई भी वहां प्यार से बात नहीं करता है। कुछ बच्चे तो षेल्टर होम में ऐसे है जो रोते-रोते सो जाते हैं और उनसे कोई उनकी समस्या के बारे में भी नहीं पूछता है। शेल्टर होम में बच्चों को सही से खाना भी नहीं मिलता। इसलिए बच्चे शेल्टर होम के कार्यकर्ताओं के दुर्व्यवहार की वजह से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं। शेल्टर होम के लिए बच्चों ने अपने कुछ सुझाव भी रखे कि जिस तरह का बच्चों के साथ शेल्टर होम में दुर्व्यवहार किया जाता है वैसे न किया जाए और बच्चों का अच्छे से पालन-पोषण किया जाए। उनसे प्यार से बात की जानी चाहिए। हर एक कार्यकर्ता का व्यवहार उनके प्रति बहुत ही संवेदनशील हो। उसके बाद ही शेल्टर होम में रहने वाले बच्चों का भविष्य उज्जवल हो पाएगा ।

बढ़ते कदम के ग्रुप लीडर ने दिखाई बहादुरी

चाइल्ड लाइन टीम से ली मदद

बातूनी रिपोर्टर अर्चना व रिपोर्टर विजय कुमार

रामस्वरूप खेड़ा में सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें बीस बच्चों ने भाग लिया। मीटिंग की शूरूआत में ग्रुप लीडर अर्चना ने सभी बच्चों का स्वागत किया और नाम परिचय करवाया। साथ ही साथ सभी बच्चों ने अपनी-अपनी समस्याओं के बारे में बताया। 11 वर्षीय आरती ने बताया कि यहां शाम को एक बड़ा लड़का मंदिर के पास से आता है। हम बच्चों से गंदी-गंदी बात बोलता है। जब हमारे माता-पिता काम पर चले जाते हैं, तब वह लड़का हमें घूरता है और अश्लील बातें बोलता है। इस बात से ग्रुप लीडर अर्चना भी सहमत थीं। क्योंकि यह बात बिल्कुल सही है, जब एक दिन उस लड़के ने अर्चना को अकेले देखा तो अर्चना का हाथ पकड़ लिया और जबरन गली के अंदर खींचने लगा। अर्चना जोर से चीखी, तो वह लड़का वहां से भाग गया। अर्चना ने जब माता-पिता को बताया, तो उन्होंने बात सुनी, पर कोई उसके खिलाफ अवाज नहीं उठायी। इस समस्या को देखते हुए बढ़ते कदम के सदस्यों द्वारा चाइल्ड हेल्प लाइन नम्बर 1098 पर फोन करके अपनी समस्या को बताया और जब चाइल्ड हेल्प लाइन के कार्यकर्ता आए, फिर उन्होंने बच्चों से मुलाकात की और उनकी समस्या सुनी। बच्चों की समस्या सुनने के बाद चाइल्ड लाइन के कार्यकर्ता ने उनकी मदद की। उस दिन के बाद से ही उस लड़के का वहां आना-जाना बंद हो गया। अब वहां के बच्चे सुरक्षित हैं।

स्टेशन कार्यकर्ता करते हैं स्टेशन पर रहने वाले बच्चों पर अत्याचार

बालकनामा ब्यूरो

आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ पत्रकार ने मीटिंग का आयोजन किया। मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी परेशानी पत्रकार के सामने रखते हुए कहा कि वर्तमान में बहुत गर्मी पड़ रही है और हम बच्चे गर्मी से बचने के लिए स्टेशन पर आ जाते हैं, तो स्टेशन के कार्यकर्ता हम बच्चों पर अत्याचार करते हैं; जैसे ही हम बच्चे स्टेशन पर बने प्रतीक्षालय के कमरों में पंखे के नीचे बैठने जाते हैं, तो हम बच्चों को पुलिस अधिकारी डंडों से मारते हैं। कुछ बच्चों ने बताया कि स्टेशन पर ठन्डे पानी की मशीन लगी हुई हैं। वहां से पब्लिक और कुछ झुग्गी के लोग पानी भरते हैं, पर उन्हें तो पुलिस पानी भरने



और पीने के लिए मना नहीं करती, पर जैसे ही हम बच्चे वहां ठंडा पानी-पीने के लिए जाते हैं, तो पब्लिक व पुलिस वाले भइया हमें मारने दौड़ते हैं। स्टेशन पर पानी की सुविधा बहुत है लेकिन हम बच्चे बूंद-बूंद पानी के लिए तरसते हैं। इतनी गर्मी पड़ रही है कि हम बच्चों को नहाने का मन करता है। नहाना तो दूर की बात है, वह हमें पानी भी नहीं पीने देते हैं। पानी की किल्लत की वजह से हम बच्चे कई-कई दिनों तक नहीं नहाते हैं। इस वजह से हमारे शरीर में बहुत गंद्री हो गई है। उस गंद्री की वजह से हमारे शरीर में खुजली हो गई है। और खुजलाने से शरीर में बड़े-बड़े जख्म भी हो गए हैं। हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम प्राइवेट शौचालय में जाकर नहा सकें। हमारे पास जो भी पैसे होते हैं, वह भी स्टेशन पर काम करने वाले कार्यकर्ता छीन लेते हैं; इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि स्टेशन कार्यकर्ता स्टेशन पर रहने वाले हम बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार/अत्याचार ना करें; क्योंकि हम बच्चे भी अपनी मजबूरी में ही स्टेशन पर रहते हैं। दो पैसे कमाकर अपना पेट पालते हैं।



आखिर हमारे साथ ऐसा क्यों?

बातूनी रिपोर्टर रंजीत व रिपोर्टर शम्भू

अक्सर लोग सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अनदेखा करते हैं। हमारे समाज में इन बच्चों के हितों के लिए कोई कुछ नहीं करते हैं। अगर यह बच्चे कहीं पर कबाड़ा बीनते या भीख मांगते दिख जाते हैं तो लोग बोलते हैं कि इनका रोज का पेशा है। इसके अलावा यह बच्चे और कुछ काम कर ही नहीं सकते। कुछ बच्चे स्टेशन पर अपना गुजर-बसर करते हैं। इन बच्चों को आये दिन टिकट चेकर व कुछ पुलिस अधिकारी हर वक्त परेशान करते हैं। इन बच्चों को कबाड़ा बीनने के लिए रेलगाड़ी में चढ़ने नहीं दिया जाता है। क्योंकि पुलिस अधिकारी इन बच्चों को गलत समझते हैं। उनको यह लगता है कि यह बच्चे रेलगाड़ी में कबाड़ा बीनने के लिए नहीं, बल्कि लोगों की जेब और पब्लिक का सामान चोरी करने के लिए जाते हैं; जबकि ये बच्चे ऐसा नहीं करते है। वह अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनते है। बेशक यह बच्चे गंदे कपड़ों में रहते हैं, पर इनके मन में बिल्कुल लालच नहीं है। बच्चे सिर्फ अपने काम से मतलब रखते हैं। जैसे ही इनको बोतल मिलती है, तो उसी वक्त बोतल लेकर रेलगाड़ी के डिब्बों से बाहर निकल जाते हैं और उसे बेचकर गुजारा करते हैं। अगर कोई व्यक्ति या नया बच्चा मुसीबत में दिखाई देता है, तो यह बच्चे उनकी उसी वक्त मदद करते हैं। 17 वर्षीय परिवर्तित नाम (राजा) ने बताया कि भइया हम बच्चे कबाड़ा बेचकर अपने कपड़े लेने के लिए बाजार जा रहे थे। तभी हमने देखा कि एक व्यक्ति शराब पीकर स्टेशन की पटरी की ओर चल रहा था। लेकिन नशे से धुत उसे रेलगाड़ी की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। यह देखते हुए बच्चों ने उस व्यक्ति का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और उसकी जान बचा ली लेकिन जब बच्चों ने उस व्यक्ति को उसकी जान बचाने के लिए जोर से खींचा, तो वह व्यक्ति दूसरी पटरी पर जा गिरा और वह जख्मी हो गया; फिर बच्चे उस व्यक्ति को अस्पताल ले गए और उसका अपने पैसों से इलाज कराया। इतना ही नहीं अगर स्टेशन पर किसी व्यक्ति का सामान भी टूट जाता है, तो हम बच्चे जी.आर.पी.थाने में जमा करा देते हैं; ताकि उस व्यक्ति का सामान वापस मिल जाए और रेलवे स्टेशन पर जो भी कार्यकर्ता काम करता है उनकी भी समय-समय पर बच्चे मदद करते रहते हैं। जब स्टेशन कार्यकर्ता ठेले पर सामान पार्सल की ओर ले जाते हैं, जब रास्ते में चढ़ाई आती है, तो उन्हें ऊपर ले जाने में बहुत परेशानी होती है। तब बच्चे ठेले को धक्का लगाने में उनकी मदद करते है। फिर भी लोगों का नजरिया बच्चों के प्रति ठीक नहीं है। वे सोंचते है कि स्टेशन पर रहने वाले बच्चे अच्छा काम नहीं करते है, वह बुरी संगत में ही रहते हैं और उन्हें घृणा की नजरों से देखते हैं।

राहुल कर रहा है अपने भाई-बहनों का पालन पोषण

बातूनी रिपोर्टर राहुल व रिपोर्टर दीपक

माता-पिता के दुर्व्यवहार की वजह से कुछ बच्चे अपने घर को त्यागने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। ऐसे ही एक कहानी हैं 11 वर्षीय राहुल की। दो साल पहले राहुल अपने परिवार के साथ अजमेरी गेट में रहता था लेकिन पिता की मृत्यु होने के बाद राहुल की मम्मी ने अपने परिवार की देख-रेख करने के लिए दूसरी शादी कर ली; ताकि वह अपने बच्चों की सही तरह से परवरिश कर सके। लेकिन उनको क्या पता था कि जिस व्यक्ति से वह शादी करने जा रही हैं, वही व्यक्ति कुछ महीनों के बाद नशा करने लगेगा और उनके बच्चों के साथ अत्याचार करेगा। राहुल ने बताया कि मेरे पहले पापा बहुत अच्छे थे। हम 6 भाई-बहनों से बहुत प्यार करते थे। घर का खर्चा चलाने के लिए कढ़ाई का का करते थे। घर की परेशानी को लेकर वह हमेशा चिंतित रहते थे। इसी वजह से काफी बीमार भी पड़ गए। कुछ ही महीनों के बाद उनकी मृत्यु हो गई और घर की जिम्मेदारी मेरी मम्मी पर आ गई। इसलिए मम्मी ने दूसरी शादी कर ली। मेरे सौतेले पापा रिक्शा चलाने का काम करते हैं और जो भी पैसे कमाते हैं, उनको शराब पीकर उड़ा देते हैं। उन्हें हमारे परिवार से कोई लेना-देना नहीं है। वे कभी नहीं जानना चाहते कि हम बच्चों ने खाना खाया या नहीं। हम बच्चों को किसी भी प्रकार की परेशानी भी होती है, तो वह अनदेखा कर देते हैं। जब हमारी मम्मी ने उनसे पूछा कि आप इतनी शराब क्यों पीते हो ? तो मेरी मम्मी को मारने लगे और गाली-गलौज से बात करने लगे कि मैंने तुम्हारे बच्चों को पालने का ठेका नहीं ले रखा है। वह बोलते हैं कि मुझे क्या पता था कि शादी के बाद इन बच्चों के साथ रहना पड़ेगा। मुझे तो लग रहा था कि शादी के बाद हम दोनों इन बच्चों को छोड़कर अलग रहने लगेंगे। इसलिए मैंने तुम से शादी की थी। कभी-कभी मेरे सौतेले पापा गुस्से में आकर हम बच्चों को मारने लगते हैं। इस रोज-रोज के लड़ाई-झगड़े की वजह से राहुल ने स्कूल भी जाना बंद कर दिया और घर से भागकर स्टेशन पर आ गया। स्टेशन पर आते ही उसके कुछ



दोस्त भी बन गए। उनकी कहानी भी उसके जैसी ही है। उनके साथ भी इसी तरह का व्यवहार होता था। घरों की इस समस्या से परेशान होकर वे भी अपने घरों से भागकर स्टेशन पर आ गए। राहुल ने बताया कि वह स्टेशन पर अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनता है, तब जाकर दो वक्त का खाना खाता है। लेकिन वह अभी भी अपने घर जाता है। वह पूरे दिन स्टेशन पर ही रहता हैं और शाम होते ही बस पकड़ कर घर चला जाता है। जो भी उसके पास पैसे होते हैं उन पैसों से वह अपने भाई-बहनों के लिए खाने-पीने का सामान खरीदकर ले जाता है; ताकि वह लोग रात को भूखे ना रहें। इसी तरह वह अपने भाई-बहनों का पालन पोषण कर रहा है।

कैसे बनेगी हम बच्चों की जिंदगी

जब गुरू का व्यवहार इस प्रकार है

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली के कुछ सरकारी स्कूलो में पाया गया कि पहली कक्षा से लेकर पांचवी कक्षा तक के छात्रों को सही तरीके से पढ़ाया नहीं जा रहा है। अध्यापक अपने में ही मगन होकर रहते हैं। 8 वर्षीय परिवर्तित नाम (राहुल) ने बताया कि भइया हमारी कक्षा में अध्यापक हमेशा बच्चों को डांटते रहते हैं; क्योंकि हमारे अध्यापक ब्लैक बोर्ड पर एक बार काम लिखकर चले जाते हैं और जब हमें समझ नहीं आता है, तब हम बच्चे अध्यापक से पूछने जाते हैं कि ब्लैक बोर्ड पर क्या लिखा है? वह हमारी समझ में नही आ रहा है। तो हमारे अध्यापक बहुत क्रोधित होकर कहते हैं कि एक बार समझाने से समझ में नहीं आ रहा है। यह कहकर कक्षा में वापस भेज देते हैं और अध्यापिका के साथ गप्पें मारने लगते है। जब टुट्टी का समय होता है, तब ब्लैक बोर्ड पर होमवर्क लिख देते हैं। बच्चों ने बताया कि जो हमें पढाया जाता है, वह समझ में नहीं आता है। जब हम घर पर अपने माता-पिता से सवाल का जबाव पूछते है, तो वह भी हमें डांटते हैं। वे कहते है कि आप स्कूल में क्या करने जाते हो। जो तुम घर पर आकर हमसे पूछते हो। हम बच्चे जब बताते हैं कि स्कूल के अध्यापक सही से पढाई नहीं करवाते हैं, तो वे हमारी बातों पर विश्वास नहीं करते है। जब बच्चे अध्यापक से कुछ पूछने के लिए जाते हैं, तो वह नहीं बताते हैं। इसलिए हमने अलग से अपने माता-पिता से कहकर कोचिंग सेंटर में दाखिला करा लिया है; ताकि हम बच्चे अच्छे से पढ़ाई-लिखाई कर सकें। हमारे कोचिंग सेंटर की अध्यापिका भी गुस्सा होती हैं और हम से कहती है कि जब तुम्हें पढ़ना-लिखना नहीं आता है तो इतना मुश्किल काम तुम्हारे अध्यापक कैसे देते हैं ? तुम बच्चे कुछ बोलते नहीं हो ? बच्चों ने बताया कि हम बच्चे उन से जब कुछ बोलना चाहते हैं, तो वह गुस्सा होते हैं। इसी डर से हम कुछ नहीं बोलते है। जैसा अध्यापक बोलते हैं, हम बच्चे वैसा ही करते हैं। हम बच्चों का यह कहना है कि जैसे सरकार ने कहा है कि शिक्षा हर बच्चे के लिए एक सामान है, इसमें अमीरी-गरीबी नहीं देखी जाती है, तो हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों ? हमारे माता-पिता बहुत मुश्किल से हम बच्चों का स्कूल में दाखिला करवाते हैं; ताकि हम बच्चे पढ़ाई-लिखाई करके अपनी जिंद्गी बना सकें। हमारे माता-पिता चाहते हैं कि जिस प्रकार वे बेरोजगार व अशिक्षित है, वैसे हम बच्चे भी बेरोजगार व अशिक्षित ना रहें।

अपनों से आखिर कैसे बचाया जाए अपना बचपन

बातूनी रिपोर्टर साहरन व रिपोर्टर दीपक

11 वर्षीय साहरन अपने माता-पिता के साथ बिहार में हसी-खुशी अपनी जिंद्गी गुजार रहा था। कुछ साल के बाद उसकी बड़ी बहन की शादी होने के बाद उसके माता-पिता ने उसको जीजा और दीदी के साथ दिल्ली भेज दिया; ताकि साहरन दो पैसे कमा सके और जो अपनी बहन की शादी में कर्ज लिया था, उसे चुका सके। पैसे कमाने की लालच से उसने अपनी पढ़ाई-लिखाई भी छोड़ दी और दिल्ली में आकर तरह-तरह के कामों में लिप्त हो गया। साहरन से पत्रकार की मुलाकात कुछ इस तरह हुई कि साहरन कड़ी धूप में अपने ठेले पर काफी सारा खीरा लादकर बेच रहा था। खीरा इतना लादा हुआ था कि उससे धक्का भी नहीं लग रहा था। पत्रकार ने साहरन से पूछा कि आप यह काम क्यों कर रहे हो ? साहरन ने बताया कि भइया मैं मजबूरी में यह काम कर रहा हूं। मेरे माता-पिता बुजुर्ग हैं, उनसे कुछ काम नहीं हो पाता है। इसलिए मैं खीरा बेचने का काम करता हूं। साथ ही बताया कि उसे खीरा बेचते वक्त क्या-क्या कठिनाईयां आती हैं ? जैसे कि किसी भी बाजार में अपना ठेला लेकर जाता है, तो पुलिस वाले मारने लगते हैं। दुकानदार भी परेशान करते हैं; और कहते हैं कि अपना ठेला मेरी दुकान के सामने से हटाओं। कभी-कभी तो ठेला भी पलट देते हैं। इसलिए खीरा नहीं बिक पाता है। ज्यादा दिन तक रखने पर खीरा खराब होने लगता है और मजबूरन हमें दें कना पड़ता है। पत्रकार ने पूछा; फिर भी कुछ तो कमाई होती होगी या नही ? साहरन ने बताया कि पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद सौ-दो सौ रूपये तक कमाई हो जाती है लेकिन सारे पैसे मैं अपने जीजा और दीदी को दे देता हूं; ताकि वह इन पैसे को मेरे माता-पिता तक पहुंचा सकें। लेकिन मुझे नहीं लगता है कि यह पैसा मेरे माता-पिता तक पहुंचता होगा; क्योंकि जब भी मै अपने माता-पिता से फोन पर बात करना चाहता हूं, तो वह मुझे बात नहीं करने देते हैं। मेरे जीजा और दीदी दोनों बोलते हैं कि गांव में फोन नहीं लग रहा हैं। मेरी माता-पिता से फोन पर बात नहीं होती है। इसलिए मुझे हर वक्त यह चिंता रहती है कि मेरे माता-पिता किस हाल में होंगे। मुझे दिल्ली में काम करते एक साल से भी ज्यादा हो गया है। मुझे वह कभी गांव भी नहीं जाने देते। जब मैं रात को सात-आठ बजे घर पहुंचता हूं तो मेरी दीदी अपने घर का भी काम करने के लिए बोलती है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे लिए इस दुनियां में कोई भी नहीं है सिर्फ मैं अकेला हूं।

समस्या से ग्रस्त होकर पढ़ाई कर रहा है कुलदीप

बातूनी रिपोर्टर कुलदीप व रिपोर्टर चेतन

10 साल की उम्र से ही कुलदीप ने अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुधारा है और अपने घर की जिम्मेदारियों को पूरा किया है। सन् 2011 में जब कुलदीप एक फैक्ट्री में काम करता था तब पूरे बारह घंटे तक काम करने पर उसे सौ रूपये मिला करते थे। कुलदीप के पापा का देहांत हार्ट अटैक से हुआ था। कुलदीप के पापा का देहांत होने के बाद कोई भी कमाने वाला नहीं था; क्योंकि कुलदीप के सारे भाई-बहन की शादी हो गई थी। वह सभी अलग-अलग रहते हैं। कोई भी कुलदीप की मदद नहीं करता है। उसकी मम्मी बीमार रहती हैं। उनके लिए दवाई गोली और खाने-पीने के खर्चे का बोझ कुलदीप के कंधों पर आ गया है, इसलिए कुलदीप जी-तोड़ मेहनत करता है फैक्ट्री में आठ घंटे काम करता है। वह फैक्ट्री में 290 रूपये प्रतिदिन के हिसाब से काम करता है। हर एक महीने में कुलदीप को पैसे मिलते हैं लेकिन वह अपना घर का खर्चा चलाने के लिए हर रविवार को एडवांस 500 रूपये ले लेता है। उन्हीं पैसों से वह हफ्ते भर का गुजारा करता है; पर अब कुलदीप काम पर नहीं चल जा रहा है; क्योंकि एक रोज वह काम पर जा रहा था, तब उसका पैर जमीन पर फिसल गया। वह जोर से गिर पड़ा और उसके हाथ में फ्रैक्चर हो गया। अब कुलदीप के घर की स्थिति और बिगड़ गई है; क्योंकि उसके घर का खर्च नहीं चल पा रहा है। कुलदीप ने बताया कि जो मैंने अपनी मम्मी के लिए कुछ पैसे जमा किए थे। उसी पैसे से अभी घर का खर्चा चल रहा है लेकिन यह पैसे कब तक चलेंगे एक समय तो खत्म हो जाऐंगे, तब घर का खर्चा कैसे चलेगा। घर में चल रही समस्या के रहते हुए भी कुलदीप को पढ़ाई करने की बहुत लगन है। वह चाहता है कि दूसरे बच्चों की तरह वह भी स्कूल में जाकर पढ़ाई करे। इसलिए उसने घर के हालात को देखते हुए अपना दाखिला ओपन बेसिक एजुकेशन से तीसरी कक्षा में दाखिला ले लिया है।

जावेद की मदद से दो बच्चों की बची जिंदगी

बातूनी रिपोर्टर जावेद व रिपोर्टर शम्भू

16 वर्षीय जावेद अपने परिवार के साथ सराय काले खां में रहता है। बालकनामा अखबार का बातूनी रिपोर्टर भी है। जावेद अपने इर्द-गिर्द हमेशा ध्यान रखता है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस प्रकार रह रहे हैं। जैसे कुछ बच्चे रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो उन बच्चों से मिलता है। उन बच्चों से बातचीत करता है कि कहीं वह बच्चे किसी संकट से तो नहीं जूझ रहे हैं; क्योंकि जावेद ने सड़क की जिंद्गी बेहद करीब से देखी है। कुछ साल पहले जावेद भी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाता था । वह पहले नशा करता था लेकिन बालकनामा अखबार के सहयोग से अब नशा नही करता है और कबाड़ा भी बीनने नहीं जाता है। क्योंकि जावेद को ओपन बेसिक एजुकेशन से तीसरी कक्षा में दाखिला मिल चुका है भूतकाल में जावेद की पारिवारिक स्थिति भी बहुत खराब थी। जावेद के परिवार वाले भी जावेद से घृणा करते थे। जावेद से गाली-गलौज करते थे। अपने घर में रखना भी नहीं चाहते थे; क्योंकि जावेद हर वक्त नशे में



लिप्त रहता था। लेकिन जैसे ही जावेद बालकनामा अखबार से जुड़ा और जावेद को बताया गया कि यह एक सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार है, जो हम बच्चे इस अखबार के रिपोर्टर बनते है और अखबार में रिपोर्टर बनने के लिए पढ़ाई करना बहुत जरूरी है और उस अखबार से जुड़ने के लिए नशा आदि छोड़ना पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए जावेद ने अपना नशा करना कम कर दिया और पढ़ाई की ओर जोर डालने लगा। वर्तमान में वह बिल्कुल नशा नहीं करता है। इसी वजह से जावेद के माता-पिता ने परिवार में जगह दे दी है। अब जावेद अपने परिवार के साथ हंसी-खुशी रहता है। कुछ ही दिनों की बात है जावेद अपने दोस्त के घर से स्टेशन को लौट रहा था, तभी अचानक जावेद का ध्यान दो बच्चों की ओर गया। वह दोनों बच्चे प्लेटफार्म पर रो रहे थे। तभी जावेद उन बच्चों के पास गया और उन बच्चों से बात करने की कोशिश की; पर उन बच्चों ने कुछ नहीं बताया। सिर्फ रो रहे थे। यह देखते हुए जावेद ने स्टेशन के पास कार्य करने वाले चाइल्ड हेल्प लाईन कार्यकर्ता को बुलाया और पूरी तरह जानकारी दी कि ये दोनों बच्चे यहां पर अकेले हैं। आप इन बच्चों की मदद कीजिए। उसके अगले दिन ही चाइल्ड हेल्प लाइन कार्यकर्ता ने इन दोनों बच्चों को सी डब्ल्यू सी में पेश किया और माता-पिता को खोजना शूरू किया और 10 दिन के बाद उन बच्चों को उनके माता-पिता को शौंप दिया गया। अब वह बच्चे सुरक्षित हैं।

छोटे से प्रयास से तीन बच्चे पहुंचे स्कूल

बातूनी रिपोर्टर अमन व रिपोर्टर चेतन

12 वर्षीय अमन अपने परिवार के साथ शकूरबस्ती में रहता है और पांचवी कक्षा में पढ़ाई करता है। अमन बहुत दयालू है। वह अपने आस-पास रहने वाले बच्चों की मदद करता है। अगर कोई व्यक्ति या बच्चा उसे समस्या में दिखाई देता है, तो वह उसकी मदद करता है। अमन ने कुछ महीने पहले ही एक बूढ़े व्यक्ति की मदद की थी, जो शराब पीकर रेलगाड़ी की पटरी की ओर बढ़ रहा था। उसकी ओर तेजी से बढ़ रही रेलगाड़ी देखते हुए अमन ने उस बूढ़े व्यक्ति को जोर से धक्का देकर उसकी जान बचा ली। इसके अलावा उसने अभी हाल ही में तीन बच्चों को सरकारी स्कूल में भी दाखिला दिलाया है। इन तीनों बच्चों ने अमन को देखकर कर ही स्कूल जाने का निर्णय लिया; क्योंकि यह तीनों बच्चे अमन को रोज सुबह स्कूल



जाते हुए देखते थे। इसी वजह से इन बच्चों के अंदर भी पढ़ाई की लालसा जागी। एक दिन अमन अपने स्कूल से पढ़ाई करके घर लौट रहा था, तभी तीनों बच्चे अमन के पास गए। उन्होंने कहा कि भइया मुझे भी आपकी तरह स्कूल जाना है। अमन ने उन बच्चों से नाम, पता पूछा और कहा कि आप मुझे अपने माता-पिता से मिलवा दीजिए। माता-पिता से मिलने के बाद अमन तीनों बच्चों के माता-पिता को लेकर श्री नगर के निकट सरकारी स्कूल में गया और उपप्रधानाचार्य जी से बात की, तो उपप्रधानाचार्य जी ने अमन से बहुत इज्जत से बात की और बैठने के लिए कहा, तभी बच्चों के दाखिले के बारे में चर्चा हुई और उपप्रधानाचार्य जी ने इन तीनों बच्चों को अपने स्कूल में दाखिला दे दिया। वर्तमान में यह तीनों बच्चे रोज स्कूल जाते हैं और स्कूल की टुट्टियों में तीनों बच्चे अपने घर में पढ़ाई करते हैं।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...



बढ़ते कदम के सदस्यों के साथ माननीय श्रीमती स्वाति सिंह जी



पुलिस वाले भईया कि सहयोग से हुई सड़क एवं कामकाजी बच्चों का आंखों की जांच



सन 2012 कि विनर इंडिया गोस्ट टाइलेंट की सोनिया बालकनामा टीम के साथ हेतु



स्कूल में बढ़ते कदम की सदस्य चाइल्ड हेल्प लाईन नम्बर की जानकारी देते हुए



दिल्ली भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी बालकनामा के काम की सराहना और रिपोर्टर के साथ स्ट्रीट चिल्ड्रन के हालात पर विचार विमर्श करते हुए

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

Issue – 66 August, 2017

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

Support Price: 5 Rs

BALAKNAMA

World's Unique Newspaper for and by Street and Working Children

Want to support Balaknama?

Give news lead and send in your suggestions and contributions to

balaknamaeditor@gmail.com

"Balaknama is the newspaper presented by Street and Working children themselves to fight for their own rights and problems because they are being completely ignored.

NO RELIEF YET ON CHILD TRAFFICKING

Balaknama Bureau

During a survey in Delhi, our journalist found that every month 10 to 15 children are brought from

promises to give them education.

Delhi, the capital of India, is a city where roadside shops are very common. These shopkeepers only keep children at work. Do you have any idea that from where did these children come? Let us tell you the truth that how children are brought in Delhi from different cities at fake promises.

Dhaba, where 14 to 15 years old children were working. The reporter noticed that the child was working very diligently. He saw here and there but

and all other works the children has to do alone. When our reporter tried to interact with those two children, they got scared of him. After the owner went from there, a 15 years old boy Ajit (name changed) came to the reporter and said, "Sir, I was not talking to you as my boss was here. If he see me talking to anybody he will surely kill me or will not give me food to eat. He doesn't allow me to talk to anyone." The journalist then asked that why he was working at Dhaba? Ajit





replied, "My family's condition is not good so my parents sent me with the owner of the Dhaba to work

parents that he will send me to school and will allow me to study and I will work after returning back from

not happen. When he bought me to Delhi, he made me work on this Dhaba." Telling about the work he has to do, he then said, "At present, I have to take care of all the things like waking up at 5 A.M in the morning for cleaning the Dhaba, washing used utensils and cutting vegetables, etc." The journalist himself saw

these children when they were cutting the onions. He noticed that they were so fast at cutting the onions as if they have machines in their hands. He asked them the reason of cutting onions so fast. Another 14 years old boy, Chandan (name changed) said, "Sir, we have been doing this work from past 4 to 5 years. We are so friendly to any work at the shop that our hands automatically start working in speed." Expressing their feelings, he further added, "We also want to go to home and meet our parents but our boss don't allow

your place then only we can leave from here."

INNOCENT CHILDHOOD SURVIVING ON RISKY ROPE

Balaknama Bureau

People who are called by the name of 'banjara', does not have any proper place to live. Earning mode of these banjaras are empty places or roads also the sad part is that they plant their tents on such places to spend their nights. Many of us don't know about a rule of banjaras that is they deprive their children from education. As soon as a child is born in their home, instead of talking to them about studies and sharing knowledge about future they are been seen as a mode of earning more money. At the very early ages of 3 to 4, children are been send for learning different games and tricks by which they can earn money.

One of our reporters interacted with such children to know



their struggle and pain. On interacting, a 10 years old boy Sameer (name changed) said, "When my parents made me to visit games centre for learning circus games, I have faced many problems because

the teachers were making us to walk on the ropes tied

walk above the ropes. I was afraid of walking on these thin ropes. Many times I do

felt unconscious and fainted due to fear of falling down but no one cared. Even after all these things, our teachers don't allow us to rest and

forcefully make us do such things. If I request them to forbid, they run after me for beating me also they complaint

continued on pg. 7



Members of Childline and Badte Kadam celebrating Independence Day

EDITORIAL

Dear friends,

Greetings.

We feel pride and happy by handing over our 66th edition to all of you. All of our child-reporters are working hard for diversifying their news. Social media is also advertising our newspaper. Any accidents that happen in country have a huge effect on children also. Every new government in a state comes with the new hopes of solutions for all the problems for street and working children. Awareness about the problems and rights of street children is spreading throug h our newspaper 'Balaknama' by street children only. Balaknama has a positive effect on government machineries and help them to give respective decisions wherever needed. A very happy Independence day to all our child partners and we hope that we will get success in making our future better.

The Editorial Board

IN ABSENCE OF PLACE FOR BATHING, THESE GIRLS TAKE BATH UNDER THE FLYOVERS

Balaknama Bureau

Recently, one of our journalists organized a meeting with the children living under the bridges. Most of the girls took part in it. Sharing their problems and compulsions, most of the girls said that they belong to Jharkhand district of Bihar but due to their poor economic conditions they have to come to Delhi. Sharing more, a 13 years old girl, Simran (name changed) said, "I live under the bridge with my whole family. We work as rag-pickers and as beggars for our survival. We hardly get enough money survive." Keeping her point, she further said, "We all live under the bridge due to our compulsions. Not only we live, but we cook, eat, bath and drink water, here only." Expressing their pain, another 14 years old girl, Kajal (name changed) said, "We have to take bath in open areas only. We make a tent with our cloths and surround ourselves with clothes. Worst thing happens



when we bath is that whenever an auto or rickshaw passes or even normal public passes the bridge, they look at us with filthy eyes. Sometimes auto-drivers crosses all the limits, they stand under the bridge only and masturbate while looking at us." Telling more about their problems, another 15 years old girl, Kalpana (name changed) said, "As like every human being, we are also growing up. Some girls are turning 18-19 years. People talk filthy things by looking at them. Even at nights, when we sleep and due to strong winds anyhow our body parts becomes visible, that time also people look at us with obscenity by stopping their cars and sitting inside it only. Due to all these reasons, we feel very scared and ashamed and that's why we have decided to go to public toilets for taking bath. But problem is that we don't have any public toilet near our area. We do have a public toilet on the metro station near us but whenever we go there, metro staff asks for a lot of money from us, especially from girls. The amount they ask is the amount for our one day survival." Expressing more about her fears, she further added, "Our parents are also worried due to this problem. They worry that someone will misbehave with us or something wrong will happen with us." Showing their pain, all the girls requested that, "We just want to escape from dirty eyes and dirty minds of people for which we need a toilet system under our bridges for our safety."

FATHERS PUSHED THEIR CHILDREN'S FUTURE INTO THE CHIMNEYS

Balaknama Bureau

This news is about 25 children of 14 to 16 years, who were travelling with their fathers to some other city. As soon as our reporter saw these children, he went to them and asked that where were they going? A 13 years old boy Arjun (name changed) replied, "We are to going to Rajasthan to learn the process of making bricks at chimneys." Shockingly journalist asked them that why were they going to chimneys and what is the need of learning making bricks? Replying, a 14 years old boy, Sanjay (name changed) said, "Our parents don't teach us anything except making bricks and working at chimneys." Telling more about how their parents work, he further added, "My father first digs in the soil with a spade and then he fills water in it. He then leaves it for at least 2-3 days so that the soil can become fully wet. After that, my father again digs the same soil with his legs and then mixes the soil with his hands. After mixing well, he makes a brick with a clay slab." Sharing the need of working at chimneys, he then said, "When our parent's boss see us empty doing nothing and staring at our parents, he gets very angry and that's why due to



his fear we children also starts working and helping our parents. At present, we are being taught how cooked bricks are taken out of the chimneys. He also orders us to go inside the furnace." Sharing about the safety measures, he further added, "To prevent us from smoke and pollution, a cloth is given to us to cover our nose and heads while entering inside the furnace, but it is not at all effective." Sharing their problems he said, "If we working inside the chimneys for 2 hours, we get rashes on our body due to dust and pollution. Sometimes, even we feel suffocated because of the pollution. As a lot of dust blows out of the furnace when we take out the cooked bricks, we also have problem in seeing around us. Getting irritated, we children start throwing bricks here and there due to which some bricks get broken down. In exchange for this, our boss cut some amount of money from our parent's salary. In spite of all these problems, our parent wants us to work at chimneys only. They think that there is a lot of money in this field. They think that if we children will learn the whole process of making bricks, then our future will get secured as every type of work can be stopped but making of bricks will be never stopped as people will always need bricks to make their homes."

PARENT'S GREED TURNING INTO DARK FUTURE OF CHILDREN

Balaknama Bureau

As we all know that the Delhi government has built a battery rickshaw for the convenience of general public. Since the launch of battery rickshaw, the earning of rickshaw drivers has become double. In the past, people used to pull rickshaws and due to which they had many health related issues and they used to suffer from heavy body aches. For this reason, government had made battery rickshaws, due to which there is a huge relief for rickshaw drivers. Government made this decision for relief and taking care of rickshaw pullers but some people have made this work a way of earning and people feel that there is a lot of earning in this work. In West Delhi, the greed of earning is so high that some parents have forced their children in this work. Even they are taking back their children's names from the schools as they want them to pull rickshaw and gave them a battery rickshaw which they buys on their own names. If these children deny driving battery rickshaws then their parents beat them and sometimes don't even give them food to eat. Due to fear of getting beatings, children agree to drive battery rickshaws. Telling more about themselves, children said, "We used to think that our future will get better if we go to school, but it did not happened." The journalist asked that how did their parents come into such greed? A 16



years old o, Gulshan (name changed) replied, "There is an uncle in our slum, who owns 6 to 7 battery rickshaws. His 3 sons used to pull rickshaw only. When our parents met him and asked that how much they earned from this work, he replied that around 12 to 13 hundred in a day. After listening to him, our parents also brought battery rickshaw on rent and forced us to indulge in this work. We children wake up at 6 A.M in the morning and drive battery rickshaw till 11 P.M. in the night. We do have many difficulties in driving on the roads as the road on which we drive is quite crowded. One day when we children were going to Kirti Nagar with battery rickshaw, accidently when we were taking round, we hit a car. The owner of the car called the police. The policeman started beating me. He gave me 2-3 slaps and scolded me a lot. He also said that why we children don't know how to properly run rickshaw then why do we do so? He then took Rs 150 from us and left us." Bad thing we got to know is that even when these children tell their parents about such situations, their parents still doesn't feel bad for them. Expressing his pain, Gulshan further added, "Even after facing all these problems, our parents still thinks that there is a good future in this work and don't allow us to go to school. We children just want to go back to school and study so that we can have a secure and a better future."

POOR ECONOMIC CONDITIONS FORCED CHILDREN FOR CHILD LABOR IN HOTELS

Balaknama Bureau

Rate of people working at the chimneys or furnace is very high. We can see hotels almost each and everywhere, and mostly the children works at these hotels. Different types of work is being given to each and every child which they have to perform for 8 to 0 hours like giving plates to peoples sitting at the restaurants, cleaning the hotel, etc. The heaviest work they have to do is to carry a 50 kg tank full of water for 5 km by rickshaw. Despite any weather, these children have to work under any condition due to their compulsions. When an empty drum is to be carried then there is no problem, but if water drum is to carry then it is very difficult for a single child to reach its target. So the child calls someone to help him to pull the rickshaw. Even after reaching the hotel, the child is not given any time to take rest. He has to go again as at that hotel; work of filling water is given to the



single child only. If the child is late then each and every work in the hotel stops like cooking, washing, cleaning, etc. He only gets only 20 minutes to take food and rest during the lunch time. After that, he gets an one hour break at 7 P.M in the evening. Even when the hotel gets closed, in the night at 11 P.M., the child has to wash used plates an big utensils. Due to all these things, the child has to indulge in the hotel work till 1 to 2 A.M. The child said, "Even after doing all these things, if sometimes I don't wash the plates, my owner don't give me food to eat and even beats me."
The reporter then asked the child that why does he work there? The child said, "I belong to Bareilly, UP. I used to live in the village. My parents are farmers. So they sent me to Delhi with my uncle who also works here. Whatever amount of money I get every month, I send it to my parents and they use it for their survival and for farming."

BY MAKING FALSE PROMISES, HE BRING THEM CHILD LABORS



Balaknama Bureau

During a survey in Delhi, our journalist found that every month 10 to 15 children are brought from UP, Bihar, Uttarakhand, and Nepal by making false promises to give them education.
Delhi, the capital of India, is a city where roadside shops are very common. These shopkeepers only keep children at work. Do you have any idea that from where did these children come? Let us tell you the truth that how children are brought in Delhi from different cities at fake promises.
To find out the truth, our reporter went to roadside Dhaba, where 14 to 15 years old children were working. The reporter noticed that the child was working very diligently. He saw here and there but only find a single man who was there to cook the food and all other works the children has to do alone. When our reporter tried to interact with those two children, they got scared of him. After the owner went from there, a 15 years old boy Ajit (name changed) came to the reporter and said, "Sir, I was not talking to you as my boss was here. If he see me talking to anybody he will surely kill me or will not give me food to eat. He doesn't allow me to talk to anyone." The journalist then asked that why he was working at Dhaba? Ajit replied, "My family's condition is not good so my parents sent me with the owner of the Dhaba to work here. But sadly, the owner mad fake promise to my parents that he will send me to school and will allow me to study and I will work after returning back from school and will do whatever work is left. But it did not happen. When he bought me to Delhi, he made me work on this Dhaba." Telling about the work he has to do, he then said, "At present, I have to take care of all the things like waking up at 5 A.M in the morning for cleaning the Dhaba, washing used utensils and cutting vegetables, etc." The journalist himself saw these children when they were cutting the onions. He noticed that they were so fast at cutting the onions as if they have machines in their hands. He asked them the reason of cutting onions so fast. Another 14 years old boy, Chandan (name changed) said, "Sir, we have been doing this work from past 4 to 5 years. We are so friendly to any work at the shop that our hands automatically start working in speed." Expressing their feelings, he further added, "We also want to go to home and meet our parents but our boss don't allow us to go. He says that first put some other child on your place then only we can leave from here."

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100



NEWS SHOCKING WORKING GIRLS DISAPPEARING FROM WORK

Balaknama Bureau

Due to the high poverty and unemployment in Bengal, the people of the region have come in the fields of Noida and are engaged in various types of work; like working in garbage pickers, fruit-vegetable seller, etc. Similarly, many people in this area do junk works. Instead of sending young girls for garbage collection, people send them to bungalows to work as a home helper like washing dishes, cloths, cleaning the houses and making food. Similarly, there was a 16 years old girl Rekha (name changed), who used to go to bungalows (kothi) daily for work. There were some bad boys, who used to misbehave with her along the way from home to bungalow and vice versa. When she complained about it to her parents, they helplessly replied that what poor parents can do? Instead of helping her, they did not paid attention to her problem. Due to her parent's ignorance, one day she went missing. She did not come back to home from work. Her parents tried to find her each and every place they can but they were failed in finding their daughter. Losing all the hopes, they went to police station and filed a missing complained for her daughter. It's been one month, but still no one knows where Rekha is. Because of this incident, other girls are also afraid of going to bungalows for work. At present, all the parents go to bungalows with their daughters and even go to pick them from work also for their safety.

GIRLS ARE BEING EXPLOITED DUE TO COMPULSIONS

Balaknama Bureau

One of our journalists met 6 girls on a station who are taking wrong steps for their survival. The reporter asked them shockingly that why are they taking wrong steps? A 15 years old girl, Sapna (name changed) said, "We belong to very poor families. We came at the station due to poor conditions of our family. Surprising thing is that even here also we girls have to wander here and there in search of food. Till date we did not found a single person who will help us. We started to collect garbage at the station area only but some boys did not allowed us to do so. At times, when we used to board the trains to collect trash, boys used to beat us and snatch all the trash from us and sell it. They used to keep the entire amount they get from the trash we collected. We girls used to face these problems daily but these problems were not ending. When we used to sleep at night, elder boys used to call us and give us intoxicants. They say that if take intoxicants then they will give us food to eat. We girls used to take intoxicants in greed of food. When we girls get overwhelmed with



the drugs, then those boys used to misbehave with us. It has been running from many days. Recently, we girls met a girl who was indulged in wrong activities. She shared her story and said that she also left her home due to poor conditions and those boys also used to obscene her. But taking advantage of this, she started taking money from boys for getting physical. After listening to her, we girls also thought that it is difficult for us to survive on station and boys anyhow obscene with us so we should also take money for getting physical."

YOUNGER'S PAYING COST FOR PEER'S FAULT

Balaknama Bureau



Children living at the station when met the journalist, shared their problems and compulsions with him. Sharing their problems they said that they hardly get to collect some bottles in trash because these days police disturbs us a lot at the stations. We children don't do anything wrong, but still they always threaten us and scolds us. The journalist met a 16 years old boy, Rajesh (name changed) who was beaten by the police only because he was wandering on the station at the night. There was a lot of swelling on his body. The journalist was shocked to see him. Complaining more about the torture of police, children said, "Torture of police is increasing day-by-day. When we sleep at night, they kick us." Sharing other problems, they said, "Another problem we are facing is that from past some days, some big boys come at the stations and they collect the trash from the trains. They have taken all the coaches and don't allow us to collect the garbage. If we go inside the train to collect the garbage, these boys pushes us out of the coach and even beat us. When tried to talk to them regarding this problem they started abusing us and said that our father has not made this station. They also have the right to collect trash at this station not only us. When we told them that we are living here from many years and we survive on this trash only, they replied that now that time has gone and it's our time to rule on this station. They also threatens us saying that if someone from us tries to stop them then it will be very bad for him. Sharing some incidents, a 17 years old boy, Lokesh (name changed) said, "One day when I tried to board the train just to find out what these big boys will do, they stolen a passenger's bag and blamed that I have stolen the bag and told the passengers that this child was collecting trash in this coach only. As he said that this child has stolen your bag, the passenger came towards me to kill me. That's why only, we children started waking up in the nights and are collecting the garbage during night time." Requesting for their survival, children said, "We just request that some actions should be taken against such big boys so that we can also live peacefully."



CHILDREN ARE WANDERING WITH THEIR FAMILIES

Talkative Reporters: Sonia and Shambhu

As we all know that there is a lot poverty and unemployment in Badayun, Uttar Pradesh. Due to poor conditions of Badayun, many people come to Noida and take Farming contract to take care of farms in order to earn some money for their survival. These people pay an amount to the owner of the farm for one year and grow near about 3 to 4 crops. Owner of the farms does not worry after taking the money from these people. But these people have to work hard with all of their diligently and passion such as sowing of fields, protection of crops, and monitoring of crops according to the weather and food and insect pesticides at the right time. Sad thing about their lifestyle is that even the small children also have to work and wander here and there with their families for their survival. These children help their families in each and every aspect they can. Due to working in fields, they are constantly being deprived of their rights. Other children go to school as soon as the school opens in the month of July. During February, March and April they are busy with their examinations. In May – June, children enjoy their summer vacations and again a new session starts as soon as they get their results. Unlike others, these children have to work whole year in the fields only. These children have to be engaged in sowing, crop protection and harvesting in the fields continuously for all the 12 months.

DRUGS BEING SUPPLIED THROUGH GROUP OF CHILDREN

Balaknama Bureau

Now-a-days, railway stations and red lights are becoming a hub for supplying drugs for street and working children. One of our reporters, recently found that 4-5 men makes a group of children (one group each men) and use them for supplying intoxicants of hidden codes. Our journalist was shocked to see that small children are supplying stolen drugs. According to our survey, nowadays, children have started selling narcotics on red lights. Children selling these narcotics are very scared. Our reporter tried to talk to those children but as soon as they see any journalist, they start running and hiding. No one wants to talk about this topic or get caught by anyone. Our journalists tried to convince them and talk to them that they will not harm them and they also work for children like them. All over, they tried to make them feel secure. After listening to the journalists, children came to him and shared their feeling, problems and fears. The first question our journalist asked was that who gives them narcotics? Who force them to do so? A 15 years old boy Sujit(name changed), informed us that "There is a owner who has created a group of some children and brings narcotics from the markets. We children go to different places, like markets, red lights, stations and crowded areas to sell intoxicants. We children are especially ordered to go to toddlers, rag-pickers or beggars to sell drugs as they usually take intoxicants. These types of children usually wander here and there in search of some drugs. If we go to them, they will definitely buy our drugs. No matter how much we ask, they will surely buy." Next thing our journalist asked to them was don't they feel unsecure while selling these drugs? Shocking answer the children gave was that they are being trained in order to save themselves from police. They are being taught to use any pointed thing or knives to hurt anyone and run. Even if after trying hard, these children get caught by the police, their owner does not support them. Next question our reporter asked was that how much money they get for this work? A 15 years old boy, Rakesh (name changed) told us that, "We hardly get 100 Rs for a day with 2 free boxes of drugs so that we children don't have to wander her and there in search of drugs. Expressing their pain, another 15 years old boy, Ranjit (name changed) said, "We don't want to sell drugs, neither openly nor by hiding as by this our future is being spoiled. Our future is being taken into darkness."

INNOCENT CHILDHOOD, INDULGED IN DRUGS

Balaknama Bureau

This news is about some 8 to 16 years old children who are getting addicted to drugs in the age innocent age of playing and studying. They are taking many different types of drugs. One of such place, whose name has been kept hidden, is discussed here. On this secret place, children are openly taking injurious intoxicants like Gutkha, tobacco, smacks and Ganja too. Bad thing about the shopkeeper who sells these drugs is that, like others he also sells these drugs to children too. He never refuses and fears to give Gutkha, tobacco, smacks and Ganja to small children. At present, even the children who take these drugs don't have any kind of fear from anything. When we tried to gather more information, we got to know that parent's of these children leaves early in the morning for work. At that time, they gather in one of the empty house and take intoxicants there. Sad and the shocking thing is that their parents don't even know what their children do all day. They just left their homes early in the morning and come back at 8 P.M. at the night. Because of such busy schedule, parents can't take proper care of their children. They can't look after them for whole day. Another reason of no fear is that, there is a police station near their area but the policemen never come to take a round and see what is going in their areas. The journalist tried to interact with one such child who takes intoxicants. He informed, "We children were not addicted to take drugs in past. There are some elder children who live in our neighborhood in our society only and are badly addicted to drugs. They always call us for playing in the parks. We don't want to go to them but anyhow by giving some greed they call us and when we go to them, they offers drugs to us and tell us to buy them. If we children denies then they threaten us to kill." Expressing more, another 15 years old boy, Gopal (name changed) said, "We children want that government should take some actions against them so that in future, other innocent children like us don't have to indulge in drugs because of them."



DIRTY DEEP DRAIN IS THE REASON OF CHILDREN'S FEAR AND PAIN

Balaknama Bureau

This news is about an area in West Delhi, whose name has been kept hidden. There are about 1500 slums in that area. Between these slums there is a very deep dirty drain in which accidents occurs on a regular basis. According to the survey, our journalist found that parents living in these slums go to work for earning and leave their children with elder ones in their homes. Sad thing is that, even the elder people can't look after their grand children for whole day as they are also busy in their households. Sharing their feelings and telling more about their fears, a 15 years old boy, Krishna said, " Brother, whenever our parents leaves us alone and go for their work we get very scared that anyhow we don't be the next victim of this dirty drain. There are many people and children too who have lost their lives after falling into this deep drain." The reporter then interacted with the parents of these children and asked about the compulsions and need of staying at such dangerous place and leaving their children alone. Replying, a 35 years old lady, Mrs. Kamla Devi, who belongs to Madhyapura district of Bihar said, "We don't leave our children with our will. We are forced to do so due to our



compulsions. If we take them with us then the owner of the house where we work, taunts us by saying are we going there to play with our children or for doing their household works? And if we will not go then it will e very difficult for us to survive as this is the only way of income in our homes. That's why only we have to leave our children on God's trust." Sharing her feeling and telling ore about their fear, she further added, "As long as we are away from our children, at work, we worry for them that how are they living alone at home? Are they safe or not? We don't feel light till we don't see our children after coming back to from work. After looking at them we feel safe and secure." She further told the reason for staying there, she said, "We can't leave this place as we don't have much money and if we will leave this slum then we have to stay on roads only. We have complaint about this dirty drain to the MLA of our area but he says that it's a huge government work and I can't do anything for this."

SLUM DEMOLITION PUSHING CHILDREN TO WORK

Balaknama Bureau

This news is about a slum area in South Delhi, whose name has been kept secret. In past, around three hundred to four hundred children were used to live in the slums but at present, those slums have been broken down by the government and made a big junk warehouse at that area. As the families, living there were not homeless, they went back to their villages. Approximately two years ago, the children living in this area were living happily in their slums. They used to collect trash and work as rag-pickers. They also used to go to schools and study. But sadly, as now their slums have been collapsed for making junk warehouse, they become homeless. There was no place for them to live and stay. When our journalist met the families living at this place, some children told us that even after getting homeless their parents still tried to find some work and stay in the city only. They used to wander her and there for about two to three



months. But sadly, did not found any place to work also where we can live safely and that's why they have decided to go back to villages. After going to village, these children are now living a threatening life full of problems, sacrifices, compromises and compulsions as no facilities are available in the villages, at least not like cities. Our journalist met a 15 years old boy, Rahul, who come back to city in search of some work. Telling about the critical condition of his village he said, "Condition of the children who used to live in Delhi and work as rag pickers has become very bad now. Now forced to work with their parents in the fields to earn money and survive. Before, they also used to study and go to schools but after going to villages they are far away from studies as they are always busy in their village and farm works. Expressing their feelings and fears, another 15 years old boy, Babu said, "Our house in made on the government property. Because of this reason we always fear that one day government will break our house and we will also have to wander here and there like other families in search of work and safe place to live." Keeping their safety first, another 16 years old Ganesh gave an idea. He said, "If government wants to break our home then they should give us another room or house to live so that we don't have to live on the roads."

ELDERS ARE FORCIBLY TAKING CHILDREN TOWARDS DRUG ADDICTION

Balaknama Bureau

There is a special slum in South Delhi where each and every elder person takes intoxicants and is indulge in gambling. Also there is a huge forest in that area where people go to take drugs by hiding themselves from their families. Some working children go to this forest just for playing with their friends. People who take intoxicants are so much afraid of their families that if their family members got to know about their addiction, they be thrown out of the houses. In order to prevent themselves from getting caught by their families, they use kids as their key to take intoxicants. They go to forests with them in order to play with them but after going



to forests they take drugs and even force small children also to do the same thing only. If a child refuses to take intoxicants hey threatens him/her to death. Due to fear of death, child takes the drugs. Like this, children are becoming their victims. Elder people order them to go to the shops and buy liquor and drugs for them. Due to the fear of death they agree to do so. But the sad thing is that even the shopkeeper doesn't feel sorry or bad about these children. In fact he gives them everything they ask for. When these children give drugs and liquor bottles to those elder ones, they offer them to take intoxicants as a gift. When these small children refuse to take intoxicants, they forcibly make them drink alcohol. It's been only 7 months that the situation of this area has badly changed. Before, these people have to go out and wander here and there as they used to work as rag-pickers. They used to take drugs at their work place only. But now as these people have started pulling rickshaw, they just go to the forests and take drugs there. These children also informed about this to their parents, in place of helping them they also scolded them by saying that what is the need of going to forest area to play. The children innocently replied that there we feel good due to the greenery, cold breeze and cuckoo bird.

CHILDREN ARE FORCED TO FILL WATER

Talkative Reporter Sapna and Shambhu

During a visit in Sansi Camp at Badarpur Border, our journalist noticed that some children living at Sansi Camp were going on the other side of the Badarpur Border just to fill water. They were crossing a place where the roads are always full of traffic, carrying 15-20 liters of water on their heads with barefoot from Badarpur Border to a slum in Sansi Camp. Looking at them, the reporter tried to interact with them. When the reporter asked them that why they go so far to fill water? Telling about their problems, a 15 years old girl, Sapna said, "There is no facility of water pipelines in Sansi Camp. As we don't get water there, we have to go to Badarpur Border to fill water. That's why only we children have to wander here and there in search of water." Raising questions on government, another 15 years old girl, Muskan said, "When the government needs us they come to us just for getting votes, they never try to know our problems and situations. Not only elder children of 17 years but children of 10 years also have to go to Badarpur Border to fill water. We children have to cross the roads at least 3 times, with a load of 20 liters on our head. Public does look at us with sympathy but nobody come to help us. Nobody knows how much hard work we children have to do



just to get water. We children don't even have the facility of drinking water so we have to go there to fill water. Worst part is that even after coming so far after so many problems, sometimes we don't even get water to fill. Those days we children have to stay thirsty for whole day or have to drink dirty drains water only because of which we children fall ill." the journalist then asked shockingly that is there no water tanker facility in there slum area? Some children informed that water tanker never comes in our slums. They have tried a lot for this but it never comes. It hardly comes once in a month which is not at all sufficient for them to fill water. Sharing their thoughts, children said, "If tanker starts coming in our slum daily then we children don't have to go to Badarpur Border just to fill water. It will result in our good future as then we will have enough time to go to schools and play."



PARENTS SACRIFICES THEIR SLEEP FOR THEIR DAUGHTER'S SAFETY

Balaknama Bureau

Our team organized a meeting with the girls living under the bridge. During the meeting many questions were raised. One of such question which was asked by the reporter is that what different problems do these girls have to face while living under the bridge? On this topic only, Balaknama's reporters took a survey with many girls. During the interaction, a 15 years old girl, Radha (name changed) said, "Accidents and different incidents occur under the bridge on a regular basis. Like some boys who are involved in wrong activities and are indulged in drugs also live with us under the bridge. Their job is to only trouble public. They do pick-pockets work in the trains and disturb small children. Not only this, when we girls are sleeping at night they try to lure us for sex at mid night. We girls have raised our voice against them, but nothing happened. They threaten our parents that if they speak more then it will be not good for their daughters. Under this fear, our parents also don't raise their voice against them." Telling about an incident, she further added, "Just 2 months back, a drunken man came and slept with a young girl's mother. When he tried to lure her for sex, she screamed and everyone woke up. After that everyone beaten him a lot. Not only this, but whenever a girl wears any new dress, people look at her with filthy eyes and talk abusive things for her." Telling about their safety and security, some girls said that their parents have to wake up for full night just for their daughter's safety.

NO PLACE TO LIVE FOR WORKING AND STREET CHILDREN DURING RAINY SEASON

Talkative reporter Bholu and Shambhu



Our Balaknama team took a survey on working and street children living under the bridges. During the survey some children said that they feel a lot of trouble in rainy seasons as their luggage gets wet because of rain water. Sharing their problems, they said, "When it rains, we have to face a lot of trouble. Trouble for food as all our food gets soiled due to rain water because of which we have to stay hungry for long. Trouble in sleeping at nights, as if it rains whole day or night we don't have any dry place to sleep. We have to sleep on wet roads only. Due to which we fall sick. Trouble of getting money and medicines as after getting ill we need money for our checkup and medicines but due to heavy rains we can't go for begging also can't go out for working as rag-pickers." Giving more information, 15 years old boy, Raja (name changed) said, "After heavy rains, small holes and digs on the roads get filled with rain water or dirty water. Whenever a motorbike or a car passes by the road, dirty water gets sprinkled on us. Because of which the left dry area also gets wet." Expressing more, he further added, "We children just want to live safely. We want that government should make a safe house for us where we can safely live in any situation under any conditions."

A SALUTE TO FRIENDSHIP AND DEDICATION

Talkative reporter Salman and Shambhu



This news is about 2 friends. Both of them come to the stations due to poor conditions of their families. At present, they are living at Old Delhi railway station, where they are always ready for helping other children living there. Also they both are talkative reporters of Balaknama. The best thing about their bond is that they always stay together and helps each and every child whom they find in trouble. They both work as rag pickers on the same railway station only to fulfill their stomach in order to survive. Recently, there were 3 children who came to Delhi in order to visit Red Fort. But due to too much crowd they get separated from their parents and anyhow reached the railway track, where trains coaches are being washed. When the 2 friends saw these 3 children, they went towards them. They asked them that why were they crying and where did they belong to? A 10 years old boy, Gopal from one of the three children said, "We came here to see red fort with our parents but due to too much crowd we got separated from them. We children tried to find out our parents near the Red Fort but were unable to find them." Listening to them, both of the friends came to Red Fort with all of them in order to find their parents. They both searched many places and found their parents sitting and crying outside the red Fort. One of the 2 friends, Salman told them, "You should be very careful about your children. When you are coming to visit such crowded place you should take care of them properly." With love and greetings, the parents thanked these 2 friends and offered them some money as a gift but they denied to take that amount and said that because of their helping and searching nature only both of them are known as 'searcher journalists.' Likewise, they both told about their work and Balaknama newspaper to the parents too.

WILL YOU PAY FOR SAHEEN'S FAMILY'S EXPENSES?

Talkative reporter Saheen and Deepak

This news is of Saheen, a 10 years old little girl, who lives in Shakurbasti with her family. There are 10 members in her family: 8 brothers-sisters and father mother. One of her eldest brother got married and he did not stay with them. He stays at another place with his wife. He did not even contact his parents and brothers and sisters. Saheen's father pulls rickshaw and is indulged in drinking too. She told the reporter that whatever money her father gets to earn, he use it for our studies purpose and most of it goes in his alcohol only. From her siblings, 4 go to school to study and rest 4 helps in households and other works. During the past, Saheen also used to go to school and study in 3rd class but due to weak economic conditions she left her study and got involved in other works. After leaving her school, Saheen started selling cement and coal. Shakurbasti railway station is the name of the place from where she used to bring coal and cement. As most of the coal and cement trains passes through this station, she goes there to collect the leftover. Some coal falls down as the coaches are overloaded, after the train passes Saheen collect the fallen coal pieces and sell them in Dhabas and hotel in 20 Rs per kg. Even after doing this work, she did not get enough money for her family's survival as how can ten members can survive only in 50-60 Rs, so she also went to bungalows (Kothis) in search of some work in order to earn more money but sadly, she is so young that no one gives her work in their bungalow. Sharing her felings, Saheen said, "If someone starts taking care for my family's expenses then I can again start my studies."

GIRLS UNSAFE IN TODAY'S SOCIETY

Balaknama Bureau



This news is about a place in Agra, where in past girls were safe. Girls used to travel alone, go to schools. There were no restrictions on them at all. Even after returning back from school, they were free to roam around without any fear. At present, situation is been totally changed in that area. Now, girls are not allowed to go to schools, even they are forbidden to come out of their homes. The reason for such bad situation is that, 2 months back a 15 years old young girl was raped and was left die. She also used to go to school daily. There were some boys in her way to home from school and vice versa, which used to harass girls and women travelling from that route. No one raised their voice against them. One day when this 15 years old girl was coming back from school, one of the boys tried to harass her and started touching her. She slapped her and came back to home. From that day only that boy was keeping eyes on her for taking revenge of her slap. After few days, when she was coming back to home from school, he took advantage of lonely roads and secluded place and raped her brutally. The girl was badly injured and died after some time. This incident has created fears in the minds of parents. That's why only they don't allow their daughters to go out the house. In fact, some parents have taken back their daughters name from the schools also. They fear that those boys will harass their daughters also. Girls are worried about their future. They worry that now because of this incident they have to stop their study and kill their dreams. People living there informed that such incidents are becoming normal these days. Girls and women are unsafe at this place in Agra. People want to raise their voice against them but they don't find anyone who can help them and punish those boys.

RANJIT'S WISH: CAN SOMEONE CHANGE MY FATHER'S BEHAVIOR

Talkative reporter Ranjit and Deepak

This story is about a 16 years old boy, Ranjit. 10 years ago, he used to live in Ghaziabad with his family. There are 3 siblings of him in his family who study in a private school. Looking at them, he also desired to go to school. When he shared his thought of studying like his siblings, his father replied that he is unable to pay his siblings fees how can he pay his school fees also? That time his father did not said anything to him. Ranjit said, "I used to be quite and alone after my father's reaction for my study. Looking at me, anyhow he admitted in the school. But sadly, don't know for what reason he was fired from his job. At that time my father got angry and scolded me a lot. He even said that I am his biggest trouble. As soon as you started going to school, I was fired from my job and then he started crying in front of me only. Due to this reason, he took my name back from the school and for my family's survival and my siblings fees, I was sent to a welding shop to work." Telling more about the difficulties he as to face at the shop, he further added, "It was a very difficult work for me. As this work was new for me. While welding I got burns because of the sparks and flames coming out of iron. When I did not work properly due to the sparks and burns, my



boss used to scold me. Still I had so much courage that I did not stop working. I continued to work for few months but when the owner started crossing his limits, I decided that I will not work anymore at this shop. I wanted to share all these things to my father but was afraid of him. Anyhow, showing some courage I told him everything. Happily, he also understood my problems and allowed me to leave this work." After that, his father put him on a noodles shop. Sharing his experience, he said, "This time owner was more dangerous than the welding shop's owner. Unlike him, he used to scold me very badly at small things only. One day when I was a little late for my work, he started beating me without asking me anything. Due to this behavior, I left this job also." Telling about the consequences of leaving his next job too, he said, "When I went back to my home and told about my decision to my father, he got very angry. Seeing this behavior of my father, I left my family and now I stay at railway station only." At present, Ranjit used to work as a rag-picker for his survival. Expressing his love for his siblings, he said, "I love my siblings a lot. I still meet them secretly. But I don't meet my father because he still abuses me and hates me. My father loves my siblings a lot. I just want that my father should also be polite to me like he is with my siblings and should allow me to study like my siblings then only I will go back to home."

CHILDHOOD CRAVING FOR DRUGS

Balaknama Bureau

One of our journalists went to Agra and surveyed some areas. During the survey and interview, our journalist observed that many people and children uses bull print tooth paste for cleaning their teeth. Their parents are being using this powder from many years. Due to which their teeth have become black in color and even whenever a child try to eat something little hard, they feel pain in their teeth. In place of going to doctor for their treatment, their parents told them to use this bull print tooth powder. Parents think that it will cure their child's pain and will strengthen their teeth muscles. But that did not happen. Children who are using this powder are slowly becoming



addicted to it as the components used for making this powder are some drugs and are very injurious for health. This tooth cleanser is not an ordinary cleaning powder. Telling about the symptoms, a 15 years old girl, Monica (name changed) said, "After using this bull print powder, we feel dizziness and sometimes vomiting too. Our parents think that this is the way of curing our pain and strengthening our teeth of this powder but they don't know that it is harmful for us. At present, situation of teeth of children has been badly affected. Right now, more than two hundred children are using this powder on a regular basis. At first, children used to use it for cleaning teeth but now children are taking this powder as a drug. Now they need it in their mouths does not matter what type of work they are doing." Due to this powder, children have many barks in their mouths. Today's condition is such that, that if food is not given to these children it will be fine but they can't live without this bull print powder.

WILL YOU FULFILL OUR INCOMPLETE DREAMS?



Talkative reporter Guddi and Deepak

Street and working children also have dreams in their eyes. Street and working children also wants a platform to show their talent like other artists. Their dreams never come true. They just enjoy by singing and dancing when they go for collecting garbage. Nobody wants to see their talent. If street and working children try to show their talent at public level, they just ignore them by saying that it is their daily routine for earning money. The journalist met some of the kids who have a lot of interest in learning dance. These children have not yet got any such partner who can take them forward. There are some children from street and working children those are specialized in dance but they did not get a chance to show their talent. If anytime they get a chance or opportunity to show their talent then surely they will set the stage on fire. People who hate street and working children will ever accept them and help them to move forward? Till date, nobody has spoken politely to them; so how will they get a dance teacher? Raising these questions, children said, "If some brother or sister agrees to give us their time to train us in dance then we children can also show that we are not different than others and we can also beat them. All we need is just a single chance to show our talent. So that we can also gain some respect in other's eyes. For this we need your help. Will you people help us in fulfilling our incomplete dreams?"

INNOCENT CHILDHOOD SURVIVING ON RISKY ROPE

from page 1

my parents." Worst thing we got to know is that after listening to their complaints from teachers, when they go back to home, their parents don't even give them food to eat rather they beat them badly and force them to learn games. Expressing his fear, Sameer further added, "Due to the fear of getting beaten, we children work very hard so that we can learn games. At present, there are children who have learnt everything and have started to show games on roads and empty places to earn money." Another 11 years old boy, Raju (name changed) said, "When I was just three years old I started learning different games. After eight years of learning, I started performing games in front of people as I had totally learnt the tricks of games.

At present, I and my parents always search for crowded places to perform our games like temples, markets and fares. First my parents fit the bamboo sticks on the roads then they ties the rope from one bamboo stick to the another stick. After they finish tying up the rope, I sand on the rope with a bamboo stick (which we use for balancing ourselves and to prevent us from falling down). At the time, when I walk on the rope, my parents start playing drums as loud as they can in order to collect more people." Some children informed that through this game they earn a good amount of money but it is very dangerous for them to walk on the ropes. Telling about their fears, children said that if anyhow ropes get broken and they fall, they will be badly hurt also people will make fun of them and will not give them a single penny.

Another, 12 years old girl Anjali (name changed) said "We children also want to go to school like all other children, but whenever our parents hear us talking about studies, rather than supporting us they scold us. They say that children of our category (caste) cannot achieve success and money through education. We have to survive on these games, as if we got to school, we will be diverted and spoiled."

INNOCENT KIDS FEARING GHOSTS

Balaknama Bureau

This news is about 250 slums near Badarpur Borer, where everyone, parents as well as children, go out for work. All children and parents go to distant places in search of some trash and to collect garbage. These children have to live this kind of life. Through some people, the journalist got to know that there is a huge ruined building near these slums. People know this building by the name of the forest. According to the people living there, thousands of years ago, there was a king. When he died, people started living here by making slum in this area. True reason of fear of these people is that dead bodies of humans and animals are being buried at this place only. Sharing their fears, a 5 years old boy, Kanhaiya (name changed) said, "When we sleep at night, we hear weird sounds and even sounds of children crying from that ruin." After listening to him, our journalist himself went to see the ruin building. He also found it very scary and weird. According to the parents of these children, it was not like this in the starting. The problems are increasing after the day when people started burying the dead bodies the ruin. People living in this area are so much afraid that they go inside their homes before 7 PM in the evening and come out in the morning only.



WITH THE HELP OF A JOURNALIST, AN 8 YEARS OLD CHILD REACHES HOME SAFELY

Reporter Jyoti

During a visit at Tughlakabad Railway station, one of our journalists saw a boy crying and running on the railway tracks. The journalist ran towards the child as fast as she can and pulled him from the track as the train was coming in full speed on the same track. Our reporter relaxed the child, and gave some water to drink. The child was so shattered and afraid that he could not even tell his name. Our reporter

to afraid from her as she also works for children like him. Listening to her, he also started feeling safe with her. Then he told about himself. Sharing his story, he said, “I came here with my friends to buy juice to drink but my friends left me and ran away because of which I forgot the route to go back to my home.” The journalist asked him that if he could remember some things which he saw

a long conversation, the boy was unable to tell the route for his home. Our journalist then took the child with her and went to all the possible slums



of Tughlakabad she can and inquired about this child but no one knew him. The journalist was wandering here and there suddenly the child recognized his school and said that he knows this school. He goes there to study. He said that he knew his home’s route from that place and started running towards his home. Journalist did not leave him and went to his home with him. She was shocked to see that all of his friends were sitting in his house and was drinking juice and his parents were not worried at all for their son. They were sleeping inside their house without any worries. The journalist then talked to his parents and shared the incident,

should send him alone at least not with his friends. If today I have not reached on time, your child would have lost his life due to a train accident.” After listening to her, the child’s parents were shocked. They promised the reporter that now they will not send him alone anywhere, out of the house.” Explaining the child, she further added, “You should not go out anywhere without your parent’s permission. Even if someone from your friends or known ones forces you to go out with them, you should always tell your parents about it and follow what they say.”

WHEN WILL SYSTEM AND SOCIETY FULFILL THEIR RESPONSIBILITIES?

बालकनामा ब्यूरो

Often, school children from school are getting information that the behavior of school teachers is not good. They only do what they want to do. They come to school on time but rather than going to classes they start talking to one another. They did not put attention towards the studies of children. Whenever a

visit the school and asks them that why students don’t have any knowledge? They blame it on children only that they don’t study well and they are always involved in playing games.



Telling about more problems, children said, “Except this, we have many other problems like we did not get suitable food to eat. Sometimes it’s just water and spices. Weird thing is that sometimes even we found small insects in our food. That’s why we bring money from our homes to buy and eat something. Shocking thing is that if anyhow our teachers get to know that we are having money than they take it from us and we children have to stay hungry for the whole day. Another thing is that when our parents come to meet our teachers in the school just to know how we are in studies, our teachers tell lie to them that we children did not study anything at all rather we are busy in talking with one another.”

Expressing their anger out, they further added, “We children don’t do anything like this, in fact teachers only don’t want teach us. They are busy in their talks. They lie to our parents

as like everywhere, here also

due to their words. Due to all these things we have to face a lot of loss in our education. We are becoming weak day by day in studies.” Giving some ideas on how their teachers will teach them, they said, “We children

should surprisingly come and take a visit in our school. They

documents so as to know the truth. All over we just want that government should take some strict actions for our education so that we can also study well and can have a bright future.”

WILL SOMEBODY HELP PRADEEP?

Talkative reporter Bhawna and Jyoti

years old boy, Pradeep, who goes alone at different railway

Old Delhi and Anand Vihar. Sadly, Pradeep is physically disabled since childhood. Even in his family, no one go to work so he has to go out for begging for their survival. Pradeep have 2 younger brothers who studies in a government school. When he was just 2 years old, his father died. After his father’s death, Pradeep’s mother started earning for their survival. Sadly, when he was 15 years old, his mother fell ill because of tuberculosis (tb) due to which Pradeep was forced to beg for their survival. Pradeep is physically disabled due to



which his mother did not want to stay away from her child. Pradeep stopped begging for past 2 months. He went to a shop in search of some work so that he can earn some money for his family’s survival. Telling his story, Pradeep said, “When I went to the shop, the shopkeeper made fun of me and said hat he can work on a disable person like you can work on my shop? After that incident only, from the very next day I again started begging at different places and stations. I even take out my clothes for begging in the train, but still I am unable to collect the amount of money needed for my mother’s checkup. That’s the reason for why I stay at the stations for at least 2 to 3 days. As soon as I collect 200 Rs, I go to back to home. From these 200 Rs only, we have to buy raw material for food, and also have to look after my brother’s studies.” Requesting the government, he further added, “I just want that my mother’s treatment should be done as soon as possible. And the government should also give me the amount of pension given to disable persons. With that money and the amount I get after begging, I will look after my family and home.”

CHILDREN ARE LYING TO THEIR PARENTS TO FULFILL THEIR NEEDS

Balaknama Bureau

There are some children who work as rag pickers by lying

needs. They lie to them in the name of coaching centre to study and work as rag pickers to earn some money so that

got to know about this, he tried to interact with them. During the conservation, he found that these children need

like something new and tasty to eat or new cloths for which

streets and jungle areas. He also got to know that these

in their school bags only by hiding it from their families. When they reach half of the

bags and hide their school bags in the jungle areas only. When these children were collecting trash, journalist went to them and asked that why they lie to their parents and tell them that they are going to coaching? Telling the need of lying, a 11 years old boy, Golu (name

parents don’t give us money to buy new cloths and to eat something for this reason only we children collect trash.

a day, which is enough for us

amount our parents give us, it all gets spend in buying new copies for school only. We don’t have money to buy new cloths for us.” after listening to them, journalist talked to their parents also. He found that, their parents did not get

children’s needs. And for this reason these children work as rag pickers and lie their parents

they don’t know that in order

being diverted from studies.

BALAKNAMA AND BADHTE KADAM IN NEWS

WE ARE SHARING SOME PICTURES OF THESE MOMENTS WITH YOU….



On 9th July, the 15th establishment day of Badhte Kadam, workers of Balaknama, Chetna and Badhte Kadam celebrating in Delhi and Lucknow.

Balaknama and Badhte Kadam’s worker celebrating Independence day with other street children.



How these children are finding their way from streets to schools

highlighted the important work of Chetna, Street to Children.

Glimpse of a program organized by Chetna in which Minister of Women and Child Welfare in the government of UP, Mrs. Swati Singh was also present.

Balaknama thanks to the Diamond Sponsor, Sardar Nagina Singh Ji, for helping us in publishing our newspaper. You can also help us for publishing.

This newspaper is for limited delivery only. All the pictures are printed by the approval of the children.

Balaknama is written originally in Hindi by children reporters. This is translated version of Hindi and translation assistance is taken from adults ensuring the original feel intact. Translated by Vibha Shakya.

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-66 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

बच्चों की तस्करी पर नहीं है लगाम

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकारों ने दिल्ली की कुछ विशेष जगहों पर जाकर यह जानने के लिए छानबीन की कि वर्तमान में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की दशा क्या है? पता चला कि लगभग 20-25 बच्चों को बिहार यू.पी., उत्तराखंड, नेपाल तथा राजस्थान से दिल्ली लाया गया है। इन बच्चों को अलग-अलग प्रकार के खतरनाक कामों में लगाया जा रहा है। आईए विस्तार से जानते हैं कि कैसे इन बच्चों को मोहरा बनाकर राजधानी दिल्ली जैसे शहरों में लाया गया है?

पत्रकार इस विषय को लेकर उन जगहों पर जा पंहुचे जहां पर अधिकतर बच्चे काम में लिप्त पाए जाते हैं; जैसे लालबत्ती, रेलगाड़ी, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा व भीड़-भाड़ वाली जगहों आदि पर। इन स्थानों पर जाकर पत्रकार काफी बच्चों से मिला जिनमें से कुछ भीख मांगते पाए गए। कुछ रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनते हुए व बस अडड़ों पर पब्लिक की जेब काटते हुए। जब पत्रकार ने इन बच्चों से बात करनी चाही तो यह पत्रकार को देखकर भागने लगे। काफी मुश्किल से इन बच्चों ने पत्रकार की बात सुनी। पत्रकार ने पहले अपने बारे में जानकारी दी, फिर इन बच्चों के साथ अपनी संवेदनात्मक हमदर्दी दिखाते हुए इन बच्चों से छुपा सच जानने की कोशिश की। लेकिन यह बच्चे अपने बारे में जानकारी देने के लिए तैयार नहीं थे। लगभग दो से तीन घंटे तक इन बच्चों के साथ मित्रवत चर्चा-विचार करने के बाद बच्चों ने अपने बारे में जानकारी दी। ये बच्चे डरे और सहमे हुए थे, क्योंकि इन बच्चों के जो मालिक हैं वे बहुत दुष्ट हैं। अगर ये बच्चे किसी अनजान व्यक्ति से बात करते हुए दिख जाते हैं तो इनके मालिक इन बच्चों पर अत्याचार करते हैं। पत्रकार ने बच्चों से बातों-बात



में पूछा कि आप बच्चे कहां से आए हो और यह काम क्यों कर रहे हो? 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया कि मैं बिहार के बरौनी जिला का रहने वाला हूं। हम बच्चे भूतकाल में अपने गांव में पढ़ाई-लिखाई करते थे लेकिन हमारा मालिक हमारे माता-पिता को पैसे और शिक्षा का लालच दिया कि मैं तुम्हारे बच्चे को शहर ले जाकर पढ़ाई-लिखाई करवाऊंगा और साथ ही साथ प्रतिमाह तीन हजार रुपए भी दूंगा। इसी लालच में फं स कर हमारे माता-पिता इन दुष्ट व्यक्तियों के साथ भेज दिए; लेकिन हमारे माता-पिता भी क्या करते। उन्हें भी बहुत मुश्किल से घर का खर्चा निकालना पड़ता है। दुख की बात यह है कि ये लोग हमारे माता-पिता को जिस तरह बोलकर हमें लेकर आए थे कि हम तुम्हारे बच्चों को स्कूल में पढ़ाई करने भिजवाऊंगा; ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। उल्टे हमारा मालिक हम बच्चों से जबरन काम करवाने लगे हैं। अगर हम बच्चे काम करने से मना करते हैं, तो हमारे मालिक अपने साथ रखने से इंकार कर देते हैं। हम इनके पास से भागने की कोशिश करते हैं, तो हम बच्चों को उन दो बच्चों की याद आ जाती है जिन्होंने यहां से भागने की कोशिश की थी, उनके पकड़े जाने पर उन्हें तमाम तरह से प्रताड़ित किया गया था, डराया-धमकाया गया था। यह बात लगभग एक साल पहले की है। वे दोनों बच्चे भी इसी व्यक्ति के चंगुल में फंसे हुये थे। दोनों बच्चे इस मालिक के दुर्व्यवहार की वजह से मौका पाकर भाग गये, तो उन दोनों बच्चों पर चोरी का इल्जाम लगा दिया गया और उन बच्चों के घर तक पहुंच गये। उनके सीधे-साधे माता-पिता से झूठ बोला कि तुम्हारे बेटे ने मेरे घर में चोरी की है इसी डर से यह भागकर आ गया है। अब तुम्हें इसका हजार्ना भरना पड़ेगा, नहीं तो मुझे मजबूरन पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करानी पड़ेगी। इसके लिए तुमको जेल भी जाना पड़ सकता है। जेल जाने के डर से डरे-सहमे मेरे माता-पिता ने अपनी जमीन गिरवीं रख कर उस व्यक्ति को हजार्ना दिया। इसलिए हम बच्चे इसके पास से भागने की कोशिश भी नहीं करते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को गांव से लाने के बाद कहां पर रखते है? 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) ताहिर ने बताया कि भईया हम बच्चों को यह लोग एक जगह पर नहीं रखते हैं। इनको जिस स्थान पर कमाई का जारिया दिखाई देता है, यह उसी स्थान पर हम बच्चों को रखते हैं और दूसरी बात यह है कि इन पर किसी का शक न हो, इसलिए यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलते रहते हैं और हमारे माता पिता को पैसे भेजते हैं या नहीं हम बच्चों को कुछ पता नहीं है और हम अपने माता-पिता से फोन पर बात भी करना चाहते हैं, तो हमारे मालिक नहीं करने देते हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

रस्सी पर खेल दिखाकर जिंदगी गुजार रहे हैं मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर नेहा व रिपोर्टर पूनम

जिनको आप बंजारों के नाम से जानते हैं इन बंजारों का रहने का कोई ठिकाना नहीं होता। यह खाली जगह को अपनी कमाई का जरिया बना लेते हैं। अपना तम्बू गाड़कर रहने लगते हैं। शायद इस बारे में कोई-कोई जानता होगा कि बंजारों में एक विशेष नियम भी होता है; वह नियम है कि वे अपने बच्चों को शिक्षा से वंचित रखते हैं; क्योंकि उनके बच्चे घर जैसे ही जन्म लेते हैं, उसी समय से उन्हें पढ़ाई-लिखाई की बात करने के बजाए इनके माता पिता अपनी कमाई का जरिया इन मासूम बच्चों को बनाते हैं और जैसे ही बच्चा तीन-चार साल का होता है, उन बच्चों को खेल की ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है; ताकि इन छोटे मासूम बच्चों को जानकारी मिल जाए कि किस प्रकार से लोगों के सामने अपने खेलों को प्रकाशित करना है। 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) समीर ने बताया कि जब मेरे माता पिता खेल की ट्रेनिंग के लिए भेजते थे तो खेल सीखने के दौरान मुझे बहुत तकलीफ होती थी; क्योंकि हमारे जो खेल सिखाने वाले अध्यापक थे वह हम जैसे छोटे बच्चों को रस्सी के ऊपर चलना सिखाते थे। लेकिन इन पतली रसियों के ऊपर चलने में मुझे बहुत डर लगता था। कई बार तो मैं डर के मारे बेहोश भी हो गया। फिर भी हमारे अध्यापक जबरदस्ती रस्सी पर चलने के लिए



बोलते थे। अगर मैं उन्हे मना करता था तो मुझे मारने के लिए दौड़ते थे और हमारे माता पिता से भी शिकायत करते थे। अध्यापक की शिकायत की वजह से घर जाने के बाद हमारे माता-पिता हमें खाना भी नहीं देते थे और मारने-पीटने लगते थे। इसी डर से हम बच्चों ने काफी मेहनत की। वर्तमान में हम में से कुछ बच्चे ऐसे हैं जो खेल दिखाना सीख गए हैं। 11 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजू ने बताया कि जब मैं तीन साल का था तब मैंने खेल सीखना शूरू किया। आठ साल के बाद मैं पूरी तरह से खेल दिखाना सीख गया हूं और यह भी जान गया हूं कि लोगों के सामने कैसे खेल दिखाना है। वर्तमान में हम अपने माता-पिता के साथ अलग.अलग जगहों पर; जहां पर अधिकतर भीड़भाड़ होती है; जैसे- बाजार मेला व मंदिर। इन जगहों पर हम बच्चे खेल दिखाते हैं। खेल दिखाने का तरीका कुछइस तरह है कि हमारे माता-पिता पहले बांस के खंबे गाड़ते हैं फिर उस पर रस्सी बांधते हैं, फिर मैं उस रस्सी पर खड़ा होता हूं। मेरे हाथ में एक बांस की बल्ली पकड़ा देते हैं जिससे मुझे दोनों तरफ का बैलेंस बनाना पड़ता है; ताकि मैं उस रस्सी पर से नीचे ना गिर जाऊँ; और मेरे माता-पिता नीचे बैठकर ढोलक बजाते रहते हैं, ताकि पब्लिक ज्यादा से ज्यादा इकट्ठी हो जाए। बच्चों ने बताया कि इस खेल में हमारी कमाई बहुत अच्छी हो जाती है, पर हमारे लिए यह एक बहुत बड़ा खतरा है। अगर खेल दिखाते वक्त रस्सी किसी भी वजह से टूट गई तो हमारे शरीर में बहुत बुरी तरह से चोट लगने का डर रहता है; और पब्लिक भी हमारा मजाक उड़ाती है और हमें एक रूपया भी देने के लिए तैयार नहीं होती। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अंजली ने बताया कि हमें भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाने का मन करता है लेकिन हमारे माता-पिता जब पढाई-लिखाई का नाम सुनते हैं, तो हम बच्चों को डांटने लगते हैं, कहते हैं कि हमारी जाति के बच्चे पढ़ाई-लिखाई करके भविष्य में कामयाबी हासिल नहीं कर सकते। स्कूल जाने के बाद वह बिगड़ जाते हैं, इसलिए बच्चों को पूरी जिंदगी अपने खेल के सहारे जीना पड़ता है।



आगरा में बढ़ते कदम और चाइल्ड लाइन के सदस्य 71 वां स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार !

बालकनामा का अंक 66 आपके हाथों में सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है। सभी बाल-रिपोर्टर परिश्रम कर रहे हैं। रिपोर्टिंग में विविधता आ रही है। बालकनामा का प्रसार सोशल मीडिया पर भी किया जा रहा है। देश की बड़ी घटनाओं का बालकों पर प्रभाव पड़ता है। किसी राज्य में नई सरकार आने पर स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं के समाधान की आशा जाग्रत होती है। स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाने का काम बालकनामा के माध्यम से स्वयं स्ट्रीट चिल्ड्रन कर रहे हैं, इसका सकारात्मक प्रभाव सरकारी मशीनरी पर पड़ता है और निर्णायक जगहों पर विचार विमर्श होता है।

सभी बाल साथियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं के साथ हम आशा करते हैं कि हम अपना बेहतर भविष्य बनाने में अवश्य कामयाब होंगे।

संपादकीय टीम

खुले में नहाती हुई लड़कियों को देखकर कुछ लोग करते हैं अश्लील हरकत

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने पुल के नीचे रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की, जिसमें ज्यादातर लड़कियों ने भाग लिया। उन्होंने अपनी परेशानी के बारे में बताते हुए कहा कि हमारा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए हम अपने परिवार के साथ बिहार के झाड़खंड जिले से दिल्ली में रहने के लिए आए हैं।

13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सिमरन ने कहा कि मेरा पूरा परिवार पुल के नीचे रहता है। हम अपने परिवार की गुजर-बसर करने के लिए भीख तथा कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। मुश्किल से हमारा गुजारा हो पाता है। मीटिंग में अपनी बात रखते हुए कहा कि हम सभी लोग इसी पुल के नीचे रहते हैं। यहीं खाना-पीना तथा नहाना-धोना करते हैं।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने बताया कि जब हम लड़कियां इसी पुल के नीचे वस्त्र का



घेरा बनाकर नहाते हैं, तो इस पुल के नीचे से गुजरने वाले ऑटो तंथा रिक्शे वाले व कुछ पब्लिक हम लड़कियों को नहाते हुए गंदी नजर से देखते हैं और अपने ऑटो के अंदर हस्तमैथुन करते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कलपना ने बताया कि हम में से कुछ लड़कियां 18-19 साल की हो रही हैं। इन लड़कियों को देख कर लोग अश्लील बात बोलते हैं और जब हम रात को सो रहे होते हैं, तो कभी-कभी तेज हवा चलने की वजह से हमारे शरीर पर से वस्त्र हट जाते हैं तो यह लोग रात के समय भी अपनी गाड़ी के अंदर बैठकर हमें घूरते रहते हैं। इसी वजह से हम लड़कियों ने सोचा कि अब शौचालय में नहाने जाएंगे। लेकिन हमारे आस-पास कही दूर-दूर तक शौचलय नहीं है। हमारे आस-पास एक मेट्रो स्टेशन है। इस स्टेशन के अंदर शौचालय भी बना हुआ है लेकिन मेट्रो के कर्मचारी हम लड़कियों से बहुत ज्यादा ही पैसे मांगते हैं। जितने पैसे वह मांगते हैं उतने पैसे तो हमारे एक दिन का खर्चा है। इसी परेशानी को लेकर हमारे माता-पिता चिंतित रहते हैं कि कभी हमारे साथ कुछ गलत ना हो जाए। हम लड़कियां चाहते हैं कि हमारे पुल के नीचे एक शौचालय व्यवस्था की जाए ताकि हम लड़कियां इन गंदी नजरो से बच सके।

पिता की गलत सीख ने बनाया भट्टा मजदूर

रिपोर्टर पूनम

लगभग 25 बच्चे जिनकी उम्र 12 से 16 साल तक है वह अपने पिता के साथ दूसरे शहर की ओर जा रहे थे, तभी पत्रकार उन बच्चों के पास पंहुचा और इन बच्चों से बात करने लगा कि आप बच्चे कहां जा रहे हो? 13 वर्षीय परिवर्तित नाम अर्जुन ने बताया कि हम सभी बच्चे ईंट के भट्टे पर काम सीखने अजमेर व राजस्थान जा रहे हैं। पत्रकार यह बात सुनकर चैंक गया और पूछा कि आप बच्चे ईंट के भट्टे पर काम सीखने क्यों जा रहे हो? 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) संजय ने बताया कि हमारे माता-पिता इस काम के अलावा और कोई दूसरा काम नही सिखाते हैं। ईंट के भट्टे पर हमारे पिताजी ईंट बनाते हैं और हम बच्चे देखते हैं कि ईंट बनाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है? हमारे पिताजी कुदाल से मिट्टी खोदते हैं, फिर पानी डालते हैं और पानी डालकर दो तीन दिन के लिए छोड़ देते हैं; ताकि वह मिट्टी अच्छी तरह से गीली हो जाए। उसके बाद पिताजी पैरों से मिट्टी को खूंदते हैं, फिर हाथों से मिट्टी को मिलाते हैं, उसके बाद खांचे से ईंट बनाते हैं। हम बच्चे जब यह देख रहे होते हैं तो भट्टे का मालिक हमें खाली देखकर बहुत गुस्सा होता है। इसी डर से हम बच्चे



भी अपने पिताजी के साथ ईंट बनाने में हाथ बटाते हैं। वर्तमान में हम बच्चों को सिखाया जा रहा है कि पकी हुई ईंटों को भट्टे में से कैसे बाहर निकाला जाता है, भट्टी के अंदर जाने के लिए बोलते हैं। एक वस्त्र नाक व सिर में बाधने के लिए दिया जाता है ताकि हम बच्चे भट्टे में से निकलने वाले प्रदूषण से बच सकें। लेकिन इस वस्त्र से भी कुछ फायदा नहीं होता है। हमारे शरीर पर धूल मिट्टी पड़ने से हमारा शरीर लाल रंग का हो जाता है, अगर भट्टे के अंदर दो घन्टे लगातार काम करते हैं तो प्रदूषण के कारण दम घुटने लगता है; क्योंकि ईंट निकालते वक्त भट्टे में से बहुत धूल उड़ती है। धूल उड़ने की वजह से हमें आस-पास कुछ दिखाई नहीं देता है। परेशान होकर हम बच्चें इंट इधर-उधर फेंकने लगते हैं। इससे कुछ ईंटें टूट जाती हैं इसके बदले में हमारे पिताजी को मिलने वाली तनख्वाह में से कुछ पैसे भट्टे का मालिक काट लेता है। इसके बावजूद भी हमारे पिताजी यह काम सिखाना चाहते हैं। पिताजी को लगता है कि इस काम में बहुत पैसे हैं और एक अच्छा हुनर भी। अगर हम बच्चे ईंट बनाने का पूरा तरीका सीख गए तो हमारा भविष्य अच्छा बन जाएगा; क्योंकि इस दुनिया में सारे काम बंद हो सकते हैं लेकिन घर बनना कभी बंद नहीं हो सकता और लोगों को घर बनाने के लिए ईंट की बहुत ज्यादा जरूरत पड़ती है।

पैसा कमाने के लालच में बच्चे हो रहे शिक्षा से दूर

रिपोर्टर चेतन

दिल्ली सरकार ने आम पब्लिक की सुविधा के लिए बैट्री रिक्शा का निर्माण किया है। जब से बैट्री रिक्शा चलना शूरू हुआ है तब से रिक्शे वालों की कमाई दो गुनी हो गई है। पहले लोग नॉरमल रिक्शा चलाते थे। उनको नॉरमल रिक्शा चलाने में बहुत तकलीफ होती थी; क्योंकि रास्ते में ऊंची-नीची सड़कों का सामना करना पड़ता था। इस कारण उनके पैरों और पूरे शरीर में दर्द होता रहता था। इस रिक्शे को चलाने में पूरे शरीर की ताकत लगती थी। इस वजह से सरकार ने बैट्री रिक्शा का निर्माण किया। इससे लोगों को काफी राहत मिली। लेकिन कुछ लोगो ने इस काम को कमाई का जरिया बना लिया है और लोगों को लगने लगा है कि इस काम में बहुत अधिक कमाई है। इसी लालच के चलते वेस्ट दिल्ली में रहने वाले कुछ लोग पैसे कमाने के चक्कर में अपने ही बच्चों को इस काम में लगा रहे हैं। और तो और बच्चे स्कूलों से भी नाम कटवा रहे है। माता-पिता की ओर से इन बच्चों को भी बैट्री रिक्शा चलाने के लिए दिया गया है। अगर यह बच्चे बैट्री रिक्शा चलाने से इंकार करते हैं तो इनके माता-पिता अपने बच्चों पर दुर्व्यवहार करते हैं; जैसे कि खाना नहीं देना, मारपीट करना। इसी डर से बच्चे बैट्री रिक्शा चलाने लगे हैं। बच्चों ने अपने बारे मे जिक्र करते हुए कहा कि हम पहले स्कूल जाते थे तो हम बच्चों को लगता था कि हमारा भविष्य पढ़ाई करने से सुधर जाएगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। पत्रकार ने रिक्शा चलाने वाले बच्चों से पूछा कि आपके माता-पिता इस लालच में कैसे पड़े?



16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गुलशन ने बताया कि हमारे मोहल्ले में एक अंकल हैं जिनके 6 से 7 बैट्री रिक्शे हैं और उनके तीनों बच्चे भी बैट्री रिक्शा चलाने का काम करते हैं। जब इस अंकल को हमारे माता-पिता ने देखा तो उनसे पूछा कि आपके इतनी कमाई कैसे होती है? इस अंकल ने हमारे माता-पिता को बताया कि मेरे तीनों बच्चे बैट्री रिक्शा चलाते हैं और एक दिन में 12.13 सौ रुपए कमा कर लाते हैं। हमारे माता-पिता भी हम बच्चों को बैट्री रिक्शा किराए पर दिलाकर रिक्शा चलाने के लिए कहते हैं और हम बच्चे सुबह 6 बजे से लेकर रात ग्यारह बजे तक चलाते हैं। हम बच्चों को सड़क पर रिक्शा चलाने में बहुत तकलीफ होती है; क्योंकि जिस सड़क पर हम रिक्शा चलाते हैं वह सड़क काफी भीड़भाड़ वाली है। एक दिन हम बच्चे रिक्शे लेकर कीर्ती नगर की ओर जा रहे थे तभी रास्ते में एक गोल चक्कर आया, वहां पर हम अपने रिक्शे को मोड़ रहते थे, गलती से एक कार में टक्कर लग गई, जिसके कारण उस कार वाले व्यक्ति ने पुलिस को बुला लिया और पुलिस वाले को कार वाले ने भडका दिया। वह पुलिस वाला हमारे रिक्शे को थाने में ले जाने की बात करने लगा। मुझे दो-तीन थप्पड़ मारकर डांटने लगा, और कहने लगा कि जब तुझे रिक्शा चलाना नहीं आता है तो क्यों चलाता है। उसने मेरे से 150 रुपए लेकर मुझे छोड़ दिया। इतनी परेशानी से भी गुजरने के बाद हमारे माता-पिता को किसी भी प्रकार की चिंता नहीं होती है; फिर भी हमारे माता-पिता यही काम करने के लिए कहते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि जैसे हम पहले पढ़ाई-लिखाई कर रहे थे वैसे ही हम पढ़ाई-लिखाई करें और अपना भविष्य सुधारें।

गरीबी में होटलों पर मजबूरन काम करते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर वर्षा व रिपोर्टर चेतन

चूना भट्ठी में काम करने वाले लोगों की संख्या बहुत ही ज्यादा है और यहां पर होटल अधिक से अधिक खुले हैं जिनमें ज्यादातर बच्चे ही काम करते हैं और इन बच्चों को अलग-अलग तरह का काम दिया जाता है, जो इन्हें आठ से दस घन्टों तक करना पड़ता है, जैसे लोगों को रोटी सब्जी की थाली देना, होटल साफ-सुथरा रखना। सबसे मुश्किल काम है रिक्शे पर पानी से भरा हुआ पचास किलो का ड्रम जिसे पांच किलो मीटर तक ले जाना। गर्मी पड़ने के बावजूद भी छोटे बच्चों को मजबूरी में काम करना पड़ता है। जब वह बच्चा खाली ड्रम लेकर जाता है तो कोई भी परेशानी नहीं होती है लेकिन वह बच्चा पानी भरकर लाता है तो रिक्शा तक नहीं खीच पाता। इसलिए वह रास्ते में किसी को भी अपनी मदद के लिए बुला लेता है ताकि वह रिक्शे में धक्का लगा सके। फिर होटल पर पहुंचने के बाद भी उस बच्चे को आराम करने का समय नहीं दिया जाता; क्योंकि उस होटल पर पानी भरने का काम एक ही बच्चे को दिया गया है। पानी ना होने के कारण होटल का काम रूक जाता है; जैसे सब्जी बनाना, होटल साफ करना और अन्य



तरह का काम रूक जाता है। इसलिए मजबूरन दिनभर इसी काम में लगे रहते हैं। जब लंच टाईम होता है तो इस बच्चे को खाना खाने के लिए सिर्फ बीस मिनट का समय मिलता है। इसके बाद शाम के सात बजे एक घंटे आराम करने का मौका मिलता है। एक घन्टा आराम करने के बाद फिर पांच किलोमीटर दूर पानी भरने जाता है। ग्यारह बजे होटल बंद होने के बाद भी इस बच्चे को होटल के बड़े-बड़े बर्तनो व झूठी प्लेटों को धोना पड़ता है। इसी वजह से इस बच्चे को रात के एक से दो बजे तक होटल के कामों में लिप्त रहना पड़ता है। बच्चे ने बताया कि अगर मैं रात को बर्तन नहीं धोता हूं तो मेरा मालिक मुझे मारता है और रात को खाना भी नहीं देता है। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप इस होटल पर क्यों काम करते हो? बच्चे ने बताया कि मैं यू पी के बरेली का रहने वाला हूं। मेरे माता-पिता खेतीबाड़ी का काम करते हैं। इसलिए मुझे अपने चाचा के साथ मेरे माता-पिता ने दिल्ली भेज दिया और मेरे चाचा भी इसी होटल में काम करते हैं। मुझे प्रतिमाह जो भी पैसे मिलते हैं वह मैं अपने माता-पिता को भेज देता हूं। उस पैसे को मेरे माता-पिता घर का गुजारा करने और खेतीबाड़ी करने में लगाते हैं।

झूठ बोल कर फंसाया बाल-मजदूरी में



बातूनी रिपोर्टर संतोष व रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने दिल्ली में दौरा किया तो पता चला कि हर महीने लगभग 10 से 15 बच्चों को काम के साथ-साथ पढ़ाने के नाम पर बिहार यू पी उत्तराखंड व नेपाल से लाया जाता है। राजधानी दिल्ली एक ऐसा शहर है, जहां फुटपाथ पर काफी सारी दुकानें लगाई जाती हैं। ये दुकानदार ज्यादातर छोटे बच्चों को ही अपनी दुकान पर काम पर रखते हैं। आइए जानते हैं किस तरह बच्चों को झूठ बोलकर दिल्ली में काम कराने के लिए लाया जाता है।

पत्रकार सड़क पर बने एक ढ़ाबे के पास पहुंचा वहां उसने 14 से 15 साल के बच्चे को काम करते हुए देखा। पत्रकार ने देखा कि वह बच्चा काफी लगन से काम कर रहा है। उस ढ़ाबे पर सिर्फ एक खाना बनाने वाला व्यक्ति था और सारा काम वह बच्चा खुद कर रहा था। जब पत्रकार ने उस बच्चे से बात करनी चाही तो वह बच्चा काफी डर रहा था।

मालिक के वहां से हट जाने के बाद 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) अजीत ने बताया कि भईया मैं इसलिए आप से बात नहीं कर रहा था; क्योंकि मेरा मालिक बैठा हुआ था, अगर मेरा मालिक किसी से बात करते हुए देख लेता है, तो मुझे बहुत मारता है और खाना भी नहीं देता है।

पत्रकार ने पूछा कि आप इस ढ़ाबे पर काम क्यों कर रहे हो? बच्चे ने बताया कि भईया मेरे घर कि स्थिति बहुत खराब है, इसलिए मेरे माता-पिता ने इस मालिक के साथ ढ़ाबे पर काम करने के लिए भेज दिया। लेकिन दुख की बात यह है कि मेरे माता-पिता से ढ़ाबे के मालिक ने वादा किया था कि आपके बच्चों को पढ़ाई-लिखाई करने के लिए स्कूल भी भेजेंगे और स्कूल के आने के बाद शाम को जो भी ढ़ाबे पर काम होगा, वह कर लेगा।

लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। दिल्ली आते ही मुझे इस ढ़ाबे के काम पर लगा दिया। वर्तमान में सारा काम मुझे ही सम्भालना पड़ता है; जैसे सुबह पांच बजे ढ़ाबे की साफ-सफाई करना व झूठे बर्तन धोना तथा सब्जियां काटना आदि। पत्रकार ने इन बच्चों को खुद देखा कि प्याज इतनी तेजी में काट रहे थे जैसे कि इनके हाथ मशीन हों, और पूछा कि आप इतनी तेजी में कैसे प्याज काट लेते हो?

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) चंदन ने बताया कि भईया हम बच्चे चार-पांच सालों से इसी काम में लगे हैं, इसलिए ढ़ाबे व दुकान पर कैसा भी काम हो वह असानी से कर लेते हैं। हम बच्चों का घर जाने का मन तो बहुत करता है लेकिन हमारा मालिक घर जाने के लिए अनुमति नहीं देता। वह बोलते हैं कि अगर घर जाना है तो अपनी जगह पर किसी और दूसरे बच्चे को लगा दो तभी तुम घर जा सकते हो।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100



कोठियों से काम के दौरान गायब हो रही हैं लड़कियां

रिपोर्टर शम्भू

बंगाल में अति गरीबी तंथा बेरोजगारी होने के कारण वहां के लोग नोएडा के सैक्टरों में आकर विभिन प्रकार के कामों में लगे हैं; जैसे कूड़ा कबाड़ा बीनना कोठियों में काम करना। फल-सब्जी बेचना आदि। इसी प्रकार इस क्षेत्र के कई लोग कबाड़े का काम करते हैं। मगर लोग अपनी बड़ी हो रही बेटियों को कबाड़ा बीनने नहीं भेजते हैं बल्कि इनको कोठियों पर साफ सफाई तंथा खाने बनाने के काम के लिए भेजते हैं। इसी प्रकार एक 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रेखा रोजाना कोठी पर काम करने जाती थी। रास्ते में आते-जाते समय वहां के कुछ मन चले लड़के इस लड़की को रोजाना काम पर आते जाते समय छेड़खानी करते थे। बच्ची ने इसकी शिकायत अपने माता-पिता से की, मगर बेचारे मजबूर माता-पिता क्या कर सकते थे, उन्होंने इस बात को ध्यान नहीं दिया। इसी नजरअंदाजी के कारण इस बच्ची को एक दिन काम के दौरान गायब कर दिया गया। माता-पिता ने हर जगह खोजने की कोशिश की। कोठियों में भी जाकर पता किया लेकिन कहीं भी उनकी बेटी नहीं मिली। हिम्मत हारने के बाद पुलिस थाने में अपनी बच्ची की रिपोर्ट दर्ज करवाई, मगर लगभग एक महीना बीत जाने के बाद भी इस बच्ची का कोई भी अता-पता नहीं चल पा रहा है। अब इस हादसे की वजह से और भी लड़कियां अपने काम पर जाने से डर रही हैं। इस कारण अब लड़कियों के माता-पिता अपनी लड़कियों के साथ कोठियों पर उन्हें काम के लिए खुद छोड़ने और वापस लेने जाते हैं।

बेबसी में लड़कियां हो रहीं अश्लीलता की शिकार

रिपोर्टर ज्योति

रेलवे स्टेशन पर लगभग 6 लड़कियां ऐसी हैं जो अपना पेट पालने के लिए गलत कदम उठा रही हैं। पत्रकार लड़कियों से मिला और पूछा कि आप लड़कियां गलत कदम क्यों उठा रही हो? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सपना ने बताया कि हम लड़कियां अपने घर की स्थिति खराब होने के कारण स्टेशन पर भागकर आ गए थे। लेकिन दुख की बात यह है कि हम लड़कियों को स्टेशन पर खाने-पीने के लिए दर-दर भटकना पड़ता है लेकिन आजतक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो हमारी मदद कर सके। तभी हम लड़कियों ने स्टेशन पर कबाड़ा बीनना शूरू किया, तो कुछ बड़े लड़के स्टेशन पर कबाड़ा बीनने नहीं देते थे। जब हम रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा बीनने के लिए जाते थे तो कभी-कभी बड़े लड़के मारने लगते थे और सारा कबाड़ा छीनकर वह खुद बेच देते थे। बेचने के बाद सारा पैसा वह खुद ही रख लेते थे। ऐसी परेशानियों से हम लड़कियां आये दिन गुजरती रहती हैं। लेकिन इन परेशानियों से छूटकरा नहीं मिल रहा है। जब भी हम लड़कियां रात को स्टेशन पर सोती हैं, तो बड़े लड़के हमें खाने का लालच देकर नशा करने के लिए बुलाते हैं और बोलते हैं कि अगर तुम यह नशा कर लोगी तो मैं तुम्हें खाना लाकर दूंगा। पर भूख के मारे हम लड़कियों को एक पल भी रहा नहीं जाता, अतः हम लड़कियां इन बड़े लड़कों के



झांसे में आकर नशा भी करने लगीं, फिर भी यह लोग खाना लाकर नहीं देते। जब हम लड़कियां नशा करके बेहेश हो जाती हैं, तब यह लड़के हमारे साथ अश्लील हरकत करते हैं। यह सिलसिला काफी दिनों से चलता आ रहा है। आखिर हम लड़कियों की एक ऐसी लड़की से मुलाकात हुई जो पैसों के लिए गलत काम करती है। वह हमें अपनी कहानी बताने लगी कि मैं भी पहले घर से भागकर स्टेशन पर आ गई थी। मेरे साथ भी इस तरह का व्यवहार हो चुका है। अब मैं भी पैसे लेकर अश्लील कामों में लिप्त हो गई हूं। हम लड़कियों ने सोचा कि स्टेशन पर तो हमारा गुजारा होने वाला नहीं है। अब हम लड़कियां भी पैसे कमाने के लिए गलत कदम उठा रही हैं।

बड़े लोगों व पुलिस दबंगई में रात में कबाड़ा चुनने को मजबूर बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन पर रहने वाले बच्चे ने अपनी दुखभरी खबर बताते हुए कहा कि हम बच्चे बहुत मुश्किल से कुछ बोतल इकट्ठा कर पाते हैं; क्योंकि आजकल स्टेशन पर पुलिस हम बच्चों को बहुत परेशान करती है। हम बच्चे गलत काम नहीं करते हैं फिर भी हम बच्चों को मारती-धमकाती रहती है।

पत्रकार ने ऐसे ही एक 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजेश से मिला जिसको रात में स्टेशन पर घूमने की वजह से पुलिस वाले ने जमकर पिटाई की और इस बच्चे के शरीर पर काफी सूजन भी आई हुई थी। बच्चों का कहना है कि पुलिस अत्याचार हम बच्चों पर दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। रात में हम बच्चे स्टेशन पर जब सोए होते हैं तो लात मारकर उठा देते हैं। यह तो एक परेशानी है, दूसरी परेशानी यह कि कुछ दिनों से इस स्टेशन पर बाहर से कुछ बड़े व्यक्ति कबाड़ा बीनने के लिए आने लगे हैं इन्होंने सारे डिब्बो में कब्जा कर रखा है। जैसे ही हम बच्चे रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो हम बच्चों को रेलगाड़ी में से धक्का मारकर बाहर निकाल देते हैं। इस परेशानी को लेकर हम बच्चों ने इन बड़े व्यक्तियों से बात की कि आप हमारे साथ ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हो? तो वह



गाली देते बोले कि यह स्टेशन तेरे बाप ने बनाया है, जो तू ही कबाड़ा बीनेगा। हमने बड़े व्यक्ति से बोला कि हम बच्चे काफी समय से इसी स्टेशन पर कबाड़ा चुनकर अपना गुजारा कर रहे हैं, इस पर बड़े व्यक्ति ने कहा कि अब से तुम्हारा राज खत्म, अब हमारा राज शुरू। अगर कोई रोकने की कोशिश करेगा तो उसके लिए बहुत बुरा होगा।

17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) लोकेश ने बताया कि हम बच्चों की लग रहा था कि यह लोग हम बच्चों को ऐसे ही डरा-धमका रहे हैं। हकीकत जानने के लिए जब हम बच्चे रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा बीनने पंहुचे तो इसने रेलगाड़ी में सवार यात्रियों का बैग चोरी कर लिया और इसका इल्जाम मुझ पर लगा दिया। यात्रियों को हमारे बारे में उल्टा-सीधा समझाने लगे कि यह बच्चा काफी देर से इस डिब्बे के अंदर कबाड़ा चुन रहा था। इसी बच्चे ने आपका बैग चोरी किया है। यह बात सुनते ही यात्री हमें मारने के लिए दौड़ पड़े। इसलिए आजकल हम बच्चे पूरी रात जाग कर कबाड़ा चुन रहे हैं। बच्चो का कहना है कि इन लोगों के खिलाफ जल्द से जल्द कार्यवाही करनी चाहिए, नहीं तो हम बच्चों का जीना मुश्किल कर देंगे।



परिवार के साथ दर-दर भटकते बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सोनिया व शम्भू

बदायूँ (उत्तर प्रदेश) में अति गरीबी तथा बेरोजगारी है इसलिए अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए यहां के अधिकतर लोग नोएडा में आकर खेतीवाड़ी का ठेका ले लेते हैं। ये लोग खेतों के मालिक को साल भरके एकमुश्त पैसे दे देते हैं, उसके बदले में उनके खेत पर तीन-चार फसलें उगाते हैं। खेत का मालिक तो एक बार पैसा लेकर निश्चिंत हो जाता है। मगर इन परिवारों को अपनी लगन के साथ मेहनत करनी पड़ती है जैसे खेत की जुताई-बुवाई, फसलों की सुरक्षा तथा मौसम के अनुसार फसलों की देखरेख करना व सही समय पर खाद्य व कीड़े की दवाई डालनी पड़ती है। इन परिवारों के मासूम बच्चे भी अपने माता-पिता के साथ खेतों में रात-दिन काम करने को बेवश हैं। खेतो के हर काम में यह बच्चे अपने परिवार की मदद करते हैं। काम के चलते ही ये बच्चे लगातार अपने बाल अधिकारों से वंचित होते चले जा रहे हैं। बच्चे जुलाई माह में स्कूल खुलते ही स्कूल जाना शुरू कर देते हैं। फरवरी-मार्च-अप्रैल में पढ़ाई की परीक्षा देते हैं। परीक्षाओं का रिजल्ट आते ही मई-जून की गर्मी में बच्चों को दो माह की छुट्टी मिल जाती है। इन बच्चों को जून से लेकर जुलाई तक बारह माह तक लगातार खेतों में जुताई बुवाई, फसल सुरक्षा और फसल कटाई में ही लगे रहना पड़ता है।

नशे के शिकार होते मासूम

बालकनामा ब्यूरो

खेलने-कूदने और पढ़ाई-लिखाई करने की उम्र में 8 से 16 साल के बच्चे गलत संगतो में पड़ते जा रहे हैं। कई तरह का नशा करना भी सीख रहे हैं। ऐसी ही एक जगह की यहां चर्चा की जा रही है जिसका नाम गुप्त रखा गया है। जहां पर बच्चें खुलेआम गुटखा, तम्बाकू, गांजा और स्मैक का भी नशा करते हैं। जिस दुकान में गांजा स्मैक बिकता है, उसका दुकानदार इन छोटे बच्चों को गांजा, स्मैक देने से कभी मना नहीं करता है। जो बच्चे नशा करते हैं, उनको किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता है। इनके माता-पिता सुबह ही काम पर चले जाते हैं, जैसे ही माता-पिता अपने काम के लिए निकलते हैं, वैसे ही बच्चे अपने घर में दोस्तों को बुलाकर एक साथ नशा करना शूरू कर देते हैं। पत्रकार को पता चला कि यह छोटे बच्चे अपने दोस्तों के साथ इकट्ठे होकर अपने ही घर में नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं। लेकिन दुख इस बात का है कि इन बच्चों के माता-पिता को इस बात की भनक तक नही हैं कि इनके बच्चे दिनभर क्या करते हैं। इनके माता-पिता सुबह ही काम पर चले जाते हैं और रात आठ बजे तक घर लौटते हैं। ऐसी स्थिति में माता-पिता अपने बच्चों का ख्याल कैसे रख सकते हैं। इस मोहल्ले में पुलिस अधिकारी भी चक्कर लगाने के लिए नहीं आते हैं जिससे इन बच्चों के अंदर बिल्कुल भी डर नही हैं। गांजा, स्मैक का नशा करने वाले बच्चों में से पत्रकार ने एक बच्चे से बात की। उस बच्चे ने बताया कि भूतकाल में हम बच्चे नशा नही करते थे लेकिन यहां कुछ बड़े बच्चे ऐसे हैं जो दिनभर नशा करते हैं वह हमारे साथ ही हमारे मोहल्ले में रहते हैं। इसी कारण वह हम बच्चों से दूर नहीं जाते और हमें बहला-फुसलाकर पार्कों में खेलने के लिए ले जाते हैं। वहां अकेले में हम बच्चों को डरा-धमका कर नशीले पदार्थ खरीदने के लिए भेजते हैं। हम बच्चे नशा खरीदने के लिए जाने से मना करते हैं तो बड़े बच्चे मारने लगते हैं। इस कारण हम बच्चे नशा खरीद कर लाते हैं। नशा खरीद कर लाने के बाद वही बड़े बच्चे हम बच्चों को नशा करने के लिए भी बोलते हैं। अगर हम नशा नहीं करते हैं तो जबरदस्ती नशा कराते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि हम बच्चे चाहते हैं कि इन बड़े बच्चों के खिलाफ जल्द से जल्द कार्यवाही की जाए, ताकि हमारे जैसे अन्य बच्चे नशे की गिरफ्त में आने से बच सकें।

समूह बनाकर बच्चों से करवाते हैं नशे की सप्लाई

रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशन व लालबत्ती सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए नशे का अड्डा बनता जा रहा है। हाल ही में पता चला कि चार पांच बड़े व्यक्ति, जो बच्चों का समूह बनाकर चोरी छूपे सुलेशन का नशा बेचने का काम करवा रहे हैं। जब पत्रकार ने इन बच्चों को चोरी छूपे नशा बेचते हुए देखा, तो चौंक गया। आजकल बच्चे लालबत्ती पर भी नशा बेचने लगे हैं। उसने इस संबंध में बच्चों से बात करने की कोशिश की। उसने देखा कि नशा बेचने वाले बच्चे काफी डरे हुए थे। वे पत्रकार को देखते ही भागने लगे। पत्रकार ने उन बच्चों से अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं भी आपकी तरह बच्चों के लिए काम करता हूं और हम आपको नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं आए हैं। मैं तो सिर्फ आप जैसे बच्चों की मदद करना चाहता हूं। इतना सुनते ही बच्चे पत्रकार के पास आकर बातचीत करने लगे। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को यह नशा बेचने के लिए कौन बोलता है? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुजित ने बताया कि भईया हमारा एक मालिक है जिसने हम बच्चों का एक



समूह बना रखा है और वह बाजार से नशा लाकर हम सबको देता है। हम बच्चे अलग-अलग जगह; जैसे स्टेशन, लालबत्ती व भीड़भाड़ वाली जगहों पर यह नशा बेचने के लिए जाते हैं और हम बच्चों से खासकर बोला जाता है कि ज्यादातर उन बच्चों के पास जाना जो कबाड़ा व भीख मांगते हैं; क्योंकि ज्यादातर यही बच्चे नशे में लिप्त रहते हैं। यह बच्चे नशे की खोज में इधर-उधर भटकते रहते हैं। अगर तुम उन बच्चों के पास जाओगे तो यह बच्चे खुद नशा खरीद लेंगे; चाहे तुम कितना भी मंहगा दो, वे ले लेंगे। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चों को नशा बेचते वक्त डर नहीं लगता है? बच्चों ने बताया कि भईया हमारे मालिक ने हम बच्चों को पहले से ही ट्रेनिंग दे रखी है कि अगर कभी पुलिस वाले भी तुम बच्चों को पकड़ते हैं, तो तुम चाकू व नुकीली चीजों का प्रयोग करके भाग जाना। अगर कभी हम बच्चे पुलिस के चंगुल में फंस भी जाते हैं तो हमारा मालिक हम बच्चों की मदद नहीं करता है। पत्रकार ने पूछा कि आप बच्चों को यह काम करने के कितने पैसे मिलते हैं? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राकेश ने बताया कि एक दिन के सौ रुपए मिलते हैं और साथ ही साथ हमें दो नशे के डिब्बे मुफ्त में मिलते हैं; ताकि हम बच्चों को नशा खरीदने के लिए कहीं जाना ना पड़े। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रंजीत ने बताया कि हम बच्चे चाहते हैं कि हमसे चोरी छूपे और खुलेआम नशा ना बिकवाया जाए; क्योंकि इससे हमारा भविष्य अंधकार की ओर जा रहा है।

नाला बना बच्चों के लिए एक खौफनाक डर

बालकनामा ब्यूरो

पश्चिमी दिल्ली में बसी एक बस्ती जिसका नाम गुप्त रखा गया है। इस बस्ती में लगभग 1500 सौ झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों के बीच एक बहुत बड़ा गहरा नाला है, जिसमें आये दिन घटनाएं घटती रहती हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी प्राप्त हुई और पता चला कि इन झुग्गियों में रहने वाले सभी माता-पिता कामकाजी हैं, इसलिए अपने बच्चों को बड़े बुजुर्गों के भरोसे घर पर छोड़कर जाते हैं। बड़े बुजुर्ग इन छोटे बच्चों का ख्याल नहीं रख पाते हैं। बड़े बुजुर्ग भी अपने घरेलू कामो में लिप्त रहते है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कृष्णा ने बताया कि भईया जब हमारे माता-पिता काम करने के लिए बाहर जाते हैं तो हम बच्चों को बहुत डर लगता है। कहीं हम बच्चे भी इस नाले का शिकार ना हो जाएं। इस खतरनाक नाले में काफी लोग तथा बच्चे व जानवर भी गिर चुके हैं और उन्हें अपनी जिंदगी भी खोनी पड़ी है। पत्रकार ने बच्चों के माता-पिता से मुलाकात की और उनकी मजबूरी जाननी चाही कि वे इस जगह पर क्यों रह रहे हैं और ऐसी क्या समस्या है कि अपने बच्चों को छोड़कर आपको काम करने जाना पड़ता है। 35 वर्षीय श्रीमती कमला देवी जो बिहार के मध्यपुरा जिले की रहने वाली हैं; इन्होने बताया कि हम अपने बच्चों को इसलिए झुग्गी में अकेले छोड़कर जाते हैं, ताकि हमारा घर का खर्चा चल सके। अगर हम काम करने बाहर नहीं



जाएंगे, तो हमारे परिवार को भूखे ही रहना पड़ेगा। अगर हम अपने बच्चे को काम पर ले जाते हैं तो हमारी मालकिन बोलती है कि तुम यहां पर बच्चे को खिलाने आई हो या मेरे घर का काम करने? इसलिए मजबूरी में हम अपने बच्चों को भगवान के भरोसे पर छोड़ कर काम पर जाते हैं। जब तक हम काम पर रहते हैं तब तक हमें अपने बच्चों की चिंता सताती रहती है कि मेरा बच्चा पता नहीं घर पर अकेले कैसे रह रहा होगा? घर आने के बाद उन्हें देखकर संतुष्टी मिलती है और बताया कि हम इस जगह से अपनी झुग्गी भी नहीं बदल सकते हैं; क्योंकि हमें पता है कि अगर हमने ऐसा किया तो हम लोगों को सड़क पर ही रहना पड़ेगा। हम लोगों ने इस नाले की परेशानी अपने विद्यायक जी को बताई थी लेकिन उनका कहना है कि यह तो बहुत बड़ा सरकारी काम है, इसलिए हम कुछ नही कर सकते हैं।

झुग्गी टूटने पर बच्चे काम करने के लिए लाचार



बातूनी रिपोर्टर प्रिती रिपोर्टर ज्योति

दक्षिणी दिल्ली का एक क्षेत्र जिसका नाम गुप्त रखा गया है वहां पर भूतकाल में लगभग तीन सौ से चार सौ बच्चे रहते थे। वहां पर जितनी भी झुग्गी-झोपड़ी थीं उनको तोड़कर वर्तमान में कबाड़ खाने का गोदाम बना दिया गया है। रहने की मुश्किल व काम नहीं मिलने की वजह से माता-पिता के साथ बच्चे अपने गांव चले गए। लगभग दो साल पहले यह बच्चे खुशी से अपने परिवार के साथ कूड़ा बीनने और छंटाई का काम करते थे; और साथ ही स्कूल भी जाते थे लेकिन झुग्गियां टूटने की वजह से सारे बच्चे बेघर हो गए। इनके रहने का कोई ठिकाना नहीं था। बच्चों ने बताया कि तीन माह तक इन बच्चों के माता-पिता अपने काम के लिए व रहने के लिए इधर-उधर भटकते रहे; लेकिन रहने का कोई ठिकाना नही मिला, जहां पर यह बच्चे सुरक्षित रह सकें। इसलिए इनके माता-पिता ने अपने गांव जाने का निर्णय लिया। गांव जाने के बाद यह बच्चे अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए बेवश हैं। हाल ही में 15 वर्षीय राहुल गांव से आया; और काम की तलाश में भटकते हुए उसकी मुलाकात पत्रकार से हुई। उसने अपने गांव की दशा बताते हुए कहा कि जो बच्चे पहले इस जगह पर रहकर कबाड़ा बीनने के लिए जाते थे, गांव जाने के बाद उन बच्चों का बहुत बुरा हाल हो गया है। अब उन्हें अपने घर का खर्चा चलाने के लिए माता-पिता के साथ खेतों में जबरन काम करना पड़ता है। पहले यहां पर वह बच्चे पढ़ाई-लिखाई भी करने के लिए जाते थे; लेकिन गांव जाने के बाद पढ़ाई-लिखाई से भी दूर हो गए हैं। सिर्फ कामों में लिप्त रहते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) बाबू का कहना है कि हमारे माता-पिता सरकारी जमीन पर घर बना रखे हैं, इसलिए हमें डर लगा रहता है कि कहीं सरकार हमारा घर ना तोड़ दे। जिसकी वजह से हमारे परिवार को उन बच्चों की तरह रहने व काम के लिए दर-दर भटकना ना पड़े। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गणेश ने बताया कि अगर सरकार हमारा घर ताड़ भी देती है तो सरकार को दूसरी जगह पर रहने के लिए घर देना चाहिए ताकि हम बच्चे को फुटपाथ पर ना रहना पड़े ।



बड़े व्यक्ति बच्चों को जबरन नशे की ओर ले जाते हैं

बालकनामा ब्यूरो

दक्षिणी दिल्ली की एक विशेष बस्ती जिसमें रहने वाले सभी बड़े व्यक्ति तथा बुजुर्ग नशा व जुआं खेलते रहते हैं। इसी जगह पर एक बहुत बड़ा जंगल भी है। इस जंगल में लोग अपने परिवार वालों से छुपके नशा करते हैं। कुछ कामकाजी बच्चे भी अपने दोस्तों के साथ जंगल में खेलने के लिए जाते हैं। यह लोग अपने परिवार वालों से इतना डरते हैं कि कहीं इनको नशा करते हुए देख लिया तो घर से बाहर निकाल देंगे। इसलिए यह लोग जंगल में खेलते हुए छोटे बच्चों को अपना मोहरा बनाते हैं, ताकि इनके परिवार वालों को पता नहीं चल सके कि यह लोग नशा भी करते हैं। अगर कोई बच्चा नशा लाने से मना करता है तो यह लोग मारने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। इसी भय में बच्चे इन लोगों का शिकार हो रहे हैं। यह लोग बोलते हैं कि तुम मेरे लिए दुकान से शराब व पानी की बोतल लेकर आओ तो बच्चे डर से चले जाते हैं। दुकानदार भी इन छोटे बच्चे को शराब देने से मना नहीं करता है। जब बच्चे नशा लेकर इन लोगों के पास पंहुचता है तो इनाम के तौर पर इन बच्चों को नशा करने के लिए बोलते हैं। यह बच्चे नशा करने से मना करते हैं, तो जबरदस्ती इनके हाथ पकड़ कर शराब पिलाते हैं। यह सिलसिला लगभग सात माह से चल रहा है। इससे पहले यह लोग कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए बाहर जाते थे तो उसी जगह पर नशा कर लेते थे, लेकिन जब से यह लोग रिक्शा चलाने का काम करने लगे हैं, तब से बच्चों को इस तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस बात को लेकर बच्चों ने अपने माता पिता से भी चर्चा करी। इन बच्चों के माता पिता इन्हें ही डांटने लगे कि तुम्हें जंगल में खेलने की क्या जरूरत है। बच्चों का कहना है कि हम बच्चे इसी जंगल में खेलना चाहते हैं; क्योंकि इस जंगल में ठंड़ी हवा तथा कोयल की मधुर आवाज़ आती है, इसलिए हमारा इस जंगल में मन लगा रहता है।

पानी भरने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सपना व शम्भू

पत्रकार ने विजिट के दौरान देखा कि बदरपुर बोर्डर में बसी एक बस्ती सांसी कैम्प में रह रहे बच्चे पानी भरने के लिए बदपुर बोर्डर के इस पार से उस पार जा रहे थे। जहां की सड़कों पर टैफिक भी बहुत तेजी से चलता है। उसके बाद भी इन बच्चों के सिर पर 15 से 20 लीटर पानी का भरा डिब्बा लदा रहता है जिसे यह बच्चे बदरपुर बोर्डर से सांसी कैम्प बस्ती तक पैदल लेकर आते हैं। यह देख पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की। तुम रोज इतनी दूर पानी भरने क्यों जाते हो, तो 15 वर्षीय सपना ने अपनी परेशानी के बारे में बताते हुए कहा कि हमें सांसी कैम्प में पानी नहीं मिलता है, क्योंकि यहां पानी की सुविधा नहीं है। इसलिए हम सभी बच्चे पानी के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। 15 वर्षीय मुस्कान ने कहा कि सरकार को जब हमारी जरूरत पड़ती है, तो वह हमारे पास वोट मांगने आ जाती है और



वोट ले लेती है लेकिन हमें क्या परेशानी आ रही है यह जानने की कोशिश कभी नहीं करती। यहां के 10 साल से लेकर 17 साल तक की उम्र के बच्चे सांसी कैम्प से बदरपुर बोर्डर पर पानी भरने को जाते हैं। हम बच्चों को कम से कम तीन जगह सड़क पार करनी होती है। हर एक बच्चे को बीस लीटर के पानी के डिब्बे का भार उठाना पड़ता है। सभी आने जाने वाले लोग हमें देखते हैं। लेकिन कोई भी यह जानने की कोशिश तक नहीं करता है कि कितनी मेहनत के बाद हम बच्चों को पानी मिलता है। हमारे यहां पीने का पानी नही आता है और इसलिए हमें यहां पानी भरने आना पड़ता है। फिर भी हमें यहां आकर कभी-कभी पानी भी नसीब नहीं होता है। जिस दिन हमें पानी नहीं मिलता, उस दिन हम बच्चे प्यासे रह जाते हैं, या फिर गंदा पानी पीना पड़ता है; जिसकी वजह से हम बच्चे बीमार पड़ जाते हैं। पत्रकार ने पूछा कि क्या यहां पानी का टैंकर नही आता है? बच्चों ने बताया कि टैंकर नही आता है। हमने बहुत कोशिश की है इसके लिए, पर कोई फायदा नहीं हुआ। अगर कभी-कभी टैंकर आता भी है तो महीने में एक बार आता है। हम बच्चे बदरपुर बोर्डर से ही पानी भरने के लिए जाते हैं अगर हमारे यहां पर पानी का टैंकर रोज आए तो हम बच्चों को इतनी दूर पानी भरने नहीं जाना पडेगा। इससे जो हमारा समय बचेगा, उसका सदुपयोग हम बच्चे अपनी पढ़ाई और खेलने में कर सकेंगे।



लड़कियों की सुरक्षा में पूरी रात जाग रहे हैं माता-पिता

रिपोर्टर शम्भू

पुल के नीचे रहने वाली लड़कियों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान चर्चा हुई कि जो लड़कियां पुल के नीचे रहती हैं उनको किस तरह की परेशानियों से गुजरना पड़ता है? इसी विषय पर बालकनामा के पत्रकारो ने लड़कियों से जायजा लिया। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधा ने बताया कि भईया पुल के नीचे तो आये दिन घटना घटती रहती हैं; जैसे पुल के नीचे हमारे आस-पास कुछ बडे. व्यक्ति भी रहते हैं, जो पूरे दिन गुंडागर्दी व नशा में लिप्त रहते हैं। इनका काम यही है कि दूसरे व्यक्तियों को परेशान करना। जैसे कि स्टेशन पर रेलगाड़ी के अंदर लोगों की जेब काटना या छोटे बच्चों को परेशान करना। इतना ही नहीं; जब लड़कियां पुल के नीचे रात को सोती हैं तो आधी रात को किसी भी लड़की के पास नशे में धुत ये सो जाते हैं और उनके साथ गलत काम करने की कोशिश भी करते हैं। लड़कियों ने इसके खिलाफ आवाज़ भी उठाई थी, पर कुछ नहीं हुआ। लड़कियों के माता-पिता को धमकी दी जाती है कि अगर ज्यादा बोलोगे तो तुम्हारे साथ अच्छा नहीं होगा। डर से लड़कियों के माता-पिता कुछ नही कर पाते हैं। लगभग दो महीने पहले की बात है। एक व्यक्ति नशा करके एक बच्ची की मम्मी के पास सो गया और गलत काम करने की कोशिश करने लगा, वह जोर से चिल्लाई, फिर सारे लोग जगे और उस नशे में धुत व्यक्ति को मारकर भगाया। यही नहीं जब हम लड़कियां नए वस्त्र पहनती हैं तो यहां के व्यक्ति गलत नजरिये से देखते हैं और अश्लील बातें भी बोलते हैं। लड़कियों ने बताया कि जब हम लड़कियां सोती हैं, तब हमारे परिवार का एक सदस्य पूरी रात हमारी सुरक्षा करने के लिए जगता है।

बारिश में कहां और कैसे रहें सड़क एवं कामकाजी बच्चे?

बातूनी रिपोर्टर भोलू व शम्भू



बालकनामा के पत्रकारो ने लिया जाएज़ा। पुल के नीचे सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बताया कि हम बच्चे जब बारिश होती है, तो हमारे रहने का सामान गीला हो जाता है जिसके कारण बच्चों को बहुत समस्या होती है। हमारा सारा का सारा भोजन का सामान खराब हो जाता है, क्योंकि उस भोजन में बारिश का पानी भर जाता है। इस कारण हम बच्चो को भूखे पेट रहना पड़ता है। अगर पूरे दिन लगातार बरिश होती है तो रात भर हम बच्चे ठीक से गीली जगह में सो नहीं पाते हैं। क्योंकि गीले में सोने से हमें ठंड बहुत लगती है जिससे हम बीमार भी पड़ जाते हैं और अगले दिन हम अपनी दवा दारू भी नहीं कर पाते हैं क्योंकि बारिश की वजह से हम बच्चे कबाड़ा और भीख भी नहीं मांग पाते हैं, जिस कारण हमारे पास पैसों का अभाव होता है और हम अपना इलाज भी नहीं करा पाते हैं। 15 वर्षीय(परिवर्तित नाम) राजा ने बताया कि बारिश होने की वजह से सड़क पर काफी पानी जमा हो जाता है और जब बसए कारए ट्रक तंथा मोटरसाईकिल इस सड़क से तेज रफ्तार में चलते हैं, तो जमा हुए बारिश के पानी के छींटे हमारे ऊपर आ जाते हैं। इसलिए थोड़ी बहुत सूखी जगह रहती है वह भी गीली हो जाती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे लिए एक ऐसी सुरक्षित जगह पर घर बना दें; ताकि हम बच्चे वहां बारिश में भी सुरक्षित रह सकें और ऐसी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़े।

समर्पण और मित्रत्ता को सलाम

बातूनी रिपोर्टर सलमान व शम्भू



यह खबर दो मित्रों की है। यह दोनों मित्र अपने घर कि स्थिति खराब होने के कारण घर से भागकर स्टेशन पर आ गए थे। वर्तमान में यह पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रहकर दूसरे बच्चों की हर वक्त मदद के लिए समर्पित हैं। साथ ही दोनों बालकनामा अखबार के बातूनी रिपोर्टर भी हैं। इन दोनों मित्र में एक बहुत अच्छी खूबी है कि यह दोनों हर वक्त एक साथ रहते हैं और जितने भी स्टेशन पर छोटे बच्चे मुसीबत में नजर आते हैं, उनकी हमेशा मदद करते हैं, साथ ही दोनों मित्र अपना पेट पालने के लिए इसी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने का काम करते हैं ताकि इनका अपना गुजारा हो सकें। हाल ही की बात है, तीन बच्चे अपने माता-पिता के साथ लालकिला घूमने के लिए आए थे। लालकिला में काफी भीड़भाड़ होने की वजह से अपने माता पिता से बिछुड़ गए और रोते-रोते स्टेशन की सफाई लाईन पटरियों के पास आ गए; तभी आचानक यह दोनों मित्रों की निगाहें उन तीनों बच्चों पर पड़ी। यह दोनों मित्र उन बच्चों के पास पहुंचे। उन बच्चों से बातचीत करी और कहा कि आप बच्चे क्यों रो रहे हो? उनसे पूछा कि कहां से आए हो? इन तीनों बच्चों में से 10 वर्षीय गोपाल ने बताया कि हम तीनों दोस्त अपने माता पिता के साथ लालकिला घूमने आए थे लेकिन हम तीनों दोस्त अपने माता-पिता से बिछुड़ गए हैं। हम बच्चों ने अपने माता पिता को लालकिले के पास ढूढने की कोशिश की, पर हमारे माता पिता कहीं नहीं मिले। यह बात सुनते ही यह दोनों मित्र लालकिले के पास पंहुचे और इन बच्चों के माता पिता को ढूंढ़ना शुरू किया। काफी जगह खोजने के बाद लालकिले के बाहर इन बच्चों के माता पिता रो रहे थे। सलमान ने इन बच्चों के माता पिता को समझाते हुए कहा कि आप अपने बच्चों का ध्यान रखा करो। आप लोग जब भी घूमने के लिए आते हैं तो भीड़भाड़ वाली जगहों पर अपने बच्चों का ध्यान रखा करो। इन दोनो मित्रों को बच्चों के माता पिता ने धन्यवाद बोला और उपहार के तौर पर कुछ पैसे भी दे रहे थे लेकिन इन दोनों पैसे नहीं लिए। बोला कि चाचीजी हम तो यूंही बच्चों की मदद करते रहते हैं तभी तो हम खोजिया पत्रकार कहलाते हैं। इसी तरह इन दोनों मित्र ने बच्चों के माता पिता को भी बालकनामा अखबार के बारे में जानकारी दी।

क्या आप उठाएंगे साहीन के परिवार का खर्चा?

बातूनी रिपोर्टर साहीन रिपोर्टर दीपक

10 वर्षीय साहीन अपने परिवार के साथ शकूरबस्ती में रहती है। साहीन के परिवार में कुल दस सदस्य हैं। आठ भाई-बहन और दो मम्मी पापा। साहीन के बड़े भाई की शादी हो गई है, वह अपने परिवार के साथ अलग रहता है। उनको अपने भाई-बहनों व माता-पिता से कोई लेना-देना नहीं है। साहीन के पिता रिक्शा चलाने का काम करते हैं, वे शराब भी पीते हैं। साहीन ने बताया कि मेरे पापा जितने भी पैसे रिक्शा चलाने में कमाते हैं, इनमें से कुछ घर पर देते हैं और बाकी पैसों की दारू पी जाते हैं। साहीन के आठ भाई-बहनों में से चार भाई-बहन पढ़ाई करने के लिए स्कूल जाते हैं, बाकी चारों साहीन के कामों में हाथ बटाते हैं। साहीन भी भूतकाल में तीसरी कक्षा में पढ़ाई करती थी लेकिन घर की स्थिति खराब होने के कारण स्कूल जाना छोड़ दिया और अन्य तरह के कामों में लग गई। साहीन को अपने भाई बहन का पालन पोषण करने के लिए कोयले और सीमेंट बेचने का काम शूरू किया जहां से साहीन कोयला और सीमेंट लाती है उस जगह का नाम है शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन इस स्टेशन पर ज्यादातर कोयले और सीमेंट की रेलगाड़ी आती जाती है औवरलॉड गाड़ी होने के वजह से कुछ कोयले गिर जाते है और रेलगाड़ी जाने के बाद साहीन पट्रीयों पर कोयले बीनती है और उसे ढ़ाबे तंथा होटलो में जाकर बीस रुपए प्रति किलो बेच देती है । इसके बावजूद भी साहीन को इतना पैसा नही मिल पाता है कि जिसमें इनका परिवार का गुजारा हो सके क्योंकि 50.60 रुपए में भला दस लोगो का पेट कैसे पल सकता है इसलिए साहीन कोठी में भी काम करने के लिए जाती है लेकिन दुख कि बात यह कि साहीन खुद इतनी छोटी है कि कोठी का काम कर ही नही पाती साहीन का कहना है कि अगर कोई हमारे परिवार का खर्चा उठा ले तो मैं अपने भाई बहन कि तरह दोबारा स्कूल में पढ़ने जाया करूगी ।

आज के समाज में सुरक्षित नहीं बेटियां

बालकनामा ब्यूरो



आगरा के कुछ इलाके में लड़कियां भूतकाल में सुरक्षित रहती थीं। वे पढ़ने के लिए स्कूल जाती थीं। इन लड़कियों पर किसी भी प्रकार की रोक-टोक नहीं थीं। स्कूल से आने के बाद भी इधर-उधर घूमने के लिए बेझिझक जाती थीं। लेकिन वर्तमान में लड़कियों को स्कूल जाने और घर से बाहर निकलने के लिए मना किया जाता है; क्योंकि दो महीने पहले एक 15 वर्षीय बच्ची के साथ एक व्यक्ति ने दुष्कर्म कर दिया जिसकी वजह से बच्ची की मृत्यु हो गई। बच्ची अपने घर से रोजाना पढ़ने के लिए स्कूल जाती थी। रास्ते में आते-जाते कुछ मन चले व्यक्ति जो उसी रास्ते में नशा करते थे, और रास्ते में आती-जाती लड़कियों व महिलाओं को परेशान करते थे। डर के मारे कोई भी लड़की व महिला इनके खिलाफ आवाज़ नहीं उठा रही थी। एक दिन यह बच्ची अपने स्कूल से लौट रही थी, तभी यह व्यक्ति बच्ची के साथ छोड़खानी करने लगा। बच्ची ने इसे थप्पड़ मार दिया। उस दिन से यह व्यक्ति बालिका पर कड़ी नजर रखने लगा। कुछ दिनों के बाद ही जब यह बच्ची स्कूल से लौट रही थी, तभी इस व्यक्ति ने अकेले व सुनसान जगह का फायदा उठा कर बच्ची के साथ बड़ी ही बेरहमी से दुष्कर्म किया, जिसमें इस मासूम बच्ची के शरीर पर बहुत ही बुरी तरह से चोटें आईं। इस खौफनाक डर से माता-पिता अपनी बेटियों को घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं। काफी लड़कियों के माता-पिता ने अपनी बच्चियों का स्कूल से नाम कटवा लिया है। लड़कियों के माता-पिता को इस बात का डर है कि कहीं हमारी बच्चीयों के साथ दुष्टकर्म ना हो जाए। ये लड़कियां इसी विषय से चिंतित हैं कि अब हमारा पढ़ाई करने का सपना अधूरा ही रह जाएगा। लोगों का कहना है कि यहां आये दिन ऐसी घटनाएं घटती रहती हैं। लड़कियों व महिलाओं का इस जगह पर रहना बहुत मुश्किल हो रहा है। लेकिन ऐसे व्यक्ति के खिलाफ कोई आवाज़ उठाने के लिए तैयार नही है जो इस व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सजा दिला सके ।

रंजीत की चाह; पापा में आए बदलाव

बातूनी रिपोर्टर रंजीत व दीपक

16 वर्षीय रंजीत आज से 10 साल पहले अपने परिवार के साथ गाजियाबाद में गुजर बसर कर रहा था। रंजीत के तीन छोटे भाई हैं, जो प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं। यह देखकर रंजीत के मन में भी लालसा जागी कि मैं भी अपने छोटे भाई की तरह पढ़ाई करने स्कूल जाऊं। इसी लालसा को लेकर उसने अपने पापा से बात की कि मुझे भी छोटे भाईयों कि तरह स्कूल में पढ़ाई करनी है। यह बात सुनकर पापा घबड़ा गए कि मुझ से तीन बच्चों की स्कूल की फीस नहीं दी जाती। अगर तूं भी पढ़ने लगा तो तेरा खर्चा मैं कहां से लाऊंगा? इसी सोच में पापा खो गए। उस वक्त पापा ने मुझे कुछ नही जवाब नही दिया। लेकिन इसी विषय से मैं उदास रहने लगा। यह देखकर पापा ने मेरा स्कूल में दालिखा करा दिया। लेकिन किसी वजह से मेरे पापा को नौकरी से निकाल दिया गया, तो मेरे पापा मुझसे गाली-गलौज से बात करने लगे और कहने लगे कि तूं मेरी जिंदगी में परेशानी लेकर आया है। जैसे ही तूं स्कूल जाने लगा, वैसे ही मेरी नौकरी तूंने छीन ली, और मेरे सामने पापा रोने लगे। इस परेशानी को लेकर मेरे पापा ने मेरा स्कूल से नाम कटवा दिया। घर का खर्चा व छोटे भाई की स्कूल की फीस भरने के लिए मुझे एक लोहे की वेल्डिंग की दुकान पर काम करने के लिए लगा दिया। इस लोहे की दुकान पर मुझे काम करने में बहुत तकलीफ होती थी। क्योंकि जब लोहे की वेल्डिंग करते थे, तो लोहे में से चिंगारी बहुत निकलती थीं जिसकी वजह से हाथ-पैर जल जाते थे। चिंगारी की तेज आंच लगने की वजह से मैं सही से काम भी नहीं कर पाता था, तो मालिक मुझे गाली-गलौज करता था। फिर भी मैंने अपनी हिम्मत नहीं हारी और कुछ महीनों तक लगातार काम करता रहा। लेकिन जब मालिक अपनी हद से बाहर जाने लगा तो मैंने निर्णय लिया कि अब इस दुकान पर काम नहीं करूंगा। पर मुझे अपनी परेशानी पापा को बताने में बहुत डर लग रहा था। हिम्मत करके पापा को सारी परेशानी बताई। इसके बाद पापा ने परेशानी को सुनकर मुझे चाऊमीन की दुकान पर लगा दिया, जहां मुझे झूठी प्लेट व दुकान की साफ-सफाई करनी पड़ती थी। ये मालिक तो पहले वाले मालिक से भी खतरनाक था। छोटी-छोटी बातों पर गंदी-गंदी गालियां देता था। एक दिन मैं किसी वजह से काम पर लेट पहुंचा तो मालिक ने मुझसे कुछ पूछे बिना मारने-पीटने लगा। इसी कारण से मैंने यह काम भी छोड़ दिया और अपने घर चला गया। घर जाते ही पापा भी मुझ पर ही गुस्सा होने लगे। यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा और अपने परिवार का साथ छोड़कर आजकल मैं रेलवे स्टेशन पर रहता हूं। अपना पालन-पोषण करने के लिए कबाड़ा बीनने का काम कर रहा हूं। रंजीत ने बताया कि मैं अपने भाईयों से बहुत प्यार करता हूं। इसलिए कभी-कभी उनसे चोरी छुपे मिलने चला जाता हूं। लेकिन मेरे पापा अभी मुझे से गलत तरीके से पेश आते हैं। मैं चाहता हूं कि मेरे पापा मुझसे सही तरीके से बात करें; जैसे छोटे भाईयों से करते हैं, तभी मैं उनके साथ रह सकता हूं।



हर पल नशे से तड़प रहे हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर प्रियंका व रिपोर्टर पूनम

आगरा के कुछ क्षेत्र में इस पत्रकार ने विजिट किया। बातचीत में पत्रकार को पता चला कि यहां कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां बच्चे व इनके माता-पिता बैल छाप मंजन से दांत साफ करते हैं। इनके माता-पिता काफी समय से इसी मंजन का इस्तेमाल करते आ रहे हैं। इनके माता पिता के दांत काले रहते हैं। जब बच्चे किसी भी प्रकार का सख्त पदार्थ खाते हैं तो बच्चों के दांतो में दर्द होता है। इनके माता-पिता डॉक्टर को दिखाने की बजाए अपने बच्चों को सलाह देते हैं कि इस मंजन का प्रयोग करो। इन बच्चों के माता पिता को लगता है कि इस मंजन को करने से हमारे दांत का दर्द ठीक हो जाएगा। ऐसा बिल्कुल नहीं होता है। जिन बच्चों को यह मंजन दांत साफ करने को दिया जाता है वे बच्चे इस मंजन के आदी होते जा रहे हैं। क्योंकि यह मंजन कोई मामूली मंजन नहीं है। यह एक नशीले पदार्थ की चीज है, जिसके बच्चे आदी होते जा रहे हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मोनिका ने बताया कि यह मंजन करने पर हम बच्चों को चक्कर आने लगता है और कभी-कभी उल्टियां भी आ जाती हैं। हमारे माता-पिता इस गलतफहमी में जी रहे हैं कि इस मंजन से हमारे दांतों का दर्द ठीक हो जाता है, व हमारे दांत मजबूत हो जाएंगे। भूतकाल में इस जगह पर रहने वाले बच्चे इस मंजन के शिकार नहीं हुए थे। वर्तमान में इस मंजन की वजह से बच्चों की स्थिति बहुत खराब हो गई है। करीब दो सौ से भी अधिक बच्चे व इनके माता-पिता इस मंजन को अपना रहे हैं। जब बच्चे अपने कामों में लिप्त रहते हैं तो अपने मुंह में हर वक्त यह मंजन रखे रहते हैं। पहले बच्चे सिर्फ दांत साफ करने के लिए इस्तेमाल करते थे लेकिन अब बच्चे इस मंजन को नशे के रूप में प्रयोग करने लगे हैं। इस वजह से बच्चों के भी दांत काले होने लगे हैं, और साथ ही इनके मुंह में छाले भी पड़ने लगे हैं। मंजन की वजह से बच्चों की हालत ऐसी हो गई है कि अब इस मंजन के बिना बच्चे जी ही नहीं पा रहे हैं। खाना मिले ना मिले इनको, यह मंजन जरूर मिलना चाहिए।



बच्चों की तस्करी पर नहीं है लगाम

पृष्ठ 1 का शेष

मालिक व पब्लिक का दुर्व्यवहार

13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कन्हैया ने बताया कि जब हम बच्चे भीख मांगने के लिए नहीं जाते हैं तो हमारे मालिक मारते हैं और रात को खाना भी नहीं खाने देते हैं। भूख के मारे जब हम बच्चे बीमार हो जाते हैं, तो हमारी इलाज भी नहीं करवाते हैं।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजा ने बताया कि जब हम बस में पब्लिक की जेब काटते हैं तो हमे बहुत परेशानी आती है। शुरू-शुरू में मेरा मालिक जब मुझे इस काम में लगाया था तो मेरा हाथ डर से कांपने लगता था और किसी भी पब्लिक की जेब भी नहीं काट पा रहा था, मै इस काम में कई बार पब्लिक से पिट चुका हूं फिर मुझे इसी प्रकार काम के लिए भेजा जाता है। मैं जब अपने मालिक से बोलता हूं कि मुझसे यह काम नहीं होगा तो वह बहुत क्रोधित होते हैं और मारने-पीटने लगते हैं। इसलिए डर से मैं यह काम बहुत अच्छी तरह से सीख लिया हूं। वर्तमान में जो भी बस अधिक भाड़ी-भाड़ वाली होती है, उस बस में जाकर पब्लिक की जेब काटता हूं। जब भी कोई व्यक्ति यह काम करते हुए देख लेते हैं, तो मुझे बहुत पीटते हैं। लेकिन मुझे इससे कोई फर्क नही पड़ता, क्योंकि मैं अपने मालिक के पास पैसे लेकर नहीं पहुंचा तो वह मुझ पर पब्लिक से भी ज्यादा अत्याचार करेंगे।



15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि हम बच्चे जो भी पैसे कमा कर लाते हैं, वे सारे पैसे हमारे मालिक ही रख लेते हैं। हम बच्चों को किसी भी चीज की आवश्यकता होती है तो वे नहीं देते। हमें अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अलग से समय निकालना पड़ता है। अर्थात अलग से जेब तराशी करनी पड़ती है, और उस जेब तराशी से आये पैसों को हम बड़ी सावधानी से छुपा कर रखते हैं।

संघर्ष करने वाले बच्चों के सुझाव

बच्चों ने बताया कि जिस प्रकार से हमारा मालिक हमारे माता-पिता को लालच देकर हम बच्चों से गलत काम करा रहे हैं, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। इससे हम बच्चों की जिंदगी बर्बाद हो रही है। हमारी खेलने-कूदने की उम्र में ही हमें गलत संगतों में फंसा दिया है।

16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राजू ने बताया कि हम बच्चों को सही राह दिखाने की बजाय खतरनाक काम सिखा रहे हैं। हमें डर है कि कहीं यह लोग हम जैसे दूसरे मासूम बच्चों से इस तरह के गलत काम न करवायें, ताकि हमारी तरह अन्य मासूमों की जिंदगी बर्बाद न हो।

17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) पवन का कहना है कि हम बच्चे चाहते हैं कि हमें भी इस दलदल से बाहर निकाला जाए और इस तरह के व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये, जो हम बच्चों के जीवन से खिलावाड़ करते हैं तथा अत्याचार करते हैं।



क्या आप करेंगे हमारे अधूरे सपने पूरे?

बातूनी रिपोर्टर गुड्डी व दीपक

सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी अपनी नन्हीं सी आंखों में ख्वाब सजाए बैठे हैं। यह बच्चे भी दूसरे कलाकारों की तरह अच्छी स्टेज पर जाकर अपनी कला को लोगों के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं। इन बच्चों का ख्वाब तो एक सपना बनकर ही रह गया है। जब यह बच्चे कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो आपस में ही नांच-गा लेते हैं। इन बच्चों की कलाओं को कोई देखना नहीं चाहता। अगर किसी पब्लिक के सामने यह अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं तो पब्लिक बोलती है कि यह तो इनका रोज का कमाई का जरिया है; और इन मासूमों को लोग देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। यह पत्रकार कुछ ऐसे बच्चों से मिला जिनको डांस सीखने का बेहद शौक है। इन बच्चों को अभी तक कोई ऐसा साथी नहीं मिला, जो इन बच्चों को आगे ले जा सके। यह बच्चे डांस सीखने में बहुत माहिर हैं। अगर इन बच्चों को एक मौका मिल जाए तो यह बच्चे भी भविष्य में आगे बढ़ सकते हैं। जो लोग इन बच्चों से घृणा करते हैं, क्या वही लोग इन बच्चों को आगे बढ़ते हुए देखना चाहेंगे? आजतक हमसे किन्हीं लोगो ने सही तरिके से बातचीत नहीं की है, तो हमें डांस टीचर कहां से मिलेगा? अगर कोई भईया-दीदी अपना कीमती समय निकाल कर हमारे लिए डांस टीचर बनकर आएं, तभी हम डांस सीख पाएंगे। हम लोगों को दिखा सकते हैं कि हम बच्चे भी दूसरे बच्चों से कम नहीं है। सिर्फ हमें एक मौके की तलाश है जिससे हम आगे बढ़ सकते हैं, और लोगों की नजरों में अपनी इज्जत बना सकते हैं। हमें आगे बढ़ने के लिए आपके सहयोग की जरूरत है।

अंधविश्वासों की जिंदगी जी रहे हैं मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर बाबू व रिपोर्टर शम्भू

बदरपुर बोर्डर के निकट बस्ती में लगभग 250 झुग्गी-झोपड़ी हैं। इन झुग्गियों के सभी बच्चे व माता-पिता कामकाजी हैं। इनके माता-पिता और बच्चे खुद कबाड़ा बीनने के लिए, दूर-दूर जगहों पर जाते हैं, तब जाकर कुछ कूडा-कबाड़ा मिलता है। यही इनकी जिंदगी है। यह बच्चे और इनके माता-पिता अंधविश्वासों की जिंदगी जी रहे हैं। पत्रकार द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि जिस स्थान पर इन बच्चे के माता-पिता झुग्गी-झोपड़ी बना रखे हैं उसके निकट एक बहुत बड़ा खंडहर है। लोग इसको जंगल के नाम से जानते हैं। लोगो का कहना है कि आज से हजारो साल पहले इस जगह पर राजा-महाराजा रहा करते थे। जब से राजा राज गया तभी से लोग इसमें झुग्गी-झोपड़ी बनाकर अपना गुजर-बसर कर रहे हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि इस खंडहर में मरे हुए बच्चों, लोगों और जानवरों को दफनाया जाता है, जिसकी वजह से काफी बच्चे व माता पिता डरी हुई जिंदगी जी रहे हैं।

15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कन्हैया ने बताया कि भईया जब हम बच्चे रात को सोते हैं, तो खंडहर में से अजीब सी आवाज़ आती है और उसी खंडहर में से बच्चों के रोने की आवाज़ें भी सुनाई देती हैं। पत्रकार ने खुद उस खंडहर जाकर देखा। वह खंडर काफी डरावना लग रहा था। बच्चों के माता-पिता का कहना है कि पहले ऐसा नहीं होता था; इस खंडहर में जब से मरे हुए बच्चों व जानवरों को दफनाया जाने लगा है तब से यह परेशानियां बढ़ती ही जा रही हैं। इसी वजह से बच्चों के माता-पिता शाम के सात बजते ही अपने घर के अंदर चले जाते हैं और सुबह होने के बाद ही अपने घर से बाहर निकलते हैं।



पत्रकार के सहयोग से आठ वर्षीय बच्चा सुरक्षित पंहुचा अपने घर

रिपोर्टर ज्योति

विजिट के दौरान पत्रकार को एक 8 वर्षीय बच्चा दिखा, जो तुगलकाबाद की रेल की पटरियों पर रोते हुए भाग रहा था। पत्रकार यह देखकर उस बच्चे के पास दौड़कर गया; क्योंकि सामने से तेज रफतार से रेलगाड़ी आ रही थी। पत्रकार ने उस बच्चे का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा। वह बच्चा बहुत रो रहा था। पत्रकार ने उस रोते हुए बच्चे को चुप कराया और पानी भी पिलाया। वह इतना डरा हुआ था कि अपना नाम भी नहीं बता पा रहा था। पत्रकार ने उस बच्चे को समझाया कि आप डरो मत, मैं आप जैसे बच्चों के लिए काम करती हूं। यह जानकर बच्चा पत्रकार की बातों पर विश्वास करने लगा, फिर बच्चे ने अपने बारे में बताया कि मैं अपने दोस्तों के साथ पीने का शर्बत लेने के लिए जा रहा था, मेरे दोस्त मुझे छोड़कर भाग गए जिसकी वजह से मैं अपने घर जाने का रास्ता भूल गया हूं। पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप को कुछ तो याद होगा जिस रास्ते से आप आए थे। काफी देर से बात करने के बाद भी वह बच्चा अपने घर जाने का रास्ता नहीं बता पा रहा था। पत्रकार ने तुगलकाबाद के आस-पास झुग्गी-झोपड़ियों में इस बच्चे के साथ जाकर पूछताछ किया कि आप इस बच्चे को जानते



हो? लेकिन किसी व्यक्ति ने यह नहीं बोला कि मैं इस बच्चे को जानता हूं। पत्रकार इस बच्चे को लेकर इधर-उधर भटक रहा था, तभी अचानक पत्रकार उस जगह के पास पहुंच गया, जहां इस बच्चे का स्कूल था। उस बच्चे ने अपना स्कूल देखते ही पहचान लिया और बोला कि मैं यहां पढ़ने के लिए आता हूं। यहां से मुझे अपने घर का रास्ता मालूम है। वह बच्चा पत्रकार का हाथ छोड़कर आगे-आगे भागने लगा। जब पत्रकार इस बच्चे के घर पहुंचा तो इसके सारे दोस्त अपने घर पर शर्बत पी रहे थे और इसे देखकर हंसने लगे। लेकिन इस बच्चे के माता-पिता को कोई परवाह नहीं थी कि हमारा बच्चा इस वक्त कहां है। वह अपने घर के अंदर मजे से सो रहे थे। पत्रकार ने इस बच्चे के माता-पिता को समझाया कि आप अपने बच्चे को अकेले कहीं बाहर मत भेजा करो। अगर आज हमलोग सही वक्त पर आपके बच्चे के पास नहीं पहुंचते तो आपके बच्चे की रेलगाड़ी से दुघर्टना हो सकती थी। यह बात सुनते ही माता-पिता चैंक गए और पत्रकार से वादा किया कि अब से हम अपने बच्चे को अकेले कहीं नहीं भेजेंगे। बच्चों को समझाते हुए कहा कि अगर आपको कोई दोस्त जबरदस्ती बाहर ले जाता है तो अपने मम्मी-पापा को बोलना कि यह मुझे जबरदस्ती बाहर ले जा रहा है। लेकिन आप बच्चे किसी के साथ अकेले बाहर नहीं जाओगे।

आखिर सरकारी अधिकारी कब निभाएंगे अपनी जिम्मेदारी?

बालकनामा ब्यूरो

अक्सर सरकारी स्कूल के बच्चों से जानकारी मिल रही है कि स्कूल के अध्यापकों का व्यवहार कुछ ठीक नहीं है। यह अपनी मनमानी करते रहते हैं। अध्यापक स्कूल तो सही समय पर पहुंच जाते हैं, पर स्कूल आते ही एक दूसरे अध्यापक से गप्पें मारते रहते हैं। बच्चों की पढ़ाई पर तो बिल्कुल ध्यान ही नहीं देते। जब कोई सरकारी अधिकारी स्कूल के बच्चों से मिलने आते हैं, तो अध्यापक बच्चों को ही दोषी ठहराते हैं कि यह बच्चे सही से पढ़ाई नही करते हैं। इन बच्चों का सिर्फ खेलने में ध्यान लगा रहता है। बच्चों ने कहा यह तो



एक परेशानी है, दूसरी परेशानी यह है कि हमारे स्कूल में खाना भी सही तरिके का नहीं आता है। खाने में कभी पानी-पानी सा होता है, कभी तो छोटे छोटे कीड़े भी निकल आते हैं। इसलिए जो पैसे हम घर से लेकर जाते हैं उन पैसों से बाहर का खाना खरीदने जाते हैं, अगर अध्यापक देख लेते हैं तो हमारे पैसे भी छीन लेते हैं, फिर हम बच्चों को पूरा दिन भूखा रहना पड़ता है। जब हमारे माता-पिता हम बच्चों से स्कूल में मिलने आते हैं और हमारे बारे में हमारे अध्यापकों से जानकारी लेते हैं कि हमारा बच्चा पढ़ाई कैसी कर रहा है तो अध्यापक हमारे माता-पिता को यही बोलते हैं कि आपका बच्चा पढ़ाई-लिखाई बिल्कुल नहीं करता है, सारे दिन बातें करता रहता है। हम बच्चे ऐसा बिल्कुल नहीं करते हैं। हमारे अध्यापक हम बच्चों को खुद नहीं पढ़ाते हैं। हमारे माता पिता तथा सरकारी अधिकारियों से झूठ बोलते हैं। सरकारी अधिकारी अध्यापकों का कहना सच मान लेते हैं। इसका खामियाजा हम बच्चों को भुगतना पड़ रहा है। हम बच्चे दिन पर दिन पढ़ाई में कमजोर होते जा रहे हैं। हमारा कहना है कि इसके लिए सरकार को जल्द से जल्द स्कूलों में जाकर छानबीन करनी चाहिए। सत्यता जान कर अध्यापकों पर उचित कार्यवाही की जानी चाहिए, ताकि सरकारी स्कूलों के अध्यापक हम बच्चों को अच्छे से पढ़ायें और हम बच्चे सरकारी स्कूलों में भी अच्छे से पढ़ाई कर सकें।

कौन सुनेगा प्रदीप की पुकार?

बातूनी रिपोर्टर शबाना व ज्योति

यह दर्दनाक खबर 16 वर्षीय प्रदीप की है। प्रदीप आजकल अलग-अलग रेलवे स्टेशन पर भीख मांगने जाता है। जैसे नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली तथा आनन्द विहार। दुख की बात यह है कि प्रदीप बचपन से ही विकलांग है। घर में कोई भी सदस्य कमाने वाला न होने के कारण प्रदीप ही भीख मांगकर अपने घर का गुजारा करता है। प्रदीप के परिवार में दो छोटे भाई हैं। वह सरकारी स्कूल में पढ़ाई करते हैं। प्रदीप जब दो साल का था तब उसके पिता का देहांत हो गया था फिर प्रदीप की मम्मी परिवार का खर्चा चलाने व अपने बच्चों का पालन पोषण करने के लिए कबाड़ा बीनने लगी थीं लेकिन जब प्रदीप 15 साल का था तो उसकी मां को टी. बी. जैसी बीमारियों ने जकड़ लिया, जिसकी वजह से प्रदीप कि मम्मी बीमार रहने लगी, जिसकी बदौलत



प्रदीप को भीख मांगने के लिए मजबूर होना पड़ा। प्रदीप एक साल से भीख मांग रहा है; क्योंकि प्रदीप अपने दोनों पैरों से लाचार है। पहले प्रदीप ने दो महीनो के लिए भीख मांगना बंद कर दिया था; क्योंकि प्रदीप की मम्मी यह नहीं चाहती थीं कि मेरा बेटा मुझसे दूर रहे। इसलिए प्रदीप राशन की दुकान पर काम मांगने के लिए गया। उस दुकान के मालिक ने जलील करके भगा दिया था कि तुम जैसे विकलांग मेरी दुकान पर कैसे काम कर सकते हो? जब राशन की दुकान के मालिक ने मुझे जलील करके भगाया उसके अगले दिन से ही मैंने फिर भीख मांगना शूरू कर दिया। अब स्टेशनों पर मैं भीख मांगते हुए नजर आता हूं। रेलगाड़ी में भी अपने वस्त्रों को उतार कर भीख मांगता हूं फिर भी वह इतना पैसा इकट्ठा नहीं कर पा रहा है कि वह अपनी मां का इलाज करा सके। इसलिए वह दो-तीन दिन स्टेशन पर रहकर पैसे को जमा करता है और जैसे ही सौ से दो सौ रुपए इकट्ठे होते हैं वैसे ही वह अपने घर चला जाता है। उन्हीं पैसो से राशन व भाईयों की पढ़ाई का खर्चा उठा रहा है। प्रदीप चाहता है कि कैसे भी मेरी मम्मी का इलाज हो जाए और जो सरकार द्वारा विक्लांगो के लिए पेंशन दी जाती है वह पेंशन मुझे भी मिलनी चाहिए। मैं इस पेंशन के सहयोग से अपने घर का खर्चा और मम्मी का इलाज करा सकूंगा।

माता-पिता से झूठ बोलकर बच्चे अपनी जरूरतों को पूरा करते हैं

बातूनी रिपोर्टर वर्षा रिपोर्टर चेतन

बच्चे अपनी जरूरतो को पूरा करने के लिए अपने माता पिता से झूठ बोलकर कोचिंग सेंटर का नाम लेकर कबाड़ा बीनने के लिए जाते है इस बात कि भनक बालकनामा पत्रकार को पड़ी तभी पत्रकार ने बच्चों से बातचीत करी और पता चला कि इन बच्चों को आयदिन कि सी ना किसी चीज कि जरूरत पड़ती है जैसे अच्छी अच्छी चीजे खाने का मन करता है इसलिए इन बच्चों को जंगलो रोडो और गलियों में कबाड़ा बीनना पड़ता है और यह बच्चे अपने स्कूल के बैंग में घर से ही बोरी चुपाकर ले जाते है । आधे रास्ते में जाने के बाद बैंग में से बोरी निकालकर अपना स्कूल बैंग जंगल में छूपा देते है । इन बच्चों को कबाड़ा बीनते हुए देखकर पत्रकार इन बच्चों के पास पहुंचा और बच्चों से पूछा कि आप कोचिंग सेंटर का नाम लेकर बाहर कबाड़ा बीनने क्यों जाते हो? तभी 11 वर्षीय परिवर्तित नाम गोलू ने बताया कि भईया हम बच्चे को नए वस्त्र तंथा चीज खाने के लिए घर वाले पैसे नही



देते है इसलिए हम बच्चे 50.60 रुपए का कबाड़ा बेचकर अपनी जरूरतो को पूरा करते है क्योंकि घर वाले जो भी पैसे देते है वह स्कूल कि कॉपी किताब लाने में ही खर्च हो जाते है तो चीज व नए वस्त्र कहा से लाएगे । माता पिता से बात करने पर पता चला कि इनको बेतनरोजगार बहुत कम होने कि वजह से अपने बच्चों कि जरूरतो को पूरा नही कर पा रहे है इसी कारण इन बच्चों को शिक्षा से बंछित होना पड़ रहा है ।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...











बढ़ते कदम का 15 वां स्थापना दिवस 9 जुलाई को दिल्ली और लखनऊ में मनाते हुए बढ़ते कदम, चेतना और बालकनामा के सदस्य और कार्यकर्ता



स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए बढ़ते कदम और बालकनामा के सदस्य और अन्य स्ट्रीट चिल्ड्रन



How these children are finding their way from streets to schools

चेतना के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम स्ट्रीट टू चिल्ड्रन की कवरेज टाइम्स ऑफ इंडिया में विस्तार से दी गयी।



चेतना द्वारा आयोजित कार्यक्रम की झलक जिसमें उत्तर प्रदेश की महिला एवं बाल कल्याण मंत्री श्रीमती स्वाति सिंह मौजूद रहीं।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम, 31, बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471